एक प्रति ३५ पैसे, | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ अंक २ | रविवार, २ नवम्बर १९८० | दयानन्दाब्द १५६

आकर्षक शोभायात्रा : सामूहिक यज्ञ : वेद सम्मेलन : दिल्ली में आर्यसमाजों के उत्सवों की धूम

आर्यसमाज मोतीनगर का वार्षिकोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस वार्षिकोत्सव का सबसे बडा आकर्षण शोभायात्रा (जुलूस) था। २६ अक्तूबर को यह शोभायात्रा मोतीनगर, कीर्ति नगर, रमेश नगर, राजा गार्डन, बसई दारापुर, सुदर्शन पार्क, के क्षेत्रो मे होती हुई पुन. मोतीनगर आर्यसमाज मे आकर समाप्त हुई। यह जूलूस लगभग एक किलोमीटर लम्बा था और २-३० बजे मोतीनगर से शुरू होकर सायं ६-३० बजे इन उपनगरो की परिक्रमा करके समाप्त हुआ। इस क्षेत्र के लोगो ने इस शोभायात्रा के सम्बन्ध मे यह विचार प्रकट किया कि इससे पहले कभी इस प्रकार का जुलूस इस क्षेत्र मे नही निकला।

इस शोभायात्रा की विशेषता यह थी कि इसमे हाथियो, उनके पीछे घुडसवारो, जीपो, टैम्पू, ट्रको और बसों ने भाग लिया। इनके बीच-बीच आर्यजनो की टोलिया पैदल चल रही थीं, जिनके मस्ती भरे गीतो ने वातावरण को बहुत ही उत्साहजनक बना रखा था। रमेशनगर के युवको की टोली ने गीतो का जो समा बाध रखा था उसका आकर्षण सबसे अधिक रहा। इसके साथ ही कन्या गुरुकुल राजेन्द्रनगर, श्रद्धानन्द बाल विद्यालय आर्यनगर पहाड गज. मुलतान डी०ए०वी स्कूल पटेलनगर के कार्यक्रमो और बच्चो के बैण्ड और बासुरी वादन ने भी इस शोभायात्रा की शोभा और अधिक बढाई।

इस शोभायात्रा मे पश्चिमी दिल्ली उपसभा की आर्यसमाजो ने विशेष रूप से योगदान दिया। दिल्ली की अन्य समाजों ने भी अपने प्रतिनिधि इस जुलूस मे सम्मिलित होने के लिए भेजे। शोभायात्रा मे सम्मिलित होने वाली आर्यसमाजो के नाम हैं :—आर्यसमाज मोती नगर, सुदर्शन पार्क, कीर्तिनगर, रमेशनगर, बसई दारापुरा, न्यू मोतीनगर, कर्मपुरा, पश्चिमपुरी जनता क्वाटर, टैगोर गार्डन, तिलकनगर, पटेलनगर, राणा प्रतापबाग, सुभाषनगर और बिरला लाईन्स।

इस सारी शोभायात्रा के आयोजन का श्रेय पश्चिमी क्षेत्र की उपसभा के मन्त्री प्रो० भारत मित्र जी को है। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री भी हैं। इस शोभायात्रा मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधित्व सभा मन्त्री प० विद्यासागर विद्यालकार कर रहे थे।

वार्षिकोत्सव के उपलक्ष मे आर्य समाज मोतीनगर मे एक सप्ताह तक ईशावास्योपनिषद् का यज्ञ हुआ। २६ अक्तूबर को ही इस यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के बाद स्वामी वेदानन्द जी महाराज उपनिषद् के मन्त्रो की बडे सरल और सरस ढग से व्याख्या करते रहे। सायकाल स्वामी जी महाराज वेदो का प्रवचन करते रहे। इसके साथ सभा के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल मधुर अपने भजनोपदेशो से कार्यक्रम को रोचक बनाते रहे।

आर्यसमाज देवनगर ने अपने यहा जिस प्रकार से वार्षिकोत्सव मनाया वह अपने आप म बिल्कुल भिन्न प्रकार का और बहुत ही आकर्षक था। इस समाज ने २६ अक्तूबर को वार्षिकोत्सव के उपलक्ष मे पूर्णाहुति के रूप मे १९ यज्ञकुण्डो की स्थापना करके, प्रत्येक यज्ञ कुण्ड पर औसतन दस व्यक्तियो ने निरन्तर आहुति देकर इस यज्ञ-कार्यक्रम को बहुत ही आकर्षक और प्रभावशाली बनाया। यज्ञ के ब्रह्मा अशोककुमार विद्यालकार थे और उनके साथ वेदपाठ मे उनकी सहायता गणेश प्रसाद जी कर रहे थे। १९ यज्ञकुण्डो मे दी गई आहुतियो के कारण आसपास के सारे क्षेत्र का वातावरण न केवल सुगन्धित हो उठा था बल्कि सामूहिक मन्त्रपाठ, 'स्वाहा' की उच्च ध्वनि और 'इदनमम्' के उच्चार के कारण सारा वातावरण गूज रहा था। जिस सुन्दर ढग से वेदपाठ किया जा रहा था वह हमारी वैदिक परम्परा का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत कर रहा था। यज्ञ के मुख्य यजमान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा थे। प्रत्येक यज्ञकुण्ड पर दस-दस के परिवारों और आर्यसमाजो के कारण आहुति देने वालो की कुल उपस्थिति दो सौ से अधिक थी। इस यज्ञकार्यक्रम की पूर्णाहुति दर्शनीय थी।

यज्ञ कार्यक्रम के बाद वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन से पूर्व सार्वजनिक रूप से सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा का प्रधान पद पर निर्वाचित होने के कारण अभिनन्दन किया गया। आर्यसमाज देवनगर की ओर से उन्हे ५०१/-रुपये की थैली भेंट की गई।

वेद सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य विद्वान प० शिवकुमार जी शास्त्री ने की। सम्मेलन के वक्ताओ मे डा० सत्यकाम वर्मा, डा० प्रशान्तकुमार वेदालंकार, श्री ओमप्रकाश शास्त्री, श्री विद्यासागर विद्यालकार थे।

इससे पूर्व सप्ताह भर आर्यसमाज मन्दिर मे श्री अशोककुमार विद्यालकार का प्रतिदिन प्रवचन हुआ। प्रवचन का विषय था 'यज्ञ'। श्री वेदव्यासभजनोपदेशक प्रतिदिन भजनोपदेश करते रहे।

आर्यसमाज बाजितपुर नागल ने भी २० से २६ तक अपना वार्षिकोत्सव मनाया और श्री सत्यदेव भजनोपदेशक ने इस अवसर पर प्रचार किया।

२७ अक्तूबर से २ नवम्बर तक श्री वैद्य रामकिशोर जी आर्यसमाज रोहतास नगर मे प्रवचन करेंगे। उनके साथ भजनोपदेशक श्री वेद व्यास रहेंगे। श्री हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण आर्यसमाज दरियागज मे सप्ताह भर कथा करेंगे और यहां भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी प्रचार कार्य करेंगे। आर्यसमाज गोविन्द मठ दयानन्द वाटिका मे श्री अशोक कुमार विद्यालकार का सप्ताह भर का प्रवचन होगा और श्री सत्यपाल जी मधुर भजनोपदेशो द्वारा प्रचार करेंगे। जहांगीरपुरी मे श्री प्रकाशवीर व्याकुल के प्रवचन होगे।

ऋषि निर्वाण उत्सव : भव्य समारोह

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे शुक्रवार ७-११-८० को दीपावली के दिन दिल्ली के रामलीला मैदान मे सभी आर्यसमाजो एव आर्य शिक्षण सस्थाओं की ओर से सामूहिक तौर पर ८ से १२ बजे तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। यह महर्षि दयानन्द का ९७वां निर्वाण उत्सव होगा।

समारोह की अध्यक्षता वीतराग आर्य सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे। स्वामी जी महाराज दीनानगर पजाब के दयानन्द मठ के आचार्य है। ध्वजारोहण का कार्यक्रम स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती (पूर्व प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित) करेंगे। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के आचार्य महात्मा दयानन्द होंगे। अनेक आर्यनेता विद्वान, राजनेता महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

आर्य केन्द्रीय सभा ने आर्यजनों के नाम एक अपील निकाल कर यह अनुरोध किया है कि आर्य बन्धु इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या मे भाग लें।

इस अंक में

सम्पादक :—वि० सा० विद्यालंकार

श्वेताश्वतरोपनिषद्

सृष्टि के तीन तत्त्व : ईश्वर, जीव, प्रकृति
ब्रह्म अभोक्ता : जीव भोक्ता, प्रकृति भोग्या

३ ब्रह्माड मे । चक्र की, तथा पिंड 'नदी' की कल्पना ।

ब्रह्माड को 'ब्रह्म-चक्र' के रूप में वर्णन करके अब पिंड की एक प्रचड नदी से तुलना करते हैं । जैसे नदी का जल मानो पाच स्रोतो से फूटता है वैसे शरीर-रूपी नदी की पाचो ज्ञानेन्द्रिया उसके पाच स्रोत है, जिनमे से ज्ञान-रूपी जल फूट पड़ता है—'पचस्रोत अम्बुम्', जैसे नदी के स्रोत की योनि, उसका कारण पहाड वैसे शरीर रूपी नदी के निर्माण मे पाचो महाभूत उसके उद्भव क पहाड हैं—'पच-योनि', जैसे नदी का वेग कही उग्रवद कही वक्र हो जाता है वैसे मानव-जीवन की प्रवृत्तिया कही तीव्र हो जाती है, कही टेढे-मेढे मार्गो मे चली जाती है—'उग्र वक्रा' जैसे नदी मे तरगे उठा करती है वैसे शरीर रूपी नदी मे पाचो प्राण उसकी तरगें है—पच प्राण ऊर्मिम्, नदी का आदि-मूल होता है जहा से नदी प्रारम्भ होती है, वैसे मानव-जीवन की जैसे नदी का आदि-मूल शब्द, रूप, रस, गन्ध स्पर्श—ये पॉच प्रकार की बुद्धि हैं—पंचबुद्धि आदि मूलाम्, जैसे नदी मे आवर्त होते है, भवर होते हैं, वैसे जीवन रूपी नदी मे शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श — इन विषय मे डूब जाना भवर हैं—'पच आवर्ताम्' जैसे नदी मे कभी ज्वार आ जाता है, बाढ आ जाती है, वैसे जीवन रूपी नदी मे गर्व, जन्म, जरा, व्याधि, मरण—इन पाच प्रकार की बाढ आ जाती है—'पच दु ख-ओघ-वेगाम् ।

जैसे नदी को पार करने के पचासो तरीके है वैसे जीवन रूपी नदी को पार करने के भी पचासो तरीके हैं—'पचादश भेदाम् । ऋषि कहते है कि इस जीवन-नदी को पार करने के मार्गों का आओ अध्ययन करे—अधीम ॥५॥

सबको जीवन देने वाले, सबके पालक—'सर्व आजीवे' सबको अपने मे धारण करने वाले—'सर्व सस्थे' उस महान्— बृहन्ते तस्मिन्' ब्रह्म-चक्र' मे इस जीव रूपी हस को कोई घुमा रहा है—'हस भ्राम्यते ब्रह्म-चक्रे' । जो व्यक्ति अपने को तथा अपने को प्रेरणा देने वाले को पृथक्-पृथक् जान जाता है—'पृथक् आत्मान प्रेरितार च मत्वा' वह उसके साथ प्रेम-भाव उत्पन्न होने पर—'जुष्ट. तत'—उससे अमृतत्व प्राप्त कर लेता है—'तेन अमृतत्वम् एति ॥६॥

४. ईश्वर, जीव तथा प्रकृति— इन तीन का वर्णन

जो ऋषि सृष्टि के कारणो के सबध मे चर्चा कर रहे थे वे कहते हैं कि हमने जो कुछ गाया वह परम ब्रह्म का गुणानुवाद किया—'उद्गीतम् एतद् परम तु ब्रह्म' । उस परम-ब्रह्म मे त्रिगुणात्मक प्रकृति तथा अक्षर जीव सुप्रतिष्ठित हैं—'तस्मिन् त्रयं सुप्रतिष्ठित अक्षर च' । ब्रह्मवेता लोग इन तीनो के परस्पर अंतर (भेद) को जान लेने पर—'अत्र अन्तरं, ब्रह्मविद: विदित्वा—ब्रह्म मे लीन होकर, उसमें रम कर—'लीना: ब्रह्मणि तत्परा:' योनि से अर्थात् जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं—'योनि मुक्ता: ॥७॥

अभी कहा कि सृष्टि मे तीन तत्व है—प्रकृति, जीव तथा ईश्वर । इनमे से प्रकृतिक्षर भी है अक्षर भी है। 'क्षर' का अर्थ जाने वाली, 'अक्षर' का अर्थ है न खरने वाली है—'संयुक्तं एतत् क्षरम् अक्षरम् च' । प्रकृति व्यक्त भी है, अव्यक्त भी है—उसका क्षर रूप व्यक्त है, अक्षर रूप वाली । प्रकृति इन गुणो से युक्त दोनो

लेखक :
प्रो०सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

अव्यक्त है—'व्यक्ताव्यक्तम्' । इस क्षर अक्षर तथा व्यक्ताव्यक्त प्रकृति का, विश्व का भरण ईश्वर करता है—'भरते विश्व ईश:' । ईश्वर तो सर्वशक्तिमान् है, ईश है आत्मा अनीश है—'अनीश: च आत्मा' । यह आत्मा ससार के विषयो के भोग में पड़ कर ससार के बन्धनों मे बध जाता है, यही उसका बध है—'बध्यते भोक्तृभावात्' । ससार में रम जाने के स्थान में जब वह ब्रह्म देव को जान लेता है—'ज्ञात्वा देवम्'—तब वह बन्धनो के सब पाशों से मुक्त हो जाता है—'मुच्यते सर्वपाशै' ॥८॥

'ज्ञ' और 'अज्ञ'—ये दो 'अज' है, (अजन्मा) हैं, 'ज्ञ + अज्ञौ द्वौ अजौ' । इन मे से 'ज्ञ'—अर्थात् ज्ञानमय तो ईश है, परमात्मा है, 'अज्ञ' अर्थात् ज्ञानरहित जो है वह 'अनीश' है, जीवात्मा है । इन दो 'अजो' के अतिरिक्त एक तीसरी है 'अजा'—अजा हि एका, जो भोक्ता के भोग्य के लिये लगी हुई है—'भोक्तृ भोग्यार्थयुक्ता' । इस प्रकार तीन अज, अर्थात् अजन्मा है । एक अज परमात्मा है जिसे 'ज्ञ' कहा, 'ईश' कहा; दूसरा अज जीवात्मा है जिसे 'अज्ञ कहा, 'अनीश' कहा, तीसरी प्रकृति है जिसे स्त्रीलिंगी होने के कारण 'अजा' कहा, जीवात्मा की भोग्य कहा । इन तीनो में जो अनन्त है विश्व रूप है, प्रकृति का भोग नही कर रहा, अकर्ता है, वह परमात्मा है—'अनन्त च आत्मा विश्वरूप हि अकर्ता' । जब ज्ञानी इन तीनो को अपने-अपने रूप मे जान लेता है—'त्रय यदा विन्दते—तब समझ लो कि त्रन के यथार्थ रूप को जान लिया—ब्रह्म एतत् ॥९॥

इस सन्दर्भ मे स्पष्ट प्रतीत होता है कि श्वेताश्वतर उपनिषद् के ये ब्रह्मज्ञानी जो सृष्टि के कारणो के विवेचन की चर्चा कर रहे है, सृष्टि-चक्र के तीन कारण मानते हैं—ईश्वर, जीव तथा प्रकृति ।

'प्रधान', अर्थात् प्रकृति 'क्षर' है, खर जाने वाली है—क्षरं प्रधानम्, 'हर' अर्थात् परमेश्वर 'अक्षर है, खर जाने वाला नही है, अमृत है—अमृताक्षर हर' । क्षर (अर्थात् प्रकृति) तथा आत्मा—इन दोनो पर स्वामित्व उसी एक देव परमात्मा का है—'क्षरात्मानौ ईशते देव एक' । उसी देव के ध्यान मे—'तस्य अभिध्यानात्' उसके साथ अपना सम्बन्ध जोड देने से—'योजनात्' अपने को उसी मे मिटा कर उसमे लीन हो जाने से—'तत्वभावात्' तत्पश्चात्—'भूय.' अन्त मे—'अन्ते' यह आत्मा विश्व-माया के बन्धनो से छूट जाता है—'विश्वमाया निवृत्ति. ॥१०॥

क्रमशः

वेदमनन

सूर्य का अनुगमन

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि ।
सूर्यस्यावृत मन्वावर्ते ॥ यजु: २-२६

ऋषि—वामदेव । देवता-ईश्वर सूर्यश्च ।

शब्दार्थ—हे परमेश्वर ! (स्वयभू) अनादिस्वरूप और स्वयमेव सब को प्राप्त (रश्मि:) प्रकाशक तथा नियामक हैं, अतएव (श्रेष्ठ असि) ब्रह्माण्ड मे सर्वश्रेष्ठ हो । आप (वर्चोदा) तेज, प्रकाश, ब्रह्मचर्य तथा वेदाध्ययन एव ज्ञान को देने वाले हो (असि) हो, अत (मे) मुझे और मेरे पुत्र पौत्रादि को (वर्च:) तेज, प्रकाश, ब्रह्मवर्चस तथा वेदाध्ययन एव ज्ञान (देहि) प्रदान कीजिये । जिसमे (सूर्यस्य) सब को प्रकाश तथा कर्म मे प्रवृत्ति की प्रेरणा देने वाले आपके (आवृतम्) मार्ग का (अनु आवृते) अनुगमन कर सकूं ।

निष्कर्ष—१. इस मन्त्र का देवता ईश्वर भी है । सूर्य की स्थिति सौरमण्डल मे वही है, जो ब्रह्माण्ड मे ईश्वर की है । इसलिये 'सूर्य आत्मा जगस्तस्थुश्च ।' यजु: ७-४२ तथा 'ब्रह्म सूर्य सम ज्योति.' यजु: २३-४८ वर्णन हुआ है । सूर्य का प्रकाश भी स्वयभू है, वह सब को प्रकाश तथा प्रेरणा देता है । ईश्वर राष्ट्रपति है तो सूर्य राज्यपाल है ।

२. सूर्य के मार्ग के अनुगमन का अर्थ है—उसके आचरण के अनुसार आचरण करना । क—सूर्य काल (दिन, रात, पक्ष, मास, वर्ष आदि) निर्माण के पालन मे कभी व्यतिक्रम नही करता । ख—वह प्रकाश तथा प्रेरणा देने में किसी के साथ पक्षपात नही करता । कोई पापी हो या धर्मात्मा, रोगी या स्वस्थ, मनुष्य या पशु पक्षी या कीट पतग सबको समान दान देता है । ग—पृथ्वी से जितना जल लेता है उसे सहस्रगुणित करके वर्षा कर देता है । 'सहस्रगुणमुत्स्रष्टु मा दत्ते हि रस रवि. ।' कालिदास ।

उसी प्रकार वामदेव ऋषि बनने वाले व्यक्ति को भी—

क—समय तथा नियम और व्रत पालन मे पूर्ण बनने का प्रयत्न करना चाहिये ।

ख—सबके साथ समान व्यवहार, सहानुभूति तथा प्रेरणा—रखना व देनी चाहिये । किसी पापी या रोगी से घृणा या उपेक्षा नही करनी चाहिये ।

ग—परमात्मा, राष्ट्र, समाज या कुल मे जितने सुख या सुविधाए मिली हैं, उनको बढाकर उससे अधिक सुख सुविधाए दूसरे को प्रदान करनी चाहिये ।

३ परमेश्वर स्वयभू अर्थात् सबको सदा प्राप्त है । इस बात को जानने और अनुभव करने से मनुष्य जितना चाहे लाभ उठा सकता है । जैसे तजूरी या बैंक मे किसी के खाते मे कितनी ही रकम जमा हो, जब तक उसकी रकम का ज्ञान न हो, उसका उपयोग नही हो सकता; उससे लाभ नही उठाया जा सकता ।

४. वर्च: का अर्थ तेज, ज्ञान तथा ब्रह्मवर्चस तो प्रसिद्ध है । स्वामी दयानन्द ने इसका अर्थ वेदाध्ययन यजु. २-२४ में किया है । वेदाध्ययन द्वारा ही परमेश्वर को स्वयभू समझने की अनुभूति हो सकती है और तभी वह उसके सूर्य रूप का अनुवर्तन कर सकता है ।

स्वयंभू के लिये रश्मि (नियम मे बंधा) होना अनिवार्य है । अन्यथा वह श्रेष्ठ न बनकर अन्यायी, पक्षपाती तथा भयकर बन जाएगा ।

अर्थ पोशक प्रमाण—स्वयभू —स्वयं + भू सत्तायाम् भू प्राप्तौ । स्वयं भू: —स्वयं प्राप्त ।

वर्च: वेदाध्ययनम् स्वा० दया० । रश्मिर्यमनार्थ:—स्वामी भगवदाचार्य ।

आवृतम् आवर्तनम् — पन्थानम् । स्वा० भगव० ।

सूर्य.—सुप्रसवैश्वर्ययो: । सु० अभिषवे सू प्रेरणे ।ईश्वर: सूर्यश्च ।

—मनोहर विद्यालंकार

सम्पादकीय

देश के विभाजन की फिर से मांग

आर्य सन्देश के स्तम्भो में इस बात की निरन्तर चर्चा की जाती रही है कि देश मे विघटनवादी तत्व सक्रिय हैं और इसलिए देश की अखडता को खतरा पैदा हो गया है। इसी प्रसग को लेकर पूर्वांचल क्षेत्र के विभिन्न भागों के आन्दोलनो, विद्रोहो और नरसहारो की चर्चा भी समय-समय पर की गई है। यह भी हम विचार व्यक्त कर चुके है कि कश्मीर और हैदराबाद के साम्प्रदायिक दंगे भी इन्ही विघटनवादी तत्वो की योजनाओ के परिणाम थे। मुरादाबाद सम्बन्धी पूरी घटनाओ का विश्लेषण करने के बाद हमारी यह राय है कि यह 'मुस्लिम विद्रोह' का प्रारम्भ था जिसे कुछ विघटनवादी तत्वो ने प्रारम्भ किया था। देश के विघटन के लिए प्रयत्नशील तत्वो की गणना यहीं समाप्त नही होती। काफी समय से इस सम्बन्ध मे पजाब से जो समाचार मिल रहे हैं वे बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण हैं। पंजाब के साम्प्रदायिक तत्व अब इतने क्रियाशील हो उठे हैं कि उन्होंने खालिस्तान के नाम से एक अलग देश की मांग शुरू कर दी है। इससे पजाब के हिन्दुओ में आतंक का वातावरण बन ही गया है इसके साथ ही देश भर के लिए ही एक गम्भीर समस्या पैदा हो गयी है।

'खालिस्तान' अथवा 'सिक्खिस्तान' बनाने की माग नई नही है। देश के स्वतन्त्र होने के बाद विभाजन के साथ ही दबे शब्दो मे यह माग शुरु हो गयी थी। उस समय पश्चिमी पजाब अर्थात् वर्तमान पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू शरणार्थियो को तो हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और गुजरात क्षेत्रों मे फैलाकर बसाया गया जबकि वहा से आने वाले सिक्ख शरणार्थियो को योजनाबद्ध रूप से पूर्वी पजाब मे केन्द्रित किया गया। उस समय के पजाब मे योजनाबद्ध तरीके से सिक्खो को बसाने पर भी वहां उनका बहुमत नही हो पाया। सिक्खों के निरन्तर आन्दोलन के कारण और इस आन्दोलन को भाषायी रूप दे देने के कारण पंजाब का विभाजन करके एक सिक्ख बहुल राज्य की स्थापना की गयी। उस समय देश भर मे भाषा के आधार पर राज्य बनाने के जो आन्दोलन चल रहे थे, उनका भी यह परिणाम था। यह सक्ख बहुल राज्य पजाबी भाषा के आधार पर बनाया गया था। यह तर्क दिया गया था कि पजाब की भाषा पजाबी है इसलिए पजाबी राज्य बनाया जाना चाहिए। राजनीति के अध्येताओ ने यह तभी चेतावनी दी थी कि भाषा के नाम पर यह जो राज्य बनाया जा रहा है वह एक सम्प्रदाय को बहुमत प्रदान करना है और इसके दूरगामी प्रभाव सम्पूर्ण देश की दृष्टि से हितकर नही होगे।

पजाबी राज्य बनते ही 'सिक्खिस्तान' की मांग का भी सरकारी सरक्षण मे प्रचार शुरु हो गया। पजाब मे चाहे अकाली सत्तारूढ रहे अथवा कांग्रेस सत्तारूढ रही, प्रत्येक सत्तारूढ़ दल ने सिक्ख साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित किया। अकालियो द्वारा इस साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने का कारण उनके उद्देश्यो मे निहित है, परन्तु कांग्रेस ने सिक्ख वोटो को ध्यान मे रखते हुए इस सिक्ख साम्प्रदायिकता को प्रश्रय दिया। इस प्रतियोगिता मे विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियां भी पीछे नही रही और उन्होंने भी मार्क्सवादी सिद्धान्तो की दुहाई देते हुए साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित करने मे कोई कमी नही रखी। बल्कि कुछ ऐसे भी समाचार मिले कि कम्युनिस्ट दल 'सिक्खिस्तान' अथवा 'खालिस्तान' नाम से अलग देश बनाने के आन्दोलन का भी सक्रिय समर्थन करते रहे। राजनीतिक स्तर पर पजाब मे यह स्थिति पैदा हो गई कि इससे न केवल अकालियो का मनोबल बढा, लड़ाकू वृत्ति के कारण स्थान स्थान पर उनके आधिपत्य जमाने के उदाहरण सामने आये, विरोधियो को आतंकित करने के भी अनेक उदाहरण सामने आये। एक ओर राजनीतिक प्रश्रय मे अकालियों की शक्ति मे वृद्धि हुई तो दूसरी ओर हिन्दुओ की स्थिति निरन्तर कमजोर होती गई। आज स्थिति यह है पजाब मे हिन्दू दूसरी श्रेणी का नागरिक है। यह मान लिया जाता है कि यहां के हिन्दुओ को कोई राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अथवा धार्मिक अधिकार नही है। इन सभी क्षेत्रो से हिन्दुओ को निकाल बाहर करने के प्रयत्न किये जाते हैं। ऐसे समाचार भी अनेक बार मिले है जब हिन्दुओ के मन्दिरो (इसमे आर्यसमाज मन्दिर भी सम्मिलित हैं) को अपवित्र करने के प्रयत्न किये गए।

इस प्रकार के वातावरण मे पजाब के आन्तरिक जन-जीवन मे जो सघर्ष चल रहा है उसकी केवल कल्पना ही जा सकती है। जो चीज बाह्य रूप से दिखाई नही देती, आन्तरिक रूप से वह उतनी ही अधिक बेचैनी पैदा करने वाली है। पजाब राज्य मे द्वितीय श्रेणी के नागरिक हिन्दुओं की जब यह स्थिति है तब उसके एक पृथक् देश बन जाने पर हिन्दुओ की क्या स्थिति होगी उसका आभास वर्तमान स्थिति मे हो जाता है। हमारे देश के राजनीतिज्ञों की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि वे हिन्दू शब्द के आते ही उसे हिन्दू साम्प्रदायिकता से जोड़ देते हैं और देश की राजनीति पर पडने वाले व्यापक प्रभावो की वे उपेक्षा कर देते हैं। इसी नीति का परिणाम देश का विभाजन था। अब हम यदि वही उपेक्षा वृत्ति अपनाये रहेगे तो देश के विभिन्न भागो मे होने वाली विघटनवादी प्रवृत्तियो के कारण देश के कितने खंड हो जायेंगे इसे कोई नही जानता।

आर्यसमाज किसी भी प्रकार की विकट परिस्थितियो मे कदम उठाने मे सदा पहल करता रहा। इस बार यह पहल आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की है। यह स्वाभाविक भी है क्योकि देश के पुनर्विभाजन का सबसे पहला प्रभाव पजाब के लोगों पर ही होगा। ऐसे कठिन समय मे पजाब की जनता का नेतृत्व जिस सही रूप मे पजाब सभा ने किया है उसके लिए वह बधाई की पात्र है। पजाब सभा के आदेश के अनुसार पजाब भर मे २६ अक्तूबर को विरोध दिवस मनाने का आयोजन किया गया। इस विरोध दिवस मनाने का मुख्य प्रयोजन ही जन-साधारण को आने वाले संकट से सावधान करना है। हमे आशा है कि न केवल आर्य जनता बल्कि पजाब के अन्य निवासी भी इस सकीर्ण और आत्मघाती माग का विरोध करने के लिए सगठित हो जायेंगे। हम समझते हैं कि सिक्खो मे भी ऐसा वर्ग विद्यमान है जो कि अकालियो की साम्प्रदायिकता से बहुत चिन्तित, बल्कि कहना चाहिए आतंकित है और वे भी इस प्रकार की देश विरोधी माग का विरोध करने मे अन्य लोगो का साथ दे सकते हैं। यदि इन देश-विभाजन-विरोधी-तत्वो को सगठित कर लिया जाए तो यह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की बहुत बडी विजय होगी।

हिन्दू कोड बिल

अभी पिछले दिनो राजधानी मे एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें दिल्ली के अनेक प्रमुख कानून वेत्ताओं विशेष रुप से महिला कानून वेत्ताओ ने भाग लिया। इस गोष्ठी मे महिलाओं से संबद्ध अनेक कानूनी जटिल समस्याओं पर विचार हुआ। उसके साथ ही एक समस्या पर सब का ध्यान केन्द्रित हो गया और वह समस्या थी हिन्दू कोड बिल के सबन्ध मे। इस गोष्ठी मे एक विद्वान वक्ता ने ध्यान दिलाया कि यदि कोई विवाहित हिन्दू धर्म परिवर्तन करके मुसलमान हो जाता है, वह दूसरा करने को स्वतन्त्र हो जाता है। परन्तु उसकी हिन्दू पत्नी यदि हिन्दू पति के धर्म परिवर्तन के कारण अपना पुनर्विवाह करना चाहती है तो वह कानून की वर्तमान व्यवस्थाओ के अनुसार दूसरे विवाह की अपराधिनी बन जाती है। इस प्रकार सामान्य कानून की दृष्टि से अपराधी होने के साथ एक और विडम्बनापूर्ण स्थिति यह पैदा हो जाती है कि मुस्लिम व्यक्तिगत कानून के अन्तर्गत हिन्दू स्त्री का यह पुनर्विवाह 'अनियमित' हो जाता है।

हमारे देश में इस समय कई कानून प्रचलित हैं। हिन्दू कानून, मुस्लिम कानून पारसी कानून, और सामान्य कानून। इससे स्पस्ट हो जाता है कि कानूनी दृष्टि से हमारा देश एक बिखरा हुआ देश है। अन्य सभी सम्प्रदाय अपने विशेष कानूनो द्वारा अपनी स्थिति मजबूत बना लेते है जबकि उन कानूनो के प्रभाव से हिन्दूओ की स्थिति कानूनो दृष्टि से कमजोर हो जाती है। वैवाहिक सम्बन्धों की दृष्टि से हिन्दूओ की स्थिति कितनी कमजोर है इसका एक पक्ष तो ऊपर दे ही दिया गया है। साथ ही तलाक, बच्चों का अविभावकत्व और उत्तराधिकार सम्बंधी अनेक समस्याएं भी है। इस ओर बार-बार ध्यान खींचा जाता रहा है कि देश के विभिन्न वर्गों के लिए विभिन्न कानूनो का होना केवल हिन्दुओं की दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक तथा राजनीतिक दृष्टि से भी तनाव पैदा करने वाला है। इसी कारण आर्यसमाज के मच से यह प्रश्न अब उठाया जा रहा है। यदि हमारे देश के विधिशास्त्री विशेष रुप से सरकारी विधि शास्त्री और न्यायपालिका से सम्बद्ध लोग इस समस्या को सुलझाने के लिए देश भर मे एक ही प्रकार का कानून लागू करने की सम्भावना पर विचार कर सके तो अधिक उपयुक्त होगा। देश के जाने माने विधिवेत्ता मोहम्मद करीम छागला तो अनेक बार इस समस्या की ओर ध्यान खींच चुके है। वे इस माग के पक्ष मे ही नहीं हैं' बल्कि स्वय इस बात के प्रचारक है कि देश के सभी नागरिको के लिए एक ही प्रकार का कानून होना चाहिए। इसलिए आर्य समाज जब यह माग करता है तो वह देश के विख्यात विधि और न्यायशास्त्रियो के विचारो के अनुकूल होती है।

जहा तक हिन्दूओं का सम्बन्ध है यह समस्या केवल इसी देश तक सीमित नही है बल्कि देश से बाहर भी ऐसे कुछ मुस्लिम देश है जहा की व्यवस्था के

(शेष पृष्ठ ५ पर)

क्रान्ति - दर्शन

ऋषि:—निध्रु विः (निश्चित ध्रुव) । देवता-पवमान सोम. ।
छन्द — गायत्री । स्वर षड्जः ।

अनुप्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः ।
रूचे जनन्त सूर्यम् ।।

साम पूर्वाचिक—६-२-६ ।।
ऋग्वेद—६-२३-२ ।।

१— जिसका भावी प्रगतिशील, उन्नति से कभी नही ससर्ग,
चाह रहा हू न वह आत्म सन्तुष्ट, शान्ति निर्मित अपवर्ग ।
मुझ को प्यारी चिर आविष्कारिणी, क्रान्तिकारिणी अशान्ति,
वही जगत-जजाल जिसे सब, नरक, समझते मेरा स्वर्ग ।।

२— जो अनादि से बैठे हैं अब तक, लकीर के बने फकीर,
नही चाहता हू उन देवो का, निर्भ्रान्त स्वर्ग चाचीर ।
मुझको प्यारो शका जिस पर, आश्रित कला और साहित्य,
नही सत्य पर सुन्दर की है, प्रेमी मेरी भ्रान्ति कुटीर ।।

३— लत का दास न बनना मुझको, मुझे एक- रमता है भार,
नव-रस क्या, है कोटि रसो का, इष्ट मुझे जग मे सवार ।
सुख,दुख, अमृत, गरल रण, हिंसा, प्रेम द्वेष या धर्म अधर्म,
सबके लिए समान खुला है, मेरी सहिष्णुता का द्वार ।।

४— हैं अछूत पापो के ऊपर, देवालय मे शत प्रतिबन्ध,
पाप-पुण्य दोनो मे मुझको, एक समान किन्तु सबन्ध,
देवालय के यज्ञ पुण्य के, पक्षपात मे ही तल्लीन,
मेरे जग मे उठती है निष्पक्ष, न्याय की यज्ञ-सुगन्ध ।।

५— देवो को सुख-भोग इष्ट है, मुझको किन्तु कर्म से प्यार,
और न वे सामान्य कर्म जिनका, है सब स्वभाव आधार ।
किन्तु कर्म वे, जिनसे पूरे, होते आदर्शों के स्वप्न,
जिनमे पीड़ाओ के उत्सव, जिन्हे हार भी है उपहार ।।

६— नही रुकेगी पा अप्राप्त स्वर्ग, भी मेरी गति गम्भीर,
कही स्वर्ग से आगे स्थिति है, मेरी उज्जवल क्रान्ति कुटीर,
कही चरम सीमा है मेरी, उन्नति की अक्षय आनन्द ।
मेरी तृष्णा की सतृप्ति कुछ, खेल नही, है टेढ़ी खीर ।।

७—भोले भाले देवगणो के, तुल्य न भोली मेरी प्यास,
केवल अमृत पिलाकर इसको, विष्णु नही सकते हैं टाल,
है अभाव की भाव भरी यह, अक्षय झोली मेरी प्यास ।।

८— कैसे हो अमरत्व सुरो, के सम, फिर मुझको अगीकार ।
नवजीवन के आगे मुझको, सजीवद बिलकुल नि: सार ।
वह तो कहो, मनुज की इच्छा, विधि ने की पहले ही पूर्ण,
उसे अन्यथा स्वय मृत्यु का, करना पड़ता आविष्कार ।।

९— किसी एक स्थिति को उन्नति की कैसे अन्तिम सीमा मान,
बैठू मैं, चाहे वह अपना हो या हो दैवीय विधान ।
कैसे फिर मुझको हो सकती, है अगीकृत मुक्ति अनन्त,
कैसे आवागमन छोड कर, दू समाप्त अपना आख्यान ।।

१०— अपना अपना दृष्टि कोण है. अपना अपना ज्ञान-विवेक,
तृप्ति अभीष्ट सुरो को, मेरी, मागो की अतृप्ति है टेक ।
देवो पर छा गया स्वर्ग का, मोह, अप्सराओं का जाल,
इस अतृप्ति ने किन्तु बिगाड़े, और बनाये स्वर्ग अनेक ।।

११—गाने दो देवो को सुख के, मद मे जीर्ण स्वर्ग का गीत,
अपने स भी तुष्ट न होगा, आत्म विवेचक मनुज विनीत ।
सर्वमुखी प्रतिभा वाले को पूर्ण भाव का साधन इष्ट,
केवल सात्विक देव नही, मुझ को बनना है त्रिगुणातीत ।।

१२—बार बार पतझड़ मे परिणत, होता इसीलिये मधु मास,
इस अतृप्ति को नही प्रकृति का, भाता जड़ता-ग्रस्त विकास ।
यह अतृप्ति ही की लीला है, यह अतृप्ति ही का है खेल,
स्वर्ग वही का वही रह गया, बदल गया जग का इतिहास ।।

१३— तृप्ति स्वार्थ मे डूबी बैठी, पर अतृप्ति को नही विराम,
तुम्ही बताओ इन दोनो मे, कौन सकाम कौन निष्काम ?
मैं तो कहता यदि अतृप्ति देती, न विधाता को सहयोग,
'अग्नि' नास्ति के सम हो जाती, और प्रलय सम सृष्टि ललाम ।।

१४—प्रलय हो गई अगर सो गया, इस अतृप्ति का भ्रमित मिलिन्द,
सृष्टि हो गई सत् युग आया, विकसा जब अतृप्ति-अरविन्द ।
इस अतृप्ति के पथ असीम पर, बैठ गया जब थकित मनुष्य,
तब सच्चा अध्यात्म मिल गया, को रूढि-पूजक जन वृन्द ।

१५—तुम कहते हो क्रान्ति कर रही, क्यो अतृप्ति मेरी अविराम,
पूर्ण सृष्टि है, पूर्ण विधाता, फिर सशोधन का क्या काम ?
नास्तिकता या पाप यही है, जो बस देख दोष ही दोष,
नित अल्पज्ञ मनुज करता, सर्वज्ञ विधाता को बदनाम ।।

१६—सभी पिताओ को होता यह, इष्ट कि उनकी हर सन्तान,
उनमे भी कुछ अधिक कीर्ति-यश, पाये और करे उत्थान ।
क्या आदर्श पिता इतना सकुचित, कि निज पुत्रो हेतु,
नही करेगा अपने से कुछ अधिक, कीर्ति दायक सुविधान ।

१७—सभी पिता अपने पुत्रो को सौपा, करते अपना भार,
अपने परम पिता की वसुधा, का मानव भी है कर्तार ।
पुत्र पिता के सम हो जाये, इसमे कौन भला अनरीति,
पुत्र पिता से भी बढ जाये, इसमे कौन भला उपकार ।।

१८—क्रान्ति मनुज कर अपरिहार्य, ईश्वर-कृत जन्म सिद्ध अधिकार,
जन्मसिद्ध अधिकार न बस है, क्रान्ति मनुष्य धर्म का सार ।
इसी क्रान्ति के आविष्कारो पर, आश्रित जग का सुविकास,
इसी क्रान्ति से सदा नया, का नया नया बना रहता संसार ।।

१९—यदि दैवीय चमत्कृति से, काटो मे भी लग जाते फूल,
विष को शोध मनुज प्रतिभा भी, करती अमृत तुल्य अनुकूल ।
यदि दैवीय शक्ति कर सकती, पल ही मे राजा को रक,
बन सकती अनुभूति आन मे मेरी पतिता'अबला भूल ।।

२०—माना, सृष्टि रची विधना ने, किन्तु मनुज ने भी वह काम
करके दिखा दिया, जिससे, उसका विधि से कुछ गौण न नाम ।
वस्तु वस्तु का रूप बदलकर उसने रच दी सृष्टि नवीन,
बना निरर्थक को सार्थक कर, दिया विकृति को छवि अभिराम ।।

२१—प्रभु मे और भक्त मानव मे, चिर होती आई होड़,
जब जब उन्हें मनुज ने देखा, लिया उन्होने तब मुख मोड ।
यद्यपि सृष्टि-रहस्योद्घाटन, किया मनुज ने शत शत बार.
किन्तु बड़े से बड़े सत्य को, दिया रूढि ने तोड़-मरोड़ ।।

२२—लाख रूढियो के परदो मे, सतत जा छिपे कृपानिधान,
किन्तु सजग नर की अतृप्ति ने, लिया उन्हें तब भी पहिचान ।
इस झगड़े में मानव जीता, सिद्धि-विधाता ही को और
समय समय पर नर को करनी, पडी उच्च सिद्धिया प्रदान ।।
विधि का प्रतिवन्द्वी बनने मे ही, आस्तिकता का मर्म,
सच्ची ईश्वर-भक्ति यही है और यही सच्चा सत्कर्म ।
चिर अतृप्ति की निठुर नियति मे, रण ही मे जीवन का सार,
मर मर कर भी निज अतृप्ति की, रक्षा करना मेरा धर्म ।।

२४—परम्परा का पथ होने ही से, होता पथ नही पुनीत,
चाहे वह विधिकृत हो या हो किसी ग्रन्थ द्वारा निर्णीत ।
मेरे मानव जीवन को यह, बात नही हो सकती सह्य,
मेरे वर्तमान के ऊपर, शासक हो निर्जीव अतीत ।।

२५—नही द्वेष उर को अतीत से, इसको पारतन्त्र्य से द्वेष,
सूर्य न इसका मार्ग प्रदर्शक. यह है अपना स्वय दिनेश ।
नही न्याय अन्याय तथा, उन्नति अवनति की तो कुछ बात,
अपना भाग्य-विधाता बनने, का इसमे है प्रश्न विशेष ।।

२६—यही क्रान्तिकारी अन्त: रवि, करता नवयुग का निर्माण,
नही आज से किन्तु सनातन, से यह अखिल विश्व का प्राण ।
नही क्रान्ति हित क्रान्ति किन्तु, इसकी अतृप्ति का यह सदेश,
आदि-अन्त मे भेद न कोई, 'पुरा नव' इत्येव पुराण ।।

२७—क्रान्तिशील यद्यपि अतृप्ति मेरी बस दुहराती इतिहास,
पर पुनरुक्ति दोष के बदले, इसमे मञ्जु विरोधाभास ।
यह आपेक्षिक उन्नति मे रत, इसे न आदि अन्त का मोह,
भव सागर की मध्य तरगो, पर इसका रमणीय निवास ।।

—जगन्नाथ प्रसाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की विज्ञप्ति

अकालियों द्वारा देश के पुनर्विभाजन की मांग

'खालिस्तान' बनाने का आन्दोलन : विदेशों में प्रचार

कुछ साम्प्रदायिक, राष्ट्र विरोधी और विघटनवादी शक्तियां फिर मे अपना सिर उठाने लगी हैं। पिछले दो साल से उत्तरप्रदेश, काश्मीर और कुछ अन्य प्रान्तो में जो कुछ हुआ है, उसकी अवहेलना नही की जा सकती। अब समय आ गया है कि इस देश की अखण्डता, को किसी प्रकार भी भग नही होने दिया जायेगा।

पंजाब मे कुछ अकालियों ने दो कौमो के सिद्धान्त को फिर से प्रतिपादित करके यह कहना शुरू कर दिया है कि हिन्दू और सिक्ख दो राष्ट्र हैं। मुहम्मद अली जिन्ना के पद चिन्हो पर चलते हुए उन्होने 'खालिस्तान' का भी एक लक्ष्य अपने सामने रख लिया है। प्रान्तीय स्वायत्तता के नाम पर वह पंजाब का और विभाजन चाहते हैं। उनके एजेंट और प्रचारक दूसरे देशो में जाकर हमारे देश के विभाजन के लिए प्रचार कर रहे हैं। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसका सामना करने के लिए उन सभी व्यक्तियों और सस्थाओं को एक हो जाना चाहिये जो अपने देश की अखण्डता और उसकी एकता को सुरक्षित रखना चाहते हैं। आर्यसमाज ने देश के स्वाधीनता सग्राम में विशेष योगदान दिया था। इसलिए अब वह इस नई शरारत को मौन रह कर देख नही सकता। कुछ अकाली हमारे पंजाब प्रान्त के सामान्य जीवन को नष्ट कर देना चाहते हैं।

आर्यसमाज का अटल विश्वास है कि एक देश में एक ही राष्ट्र हो सकता है, इसलिए आर्यसमाज दो राष्ट्रो के सिद्धान्त को अस्वीकार करता है। उसका यह भी निश्चित मत है कि भारत मे एक राष्ट्र, एक विधान और एक राष्ट्रीय ध्वज रह सकता है, जो व्यक्ति दो 'राष्ट्र' का नारा लगा रहे है, उनके साथ वही व्यवहार होना चाहिए, जो विदेशियो के साथ होता है। यदि वे अपने आपको भारत राष्ट्र का एक अंग नही समझते तो यही उचित होगा कि वे इस देश को छोडकर किसी ऐसे देश मे चले जाए, जहाँ वे अपने विधान द्वारा शासन चला सकें। हमारे देश मे ऐसे व्यक्तियो के लिए कोई स्थान नही होना चाहिए। पजाबी सूबा बनने के पश्चात् हम समझ रहे थे कि अकालियों की ओर से अब कोई नई माग नही की जायेगी। परन्तु अब 'खालिस्तान' का नारा लगाकर और दो राष्ट्रो के सिद्धान्त को पेश करके उन्होने बता दिया है कि उन पर विश्वास नही किया जा सकता।

इसलिए आर्य-प्रतिनिधि सभा पजाब इस देश की सब राष्ट्रीय शक्तियो का आह्वान करती है कि वे हमारे देश की एकता और अखडता के लिए जो नया सकट पैदा हो रहा है, उसे रोकने के लिए कटिबद्ध हो जायें।

इसी के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, पंजाब की सब आर्यसमाजो को यह आदेश देती है कि रविवार २६ अक्तूबर को एकता दिवस मनाए और इस [...] षड्यन्त्र को जनता के सामने उसके वा[...] विक रूप मे रखें, जो हमारे राष्ट्र [...] हमारे देश की एकता और सगठन [...] विरुद्ध किया जा रहा है। हमे यह बि[...] कुल स्पष्ट कर देना चाहिए कि हम कि[...] भी अवस्था मे दो राष्ट्रो के सिद्धान्त [...] स्वीकार नही करते और प्रत्येक रूप [...] इसका विरोध करेंगे।

आर्यवीरों की रैली

समस्त चोगामा क्षेत्र के आर्यवीरो की सयुक्त रैली १९ अक्तूबर १९८० को भडल आर्यसमाज के आमन्त्रण पर बडी ही धूमधाम और उत्साह पूर्ण वातावरण मे प्रारम्भ हुई। आर्य वीरो की अलग-अलग टोलिया नामपट्ट और ध्वज लहराते हुए साढे सात बजे रैली प्रागण मे पहुच गई थी।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर जी हंस भी साढे आठ बजे दिल्ली से चलकर भडल ग्राम पधार गये थे इससे आर्य वीर बहुत ही उत्साह और जोश मे भरे हुए थे। सर्व प्रथम श्री प० फूलचन्द्र शर्मा ने यज्ञानुष्ठान कराया। चारो वेदो के विशेष मंत्रो से यज्ञ मे आहुति दी गई। तत्पश्चात् प्रधान संचालक श्री प० बालदिवाकर हंस जी का यज्ञ की महत्ता पर बडा ही प्रभावोत्पादक भाषण हुआ। जिसकी उपस्थित जन-समूह ने नारे और तालिया बजाकर स्वागत किया।

मध्यान्ह मे ऋषि लंगर मे लगभग ५०० आगन्तुक अतिथियो को खीर आदि सुस्वाद भोजन खिलाकर आर्यसमाज भडल की ओर से प्रधान चौ० ह[...] सिह जी ने भारी आतिथ्य किया।

फूलसिह [...]
संयो[...]

(पृष्ठ ३ का शेष)

अनुसार कोई भी हिन्दू-पुरुष अथवा [...] यदि किसी मुस्लिम स्त्री अथवा पुरु[...] बिवाह कर ले तो वह विवाह करने व[...] हिन्दू भागीदार स्वत ही मुस्लिम [...] जाता है। यह एक पक्षीय स्थिति [...] देशो मे हिन्दूओ को मुसलमान बना[...] अनुकूल है। हमारी कठिनाई यह है [...] हमारे देश की सरकार इस प्रकार [...] विषमताओ से प्रवासी हिन्दूओं की [...] करने के लिए कोई कदम नहीं उठा[...] यदि हिन्दू कोड बिल मे परिवर्तन [...] मांग के साथ विदेशो के प्रवासी हि[...] की इस विषम स्थिति मे परिवर्तन [...] के लिए आर्यसमाज कोई वैचारिक [...] प्रदान कर सके अथवा इस प्रकार [...] कोई माग कर सके तो वह सम[...] माग के अनुकूल होगा।

बोध कथा

और एक मां

—नेमीचन्द पटोदिया

छत्रपति शिवाजी की शूरता और कीर्ति अपने मध्याह्न पर दमक रही थी। उसने दिल्ली के शाह शाह औरंगजेब के दांत बार-बार खट्टे किये थे। दक्षिण में मराठो से लोहा लेने वाला कोई राज्य नहीं था। निजाम और बीजापुर तो कर देकर अपने राज्य की सीमा बचाये हुए थे। हां दक्षिण मे एक छोटी स्वतन्त्र रियासत थी 'बल्लारी'; जिसकी शासिका थी एक विधवा स्त्री। नाम था रानी मलवाई देसाई। रानी मलवाई वीरता और आन की सजीव प्रतिमा थी। उसने प्राण रहते बल्लारी की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने की प्रतिज्ञा की थी, सेनिक और प्रजाजन अपनी शासिका के अनन्य भक्त थे।

मराठो को यह स्वतन्त्र छोटी रियासत खलने लगी। उन्होंने अपनी विशाल सेना के साथ बल्लारी राज्य पर हमला बोल दिया। रानी मलवाई देसाई स्वयं केसर-बाना पहिन कर और हाथ मे नगी तलवार लेकर युद्ध मे पिल पडी। बल्लारी की मुट्ठी भर सेना ने एक दफे, तो मराठा सैनिको के पैर उखाड दिये, पर अन्त मे बहुसंख्यक मराठा, सेना की ही विजय हुई, और अनेक सैनिक के साथ रानी मलवाई देसाई भी बंदी बना ली गयी।

शिवाजी की आज्ञानुसार बंदिनी मलवाई सम्मान के साथ उनके सामने लायी गयी। शिवाजी को देखते ही बंदिनी मलवाई गरजी कि "छत्रपति। आप महाराजा है, आपका बडा नाम है, इसलिए आज एक बंदिनी स्त्री के सम्मान का ढोंग रचाकर उसका अपमान करने पर तुले हैं? फिर कुछ दर्द भरी आवाज मे कहा, "बल्लारी-राज्य ने आपके विरुद्ध कभी उगली तक नही उठायी, फिर क्यो उस पर युद्ध का प्रलय ढाया गया? फिर सामान्य रूप से बोली: 'आपका राज्य स्वतन्त्र है, मेरा राज्य भी कुछ देर पहिले तक स्वतन्त्र था। अपने राज्य की स्वतन्त्रता की रक्षा करना प्रत्येक वीर शासक का कर्त्तव्य है, वही मैंने किया। रही पराजय की बात तो हमारे मुट्ठी भर सैनिक आपकी विशाल सेना के आगे कब तक टिकते? लेकिन हमारे वीर अन्तिम सांस तक भी पीछे नही हटे। मैं तुम्हारी बंदिनी हू, मेरे सम्मान का इस प्रकार अभिनय करने से पहिले मुझे मृत्यु दण्ड दें। फिर एक तेज स्वर मे बोली, मैं बल्लारी की जय बोलते-बोलते हसते हुए प्राण विसर्जित करना चाहती हू।

शिवाजी का हृदय विशाल था। उन्होने देखा सुना, फिर एकाएक सिंहासन से उतरे, और आकर रानी मलवाई के सामने सविनय हाथ जोड़े। फिर हाथ जोड़े हुए ही मस्तक झुकाकर बोले, हे माता रानी मलवाई! मेरा प्रणाम स्वीकृत हो। इस अप्रत्याशित दृश्य को देखकर रानी आश्चर्य से देखने लगी। फिर शिवा जी बोले 'मैं घोषणा करता हू कि बल्लारी जैसे पहिले स्वतन्त्र था, वह अब भी है। विश्वास कीजिये मैं आपका शत्रु नही, पुत्र हू। फिर रुक कर स्नेहपगी भाषा में वे बोले: 'माता जीजाबाई के देवलोक के बाद मैं मातृहीन हो गया था, लेकिन आप मे मुझे अपनी माता के तेजोमय दर्शन हो गये। मानो मुझे अपनी माता के पुनर्मिलन का सौभाग्य प्राप्त हो गया। उनका गला भर आया, और वे बोल न सके।

इस अप्रत्याशित और अनोखी वात्सल्य-भरी भूमिका से रानी मलवाई का जननी हृदय पानी-पानी हो गया। उनके नेत्र छलछला आये, और वे गद्-गद् वाणी मे रुक-रुक कर बोली, 'छत्रपति! तुम सत्य ही छत्रपति हो। तुम हिन्दू धर्म के सच्चे रक्षक हो'। तुमने मुझे मातृत्व का महान् पद दिया है, उसके गौरव की रक्षा मैं जीवन भर करूंगी। अब बल्लारी की संपूर्ण शक्ति सदा तुम्हारी सहायक होगी। ऐसा कहकर वह चुप हो गयी तो दोनों ओर की सेना छत्रपति महाराज की जय' की तुमुल ध्वनि करने लगी। शिवाजी महाराज ने भी ऊंचे स्वर मे हाथ उठाकर उद्घोष किया 'माता मलवाई की जाय।

मा—बेटे का यह पुनीत सम्बन्ध दोनो देशों ने अन्त तक निभाया। मराठा इतिहास के पृष्ठ इस घटना से दमक उठे। संसार का कोई भी देश ऐसे उदात्त उदाहरण रखने मे असमर्थ रहा है। भारत का अतीत न जाने कितने ऐसे जगमगाते गौरव को अपने में समेटे हुए कही छुपा पड़ा है। ●

आर्यसमाजों के सत्संग

२-११-८०

अन्धामुगल प्रतापनगर—प०रामरूप शर्मा, अमर कालोनी—प्रो.वीरपाल विद्यालकार; अशोकविहार के-सी-५२-ए—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, एम-ए; आर्यपुरा—प०सीस राम भजनोपेदशक, आर के पुरम सैक्टर ६—डा०वेद प्रकाश महेश्वरी; किंग्जवेकैम्प-श्रीमती सम्पदा आर्य; कृष्णनगर—लाला लखमीदास, कालकाजी—श्रीमती लीलावती आर्या; कालकाजी डी-डी-ए फलैट्स-एल-१।१४३ ए—डा०रघुनन्दन सिंह; करोलबाग-प०ईश्वरदत्त एम ए; गांधी नगर—प्रो०सत्य पाल वेदार, १५१-गुप्ता कालोनी-प० वेदपाल शास्त्री; गोविन्दपुरी—पं०हीराप्रसाद शास्त्री; १६-गोल्फलिक—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका-प्रात १० के११--प अशोक कुमार विद्यालकार; जंगपुरा भोगल-प० सत्यभूषण वेदालकार; जनकपुरी बी ब्लाक —श्री मोहन लाल गांधी, जहांगीरपुरी—प० प्रकाशवीर व्याकुल, झिलमिल कालोनी पं०तुलसीराम भजनोपदेशक, टैगोर गार्डन—प०प्रकाश चन्द शास्त्री; तिलकनगर—प०प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; दरियागंज—आचार्य हरिदेव सि० भू०; देव नगर—प०सत्यकाम वेदालकार; नारायण विहार—पं० प्रकाशचन्द वेदालकार, नयाबांस —प० विश्व प्रकाश शास्त्री; न्यू मुलताननगर—पं०जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति, पंजाबी बाग—प० विष्णुदेव प्रसाद विद्यालकार, पंजाबीबाग एक्स्टैनशन १४/३ —प० गजेन्द्र पाल शास्त्री; पश्चिमपुरी जनता क्वार्टरज—प०ओम प्रकाश भजनोपदेशक; बाग कड़े खां—पं०बरकत राम भजनोपदेसक; माडल टाऊन—प०केशवचन्द्र मुन्जाल; मोती बाग—आचार्य कृष्ण गोपाल, माडल बस्ती, पं० हरीश वेदी; महरौली —प०महेन्द्र प्रताप शास्त्री, रमेश नगर—पं०ओमवीर शास्त्री, राजौरी गार्डन—पं०गणेश प्रसाद विद्यालकार; लड्डूघाटी—पं०अर्जुन देव प्रभाकर; लाजपत नगर —प०देवेश, विक्रम नगर—प०अर्जुन देव आर्य, विनय नगर—प०विजय पाल शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो०भारत मित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प०देवराज, साउथ एक्स्टैनशन २—प०अशोक कुमार विद्यालकार श्रीनिवासपुरी—साय ४ से५।। प० मनोहर विरक्त; हनुमान रोड—प० हरिशरण, हौजखास ई-४६--प० मुनिशकर वानप्रस्थ तथा प०आशा नन्द भजनोपदेशक।

आर्यसमाज गतिविधि

हीरक जयन्ती महोत्सव

आर्य कन्या इण्टर कालेज इलाहाबाद हीरक जयन्ती महोत्सव रविवार १४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर ८० तक समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। सम्पूर्ण यजुर्वेद से नित्य प्रात काल यज्ञ होगा। छात्राओ के लिए कवि सम्मेलन, वेद सम्मेलन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, यौगिक प्रदर्शन आदि का आयोजन है। आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् सन्यासी, उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

भाषण प्रतियोगिता

—आर्यसमाज (वैस्ट) पटेलनगर, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर १५ नवम्बर ८० को मध्याह्न २ बजे महर्षि दयानन्द के जीवन से शिक्षा' विषय पर स्कूल के छात्र-छात्राओ की एक भाषण प्रतियोगिता होगी।

वार्षिक शिविर

—वेद सस्थान, सी-२२ राजौरी-गार्डन नई दिल्ली का वार्षिक शिविर ११ से १६ नवम्बर ८० तक होने जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द विदेह स्वामी दिर्मलानन्द विदेह, महात्मा दयानन्द जी (देहरादून), डा० महावीर, माता आर्या मीरा यति (ज्वालापुर) श्री कोमल भाई 'केश' (आजमगढ) तथा पं० जिजेन्द्र नाथ जी शास्त्री के मनोहर उपदेश व भजन होगें।

शोक प्रस्ताव

—आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की यह साधारण सभा गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के संस्थापक श्री स्वामी व्रतानन्द जी की मृत्यु पर गहरा शोक प्रगट करती है व परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को कर्मानुसार पुण्य गति प्रदान करें।

कन्या गुरुकुल, नरेला (दिल्ली) की यह सभा, वैदिक विद्वान, अजीव ब्रह्मचारी तपस्वी, कर्मठ सन्यासी, गुरुकुल चित्तोडगढ के आचार्य स्वा० व्रतानन्द जी महाराज के निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे एव आर्य नरनारी गण प्रेरणा प्राप्त हो कि वे उनके दिव्य उपदेशों को जीवन मे धारण करने शुभ नाम व कीर्ति को अमर बनाए रखें।

चुनाव समाचार

—आर्यसमाज नागल राय नई दिल्ली (४६) का वार्षिक चुनाव १८-६-८० को सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न लिखित अधिकारी चुने गए हैं।—श्री रामचद्र वर्मा प्रधान, श्री लेखराज भगत उपप्रधान, श्री भगवानदास उपप्रधान, श्री रघुराज शास्त्री मन्त्री, श्री राजेन्द्रप्रसाद त्यागी उपमन्त्री, श्री अजीतकुमार कोषाध्यक्ष, श्री मगलदेव भंडारी, श्री दलीपसिह लेखानिरीक्षक।

—श्री गोपाल प्रसाद लेखा निरीक्षक—६. श्री नरसिंह प० आर्यवीर—पुस्तकाध्यक्ष।

आवश्कता है।

आर्यसमाज मौडल बस्ती दिल्ली को अपने अधीन सचालित 'पुष्पावती पुरी दयानन्द शिशु मन्दिर' की नर्सरी क्लास के लिए एक नर्सरी ट्रेण्ड अध्यापिका की आवश्यकता है। आर्यसमाजी विचारधारा रखने वाली को प्राथमिकता दी जाएगी, वेतन अनुभव एवं योग्यता के अनुसार दिया जाएगा। प्रार्थना-पत्र प्रधान आर्यसमाज, मौडल बस्ती. दिल्ली. ११-०००५ के नाम भेजें।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ अंक ३ रविवार, ९ नवम्बर १९८० दयानन्दाब्द १५६

महर्षिदयानन्द निर्वाणोत्सव का विशेष आयोजन

दीपावली के उपलक्ष में आर्यसमाजों में आयोजित सप्ताह भर के यज्ञों की पूर्णाहुति और वेद कथा का आयोजन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में दीपावली के दिन शुक्रवार ७ नवम्बर १९८० को महर्षि दयानन्द सरस्वती के ९७वें निर्वाणोत्सव का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम रामलीला मैदान में आयोजित किया गया और दिल्ली राज्य की सभी आर्यसमाज और शिक्षण संस्थाओं ने पूरे उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। समारोह का कार्यक्रम प्रातः ८ बजे यज्ञ के साथ प्रारम्भ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के आचार्य महात्मा दयानन्द थे। समारोह में ध्वजारोहण का कार्यक्रम स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने सम्पन्न किया और समारोह की अध्यक्षता दयानन्द मठ दीनानगर के आचार्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी ने की। आर्यसन्देश के प्रेस में जाते समय अभी समाचार आ रहे थे जिनका पूरा विवरण अगले अंक में विस्तार के साथ दिया जायेगा।

इस सप्ताह का प्रमुख कार्यक्रम जहांगीरपुरी मे हुआ। यह समाज अभी निर्माण की अवस्था में है। इस बस्ती में यद्यपि अन्य धर्मों के पूजा स्थानो का निर्माण हो चुका है और यहां के निर्धन लोगों के धर्म परिवर्तन के लिए भी अन्य धर्मों के लोग प्रयत्नशील रहते हैं। यह ध्यान में रखते हुए यहां एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन का श्रेय आजादपुर क्षेत्र की उपसभा के मन्त्री श्री प्रकाशचन्द को है। इस अवसर पर २७ अक्तूबर से २ नवम्बर तक प्रतिदिन यज्ञ का और सायकाल कथा का आयोजन हुआ। सभा के उपदेशक श्री प्रकाशवीर व्याकुल ने प्रवचन किए और इसके साथ श्री बालकृष्ण जी ने रामायण कथा बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की। रामायण कथा का बस्ती के लोगों पर बहुत अधिक प्रभाव हुआ।

सप्ताह भर के इस यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार २ नवम्बर को हुई। पूर्णाहुति का दृश्य विशेष रूप से दर्शनीय था क्योंकि इसमें सप्ताह भर के सभी यजमानों ने एक-साथ आहुतियां दीं और इसके अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी विशेष आहुति दी। पूर्णाहुति का यह सारा कार्य इतने भव्य ढंग से हुआ कि सभी उपस्थितों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री विजयभूषण आर्य, इसके अतिरिक्त श्री गणेशदास अग्निहोत्री और उनके धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री की उपस्थिति भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होने इस इस अवसर पर अपने आशीर्वाद से यज्ञ के कार्यक्रम को सफल बनाया।

जहांगीरपुरी के इस समारोह में स्थानीय लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और इसके साथ ही आजादपुर मण्डल की सभी आर्यसमाजों तथा राणा प्रताप बाग, कमला नगर और अमर कोलोनी आर्यसमाजो के प्रतिनिधि भी इस समारोह में उपस्थित थे।

केन्द्रीय सभा की ओर से मन्त्री श्री ओम्प्रकाश तलवाड़ और श्री राजेन्द्र दुर्गा उपस्थित थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधित्व सभा मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने किया और सभा प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा भी कुछ समय के लिए इस समारोह मे पधारे। पूर्णाहुति के बाद एक सार्वजनिक सभा हुई जिसकी अध्यक्षता सभा मन्त्री ने की। इस सभा में प्रवचन करने वालो मे प्रमुख थे—श्री गणेशदास जी अग्निहोत्री, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्यपति जी महाराज। इस अवसर पर ब्रह्मचारी भजनमण्डली ने हृदयग्राही और प्रभावशाली ढंग से भजन उपस्थित किए। इस समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत के पाठ्यक्रम मे वेद विषय लेने वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां देने के लिए अपील की गई। आर्यसमाज जहांगीरपुरी की ओर से श्री प्रकाशचन्द्र ने स्वामी विद्यानन्द जी को छात्रवृत्ति के लिए ४८०) रुपये अर्पित किए। अन्य अनेक लोगों ने भी छात्रवृत्तियां देने का संकल्प लिया। इस समय ७ छात्रों को ४०) रुपये प्रतिमास की छात्रवृत्ति देने का व्यवस्था श्री स्वामी विद्यानन्द जी के प्रयत्नो से की जा चुकी है। अगले वर्ष छात्रों की सख्या लगभग १५ हो जाने की सम्भावना है। यह ध्यान मे रखते हुए और अधिक धनराशि इस कार्य के लिए इकट्ठी की जा रही है।

इस अवसर पर आर्यसमाज जहांगीरपुरी की ओर से ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया था जिसमे न केवल अतिथियों ने बल्कि इस बस्ती के निर्धन वर्ग के लोगों ने भी भोजन किया।

अभिनन्दन

२९ अक्तूबर को सुभाषनगर आर्यसमाज के कर्मठ और यशस्वी कार्यकर्त्ता श्री गुरमुखदास ग्रोवर का अभिनन्दन किया गया। इस समारोह मे इस क्षेत्र की अनेक समाजों ने भाग लिया और श्री सोमनाथ जी मरवाह की अध्यक्षता मे आयोजित इस सम्मान आयोजन मे श्री श्यामसुन्दर सेठ ने श्री गुरमुखदास ग्रोवर को अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा का प्रतिनिधित्व सभा मन्त्री ने किया। इस समारोह के विशेष अतिथि श्री बलराज मधोक थे। उन्होने अल्पसख्यकों के भारतीयकरण पर बल देते हुए इस ओर ध्यान खींचा कि भारतीयकरण के अभाव में किस प्रकार देश में विघटन की प्रवृत्तियां पनप रही है। इस अवसर पर सभा के वरिष्ट उपप्रधान महाशय धर्मपाल जी भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज कोटला मे १ नवम्बर से ७ नवम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया है, साथ ही वेद कथा भी होगी। इस यज्ञ का समय प्रातः ६-३० से ८-३० तक है। इसी समाज की ओर से १० से १५ नवम्बर तक रात्रि को वेदकथा का आयोजन किया गया है जिसमें श्री पुरुषोत्तम जी व्याख्याता हैं और महेशचन्द्र जी भजनोपदेशक।

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा शाहदरा की ओर से आर्यसमाज मंदिर गीता कालोनी में महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया है जोकि ९ नवम्बर रविवार को होगा। इस समारोह के प्रमुख वक्ता वानप्रस्थ श्री रामगोपाल जी होंगे। इसके अतिरिक्त स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती, तथा श्री प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री महर्षि दयानन्द के जीवन पर अपने विचार प्रकट करेंगे।

इस अंक में

सम्पादक :—वि० सा० विद्यालंकार

वेदमनन

अग्नि सेवा

समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन्हव्या जुहोतन ।। यजु ३-१

ऋषि—आंगिरस. । देवता-अग्नि ।

आधिदैविक अर्थ—(अग्नि) भौतिक अग्नि को (समिधा) लकडियो से (दुवस्यत) प्रज्वलित करो और अतिथिं) सतत प्रज्वलित रखने के लिये (घृतैः) स्निग्ध द्रव्यों से (बोधयत) प्रदीप्त करो। तदनन्तर (अस्मिन्) इस प्रदीप्त अग्नि में (आ) आवश्यकतानुसार (हव्या) समिधा, पेट्रोल, तेल घृतादि हव्य पदार्थों को (जुहोतन) प्रदान करो।

आधिभौतिक अर्थ—(अग्नि) ज्ञान द्वारा आगे ले जाने वाले गुरु की (समिधा) नमक, तेल, लकडी आदि लाकर (दुवस्यत) सेवा करो। (अतिथिं) प्रगतिशील अथवा अतिथि के समान पूजनीय गुरु का (घृतै.) घृतादि दीपक पदार्थों द्वारा (बोधयत) प्रबुद्ध रक्खो। और आवश्यकतानुसार अन्न आदि अन्य पदार्थ प्रदान करते रहो।

याज्ञिक अर्थ—यज्ञाग्नि को समिधाओं से प्रज्वलित करो। घृताहुतियों से प्रदीप्त करो। और प्रदीप्त होने के बाद तिल आदि सामग्री द्रव्यों की आहुतियां दो।

सामाजिक अर्थ—(अग्नि) सारे समाज या राष्ट्र की उन्नति चाहने वाले राजा की (समिधा) स्थूल द्रव्यों द्वारा परिचर्या करो। घृत के समान स्निग्ध तथा सारभूत पदार्थों से अतिथि के समान उसकी, कठिन परिस्थितयों में प्रतीक्षा किया करो। (आ) सकट पार हो जाने के बाद (हव्या) राष्ट्र के लिये आवश्यक भोज्य पदार्थ (जुहोतन) संग्रह करके प्रदान करो।

सामाजिक अर्थ २—यदि राजा दुष्ट, स्वार्थी या स्वेच्छाचारी हो जाए तो—(अग्नि) दुष्ट तथा स्वार्थी नेता अथवा राजा (समिधा) लकडी से दण्ड द्वारा (दुवस्यत) पीड़ित करो, परिताप पहुंचाओ। (अतिथि) दूसरों के अधिकार की उपेक्षा करके भाई भतीजावाद द्वारा अपना घर भरने वाले राजा को (घृतै.) नाशक उपायो द्वारा (बोधयत) हिंसित करो। (आ) आवश्यकतानुसार (अस्मिन्) इसके कोषागर मे सगृहीत (हव्या) भोज्य सामग्री को (जुहोतन) ले लो-छीन लो।

आध्यात्मिक अर्थ—(अग्निं) अपनी आत्मा की—परमात्मा को पाने के लिये (समिधा) नैतिक तथा योग साधनों द्वारा (दुवस्यत) परिचर्या तथा प्रसादन करो। (अतिथिं) अतिथि के समान कभी भी प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले प्रभु की (घृतै.) घृत तुल्य दीप्तिवर्धक ज्ञान साधनों द्वारा (बोधयत) बोध प्राप्त करो अथवा प्रत्यक्ष अनुभव करने का प्रयत्न करो।

(आ) प्रत्यक्षानुभूति के अनन्तर (अस्मिन्) इस परमात्मा में अथवा इसकी बनाई सृष्टि के उपकार निमित्त (हव्या) अपनी सब मनोवृत्तियो तथा भोज्य-पदार्थों का (जुहोतन) दान कर दो।

निष्कर्ष—१. अग्नि के यौगिक अर्थ पद्धति द्वारा भिन्न भिन्न अर्थ करके अग्नि परक मन्त्रों के अनेक संगत अर्थ हो सकते हैं।

२. प्रगतिशील और अतिथि बनकर आए व्यक्ति का उत्तम तथा स्निग्ध पदार्थों द्वारा सत्कार करना चाहिये।

३, अपने स्वार्थ के लिये जनता के अधिकारो का हनन करने वाले शासक को दण्ड देना चाहिये, देश निकाला देना चाहिये और अनिवार्य होने पर हिंसा भी कर देनी चाहिये।

४. यज्ञाग्नि को प्रज्वलित रखना चाहिये। इससे वायु शुद्ध होकर स्वास्थ्य ठीक रहता है।

५. प्राणायामादि योग साधनों द्वारा, गुरु की सेवा करके ज्ञान प्राप्ति द्वारा, परमात्मार्पण करके जनसेवा द्वारा, अतिथि परमात्मा का बोध प्राप्त किया सकता है। प्रत्यक्ष अनुभूति हो सकती है।

६. स्वार्थ भावना शून्यमन से परार्थ किये जाने वाले सब कर्म यज्ञ अथवा परमात्मार्पण निमित्त कर्म होते हैं।

अर्थपोषक प्रमाण—

अग्निः—१. सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमग्रेनयति इति—परमात्मा।

२. सम्यक् ज्ञान प्रदानेन शिष्यमग्रेनयति—गुरु :।

३. प्रजा राष्ट्रमग्रेनयति इति—राजा

४. हुत पदार्थ सूक्ष्मतया सर्वत्राग्रेनति—अग्निः।

दुवस्यत—दुवस् परिताप परिचरणयोः। पीड़ित करना, सेवा करना। संस्कृत धातु कोष.।

अतिथिम्—अ+तिथि। अत+प्रत्यय (सातत्यगमने)। अद् (भक्षणे)+प्रत्यय चाहे जब प्रकट होन वाला। प्रगतिशील। दूसरे का अधिकार हड़पन वाला।

घृतैः—घृक्षरण दीप्त्योः। क्षरण नाशनम्—काशकृत्स्नधातु पाठ।

जुहोतन— हुदानादानयोः। दान प्रदानम्। आदान हरणम् छीनना।

बोधयत—बुध अवगमने। आघिन। बुध हिंसायाम्। काशकृत्स्न।

विशेष—अगो मे रस को स्थिर रखने वाल—अंगिरस का पुत्र आंगिरस अर्थात् वीर्यवान् और प्राणवान् व्यक्ति ही आंगिरस ऋषि बनता है।

तदनन्तर वह अग्निदेव पद को प्राप्त करता है।

—मनोहर विद्यालंकार

श्वेताश्वतरोपनिषद्

देव रूप जान लेने से मनुष्य 'आप्तकाम' हो जाता है

लेखक :
प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

उस परमात्म-देव को जानकर—ज्ञात्वा देवम्, समार के अविद्या, क्लेशादि सब बन्धन छूट जाते हैं—सर्वपाशापहानि, अविद्या क्लेशादि के छूट जाने से जन्म-मृत्यु का चक्र छूट जाता है—क्षीणै क्लेशै जन्म मृत्यु प्रहाणि। उसे जान लेना ही पर्याप्त नहीं है, जान लेने के बाद उसका ध्यान करते रहने से एक तीसरी अनुभूति प्राप्त होती है—तस्य अभिध्यानात् तृतीयं। वह तृतीय अनुभूति क्या है? परमात्मा मे ध्यान जम जाने से मनुष्य अपने को देह से भिन्न अनुभव करने लगता है—देहभेदे। देह से भेद अनुभव करने पर क्या होता है? देह से अपने को भिन्न अनुभव करने पर सब ऐश्वर्य प्राप्त हो जाता है—विश्वैश्वर्यम्—मनुष्य अनुभव करने लगता है कि वह ऐश्वर्यादि गुणों की खान है, उसे ससार असार दीखने लगता है। अब तक वह प्रकृति के साथ बंधा हुआ था, अब प्रकृति के बन्धन से छूटकर वह अपने केवल स्वरूप मे आ जाता है—केवलम्। अब उसे विषयों में भटकाने वाला कोई नही रहता, वह 'आप्तकाम' हो जाता है 'आप्तकाम' ११

वह देव जिसको जान लेने से मनुष्य 'आप्तकाम' हो जाता है; कहाँ है? वह देव कही दूर नही, वह सदा अपने भीतर ही विराजमान रहता है, यह जान लो—एतत् ज्ञेयम् नित्यम् एव आत्म-संस्थम्; उसे जान लेने के बाद और कुछ जानने के लिये नहीं बच रहता—न अतः पर वेदितव्य हि किंचित्। यह जानकर कि जीवात्मा 'भोक्ता' है, प्रकृति 'भोग्य' है, और परमेश्वर 'प्रेरक है—भोक्ता, भोग्यं प्रेरितार च मत्वा, यह समझ लो कि ब्रह्म के विषय में जो तीन बातें कही जा सकती थीं कह दी गई—सर्वं प्रोक्तम् त्रिविधं ब्रह्म एतत्। या मेरे लिये ब्रह्म का यही रूप है—ब्रह्म मे तत् ।।१२।।

जिस प्रकार अग्नि अपने मूर्त या व्यक्त रूप को छोडकर अपने कारण अमूर्त या अव्यक्त रूप मे चली जाय—अग्नेः यथा योनिगतस्य, तो उसका मूर्त रूप नही दीखता—मूर्तिः न दृश्यते, परन्तु उसका कोई-न-कोई चिह्न बचा रहता है जिससे हम जान सकते हैं कि यहा अग्नि थी—न एव च लिंगनाश, उस अग्नि को जिसका कारण ईंधन है हम फिर से ग्रहण कर सकते हैं—स भूयः एव इन्धनयोनि गृह्य, इसी प्रकार आत्मा तथा परमात्मा जो अमूर्त हैं—तद् वा उभय वै, ओंकार से—प्रणवेन, इस देह में ग्रहण किये जा सकते हैं—देहे ।।१३।।

अपने देह को नीचे की ओर प्रणव को ऊपर की अरणि बनाकर स्व देहं अरणिं कृत्वा प्रणव उत्तरारिण, ध्यान की रगड़ के अभ्यास से—ध्यान निर्मन्थन अभ्यासात्, अपने अन्तःकरण के भीतर निगूढवत् विद्यमान परमात्म-देव का दर्शन करे—देवं पश्येत् निगूढवत्—अर्थात् जैसे अरणियो में अग्नि निगूढ है वैसे विश्व में परमात्म देव निगूढ है ।।१४।।

जिस प्रकार तिलों मे तेल—तिलेषु तैलम्,' दही में घृत—'दधनि इव सर्पि' स्रोतों में जल—आपः स्रोतःसु, अरणियो मे अग्नि विद्यमान रहती है—अरणीषु च अग्निः इसी प्रकार इस परमात्मा का आत्मा में ग्रहण किया जाता है—एवम् आत्मा आत्मनि गृह्यते असौ। परन्तु वह दीखता 'सत्य' और 'तप' की रगड़ से है—सत्येन एनम् तपसा यः अनुपश्यति ।।१५।।

सर्वव्यापी परमात्मा को इस प्रकार जानो—सर्वव्यापिनम् आत्मानम्, जैसे दूध में घृत व्याप रहता है—क्षीरे सर्पिः इव अर्पितम्। इस आत्म-विद्या का मूल तप है, बिना तप के आत्म-विद्या प्राप्त नही होती—आत्मविद्या तपोमूलम्। यही परम ब्रह्मोपनिषद् है—तद् ब्रह्मोपनिषत्पर, यही परम ब्रह्मोपनिषद् है—'तद् ब्रह्मोपनिषत्पर इति ।।१६।।

इस उपनिषद् के प्रथम अध्याय में सृष्टि के कारणो का विवेचन करते हुए काल, स्वभाव, नियति, यदृच्छा, पच महाभूत, स्त्री, पुरुष, इनका संयोग - इन सब पर विचार करते हुए इन सबका निराकरण

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय

राष्ट्रपति प्रणाली : नयी चर्चा

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे वैदिक राजनीति पर विचार करते हुए जिस शासन प्रणाली की चर्चा की है उसमे 'राजा' को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। उन्होंने राजा के गुणों और उसके कर्तव्यो के सम्बन्ध मे जो कुछ लिखा है उससे यह स्पष्ट होता है कि वे जिस प्रकार के राजा अथवा शासक की चर्चा कर रहे थे, उसे आज की राजनीतिक भाषा मे 'राष्ट्रपति' नाम से सम्बोधित किया जाता है। उन्होंने लिखा है कि राजा और प्रजा मिलकर राज्य का संचालन करें। इस सम्मिलित शासन व्यवस्था के लिए उन्होने तीन प्रकार के सदनो या सभाओं की व्यवस्था के बारे में भी लिखा है। ये तीनो मिलकर एक 'बड़ी सभा' बनाते हैं। इसके अतिरिक्त और भी शासन सम्बधी व्यवस्थाओं की चर्चा महर्षि ने की है। परन्तु साथ ही उन्होंने इस बात पर बहुत जोर दिया है कि सभा की सदस्यता केवल योग्यतम एवं धर्मयुक्त व्यक्तियों को ही दी जानी चाहिए। इस सभा का सभापति राजा होता है। प्रशासनिक दृष्टि से प्रजा, राजा और सभा के अधीन होती है। मुख्य प्रशासक होने के कारण राजा ही प्रजा का शासक होता है। परन्तु महर्षि के विचारानुसार राजा सभा के अधीन होता है और राजा और सभा दोनो ही प्रजा के आधीन होते हैं।

महर्षि द्वारा चर्चित इस शासन व्यवस्था की प्रासंगिकता आज के संदर्भ मे बहुत महत्त्वपूर्ण है। पिछले कुछ दिनो से यह चर्चा चल रही थी कि संविधान मे परिवर्तन कर देश में राष्ट्रपति-प्रणाली लागू की जाए। अब यह चर्चा एक निश्चित दिशा लेकर राष्ट्रपति प्रणाली की आधारभूमि तैयार करने के लिए प्रचार का रूप ले गई है। कुछ क्षेत्रो मे यह भी चर्चा है कि राष्ट्रपति प्रणाली लागू करने के लिए संविधान मे संशोधन के लिए लोक सभा के इसी शीतकालीन अधिवेशन मे एक विधेयक प्रस्तुत किया जाएगा। जिस तेजी से चर्चा, प्रचार और अब उसे कार्यान्वित करने के प्रयत्न हो रहे हैं, उसे ध्यान मे रखते हुए आदर्श और व्यवहार की दृष्टि से राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए इस पर अधिक गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

जहां तक आदर्श का सम्बन्ध है और शासन व्यवस्था की दृष्टि मे व्यावहारिकता का प्रश्न है, राष्ट्रपति-प्रणाली पर तब तक किसी प्रकार की कोई आपत्ति नही की जा सकती जब तक कि वह महर्षि दयानन्द के शब्दो मे प्रजा के अधीन' न हो और आधुनिक शब्दो मे उसका आधार पूरी तरह से जनतान्त्रिक न हो। व्यावहारिक दृष्टि से अमरीका आदि देशो मे राष्ट्रपति प्रणाली बहुत कुछ विभिन्न संसदीय अंकुशो के कारण अपने आप मे बहुत स्वच्छन्द नही है, उसे निर्वाचित प्रतिनिधियो के दृष्टिकोण को हमेशा ध्यान में रखना पड़ता है। यह अवश्य है कि इस प्रणाली मे राष्ट्रपति को निषेधाधिकार प्राप्त होता है। परन्तु इसकी भी एक सीमा है। अन्य देशो की राष्ट्रपति प्रणालिया इतनी लोकाश्रित नही हैं। अन्य देशो की प्रणालियो मे राष्ट्रपति को कही अधिक स्वच्छन्दता मिली हुई है और इसका परिणाम यह है कि इन देशों की राष्ट्रपति प्रणाली मे तानाशाही की प्रवृत्तियां भी देखने को मिलती हैं। हमारे देश मे इस समय राष्ट्रपति प्रणाली की जो चर्चा चल रही है, उसमे प्राय. फिलीपिन्स की राष्ट्रपति प्रणाली का उदाहरण दिया गया है। फिलीपिन्स की राष्ट्रपति प्रणाली मे राष्ट्रपति को कुछ ऐसे असाधारण अधिकार प्राप्त हैं जिनके कारण वहा तानाशाही की प्रवृत्तिया भी सामने आयी हैं। साथ ही वहा के कुछ क्षेत्रो से बिद्रोह के भी निरन्तर समाचार मिलते रहते हैं।

स्वामी जी महाराज ने 'राजा' प्रणाली में राजा को प्रजा के अधीन रहने की जो बात उठाई उसका कारण यह था कि राजा कभी स्वच्छन्द न होने पाए। परन्तु आधुनिक राष्ट्रपति प्रणालियो मे अमरीका को छोड़कर प्राय: सब स्थानो पर राष्ट्रपति स्वच्छन्द और तानाशाह बन गए हैं। जब-जब इस प्रणाली की विकृतियो के कारण जनसाधारण की कठिनाइयां बढी हैं और जनसाधारण ने आन्दोलन अथवा संघर्ष का रास्ता पकड़ा है तो उसका एक ही प्रकार से सामना किया गया है और वह रास्ता रहा है राष्ट्रपति के अधिकारो मे वृद्धि। इस प्रकार यह प्रणाली निरन्तर जन-साधारण की उपेक्षा करके और उनके अधिकारो को कुचलते हुए उन पर अपना शिकंजा कसने से कभी नही चूकी। हम अपने देश मे भी यह अनुभव करते हैं कि पिछले तैंतीस वर्षों मे जब-जब प्रशासनिक कुशलता के अभाव मे आन्दोलन और संघर्ष की स्थिति आई है तो सरकार और प्रशासन ने अपने हाथ में असाधारण अधिकार लिए है। सन् ७५ मे आपातस्थिति लागू करते समय तो यह स्थिति अपनी चरम सीमा पर पहुच गई। उस समय भी निरन्तर कमजोर वर्गों की आर्थिक स्थिति को सुधारने और समाज की असमानता को दूर करने के लिए जोरदार नारे लगाए गए और समाजवाद के नाम पर अधिकाधिक स्वच्छन्दतापूर्ण व्यवस्थाएं लागू की गईं। अब इस समय फिर इसी प्रकार की चर्चा शुरू हो गई है कि कमजोर वर्गों की स्थिति में सुधार, आर्थिक असमानता को दूर करने तथा समाजवाद को लाने के लिए राष्ट्रपति प्रणाली लागू करने की बात की जा रही है। इसी से यह सन्देह होता है कि कि किसी आदर्श अथवा उदार प्रणाली को अथवा जन-साधारण की स्थिति को सुधारने के लिए इस प्रणाली को लागू करने की चर्चा हो रही है। पिछला अनुभव इस चर्चा का समर्थन नही करता।

हमारे प्रशासनिक इतिहास की एक यह भी विशेषता रही है कि प्रशासनिक अधिकारियों को अधिक से अधिक अधिकार प्रदान किये जाते रहे हैं। परन्तु इसकी तुलना में उनके दायित्वों की कभी चर्चा नहीं हुई। परिणाम यह है कि अधिकार सम्पन्न अधिकारी वर्ग छोटे से छोटे कार्य के लिए भी उत्तरदायी नहीं हैं और इस दायित्वहीनता का दण्ड प्रतिदिन आम आदमी को भुगतना पड़ता है। कोई भी साधारण सा व्यक्ति इसकी पुष्टि कर सकता है। जब हमारी सारी शासन प्रणाली इस दायित्वहीनता पर पनप रही है तब अधिक अधिकार सम्पन्न राष्ट्रपति प्रणाली को लागू करने का परिणाम यह होगा कि जन-साधारण की कठिनाई और अधिक बढ जायेगी। जिस प्रकार पिछले तैंतीस वर्षों मे जनसाधारण की न तो गरीबी दूर हुई, न लोगों को समान अधिकार प्राप्त हुए और इसके विपरीत उन्हे निरन्तर अधिक से अधिक दमनपूर्ण स्थितियो का सामना करना पडा। इसी प्रकार आगे भी अधिक अधिकार और शक्ति सम्पन्न प्रशासनिक अधिकारियो से पीड़ित होना पड़ सकता है।

यदि प्रस्तावित राष्ट्रपति प्रणाली मे राष्ट्रपति के निर्णयो को संसद की विभिन्न समितियो के साथ बांध दिया जाये, ये संसदीय समितिया लोकतन्त्रीय दृष्टि से अधिक शक्ति सम्पन्न हो, उन्हें अधिकार प्राप्त प्रशासको को बुलाकर उनके कार्यों की जांच करने का अधिकार प्राप्त हो तो राष्ट्रपति प्रणाली की सार्थकता हो सकती है। बिना अंकुश के राष्ट्रपति प्रणाली की कल्पना बहुत भयावह है। हम अनुभव करते हैं और हमारी धार्मिक पृष्ठ-भूमि यह कहने को विवश करती है कि जब तक 'राजा' और 'सभा' आधुनिक शब्दो मे राष्ट्रपति, उसके सलाहकार और सदन प्रजा अथवा जनता के अधीन न हों अथवा जनसाधारण की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व न करते हो तब तक राष्ट्रपति प्रणाली को देश मे लागू करना देश के लिए हितकर नही होगा। यह सम्भव हो सकता है कि हमे फिर उन परिस्थितियो मे लौटकर फंसना पड़े जिनका कुछ अनुभव हम आपातकाल मे कर चुके हैं। इस बार का अनुभव पहले की अपेक्षा अधिक भयंकर भी हो सकता है।

सात्विकता का दण्ड

प्राय: समाचारपत्रों में यह पढने को मिलता रहा है कि मद्रास के भूतपूर्व राज्यपाल प्रभुदास पटवारी ने अपने कार्यकाल मे राजनिवास में इस प्रकार के आदेश लागू कर दिये थे कि वहा मांस, मदिरा के प्रयोग पर पूरी तरह से प्रतिबन्ध लग गया था और साथ ही सात्विकता की दृष्टि से अन्य जो व्यवस्थाएं आवश्यक थी, वे सब भी वहां लागू कर दी गईं। श्री पटवारी के दुर्भाग्य से यह सात्विक दृष्टिकोण राजनीतिक क्षेत्रों में कटु आलोचना का शिकार बन गया। न केवल तमिलनाडु के राजनीतिज्ञ बल्कि केन्द्र के राजनीतिज्ञ भी उनके इन निर्णयो से बौखला गये। अंग्रेजी समाचारपत्रो ने भी, जिनके सम्पादकीय विभाग के कर्मचारी प्राय: मांस-मदिरा के शौकीन होते हैं, इस पटवारी विरोधी आन्दोलन में कूद पड़े। परिणाम यह हुआ कि श्री पटवारी को उनके पद से हटा दिया गया और लगभग उन्हे अपमानित होकर मद्रास छोड़ना पड़ा।

यदि यह प्रश्न केवल राजनीति तक सीमित होता तो हमे उस पर किसी प्रकार की टिप्पणी करने की आवश्यकता न होती परन्तु हम लोग दैनिक जीवन मे जिस शुद्धता और सात्विकता के पक्षपाती हैं उस पर राजनीतिक आक्रमण हमे कष्टदायी प्रतीत होता है। हम इस बात का समर्थन नही कर सकते कि किसी व्यक्ति को उसके सात्विक आचरण के कारण उसके पद मे हटाया जाये। यदि उन्हें इस आधार पर हटाया जाता कि वे राज्यपाल पद पर जनता पार्टी द्वारा नियुक्त हुए थे तो उस पर कोई भी टिप्पणी करना हम अपने क्षेत्र से बाहर मानते क्योकि इससे पहले अनेक राज्यो से जनता मन्त्रीमण्डलो को हटा दिया गया था। राजनीतिक स्थिति का मुकाबला

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सार्वभौम आर्य महासम्मेलन, लन्दन

इंगलैण्ड में आर्यसमाज का प्रचार: एक विहगावलोकन

इंगलैंड में आयोजित सार्वभौम आर्य सम्मेलन ने लोगों का ध्यान बहुत तेजी से आर्यसमाज की ओर खीचा है। इस महासम्मेलन का विवरण 'आर्य सन्देश' में प्रकाशित हो चुका है। महासम्मेलन के संबंध में अनेक क्षेत्रों में जो चर्चा हुई है, उसे ध्यान में रखत हुए सम्मेलन के संबंध में इतिहास के विद्वान् डा० सत्यकेतु का लेख यहां प्रस्तुत है। प्रस्तुत लेख में इंगलैंड मे आर्यसमाज की स्थापना और उसके सिद्धान्तों के प्रचार के लिए हुए प्रयत्नों का विहगावलोकन और आर्यसमाज के प्रचार में व्यस्त कुछ प्रमुख व्यक्तियों को चर्चा की गयी है।

लेखक :
डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार

लन्दन में सार्वभौम आर्य महासम्मेलन का आयोजन अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। विशाल ब्रिटिश साम्राज्य (राष्ट्रपरिवार) की यह राजधानी पाश्चात्य संस्कृति, ईसाई धर्म और अंग्रेजी सभ्यता का प्रधान केन्द्र है। अठारहवीं सदी में इसी नगरी से उन ईसाई मिशनों का संगठन हुआ था, जो भारत की सम्पूर्ण जनता को अपने धर्म में दीक्षित करने के लिये प्रयत्नशील थे, और अंग्रेजी राजशक्ति का प्रयोग कर देहात के लोगो को जबर्दस्ती ईसाई बनाने में भी सकोच नहीं करते थे। इसी नगरी में मैकाले ने यह स्वप्न लिया था, कि अंग्रेजी शिक्षा द्वारा ऐसे भारतीयों की एक श्रेणी उत्पन्न कर दी जाएगी जो केवल रंग और शकल में ही भारतीय होंगे और अंग्रेजी भाषा तथा रहन सहन को अपना कर अपने धर्म तथा संस्कृति को हीन समझने लगेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि दो सदी तक लगभग संसार के बड़े भाग पर ब्रिटेन का प्रभुत्व रहा, और इस काल में एशिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों में ईसाई धर्म एवं पाश्चात्य सस्कृति का खूब प्रचार हुआ। ब्रिटिश लोग अपने इस उत्कर्ष पर यदि गर्व अनुभव करते, तो यह स्वाभाविक ही था।

वेस्टइन्डीज, अफ्रीका, लेबेनान आदि के समान भारत में ईसाई धर्म पाश्चात्य संस्कृति को जो सफलता नहीं मिल सकी, उसका प्रधान श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज को प्राप्त है। भारतीय लोग केवल क्रिश्चिएनिटी के प्रबल आक्रमण से अपनी परम्परागत आर्य संस्कृति तथा सनातन वैदिक धर्म की रक्षा कर सकने में ही समर्थ हुये, अपितु विश्व के विभिन्न देशों में अपने धर्म एवं संस्कृति की उत्कृष्टता का सिक्का जमाने के लिये भी प्रवृत्त हुए। इसी का यह परिणाम है, कि आज यूरोप, ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, थाईलैण्ड, अफ्रीका आदि सर्वत्र हिन्दू मन्दिर और आर्यसमाजें स्थापित हैं। इङ्गलैण्ड में आर्य धर्म का कितना प्रचार है, इसे अपनी आंखों से देखने का अवसर मुझे सार्वभौम आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित होने पर प्राप्त हुआ। २१ अगस्त को लण्डन पहुंचते ही मैं सब से पहले वहां की आर्यसमाज में गया। लण्डन का एक मुहल्ला वेस्ट ईलिंग है, जहां सम्भ्रान्त वर्ग के अंग्रेज निवास करते हैं। भारतीय इस क्षेत्र में बहुत कम हैं। इसी की आरगाइल रोड पर आर्यसमाज मन्दिर है। जिस भवन में आर्यसमाज है वह पहले एक ईसाई गिरजाघर था। यह देखकर कौन आर्य गर्व अनुभव नहीं करेगा, कि जहां पहले ईसा और मरियम की प्रतिमाएं थीं, वहां अब महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और महात्मा हंसराज के तैलचित्र हैं, और भवन के ऊपर जहां पहले क्रास था, वहां अब ओ३म् का झण्डा फहरा रहा है। लण्डन में प्रति सप्ताह आर्यसमाज का अधिवेशन होता है। सन्ध्या, हवन, तथा प्रार्थना के पश्चात् वेदमन्त्रों पर प्रवचन किया जाता है, और अच्छी बड़ी सख्या मे आर्य नरनारी सत्संग में सम्मिलित होते हैं। आर्यसमाज के चार साप्ताहिक अधिवेशनों में मैं उपस्थित रहा, और यह देखकर मुझे अपार हर्ष हुआ, कि किसी भी अधिवेशन में उपस्थिति सौ से कम नहीं थी। इङ्गलैण्ड के आर्यजनों में अपने धर्म के प्रति कितनी आस्था है, यह इसका प्रमाण है।

सार्वभौम आर्य महासम्मेलन का आयोजन लण्डन की आर्यसमाज द्वारा किया गया था। अतः इस समाज का कुछ अधिक विस्तार के साथ परिचय देना उचित होगा। इङ्गलैण्ड में आर्य धर्म का प्रवेश तो तभी हो गया था, जबकि उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में संस्कृत के अध्यापन के साथ-साथ वैदिक धर्म का प्रचार भी प्रारम्भ कर दिया था। उनके बाद लाला लक्ष्मीनारायण जी और लाला टेकचन्द जी सदृश अनेक सज्जनों ने लण्डन मे आर्यसमाज की स्थापना का प्रयत्न किया। सन् १९३७ में जब मैं लण्डन में था, तो लाला टेकचन्द जी के निवास स्थान पर आर्य नरनारी एकत्र हुआ करते थे, और सन्ध्या, हवन, प्रार्थना आदि किया करते थे। ऐसे दो अवसरों पर मैं भी सत्सग में सम्मिलित हुआ था। पर उस समय लण्डन मे भारतीयों की संख्या बहुत कम थी। और आर्यसमाज की स्थापना के ये प्रारम्भिक प्रयत्न सफल नहीं हो सके थे। जो थोड़े से भारतीय उस समय लंडन में थे, उन्होंने "हिन्दू एसोसियेशन आफ यूरोप" नाम से एक संगठन बना लिया था, जिसमें आर्यसमाजियों के अतिरिक्त सनातनधर्मी भी सम्मिलित थे। इस एसोशियेशन के माध्यम से डा० धर्मशील चौधरी और पण्डित ऋषिराम जी ने वैदिक धर्म के प्रचार का प्रयत्न किया। डा० चौधरी की प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी मे हुई थी और उनके पिता मास्टर काशीराम जी गुरुकुल में चिरकाल तक अधिष्ठाता रहे थे। उनके लिये वैदिक धर्म के प्रति प्रेम होना सर्वथा स्वाभाविक था।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय लोग बड़ी संख्या मे ब्रिटेन जाने आने लगे, और वहां भारतीयों की सख्या मे निरन्तर वृद्धि होती गई। इस दशा में यह आवश्यकता अनुभव की जाने लगी कि लण्डन में हिन्दुओं का एक ऐसा केन्द्र होना चाहिये, जहां उन्हें अपने धर्म तथा संस्कृति से, परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता रहे। इसी के परिणामस्वरूप 'हिन्दू सेन्टर' की स्थापना हुई। इस सस्था के प्रथम प्रधान श्री फकीरचन्द सोंधी थे, जिन्होंने १९६२ से १९६६ तक हिन्दू सेन्टर को वैदिक धर्म तथा सस्कृति का केन्द्र बनाने के लिये अत्यन्त उत्साह से कार्य किया। उनके पश्चात् प्रोफेसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज इस सेन्टर के प्रधान पद पर निर्वाचित हुए। वे १९७८ तक बडी लगन एव उत्साह के साथ कार्य करते रहे, और उनकी अध्यक्षता मे इस सेन्टर ने अच्छी उन्नति की। श्रीसोंधी और प्रोफेसर भारद्वाज-दोनो ही आर्यसमाजी हैं, अतः स्वाभाविक रूप से हिन्दू सेन्टर द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार होता रहा। यद्यपि उसका नाम हिन्दू सेन्टर था, पर क्रिया में उस द्वारा वही प्रयोजन सिद्ध होता था, जो आर्यसमाज से होता। वर्तमान समय में भी हिन्दू सेन्टर एक पृथक् सस्था के रूप में विद्यमान है। उसके पुरोहित श्री हरवंशलाल 'हंस' आर्यसमाजी हैं। जो आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब मे उपदेशक भी रह चुके हैं। हिन्दू सेन्टर के अधिवेशनों में वे सन्ध्या हवन कराते हैं, और वेदमन्त्रों का प्रवचन करते हैं।

अफ्रीका महाद्वीप के विविध-देश जब स्वतन्त्र होने लगे, तो उनमें बसे हुए बहुत-से भारतीयों ने इङ्गलैण्ड में बसना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें ब्रिटिश नागरिकता प्राप्त थी, अतः उनके लिये इङ्गलैण्ड में स्थायी रूप से बस जाने में कोई कठिनाई नहीं थी। इस स्थिति से लाभ उठा कर बहुत से भारतीय इङ्गलैण्ड के विविध नगरों—विशेषतया लण्डन में आकर बस गये, इनमें आर्यसमाजियों की संख्या बहुत अधिक है। विशेषतया केनिया से जो भारतीय इङ्गलैण्ड में गये, उनमें बहुसख्यक आर्यसमाजी हैं। इसीलिये १९७० ईस्वी. में लण्डन में वैदिक मिशन की स्थापना की गई, जिसकी स्थापना मे श्री. के. डी. कपिल, श्रीमती सावित्री छाबड़ा, श्री हरवंशलाल मोदगिल श्री दिलीप वेदालंकार और श्री फकीरचन्द मायर आदि का विशेष कर्तृत्व था। केनिया आदि से आकर बसे हुए जिन आर्य नर-नारियो ने वैदिक मिशन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये भगीरथ प्रयत्न किया और उसके लिये उदारतापूर्वक धन दान में दिया, उन सब के नामों का भी इस लेख मे उल्लेख कर सकना सम्भव नहीं है। वैदिक मिशन वही कार्य कर रहा था, जो आर्यसमाज का है। इसके प्राय सभी सदस्य महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म में पूर्ण निष्ठा रखते थे। कुछ वर्ष पश्चात् इस वैदिक मिशन ने ही आर्यसमाज का रूप प्राप्त कर लिया। पर अभी आर्य समाज का कोई अपना भवन नहीं था। अपने भवन के अभाव में आर्यसमाज के कार्य की प्रगति मे बाधा पड़ती थी। पर लण्डन के आर्य बन्धुओं के लिये अपनी प्रिय संस्था के निमित्त धन संग्रह करना कोई कठिन बात नहीं थी। उन्होंने बड़े उत्साह तथा लगन के साथ धन एकत्र करना प्रारम्भ किया, और अनेक सम्पन्न आर्यजनो ने आर्यसमाज मन्दिर के लिये उदारतापूर्वक धन प्रदान किया। इन में पण्डित सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक हैं और औद्योगिक क्षेत्र मे उन्होंने असाधारण उन्नति की है। वैदिक धर्म के प्रति उनकी अगाध आस्था है, और वे न केवल धन द्वारा आर्यसमाज की सहायता करते हैं, अपितु स्वयं वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न रहते हैं। लण्डन मे आर्यसमाज के भवन के लिये उन्होंने ५,००० पौंड (९२,००० रुपये) प्रदान किये। लण्डन आर्यसमाज के लिये २९,३८१ पौंड में भवन को क्रय किया गया था, और उसकी मुरम्मत आदि में ४०,००० पौंड के लगभग खर्च हुए। इस प्रकार लण्डन के आर्यसमाज भवन पर कुल व्यय ६८ हजार पौंड(१२,५८,०००-

इंगलैंड में आर्य धर्म के प्रचारक

भारतीय प्रवासियों में धार्मिक प्रवृत्तियों को जागृत रखने वाले पुरोधा

रुपये) के लगभग हुआ, जो सब इङ्गलैण्ड में बसे हुए आर्य नर नारियो द्वारा प्रदान किया गया। लण्डन में आर्यसमाज के लिये कितना प्रेम है, यह इससे भली भांति स्पष्ट हो जाता है।

लण्डन के अतिरिक्त नाटिङ्घम, बरमिङ्घम आदि कतिपय अन्य नगरों में भी आर्य समाजें विद्यमान हैं। और वह समय दूर नहीं है जबकि इङ्गलैण्ड में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हो जाएगी।

इङ्गलैण्ड में वैदिक धर्म का जो प्रचार हुआ है, उसमें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्नातकों का कर्तृत्व महत्वपूर्ण है। पण्डित सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार के अतिरिक्त गुरुकुल के जिन स्नातकों ने लण्डन तथा इङ्गलैंड के अन्य नगरों में आर्य धर्म के प्रचार में विशेष तत्परता दिखायी है, उनमें पण्डित अमृत वेदालंकार का नाम उल्लेखनीय है। लीड्स को अपना केन्द्र बना कर वे वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं। इङ्गलैण्ड में बसे हुए भारतीय अपने परम्परागत धर्म से विमुख न हो जाएं, इस प्रयोजन से वे उन्हें गायत्री मन्त्र की दीक्षा देते रहते हैं। उनका कहना है, कि सब हिन्दू सम्प्रदाय ओंकार, वेद तथा गायत्री को समान रूप से मानते हैं। ये तीन तत्त्व ऐसे हैं, जिनको आधार भूत मान कर सब हिन्दुओं को संगठित किया जा सकता है। पंडित अमृत वेदालंकार की यही धुन रहती है, कि सब हिन्दू यह जान लें कि वेद उनके धर्म ग्रन्थ हैं, ओंकार ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है और गायत्री मन्त्र का हिन्दू धर्म में वही स्थान है जो इस्लाम में कलमे का है। वेदालंकार जी को अपने प्रयत्न में अच्छी सफलता भी हो रही है। गुरुकुल कांगड़ी के अन्य स्नातकों में श्री धर्मेन्द्रनाथ ने बरमिङ्घम मे और श्री श्यामसुन्दर स्नातक ने नाटिङ्घम में वैदिक धर्म के प्रचार के लिये प्रशंसनीय कार्य किया है। पण्डित देवनाथ विद्यालंकार भी लण्डन में बसे हुए हैं, और गुजराती समाज में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए प्रयत्न करते रहते हैं।

हिन्दू सेन्टर तथा आर्यसमाज के अतिरिक्त लण्डन में अनेक हिन्दू मन्दिर भी हैं। इनमें से तीन मन्दिरों में जाने का मुझे अवसर मिला। इनमें राम, कृष्ण, हनुमान्, शिव, पार्वती आदि हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियां एवं प्रतिमाएं प्रतिष्ठापित हैं और पौराणिक विधि से पूजा की जाती है। यज्ञ-हवन भी इनमें होते रहते हैं, और हिन्दू त्योहार भी उत्साहपूर्वक मनाये जाते हैं। इङ्गलैण्ड के हिन्दुओं में आर्यसमाजी तथा सनातन धर्मियों में कोई विरोध भाव अथवा पृथक्त्व की भावना नहीं है। इसी कारण आर्यसमाज के सदस्य भी हिन्दू मन्दिरों में जाने मे कोई संकोच नहीं करते। और इन मन्दिरों मे आयोजित त्योहारों तथा उत्सवों में उत्साहपूर्वक हाथ बटाते हैं। लण्डन के समीप ही स्लौ (sloush) नाम का एक नगर है। वहां के हिन्दू मन्दिर द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस समारोह में भाषण करने के लिए मुझे भी निमन्त्रित किया गया, और मुझे यह देख कर सुखद आश्चर्य हुआ, कि इस उत्सव के आयोजन में एक सुप्रसिद्ध आर्य महिला भी उत्साह पूर्वक सहयोग दे रही थी। इङ्गलैण्ड मे बसे हुए विविध सम्प्रदायो के हिन्दुओं मे इस प्रकार का सहयोग वस्तुतः वाञ्छनीय है। इससे वहां के हिन्दुओं को बल मिलता है।

लण्डन में मैं पांच सप्ताह रहा। इस काल में मुझे बहुत से आर्य परिवारो के निकट सम्पर्क मे आने का अवसर प्राप्त हुआ। सब के सम्बन्ध मे यहां लिख सकना सम्भव नहीं है। पर कतिपय आर्य नर नारियों का उल्लेख करने के मोह का संवरण कर सकना मेरे लिये सम्भव नहीं हो सकेगा। लण्डन मे आर्य धर्म की दशा को समझने में भी इससे सहायता मिलेगी। श्री एम एल. कोछड़ इन्जीनियर हैं, और उनकी पत्नी श्रीमती शकुन्त कोछड़ लोक कल्याण विभाग में एक महत्त्वपूर्ण पद पर कार्यरत हैं। इनकी पुत्री का नाम एन्जेला और पुत्र का नाम अरुण है। यह एक आदर्श आर्य परिवार है। श्री और श्रीमती कोछड़ की एक ही आकांक्षा है। वे चाहते हैं, कि उनकी सन्तान अपना जीवन वैदिक धर्म के उच्च आदर्शों के अनुसार बिताए और आर्य समाज की सेवा में सदा तत्पर रहें। पाश्चात्य संस्कृति के हानिकारक प्रभाव से अपनी सन्तान को बचाने के लिये वे बहुत प्रयत्नशील हैं। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगो तथा अन्य अवसरों पर कुमारी एन्जेला भक्ति के भजन गाती है। जिन्हें सुनकर श्रोता मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। अरुण भी आर्यसमाज के समारोहों में उत्साहपूर्वक भाग लेता है। इन भाई-बहनों पर जो संस्कार कोछड़ दम्पती द्वारा डाले जा रहे हैं, उनसे यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि बड़े होने पर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में इनका कर्तृत्व अत्यन्त महत्त्व का होगा।

श्री हरबंस लाल मौदगिल पहले सरकारी सर्विस में थे। अब सेवानिवृत्त हैं, और अपना समय आर्यसमाज के कार्य में लगाते हैं। वृद्ध होते हुए भी उनमें आर्य धर्म के लिये अनुपम उत्साह है, और वे पूरी लगन के साथ समाज सेवा में तत्पर हैं। लण्डन में वैदिक मिशन की स्थापना मे उनका कर्तृत्व महत्त्व का था, और इस समय वे अपना तन, मन, धन सब आर्य समाज के लिये अर्पित किये हुए हैं। उनका सारा परिवार लण्डन में बसा हुआ है, और उनके सब निकट सम्बन्धी भी लण्डन में ही रहते हैं। ये सब वैदिक धर्म के अनुयायी हैं, और इनके सम्पर्क में आकर बहुत सुखद व सात्त्विक अनुभूति होती है।

लण्डन के आर्य बन्धुओं में डा० बख्शी एक अत्यन्त उत्साही व प्रेमी सज्जन हैं। चिकित्सक के रूप में उनकी स्थिति बहुत ऊंची है। होमियोपैथी और एक्यूपंचर चिकित्सा विधि मे वे निष्णात् हैं और चिकित्सा के लिये किसी से कोई फीस नहीं लेते। सब कार्य वे सेवाभाव से करते हैं। वैदिक धर्म तथा संस्कृत भाषा से उन्हें अगाध प्रेम है। प्रौढ़ आयु के होते हुए भी वे संस्कृत सीखने मे लगे हैं। और इस भाषा मे उन्होंने अच्छी प्रवीणता भी प्राप्त कर ली है। उपनिषदों को वे मूल संस्कृत मे पढ़ते हैं और उनके अध्यात्मवाद के सम्बन्ध मे विचार विमर्श करते रहते हैं। हिन्दी भाषा की शुद्धता पर वे बहुत ध्यान देते हैं। अरबी, फारसी के शब्दों का हिन्दी में प्रयोग उन्हें जरा भी सह्य नहीं है। बातचीत मे यदि आप 'मुश्किल' 'इन्तजार' सदृश शब्दों का प्रयोग कर दें, तो बख्शी जी टोके बिना मानेंगे नहीं। उनका कहना है कि कौन-सा ऐसा भाव है, जिसकी अभिव्यक्ति शुद्ध हिन्दी मे नहीं की जा सकती? फिर उर्दू, फारसी के शब्दों से अपनी भाषा को भ्रष्ट क्यों किया जाए?

लण्डन में मेरी भेंट श्री वर्मा जी से भी हुई। वे मूलतः मेरठ के निवासी हैं, और उनका सारा परिवार कट्टर आर्य समाजी है। जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मेरठ मे आर्यसमाज की स्थापना की थी, तो उसके प्रथम सदस्यों में वर्मा जी के पितामह भी थे। महर्षि के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। वर्मा जी के अनुसार उनके पितामह यह बताया करते थे कि सन् १८५७ के स्वाधीनता-संग्राम के समय महर्षि बहुधा मेरठ-दिल्ली जाते-आते रहते थे और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष मे उनका कर्तृत्व महत्त्वपूर्ण था।

लण्डन के जिन आर्य परिवारो से मेरा सम्पर्क हुआ, उनमे श्रीमती वेदवती जी शर्मा के परिवार को मैं कभी भूल नहीं सकूंगा। श्रीमती शर्मा की वैदिक धर्म और आर्यसमाज में अगाध आस्था है। सन्ध्या हवन और अतिथि सेवा उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं। आर्यसमाज का कोई भी कार्य हो, उसमें सक्रिय रूप से सहयोग देने के लिये वे सदा तत्पर रहती हैं।

लण्डन रहते हुए अन्य भी अनेक आर्य नर-नारियों से परिचय पाने का मुझे अवसर मिला। सब के सम्बन्ध में इस लेख में लिख सकना न सम्भव है, और न उसकी आवश्यकता ही है। भारत से हजारों मील की दूरी पर बसे हुए इन आर्यों मे अपने धर्म और संस्कृति के प्रति जो निष्ठा है, और अपने जीवन को महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं के अनुरूप बनाने का ये जिस ढंग से प्रयत्न करते हैं, उसे देखकर इस बात में कोई सन्देह नहीं रह जाता कि वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। ●

(पृष्ठ २ का शेष)

कर दिया है, अन्त मे परमेश्वर को ही सृष्टि का कारण माना है। जो जिज्ञासु सृष्टि पर विचार कर रहे हैं उनका निर्णय यह है कि सृष्टि एक चक्र की तरह चल रही है, जीवन नदी के एक प्रवाह की तरह बह रहा है। सृष्टि-चक्र तथा जीवन प्रवाह मे तीन तत्व हैं जो नित्य हैं। वे हैं ईश्वर, जीव तथा प्रकृति इन तीनो को 'अज' सज्ञा दी गई है। 'अज' का अर्थ है—न जायते इति अजः जो उत्पन्न नही होता वह अज है। क्योकि ये तीनो उत्पन्न नही होते इसलिये ये तीनों 'अज' होने के कारण अनादि हैं, इनका कोई आदि नही। ब्रह्म-ज्ञान का अर्थ है—इन तीनो के भेद को समझ लेना। इन तीनो मे भेद यह है कि जीवात्मा भोगता है, प्रकृति भोग्य है, परमेश्वर इन दोनों को प्रेरणा देने वाला है—भोक्ता, भोग्यं, प्रेरितार च मत्वा। इनमे प्रकृति भोग्य है, क्षर है, खर जाती है, परमात्मा तथा जीवात्मा अक्षर हैं, खरने वाले नही। प्राकृतिक पदार्थों के शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श के भोग के साथ बध जाने के कारण हम प्रकृति के पाशो से बध जाते हैं—अनीशः च आत्मा बध्यते भोक्तृ भावात्, प्रकृति मे अपने सबंध को तोड लेना ही इन पाशो से मुक्त होने का रास्ता है—ज्ञात्वा देव मुच्यते सर्वपाशैः। आत्मा के जानने की बात यह है कि प्रकृति जड है, आत्मा तथा परमात्मा चेतन हैं। आत्मा जड के साथ अपनी एकता स्थापित करेगा तो उसमे प्रकृति के राग, द्वेष, कलह कलेश आदि गुण आ जायेंगे, परमात्मा के साथ अपनी एकता स्थापित करेगा तो उसमे सच्चिदानन्द ईश्वर के गुणो की अभिव्यक्ति होगी। परमात्मा सर्वत्र है, परन्तु उसे पाने के लिये दूर जाने के स्थान में अपने भीतर ही उसे देख लेना सुगम है। यह काम प्रणव द्वारा परम देव के ध्यान से हर किसी के लिये सभव है। जैसे तिलो मे तेल, दूध में घी, स्रोतो में जल, अरणि मे अग्नि विद्यमान है, उसे प्रकाश मे लाने की जरूरत है, वैसे हमारे भीतर ही परमात्म-देव विद्यमान हैं, ध्यान द्वारा उन तक पहुचा जा सकता है। —क्रमशः

(पृष्ठ ३ का शेष)

राजनीतिक दावपेचो से किया जाना चाहिए और इसमें सात्विक वृत्तियों को सामने खड़ा करके उसके आधार पर किसी को दण्डित करना शोभनीय नहीं माना जा सकता। हमारी यह धारणा है कि यदि धर्म राजनीति मे प्रवेश करता है तो राजनीति को अधिक शुद्धता प्रदान करता है परन्तु यदि धर्म मे राजनीति का प्रवेश होता है तो धर्म विकृत हो जाता है, और जनसाधारण में विकृत धर्म की कोई प्रतिष्ठा नही होती। इस दुखद स्थिति पर अब केवल खेद ही प्रकट किया जा सकता है।

आर्यसमाजों के सत्संग

९-११-८०

अन्धामुगल प्रतापबाग—पं० केशवचन्द्र मुन्जाल; अमर कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह; आर्यपुरा- पं० जगदीशप्रसाद विद्यावाचस्पति, आर० के० पुरम सैक्टर ६—पं० सत्यभूषण वेदालकार; आनन्द विहार—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; इन्द्रपुरी—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी; किदवाईनगर—श्रीमती लीलावती आर्या; कालकाजी—पं० वेदपाल शास्त्री; करोलबाग—आचार्य कृष्णगोपाल; कोटला मुबारिकपुर—पं० हीराप्रसाद शास्त्री; कीता कालोनी—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री तथा स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश I—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; गुडमण्डी—प० सीसराम भजनोपदेशक; १५१ गुप्ता कालोनी—पं० रामरूप शर्मा; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक; जनकपुरी बी० ब्लाक—श्रीमती सम्पदा आर्या; तिलकनगर—श्री मोहनलाल गांधी; तीमारपुर—पं० ईश्वरदत्त एम० ए०; दरियागंज—पं० महेन्द्रप्रताप शास्त्री; नारायण विहार—पं० खुशीराम शर्मा; न्यू मोतीनगर—पं० वीरव्रत शास्त्री; पंजाबीबाग—पं० मुनिशंकर वानप्रस्थी; पजांबीबाग एक्स्टैनशन १४/१- पं० विष्णुदेवप्रसाद विद्यालंकार; बाग कड़े खां—पं० बरकतराम भजनोपदेशक; बिरला लाईन्स—प्रो० सत्यपाल वेदार; माडल टाऊन—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री एम० ए०; मोतीबाग—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; महावीरनगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; मोतीनगर—पं० अर्जुनदेव प्रभाकर; माडलबस्ती—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री; महरौली—पं० अर्जुनदेव आर्य; रघुवीरनगर—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; रमेशनगर—पं० हरीशवेदी; राणाप्रतापबाग—पं० विजयपाल शास्त्री; लड्डूघाटी—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; लाजपतनगर; ला० लखमीदास; विक्रमनगर—प० मनोहर विरक्त; विनयनगर—डा० वेदप्रकाश महेश्वरी; सदरबाजार पहाडी धीरज—प० गणेशदत्त वानप्रस्थी; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सरायरोहिला—पं० गणेशप्रसाद विद्यालकार; साऊथ एक्स्टैंनशन-II—प० अशोककुमार विद्यालकार; होजखास-ई-४९। साय ४ से ५, आचार्य हरिदेव सि० भू०।

आर्यसमाज : गतिविधि

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश का निर्वाचन—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की रविवार दिनाक २६ अक्तूबर ८० को आर्य समाज जड चलाक जिला : महबूबनगर मे सभा की वार्षिक साधारण सभा के अधिवेशन मे सभा के पदाधिकारियो एव अन्तरंग सदस्यो का निर्वाचन श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी प्रधान सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन से पूर्व एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि "आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण "आज से" आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश" कहलाएगी। उपस्थिति १६० प्रतिनिधियो ने इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया। निर्वाचन के अनुसार श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी प्रचण्ड बहुमत से प्रधान और डा० विजय वीर जी विद्यालकार सर्वसम्मति से निर्विरोध मन्त्री निर्वाचित हुए। उपप्रधान श्री देवेन्द्रनाथ जी भनोट, श्री के० वी० गगाधर जी तथा श्री गगाराम जी एडवोकेट के नाम स्वीकार किए गए। सदन ने उक्त पांचों अधिकारियो को अधिकार दिया कि शेष सभी अधिकारियो अन्तरग सभासदो तथा अन्य सभाओ के अधिकारियों एवं सदस्यो का चयन करे।

इस अवसर पर श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष रूप से आमन्त्रित थे। उनकी उपस्थिति मे यह निर्वाचन निर्विघ्न संपन्न हुआ।

॥ भजनावली कार्यक्रम ॥

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा—क्षेत्र मुफरगजव, नई दिल्ली के अन्तर्गत आने वाली बारह आर्यसमाजो का सामुहिक साप्ताहिक सत्सग दिनाक २६-१०-१९८० को प्रात काल ८ बजकर ३० मिनट से लेकर दोपहर १२-०० बजे तक आर्यसमाज मन्दिर, मोतीबाग 'साऊथ' मे सम्पन्न हुआ। जिसमे सभी समाजो के अधिकाश सदस्यो ने सपरिवार भाग लिया और इस प्रकार सत्सग मे उपस्थिति लगभग तीन सौ तक रही। सत्सग की विशेषत यह थी कि यज्ञ के पश्चात् ढाई घन्टे तक केवल भजनों का ही कार्यक्रम 'भजनावली' के नाम से चलाया गया, जिसमे सभी समाजों से आये हुए सदस्यो ने वैदिक सिद्धान्त-मूलक प्रभुभक्ति के मनोहर भजन प्रस्तुत किए जिनका सभी उपस्थित आर्यजनो ने बड़ी तन्मयता से रसास्वादन किया।

उपरोक्त कार्यक्रम में महिलाओं का उत्साह, योगदान विशेषरूप से प्रशसनीय था।

दयानंद सा दीप बुझ स्वयं, बांट गया आलोक शिव अमर।

तम वैभव पर पली अमा में,
जब लगता था सब कुछ नश्वर ।
दयानन्द-सा दीप बुझ स्वय,
बाट गया आलोक शिव अमर ॥

जग मे आया, पला परिधि मे,
बधन तोड, बाध मर्यादा,
रूढिवाद का दुर्ग ढहाया,
पथ दिखलाकर श्रुति का सादा !

जडता का दृढ व्यूह तोडकर,
क्षमता का मुख सजग मोडकर।
भर अंकुत एकता जनो मे,
आग्रह किया सत्व पर ज्यादा ॥

प्रलोभनों पर लात मारकर,
मुखर कर गया प्रिय जीवन-स्वर।
दयानद-सा दीप बुझ स्वयं,
बांट गया आलोक शिव अमर ॥१॥

ढोंगो की प्राचीर गिराकर,
तर्कों की पनपायी भाषा ।
पराधीनता की जड़ खोदी,
स्वतंत्रता की दे परिभाषा ॥

परदेशी शासन से हटकर,
प्रिय स्वराज्य मे बल-जीवट भर।
नैतिकता की नीद भगाकर,
शुद्ध सघटन को दी भाषा ॥

आर्य राष्ट्र का ऋक्थ सहेजा,
विभुता का बन नीड़ मनोहर।
दयानद-सा दीप बुझ स्वय,
बाट गया आलोक शिव अमर। २ ॥

नव विकीर्ण अलोक वृत्त पर,
स्वामि श्रद्धामद पल गया।
गुरुदत्तो का गर्जन सुनकर,
घोर संकुचित अनृत दल गया।

लेखराम की त्याग-तपस्या,
ग्राम-नगर की जटिल समस्या ।
उभरी-मचली सफल बन गयी,
झूठा माया जाल जल गया।

शास्ता चेता चिति के बल पर,
कृति की पाली मधुर धरोहर।
दयानद-सा दीप बुझ स्वय,
बाट गया आलोक शिव अमर ॥३॥

दयानद की जय के बल पर,
क्यों तुम नीद नगर मे खोये ?
रचना-सघटना मे हट क्यो —
बीज कलह के कटुतम बोये ?

आर्य-भावना से कुछ हट कर,
ऋषि की थाती से कुछ कटकर,
आर्यो ! बोलो, अनार्यता के—
कलुष-शिविर मे क्यो जा रोये ?

विभव-गद्दियो के पचड़ो मे,
कुचल रहा विज्ञान कलेवर।
दयानंद-सा दीप बुझ स्वय,
बाट गया आलोक शिव अमर ॥ ४ ॥

वर्षों से जो जगा रही है
दीवाली, तुम सभलो-जागो।
अन्धानुकरण, क्षुद्र आचरण,
सुप्ति-वरण की ममता त्यागो।

वचन, कर्म, संघटन बना दो,
राष्ट्र-वाद से भक्ति रंगा दो।
मानवता का कलश सजाकर,
बनो पहरुए मत डर भागो ॥

तभी बचेगा भारत अपना,
विश्व-शांति की उठा नव लहर।
दयानंद-सा दीप बुझ स्वयं,
बांट गया आलोक शिव अमर ॥५॥

सार्वभौम आधार-बिन्दु पर,
स्वस्थ प्रकाशन को प्रश्रय पालो ।
वेद, स्मृति, वेदाग, ब्राह्मणो—
को हिन्दी माध्यम में ढालो ॥

ऋषि-ग्रन्थो के सुलभ सस्करण,
करो प्रचारित आर्य, आचरण।
एक मार्ग पर ओ३म ध्वजा ले,
एक साथ उठ मचलो लालो !

थिरकर मुहूर्त, कर्दम कांपे,
ऐसा ध्वनित करो गौरव वर।
दयानंद-सा दीप बुझ स्वयं,
बांट गया आलोक शिव अमर ॥ ६ ॥

उसी समय ऋषि-ऋण से छुटकी,
अधिक नहीं, कुछ मुक्ति मिलेगी।
प्रश्नों के उत्तर उभरेंगे,
भावी पीढ़ी-कली खिलेगी।

संहारक आयुध न चलेंगे,
गुट बाजों के छल न पलेंगे,
स्वस्थ धर्म-समभाव भूति से,
सम्प्रदाय की मूल हिलेगी,

तभी स्वप्न साकार बनेगा,
बची रहेगी भली धरोहर।
दयानद-सा दीप बुझ स्वयं,
बांट गया आलोक शिव अमर ॥७॥

—भैरवदत्त शुक्ल

'ज्योति जलाओ'

दनुज वृत्तियां फैली भू पर, अट्टहास करते हैं निशिचर।
मानवता का रुदन चतुर्दिक, गूंज रहा धरती पर सत्वर ॥
उठो ! गरजते सिह सदृश तुम, दनुजवृत्तियों से टकराओ।
जगमग जगमग ज्योति जलाओ ॥

घिरा धरा पर घना अंधेरा, लगता यहां तिमिर का फेरा।
पड़ा हुआ है देवभूमि पर, कंस तथा रावण का डेरा ॥
राम-कृष्ण के वंशज ! जाग्रत होकर, रण का बिगुल बजाओ।
जगमग जगमग ज्योति जलाओ ॥

ज्ञान प्रकाश धरा पर बिखरे, सुख-समृद्धि-सफलता सवरे।
मानवता पथ का अनुगामी-बन, मानव धरती पर बिचरे ॥
शांति तथा समरसता भू-पर पुनः पुरातन सी ले आओ।
जगमग जगमग ज्योति जलाओ ॥

—राधेश्याम आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा आर्यजन प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा सैनी प्रिन्टर्स, पहाड़ी धीरज, दिल्ली, फो। ५१२१६३ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड फोन नं० ३१०१५० नई दिल्ली

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ अंक ४ रविवार, १६ नवम्बर १९८० दयानन्दाब्द १५६

ऋषि-निर्वाणोत्सव पर नेताओं का आह्वान

वैदिक धर्म के प्रचार और मातृभूमि की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ने पर बल

सर्वतोमुखी क्रान्ति के मूल प्रणेता दिव्य द्रष्टा महर्षि दयानन्द का ९७ वा निर्वाण दिवस ७ नवम्बर को दिल्ली के विशाल रामलीला मैदान मे बडे समारोह से मनाया गया। इसका आयोजन दिल्ली राज्य की १८० आर्यसमाजो एव अनेक शिक्षण सस्थाओं ने आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में किया। उत्सव की अध्यक्षता दयानन्द मठ के आचार्य स्वामी सर्वदानन्द जी ने की।

सभा से पूर्व वृहद् यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य महात्मा दयानन्द जी थे। यज्ञ के तीन विशिष्ट यजमान थे ट्रिनीडाड दक्षिणी अमेरिका के बैरिस्टर श्री लक्ष्मीदत्त शिवप्रसाद शुक्ल (सपत्नीक), श्री मादीलाल तथा श्री रघुवीर सिंह (आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली)। यज्ञ के समय लगभग दो हजार आर्य जन उपस्थित थे। यज्ञ की समाप्ति पर महात्मा दयानन्द जी ने अपने प्रवचन में इस ओर ध्यान खींचा कि यद्यपि हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाते हैं तो भी देश की समस्याएं हमारे नियन्त्रण से बाहर जा रही हैं। ऐसे अवसर पर चुनौतियो का सामना करने के लिए सगठित होकर गुरुवर दयानन्द के आदेशों का पालन करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने ध्वजारोहण का कार्य सम्पन्न किया। उन्होने इस अवसर पर कहा कि 'ओ३म्' ध्वज को विश्वभर मे फैलाने का हमें सकल्प लेना चाहिए। महर्षि ने हमें दो मुख्य काम सौंपे थे—विश्व मे वेद का प्रचार और भारत को आर्य राष्ट्र बनाना। अभी तो हमें अपनी आवाज शिक्षण सस्थाओ मे पहुँचाने मे भी कठिनाई पैदा हो रही हैं। इन सस्थाओ के १४ लाख छात्रो को आर्यो और वेदों के अपने सम्बन्ध मे जो भ्रामक शिक्षाए दी जाती हैं उसके कारण हमारी नई पीढी मे अपनी ही सस्कृति और परम्परा के विरोध भाव पैदा हो रहे हैं। इस ओर हमे विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

ध्वज गीत तथा वैदिक राष्ट्र गान श्री प्रकाशचन्द्र व्यवस्थापक आर्य बाल गृह ने बहुत ही मधुर स्वर मे प्रस्तुत किया।

श्रद्धांजलि सभा--

महर्षि दयानन्द के निर्वाण के इस पर्व पर स्वामी सर्वदानन्द जी की अध्यक्षता मे अनेक वक्ताओ ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्रद्धाजलि अर्पित करने वालों में सार्वदेशिक सभा के प्रधान वानप्रस्थ श्री रामगोपाल जी, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, ससद सदस्य श्री यशपाल कपूर, ट्रिनिडाड की आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री लक्ष्मी दत्त शिवप्रसाद गुप्त श्री बनारसी सिंह श्री बनवारीलाल शांदा, श्रीमती शान्ता भंडारी, वयोवृद्ध श्री केशवचन्द मुत्जाल, श्री सत्यपाल बेदार, और श्री करतार सिंह था।

श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने अपने भाषण में हिन्दू कोड बिल की व्यवस्थाओं के केवल हिन्दुओं पर लागू होने तथा उसमे अन्य अल्पसख्यक वर्गों के मुक्त रहने के दुष्परिणामो की ओर ध्यान खींचा। उन्होने इस बात पर ध्यान दिलाया कि जब तक देश भर के लिए सभी सम्प्रदायो के लिए एक जैसा कानून नही बनाया जायेगा, तब तक हिन्दू कोड बिल समाज में असतुलन पैदा करता रहेगा। इसके कारण हिन्दुओ को अनेक बार धर्म परिवर्तन करना पडता है।

इसी प्रसग मे उन्होने मुरादाबाद के दगो की चर्चा करते हुए ध्यान दिलाया कि मुरादाबाद के मुस्लिम विद्रोह के कारण वहा के हरिजनो को सबसे अधिक हानि हुई है। हरिजनो के मकान जला दिये हैं और उन्हे अन्य प्रकार से भी पीडित और अपमानित किया गया। उन्होंने इन हरिजनो के पुर्नवास के लिए जोरदार प्रयत्न करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होने कहा कि सार्वदेशिक सभा इस दृष्टि से कदम उठा रही है और आशा है जल्दी ही सभा की ओर से हरिजनो के लिए मकान बनवा दिये जायेंगे।

वीर अर्जुन के सम्पादकीय विभाग से सबद्ध श्री बनारसी सिंह ने आह्वान किया कि महर्षि को सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम राष्ट्र रक्षा का व्रत लेकर भारत में पनप रहे देशद्रोही तत्वो से लोहा लें। उसका आधार उन्होने तीन देवियो मातृभाषा, भारतीय संस्कृति और भारत भूमि के प्रति निष्ठा को प्रबल रूप में जगाना बताया।

ससद सदस्य श्री यशपाल कपूर ने आर्यसमाज को सामाजिक कुरीतियो के निवारण हरिजन एव दलितोद्धार तथा देशभक्ति के विशाल आन्दोलन की संज्ञा देते हुए कहा कि इसमें कहीं कोई संकीर्णता नहीं है। बाहरी प्रदूषण को दूर करने के लिए यज्ञ का विधान सर्वोत्तम है।

ट्रिनीडाड की आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री लक्ष्मीदत्त शुक्ल एडवोकेट ने कहा कि आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द का संदेश उनके देश के लोगो को शान्ति प्रदान कर रहा है। बारह लाख जनसंख्या के उस देश मे आर्यसमाज के हजारो सदस्य हैं। वहाँ १५ आर्य समाजें हैं और ९ आर्य विद्यालय हैं।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए स्वामी सर्वदासनन्द जी महाराज ने आह्वान किया कि वैदिक धर्म के प्रचार और महर्षि के सिद्धान्तो के प्रचार के लिए हमें दृढ सकल्प लेना होगा और आर्यसमाज के संगठन को मजबूत बनाने को सक्रियता प्रयास करनी होगी। उन्होने स्वाध्याय द्वारा जीवन निर्माण और दान की प्रवृत्ति को बढाने पर भी जोर दिया और कहा कि शुद्धिकार्य मे तेजी लाने की जरूरत है।

इस सारे आयोजन को सफल बनाने के लिए सर्वश्री महेन्द्रकुमार शास्त्री, राजेन्द्र दुर्गा एव प्राणनाथ घई ने अथक

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पन्न परिवार विवाह सम्बन्ध

सम्पन्न परिवारो के आपसी वैवाहिक सबंध कराने के लिए सुप्रसिद्ध श्री राममूर्ति जी कैला-प्रधान, आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली आर्य समाज मे सायंकाल ६ से ७ बजे तक उपस्थित रहते हैं। श्री कैला सपन परिवारो एवं उद्योगपतियो के आपसी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कराने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी सेवाओ का लाभ उठाने के लिए सायंकाल आर्य समाज में उनसे सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

इस अंक में

सम्पादक :—वि. सा. विद्यालंकार

वेदमनन

अग्नि (परमात्मा) के तीन रूप तथा कार्य

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे । यजु: ३-५

ऋषिः—प्रजापतिः । देवता-अग्निः ।

शब्दार्थ—(अग्निः) परमात्मा (भूः) सबको उत्पन्न करके उनके निवास, मंगल और वृद्धि का कारण है। (भुव) स्वयं चित् स्वरूप होते हुए चेतन मात्र की चेतना को उच्चतर पर ले जाने वाला है। (स्वः) स्वयं आनन्द स्वरूप होते हुए प्राणी मात्र को आनन्द प्राप्त कराने वाला है। वह (भूम्ना द्यौरिव) महिमा में द्युलोक के समान तथा (वरिम्णा-पृथिवी इव) विस्तार में पृथिवी के समान अगम्य है।

हे (देवयजनि पृथिवि) देवजनों के यज्ञों की आधार भूमि (तस्याः ते पृष्ठे) उस तेरे ऊपर (अन्नाद्याय) अन्नादि की प्राप्ति तथा भक्षण के लिये (अन्नादम्) अन्न (भोग्य) द्वारा बाधने वाले (अग्निम्) परमात्मा अथवा भौतिक अग्नि को (आदधे) मन में धारण करता हूँ, तथा उपयोग के लिये स्थापित करता हूँ।

निष्कर्ष :- परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। तीनो लोको का स्रष्टा, धर्ता है। उसकी महिमा और विस्तार अनन्त तथा अगम्य हैं। सब भोग्य पदार्थों का दाता वही है। इसलिये उसे अपने मन में सदा धारण किये रहना चाहिये।

२- भौतिक अग्नि ही सब अन्नों को पकाने का निमित्त है। इसलिये भौतिक भोगो की प्राप्ति के लिये उसकी स्थापना करके उसका भरपूर उपयोग करना चाहिये।

३- पृथ्वी सब कर्मों की आधार भूमि है। अच्छे या बुरे दोनो तरह के सब कर्म इसी पर होते हैं। परमेश्वर ऐसी कृपा करें कि यह भूमि हमारे लिये सदा देव-यजनी बनी रहे।

विशेष :- प्रजा मात्र की रक्षा चाहने वाला ऋषि प्रजापति ही अपनी साधना को बढाते-बढाते सब को भोग्य पदार्थ प्रदान करने वाला और उन्हें आगे बढाने वाला अग्नि बनाता है।

परमात्मा ही प्रजापालन के कारण प्रजापति और सबको अन्न प्रदान करके उन्हें कर्म बन्धन में बांधने वाला अन्नाद अग्नि है।

अर्थ पोषक आधार :- अन्न + अद (भक्षणे, अदिबन्धने च) अन्नादः । भू - सत्ताया मगले वृद्धौ निवासे व्याप्ति सम्पदोः ।

अभिप्राये च शक्तौ च प्रादुर्भावे गतौ च भूः ॥

भुवः-भुवो अवकल्कने । स्वः-सुखमुदक वा, मोक्षसुख, सुखस्वरूपम् । (स्वामी दयानन्द)

अन्नाद्याय—अन्न + अद्य (भक्षणम्) + चतुर्थी । —मनोहर विद्यालंकार

सुधारक, सेवी, सम्पादक : स्व० द्वारकाप्रसाद सेवक

लगभग ६० वर्ष की आयु में बम्बई में, ३० अक्तूबर को श्री द्वारका प्रसाद जी सेवक का निधन उन निर्भीक तथा पुराने मूल्यो, आस्थाओ और आदर्शों को मानने वालो की घटती हुई सख्या को और कम करने वाली घटना है, जो सेवा को निस्वार्थ कर्म, पत्र-सम्पादन को सामाजिक क्रान्ति और समाज-सुधार को अपने जीवन का ध्येय बनाकर चले थे। सेवक जी ने अपने जीवन का आरम्भ इसी मिशन' में किया और विदाई की वेला तक इसी को लेकर चलते रहे। वे पद-लोलुपता से दूर स्वाधीनता-सग्राम में भी सक्रिय रहे और अनेक क्रान्तिकारियों से भी उनका निकट सम्पर्क था।

आर्यसमाज उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र था परन्तु वहां भी बागी, विद्रोही कहे जाने वाले सेवकजी ने सदा अपने ही समाज में सुधार को अन्यो में सुधार से अधिक महत्व दिया। चार दशक पूर्व उनकी प्रेरणा परिश्रम और प्रकाशन के फल, 'आर्य समाज किस ओर", पुस्तक ने आर्य समाज में आ रही बुराइयो को उखाड फेंकने का प्रयास किया था। उनका वहीं मिशन हाल तक बना रहा। कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित "पतन के कगार पर" पुस्तक (जो श्री दीनानाथ जी सिद्धान्तालकार के सहयोग से सेवक जी ने लिखी और स्वय प्रकाशित की) जैसे उनके समस्त जीवन के इस सुधारवादी दृष्टिकोण का जीवन्त प्रमाण है।

फीरोजाबाद में जन्म, शाहजहापुर, बुलदशहर और नैनीताल में शिक्षा के बाद सेवक जी ने अपना सक्रिय सामाजिक साहित्यिक जीवन इन्दौर में प्रारम्भ किया और आचार्य केशवदेव शास्त्री के 'नव-जीवन' का सम्पादन सभाला। शास्त्री जी को सेवक जी अपना गुरु मानते थे और जब शास्त्री जी अमरीका चले गये तब सेवक जी ने पत्रिका का कार्यभार सभाला। सेवक जी ने अपनी निर्भीकता का परिचय उस समय भी दिया जब उनके गुरु एक अमरीकी महिला से विवाह कर बैठे। तब उन्होने लिखा था कि अन्तर्राजीय, अन्तर प्रान्तीय विवाह तो उचित है वाछनीय है, परन्तु अतर राष्ट्रीय विवाह के लिए अभी उचित समय नहीं है। उस विवाह का क्या हुआ, कहा तक उसने आर्य समाज और हिन्दू जाति को समर्थ बनाने में योग दिया, किसी को नही मालूम।

सेवक जी अपने आरम्भिक कार्यक्षेत्र, इदौर, में करीब २० वर्ष सक्रिय रहे। वही उन्होंने मातृ मदिर व अनाथालय की स्थापना की और वही सरस्वती सदन के माध्यम से ऐसी प्रसिद्ध पुस्तकें लिखवाई/प्रकाशित की जिन्होने देश और समाज की बहुत सेवा की। प्रवासी भारतवासी (लेखक श्री बनारसी दास चतुर्वेदी), 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' (स्वामी भवानी दयाल सन्यासी), फीजी में २२ वर्ष, जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकों का श्रेय सेवक जी को है। कुली प्रथा को बंद करवाने का श्रेय यदि किसी पुस्तक को दिया जा सकता है तो वह प्रवासी भारत-वासी ही है। महात्मा गांधी को हिन्दी जगत में परिचित करवाने का श्रेय दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास ही है। आर्य मार्तण्ड, भारतीय आदर्श, सद्धर्म प्रचारक, वैदिक सदेश आदि पत्र-पत्रिकाओं का कुशल सम्पादन भी सेवक जी ने पूरी निष्ठा से किया। वे सम्पादन के सबध में अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निभाते थे। रचनाओ को निखारते थे, और लेखको तथा कवियो को प्रोत्साहन देने में सदा तत्पर रहते थे।

लेखक : द्वा० न० वर्मा

इदौर में समाज-सेवा में सेवकजी का अद्वितीय स्थान था। वस्तुत: सेवक जी का उपनाम उन्हे तभी मिला जो उन्होने सहर्ष स्वीकार किया। अधिकांश उन्हे सेवक जी नाम से ही जानते थे।

इदौर, मसूरी और उसके बाद दिल्ली तथा अब पिछले ४० वर्ष से बम्बई ही सेवक जी का कार्यक्षेत्र रहा जहाँ उन्होने प्रकाशन और समाज सेवा तथा एक नये क्षेत्र—चिकित्सा में भी सेवा की। दिल्ली में उन्होने सेवा सदन नाम से आयुर्वेदिक औषधियो की फार्मेसी भी स्थापित की और अनेक उपयोगी दवाइयाँ तैयार कराईं। व्यापारिक बुद्धि और रुचि के अभाव के कारण यह उपक्रम अधिक समय चल नही सका और बंद करना पडा।

बम्बई में सेवक जी ने नालन्दा प्रकाशन के माध्यम से अनेक पुस्तको का प्रकाशन किया जिनमें भारत की भाषा (श्री सत राम जी बी ए.), हमारा समाज, शबनम (श्री जहूर बख्श), दो फुल (श्रीमती सत्यवती मलिक), ग्राम स्वराज आदि महत्वपूर्ण पुस्तको का स्थान है। इन सभी प्रकाशनो के पीछे कुछ उद्देश्य था, कुछ संदेश था।

हिन्दी प्रचार भी सेवक जी के जीवन का एक पवित्र उद्देश्य था जो उन्होने अहिन्दी भाषी बम्बई में १९४० से ही शुरू कर दिया था। उन्होंने अहिन्दी भाषियो को, विशेष रूप से युवक-युवतियों को निःशुल्क हिन्दी पढाने का कार्य किया और पुस्तको के साथ उन्हे स्नेह भी प्रदान किया। उनमें से अनेक सेवक जी को पिताजी ही कहते थे।

सेवकजी जात पाँत के कट्टर विरोधी रहे। उनकी सतान को भी बहुत समय तक पता ही न था कि वे हिन्दू जाति की किस उपजाति के है। सेवक जी ने कभी अपनी उपजाति अपने नाम के साथ नही लिखी, जनगणना में वे धर्म के कालम में वैदिक लिखवाते थे। वे मानते थे कि जात पाँत के कारण हिन्दू समाज दुर्बल हुआ है। इसी फूट ने जर्जर उसे किया है और इसी ऊच-नीच के कारण यह 'पतन के कगार पर' पहुँच गया है उनकी अतिम पुस्तक का शीर्षक भी यही था।

रूढियो और जातपात के विरुद्ध विद्रोह सेवकजी का प्रिय विषय था, शौक और मिशन था। उन्होने ईसाई बन चुके बाजपेयी परिवार को फिर शुद्ध कर उसी परिवार की कन्या से उनका विवाह कराया, दहेज का तो प्रश्न ही नही उठता था। उस समय यह भी एक साहसिक कार्य था परन्तु सेवकजी ने सदा ही साहस और विद्रोह के कार्य किये है। सेवकजी कहा करते थे : मैने अनेक बार धोखे खाये हैं। लाहौर में एक स्वामी (आर्य स्वामी जी नहीं) के हाथो जहर भी खाया और तब मुश्किल से उनकी प्राणरक्षा हो सकी थी—परन्तु उनका कहना था कि मुझे एक ही बात का सन्तोष है कि मैने कभी किसी को धोखा नही दिया। नई पीढी को सेवकजी के आदर्शों से साहस, निष्ठा, सेवा और सन्तोष की प्रेरणा लेनी चाहिए।

सम्पादकीय

राजनीति की शिकार हरिजन समस्या

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभी कुछ दिन पूर्व मुरादाबाद के मुस्लिम विद्रोह के शिकार हरिजनो की सहायता के लिए एक अपील की थी। इस विद्रोह के समय न केवल मुरादाबाद के हरिजनो की सम्पत्ति नष्ट की गयी बल्कि उन्हें अनेक यातनायें भी सहनी पडी और साथ मे हरिजन महिलाओ को भी अपमानित होना पडा। ऐसी पीडाजनक स्थिति मे किसी भी सभ्य समाज का हरिजन के प्रति सहानुभूति का होना और उनकी सहायता के लिए आगे आना एक स्वाभाविक और मानवीय कार्य है। हमे विश्वास है कि हमारी शिरोमणि सभा ने सकटग्रस्त हरिजनो की सहायता के लिए और उनके आवास की व्यवस्था के लिए जो अपील की है उसका हमारे समाज पर अच्छा प्रभाव होगा और इस मानवीय कार्य के लिए लोग उदारतापूर्वक आगे आयेंगे।

जैसाकि हम इस सारे सकट को मानवीय रूप लेते है इसी प्रकार यदि इसे राजनीतिक क्षेत्रो में भी मानवीय रूप में लिया जाय तो सम्भवत हरिजनो का सकट इतना उग्र न होने पाता और उन्हें इतनी यातनाएँ न सहनी पडती और न अपमानित होना पडता। स्थिति से ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे राजनीतिज्ञ मानवीय सकट को उस रूप में नही ले रहे जिस रूप में उसे लिया जाना चाहिए। राजनीतिज्ञों का अनुगमन करने वाले अग्रेजी समाचार पत्र भी हरिजनो के इस सकट पर लगभग मौन रहे हैं। यह एक बडी विचित्र सी स्थिति है कि जब सवर्ण और पिछडी जाति कहे जाने वाले समृद्ध हरिजनो पर किसी भी प्रकार का अत्याचार करते हैं तो अग्रेजी समाचार पत्रो के कालम के कालम इन घटनाओ से रंगे रहते हैं और महिनो तक इनकी चर्चा होती हैं। इन घटनाओ के विश्लेषण के नाम पर सारे हिन्दू समाज को अपराधी बनाकर कटघरे में खडा कर दिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश के राजनीतिज्ञो और अग्रेजी समाचार पत्रो का मानवीयता केवल तभी जाग्रत होती है जब हिन्दुओं का एक वर्ग अपने दूसरे कमजोर वर्ग से दुर्व्यवहार करता है। इन लोगो ने सामान्य मानवीय व्यवहार को भी बहुसख्यक और अल्पसख्यक वर्गो में बाँट रखा है और ये लोग अपना अधिकार समझते हैं कि केवल बहुसख्यक वर्ग के दुर्व्यवहार को ही प्रचारित किया जाय।

फिर भी समस्या को चाहे किन्ही रूपो में क्यो न बाँटा जाये वह मूलत मानवीय ही रहती है। इसलिए समाज के किसी भी कमजोर अथवा पीडित वर्ग को किसी भी सकट का सामना क्यो न करना पडे उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त करना और स्थिति में सुधार लाकर सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए वातावरण तैयार करना पूरे सगठित समाज का कर्तव्य है।

इसके साथ जुडी हुई एक और समस्या भी है और यह है कि देश के कमजोर वर्गों को यातनाए देकर अथवा उन्हें प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिये मजबूर करना, धर्म परिवर्तन के लिये बलप्रयोग भारतीय इतिहास से परिचित लोगो के लिये कोई नयी चीज नही है। हम बलप्रयोग मध्य युग में भी करते थे जबकि हिन्दु एक शासित वर्ग था और अपनी रक्षा करने में भी पूरी तरह से समर्थ नही था। उस स्थिति में शक्तिशाली वर्ग के लिए बलप्रयास सामान्य बात थी। फिर भी यह एक आश्चर्य की बात है कि इस राजनीतिक दासता के युग में भी हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन का रूप इतना उग्र नही था जितना देश स्वतन्त्र होने के बाद उग्र हो गया। विडम्बना यह हिन्दु बहुमत द्वारा निर्वाचित सरकार अपने आपको हिन्दू कहने और समझने में अपने आपको लज्जित अनुभव करती है और इसलिए उसका यह नारा रहता है कि वर्तमान सरकार एक धर्म-निरपेक्ष सरकार है। अर्थात धर्म-निरपेक्षता केवल हिन्दुओ तक सीमित है और हिन्दुओ के क्षेत्र से बाहर धर्म निरपेक्षता समाप्त हो जाती है और उनके हिन्दुओ के कमजोर वर्गों पर किये जाने वाले अत्याचारो को भी बहुधा उपेक्षा की दृष्टि से और वोट जमा करने की प्रवृति के कारण इस स्थिति को प्रोत्साहन भी दिया जाता है। इसके उदाहरण देने की आवश्यकता नही है, फिर यह सत्य है कि हमारा हरिजन वर्ग देश के अल्पसख्यक कहे जाने वाले लोगो से उतना ही पीडित है और उनके आक्रामक रवैये का उतना ही शिकार बना है जितना कि आर्थिक कारणो से अपने समान धर्म वाले हिन्दुओ के आक्रमण का। फिर भी जब इस आक्रमण का साम्प्रदायिक आधार पर बाटकर एक ओर तो हरिजनो की सब प्रकार की सहायता की जाती है और आक्रमणकारियो के विरुद्ध समाजसम्मत कार्यवाई की जाती है, दूसरी ओर आक्रमण से पीडित हरिजनो की न तो कोई सहायता की जाती है (सान्त्वना देने की बात तो दूर रही) उल्टा उन्हें ही अपराधी घोषित कर उन्हें और अधिक यातनाएं दी जाती हैं। मुरादाबाद में यही सब कुछ घटित हुआ है।

जहाँ तक धर्म परिवर्तन का सबध है इसमें भी [illegible] परिवर्तन की अनेक घटनाए सामने आई है। शक्ति प्रयोग [illegible] राजनीतिक दबाव के कारण इस प्रकार के धर्म परिवर्तनो की चर्चा को साम्प्रदायिकता का नाम दे दिया जाता है और साम्प्रदायिकता के होने से घबराकर प्राय: समाचार पत्र भी ऐसी घटनाओ को प्रकाशित [illegible] देते है।

जिस स्थिति में से इस समय देश गुजर रहा है [illegible] यह आवश्यक है कि देश के प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग इस समस्या पर गहराई और गम्भीरता से विचार करें। देश के स्वतन्त्र होने के बाद में जिस [illegible] विचारों से होकर और कुछ पूर्वाग्रहो के साथ इस समस्या पर जो चिन्तन किया गया है वह इतना दोशपूर्ण है कि उसने हमारे समाज को छिन्न-भिन्न कर दिया है। [illegible] है। समाज का साम्प्रदायिक सन्तुलन इतना बिगड [illegible] अब अल्पसख्यक वर्गों के बहुमत में बदल जाने का खतरा पैदा हो गया है। [illegible] जहां अल्पसख्यक वर्ग उत्साहित होकर और अधिक दबाव डालने की [illegible] कर हिंसात्मक कार्यवाहियो पर उतर रहा है और अपने [illegible] वाले वर्गो से भी प्रोत्साहन पा रहा है। इसका [illegible] हमारे सामने है। दूसरी ओर बहुसख्यक वर्ग अपनी आन्तरिक विसगतियों से [illegible] टूट ही रहा है उसके [illegible] ही शासक वर्ग भी प्रत्येक प्रकार के हिंसात्मक कार्य के लिये केवल [illegible] बहुसख्यक को ही दोषी ठहराता है और उन्हें ही सभी प्रकार की यातनाएँ देता है। इसका फल यह होता है कि अपनी विसगतियो के कारण निरन्तर विघटित होता बहुसख्यक समाज अब और तेजी से विघटित होने लगा है। आज न केवल शिक्षित और सवर्ण वर्ग के लोग अपने आपको अपने ही समाज से जुडा हुआ मानने से इनकार कर रहे हैं, बल्कि वह वर्ग जो कि कमजोर है और जिसे कानूनी तौर पर अनसूचित जाति और अनसूचित जनजाति का नाम दिया गया है, वह अपने आपको बहुसख्यक वर्ग का हिस्सा मानने को तैयार नही है, अब तो उसकी यह खुली माँग है कि उसे स्वतन्त्र जाति के रूप में स्वीकार किया जाये और उसे उसी रूप में मान्यता प्रदान की जाये। यह एक प्रकार से एक ऐसी स्थिति बन गयी है कि हमने स्वय ही अपने बहुसख्यक समाज को छोटे छोटे वर्गो में बाँट दिया है और उनमे से प्रत्येक वर्ग अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की बात करने लगा है।

देश की हरिजन समस्या जितनी हिन्दू समाज की अपनी पैदा की हुई है उससे अधिक विकराल रूप हमारी प्रशासनिक नीतियो ने दिया है। उसका परिणाम यह है कि हरिजन वर्ग अलग-थलग पड गया है और प्रत्येक ऐसा वर्ग जो अपने आपको हिन्दू मानने से इन्कार करता है उसे अपने मे पचाने को तैयार है। हरिजनो पर इस समय जो अत्याचार हो रहे है उसके पीछे यही मनोवृत्ति भी काम कर रही है। ऐसे समय में हमारे समाज को जागरूक होकर हरिजनो को अपने साथ लेने की जरूरत है और उन्हें केवल यह बताने की नही बल्कि यह विश्वास दिलाने की जरूरत है कि वे उसी वर्ग का अग हैं जिसके हम सदस्य है। वे अपने सकट के समय हमें पूरे विश्वास के साथ देख सकते है।

सार्वभौम आर्य महासम्मेलन, लन्दन

क्या विदेशियों में भी आर्य धर्म का प्रचार हुआ है ?

लेखक :
डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

लण्डन का आर्य महासम्मेलन इन अर्थों मे अवश्य 'सर्वभौम' था, क्योंकि बहुत से देशों के आर्य नर-नारी उसमें सम्मिलित हुए थे। इस अवसर पर न केवल भारत के प्रायः सभी प्रदेशों के आर्य लोग लण्डन गये थे, अपितु अफ्रिका (केनिया, तन्जानिया, दक्षिण अफ्रिका), मारीशस, फिजी, अमेरिका (सुरीनाम, गुयाना, ट्रिनिडाड, संयुक्त राज्य), दक्षिण पूर्वी एशिया (थाईलैण्ड, सिंगापुर, बरमा), और यूरोप (डेनमार्क, हालैण्ड, पश्चिमी जर्मनी) आदि से भी आर्यजन अच्छी बड़ी संख्या मे महासम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिए इङ्गलैण्ड आये थे। विभिन्न देशों से आये हुए नर-नारियों की संख्या एक हजार के लगभग थी। सम्मेलन में उपस्थित लोगों पर दृष्टि पड़ने ही इस बात मे कोई सन्देह नहीं रह जाता था, कि आर्य समाज ने अब एक सर्वभौम व अन्तर्राष्ट्रीय सगठन का रूप प्राप्त कर लिया है और उसका कार्यक्षेत्र केवल भारत तक ही सीमित नहीं है।

पर अभी विदेशों मे वैदिक धर्म का प्रचार केवल उन्हीं लोगों मे हुआ है, जो भारत से जा कर वहाँ बसे है। यह सही है कि इनमें से बहुत से विदेशी नागरिकता प्राप्त कर चुके है। इङ्गलैण्ड मे बसे हुए भारतीय मूल के व्यक्ति ब्रिटिश नागरिक है, और दक्षिण अफ्रिका मे बसे हुए भारतीयों ने वहा की नागरिकता स्वीकार कर ली है। यही बात उन आर्यों के सम्बन्ध मे कही जा सकती है, जो सूरीनाम, मारीशस, फिजी, गुयाना, ट्रिनिडाड आदि से महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये लण्डन आये थे। इस दृष्टि से इन देशों से आये हुये आर्यों को विदेशी अवश्य कहा जा सकता है, पर भाषा संस्कृति आदि की दृष्टि से वे अब तक भी भारतीय ही है और उनमें वैदिक या आर्य धर्म का प्रचार होने का विशेष महत्व नहीं रह जाता। उल्लेखनीय बात यह है कि इङ्गलैण्ड के अंग्रेजों, अफ्रीका के नीग्रो और मारीशस, फिजी आदि के निवासियों ने अभी वैदिक धर्म को नहीं अपनाया है। सार्वभौम आर्य महासम्मेलन के अधिवेशनों मे हजारों की उपस्थिति होती थी, और ये अधिवेशन लण्डन में हो रहे थे पर उनमे एक भी अंग्रेज नहीं दिखायी देता था। केवल योग सम्मेलन में सात आठ अंग्रेज नर-नारियों ने योग के आसनों का प्रदर्शन किया था। पाश्चात्य देशों में योग का प्रचार निरन्तर बढ़ रहा है, पर उसका प्रधान श्रेय आर्य समाज के प्रचारकों को नहीं दिया जा सकता। यह बात विचार करने की है कि विदेशों मे इतनी आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं के होते हुए भी वहा के मूल निवासियों मे अब तक आर्य धर्म का प्रचार क्यों नहीं हुआ ?

लण्डन में रहते हुए मुझे 'हरे रामा हरे कृष्णा' के आन्दोलन से सम्पर्क प्राप्त करने का अवसर मिला। उसका एक आश्रम लण्डन से कोई बीस मील की दूरी पर है। बीसों एकड़ के बीच मे एक अत्यन्त विशाल व भव्य भवन में यह आश्रम विद्यमान है। इसमे दो सौ से अधिक नर-नारियां निवास करते है। जिनमें बहुत बड़ी संख्या (९० प्रतिशत के लगभग) अंग्रेजों व अमरिकनों की है। इन सब की वेशभूषा भारतीय है। पुरुष धोती पहनते है, और सिर पर चोटी (शिखा) रखते है। केवल नाम की चोटी नहीं अपितु खूब मोटी और लम्बी शिखा। स्त्रियां साड़ी पहनती है। आश्रम में मद्य, मांस व तमाखू का सेवन सर्वथा निषिद्ध है। शुद्ध सात्विक व निरामिष भोजन की ही वहा अनुमति है। ब्राह्ममूहूर्त में जागकर सब कोई नित्यकर्मों से निवृत्त होते है, और फिर कीर्तन में सम्मिलित होते है। कीर्तन के पश्चात् श्रीमद्भागवत का प्रवचन होता है। बच्चों की शिक्षा के लिये पृथक् विद्यालय है, जिसे 'गुरुहाल' कहते हैं। संस्कृत भाषा तथा भागवत धर्म की शिक्षा इस 'गुरुहाल' मे सब के लिये अनिवार्य है। अंग्रेजी, गणित इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि की शिक्षा की व्यवस्था तो इस विद्यालय मे है ही। बच्चों का रहन-सहन सादा एवं तप का है, ठीक वैसा जैसा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी और आचार्य रामदेव जी के समय मे गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों का था। मुझे यह भी ज्ञात हुआ, कि ऐसे ही अन्य भी बहुत से आश्रम अमेरिका, कनाडा, यूरोप अफ्रिका आदि मे स्थापित है, और उनमे भागवत धर्म तथा भारतीय संस्कृति का वैसा ही वातावरण है जैसाकि मैंने इङ्गलैण्ड के आश्रम मे देखा।

मुझे यह जानने की इच्छा हुई, कि किन कारणों से ये अंग्रेज तथा अमरिकन भागवत धर्म और राम-कृष्ण की पूजा के प्रति आकृष्ट हुए हैं। इस सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने के लिये मैंने आश्रम के प्रमुख स्वामी अखण्डादिनाथ जी से समय मांगा। अखण्डादिनाथ जी अमेरिकन है, पर संस्कृत का भी उन्हे ज्ञान है। गीता और भागवत के अनेक श्लोक उन्हें कण्ठस्थ है, यथा स्वामी जयतीर्थ स्वामी राधा गोकुलनन्द आदि। यद्यपि ये सब अंग्रेज या अमेरिकन है। आश्रमवासी गृहस्थों के नाम इसी ढंग से भारतीय है। अखण्डादिनाथ जी ने बातचीत मे मुझे बताया, कि पाश्चात्य लोग भौतिक वाद (Materialism) से परेशान हो चुके है। अपने धर्म व संस्कृति से उन्हे शान्ति प्राप्त नहीं होती। यही कारण है जो अमेरिकन, इङ्गलैंड और यूरोप के विभिन्न देशों के लोग भारत के उस धर्म की ओर आकृष्ट हो रहे हैं, जो उन्हे अध्यात्मवाद और भक्ति की शिक्षा देता है। इस धर्म मे वे शान्ति अनुभव करते है। उनके रहन-सहन, भौतिक मूल्यों और जीवन के आदर्शों में जो परिवर्तन आया है, वह गीता और भागवत की शिक्षाओं का ही परिणाम है। बातचीत मे मैंने स्वामी जी से कहा—कि आप जिस भारतीय आर्य धर्म का अनुकरण कर रहे है, वह एकांगी है। शास्त्रों के अनुसार धर्म वह है, जिससे सांसारिक अभ्युदय तथा निःश्रेयस (मोक्ष) दोनों की प्राप्ति हो सके। मानव जीवन के लिये भौतिक उन्नति की भी आवश्यकता है, और आध्यात्मिक उन्नति की भी। हमारे शास्त्रों ने जो चार आश्रमों की व्यवस्था की गई है, उसका मूल आधार यही तथ्य है। ब्रह्मचर्य आश्रम मे मनुष्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति पर ध्यान दे, गृहस्थ आश्रम मे धन का उपार्जन कर भौतिक सुखों का भोग करें। पर, धन-सम्पत्ति एवं सुखभोग को ही वह अपना चरम लक्ष्य न समझे। इसीलिये शास्त्रों द्वारा वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रमों का भी विधान किया गया है। वैदिक धर्म समन्वयात्मक है। उसमे भक्ति के साथ-साथ कर्म और ज्ञान का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। ईश्वर की भक्ति तो करनी ही चाहिये, और एक आदर्श व आप्त पुरुष के रूप मे कृष्ण के गुणों का स्मरण करना भी उचित है, पर कर्ममार्ग तथा ज्ञानमार्ग का भक्तिमार्ग से कोई विरोध नहीं है। तीनों में समन्वय ही वैदिक धर्म को अभिप्रेत है। केवल राम और कृष्ण की भक्ति, उनके नामों का कीर्तन तथा उनके जीवन का अभिनय पर्याप्त नहीं है। स्वामी अखण्डादिनाथ जी के लिये आर्यधर्म का यह रूप सर्वथा नया था। इसे सुनकर वे प्रभावित भी हुए। तब मैंने अनुभव किया, कि यदि सत्य सनातन आर्यधर्म का एकांगी व विकृत रूप भौतिकवाद से परेशान हुए पाश्चात्य लोगों को इतना आकृष्ट कर सकता है, तो उसका यथार्थ रूप उन्हे क्यों प्रभावित नहीं करेगा। सम्भवतः, इस तथ्य की ओर अभी आर्यसमाज का ध्यान ही नहीं गया है। उसके प्रचारकों का कार्यक्षेत्र अभी भारतीय मूल के लोगों तक ही सीमित रहा है।

सार्वभौम आर्य महा सम्मेलन में विदेशों (या विदेशियों) मे वैदिक धर्म के प्रचार के प्रश्न पर भी विचार-विमर्श हुआ। सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए एक प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से यह अनुरोध किया गया कि वैदिक धर्म के प्रचारकों तथा पुरोहितों के प्रशिक्षण के प्रयोजन से विशेष केन्द्र स्थापित किये जाएँ जिनमे शिक्षा प्राप्त कर आर्य विद्वान् अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के माध्यम से वैदिक धर्म तथा संस्कृत का प्रचार कर सकें। इस सम्बन्ध मे श्री स्वामी ओमानन्द जी का यह सुझाव महत्त्व का था कि गुरुकुलों मे विद्यार्थियों को विदेश प्रचार के लिये विशेष प्रशिक्षण देना चाहिये और जिस देश मे उन्हे भेजना हो वहाँ के इतिहास, भूगोल, भाषा और राजनीतिक परिस्थिति आदि का भी उन्हें विशेष अध्ययन करना चाहिये। मारीशस के प्रसिद्ध आर्यनेता श्री मोहनलाल जी मोहित इस प्रयोजन से एक बड़ी योजना भी तैयार कर रहे हैं। आशा करनी चाहिये कि निकट भविष्य मे विदेशी लोगों मे भी वैदिक धर्म का सुचारू रूप से प्रचार प्रारम्भ हो जाएगा।

(शेष पृष्ठ २ का)

प्रयत्न किया। यहाँ व्यवस्था बनाये रखने के लिए आर्य बाल गृह, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, डी०ए०वी० स्कूल बेयर्ड रोड, के बालक बालिकाओं तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के युवकों ने असाधारण रूप से सहयोग प्रदान किया।

श्रोताओं और दर्शकों ने इतनी बड़ी संख्या मे इस बार उत्साहपूर्वक भाग लिया कि प्रतीत होने लगा कि आयोजन के लिए लगाया गया पण्डाल छोटा पड़ गया है। इसके बावजूद श्रोताओं और दर्शकों ने जिस अनुशासनबद्ध रूप से सारी कार्यवाही मे भाग लिया वह आर्य समाज के सदस्यों की अनुशासनप्रियता का एक अच्छा उदाहरण है।

वैदिक-समारोह

योग-साधना प्रशिक्षण शिविर

श्री दिग्जानन्द वैदिक साधनाश्रम वेद मन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा मे दिनाक १० से १२ नवम्बर तक श्रद्धेय स्वामी सत्यपति जी के निर्देशन मे योग साधना प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ।

इसके अतिरिक्त वैदिक परिवार साधना शिविर, शहीद नारायण दत्त वैदिक मिशनरी संगोष्ठी, वैदिक परिवार संगोष्ठी, सत्यप्रकाशन विकास संगोष्ठी तथा गोपाष्टमी पर्व समारोहपूर्वक सम्पन्न हुए।

—आर्य समाज अशोक विहार दिल्ली-५२ के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज का ८वां वार्षिकोत्सव १० से १६ नवम्बर तक एफ-५ अशोक विहार फेज-१ मे समारोह पूर्वक मनाया गया। अनेक सन्यासी एव विद्वानो के प्रवचन हुए।

ऋषि निर्वाणोत्सव

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे ऋषि निर्वाण-उत्सव धूमधाम से मनाया गया। परिषद के महामन्त्री श्री अनिलकुमार आर्य ने सार्वदेशिक सभा द्वारा सचालित आयोजन जिसमे मुरादाबाद मे उजडे हरिजन तथा अन्य गरीब धर्मबन्धुओ के पुनर्वास हेतु का समर्थन किया दिल खोलकर दान देने की अपील की, इस पुनीतपर्व पर आपने जुआ, शराब तथा मासाहार आदि कुप्रथाओ को तोड़ फेंकने की भी अपील की।

—पलवल आर्यवीर दल के तत्त्वावधान मे स्थानीय आर्य बाल गृह मे ऋषि निर्वाणोत्सव श्री स्वामी ध्यानानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। अनेक विद्वानो ने ऋषि को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

विश्व कल्याण महायज्ञ

आर्य समाज नेमदार गज (नवादा-विहार) द्वारा श्री सुरेशचद्र जी आर्य भजनोपदेशक एव पं० श्री सत्यदेव शास्त्री (वाराणसी) के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार तथा विश्व कल्याण यज्ञ सम्पन्न हुआ।

महात्मा हंसराज दिवस

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे महात्मा हसराज दिवस रविवार २३ दिसम्बर ८० को प्रात: ६ से १२ बजे तक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के समस्त आर्य समाजो एवं डी०ए०वी० सस्थाओ की ओर से समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। अध्यक्षता प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार (नैरोबी-निवासी) करेंगे।

अधिक से अधिक संख्या में पधार कर स्व० महात्मा जी को अपनी सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करें।

ऋषि-मेला

महर्षि दयानन्द सरस्वती के ९७वें निर्वाण-दिवस के उपलक्ष्य मे दिनाक १५-१६-१७ नवम्बर ८० को परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी लाला रामगोपाल शालवाले, ओम्प्रकाश त्यागी, महात्मा आर्य भिक्षु जी, प० आनन्द प्रिय जी बडौदा आदि ने महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुरुकुल महाविद्यालय-वैद्यनाथ धाम का त्रैवार्षिक अधिवेशन

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम सन्थाल परगना (बिहार) का बृहद् त्रैवार्षिक अधिवेशन एव निर्वाचन दिनाक २ अक्टूबर ८० को गुरुकुल भूमि मे शान्त वातावरण मे सम्पन्न हुआ। पदाधिकारी एव अन्तरग सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। श्री नगेन्द्र कुमार पोद्दार भूतपूर्व सासद प्रधान, श्री जगदीशप्रसाद मन्त्री तथा श्री गजानन्द आर्य कोषाध्यक्ष के पद पर चुने गये। अन्तरगसदस्य २१ निर्वाचित हुए।

खडवा मे वृष्टि यज्ञ

दिनाँक-२२-१०-८० मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प० वीरसेन जी वेदश्रमी वेद-विज्ञानाचार्य के आचार्यत्व में वृष्टि यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। पूर्णाहुति दिनांक—२३-१०-८० का हुई यज्ञ कार्य को सफल बनाने हेतु अनेक विद्वानो का नगर मे आगमन हो चुका है।

दिनांक २३-१०-८० को रात्री मे सम्पन्न पत्रकार परिषद् मे पण्डित वीरसेन जी वेद विज्ञानाचार्य ने यह स्पष्ट घोषणा की कि यज्ञद्वारा वृष्टि कराई जा सकती है और यज्ञ द्वारा अतिवृष्टि को रोका भी जा सकता है। यज्ञ से ही औद्योगिक प्रदूषण-निवारण सभव है। यह आयुर्वेद से उत्पन्न विज्ञान है वैदिक मन्त्रो की ध्वनि सोमलतादि ओषधियों गाय के घृत की आहुतियां प्रदूषण को दूरकर वातावरण को शुद्ध कर इच्छित वायु, अनुकूल ऋतु, मौसम का निर्माणकर विनाशक प्रभाव से प्राणीमात्र को बचाया जा सकता है। देश की अनेक समस्यायें यज्ञ द्वारा सुलझ ई जा सकती है। अणुबम विस्फोट जन्य प्रदूषण का निराकरण भी वैदिक यज्ञ से ही हो सकता है।

यज्ञ-कार्य की सफलता हेतु नगर के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री पूनमचन्द जी श्री नारायण सहाय जी खण्डेलवाल, श्री मुक्ति लाल जी नरेडी, श्री ताराचन्द जी अग्रवाल आर्य समाज के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी आर्य विशेष रूप से सक्रिय थे।

मुरादाबाद को बचाने के लिए मुस्लिम क्षेत्रों में जमा शस्त्रों को निकालने की माँग

नयी दिल्ली, १३ नवम्बर, मुरादाबाद क्षेत्र मे पूर्ण शान्ति के लिए आवश्यक है कि वहाँ ४८ घटे का कर्फ्यू लगा कर मुस्लिम घरों और मस्जिदो की तलाशी सेना द्वारा ली जाए, क्योंकि मुसलमानो के पास भारी सख्या मे घातक हथियार जमा है। मुरादाबाद क्षेत्र का दौरा करने के बाद अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु ने ये विचार आज प्रकट किए।

आपने कहा कि हिन्दुओ के घर जले पडे हैं, उन्हें शासन की ओर से सहायता नही मिल पा रही। मुसलमानो की दुकानें सरकार बनाकर दे रही है, जिन पर ८०० रुपये व्यय आ रहा है और हिन्दुओ को केवल २५० रु० दिए जा रहे है।

महात्मा वेद भिक्षु के साथ मुरादाबाद गए श्री देवकी नदन शर्मा एडवोकेट ने हिन्दुओं के रिश्ते घरो के सामान, जली हुई कोनवाली देखी गुडागर्दी से ग्रस्त लोगो की बातें सुनी तो वे रो पडे। महात्मा वेद भिक्षु ने कहा कि स्थिति दिन पर दिन बिगडती जा रही है और यदि अविलब प्रभावशाली पग न उठाया गया तो निकट भविष्य मे मुरादाबाद मे फिर उपद्रव भडकने की आशंका है।

हिन्दू समिति ने प्रधान मन्त्री से अपील की है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर इस नरसहार को रोकें और मुरादाबाद को बचाए।

शहीद भगतसिंह की शहीदी अर्द्धशताब्दी मनाने की अपील

इस अवसर पर श्री चन्द्रमोहन आर्य ने समस्त भारतीय जनता से अपील की कि २३ मार्च, १६८१ को अमर हुतात्मा श्री भगतसिंह जी की शहीदी अर्द्धशताब्दी उत्साह पूर्वक मनायें।

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट

वार्षिक विवरण

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट (पजीकृत) द्वारा सचालित श्रीमती चन्ननदेवी आर्य समाज नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय, सुभाष नगर, नई दिल्ली-२७ ने अपनी पाचवी वर्षगाँठ १४ नवम्बर १९८० को मनाई। इसकी स्थापना १४ नवम्बर १९७५ को आपात काल के समय पं० जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस पर हुई थी। आरम्भ मे इसमे केवल १० बिस्तर थे, एवम् दो डाक्टर कार्य कर रहे थे।

आज इसमे ३० बिस्तरो के साथ क्लीनिकल लैबोरेट्री, ५ डाक्टरो के साथ लगभग बीस कर्मचारी कार्य कर रहे है। पिछले ५ साल मे इसने जो कार्य किया वह किसी बडे नेत्र चिकित्सालय से कम नहीं हैं। इसने अपनी सेवा से अपनी ख्याति प्राप्त की है। दिल्ली से ही नही बल्कि दिल्ली से दूर प्रदेशो जैसे पजाब, मध्यप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, जम्मू कश्मीर आदि प्रान्तो के साथ विदेशो मे जैसे :- मलेशिया, लन्दन आदि देशो से आये हुए कई रोगियो के नेत्र-आप्रेशन व उपचार किये गये। इसमे लगभग ५००० नेत्र रोगियो के आप्रेशन जिसमे ३५०० बडे आप्रेशन व १५०० छोटे आप्रेशन किए एवम् एक लाख से ऊपर नेत्र रोगियों के उपचार किए।

चिकित्सालय मे आये हुए रोगियो की हर सुविधा का विशेष ध्यान रखा जाता है उनको खाना, दूध, चाय नि शुल्क दी जाती है। इस चिकित्सालय का वार्षिक व्यय ५०,००० रुपये था अब आँखो के रोगियो के उपचार के लिए ढाई लाख से ज्यादा रुपया खर्च किया जा रहा है।

चिकित्सालय ने जहाँ नेत्र रोगियो का उपचार किया वहाँ दिल्ली मे आई दो भयकर बाढो के अवसर पर दिल्ली मे पानी से घिरे गावों मे जा-जा कर चिकित्सालय के डाक्टरो एव कर्मचारियो ने नेत्रो के साथ अन्य सभी बीमारियो का भी इलाज किया। उन दोनो बाढो मे लगभग ६०,००० बाढ से घिरे भाई-बहनो की पूरी चिकित्सा कैम्पो एव गाँवो मे जा-जाकर की गई।

पिछले बाल वर्ष के उपलक्ष मे लगभग २५,००० से ऊपर अपने क्षेत्र के स्कूलो मे जाकर विद्यार्थियों के नेत्र-परीक्षण किये गये। इस चिकित्सालय में आर्य जगत के महान सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी महाराज ने १६ मई १९७६ को चिकित्सालय मे पधारे और जहाँ अपने नेत्रो का परीक्षण कराया वहाँ उन्होने चिकित्सालय को एक सौ एक रुपये दान देकर चिकित्सालय के संस्थापक महाशय धमपाल को आदेश दिया कि इसे सौ बिस्तर का चिकित्सालय बनाया जाए। उसी वचन को पूरा करने के लिए महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट वचन बद्ध है और सरकार से इस चिकित्सालय को भूमि एलाट करने के लिए प्रार्थना की जा रही है।

इस स्थान पर लगभग २० बिस्तर और बढाये जा सकते है जिससे इसका कार्य चौगुना हो जायेगा परन्तु रिहायशी क्षेत्र में होने के कारण दिल्ली विकास प्राधिकरण इसको नो आबजेक्शन सर्टिफिकेट देने को तैयार नही है। जिससे दिल्ली के स्वास्थ्य निर्देशालय ने लगातार पाँच वर्षों तक हमारे प्रयत्न करने पर भी लाईसैंस नही दिया है यदि यही हालत रही या सरकार ने शीघ्र ही इसको भूमि प्रदान न की तो इस चिकित्सालय के बन्द हो जाने का अन्देशा है।

इस चिकित्सालय को सनातन धर्म जगत के महान् संन्यासी स्वामी गुरुचरण दास जी महाराज, अखिल भारतीय हर मिलापी मिशन के प्रधान स्वामी हर मिलापी जी महाराज, सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के प्रधान ला० राम गोपाल शालवाले, दिल्ली के प्रसिद्ध हिन्दुनेता श्री प्रेम नाथ जी महाराज, श्री रनवीर जी सम्पादक—मिलाप, आर्य नेता श्री० बलराजमधोक इत्यादि कई साधु सत और कई राजनैतिक नेताओ के नेत्र परीक्षण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

चिकित्सालय को भूमि प्रदान करने के सम्बन्ध मे ला० राम गोपाल जी शाल वाले प्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रनवीर जी सम्पादक मिलाप, श्री जगदीश टाईटलर ससद सदस्य, श्री सरदारी लाल वर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव दिल्ली के कई काग्रेसी नेताओ ने प्रधानमन्त्री का ध्यान इस ओर खींचा है।

ग्राहकों से निवेदन

'आर्य सदेश' के अनेक कृपालु ग्राहको का चन्दा २-२, ३-३ वर्ष से नहीं प्राप्त हुआ है। इस अत्यन्त महगाई के युग मे यदि आपका चन्दा हमे नही मिलेगा तो आप स्वय ही विचार कीजिये कि पत्र कैसे चल सकेगा! कृपया अपना पूरा चन्दा जितना भी आपकी ओर निकलता है, तुरन्त भेजने का कष्ट करें।

सभा-मन्त्री

आर्यसमाजों के सत्संग

१६-११-८०

अन्धा मुगल प्रतापनगर—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक, अमर कालोनी—आचार्य हरिदेव सि०भू०; अशोक विहार के सी ५२-ए कविराज बनवारीलाल शौदा—भजनमन्डली, आर्यपुरा—प० रामरूप शर्मा, आर० के० पुरम सैक्टर-९—प० हीराप्रसाद शास्त्री; इन्द्रपुरी - प० खुशीराम शर्मा; किंग्जवे कैम्प—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; किशनगंज मिल एरिया—प० विजयपाल शास्त्री; कालकाजी डी० डी० ए फ्लैट्स —प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; करोलबाग—प० अशोककुमार विद्यालंकार; गांधीनगर - प० महेन्द्रप्रताप शास्त्री; गीताकालोनी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I —प० मुनिशंकर वानप्रस्थी; गुडमंडी—प० देवराज वैदिक मिशनरी; गोविन्दपुरी—श्रीमती शीलावती आर्य; जंगपुरा भोगल—प० अर्जुनदेव आर्य; जनकपुरी सी-III—प० प्रकाश वीर व्याकुल; जनकपुरी बी ब्लाक - प० विश्व प्रकाश शास्त्री; जहांगीरपुरी—प० जगदीशप्रसाद विद्यावाचस्पति; टैगोरगार्डन—प० वेदपाल शास्त्री; तिलकनगर—प० सीताराम भजनोपदेशक; तीमारपुर—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; दरियागंज—पं० ईश्वरदत्त; नारायण विहार—श्री मोहन लाल गांधी; पंजाबीबाग—प० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; पंजाबीबाग एक्सटेंशन-१४/३—प० सत्यकाम वेदालंकार; पश्चिमपुरी जनता क्वार्टरज—प० विष्णुदेव प्रसाद विद्यालंकार; बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक; माडलटाऊन—आचार्य कृष्ण गोपाल; मोतीनगर—प० केशव चन्द्र मुन्जाल; माडलबस्ती—पं० गणेशप्रसाद विद्यालंकार; महरौली—प० मनोहर विरक्त; रमेशनगर—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री; राणाप्रताप बाग—श्रीमती सम्पदा आर्य; लाजपतनगर—प्रो० सत्यपाल वेदार; विक्रमनगर—ला० लक्ष्मीदास; सराय रोहला—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सोहनगंज श्री वीरव्रत शास्त्री; श्रीनिवासपुरी—डा० वेदप्रकाश महेश्वरी; हौजखास ई-४६—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; कीर्तिनगर—डा० रघुनन्दन सिंह; लक्ष्मीनगर प० वेद व्यास भजनोपदेशक;

स्वामी पूर्णानन्द जी का मूल निवास स्थान

सन् १८५८ में एक सैनिक न्यायालय के समक्ष गवाही देते हुए सीताराम नाम के एक व्यक्ति ने कहा था कि सन १८५७ के स्वाधीनता संग्राम के वास्तविक संचालक एक 'दस्स' या दश संन्यासी हैं। सीताराम के अनुसार उस समय इस सन्यासी की आयु १०० वर्ष से ऊपर थी, और मूलत वे कांगडा तथा जम्मू के मध्यवर्ती प्रदेश मे स्थित कालीधार नामक स्थान के निवासी थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी के सम्बन्ध मे प्रकाशित अनेक ग्रन्थो के अनुसार स्वामी विरजानन्द जी के गुरु स्वामी पूर्णानन्द थे, जो दशनामी सम्प्रदाय के सन्यासी थे। यह बात विचारणीय व अनुसन्धान योग्य है कि सीताराम ने अपनी गवाही मे जिन दस्स या दश (दशनामी) सन्यासी को सन ५७ के स्वाधीनता संग्राम का संचालक कहा है, कही वे स्वामी पूर्णानन्द ही तो नही हैं। इस बात के संकेत तो मिलते ही हैं, कि स्वामी विरजानन्द जी का स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण कर्तृत्व था।

आर्यसमाज के इतिहास के लिये हमे स्वामी पूर्णानन्द जी के विषय मे जानकारी प्राप्त करनी है। 'दश' सन्यासी के मूल निवास स्थान को रोमन अक्षरो मे KALI DHAR लिखा गया है, जो कालीधार, कालाधड, कालाधर आदि कुछ भी हो सकता है जम्मू और कांगडा के मध्यवर्ती प्रदेश मे स्थित यदि किसी ऐसे स्थान का पता हमे ज्ञात हो सके जिसका नाम कालीधार से मिलता-जुलता हो, तो वहाँ से स्वामी पूर्णानन्द जी के विषय मे जानकारी प्राप्त कर सकना सम्भव होगा। पाठको से प्रार्थना है कि इस स्थान के सम्बन्ध मे इस पते पर सूचित करने की कृपा करें।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, ए-१, ३२ सफदर जंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७३७/१-सी, गुरुनानक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ के लिए निरुपमा प्रिंटर्स, पहाड़गंज, नई दिल्ली में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ . अंक ६ रविवार, ३० नवम्बर १९८० दयानन्दाब्द १५६

देशोन्नति में आर्यसमाज के योगदान पर बल

दूषित और दिशाहीन शिक्षाप्रणाली को बदलने के लिए आह्वान : महात्मा हंसराज-स्मृतिदिवस

महात्मा हंसराज स्मृति दिवस के उपलक्ष में आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए नगर के प्रमुख उद्योगपति तथा आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार ने कहा कि भारत मे जो शिक्षा प्रणाली चल रही है वस्तुत: वह बहुत ही दोषपूर्ण है। यह शिक्षा आधुनिक युवक एव युवतियों को पाश्चात्य सभ्यता की ओर ले जाने के लिये उन्मुख करती है। देश मे इस समय धार्मिक वातावरण दूषित हो उठा है और प्राय: नयी पीढी के लोग धर्म और धर्म द्वारा प्रतिपादित नैतिक सिद्धान्तो से दूर भागने लगे है। अब आर्यसमाज पर यह दायित्व आ गया है कि वह स्थिति का और इस चुनौती का शक्तिभर सामना करे। उन्होंने आर्य समाज मे आत्मिक शक्ति जगाने का आह्वान किया और कहा कि इसी आत्मिक शक्ति के अभाव मे हमारा पतन हुआ था और इसी आत्मिक शक्ति के उत्थान मे यह भारत पुन: महान बन सकेगा। अन्त मे सभापति ने 'हंसराज' शब्द की सही व्याख्या प्रस्तुत की।

महात्मा हंसराज दिवस २३ नवम्बर को प्रात: ९ बजे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग मे मनाया गया। प्रारम्भ मे पं० सत्यदेव जी भारद्वाज का परिचय श्री दरबारीलाल ने दिया और उनसे सभापति का आसन ग्रहण करने की प्रार्थना की। उनके सभापति आसन ग्रहण करने के बाद आर्यसमाज अनारकली के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने तथा अन्य लोगो ने उन्हे माल्यार्पण किया।

इस समारोह मे केन्द्रीय राज्य ऊर्जा मन्त्री श्री विक्रम महाजन ने आर्यसमाज का आह्वान करते हुए कहा कि हमें अपनी विचारधारा को संकीर्ण अथवा सीमित न बनाते हुए जनजागरण जैसे राष्ट्र सेवा के कार्य मे संलग्न हो जाना चाहिये। उन्होने कहा कि आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो सम्प्रदायवाद से दूर रहकर शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखने में अधिक सहयोग प्रदान कर सकती है। श्री विक्रम महाजन इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।

इस अवसर पर महात्मा हंसराज को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए दिल्ली कांग्रेस (ई) के अध्यक्ष तथा संसद् सदस्य श्री हरिकृष्णलाल भगत ने कहा कि देश को आगे बढाने के लिये आर्यसमाज के सिद्धान्तो का अनुसरण करना चाहिए। उन्होने कहा कि महात्मा हंसराज ने डी० ए० वी० संगठन द्वारा अनेक युवको को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित किया तथा अनेक राष्ट्रसेवक देश को प्रदान किये।

दिल्ली प्रशासन के भूतपूर्व मुख्य-कार्यकारी पार्षद श्री केदारनाथ साहनी ने महात्मा जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्हे आधुनिक भारत का निर्माता बताया तथा कहा कि उनका जीवन एक ऐसा उज्जवल प्रकाश था जिसके प्रभाव से सभी का जीवन प्रकाशित होता है।

भाई परमानन्द जी के सुपुत्र संसद सदस्य डा० भाई महावीर ने बड़ी पीडा के साथ यह बात कही कि आर्यसमाज और उसकी शिक्षा संस्थाओं के भवनो की ज्यो-ज्यों विशालता बढती जाती है त्यो त्यो उनका भीतरी प्राणतत्व कम होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज हमें ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता है जो तपस्या और साधना से अपना पूरा जीवन किसी महान ध्येय के पीछे लगा दें। राजनीति ने बुद्धिजीवियों को दिशाहीन और विदेशोन्मुख बना दिया है। हम अपने देश की हर समस्या का निदान विदेशो में खोजते है और उनकी नकल करते हैं।

इन वक्ताओ के अतिरिक्त कुमारी विद्यावती आनन्द, श्री तिलकराज गुप्त, और श्री दरबारीलाल ने महात्मा हंसराज

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महाशय चुन्नीलाल का स्वर्गवास

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान महाशय धर्मपाल जी के पूज्य पिता महाशय चुन्नीलालजी का १८ नवम्बर को देहावसान हो गया। १९ नवम्बर को उनकी शवयात्रा उनके मकान से शुरू हुई, जो आर्यसमाज करोलबाग होती हुई पंचकुइयाँ श्मशान घाट पर पहुंची, जहा वैदिक विधि से अन्त्येष्ठि संस्कार संपन्न हुआ। इस अवसर पर बडी संख्या मे आर्य जन और आर्यनेता उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार, श्री सोमनाथ मरवाह आदि आर्यजगत् के अनेक गणमान्य नेता उपस्थित थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से तथा आर्य-समाज हनुमान रोड की ओर से आर्यसमाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला द्वारा अन्तिम दर्शन के समय फूलमालाएं अर्पित की गयी।

इस अवसर पर महाशय जी की पुण्य स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय बन्द रखा गया।

अन्तिम श्रद्धांजलि सभा ३० नवम्बर रविवार को दोपहर २ से ४-३० बजे तक ६/६, अजमल खाँ रोड (रूपक स्टोर के पीछे) होगी।

आर्य महासम्मेलन को सफल बनायें : अधिक से अधिक सहयोग का अनुरोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान और मन्त्री ने आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये दिल्ली की सभी आर्यसमाजो से धन संग्रह के काम में अधिक से अधिक सहयोग देनें की अपील की है। इस प्रयोजन से सभी आर्यसमाजो को अलग पत्र भी लिखे गये हैं। आशा है कि सभी आर्यसमाजें कटिबद्ध होकर धन संग्रह के काम में जुट जायेंगी।

धन संग्रह के लिये नोट के रूप में रसीदें छपाई गई हैं। ये नोट दो रुपये, पाच रुपये, दस रुपये और सौ रुपये के हैं। कुछ आर्यसमाजों ने धन संग्रह के लिए इनकी कापियाँ ले ली है और शेष आर्यसमाजो से अनुरोध है कि वे भी शीघ्र से शीघ्र सभा के कार्यालय से ये कापिया प्राप्त करके धन संग्रह का कार्य पूरा कर लें।

सभा ने प्रमुख चौराहों और सडको पर सूचना पट्ट लगाने के लिए कपडे के माटो तैयार कराये हैं। ये माटो सार्वजनिक स्थानों पर लगवाने की व्यवस्था करने का भी समाजो से अनुरोध है।

सम्पादक :—वि. सा. विद्यालंकार

वेदमनन

अग्नि की कृपा सब कमियों को दूर करती है

तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि, आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि। वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि, अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आ पृण ।। ऋषि :—अवत्सारः । देवता-अग्निः । यजुः—३-१७

शब्दार्थ—(अग्ने) हे जाठराग्ने: तू (तनूपा) शरीर की रक्षा करने वाला है, (मे) मेरे (तन्व) स्थूल शरीर की (पाहि) रक्षा कर (अग्ने) हे प्राणाग्ने तू (आयुर्दा) जीवनदायी है (मे) मुझे (आयु.) जीवन (देहि) दे । (अग्ने) हे ज्ञानाग्ने ! तू (वर्चोदा) विज्ञान और तेज प्रदान करने वाला है । अत: (मे) मुझे (वर्च.) विज्ञान और तेज (देहि) प्रदान कर। और इस प्रकार (अग्ने) भिन्न-भिन्न अग्नियो द्वारा कार्य करने वाले प्रभो (मे) मेरे (तन्वा) शरीर में जो (ऊन) कमी आ गई है (मे) मेरी (तत्) उस कमी या अपूर्णता को (आपृण) सब प्रकार से पूर्ण कर।

निष्कर्ष—१. इस मन्त्र में अग्नि शब्द चार बार प्रयुक्त हुआ है। इसलिये उसका पृथक्-पृथक् अर्थ होना चाहिये। अन्यथा पुनरावृत्ति दोष हो जाएगा।

२ स्थूल शरीर को स्वस्थ रखने के लिये जाठराग्नि का ठीक रहना आवश्यक है। उसके ठीक रहने पर शरीर ठीक रहता है। सूक्ष्म शरीर को स्वस्थ रखने के लिये प्राण का ठीक रहना आवश्यक है। अत. प्राणायाम करना चाहिये। कारण शरीर का सम्बन्ध प्रज्ञा से है। प्रज्ञा विज्ञानमय कोश में रहती है। इस वर्चस् (प्रज्ञा+तेज) को बढाने वाली ज्ञानाग्नि की साधना ही वर्चस् को बढा सकती है।

३. इस मन्त्र का ऋषि अवत्सार संकेत करता है कि जिस कोश की रक्षा करनी हो, उसके सार भाग की रक्षा तथा वृद्धि का प्रयत्न करना चाहिये।

४. इसलिये स्थूल शरीर या अन्नमय कोश की रक्षा करनी हो तो अन्नमय शरीर के सार भाग वीर्य की रक्षा तथा वृद्धि करनी चाहिये। सूक्ष्म शरीर या प्राणमय+मनोयय कोश के सार प्राण+मनन की साधना करके इनकी रक्षा तथा वृद्धि करनी चाहिये। और कारण शरीर या विज्ञानमय कोष की रक्षा करनी हो तो विज्ञानमय कोश की सार भूत प्रज्ञा (विज्ञान+तेज) की रक्षा तथा वृद्धि करनी चाहिये।

५ जाठराग्नि, प्राज्ञाग्नि और ज्ञानाग्नि तीनो में आत्माग्नि की शक्ति कार्य करती है। इसलिये मनुष्य को सम्पूर्ण विकास के लिये चारो अग्नियो की साधना करनी चाहिये।

विशेष—अवत्सार ऋषि का नाम सिंह की तरह बना है। हिनस्ति (हिंस) के विपर्यय से जैसे सिंह बनता है, वैसे ही (सार अवति) के शब्द-विपर्यय से अवत्सार बन गया है। यह सकेत करता है कि हमें जहाँ, जिस क्षेत्र या कोश में रक्षा या वृद्धि की आवश्यकता हो, वहां उस क्षेत्र या कोष में सार भाग, विशिष्ट तत्वो को ओर पहिले ध्यान देना चाहिये।

- शब्दार्थ का आधार— वर्चः विज्ञानं तेजो वा। स्वामी दया० यजु. ४-१७

अवत्सार—सार अवति-अव रक्षण-वृद्धि-गत्यादिषु।

—मनोहर विद्यालङ्कार

श्वेताश्वतरोपनिषद्

सृष्टि में ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन

लेखक :
डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

[गताक से आगे]

द्वितीय अध्याय के १६ वें श्लोक मे कहा है 'प्रत्यङ्जनान् तिष्ठति सर्वतो मुख'। इस अध्याय के दूसरे श्लोक मे कहा गया है। 'प्रत्यङ् जनान् तिष्ठति' इन पद वाक्यो का यह अर्थ है कि परमात्मदेव हर व्यक्ति के प्रति उसके सामने विराजमान है। जो प्रत्येक व्यक्ति के सामने मौजूद हो उसे हम न जानें— यह अचम्भे की बात है। अभी ऊपर हम ब्रह्मवादियो की वाणी मे कह चुके है—वही परमात्मदेव अग्नि मे है, जल मे है, वायु मे है, औषधियो तथा वनस्पतियो मे है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषियो ने सृष्टि को ही प्रत्यक्ष-ब्रह्म कहा है। 'शनो मित्र: शवरुण'— इत्यादि मत्र मे भी 'त्वमेव, प्रत्यक्ष ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्ष ब्रह्म वदिष्यामि' कहा है कि जिसका अभिप्राय भी यही है कि यह विशाल तथा विविध रूपा सृष्टि ही प्रत्यक्ष ब्रह्म है। १६ वें श्लोक मे उसे 'सर्वतोमुख'— कहा है जिसका मुख सृष्टि मे सब जगह विद्यमान है। वैदिक साहित्य मे यह भाव इतना व्यापी है कि गीता (७-८, ९) मे कहा है :

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभाऽस्मि शशि सूर्ययो।
प्रणव. सर्ववेदेषु शब्द. खे पौरुष नृषु ।।८।।
पुण्यो गन्ध: पृथिव्या च तेजश्चास्मि विभावसो: ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ।। ९ ।।

मैं जलो में रस हूँ, चन्द्र तथा सूर्य की प्रभा मैं हूँ, पुरुषो मे पौरुष मैं हूँ, पृथ्वी मे सुगन्ध मैं हूँ, अग्नि में तेज मैं हूँ, सब प्राणियो में जीवन मैं हूँ, तपस्वियों में तप मैं हूँ। यही गीता के ११ वे अध्याय मे, जहाँ भगवान् का विराट् रूप दर्शाया गया है, पाया जाता है। वहाँ अर्जुन श्री कृष्ण को प्रतीक मानकर भगवान् का वर्णन करते हुए कहते है।

अनेक बाहूदरवक्त्रनेत्र पश्यामि,
त्वा सर्वतोऽनन्त रूपम्।
नान्त न मध्य न पुनस्तवादि,
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूपम्
।।१६।।

परमात्म-देव के सर्वव्यापी का भाव अभिप्राय ही यह है कि जब वह हर वस्तु मे विराजमान है, तब जो दीखता है उसमे भगवान् के ही दर्शन हो रहे हैं। हर वस्तु की सत्ता उसी की सत्ता के कारण सत्तावान् है, वह न हो, तो उसके बिना कुछ रहता ही नही है। हम आत्मा का दर्शन इस चलते-फिरते शरीर मे करते है, भगवान का दर्शन इस चलायमान विश्व मे करते है। आत्मा न हो तो शरीर नही रहता, परमात्मदेव न हो तो सृष्टि नही रहती। शरीर की सार्थकता इसके भीतर विद्यमान चेतन-सत्ता से है, सृष्टि की सार्थकता सृष्टि मे विद्यमान चेतन-शक्ति से है जिसे ऋषियो की परिभाषा में परमात्म-देव या ब्रह्म कहा गया है। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए तृतीय अध्याय में कहा गया है :

उसके नेत्र सब जगह है, वह सब कुछ-देख रहा है—विश्वत चक्षु' उसके मुख सब ओर है—विश्वत मुख, उसकी भुजाए सब जगह हैं — विश्वतः बाहु, और उनके पाँव सब जगह है—उतविश्वपस्पात्। जैसे कोई लोहार किसी वस्तु की रचना करता हुआ हाथो से धोकनी को धोकता है—स बाहुभ्या धमति स पतत्रै:—वैसे वह इकला परमात्मदेव सृष्टि को उत्पन्न करता हुआ द्यु और पृथ्वी को मानो धोक रहा है।—द्यावा पृथ्वी जनयन् देव एक:, जिससे यह द्यु-लोक तथा पृथिवी लोक मानो सुलग रहे हैं ।।३।।

जो देवो का प्रभव तथा उद्भव करने वाला है— य देवाना प्रभव. च उद्भव. च, जो विश्व का स्वामी है—विश्वाधिप, जो विकराल रूप है—रुद्र, जो महर्षि है महर्षि:, जिसने सृष्टि-रचना करते हुए पहले हिरण्यगर्भ (Nebula) की सृष्टि की—हिरण्यगर्भं रचयामास पूर्वम्, वह परमात्मदेव हमे सद्बुद्धि से संयुक्त करे—स: न: बुद्धया सयुनक्तु ।।४।।

मैं उस महान् परम पुरुष परमात्मदेव को जानता हूँ—वेद अहम् एतम् पुरुष महान्तम्, जो आदित्य की तरह प्रकाशवान् है।— आदित्यवर्ण जो अन्धकार से अत्यन्त दूर है—तमस परस्तात्। उसी को जानकर त एव विदित्वा, मृत्यु के पार हुआ जाता है— मृत्यु अत्ति एति, मृत्यु से छुटकारा पाने का दूसरा कोई रास्ता नही है—न अन्य: पन्था विद्यते अयनाय ।।८।।

जिससे न कुछ परे है न वरे है—यस्मात् पर न अपरं अस्ति किंचित्, जिससे न कुछ सूक्ष्मतर है न बृहत्तर है—यस्मात् न अणीय. न ज्याय: अस्ति किंचित, जो इकला वृक्ष की जडो की तरह पृथिवी मे दृढ खडा तथा उसके शिखर की तरह द्यु-लोक में ऊपर उठा हुआ स्थित है—वृक्ष इव स्तब्ध दिवि तिष्ठति एक, उस परमात्मदेव से इस विश्व का अणु-अणु भरा पडा है—तेन इद पूर्णं पुरुषेण सर्वम् ।।९।।

(क्रमश)

बृहद्यज्ञ एवं वेदोपदेश

आर्यसमाज माडल टाउन, दिल्ली-९ के तत्वावधान में दि० २४ नवम्बर से ३० नवम्बर तक बृहद्यज्ञ एव वेदोपदेश का कार्यक्रम रखा गया है। प्रतिदिन प्रात: ६-३० से ८-३० तक बृहद्यज्ञ तथा वेदोपदेश सम्पन्न होगा। रात्रि में ८ से ८-३० तक आर्यस्त्री समाज द्वारा भजन एवं ८-३० से ९-३० तक वेदोपदेश होगा। "जीवन में सुख और शान्ति कैसे मिल सकती है" विषय पर ब्र० रामप्रकाश जी का ओजस्वी भाषण भी होगा।

३० नवम्बर ११-३० से १२-१५ तक श्री सरदारीलाल वर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में आर्यकुमार सभा का कार्यक्रम होगा।

सम्पादकीय

अविश्वसनीय क्रूरता : अमानवीय कृत्य

बिहार राज्य से प्राप्त समाचारो के अनुसार भागलपुर की पुलिस ने कई दर्जन विचाराधीन कैदियो की आँखें निकाल ली। पुलिस द्वारा समय-समय पर लोगो को दोषी बताकर उन्हे जो क्रूर यातनाएँ दी जाती हैं, वह किसी भी सभ्य समाज के लिए असाधारण रूप से लज्जा की बात है। पुलिस सूत्रो ने इस घटना के बारे मे कानाफूसी द्वारा अपने कार्य के औचित्य का जो विवरण दिया है उसके अनुसार जिन लोगो की आखें निकाली गयी हैं वे समाज विरोधी तत्त्व थे।

औचित्य के इस तर्क को सुनते ही पहला प्रश्न मन में यह उठता है कि क्या हमारे देश मे ऐसा कोई कानून विद्यमान है जिनके अन्तर्गत किसी भी अपराधी को पुलिस ही अपराधी घोषित करके स्वय उसे दण्ड दे दे। जहाँ तक कानून को हम जानते हैं उसके अनुसार पुलिस का काम अपराधियों को पकडना, उसके अपराध की छानबीन कर उचित आधार विद्यमान होने पर अपराधियो को किसी भी न्यायालय मे प्रस्तुत करना, न्यायालय में उनका अपराध सिद्ध करना है। कोई व्यक्ति अपराधी है या नही और उसके अपराध का आधार सही है या नहीं इसका निर्णय न्यायालय करता है और वही उसे सजा भी देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार राज्य में तथा अन्य स्थानो पर भी अपराध का फैसला करने का दायित्व पुलिस ने अपने ऊपर ले लिया है। और उसके इस प्रकार के गैर कानूनी काम को रोकने की हमारे देश में कोई व्यवस्था नही है।

जिन लोगों को पुलिस ने अपराधी घोषित कर उन्हे स्वय अमानवीय दण्ड दिया है, उन्हे दण्ड देने का तरीका भी इतना क्रूर और यन्त्रणा पूर्ण है कि समाचार सुनकर रोंगटे खडे हो जाते हैं। प्राप्त समाचारो के अनुसार इन अभागे लोगो की आँखे फोड कर उनकी आँखो की पुतलियाँ निकाल ली गयी और आंख के गड्ढों को हमेशा के लिए बन्द कर देने के लिए तेजाब का प्रयोग किया गया। समाचारो के इसके साथ उनकी पलकें तो सदा के लिए बन्द हो ही गयी, उनका चेहरा भी विकृत हो गया। समाचारों में यह भी बताया गया है कि उच्च पुलिस अधिकारियो ने निम्न कर्मचारियो की इस तथाकथित 'गंगाजल' की चिकित्सा की सराहना की क्योंकि उनका कहना है कि इस प्रकार के कार्यों से विचाराधीन अपराधी भविष्य में कभी कोई अपराध तो कर ही नहीं पायेगा इसके साथ ही अन्य लोग भी इस प्रकार के किसी भी गैर कानूनी काम के लिए साहस नही कर पायेंगे।

प्राथमिक छानबीन से यह भी तथ्य सामने आया है कि सभी विचाराधीन कैदियो के साथ इस प्रकार का अमानवीय व्यवहार नही किया गया। कुछ सौभाग्य शाली अपराधी ऐसे भी थे जिन्होने पुलिस की जेब भरने की व्यवस्था कर ली थी, उन्हे इस यातना से मुक्ति मिल गयी।

इस प्रसंग से देश भर मे घटी इस प्रकार की अन्य घटनाए आखो के सामने घूम जाती हैं जबकि इस देश की पुलिस ने अपराधी और निरपराधी दोनो प्रकार के लोगों को क्रूरतापूर्वक यातनाएं दी है। उनकी हत्याए की है और बलात्कार किए है। कानून और व्यवस्था के नाम पर जनसाधारण को दी जाने वाली इस प्रकार की यातनाओ से क्या हम पूरे समाज मे पनप रही अपराधवृत्तियों को रोकने मे सफल हो सकते है। प्राय समर्थ अपराधी पुलिस अधिकारियो प्रशासनिक अधिकारियो राजनीतिज्ञो की सहायता से कानून की गिरफ्त से बच निकलते है और वे न केवल समाज मे अपने अपराधो का जाल और अधिक व्यापक रूप मे फैलाते हैं बल्कि सारा समाज उन लोगो से आतंकित हो उठता है।

पुलिस प्रशासन और राजनीतिज्ञो की इस मिलीभगत का परिणाम यह है कि देश भर मे हिंसा और हत्याओ का वातावरण उग्र से उग्रतर होता जा रहा है। पुलिस अपराधो को रोकने के स्थान पर उन मे केवल सहायक ही नही हो रही बल्कि स्वय भी अपराधो मे लिप्त हो रही है। इस प्रकार समाज को अपराधो की जिस दोहरी लहर का सामना करना पड रहा है उसके कारण समाज मे विस्फोट होना अनिवार्य है। दमन का रूप जितना उग्र होता जा रहा है उसी और लोगों को यातनाए देने का क्षेत्र जितना अधिक व्यापक होता जा रहा है उतना ही हिंसाओं और हत्याओ का क्षेत्र भी बढता जा रहा है। इसके साथ प्रतिक्रिया के रूप मे होने वाली हिंसा और हत्याए भी अधिक [illegible] पूर्ण होती जा रही है। इस प्रसंग मे हम बैलगाडी के हत्याकाण्ड को याद किया सकते है जबकि बदला लेने के लिए पिछडे वर्ग के कुछ लोगों ने हरिजनो का उनके गाव मे घेरा कर चिता बनाकर घरो मे एक एक व्यक्ति को पकडकर जीवित ही आग में झोंक दिया था। इस हत्याकान्ड मे बच्चो को भी नही छोडा गया। यह हत्याकाण्ड भी इसलिए सम्भव हो सका क्योंकि आक्रमणकारियो को पुलिस का संरक्षण मिला हुआ था।

पुलिस की स्वेच्छाचारिता इस सीमा तक बढ गयी है कि न्यायालयो द्वारा पुलिस के व्यवहार के बारे मे की गयी आलोचना भी कारगर प्रभाव नही है। पिछले वर्ष ही उच्चतम न्यायालय ने बिना मुकदमा चलाये वर्षो तक लोगो को जेलो मे बन्द रखने के कारण पुलिस की कटु आलोचना की थी। अन्य भी अनेक ऐसे मामले सामने आये है जबकि उच्चतम न्यायालय को तीव्र कटु आलोचना करनी पडी है। यदि यही स्थिति रही तो देश भर मे अराजकता का पूरा दायित्व पुलिस विभाग पर आ पडेगा हमें यह नही भूलना चाहिए कि कठोरता नियन्त्रण यातनाए अन्यायपूर्ण कार्यवाहियो के विरोध को रोक नही सकते। सोवियत संघ मे इस समय जितने कठोर नियन्त्रण है और लोगो को जिस प्रकार यातनाए दी जाती उसके विरोध मे वहा भी जनता और बुद्धिजीवियो की आवाज दृढ से दृढतर होती जा रही है। पोलेण्ड में इस विरोध ने विद्रोह का रूप धारण कर लिया है। सच बात तो यह है कि मानवीय प्रवृत्ति अत्याचार और अन्याय के विरोध मे सदा प्रबल रहती है। हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे प्रशासक और राजनीतिज्ञ इस पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देंगे और स्थिति मे सुधार के लिए प्रयत्नशील होंगे।

□

साम्प्रदायिक नियुक्तियां

लोकसभा मे विधि मन्त्री श्री शिवशंकर ने घोषणा की है कि जल्दी ही उच्चतम न्यायालय मे एक हरिजन न्यायाधीश नियुक्त किया जायेगा। यह पहला अवसर है जबकि उच्चतम न्यायालय में किसी हरिजन की नियुक्ति होगी। अपने इस निर्णय के कारणो पर प्रकाश डालते हुए विधि मंत्री ने बताया कि यदि हमें सामाजिक न्याय के लक्ष्य प्राप्त करने हैं तो समाज के विभिन्न वर्गो से न्यायाधीश नियुक्त किये जाने चाहिये। इन विभिन्न वर्गों में पिछडे वर्ग और अल्पसंख्यक भी आते है।

यदि योग्यता के आधार पर किसी हरिजन की उच्चतम न्यायालय मे न्यायाधीश के पद पर नियुक्ति की जाती है तो किसी को भी इसमें आपत्ति नहीं होगी, पर जिस प्रकार सरकारी नौकरियो मे योग्यता के स्तर की उपेक्षा करके भी अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियो और पिछडे वर्गों के लोगों को नौकरी मे लिया जाता है और जिस प्रकार योग्यता की उपेक्षा करके केवल इन्ही आधारों पर कुछ वर्गो को पदवृद्धि दी जाती है तो यह हमारे लिए चिन्ता की बात है। उच्चतम न्यायालय को हम एक ऐसा स्थान मानते हैं जहां केवल मात्र योग्यता के आधार पर ही नियुक्ति होनी चाहिये, वर्ग जाति अथवा राजनीतिक आधार पर नही। यह बात भी बार-बार उठायी जाती है कि राजनीतिक आधार पर, विशेष प्रकार के सिद्धान्तों अथवा विशेष दलो मे निष्ठा रखने वाले लोगो की उच्चतम न्यायालय मे नियुक्ति न की जाये।

जिस प्रकार सामाजिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विभिन्न वर्गों को प्रतिनिधित्व देने की बात की जाती है इसी प्रकार से सामाजिक न्याय की दृष्टि से ही यह एकदम अनिवार्य है कि वर्ग, जाति, राजनीति और दलीय निष्ठा के आधार पर नियुक्तियाँ की जायें। इससे न्याय के क्षेत्र मे इतना असन्तुलन पैदा हो जायेगा कि पूरी सामाजिक व्यवस्था को सम्भालना कठिन हो जायेगा।

प्रशासन मे जिस प्रकार कुछ वर्गो जातियो को संरक्षण के आधार पर जो नियुक्तियां की जाती है अथवा राजनीतिक और दलीय निष्ठा के आधार पर जो नियुक्तियां की जाती है उसके कारण हमारी सम्पूर्ण शासन व्यवस्था भ्रष्ट हो चुकी है और इस भ्रष्ट शासन व्यवस्था ने पूरे देश की व्यवस्था को अस्त व्यस्त कर दिया है जिससे हम निरन्तर अराजकता और विघटन की ओर बढते चले जा रहे है। हमें भय है कि उच्चतम न्याय व्यवस्था मे भी यदि इसी प्रकार कुछ विशिष्ट वर्गो के लोगो को उनके वर्ग-जाति के आधार पर नियुक्त किया गया तो केवल उच्च न्याय व्यवस्था की प्रतिष्ठा को समाप्ति तक ही यह व्यवस्था सीमित नहीं रहेगी, बल्कि जिस अराजकता विघटन की ओर हम बढ रहे है उसकी गति और अधिक तेज हो जायेगी।

हमें आशा करनी चाहिये कि हमारे न्याय और विधि मन्त्री इस स्थिति को ध्यान मे रखते हुए लोकसभा मे दिये अपने वक्तव्य का और अधिक स्पष्टीकरण करेंगे और विश्वास दिलायेंगे कि हरिजन अथवा इस प्रकार के वर्ग के किसी भी व्यक्ति की नियुक्ति उसकी योग्यता के आधार पर ही की जायेगी।

धर्म का आदि स्रोत

धर्म जो कि सार्वभौम सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जिस को सदा से सब मानते आये, मानते है और मानेंगे भी, और इसलिए जिसे सनातन नित्य धर्म कहते है और जिसका विरोधी संसार में कोई भी (चाहे किसी भी मत का हो) नहीं हो सकता, उसका आदि स्रोत वेद है। यह धर्म है वेदोक्ताज्ञा अर्थात पक्षपात रहित सत्य-न्यायाचरण या परोपकार (सर्वजनहित) है। इस वेदोक्त धर्म का विरोध तो कोई ईश्वर को न मानने वाला भी नहीं कर सकता। सब विधान इसी वेदोक्त धर्म आधार पर ही बनते हैं और यदि यह उद्देश्य पूरा नहीं होता तो वह विधान ठीक नहीं समझा जाता और परिवर्तन के योग्य होता है। वरन्च यहा तक कि सब पोलिटिकल पार्टीया भी इसी वेदोक्त धर्म के आधार पर ही अपना अपना प्रोग्राम बनाती है—सब सार्वजनिक हित वा दरिद्रता दूर करने की ही घोषणा करते है यद्यपि भावना विचार उद्देश्य वा साधन उन के भिन्न-भिन्न होते है।

उपरोक्त वेदोक्त धर्म का निष्कर्ष सूत्र रूप में ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के "वेदोक्त धर्म विषय" प्रकरण में इन शब्दो में निकाला है— "न्याय्य. पक्षपात रहित सत्याचरणयुक्त परोपकार धर्म" अर्थात पक्षपात रहित न्यायसत्याचरण और परोपकार ही धर्म है। वह अपनी अमर पुस्तक "सत्यार्थ-प्रकाश" के अन्त में "स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश" में धर्म वा अधर्म का लक्षण इस प्रकार करते हैं।

"जो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है उस को धर्म और पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञा भङ्ग वेदविरुद्ध है उसको अधर्म मानता हू।

उक्त ऋषि के बनाये हुए आर्य-समाज के दस नियमो में से निम्न-लिखित ५ नियम भी इसी बात को प्रदर्शित करते है।

४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५ सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

६ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७ सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

अब मैं कुछ वेद मन्त्र, जिन में उपरोक्त धर्म का प्रतिपादन किया गया है, प्रस्तुत करता हूं।

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥
यजु० ॥३६।१८॥

भाषार्थ—हे सब दुःखों को दूर करने वाले परमेश्वर! आप मुझ पर ऐसी कृपा कीजिए कि मैं सत्य धर्म को यथावत् जानूं अर्थात् पक्षपात रहित मित्र दृष्टि से सब प्राणियो के साथ प्रेम भाव से वर्तू और सब प्राणी मुझ को प्रेमभाव से मित्र की दृष्टि से देखें। और हम सब परस्पर द्वेष को छोडकर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। (और सत्य धर्म के आचरण से सुखो को नित्य बढायें)।

लेखक :
प्रेमनाथ चड्ढा

२. अग्ने व्रत चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥यज० ५॥

भाषार्थ—हे सत्यव्रतपने प्रकाशवान् परमेश्वर! मैं सत्य धर्म अर्थात् न्याय्य पक्षपातरहित सत्याचरण का अनुष्ठान करना चाहता हूं। इस के पालन के लिए मुझ को आप सामर्थ्य देवें। इस व्रत की सिद्धि करने वाले आप ही हो सो यह मेरा व्रत है कि मैं झूठ को छोड कर सत्याचरण में सदा दृढ रहूं।

३ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥यजु० ४०। १॥

भषार्थ—हे मनुष्यों! यह सारा जग परमेश्वर मे व्याप्त है हममें ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। ऐसे सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी परमात्मा का निश्चय कर के कभी अन्याय से किसी दूसरे का द्रव्य ग्रहण करने की अभिलाषा न करूं।

४. यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत. ॥ यजु० ४०।७॥

भाषार्थ—जो विद्वान् लोग एक ही परमात्मा में वास करते हुए प्राणी मात्र को अपने आत्मा के तुल्य जानते हैं। अर्थात् जैसे अपना हित चाहते हैं वैसे अन्यो का भी हित चाहते हैं और उस द्वितीय परमेश्वर की शरण को प्राप्त होते हैं उन को मोह (मूढावस्था) शोकादि कभी प्राप्त नही होते।

५. संगच्छध्वं संवदध्वसवो मनांसि जानताम्।

देवा भाग यथा पूर्वे सजानना उपासते। ऋ अ० ८, ऋ० ८ व० ४९, म० २॥

भाषार्थ— हे मनष्यों! न्याय्य पक्षपात रहित सत्याचरणयुक्त धर्म को आप सम्यक् प्राप्त होओ। और इसकी प्राप्ति के लिए सदा आपस मे विरोध छोडकर मिल कर रहो, जिससे तुम्हारा उत्तम सुख सदा बढ़ता रहे। और तुम्हारे सब दुःखो का नाश हो। तुम लोग जल्प वितंडादि विरुद्ध वाद को छोडकर प्रीति से विचार विमर्शपूर्वक संवाद करो जिस से तुम्हारी सत्य विद्या और उत्तम गुण सदा बढते रहें। जैसे पहले धर्मात्मा विद्वान् लोग वेदोक्त धर्म का आचरण करते आये है वैसे तुम भी करो। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से मन्त्र वेदों मे धर्म के विषय पर हैं। जिनके यहा देने लेख बढ जाने के भय से आवश्यकता नही। वैदिक धर्म को संक्षेप में निरूपण करने के लिए उपरोक्त मन्त्र ही पर्याप्त हैं।

यद्यपि उपरोक्त सार्वभौम धर्म का विरोध कोई भी मतवाला नही कर सकता और ईश्वर को न मानने वाला भी कहता है कि मैं इस (वेदोक्त) धर्म को अर्थात् पक्षपातरहित सत्यन्यायाचरण परोपकार

(शेष पृष्ठ ८ पर)

समाज सेवा में समर्पित महात्मा हंसराज

बहुत पुरानी कहावत है कि "परोपकाराय सता विभूतयः" सज्जनों का शरीर सदा दूसरों का उपकार करने मे ही काम आता है। ऐसे सज्जनो की गणना मे महात्मा हंसराज का नाम प्रथमश्रेणी मे ही गिना जाता है। अपने जीवन भर बिना किसी स्वार्थ और बिना किसी लोभ-लालच के समाज-सेवा ही की।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के पश्चात् आपने देखा कि भारतवासियों की शिक्षा लार्ड मैकाले की योजना के अनुसार ही चल रही है जिससे देश के युवक ऊपर से भारतीय किन्तु भीतर से अंग्रेजी बन जायेंगे। महात्मा जी चाहते थे कि इस देश के

लेखक :
सरदारीलाल वर्मा
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

युवक ऊपर से भारतीय हैं, तो भीतर से भी पूरे भारतीय ही रहें। हमारी संस्कृति और सभ्यता का पूर्ण विकास हो।

इस विचारधारा को सफल और कार्यान्वित करने के उद्देश्य से आपने शिक्षा के क्षेत्र में दयानन्द ऐंग्लोवैदिक का आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया, जिसके परिणाम स्वरूप देश में सर्वत्र डी० ए० वी० स्कूलों और डी०ए०वी० कालिजों का जाल बिछ गया।

प्रारम्भ में डी० ए० वी० स्कूलों की शिक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण वैदिक था। खेद है कि अब वैसा नहीं रहा अब तो डी०ए० वी० स्कूल भी मैकाले के ही अनुयायी हो गये हैं।

महात्मा जी सच्चे सन्यासी थे और उनकी आत्मा तप से तपकर कुन्दन बन गई थी। आप सरलता और सादगी की मूर्ति थे। डी० ए० वी० कालेज का एक भी पैसा उन्होंने कभी अपने प्रयोग मे नही लिया। जनता के पैसे को अपने प्रयोग मे लाना वे पाप और समाज के धन का दुरुपयोग समझते थे। सारे जीवन मे आपने कालिज की छोटी-से-छोटी वस्तु, यहाँ तक कि कागज का टुकडा भी अपने प्रयोग मे नही लिया। आप कालिज के प्रधान रहे और आचार्य भी रहे, चाहते तो अपने लिये कालिज का अधिक से अधिक प्रयोग कर सकते थे, किन्तु उस सच्चे संन्यासी और महात्मा ने अपने लिये कालिज का जरा सा भी उपयोग ठीक नही समझा। आप सर्वथा निर्लिप्त होकर, निस्वार्थ भाव से, बिना कुछ दक्षिणा लिये ही अवैतनिक रूप से कालिज की सेवा करते रहे।

महात्मा जी का स्मृति दिवस इस वर्ष २३ नवम्बर को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे विशेष समारोह के साथ आर्यसमाज मन्दिर (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के प्रागण में मनाया गया है। इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित नागरिक, विद्वान्, उपदेशक और नेताओ में महात्माजी प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। महात्मा जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अपना जीवन तपस्या का जीवन बनायें तथा निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने का व्रत लें।

रमो रमो अभिराम

सोम ! रारन्धि नो हृदि
गावो न यवसेष्वानध्वा
मर्य इव स्व ओक्ये ।।

ऋ० १।९१।१३

हे सोम ! (गावोन यवसेषु) जैसे जौ के खेतो में गायें रमण करती हैं। और (मर्य) मनुष्य (स्व ओक्ये इव) अपने घर मे निवास करता है वैसे ही (त्व) तुम (नः हृदि) हमारे हृदयो मे (आ) आकर सदा रमण करो या बस जाओ।

मनुष्य जीवन में सुख चाहता है। इस सुख और आनन्द की प्राप्ति का एक ही उपाय है और वह यह कि प्रभु के समीप पहुचना या प्रभु को अपने मन मन्दिर में बसा लेना। हम प्रभु के जितना निकट रहते हैं उतनी ही हमारी शक्तिया बढ जाती हैं। वास्तव में प्रभु के निकट आने से हमारे ज्ञान का क्षेत्र बढ जाता है। जहां ज्ञान होता है, शक्तिसत्ता आती है। और जहां शक्ति होती है वहा आनन्द का अनुभव किया जा सकता है। इस प्रकार प्रभु के साथ अपनी एकता अनुभव करने से जीवन मे एक नया उत्साह, उल्लास व शक्ति आ जाएगी और हम आनन्द का अनुभव कर सकेंगे।

प्रभु को अपने हृदय में बैठाने के लिए मनुष्य को आत्मपरिष्कार करना होगा। हृदय को पवित्र बनाना होगा। हृदय से झूठ, हिंसा, कुटिलता, द्वेष असंयम आदि विचारो के मैल को मिटाना होगा। आत्मनिरीक्षण द्वारा हृदय से रागद्वेष के मैल को खुरच खुरच कर निकालना होगा तभी इस हृदय के आसन पर प्रभु बैठ सकेगा।

सद्विचार मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाते है। ईश्वर के स्मरण से ही हम ईश्वर से स्वाभाविक सबंध बना लेते हैं। और तब ससार मे हमे कभी भी अकेलापन अनुभव नही होता क्योकि हमारे साथ हमारा ईश्वर रहता है। उस महान् सृष्टा से अटूट नाता जोडकर ही हम उनके निर्माण कार्य मे हाथ बटा सकते हैं। पृथ्वी का कण-कण उसी निर्माता की अपूर्व योजना की गवाही देता है। हमारा जीवन भी तभी सच्चा मानव जीवन होगा जब हम पृथ्वी के सुन्दर रूप को और भी सुन्दर बनायेंगे, मनुष्यता को ईश्वर के पास ले जाएगे। ईश्वरत्व के पास जाने का मतलब है आनन्द के स्रोत के पास चले जाना। उसमे हममे दिव्यता का समावेश हो जाता है। ईश्वरीय सत्ता से अलग होने का विचार निर्णय की सारी शक्तियो से वचित कर देता है।

लेखक :
श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार

सच तो यह है कि ईश्वर के प्रकाश में कदम रखते ही मनुष्य की सब दुर्बलताए, सब दुख, सब पाप सूर्य के सामने के अन्धकार की तरह नष्ट हो जाते हैं। बस एक बार ईश्वर मे विश्वास रख उसके पास जाओ, वह अपने सौन्दर्य से तुम्हे सुन्दर बना देगा, अपनी उज्ज्वलता से तुम्हे उज्ज्वल बना देगा। और जब हम उस प्रभु के 'सत्य, शिव, सुन्दरम्' रूप को पहचानने लगें तब हम कह उठेगें हे सोम ! तुम मेरे हृदय मे ऐसे आ जाओ जैसे जो के हरे खेत मे गौवे आकर खाने का आनन्द लेती है। हे प्रभो ! तुम मेरे हृदय मे केवल आओ ही नही परन्तु तुम इसमे वैसेही बस जाओ, जैसे मनुष्य अपने घर मे बसता है। तुम्हारे आने से मेरा हृदय मेरा नही रहा, मेरा मन मेरा नही रहा मैने इसमे से मैं को निकाल दिया है। यह हृदय अब तेरा घर है, अब यह शरीर तेरा है। इसमे आकर अपनी इच्छापूर्वक रमण करो। विचरो - यह तुम्हारा है।

रमो रमो अभिराम
जैसे हरी रमे यवबन में,
बसे मनुज निज सौध्य मे,
वैसे ही प्रिय मेरे मन मे,
विहरो तुम अभिराम
भक्तों के प्रेमार्त हृदय मे
करो हरे विश्राम ।।

अजमेर में वेद संगोष्ठी

ऋषि मेला के अवसर पर १९-११-८० को विश्व वेदपरिषद् के तत्त्वावधान मे श्री डा० मुर्धरकुमार गुप्त की अध्यक्षता और डा० भवानीलाल भारतीय के संयोजकत्व मे वेदसगोष्ठी हुई जिसने निर्णय लिये है।

१ वेदो का प्रकाशन मोटे टायप मे विराम चिह्नो को प्रयोग करते हुए और शब्दो को अलग-अलग छापकर उनका अनुवाद सरल भाषा मे किया जाये।

२. प्रत्येक आय का वेदारम्भ सस्कार किया जाये।

३ आर्यसमाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल ५, १०-४-१८७५ को ही माना जाये।

४. वेदसृष्टि सवत् ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट १९६०८५३०८१ ही मान्य है।

५ ऋग्वेद की मन्त्र सख्या १०५२२ ठीक है।

६ ६ या ५ का उच्चारण 'ख्न' करना अशुद्ध है। यह अनुस्वार का गहरा रूप है।

७ प्रत्येक आर्यसमाज मे वेद विद्यालय अवश्य सचालित हो (चाहे एक घटे के लिये ही हो)।

८ पारायण यज्ञो मे मन्त्रान्त मे स्वाहा आने पर उसे मन्त्रांश समझकर आहुति के लिए पुन 'स्वाहा' का प्रयोग किया जाये।

९. ऋग्वेद तथा अथर्व का द्रुत यजुर्वेद का मध्यम और सामवेद का विलम्बितलय मे पाठ किया जाये।

१० मन्त्रो का पाठ ७ घन्टो के ७ स्वरो मे किया जाये जैसे गायत्री छन्द का षड्ज मे त्रिष्टुप् का धौवत स्वर मे आदि।

११. सामान्य यज्ञ सस्कार विधि के सामान्य प्रकरण के क्रमानुसार त्रिया

आर्यसमाज के इतिहास की कुछ अप्रकाशित घटनाएँ

ऐसे थे हमारे 'संन्यासी'

उपासना का एक फल निर्भयता है। यदि ईशोपासक के मन मे निर्भयता का भाव नही है तो समझ लीजिए कि वह अब पिछड़ा साधक है। आत्मबल आत्मोन्नति की कसौटी है तभी तो महर्षि दयानन्द ने आर्याभिविनय में एक से अधिक बार प्रभु से निर्भयता की विनय की है।

आर्यसमाज की विचारधारा मे जीव मात्र को भय मुक्त करने का उपदेश, सन्देश और आदेश है। प्राणियो को अभय देने से पूर्व आर्य विचारधारा से विभूषित व्यक्ति का अभय होना आवश्यक है। आर्यसमाजी का आर्तनाद है:—

'जो बोले सो अभय,
वैदिक धर्म की जय।'

महान् मनीषी श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने अपने एक ग्रंथरत्न मे महर्षि दर्शन के विषय मे एक मार्मिक बात लिखी है.

'He has given us a bold philosophy of life A philosophy of the reality of god, reality of man and the reality of the universe in which man has to live in His is a philosophy of bold actions and not of idle musings "

महर्षि का दर्शन निश्चय ही वीरोचित (Bold Philosophy) दर्शन है। आर्यसमाजी बनते ही व्यक्ति मे निडरता का भाव उभरना आरम्भ होता है। यदि किसी व्यक्ति मे यह भाव नही उभरता तो वह व्यक्ति आर्यसमाज मे घुसा है, उस व्यक्ति मे आर्यसमाज नहीं घुसा। हमारे हृदयों में आर्यसमाज का प्रवेश हो।

आर्यसमाज में प्रवेश करके व्यक्ति कल्याण मार्ग का पथिक बनता है। ऐसे एक पथिक महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) थे। अभी वह राजनीति के विस्तृत क्षेत्र में नही उतरे थे तब की एक घटना हम पाठकों के सामने रखते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास लेखक, गवेषक तथा आधुनिक भारतीय इतिहास के पंडित इस घटना का ठीक ठीक मूल्यांकन करेंगे।

१८९७ ई० में कांग्रेस अभी शैशव काल में थी। राजनीति का स्वर अभी मन्द था। राजनैतिक चेतना अंगड़ाई लेने लगी थी। कांग्रेस कुछ एक बाबुओं, वकीलों व डाक्टरों की टोली थी। जन-साधारण से अभी कोसों दूर थी। तब अपने उग्र अग्रलेखों के कारण लोकमान्य तिलक को बम्बई हाईकोर्ट ने १।। वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया। यह एक ऐतिहासिक अभियोग था। अंग्रेजी न्यायालयों में न्याय के नाम पर एक विचित्र नाटक हुआ करता था। जनता तो क्या, बड़े-बड़े नेता तब साम्राज्य के भय से त्रस्त थे। लोकमान्य जब कारागार से छूटे तो महात्मा मुंशीराम ने उनके मुक्त होने पर लिखित रूप से हर्ष व्यक्त किया और अपने लेख में यहाँ तक लिखा था कि यद्यपि उनको एक हाईकोर्ट के न्यायाधीश ने दण्ड दिया था तथापि जनमत प्रायः यही था कि वह निर्दोष हैं।

हमारे पाठक मुंशीराम जी की निर्भयता को उस युग की परिस्थितियों को अध्ययन करके न्यायतुला पर तोलें। कितने साहस के साथ महात्मा जी ने अंग्रेज Judiciary को रगड़ा दिया है। यह न्यायालय का अपमान है। अपने

लेखक :
प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आपमें एक अपराध है। Contempt of Court का साहस करके देशवासियो को भयमुक्त करने का यह प्रशंसनीय प्रयास था। महात्मा जी का यह लेख बड़े परिश्रम से हमने खोजा है।

महान् श्रद्धानन्द के जीवन की एक और ऐसी ही अद्भुत घटना हमारे सामने आई है। संयोग की बात है कि इस घटना का सम्बंध भी लोक मान्य तिलक से है। १९०२ ई० में लोकमान्य पर अंग्रेजी शासन ने पुनः एक अभियोग चलाया इस अभियोग पर देव पुरुष मुन्शीराम ने लिखा :—

मिस्टर बाल गंगाधर तिलक के जो फौजदारी अभियोग, झूठ बोलने व ठग्गी का पूना में चल रहा है, वह यद्यपि इस दृष्टि से साधारण है कि सदा ऐसे अभियोग महापुरुषों के विरुद्ध चला ही करते हैं, परन्तु जब एक ओर भारतीयों में यह प्रसिद्ध है कि मिस्टर तिलक की अपकीर्ति के लिए पूना के अंग्रेजों ने यह अभियोग चलाया है और दूसरी ओर अंग्रेजी पत्र यह दिखा रहे हैं कि हिन्दु लोग बुरे चलन के व्यक्ति के पीछे लगने में भूल पर थे तो इस अभियोग का परिणाम भारतीयों के लिए विशेष रुचि रखता है"

पाठकवृन्द ! नूर उलहसन हो, किंवा खुशवन्त सिंह जी, रोमीला थापर हो अथवा डा० राधा कृष्णन का चिरञ्जीव पूर्वाग्रह से आर्यसमाज के विरुद्ध बिना जांच पड़ताल के—अनेक व्यक्ति आए दिन कुछ न कुछ लिखते रहते हैं। आर्यसमाज के निर्माताओं की उपलब्धियों को घटाकर (Belittle) दिखाने की घिनौनी दुष्प्रवृत्ति चल पड़ी है। हमें आशा है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की ये पंक्तियां इतिहास वेत्ताओं का ध्यान एक दिन अवश्य खींचेगी। भारतीय इतिहास में इन दोनों घटनाओं का स्थान Milestone (मील पत्थर) से कम नहीं।

आर्यसमाज के और महान् संन्यासी के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना देकर हम अपनी लेखनी को विराम देते हैं। लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द अजमेर गये। होली के दिन थे। प्रो० घेसूलाल जी एम० ए० के साथ बाजार में से निकल रहे थे। किसी ने रंग की पिचकारी मारी।

स्वामी जी वहीं रुक गये। प्रो० घेसूलाल जी से कहा लौटिए। साधु के लिए साधु वेश रहना ही उचित है। भगवा रंग ही पहना जा सकता है और कोई नहीं। ये वस्त्र तो बिगड़ गये। इन्हें नही पहना जा सकता।"

महाराज वापस लौटे। वे वस्त्र उतारे। कौपीन लगाकर दिन भर कमरे में पड़े रहे और वस्त्र थे नहीं। प्रो० महोदय कुर्ता सिलने दिया। नये वस्त्र पहनकर फिर सामाजिक कार्यों के लिए यतिवर बाहर निकले।

सहृदय पाठक इस घटना पर विचारें। आर्यसमाज में [illegible] बीस पैसे का गेरु लेकर कपड़ा रंगकर गृहस्थी भी मंच पर बैठकर 'स्वामी जी' बन बैठता है। बाद में फिर गृहस्थी। संन्यास धर्म की मर्यादाओं का हमारे संन्यासी कितनी कड़ाई से पालन करते थे—इसका एक उदाहरण उपरोक्त घटना है। अभी-अभी अजमेर में प्रो० महोदय के परिवार ने श्री स्वामी ओमानन्द जी को यह घटना सुनाई। सुनकर हमने कहा, स्वामी जी इस घटना का महत्त्व महाराज के लोहारू के बलिदान से कम नहीं। उनका भी यही मत था। स्वर्गीय स्वामी वेदानन्द जी ने ठीक ही लिखा है कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी साधुओं के रीति नीति को विशेष रूप से जानते थे और अपने आश्रम की मर्यादाओं का पालन करने के लिए उन्होंने कठोर तप किया। उनकी सतत साधना को प्रणाम।

निर्वाचन

'गुरुकुल महाविद्यालय बैरगिनिया (सीतामढी) बिहार का नया चुनाव। श्री रामगोपाल जी अग्रवाल मुजफ्फरपुर (प्रधान), श्री शोभाचन्द्र जी अग्रवाल मौर (प्रधानमंत्री), श्री द्वारिका प्रसाद जी बैरगिनिया (कोषाध्यक्ष) श्री प० रामावतार शर्मा विद्यावाचस्पति मुख्याधिष्ठाता।

—आर्यसमाज तिलकनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक ३० नवम्बर से ७ दिसम्बर तक मनाया जा रहा है। प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से ७-३० तक यजुर्वेदपारायण यज्ञ तथा रात्रि ७-३० से ९-३० बजे तक वेदोपदेश श्री महा शिवकुमार जी शर्मा द्वारा अनेक विद्वानों तथा साधु-सन्तों के व्याख्यान एवं प्रवचन और भजनोपदेश होंगे।

ग्राहकों से निवेदन

'आर्य संदेश' के अनेक कृपालु ग्राहकों का चन्दा २-२,३-३ वर्ष से नहीं प्राप्त हुआ है। इस अत्यन्त महगाई के युग में यदि आपका चन्दा हमें नही मिलेगा तो आप स्वयं ही विचार कीजिये कि पत्र कैसे चल सकेगा। कृपया अपना पूरा चन्दा जितना भी आपकी ओर निकलता है, तुरन्त भेजने का कष्ट करें।

सभा-मन्त्री

आर्यसमाजों के सत्संग

१०-११-८०

कालका जी—पं० ओम वीर शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-I—पं० सत्य काम वेदालंकार; जंगपुरा भोगल—पं० मुनिशंकर वान-प्रस्थ; तिलक नगर—पं० वेद व्यास भजनोपदेशक; नारायण विहार—आचार्य कृष्ण गोपाल; पंजाबी बाग—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम —पं० केशवचन्द्र मुन्जाल; माडल टाउन—पं० प्रकाशवीर व्याकुल; लाजपत नगर—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; लक्ष्मीबाई नगर—पं० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; सुदर्शन पार्क —प्रो० भारत मित्र शास्त्री; साकेत—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; जोर बाग —प्रो० सत्यराज वेदार; नया बांस —श्री चिमनलाल आर्य।

(शेष पृष्ठ ४ का)

को मानता हूं परन्तु वेद से भिन्न सब मत-वालों ने इसकी उच्चता वा दूसरे महत्व को मिट्टी में मिला दिया है क्योंकि वे सब कहते हैं कि उनके (व्यक्तिगत पूजा वाले) मत को मानने वालों के पापों (दुराचारों) की क्षमा हो जायेगी और वे स्वर्ग को प्राप्त करेंगे दूसरे मत वाले चाहें वे कितने ही ऊंचे आचरण के हों, नरक में जायेंगे। यह कितने अंधेर की बात है। इसी से ही तो संसार में झगड़े की बात है मतमतान्तर चल रहे हैं और इतनी अशांति फैली हुई है। केवल वैदिक मत ही कहता है कि उपासना केवल ईश्वर की ही करनी चाहिए, किसी अन्य व्यक्ति की नहीं, और कभी क्षमा नहीं होगा। उनके फल को तो ईश्वर की व्यवस्था से भोगना पड़ेगा। और बिना उपरोक्त वैदिक धर्म के पालन किये, मनुष्य को सुख शान्ति वा ईश्वर-प्राप्ति (मोक्ष प्राप्ति) नहीं। हो सकती अर्थात् उपरोक्त वैदिक धर्म के पालन से अर्थात् अनुष्ठान से ही ऐहिक (सांसारिक) वा पारमार्थिक (निः श्रेयस-मोक्ष) सुख की सिद्धि हो सकती है। अन्त में मेरी सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमपिता परमात्मा से सविनय प्रार्थना है कि वह हम को सामर्थ्य दे कि हम वेद विरुद्ध सब मत-मतान्तरों के आपस के झगड़ों को मिटा कर उपरोक्त सर्वप्रत्य वेदोक्त सर्वसत्य का प्रचार कर सब को ऐक्यमत का बना सब को सुख लाभ पहुंचाने के लिए प्रयत्नशील हों जिससे सब लोग सहज में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि कर के सदा उन्नत वा आनन्दित होते रहें।

दिल्ली आर्य महासम्मेलन

२६ से २८ दिसम्बर ८० तक

रामलीला मैदान में मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर

'आर्य सन्देश' का विशेषांक

सजधज के साथ निकलेगा।

आर्य महासम्मेलन के भारी व्यय को पूरा करने के लिये आप इस विशेषांक में अपना अच्छा विज्ञापन देकर महासम्मेलन के कार्य में सहयोग देने की कृपा करें।

महासम्मेलन की सहायता होगी और आपका व्यापार चमकेगा।

सभा-मन्त्री

१४ नवम्बर से १४ दिसम्बर १९८० तक

जवाहरलाल जी के ९१ में जन्मदिवस

तथा

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित

श्रीमती चन्नन देवी आर्यसमाज नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय

सुभाष नगर, नई दिल्ली-२७

की

पाँचवीं वर्षगांठ पर

अन्धापन मिटाओ महीना

मनाया जा रहा है। इस अवसर पर

- गरीब और बेसहारा रोगियों को निःशुल्क चश्मे
- गरीब निःसहाय रोगियों के लिये निःशुल्क दवाईयां
- निःशुल्क लैंस ऑपरेशन

औरतों के हर रोग के लिये आज ही पधारें

निवेदक :

महाशय धर्मपाल	(डा०) सुखमुखदास सोवर	ओम्प्रकाश आर्य
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री ... द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७३७/१-सी, गुरुनानक गली, गांधीनगर दिल्ली-३२ के लिए निरुपमा प्रिंटर्स, पहाड़गंज, नई दिल्ली म मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

वैवाहिक विज्ञापन

२८ वर्षीय कद पांच फुट दो इंच मासिक आय ६५४ रु० अपना मकान दिल्ली राजकीय विद्यालय मे M A Bed TGT अध्यापक मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठित अग्रवाल कुलोत्पन्न आर्यसिद्धान्तो के प्रवक्ता हेतु दिल्ली मे ही सेवारत सुसस्कृत (M A या B A) आर्य सिद्धान्तनिष्ठ स्वस्थ सुन्दर कन्या की आवश्यकता है। अध्यापिका को प्राथमिकता। दहेज और जाति बन्धन नही। सादा विवाह प्रथम बार मे ही फोटो सहित पूर्ण विवरण के साथ मिले — बाबूलाल अग्रवाल ६७४ मिलट्री रोड पजाबी बस्ती आनन्द पर्वत नई दिल्ली ११०००५।

देशोन्नति में आर्य समाज के योगदान पर बल

(शेष पृष्ठ १ का)

जी को अपनी श्रद्धाजली अर्पित क । इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा क प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष श्री [illegible] सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा [illegible] के प्रधान श्री रामभूति कैला अखिल भारत य श्रद्धानन्द ट्रस्ट के मन्त्री श्री नवन त लाल एडवोकेट, तथा अन्य आर्य नेता गण श्रा मच्छी संख्या में उपस्थित थे।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

[illegible] वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ अंक ७ | रविवार ७ दिसम्बर १९८० | दयानन्दाब्द १५६

आर्यसमाज के एक समर्पितजीवन की समाप्ति :

महाशय चुन्नीलाल जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा

यह बड़े दुःख की बात है कि आर्य-समाज के एक ऐसे निष्ठावान, कर्मठ और सौम्य व्यक्ति का देहावसान हो गया, जिन्होंने केवल अपने परिश्रम से ही अपना और अपने परिवार का निर्माण किया। महाशय चुन्नीलाल जी आर्य-समाज के उन कुछ चुने हुए लोगों में से थे जिन्होंने आर्यसमाज में प्रवेश करने के बाद उसकी शिक्षाओं से प्रभावित होकर धार्मिक जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया। 'हमारी आर्यसमाज' के प्रचार के कारण ही महाशय जी सांसारिक लोक-नीति की चिन्ता किए बिना प्रायः अपने जीवन के अनुभव बिना किसी लाग लपेट के सबको सुना दिया करते थे। ऐसे सत्यनिष्ठ व्यक्ति व्यापारिक जगत में दुर्लभ होते हैं। स्वाभाविक है कि इस प्रकार के सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति को खोकर आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य यह अनुभव करे कि आर्य समाज का एक ऐसा विरला व्यक्ति उनके बीच से उठ गया है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

महाशय चुन्नीलाल जी का देहावसान १८ नवम्बर को हुआ और ३० [illegible] को एक विशाल सभा में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस श्रद्धांजलि सभा में महाशय जी के जीवन और उनके [illegible], एक [illegible] जीवन और [illegible] के प्रति उनके [illegible] की विशेष चर्चा हुई। [illegible] आर्य [illegible] के लोगों में से थे जिन्होंने कमाई तो केवल दो हाथों से की परन्तु अपनी कमाई का धन हजारों हाथों से बांटा। श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित ऐसे बहुत से लोग थे जिन्होंने समय-समय पर महाशय जी से सात्विक सहायता प्राप्त की थी। कोई भी अपंग, असहाय विधवा सार्वजनिक और सामाजिक संस्थाएं और राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता भी उनके दरवाजे पर पहुंच कर कभी निराश नहीं लौटे। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी भू पू मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री केदार नाथ साहनी, भू पू कार्यकारी पार्षद श्री मदनलाल खुराना, श्री बलराज मधोक, आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता प्रो रामसिंह और वैद्य ब्रह्मदत्त जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार, आदि ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके अतिरिक्त सभा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा भी उपस्थित थे। आर्य केन्द्रीय सभा तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा का कार्य-यज्ञ से आरम्भ हुआ और उसकी पूर्ति भजनों की धुन से हुई। श्रद्धांजलि सभा की विशेषता यह थी कि ५,००० से अधिक श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले लोगों की भीड़ के बावजूद पूरी सभा में पूर्ण शांति थी। सारा वातावरण ऐसा ही था जैसाकि महाशय जी का अपना सौम्य व्यक्तित्व था।

महाशय जी का जन्म २४ जुलाई १८८७ को हुआ था। उनका प्रारम्भिक जीवन बहुत भयंकर गरीबी में बीता परन्तु वे इतने अधिक अध्यवसायी थे कि नाम मात्र की पूंजी से उन्होंने अपना काम शुरू किया और आयु पूरी होने के समय वे एक बहुत बड़े प्रतिष्ठान 'महाशया दी हट्टी के' संस्थापक थे और उनका व्यापार बहुत फैल चुका था। उन्होंने जीवन में आर्यसमाज तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए लाखों रुपये खर्च किए। महाशय जी से मिलने वाले लोग प्राय इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते थे कि अपने जीवन के प्रारम्भिक दिन उन्होंने जिस गरीबी और उपेक्षा में काटे उसकी कोई कटुता उनके जीवन में नहीं दिखाई देती थी। उनका स्वयं यह कहना था कि अभाव के दिनों में मुझे बहुत कष्ट सहने पड़े, मैं नहीं चाहता कि इसी प्रकार के कष्ट किसी दूसरे को भी उठाने पड़ें। यह उनकी आन्तरिक भावना थी जो महर्षि दयानन्द के उपदेशों के कारण पैदा हुई और वह स्वयं कहा करते थे महर्षि जी ने तो विष पीकर भी जीवन दान किया, है क्या मैं इतना भी नहीं कर सकता।

इस उदारमना व्यक्ति और महाशय परिवारी ने सरस्वती शिशु मन्दिर के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। सुभाष नगर दिल्ली में एक नेत्र चिकित्सालय की श्रीमती चन्नन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के नाम से स्थापना की और श्रीमती चन्ननदेवी सरस्वती शिशु मन्दिर नाम से एक विद्यालय का संचालन करते रहे। अपने कारखानों में भी प्रति मंगलवार कथा कीर्तन और प्रत्येक संक्रान्ति को यज्ञ के आयोजन की व्यवस्था करते रहे। वस्तुतः उन्होंने अपने व्यापार में केवल धर्म के इस बाहरी रूप को प्रचलित नहीं किया बल्कि धर्म और सत्य को अपने व्यापार का एक उद्देश्य बनाया। 'महाशया दी हट्टी' के नाम से चलने वाला उनका व्यापार इसका एक जीता जागता उदाहरण है।

महाशय जी सरलता और सादगी के मूर्तिमान उदाहरण थे। बदन पर खद्दर के मोटे कपड़े पैरों में सादे जूते और हाथ में मामूली सी छड़ी, यही उनका बाहरी रूप था। कोई अपरिचित व्यक्ति उन्हें देखकर यह नहीं कह सकता था कि वे इतने बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठान के संस्थापक हैं। लगभग अन्तिम समय तक ९३ वर्ष की आयु में भी, उनकी ओजस्वी वाणी और प्रखर व्यक्तित्व ही उनका विशेष आकर्षण था। महाशय जी देह

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेदमन्त्र

अपना पार पाने की क्षमता प्रदान कर

इन्धाना स्त्वा शतं हिमा द्युमन्त समिधीमहि वयस्वन्तो वयस्कृतं सहस्वन्तः सहस्कृतम् । अग्ने सपत्न दम्भ नमदब्धासो अदाभ्यम् । चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीयमजु: ३-१८

ऋषि:—अवत्सार । देवता-अग्नि: ।

शब्दार्थ—हे (अग्ने) सबके प्रेरक उन्नायक और प्रकाशक प्रभो (द्युमन्तम्) स्वय द्युतिमय तथा दूसरो को दीप्त करने वाले आपको (इन्धाना.) दीप्ति की कामना करने वाले हम दीप्ति के लिए प्रयत्न करते हुए; (वयस्कृतम्) आयु अन्न और जीवन प्रदान करने वाले आप की (वयस्वन्त:) कामना वाले हम, आयु, अन्न, और जीवन इनके लिए प्रयत्न करते हुए, (सहस्कृतम्) सहिष्णुता और साहस प्रदान करने वाले आपको (सहस्वन्त) सहिष्णुता तथा साहस की कामना वाले हम, इनको प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए (सपत्नदाम्भनम्) सब प्रकार के बाह्य तथा अभ्यन्तर शत्रुओं का नाश करने वाले (अदाभ्यम्) किसी भी प्रकार हिंसित न होने वाले आपको (अदब्धास.) अहिंसित होने की कामना वाले हम, अहिंसित होने का प्रयत्न करते हुए (शतहिमा) १०० वर्ष तक (समिधीमहि) आपको ध्यान द्वारा अपने अन्दर दीप्त करने का प्रयत्न करते हैं । हे (चित्रावसो) विचित्र वस्तुओं वाले (ते) आपकी कृपा से (स्वस्ति) हमारे लिए सब प्रकार से कल्याण हो । और हम आपकी (पारमशीय) शक्तियो का पार पा सकें । अर्थात् आपको पूर्णतया समझ सकें । तुझे व्याप्त कर सके ।

निष्कर्ष—१—जिस चीज की कामना हो, उसे प्राप्त करने के प्रयत्न के बाद ही प्रार्थना करनी चाहिये ।

२—प्रार्थना उससे करनी चाहिए, जिसके पास वह चीज हो । परमेश्वर सारे ब्रह्मांड की संपूर्ण वस्तुओ का स्वामी है । इसलिए उससे किसी भी वस्तु की प्रार्थना की जा सकती है ।

३—परमेश्वर से जिस वस्तु की प्रार्थना करनी हो, उस वस्तु के रचयिता स्वामी या दाता के रूप में उसका ध्यान करते हुए उससे प्रार्थना करनी चाहिए ।

४—आयु अन्न और जीवन का सम्बन्ध स्थूल शरीर से है । स्थूल शरीर बिना अन्न के रह नहीं सकता । जब तक स्थूल शरीर रहता है, तब तक ही मनुष्य का जीवन तथा आयु गिनी जाती है । सहिष्णुता तथा साहस का सम्बन्ध मन से है । मन के हारे हार है, मन के जीते जीत । आत्मा अमर होने से अदाभ्य है । इसकी सहायता से ही काम, क्रोध आदि का दमन या नियमन किया जा सकता है ।

५ इस मन्त्र में शरीर मन और आत्मा—तीनों के कल्याणपूर्ण अस्तित्व की प्रार्थना है । यदि इन तीनो का कल्याण हो जाएगा, तो परमात्मा की शक्तियों का पार पाया जा सकता है, उसे समझा जा सकता है, उसका साक्षात्कार किया जा सकता है ।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि अवत्सार है, जो सकेत करता है कि सार का ध्यान करो, सारभाग की रक्षा करो । गौण तत्वों पर ज्यादा ध्यान मत दो ।

शरीर को दीप्त रखने के लिए अन्न का विशेष ध्यान रक्खो । अन्न पवित्र, बलदायक तथा पवित्र उपायों से प्राप्त किया हो ।

मन को दीप्त करने के लिए सहिष्णुता-(दूसरों की कमियों, तथा ज्यादतियों को सहने की क्षमता) तथा साहस (अपने से बड़ों तथा शक्तिशालियों के सम्मुख सत्य प्रकट करने की क्षमता) पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

आत्मा को दीप्त करने के लिए काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, द्वेष तथा मद का विशेष नियमन करना चाहिए । ये सब आत्मा के सपत्न है, क्योंकि उसी की तरह अव्यक्त, अदृश्य तथा स्वभावजन्य हैं ।

इन्धाना:—इन्धी दीप्तौ । वय:-अन्न-नाम । नि० २-७ । वय: आयु । स्वा० द०, अदब्धास:=दंभाहंकार रहिता: । स्वा० द० पारम्-पारती स्कर्मसमाप्तौ । दम्नोति बधकर्मसु नि० २-१९ अदाभ्यम् । अशीय—अशूङ् व्याप्तौ ।

—मनोहर-विद्यालंकार

[गतांक से आगे]

परमात्मदेव का अनुभव अंगुष्ठमात्र का अनुभव है

लेखक :

श्री डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वही इस सृष्टि मे दीख रहा है । उसका जो रूप उसके दृश्यमान रूप से अतिरिक्त है—ततः यद् उत्तरतम्, वह रूप रहित है—अरूपम्, वह जरा-मरण आदि रोगों से रहित है—अनामयम् । जो परमात्मा के इस व्यक्त तथा अव्यक्त सपूर्ण रूप को जान लेते हैं—ये एतद् विदु:, वे अमर हो जाते हैं—अमृता ते भवन्ति, जो परमात्पदेव के इस पूर्ण रूप को नही जान पाते—अथ इतरे—वे संसार मे दु:ख-ही दु:ख पाते हैं—दु:खं एव अपि यन्ति ॥१०॥

जितने सृष्टि में मुख हैं, सिर हैं, गर्दन हैं वे सब उसी के हैं—सर्व आनन शिर: ग्रीव:, सब प्राणियो के हृदय रूपी गुहा में वही विद्यमान है—सर्वभूत गुहाशय:, सब जगह वह व्याप रहा है—सर्वव्यापी । वह भगवान् है—स: भगवान् । क्योंकि वह सृष्टि में दीख रहे मुखों, सिरो, गर्दनों—सबमें व्याप रहा है, इसलिए सर्वगत है—तस्मात् सर्वगत:, वह सबका कल्याण करने वाला है—शिव: ॥११॥

'सब उसी के हैं'—इसका यही अभिप्राय है जिसकी तरफ़ हम गीता के ११ वें अध्याय के १६वें श्लोक का उल्लेख करते हुए इशारा कर आये हैं । जड़-चेतन मे जो-कुछ दिखाई देता है वह दीखने में भले ही कुछ हो, परन्तु उसी की सत्ता से वह सत्तावान् है । वह अपना हाथ खींच ले तो कुछ नहीं रहता । उपनिषदों में जगह-जगह इसी भाव को भिन्न-भिन्न प्रकार से कहा गया है ।

वह महापुरुष परमात्मदेव सर्वव्यापी है, परन्तु उसका अंगुष्ठमात्र अनुभव हम सभी को अपने अन्तरात्मा में होता है—अंगुष्ठमात्र पुरुष: अन्तरात्मा । वह सदा सब जनों के हृदय में संनिविष्ट है—सदा जनानां हृदये संनिविष्ट: । उसे हृदय से—हृदा, मन की जो स्वामिनी बुद्धि है उससे—मनीषा, तथा संकल्प-विकल्प करने वाले मन से—मनसा, जाना जाता है—अभिक्लृप्त: । जो इस प्रकार परमात्मदेव को जान जाते हैं—ये एतद् विदु:, वे अमर हो जाते हैं—अमृता: ते भवन्ति ॥१२॥

यहां दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक है । पहली बात तो यह कि हृदय में परमात्म-देव का अनुभव उनके अंगुष्ठमात्र का अनुभव है । हृदय मे सब कोई परमात्मा का अनुभव करता है । ज्ञान का स्थान मस्तिष्क है, अनुभव का स्थान हृदय है । परमात्मदेव का ज्ञान नही होता, अनुभव होता है, हृदय में अनुभव होता है क्योंकि परमात्मा प्रेममय है । प्रेम की अनुभूति का स्थान हृदय है, इसलिए इस श्लोक मे कहा गया है कि परमात्मदेव का निवास हृदय-प्रदेश में है । इसका यह अर्थ नहीं है कि परमात्मदेव अन्यत्र नहीं मिलते । वर्तमान तो वे सब जगह हैं, परन्तु हृदय में उनका अनुभव होता है क्योंकि अनुभव हृदय से ही होता है । स्मरण रहे, यह अनुभव अंगुष्ठमात्र है, सिर्फ उसकी झांकी है । उसे पूर्णतया अनुभव करने के लिए हृदय का साथ मनीषा तथा मन का साथ देना आवश्यक है । दूसरी ध्यान देने की बात यह है कि श्लोक में परमात्मा के अंगुष्ठमात्र का उल्लेख इसलिए किया गया कि जैसे अंगूठे से पकड़ कर संपूर्ण मनुष्य को पकड़ा जा सकता है, वैसे अंगुष्ठमात्र परमदेव को पकड़ कर उसे संपूर्ण रूप में हृदय, मनीषा तथा मन से पाया जा सकता है ।

इस श्लोक में 'बुद्धि' तथा 'मन' के भेद को भी स्पष्ट किया है । तैत्तिरीयोपनिषद् में जहां कोशों का वर्णन है, वहां भी विज्ञानमय-कोश तथा 'मनोमय-कोश—ये दो कोश कहे गए हैं । विज्ञान का अर्थ 'बुद्धि' है, मन का अर्थ 'मन' है । बुद्धि मे निश्चय होता है—'निश्चयात्मिका बुद्धि:'; मन में संकल्प-विकल्प होता है । कठोपनिषद् में लिखा है—बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मन: प्रग्रहमेव च ।

सृष्टि का दर्शन ही परमात्मदेव का दर्शन है—इसी दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए अगले श्लोक में कहा है—वह परमात्मदेव नामक पुरुष सहस्र सिरों वाला है—सहस्रशीर्षा पुरुष:, वह सहस्र आंखों वाला है—सहस्राक्ष:, वह सहस्र पावों वाला है—सहस्रपात् । वह ब्रह्मांड को सब तरफ से छूए हुए है—स: भूमि सर्वत: वृत्वा, फिर भी उसकी दसों अंगुलियां मानो बाकी रह जाती हैं—अति अतिष्ठत् दश अंगुलम् । यहां 'भूमि' वृत्वा' कहा है । 'वृञ्' से 'वृत्वा' बना है । वृञ् का अर्थ घेरना । भूमि को घेर कहते ... भूमि को घेर ... रहा है—... यहां ध्यान देने की है ।

॥१४॥

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय

आर्य महासम्मेलन

काफी लम्बे समय से 'आर्य सन्देश' में यह बात दोहरायी जा रही है कि दिसम्बर २५ से २८ तक रामलीला मैदान दिल्ली में आर्य महासम्मेलन होगा। यह सम्मेलन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में हो रहा है और इस महासम्मेलन के लिए साधारण सभा और अन्तरंग सभा से स्वीकृति प्राप्त की जा चुकी है। इसलिए दिल्ली की सभी आर्य समाजें और आर्य सदस्य इस निश्चय को कार्यान्वित करने के लिए बंधे हुए है और इसे सफल बनाना प्रत्येक आर्यसमाज और प्रत्येक आर्य सदस्य का कर्त्तव्य है।

यह बात बार-बार पूछी गयी है कि इस सम्मेलन का उद्देश्य क्या है? यद्यपि साधारण अधिवेशन, अन्तरंग सभा तथा अन्य समितियो की बैठकों में महासम्मेलन का उद्देश्य बार-बार दोहराया जा चुका है फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि अभी एक बडा वर्ग ऐसा है जिसे महासम्मेलन के उद्देश्य की ठीक से जानकारी नहीं है। इसलिए यदि इस उद्देश्य को यहां एक बार फिर से चर्चा कर दी जाये तो कुछ अनुपयुक्त न होगा।

सामान्य रूप से हमारा उद्देश्य वैदिक और आर्य सिद्धान्तों का प्रचार है और उसके साथ ही देश के जीवन मे समय-समय पर जो उतार-चढाव होते हैं और जिन संकटों का हमे निरन्तर सामना करना पड़ता है उसे ध्यान में रखते हुए आर्यसमाज के क्षेत्र से बाहर जाकर भी मार्गदर्शन करना हमारे कर्त्तव्यों में है, देश की किसी भी समस्या से क्योकि आर्यसमाज अछूता नही रह सकता इसलिए उन समस्याओं की चर्चा करना और सम्मेलन के माध्यम से उन समस्याओं का मार्ग ढूंढने का प्रयत्न करना महासम्मेलन का उद्देश्य है।

सभी परिचित हैं कि इस समय हमारे देश में विघटन की प्रवृत्तियां पैदा हो चुकी हैं। एक ओर पूर्वांचल क्षेत्र में, विशेष रूप से त्रिपुरा और मिजोरम मे ईसाई मिशनरियो के नेतृत्व मे स्थानीय लोगो ने विद्रोह कर दिया है। इसी प्रकार मणिपुर मे भी स्थिति विस्फोटक है। नागालैंड की समस्या तो काफी पुरानी हो गई है। और वहा अभी तक हम ऐसा वातावरण नहीं बना पाये कि विभिन्न वर्ग इस राज्य मे एक दूसरे के साथ सहयोग की भावना से मिलकर रह सकें और एक दूसरे के प्रति विश्वास-भावना के साथ काम कर सकें। राज्य की राजनीतिक अस्थिरता भी यहां की स्थिति को हमेशा अशान्त बनाए रखती है।

इस क्षेत्र की इस समय एक और सबसे बडी चिंताजनक स्थिति असम समस्या है। यह एक विचित्र परिस्थिति है कि केन्द्रीय सरकार १९५१ को आधार मानकर विदेशी नागरिकों को राज्य से बाहर निकालने मे हिचकिचा रही है। दूसरे देशो के नागरिको के इस देश मे चोरी-छिपे आ जाने के कारण इस राज्य में आबादी का जो असतुलन पैदा हो गया है और जिसके कारण स्थानीय लोगों को अपने ही घर में अपनी स्थिति आरक्षित मालूम होती है, इस भावना को दूर कराना और स्थानीय लोगों के अपने बहुमत बनाये रखने की इच्छा का केन्द्र सरकार द्वारा सम्मान न किए जाने के कारण स्थिति विकट हो गई है। स्थानीय लोगों की अपनी स्थिति के बारे में घबराहट और विदेशी नागरिक की इस देश के प्रति निष्ठाहीनता दोनों मिलकर अपने आप मे समस्या को विकट बनाने के लिए पर्याप्त थे, परन्तु केन्द्र सरकार ने इसमें दो प्रश्न जोड़ कर समस्या को अधिक जटिल बना दिया है। केन्द्र-सरकार के प्रवक्ता बार-बार यह बात दोहराते हैं कि वे इस क्षेत्र मे ऐसा कोई काम नही होने देंगे कि जिससे अल्पसंख्यकों और बंगला भाषियों के हितों को किसी प्रकार की आंच आये। ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्र-सरकार विदेशी नागरिकों की समस्या के साथ इन दो प्रश्नों को जोड़कर समस्या को और अधिक उलझा रही है जोकि सपूर्ण देश की दृष्टि से हितकर नहीं प्रतीत होती। यदि विदेशी नागरिकों की अल्पसंख्यकता और भाषा के आधार को इस प्रकार सुरक्षित रखा गया तो यह समस्या केवल असम तक सीमित न रह कर पूरे देश की समस्या बन जायेगी। हमारा दुर्भाग्य यह है कि हमारे शासकगण विदेशों के प्रति निष्ठा रखने वाले लोगों को जितना महत्व देते हैं उसकी तुलना में इस देश की मिट्टी से जुड़े लोगों की उतनी ही उपेक्षा करते हैं। स्थानीय विस्फोटक स्थिति और प्रशासकीय उपेक्षा दोनों मिलकर चिन्ता का विषय बने हुए हैं।

इसी प्रकार की एक और समस्या झारखंड मोर्चा के कारण पैदा हो चुकी है। इस आन्दोलन का नेतृत्व भी ईसाई मिशनरियों के हाथ में है। राजनीतिक लाभ उठाने की दृष्टि से देश का सत्तारूढ दल और मार्क्सवादी पार्टियां इस मोर्चे का समर्थन कर रही है। इस देश के प्रति निष्ठा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह समझ पाना कठिन हो रहा है कि हमारे ये राजनीतिक दल क्यों इन विघटनकारी तत्वों का समर्थन कर रहे हैं?

इसी प्रकार की समस्या का सामना हमें केरल मे और कुछ अशो में तमिलनाडु मे भी करना पड़ रहा है। केरल में समस्या का रूप राजनीतिक अधिक हो गया है। इस राज्य में सत्तारूढ मार्क्सवादी दल जिस प्रकार से खुलेआम अपने विरोधियों की हत्या कर रहा है और जिस प्रकार यहा की पुलिस केवल मूक-दर्शक बन कर इन हत्याओ को देखती है और किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं करती। वह अपने आप में देश की कानून और व्यवस्था पर एक टिप्पणी है।

देश के पश्चिमी क्षेत्रो मे दलित पैन्थर ने जिस प्रकार से इस सारे क्षेत्र के वातावरण को अशान्त कर रखा है वह भी इसलिए अधिक चिंता का विषय है क्योंकि दलित पैन्थर आन्दोलन केवल बाह्य आन्दोलनों तक सीमित नहीं है बल्कि वह दलित पैन्थर आन्दोलन बौद्धिक स्तर पर भी पूरी भारतीय परम्परा को नकारने के लिए प्रयत्नशील है। इसका प्रभाव वहा के हरिजन वर्गो पर इतना भयंकर हुआ है कि वे किसी भी भारतीय परम्परा, विश्वास, जीवन पद्धति को अब मानने से इन्कार करने लगे हैं। भारतीयता के प्रति विद्रोह का यह रूप उन हिंसात्मक आन्दोलनो से कहीं अधिक भयंकर है। सम्भवतः इसी कारण इस आन्दोलन की ओर हमारे शिक्षित वर्ग का ध्यान नही गया क्योकि वे यह समझ रहे हैं कि यह कोई एक नया वैधानिक आन्दोलन है।

जब हम उत्तर की ओर घूमते हैं तो हम पाते है कि कश्मीर मे, जहा स्थानीय लोगो के अतिरिक्त किसी भी अन्य भारतीय नागरिक के बसने पर रोक है, अल्पसख्यको की स्थिति निरन्तर विकट होती जा रही है। कश्मीर घाटी मे तो हिन्दुओ के मन्दिर तक सुरक्षित नही है और प्राय वहा से हिन्दू मन्दिरो की जमीन बहुसख्यक वर्ग के लोगो द्वारा दबा लेने के समाचार मिलते रहते हैं और तो और, पर्यटन के लिए जाने वाले लोग और इस घाटी के तीर्थ स्थानो की यात्रा पर जाने वाले लोग अपने आपको बहुत सुविधाजनक स्थिति मे नही पाते। इस प्रदेश की एक विचित्र स्थिति यह है कि यहा की भाषा तो कश्मीरी है परन्तु इसे सरकार की मान्यता प्राप्त नही है और राज्यभाषा उर्दू है। इस प्रकार भारत मे राज्यभाषा के रूप मे हिन्दी को जो स्थान प्राप्त है उसके समानान्तर यहा उर्दू को मान्यता दी गई है। भारत मे जबकि अन्य प्रादेशिक भाषाओ का अपने-अपने क्षेत्र मे खुलकर प्रयोग होता है और उन्हें सरकारी मान्यता मिली हुई है वहां कश्मीर मे कश्मीरी, डोंगरी और लद्दाखी को सरकारी मान्यता प्राप्त नही है। यह समस्या यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि कश्मीर घाटी में भारतीय क्षेत्र के मुसलमानो को लाकर बसाया जा रहा है। राजनीतिक स्तर पर इस असतुलन का परिणाम यह हो रहा है कि कश्मीर राज्य मे जमाते इस्लामी जसी पर साम्प्रदायिक सस्था का महत्व दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है।

पजाब मे हमे एक ओर खालिस्तान की माग का सामना करना पड़ रहा है और इसीलिए यहां अकालियो के धार्मिक उन्माद के कारण यहा के हिन्दू केवल द्वितीय श्रेणी के नागरिक बन गए हैं। इस राज्य मे अकालियो द्वारा हिन्दी का इतना प्रबल विरोध किया जाता है कि सभी राजकीय कार्यों से हिन्दी का बहिष्कार कर दिया है। यहा के अल्पसख्यकों को अल्पसख्यक होने के नाते हिन्दी के प्रयोग की उसके शिक्षण की व्यवस्था की जो सुविधायें मिलनी चाहिएं, पजाब सरकार वह भी देने को तैयार नहीं है। पिछले कुछ समय से अकालियो के धार्मिक उन्माद के कारण राज्य मे जो हिंसात्मक वातावरण बना है उसके कारण किसी भी अन्य धर्म के अनुयायी अपने आपको वहां सुरक्षित नही समझते।

देश के मध्य भाग मे अभी हमे जिस मुस्लिम विद्रोह का सामना करना पडा है वह केवल स्थानीय विद्रोह नही है। वस्तुतः बहुत लम्बे समय से यह विद्रोह की भावना मुस्लिम जगत में पनप रही हैं। यहा भी हमारे राजनीतिक दल इस विद्रोह को पूरा पता देते रहे हैं। अब मुसलमान अपनी किसी भी समस्या के लिए इस देश के नेताओं तो क्या अपने ही पड़ोस मे रहने वाले लोगो की तरफ नही देखते बल्कि उनका ध्यान हमेशा देश से बाहर रहता है। देश के लगभग ७ करोड़ व्यक्तियों का इस प्रकार देश में निष्ठा का अभाव एक बहुत बडे खतरे की घंटी है। अभी हमे इसका समाधान भी नहीं दिखाई दे रहा है।

देश की इन समस्याओं पर आर्य जगत को बहुत गंभीरता और सतुलित दृष्टि से विचार करना है। यदि आर्य जगत इन समस्याओ को सुलझाने के लिए देश का मार्गदर्शन नही कर सके अथवा कोई नई वैचारिक धारा प्रदान नहीं कर सका तो देश के खंडित होने और इस प्रकार संपूर्ण भारतीयता के समाप्त हो जाने का मार्गदर्शन हो जायेगा। आर्य जनता पर हमारा विश्वास है कि वह इसका समाधान ढूंढने के लिए सम्मेलन को अधिक से अधिक सफल बनाने के लिए अपना पूरा योगदान करेगी। •

तब से तो मैं दिग्विजयी हूँ

अजैष्माद्यासनामाद्यनभूमाना-
गसो वयम् ।

(अद्य) आज (अजैष्म) हमत सब तरह (अपनी दुर्वृत्तियो-दुर्भावनाओ पर) विजय प्राप्त कर ली है (अद्य असनाम) आज हमको जिस वस्तु की कामना थी वह प्राप्त हो गई । इस तरह अब (वयम्) हम (अनागस) निष्पाप (अभूम) हो गए हैं ।

मनुष्य का जीवन एक यात्रा है । इस यात्रा द्वारा मनुष्य ससार सागर को पार करता है । परतु जो व्यक्ति यात्रा करते हुए अपने गुप्त खजाने को खो देता है वह अपनी यात्रा मे घबरा जाता है । यह गुप्त खजाना धन नही है ? सुरक्षित चहार दिवारी के भीतर रखी हुई तुम्हारी सपत्ति से भी अधिक निश्चित और सुरक्षित तुम्हारा एक गुप्त खजाना है जो सदा तुम्हारे पास ही रहता है । यह खजाना ही तुम्हारी असली पूजी है । तुम अपनी प्रत्येक प्रकार की क्षति को, चाहे वह सम्पत्ति की हो, मित्रता की हो, अथवा स्वास्थ्य की ही क्यो न हो—इस पूजी से पूर्ति कर सकते हो।

यह पूजी है - ईश्वर विश्वास । ईश्वर विश्वास ही वह वस्तु है जो मनुष्य मे साहस की स्थापना करती है ।

सारे विश्व मे एक ही तत्व काम कर रहा है, एक ही जीवन, एक ही सत्य वर्तमान है । हम सब उसी दैवी प्रवाह की ओर जा रहे हैं जो ईश्वर तक जाता है । इस तरह का मनोभाव रखने से, हमें एक अलौकिक प्रोत्साहन प्राप्त होता जाता है, हममे से मन का भय नष्ट हो जाता है । हम अपनी दुर्वृत्तियो, दुर्भावनाओ, कमजोरियो और पापो पर विजय प्राप्त कर लेते हैं ।

लेखक ·
श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार

याद रख लो ! मनुष्य में जितनी कमजोरियाँ, जितने कष्ट, जितनी विपत्तिया और आपदाएँ आती हैं उनका कारण यही है कि हम अपने इस सर्वशक्तिमान् अनत ऐश्वर्य युक्त परमात्मा मे भिन्नता का भाव रखते हैं । यह एक निश्चित सत्य है कि मनुष्य जीवन मे उतनी अधिक सफलता प्राप्त करेगा, उतनी अधिक विजये प्राप्त करेगा । जितना वह अपनी आत्मा मे सत्य, त्याग, दया, प्रेम, और शक्ति का विकास करेगा, और इन सबके मूल ईश्वर के प्रति अपना विश्वास रखेगा और परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा ।

पुराने यहूदी ग्रथों में एक कहानी है एक ऐसे सेनाध्यक्ष की जो एक लड़ाई मे हार गया था ।

हार का समाचार इसके घर पर पहुचने पर उसकी स्त्री अपने कमरे मे गई । उसने अपने पति के पराजित चेहरे पर भय और आशका के चिह्न देखे ।

सेनाध्यक्ष अपनी पत्नी को खड़ी देखकर बोला "बडी बुरी खबर है प्रिये, मेरी सेना के पैर उखड गए, वह हार के निकट हैं ।'

स्त्री ने उत्तर दिया' यह मैं जानती पर मेरे पास तो इससे भी बुरी खबर है ।"

"इससे भी बुरी" सेनाध्यक्ष चिल्लाया "इससे भी बुरी क्या हो सकती है ?"

लेकिन उनकी पत्नी रुकी नहीं कहती ही गई "सुना मैंने कि तुम लडाई मे हार गए, लेकिन बातचीत से तो देख रही हूँ कि तुममे ईश्वर विश्वास और साहस भी खो दिया है । अब सोचो कि वह हार बड़ी कि यह ? यह खबर ज्यादा बुरी कि वह ?

सचमुच मनुष्य जब तक अपने जीवन धन को पहचानता नही है उसमें पराजय और कमजोरी की भावना आती है और जब वह अपने जीवन धन को जान लेता है तब वह अपनी दुर्भावनाओ पर विजय प्राप्त कर लेता है । उस समय उसके हृदय से दुर्भावना, कायरता और भय के भाव दूर हो जाते हैं और वह साहसपूर्वक बढता जाता है । वह कहता है —

हे विश्वनाथ ! हे विश्वम्भर
पर जबसे शरण नहीं तेरी ।
तब से तो मैं दिग्विजयी,
तब से ससृति दासी मेरी ।
इसलिए कि मेरी इच्छा अब,
तेरे इगित पर अवलम्बित .
किसमें है इतनी शक्ति मुझे
[illegible]
यदि तुम सबके स्वामी मैं भी
स्थावर जगम सब मेरे हैं ।
व्यापार प्रकृति के है जितने
इगित पर वे अब मेरे है
निर्भय और निष्कलक
निर्दोष अपरिच्छिन्न हूँ मैं ।
जैसे ये तेरे चरण कमल
जिनसे अब तो अभिन्न हूँ मैं ।
मुझको अब कोई कमी नहीं
है विश्व कोष मेरा ही धन,
मुझमें अब कोई कमी नहीं
हूँ पूर्ण तूर्ण मैं भगवान् ॥ □

नया वैदिक साहित्य

पुस्तक वेदव्याख्या ग्रन्थ; लेखक : डा० अभयदेव शर्मा : प्रकाशक : वेद संस्थान अजमेर। मूल्य : ७.०० रु०।

समीक्ष्य ग्रंथ, जैसा कि कोष्ठकगत 'बीसवां पुष्प' शब्दो से स्पष्ट है, पूर्ण यजुर्वेद-समीक्षा-रूपी बृहद योजना की एक कड़ी है। यह योजना स्वामी विद्यानन्द विदेह ने आरम्भ की थी। वे इसके उन्नीस खड ही पूरे कर पाये थे। उनमे यजुर्वेद के प्रथम उन्नीस अध्यायों की व्यापक व्याख्या की गई है। उनके योग्य पुत्र डा० अभयदेव शर्मा ने उसी योजना को आगे बढाने का मानवीय कार्य हाथ में ले लिया है। प्रस्तुत ग्रंथ में यजुर्वेद के बीसवें अध्याय की व्याख्या की गई है। लेखक ने प्राक्कथन में "आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में, आधुनिक दृष्टिकोण से वेदो का चिंतन करते हुए साथ ही पारम्परिक वैदिक चिंतन की विरासत में उसका समन्वय करने की प्रतिज्ञा की है। तदनुसार ही मन्त्रविनियोग को पूर्ण महत्व देते हुए मन्त्रव्याख्या में उसका आश्रय लिया गया है।

यजुर्वेद के उन्नीसवे अध्याय की व्याख्या मे स्वामी विद्यानन्द विदेह ने जगती के आनन्दमयीकरण का विधान माना था बीसवें अध्याय मे 'विवेकमय जीवन' का प्रतिपादन माना गया है। 'इन्द्र और उसके इन्द्रिय का विवेचन इस अध्याय का प्रमुख विषय है।' विवेकवती बुद्धि में, वैदिक प्रतीक शैली मे इन्द्र कहा जाता है।' वही जीवन का रक्षक है। अत. उसे सुत्रामा कहा जाता है। लेखक का कहना है कि सुत्रामा इन्द्र जीवन मे से सोम और सुरा, दोनो का सेवन करता है। पर वह सुरा को भी सोम बनाकर ग्रहण करता है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि यह क्रिया वस्तुत: जीवन की पाशविक वृत्तियो का दिव्यीकरण है।

वा० स० २०।८ सिञ्चन्ति परि षिञ्चन्त्युत सिञ्चन्त पुनन्ति च।

सुरायै बभ्र्व्यै मदे किन्त्वो वदति किन्त्व: ॥" मन्त्र की व्याख्या में डा० अभयदेव ने सुरा सोम की परिणति का और अधिक स्पष्टीकरण किया है। तदनुसार "सुरा का प्राण रूप पात्र मे सेवन-ग्रहण होने पर प्राणबल उत्तेजना से भर जाते हैं। यह स्थिति बभ्रु—पीतवर्ण, अर्थात् तमतमाहट की है।

फिर सुरा मे वीर्यरूप पय के मिश्रण से मन में सुरा का परिसक, परित: सेवन होता है। यह स्थिति मद अभियान की है। इसमें नाम उभारता है और प्राणबल भोगार्थ चित्त चांचल्य में बदल जाता है। पर सुरा का पवित्रीकरण होकर अन्त में सुरा का सोम बनता है और उसकी उर्वेव=ऊर्ध्वयन और विभिन्न देवों के लिए उसका ग्रहण होता है। इस सोम का पान इन्द्र=बुद्धि करती है। फलत: बुद्धि मे विवकोदय होता है। अब बुद्धि आत्मा और प्रकृति का भेम कर लेती है। मन्त्र में आए दो किन्त्व पद आत्म-अनात्म के लिए हैं।

इस प्रकार प्रत्येक मन्त्र का सुन्दर स्पष्टीकरण एक नई शैली द्वारा किया गया है। वस्तुत: यह शैली मूल रूप मे विदेह जी द्वारा प्रतिपादित है। लेखक ने स्थान-स्थान पर उनकी पूर्व व्याख्याओ के उद्धरण दे देकर अपनी व्याख्या की संपुष्टि की है।

वस्तुत आधुनिक जीवन के दृष्टिकोण पारम्परिक (ब्राह्मण, श्रौतसूत्रादि के) चिंतन का यह समन्वय वेदव्याख्या की दृष्टि से स्तुत्य है। परन्तु इससे दो मौलिक प्रश्न उठ खड़े होते हैं। एक तो यह कि परवर्ती ब्राह्मणों, सूत्रग्रन्थो में वर्णित कर्मकांड और उसमे मन्त्रविनियोग को हम मौलिक मानते हैं? दूसरे शब्दो मे क्या मन्त्र अपने मूलरूप तत्तद् विनियोग के लिए ही उद्दिष्ट थे? ब्राह्मण अथवा सूत्र-निर्देशों के अतिरिक्त मन्त्रांश मे उन विनियोगो का क्या प्रमाण है? विशेष रूप से जिस सौत्रामणी यज्ञ में इन (बीसवे अध्याय के) मन्त्रों का विनियोग स्वीकार किया गया है, वह शब्द ही समस्त अध्यायमे विद्यमान नहीं। हां उन्नीसवें अध्याय में सौत्रामणी शब्द अवश्य आया है। स्वामी दयानन्द ने उसकी व्याख्या की है—सूत्राणि यज्ञोपवीतादीनि मणिना ग्रंथिना युक्तानि ध्रियन्ते यस्मिन् यज्ञे। ऐसी स्थिति में ब्राह्मण ग्रथो मे वर्णित सौत्रामणी याग मानने की अनिवार्यता समझ में नही आती। इसके अतिरिक्त विनियोग मे क्रम बद्धता का अभाव भी दृष्टिगोचर होता है। आरम्भिक मन्त्र (वा० स० २०।१) "क्षत्रस्य योनिरसि राष्ट्र को सम्बोधित माना गया है और आसन्दी को राष्ट्र श. ब्रा. के आधार पर सिद्ध किया गया है। किन्तु इससे पूर्व उन्नीसवें अध्याय के अन्तिम मन्त्र मे कही आसन्दी का प्रसंग नहीं, जिससे यहा सकेत मिले कि बीसवे अध्याय के प्रथम मन्त्र मे आसन्दी अथवा राष्ट्र का अध्याहार किया जाना चाहिये इस स्थिति मे प्रस्तुत व्याख्या उतनी मूल वेदमन्त्रो की प्रतीत नही होती जितनी ब्राह्मण अथवा श्रौतसूत्रों की। इसी प्रकार द्वितीय मन्त्र मे 'मृत्यो पाहि' वाक्य 'रुक्म' को सम्बोधित होने का भी मन्त्र में कोई आधार दिखाई नहो देता।

इन्द्र को बुद्धि मानने का कोई आधार नहीं बताया गया जब कि इन्द्र को मन मानने के अनेक आधार हैं। उदाहरणार्थ इन्द्र को, मंनस्वान् कहा गया है। (ऋ. २।१।११) गोपथ ब्राह्मण (२।४।११) मे भी मन को इन्द्र बताया गया है (यन्मन: स. इन्द्र)।

वेद-व्याख्या के प्रसंग मे व्याकरण जैसे महत्वपूर्ण वेदाग की उपेक्षा आश्चर्यजनक प्रतीत होती है। यदि व्याख्या मे व्याकरण सम्बन्धी टिप्पणिया भी रहती तो व्याख्या और अधिक सम्पुष्ट हो जाती (इसमे कोई सदेह नही कि इसमे स्थान तो अधिक घिरता ही)। इससे सम्बद्ध ही एक और अभाव भी खटकता है। हम जानते हैं कि मन्त्रो के शब्दो के अर्थ-निर्धारण में स्वर चिन्हों की महत्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु प्रस्तुत व्याख्याग्रन्थ में स्वरचिन्हों का नितात अभाव खटकता है। आशा है कि भावी संस्करण में मन्त्रों पर स्वरचिन्ह अंकित करने पर विचार किया जायेगा।

अन्यथा वेद—व्याख्या के प्रसंग में यह अभिनव स्तुत्य समस्यात्मक प्रयास है वेद-चिंतन चिन्ता के क्षेत्र मे नये ढंग से सोचने की प्रेरणा प्रदान करता है। कम से कम ब्राह्मण मे और श्रौत सूत्रों के प्रति एक नई दृष्टि इनसे अवश्य बनती है।

डॉ० बृजलाल, उपाचार्य सस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय।

—o—

पुस्तक : वेद मीमांसा लेखक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, प्रकाशक ईस्टर्न बुक लिंकर्स ५८१५ चन्द्रावल रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७ पृष्ठ २०५, मूल्य ४०.०० रुपये।

प्रस्तुत समीक्ष्य ग्रन्थ स्वाध्यायनिरत स्पष्ट वक्ता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की सशक्त लेखनी की अमूल्य भेट है। इसके विषय मे और कुछ कहने से पूर्व इसके भूमिका—लेखक प्रो. डॉ सत्यव्रत शास्त्री, अध्यक्ष संस्कृत विभाग दिल्ली वि. वि, के कुछ वाक्य उद्धृत करना मैं आवश्यक समझता हूँ—'अनेक भ्रांतियां वेदो के विषय मे चल निकली। उन्ही भ्रांतियो के निराकरण के रूप मे प्रस्तुत वेद मीमासा पुस्तक लिखी गई है। ग्रथकार ने इसमे सूत्र शैली को अपनाया है प्रत्येक सूत्र के नीचे हिन्दी मे उसकी विस्तृत व्याख्या दे दी गई है। प्रतिपाद्य विषय को प्रामाणिकता प्रदान करने हेतु विद्वान लेखक ने प्राचीन ग्रथों से नाना प्रमाणो को उद्धृत किया है।

वेदमीमासा लेखक के वर्षों के गहन अध्ययन एव अनुसंधान का परिणाम है। इसमे पाश्चात्य एवं तदनुयायी भारतीय वेदालोचक विद्वानों के मतो की तीव्र आलोचना की गई है। एवच सही भारतीय मत को प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है।"

वस्तुत: भूमिका के रूप मे यह अश पुस्तक की सक्षिप्त समीक्षा ही प्रस्तुत कर देता है। मूल पुस्तक सूत्रो मे प्रारभ होती है। इसमे पूर्व समस्त सूत्रो की आकारादिक्रम मे सूची दी गई है। उसमे भी पूर्व लेखक का पुरोवाक् पृष्ठभूमि के रूप मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमे सभी प्राचीन एव अर्वाचीन, भारतीय एव पाश्चात्य विद्वानो द्वारा किये गए वेदव्याख्या के प्रयासो का सक्षिप्त किन्तु आलोचनात्मक इतिहास प्रस्तुत किया जाता है। जिसमे सहज ही वेदव्याख्या के प्रतापों का मूल्याकन और वर्तमान पुस्तक की आवश्यकता का ज्ञान होता है।

सूत्रशैली अपनाने के लिए विद्वान्, लेखक बधाई के पात्र है, केवल इसलिए नही कि प्राचीन शास्त्रग्रन्थो में प्राय सूत्रशैली रखी गई है, अपितु इसलिए कि सूत्रशैली की अपनी यह विशेषता है कि उसमें व्यर्थ की असम्बद्ध बातो के लिए अवकाश ही नही होता। गागर मे सागर भरने का यह सर्वोत्तम उपाय है। सूत्रशैली मे जो एक दूरुह और अन्यान्य अन्वय या अर्थ करने की छूट हो जाती है, उसका निराकरण स्वय लेखक द्वारा की गई विशद व्याख्या से हो जाता है। लेखक के मन्तव्य मे संदेह का अवकाश ही नही रहता।

सूत्र वेदसज्ञा, वेदाविर्भाव, वेदनित्यत्व, वेद मे पुनरुक्ति, वेदार्थ-प्रक्रिया वेद मे इतिहास, वेदविषय, वेदाध्ययन मे अधिकार शीर्षक आठ अध्यायो मे सगृहीत हैं। समस्त सूत्र सख्या २५४ हैं। अन्त मे अकारादिक्रम से पुस्तक मे चर्चित विषयो की निर्देशिका दी गई है। सूत्रो मे लेखक का प्रौढ़ सस्कृतज्ञान लक्षित होता है। अध्यायों के शीर्षको से विषयो की विविधता एव व्यापकता अत्यन्त स्पष्ट है। प्रत्येक विषय प्रमाणो द्वारा सम्पुष्ट है।

उदाहरणार्थ 'वेद मे इतिहास' विषय बहुत विवादास्पद हैं। परन्तु विद्वान् 'लेखक ने' नेतिहासोपपत्तिरसामञ्जस्यात् सूत्र द्वारा यह विषय स्पष्ट किया है कि वेदान्तर्गत तथाकथित नामो को यदि ऐतिहासिक मान लिया जाये तो उनका इतिहास से सामञ्जस्य होना चाहिए, परन्तु ऐसा नही है। इसके लिए उन्होन अनेक उदाहरण दिए है, अन्यथा कृष्णायाः पुत्रोऽर्जुन. (अथर्व. १३।३।२६) के अनुसार अर्जुन को द्रौपदी का पुत्र होना चाहिए, परन्तु हम देखते हैं कि इतिहास प्रसिद्ध अर्जुन द्रौपदी का पुत्र नही पति था। परन्तु यौगिक अर्थ से स्थिति स्पष्ट होती है शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'रात्रिर्वै कृष्णा, असावादित्यो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

साम्प्रदायिक तनाव के पीछे काम करने वाली प्रवृत्तियाँ

मुरादाबाद, अलीगढ, हैदराबाद कश्मीर और गुजरात के साम्प्रदायिक दंगो ने देश मे एक बार फिर साम्प्रदायिक उत्तेजना को आंच दी है। इन दगो के कारण हिन्दू मन कितना टूटा है अथवा मुमलमान मन कितना आतंकित या उत्तेजित हुआ है इसका आकलन आज बेहद जरूरी हो गया है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है यहाँ बहुसंख्यक समझे जाने वाले हिन्दू वर्ग को संविधान मे जो अधिका प्राप्त हैं अल्पसंख्यक की श्रेणी मे आने वाले मुसलमान और ईसाई वर्ग को भी वही अधिकार प्राप्त हैं उनके पूजा-पाठ त्योहारो और अन्य धार्मिक उत्सवो पर कोई पाबन्दी नही लगाई गई। फिर वे कौन मे कारण हैं जो हिन्दू के प्रति मुसलमान के मन में और मुसलमान के प्रति हिन्दू के मन मे, सदेह और अविश्वास को जन्म देते रहते है। और आजादी के ३३ वर्ष के बाद भी साम्प्रदायिक सौहार्द और भाई चारे की भावना को पनपने नही देते।

इन अलगाव और फूट की प्रवृत्तियों के पीछे जो मन काम कर रहा हैं वह इतना स्थूल और सर्वविदित है कि उसकी खोज मे ज्यादा गहराई मे जाने की आवश्यकता दिखाई नही देती।

भारत के बँटवारे के बाद, पाकिस्तान के निर्माण से लेकर आज तक भारतीय मुमलमान की देश भक्ति पर हमेशा प्रश्न चिन्ह लगाया जाता रहा। कहा जाता रहा है कि वह अपनी मातृभूमि से अधिक अपनी अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी के प्रति ज्यादा बफादार हैं कि उसकी बफादारी हिन्दुस्तान से ज्यादा पाकिस्तान के प्रति है, कि मक्का की घटना को लेकर वह हिन्दुस्तान मे दंगे छेड़ता है, कि पाकिस्तानी खिलाड़ियो की जीत की कामना करता है कि जमायत ए इस्लाम को बफादारी भारत के अतिरिक्त कही और है, कि भारत में रहने वाले मुसलमान भारतीय नही है, और कि कश्मीर के मामले मे वह मौन साधे रहता है कि बांगला देश मुक्ति संग्राम के समय उसने कभी भारत का साथ नही दिया, कि भारतीय मुसलमान अरबों से प्यार करता है और इस्राइल से घृणा। और इनके साथ ही और अनेकानेक प्रश्न।

एक मुसलमान को भारतीय या अभारतीय समझने से पूर्व हमे उसके धर्म की मूल धारणा को समझना होगा। इस्लाम का क्षेत्र व्यापक है और विश्व मे इस्लाम के आधार पर कई इस्लामिक देश हैं। नेपाल को छोड़कर विश्व में कोई भी हिन्दू देश नहीं है। इस्लाम की मान्यता है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरान से प्यार करे, चाहे उनमें जातीय या क्षेत्रीय अन्तर कैसा भी हो, चाहे वह नीग्रो ही क्यों न हो, भारतीय या टयूनिशियन ही क्यों न हो। हालांकि हजरत मुहम्मद ने अपने अनुयायियों से कहा हैं कि वे अपनी मातृभूमि को प्यार करें और जिन देशों मे जनमे है उनके प्रति बफादर रहें किन्तु मुमलमान अपने अन्तर्राष्ट्रीय भाईयों से प्यार करता है और उसका वह प्यार राष्ट्रभक्ति से ऊपर है।

भारतीय मुसमान की देश के प्रति बफादारी मे सदेह का एक मात्र कारण धार्मिक ही नही है इसमे आर्थिक, सामाजिक असमानता का भी बहुत बड़ा हाथ है। यह सच हैं कि व्यापार के क्षेत्र मे घुसे मुसलमान धनवान है आजादी के बाद और धनवान हुए हैं अथवा सरकारी नौकरी मे ऊँचे ओहदो पर आसीन मुसलमान साधन सम्पन्न है किन्तु आम मुसलमान या तो रिक्शा चलाता है या फिर मिल या कारखानो में मेहनत मजूरी करता है। दरजी धोबी या मणिहार का काम करके जीवन-यापन कर रहा है। हालत हिन्दू उहुमत की भी उससे बेहतर नही है किन्तु उसके साथ राष्ट्रयिता का प्रश्न जुड़ा हुआ है।

उत्तर और दक्षिण के मुसलमान की मानसिकता में भी एक बड़ा अन्तर देखा जा सकता है। उत्तर का मुसलमान जहाँ सतत चौकन्ना, शंकित और आत्मरक्षा के लिए सन्नद्ध दिखाई देता है, दक्षिण में खास तोर पर तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक का मुसलमान सहज और अपने काम से काम रखने वाला है। उसके साथ उत्तर के मुसलमान की भाँति भाषा का भेदभाव भी नही है। तमिलनाडु का मुसलमान तमिल भाषी है केरल का मलयालम-भाषी और कर्नाटक का कनड़ भाषी। वेश-भूषा भी स्थानीय है उसकी किन्तु जब जब उत्तर में साम्प्रदायिकता की लहर उठती है, तब तब वह भी कुछ चौकन्ना हो जाता है किन्तु वहाँ कभी अप्रिय घटनाएं नहीं होती, हैदराबाद को छोड़कर।

इस वक्त भारत में मुसलमानो की आबादी १२ प्रतिशत है सन् ५२ में जब चुनाव-युग का प्रारम्भ हुआ तो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मुसलिम वोट हासिल करने के लिए मुसलमानों को संरक्षण देने का नारा दिया। यह नारा वोट की राजनीति में आज तक जिन्दा है और यह भी अन्य कारणों में से एक कारण है जो कि मुसलमान के मन में सर्वेव असुरक्षा को बनाये रखता है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अथवा जनसंघ अथवा हिन्दू महासभा जैसे किसी दल की सरकार कभी भारत में कायम हुई तो भारतीय मुसलमान का क्या होगा ? जब तक यह प्रचारजनित भय मुसलमानके मन से नहीं जायेगा तब तक उसकी राष्ट्रभक्ति संदिग्ध ही बनी रहेगी और उस पर प्रश्न चिन्ह लगते ही रहेंगे।

मुसलमानो को इस देश में सभी अधिकार प्राप्त है दो-दो मुसलमान राष्ट्रपति रह चुके हैं। प्रदेशों और केन्द्र की सरकारो मे उनका समुचित प्रतिनिधित्व है स्थल सेना, वायु सेना और नौ सेना में उन्हें ऊँचे और सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त है फिर भी उनकी राष्ट्र भक्ति पर शंका के आखिर क्या कारण है ? एक मुसलमान को खुद इस पर सोचना और सोचकर [illegible] हिन्दू रात दिन सड़क के किनारे से लगी दुकानो पर गाय का गोश्त लटकाता देख सकता है, बूचड़खाने मे कटने के लिए जाती गायो को देख सकता है तो एक मुसलमान मस्जिद मे घुसते सुअर के लिए मुरादाबाद जैसा हत्याकांड करने के लिए कैसे अमादा हो जाता है ?

मन्दिरों के सामने से ताजे और अलम खूब जोर शोर से निकल सकते हैं लेकिन मस्जिद के सामने से जब धार्मिक जुलूस या विवाह शादी का बैंड बाजा जाता हैं तब हमेशा टोकाटाकी की जाती है और तनाव पैदा करने की कोशिश की जाती है। हिन्दू के घर में अपनी सुरक्षा के लिए एक मामूली डंडा खोज पाना जहाँ मुश्किल काम है, मुसलमान के पास अपने ही पड़ोसी दूसरे धर्म के निहत्थे भाईयो को मार डालने के लिए पिस्तौल, बम, हथगोले राईफलें, तोपें और छुरे, चाकू और करोड़ों रुपयों का विस्फोटक सामान कहां से आ रहा है ? देश का शिक्षित और सेक्युलर मन वाला तबका (निश्चित ही हिन्दू समाज का) मांग करता है कि धार्मिक स्थानों मे मस्जिदो और मन्दिरो मे राजनीतिक प्रचार और भाषण की इजाजत नहीं दी जानी चाहिये. लेकिन भारत के गृहमन्त्री जैलसिंह इसे अनावश्यक मानते है इसे धार्मिक हस्तक्षेप मानते हैं।

और ऐसे ही कई प्रश्न हैं जो हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमान रिश्ते के बीच आज चिन्ता का विषय बने हुए हैं। ००

आर्यसमाजों के सत्संग

७-१२-८०

कम्पा मुबल (प्रताप नगर)—पं० प्रकाश चन्द वेदालंकार, अमर कालोनी—
पके विजयपाल शास्त्री,— अशोक बिहार के—सी ५२ ए—पं० ओमवीर शास्त्री,
आर्यपुरा—पं० देवराम वैदिक मिश्नरी; आर के पुरम् सैक्टर—श्रीमती नीलावती
आर्या; किंग्जवे कैम्प—लाला लखमी दास; कालका जी—पं० सत्य भूषण वेदालं
कार; कालका जी डी० डी० ए० फ्लैटस एन-१/१४१ ए—पं०हीरा प्रसाद शास्त्री;
करोल बाग—पं० प्राण नाथ सिद्धान्तालंकार; गांधी नगर—श्रीमती प्रकाश वती
शास्त्री एम ए; गीता कालोनी—पं० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक; गुड़ मन्डी—प०
विश्व प्रकाश शास्त्री; १५१-गुप्ता कालोनी—बैसारामकिशोर; गोविन्द पुरी—
श्री मोहनलाल गांधी; गोविन्द भवन (दयानन्द वाटिका)—डा० रघुनन्दनसिंह; जंगपुरा
भोगल—पं० अशोक कुमार-विद्यालकार; जनकपुरी सीमा पंखा रोड—डा० महा
वीर सांख्य दर्शनाचार्य; जनकपुरी बी ब्लाक—पं० ईश्वर दत्त एम ए, जहांगीर पुरी
के १४३८—आचार्य हरिदेव - सि० भू०; झिलमिल कालोनी -पं० प्रकाश वीर
व्याकुल; तिलक नगर—पं० वेद व्यास भजनोपदेशक, देव नगर—आचार्य कृष्ण
गोपाल; नारायणा विहार—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; पंजाबी बाग—प्रो० सत्य
पाल बेदार; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—पं० खुशीराम शर्मा; पश्चिम पुरी
जनता क्वाटरंज - पं० रामरूप शर्मा; बाग कड़े खां—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोप
देशक; [illegible] विद्यालंकार; माडल टाउन—स्वामी मिथ
लेश; माडल बस्ती—पं० वीर व्रत शास्त्री; महरौली—पं० गणेश प्रसाद विद्याल
कार; मोती बाग—डा० वेदप्रकाश माहेश्वरी; रघुवीर नगर—पं० जगदीश प्रसाद
विद्यावायस्पति; रमेश नगर—श्री चिमन लाल; राणा प्रताप बाग—पं० गजेन्द्र
पाल शास्त्री, राजौरी गार्डन—पं० केशव चन्द्र मुन्जाल; रोहतास नगर—ज्ञानचन्द
डोंगरा गायक; लड्डू घाटी—पं० शीशराम भजनोपदेशक; लाजपत नगर—पं
देवेश; विक्रम नगर—श्रीमती सम्पदा आर्या; विनय नगर—पं० मनोहर विरक्त;
सुदर्शन पार्क—प्रो० भरत सिंह शास्त्री; सराय रोहला—पं० सत्यकाम वेदालकार;
साउथ एक्सटेंशन-डी०डी०ए०-१२ सायं ४से ५-३०—पं० अशोक कुमार विद्यालकार;
श्री निवास पुरी—आचार्य राम शरण मिश्रा शास्त्री; हनुमान रोड—पं० हरिशरण,
हौज खास इ-४६—पं० मुनि शंकर वानप्रस्थ, सरस्वती विहार—पं० आशा नन्द
भजनोपदेशक; नया बांस डा० सुख दयाल भूटानी; ।

(पृष्ठ २ का शेष)

अगले दो श्लोकों में परमात्मदेव के सर्व व्यापकत्व तथा सृष्टि में ही परमात्मदेव के दर्शन करने की बात कही गई है। उसके हाथ पैर सब जगह हैं—सर्वत: पाणिपादं, उसकी आंखें, सिर, मुख सब जगह हैं—तत्: सर्वत: अक्षि-शिर: मुखम्। संसार में सब जगह उसके कान है—सर्वत: श्रुतिपत् लोके, वह सबको घेर कर बैठा हुआ हैं -सर्वं आवृत्यं तिष्ठति। यहां भी 'आवृत्य-शब्द का प्रयोग किया गया है जो 'वृत'-शब्द से बना है ॥१६॥

सब इन्द्रियों के गुण उसमे भास रहे हैं—सर्वं इन्द्रिय गुण आभासम्, फिर भी सभी इन्द्रियों से वह रहित है—सर्वं इन्द्रिय विवर्जितम्। सबका वह प्रभु स्वामी है—सर्वस्य प्रभुम्, ईशानम्, फिर भी वह सबको आश्रय देने वाला, शरण-देने वाला है—सर्वस्य शरणं बृहत् ॥१७॥

पहले कहा कि परमात्सदेव के हाथ, पांव, आंख, कान आदि सब जगह है, परन्तु कोई यह न समझ ले कि सृष्टि के प्राणियों के हाथ, पांव आदि उसी ब्रह्म के हैं, उनसे अलग उसकी सत्ता नहीं है, इस मिथ्या-भ्रम को दूर करने के लिए अब कहते हैं: वह हाथ-पांव रहित है—अपाणि पाद:, हाथ-पाव न होने पर भी वह गतिशील है, बिना हाथों के जोर-से पकड़ लेता है—जवनो ग्रहीता, वह नेत्रो से रहित है परन्तु बिना आंखो को देखता है—पश्यति अचक्षु:, वह कानो से रहित है परन्तु बिना कानो के सुन लेता है—स: शृणोति अकर्ण:। जो-कुछ भी जाना जा सकता है वह उसे जानता है—स: वेत्ति वेद्यं, परन्तु उसे कोई नही जानता—न च तस्य अस्ति वेत्ता, उसी को आदि-महापुरुष कहते हैं—तम् आहु: आद्यम् पुरुषं महान्तम् ॥१९॥

वह अणु से अणु है—अणो. अणीयान्, महान् से महान् है—महत-महीयान्। वह इस जीव की हृदय रूपी गुहा मे निहित है—आत्मा गुहायाम् निहित: अस्य जन्तो:। वह कर्ता नही है, अक्रतु को—तं अक्रतुं, शोक-सागर से पार तर जाने वाला—वीत शोक, देखता है—पश्यति। उस परमात्मदेव की महिमा को सबको धारण करने वाले ईश के प्रसाद से ही प्राप्त किया जा सकता है—धातु: प्रसादात् महिमान ईश ॥२०॥ □

१४ नवम्बर से १४ दिसम्बर १९८० तक

जवाहरलाल जी के ९१ में जन्मदिवस

तथा

[illegible] ट्रस्ट द्वारा संचालित

श्रीमती [illegible] देवी आर्य नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय

सुभाष नगर, नई दिल्ली-२७

की

पांचवीं वर्षगांठ पर

अन्धापन मिटाओ महीना

मनाया जा रहा है। इस अवसर पर

- □ गरीब और बेसहारा रोगियों को बिना मूल्य चश्मे
- □ गरीब नि:सहाय रोगियों के लिये बिना मूल्य दवाइयां
- □ बिना मूल्य नेत्र आप्रेशन

औरतों के हर रोग के लिये आज ही पधारें

निवेदक :

महाशय धर्मपाल — प्रधान

(ला०) गुरुमुखदास ग्रोवर — वरिष्ठ उपप्रधान

ओम्प्रकाश आर्य — मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

और धर्म के कारण कई बार जेल भी गये। गौ हत्या निषेध आन्दोलन मे वे एक महीना जेल में रहे। व्यापार मडल के प्रधान रहते हुए भी वे एक बार डेढ महीने तक जेल में रहे। १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय भी वे दो महीने तक मुलतान जेल मे रहे।

महाशय जी अपने पीछे एक भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके ३ सुपुत्र महाशय धर्मवीर, महाशय धर्मपाल और महाशय सत्यपाल अपने पिता के चरण चिह्नों पर बराबर चलते रहे हैं और चल रहे हैं। पिता की धर्मनिष्ठा और सत्यवादिता इस परिवार मे पूरी तरह समा गई है। महाशय धर्मपाल जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान हैं और दिल्ली के सार्वजनिक जीवन में उनकी प्रतिष्ठा है। अनेकों धार्मिक संस्थाएं और सार्वजनिक संस्थाएं महाशय धर्मपाल जी तथा महाशय परिवारों मे नियमित रूप से सहायता प्राप्त कर रही हैं। ऐसे परिवार के प्रति जहां हमारी सद्भावनाएं हैं वहां भगवान से प्रार्थना है कि वह इस परिवार को पितृवियोग सहने का सामर्थ्य प्रदान करे और उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

(पृष्ठ ५ का शेष)

तस्यावसोऽर्जुन:' है। इसी आधार पर उन्होंने निष्कर्ष दिया है कि "वास्तव में वेदमन्त्रों के ठीक ठीक अर्थों की प्रतीति निरुक्त सम्मत विवेचन के द्वारा ही हो सकती है।"

इस प्रकार स्वामी विद्यानन्द जी ने युक्तियुक्त ढग से वेद-सम्बन्धी सभी विषयों का स्पष्टीकरण दिया है। यह केवल सम्यक् भारतीय दृष्टि ही नहीं, अपितु तर्कसम्मत वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। इसलिए वेदाध्येताओं के लिए यह पुस्तक अवश्य पठनीय है।

कहीं-कहीं यदि सन्दर्भों का अभाव न होता और उदाहरणों के पाठ पूर्ण शुद्ध होते तो पुस्तक की उपादेयता कई गुणा बढ़ जाती। ऊपर उदाहरण में ही एक तो शतपथ ब्राह्मण का सन्दर्भ नहीं है, दूसरे पाठ में 'असावादित्यो तस्या:' अशुद्ध है (असावादित्यस्तस्या.)। अनेक स्थानों पर मुद्रणसम्बन्धी दोषों के लिए मुद्रणालय दोषी है।

निस्सन्देह वेदजगत् अध्यवसायी स्वामी विद्यानन्द के द्वारा उपहार से उपकृत हुआ है और उनसे अनेक ऐसे ग्रन्थरत्नों की आशा करता है। स्वामी जी समाज में स्पष्ट सुलझे विचारों के लिए सुविख्यात हैं। वे विद्वज्जगत् को बहुत कुछ दे सकते हैं।

—डॉ० कृष्णलाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा ... दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ : अंक ८ रविवार १४ दिसम्बर १९८० दयानन्दाब्द १५६

महासम्मेलन की तैयारियों में प्रगति

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष : सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालंकार, वेदसम्मेलन के अध्यक्ष : स्वामी विद्यानंद जी सरस्वती, संस्कृत सम्मेलन के अध्यक्ष : श्री विशुद्धानंद शास्त्री और महिला सम्मेलन की अध्यक्षा : श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित

दिल्ली में आर्य महासम्मेलन की जो तैयारियां हो रही हैं उसके कार्य में निरन्तर प्रगति हो रही है। यह सूचना दी जा चुकी है कि इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल होंगे जो कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान हैं। महाशय जी की आर्य समा के प्रति निष्ठा को ध्यान में रखते हुए तथा आर्य समाज संगठन से उनके लम्बे सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए सर्वसम्मति से उन्हें इस महासम्मेलन का स्वागताध्यक्ष चुना गया है। इस महा सम्मेलन की अध्यक्षता हैदराबाद के आर्य सेनानी श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् कर रहे हैं।

इस अवसर पर अन्य भी महत्वपूर्ण सम्मेलन और गोष्ठियां होंगी उनमें राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, महिला सम्मेलन और आर्य युवक सम्मेलन हैं। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर श्री सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालंकार सुशोभित होंगे। श्री सत्यदेव जी से आर्य जगत् भलीभांति परिचित है क्योंकि लन्दन में आयोजित सार्वभौम आर्य महासम्मेलन के वे अध्यक्ष थे। पूर्वी अफ्रीका नैरोबी में आर्य समाज के प्रचार का उन्हें बहुत बड़ा श्रेय है। [illegible] में आर्य समाज के प्रचार का [illegible] पैमाने पर उन्होंने किया है, इतना बड़ा संगठन अनेक [illegible] भी नहीं कर पायीं। श्री सत्यदेव जी [illegible] और वैदिक [illegible] के मूर्धन्य पंडित हैं। उन्होंने [illegible] आर्य समाज के प्रचा-रक के रूप में किया था। जिस निष्ठा और लगन के कारण वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने में सफल हुए हैं वह उन जैसे यशस्वी व्यक्ति के लिए सम्भव है।

वेद सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द जी के सम्बन्ध में पहले ही घोषणा की जा चुकी है। संस्कृत सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्री होंगे जोकि संस्कृत साहित्य के प्रकांड पंडित हैं। इन दोनों सम्मेलनों के संयोजक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के उपाचार्य डा० कृष्ण लाल हैं। इन दोनों सम्मेलनों में भाग लेने वालों में आचार्य प्रियव्रत जी, पं० शिवकुमार जी शास्त्री, प्रज्ञादेवी जी वाराणसी, श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, डा० हर्षलाल और प्रिंसिपल अग्निहोत्री हैं।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन २७ दिसम्बर को मध्यान्होत्तर काल में होगा। इसका समय १०-३० बजे तक होगा। इसी दिन मध्यान्हपूर्व १०-३० से १२-३० बजे तक वेद सम्मेलन सम्पन्न होगा। संस्कृत सम्मेलन का समय २६ दिसम्बर को मध्यान्हपूर्व १०-३० से १२-३० बजे होगा।

महिला सम्मेलन २६ दिसम्बर को मध्याह्नोत्तर १ से ५ बजे तक होगा। इसकी अध्यक्षा श्रीमती प्रभातशोभा पंडित होंगी। इसमें भाग लेने वालों में श्रीमती [illegible] बहन पू. पू. संसद सदस्य, श्रीमती सावित्री देवी रस्तोगी, मेरठ, [illegible] जी शास्त्री एवं डा० सुषमा आर्य हैं।

आर्य सम्मेलन अथवा खुला अधिवेशन २८ दिसम्बर को मध्याह्नोत्तर १ से ५ बजे तक श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् की अध्यक्षता में होगा। इस सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए विधि मन्त्री श्री शिवशंकर जी से अनुरोध किया गया है और आशा है कि वे इस अनुरोध को स्वीकार कर लेंगे। इस सम्मेलन के प्रमुख वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्रजी, इसी सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पृथ्वीसिंह आजाद और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ होंगे।

इसी २८ तारीख को ही मध्याह्न-पूर्व लगभग ११ बजे आर्य युवा सम्मेलन होगा जिसमें वैदिक परिवार सम्मेलन भी सम्मिलित रहेगा। इसके वक्ताओं में अन्य लोगों के अलावा श्री आर्य नरेश होंगे।

इस सारे सम्मेलन में यज्ञ सम्बन्धी जो व्यवस्था की गई है उसके अन्तर्गत प्रातः ७ से ८-३० बजे और सायं ५ से ६-३० बजे यज्ञ होगा। २८ दिसम्बर को प्रातः पूर्णाहुति होगी। सम्पूर्ण यज्ञ व्यवस्था के ब्रह्मा गुरुकुल कांगड़ी के भू. पू. आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति होंगे। यज्ञ के बाद आचार्य जी का प्रवचन भी हुआ करेगा।

इसके अतिरिक्त २६ और २७ दिसम्बर को रात्रि के समय भजनोपदेशों और उपदेशों की भी व्यवस्था की जा रही है जिसके संबंध में विस्तार से सूचना बाद में दी जायेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन ३० नवम्बर को दयानन्द मठ रोहतक में सम्पन्न हुआ इस अधिवेशन में हरियाणा की आर्य-समाजों के ५५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन में सभा का ५,१०,११५ रुपये का बजट स्वीकार स्वीकार किया गया।

आगामी वर्ष १९८०-८१ के लिए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया जोकि सर्वसम्मति से हुआ। चुनाव के परिणाम इस प्रकार रहे—प्रधान, लाला दलीप सिंह आर्य पानीपत; उपप्रधान—चौ० माडू सिंह भू० पू० शिक्षा मन्त्री हरियाणा, दीवान भीमसेन गुड़गावा, डा० हरिप्रकाश अम्बाला छावनी, मन्त्री महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ, रोहतक; उपमन्त्री : प्रो० सत्यवीर सिंह विद्यालंकार, हिसार, श्री सत्यवीर शास्त्री, गढ़ीबोहर, कोषाध्यक्ष : वेदव्रत शास्त्री, रोहतक, पुस्तकाध्यक्ष : महेश्वरसिंह शास्त्री खानपुरकलां।

निराश होकर जीवन से मत भागो

रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन् गोष्ठेऽस्मिन्लोकेऽस्मिन्क्षये । इहैवस्त मापगात ।। यजु: ३-२१

ऋषि—याज्ञवल्क्य । देवता-गावो विश्वेदेवाश्च ।

शब्दार्थ—हे (रेवती) रयि प्रदान करने वाली शक्तियो तथा वस्तुओ अस्मिन् योनौ) इस योनि में (अस्मिन् (गोष्ठे) इस शरीर में (अस्मिन् लोके) इस लोक मे (अस्मिन् क्षये) इस घर मे —कर्मानुसार जो तुम्हे प्राप्त है—(रमध्वम्) रमण करो और दूसरों को आनन्दित करो । (इह एवस्तम्) इन्ही मे स्थिर तथा स्वस्थ रहो (मा अपगात) इन्हे छोड़ कर दूर मत जाओ और न ही दु खीया निराश होकर मरने की इच्छा करो।

निष्कर्ष—इस मन्त्र का देवता गाव. तथा विश्वेदेवा: है। गौ का अर्थ इन्द्रिय और विश्वेदेवा का अर्थ सब इन्द्रियाँ भी होता है। इसलिए यहा—

१—इन्द्रियो को सम्बोधन करके कहा है कि तुम्हे (क) भू-अन्तरिक्ष-द्यु मे से जो लोक मिलता है । (ख) मनुष्य-पशु-पक्षी आदि मे से जो योनि मिली है। (ग) इन योनियो मे भी जो शरीर (गो+स्थ) मिला है और फिर (घ) अच्छे बुरे, छोटे बड़े जिस घर मे तुम्हें जन्म या स्थान मिला है—उन्ही मे अपनी बिवति मान कर रमण करो और पूर्ण आयु पर्यन्त अपने स्वामी जीव को आनन्द प्रदान करती रहो।

२—इस शरीर मे सन्तुष्ट रहो। अपनी योनि और शरीर के सामर्थ्य की मर्यादा का उल्लंघन करके अति कामना मत करो।

३—गोष्ठ—इन्द्रिय निवास शरीर की सामर्थ्य के अनुसार भोग करो। अमर्यादित होकर सामर्थ्य से अधिक अथवा योनि के प्रतिकूल भोग मत करो।

४—जिस लोक मे तुम्हें जन्म मिला है उसी के उपयुक्त शरीर तथा इन्द्रियां मिली हैं। उसी लोक मे अपना कार्य क्षेत्र चुनोगे तो जल्दी सफलता मिलेगी और अधिक सेवा कर सकोगे। इसलिए दूसरे लोकों मे जाने के व्यर्थ स्वप्न मत लो।

५—कर्मानुसार तुम्हें जो घर प्राप्त हुआ है, उसे बृहत्तर (बेहतर) बनाने का सदा प्रयत्न करते रहो। लेकिन जब तक उसमे रहना पड़े, तब तक सन्तोष पूर्वक रहो।

६—रेवती का अर्थ वानी तथा गौ भी है। गौ भूमि या जन्म भूमि का वाचक भी है। इसलिए यह भी प्रेरणा मिलती है कि अपनी जन्म भाषा तथा जन्म भूमि को सदा बेहतर बनाने का प्रयत्न करते हुए, उनमें सन्तुष्ट रहना चाहिए, अपितु उनमें गौरव अनुभव करना चाहिए। अपनी वाणी को मधुर तथा संयत बना कर सबको आनन्द प्रदान करना चाहिए।

७—किसी रोग, शोक या कष्ट, अनिष्ट के कारण अपने जीवन से असन्तुष्ट या निराश होकर जल्दी मरने की अथवा जन्मभूमि को छोड़ने की इच्छा न करके, उसे बृहत्तर (बेहतर) बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि याज्ञवल्क्य, यज्ञ कर्म का प्रवचन और तदनुकूल आचरण करने वाले यज्ञवल्क का पुत्र या शिष्य है। इसलिए इस ऋषि से प्रेरणा लेकर जो व्यक्ति अपने जीवन को यज्ञ मानकर जीने का प्रयत्न करता है, वह हर स्थिति को अपने कर्मों का फल तथा आगे बढने की सीढ़ी मानता है।

जो आगे बढने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए भी अपनी वर्तमान स्थिति से निराश नहीं होता। उसकी बाधाओं को समझते हुए उनको दूर हटाने का प्रयत्न करता है। अपनी वर्तमान स्थिति से संघर्ष करता है, दूर नही भागता।

जो याज्ञवल्क्य बनेगा, इन्द्रियां, वाणी, मातृभूमि आदि विश्व की सब दिव्य शक्तियां उसकी सहायता करेंगी।

अर्थ—पोषक-प्रमाण-लोक—भू. अन्तरिक्ष. द्यु मुख्य हैं। क्षय—गृह. क्षिनिवासे।

योनि—मनुष्य-पशु-पक्षी-सरीसृप आदि हैं। गोष्ठ—इन्द्रिय स्थान= शरीर।

रेवती—रयि: ऐश्वर्यं अस्यास्तीति सा—रेवती। रयि-भोग्य, प्राण-भोक्ता।

वाणी, गौ (इन्द्रिय-भूमि) दुर्गा, एक ओषधि, एक नक्षत्र पुंज। (आपटे कोश)।

याज्ञवल्क्य—यज्ञं वल्कयति (वल्क परिभाषणे) तस्यापत्यम्।

यज्ञ का प्रवचन तथा तदनुकूल आचरण करने वालों के कुल में उत्पन्न अथवा—शिष्य।

—मनोहर विद्यालंकार

पंजाबी विश्वविद्यालय में वेदमन्दिर की स्थापना

पजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में गीता मन्दिर तथा वेद मन्दिर की स्थापना की गई है। शिलान्यास २४ नवम्बर को महन्त श्री चरणदास जी के करकमलो से हुआ। इस भवन में वैदिक साहित्य पर अनुसन्धान किया जायेगा, इस के लिए आरम्भ मे ३ लाख रुपयो के व्यय का अनुमान है। किन्तु इस कर्म के लिए पर्याप्त धन सग्रह किया जा चुका है। संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री डा० धर्मेन्द्र कुमार गुप्त का इस कार्य मे विशेष परिश्रम रहा।

विदेह स्मृति-सप्ताह

दि० ११ से १६ नवम्बर ८० तक वेद संस्थान राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में विदेह-स्मृति-सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। महात्मा श्री दयानन्द जी (देहरादून) के ब्रह्मत्व मे स्वस्तियाग तथा मार्मिक वेदोपदेश हुए। अन्तिम दिवस पूर्णाहुति समापन- कार्यक्रम के पश्चात् ऋषि लगर (प्रीति भोज) सफलता-पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोहमें बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल, पजाब, हरियाणा, व दिल्ली से पधारे शिविरार्थियों ने भी भाग लिया। मध्याह्न मे आर्या मीरा यति की अध्यक्षता में प्रतिदिन महिला सत्संग भी होता रहा।

कन्या गुरुकुल, हाथरस हीरक जयंती महोत्सव

कन्या गुरुकुल के हीरक जयन्ती महोत्सव की जो ७ से १५ फरवरी १९८१ को होगा, तैयारियां उत्साह-पूर्वक की जा रही है। यह आर्यसमाज का एक महत्वपूर्ण उत्सव होगा, जिसमे देश-देशान्तरो के आर्य बन्धु बड़ी सख्या में सम्मिलित होगे।

इसी अवसर पर प्रदेश की आर्य-कन्या शिक्षा संस्थाओं की छात्राओ की व्यायाम, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की प्रतियोगिताए भी होगी, जिसके सम्बन्ध मे शिक्षा संस्थाओ को अलग से लिखा जा रहा है।

हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में आरम्भ की जाने वाली विविध योजनाओ के लिए धन सग्रह का कार्य भी आरम्भ हो गया है। आर्यसमाजों एवं दानी महानुभावों से अधिक से अधिक दान देने की प्रार्थना है। ५०० रु० से अधिक दान देने वालों के नाम पत्थर पर लिखे जाएगे।

अक्षय कुमारी शास्त्री
मुख्याधिष्ठात्री

सम्पादकीय

दो भाषा, दो कानून, दो राष्ट्र

बिहार के राज्यपाल श्री ए० आर० किदवई ने एक अध्यादेश जारी करके उर्दू को बिहार की दूसरी राजभाषा घोषित कर दिया है। इस प्रकार अब हम बिहार में स्वतन्त्रता से पहले के युग में पहुंच गये हैं जबकि उत्तर प्रदेश, बिहार तथा कुछ अन्य राज्यो से उर्दू दूसरी राज भाषा के रूप मे काम मे लायी जाती थी। एक ही राज्य मे अब बहुसंख्यकों की भाषा हिन्दी हो गई है और अल्पसख्यको की भाषा उर्दू हो गई है। इस प्रकार बिहार राज्य ने एक उदाहरण पेश किया है जिसके अन्तर्गत राज्य की आबादी राज्यपाल की कलम की नोक के एक ही झटके से दो हिस्सों में बँट गई है। एक हिन्दीभाषी और दूसरी उर्दूभाषी।

यह कदम तब उठाया गया जबकि पूरे बिहार राज्य मे जनपदीय भाषाए और बोलियां लम्बे समय से निरन्तर यह आन्दोलन कर रही हैं कि उन्हे भी अपने अपने क्षेत्र की राजभाषा स्वीकार कर लिया जाये। इनमे मुख्य रूप से मैथिली भोजपुरी और मगही हैं। इनके अतिरिक्त वनवासी जातियो ने भी अपने लिए पृथक् भाषा की मांग का आन्दोलन शुरू किया हुआ है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी-भाषी राज्य मे बहुसंख्यक होते हुए भी जनपदीय भाषाओ के मोह के कारण बटे हुए हैं जबकि अपने आपको उर्दूभाषी घोषित करने वाले लोग पूरी तरह से सगठित हैं। विभाजित हिन्दीभाषी और संगठित उर्दूभाषी इस राज्य की राजनीति को किस सीमा तक विभाजित करेंगे, इसके परिणाम शीघ्र ही सामने आ जायेंगे। देश के विभाजन से पहले उर्दूभाषी अपने लिए पृथक् देश की माग किया करते थे और देश के विभाजन के बाद वही उर्दूभाषी अब फिर से इस स्थिति मे आ गये हैं कि वे भाषा के आधार पर एक अलग देश की फिर से दुबारा माग करे।

देश के विभाजन के समय हमारे देश मे उर्दू के लिए कोई स्थान नही रह गया था। उस समय इस देश में उर्दू को फिर से प्राणदान देने के लिए स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू ने वकालत की थी और भारतीय सविधान आठवी अनुसूची मे परिगणित १४ भाषाओ मे से उर्दू को भी स्थान दे दिया गया। उस समय तथा उसके बाद निरन्तर यह प्रचार किया गया कि उर्दू का जन्म इसी देश मे हुआ है इसलिए देश में उर्दू को मान्यता मिलनी चाहिये और उसका व्यवहार होना चाहिये। इसी का परिणाम यह हुआ कि जब कश्मीर ने अपना अलग से सविधान तैयार किया तो उसमे कश्मीरी, डोगरी और लद्दाखी के स्थान पर राज्य की भाषा उर्दू घोषित कर दी गई। परिणाम यह है कि कश्मीर मे कश्मीरी बोलने वाले मुसलमान अपनी भाषा उर्दू बताते हैं और कश्मीरी के स्थान पर उर्दू का व्यवहार करते है। दुःखद यह है कि कश्मीर मे कश्मीरी भाषा उस घुटनशील स्थिति मे आ गई है जहा कि उसे न सास लेने की स्वतन्त्रता है और न अपनी घाटी मे आत्महत्या कर लेने की।

इस सारी भ्रान्ति का मूल यहा पर है कि उर्दू को इस देश मे उत्पन्न हुआ मानकर किसी राज्य और प्रदेश की भाषा न होने हुये भी मान्यता प्रदान कर दी गयी और उसे मुसलमानो के धार्मिक आग्रह के कारण सविधान मे भी स्थान दे दिया गया। पर यह बात भुला दी गयी कि जिन्ना और लियाकतअली, और पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों का जन्म भी इसी देश मे हुआ था। इस देश मे जन्म लेने के आधार पर न तो इन लोगों को इस देश की नागरिकता प्रदान की गई और न किसी अन्य प्रकार की मान्यता प्रदान की गई। यदि उर्दू को दी गयी मान्यता की भांति भारत से जाने वाले सभी मुसलमानों को भी इसी प्रकार की मान्यता प्रदान कर दी जाये तो इस देश की राजनीतिक स्थिति क्या होगी इसके सम्बन्ध में भविष्यवाणी करते हुए भी आज सकोच होता है। फिर भी हमारे देश के राजनीतिज्ञो की जो मनोवृति है उसे देखकर यह सोचने की आवश्यकता हो गई है कि क्या हमारे देश के राजनीतिज्ञ इतिहास के अनुभव से कोई लाभ उठाने को तैयार है या नही।

कांग्रेसी संस्कृति में पले लोग स्वतन्त्रता से पहले निरन्तर यह घोषणा किया करते थे कि इस देश की सस्कृति एक है। इस एक संस्कृति के नारे को सुनकर कितनी प्रसन्नता होती थी, इस सम्बन्ध में किसी उल्लेख की आवश्यकता नही। परन्तु उस समय एक ओर तो कांग्रेसी एक ऐसी मिली-जुली और एक सस्कृति की बात करते थे जिसके सभी भारतीय अग थे दूसरी ओर वे मुसलमानो, मुस्लिम लीग तथा मुसलमानो मे पृथकतावादी आन्दोलन के बीज बोने वाले वर्गो को सन्तुष्ट करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे। इस तुष्टीकरण की नीति का जो परिणाम निकला वह यह था कि इस देश के मुसलमान निरन्तर देश की राष्ट्रीयता और संस्कृति से दूर हटते चले गये और प्रत्येक भारतीय वस्तु के प्रति विद्रोह करने लगे। इसलिए जब आर्थिक आधार पर मुसलमानो को आकृष्ट करने की सजीवनी बूटी लेकर स्व० श्री नेहरू मुस्लिम जनसाधारण से जन सम्पर्क करने के लिए निकले तो यह सजीवनी बूटी हमारे देश के लिए विष बूटी बन गई। मुसलमान अधिक से अधिक मुस्लिम लीग मे शामिल होने लगे और मुसलमानो के जो वर्ग तटस्थ भी थे वे भी मुस्लिम लीग के साथ कधा भिड़ाकर खड़े हो गये और तब उन्ही लोगो ने देश का विभाजन स्वीकार कर लिया जो यह कहते थे कि पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा।

विभाजन की इस स्वीकृति ने उस मिली जुली भारतीय सस्कृति की धारणा को एक दम समाप्त कर दिया, पर पिछले ३३ वर्षों मे घटनाचक्र घूमकर पुन उसी मिली जुली भारतीय सस्कृति वाले बिन्दु पर आ पहुचा है। इसी मिली जुली सस्कृति के अन्तर्गत उत्तर भारत के लोगो की दो भाषाए घोषित कर दी गयी हैं। एक ही मुहल्ले और एक ही दीवार से जुड़े दो मकानो मे रहने वाले लोगों को दो प्रकार की भाषाएं बोलने वाले मान लिया गया है। बीच मे केवल एक दीवार होने के कारण एक व्यक्ति जो हिन्दीभाषी है और उस पर हिन्दू विवाह अधिनियम और हिन्दू उत्तराधिकारी अधिनियम लागू होता है, जबकि दीवार के दूसरी ओर रहने वाले व्यक्ति की भाषा उर्दू है और उस पर मुस्लिम व्यक्तिगत कानून लागू होता है। एक ही मुहल्ले मे रहने वाला एक ही व्यक्ति केवल एक ही विवाह कर सकता है जबकि उसका पड़ोसी चार विवाह तक कर सकता है। एक व्यक्ति उसी मुहल्ले मे रहता हुआ 'भारत माता की जय' के नारे लगाता है तो दूसरा व्यक्ति अवसर पाते ही 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाता है। वस्तुतः ये नारे हमे विभाजन से पूर्व की याद दिलाते हैं कि यह देश एक नही दो राष्ट्र है, और ये दोनो राष्ट्र कब एक दूसरे के विरुद्ध उठ खडे होंगे —इसे कोई नही जानता।

परन्तु इसका भी कभी कभी प्रदर्शन होता रहता है। यही प्रदर्शन अभी कुछ दिन पहले मुरादाबाद मे हुआ। उसके परिणाम स्वरूप अपनी पृथक् राष्ट्रीयता मानने वाले लोगो को ही हानि नही उठानी पड़ी बल्कि इस देश की मिट्टी से प्यार करने वाले लोगो को भी बड़े पैमाने पर जन धन की क्षति उठानी पडी।

हम अपने राजनीतिज्ञो का ध्यान इस ओर खींचना चाहेंगे कि इस देश के लोगो ने एकता का स्वप्न देखा था और इस देश के लोगो ने बड़े-बड़े बलिदान किये थे। देश के विभाजन के साथ स्वप्नभंग हो गये, बलिदान व्यर्थ हो गये, हम हार गये। यह हमारा दुर्भाग्य है कि जिस राष्ट्रीय एकता और अखड भारतीय सस्कृति के लिए महर्षि दयानन्द से लेकर बाद के नेताओं ने सघर्ष किया वह बाद के अदूरदर्शी नेतृत्व के कारण असफल रहा। यदि हमारे राजनीतिज्ञ स्वतन्त्रता पूर्व के सारे इतिहास पर विचार करते हुए सारी स्थिति पर पुनर्विचार करें और पुराने अनुभवो से लाभ उठाये तो उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के ३३ वर्षो मे अपनायी गई नीतियो पर फिर से विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होगी। यह सही है कि इन नीतियो पर पुनर्विचार करते समय उन्हे मुस्लिम और ईसाई वोट बैंको का मोह छोडना होगा। जिससे देश की अखडता की रक्षा के लिए पिछले ३३ वर्षों के अनुभवो के आधार नई नीतियाँ तैयार की जा सकें।

नई नीतियों का निर्धारण करते समय उन्हें इस बात का ध्यान रखना होगा कि धर्म निरपेक्षता का सिद्धान्त केवल बहुमत के लिए नही है बल्कि वह सिद्धान्त देश के सभी वर्गों के लिए है। धर्म निरपेक्षता बहुमत के गले मे चक्की के पाट की भांति न लटकता रहे, बल्कि इसका बोझ भूमि पर समान रूप से पड़ना चाहिए। इस समय मुसलमान घोषणापूर्वक और ईसाई अपने पूरे व्यवहार मे धर्म निरपेक्षता को स्वीकार नही करते। यदि हमारे राजनीतिज्ञ इन दो मुख्य सम्प्रदायो को धर्म निरपेक्षता का सिद्धात स्वीकार करा सके तो इस देश मे उसकी कुछ उपयोगिता हो सकती है।

इस सिद्धात को बिल्कुल अस्वीकार कर दिया जाना चाहिये कि एक ही क्षेत्र में रहने वाले लोगो की दो अलग-अलग भाषाएं हैं। दो भाषाओं के सिद्धांतो ने हमारे समाज में बीज बोये हैं उन्हें भारतीय इतिहास से परिचित व्यक्ति भुला नही सकता।

इस प्रकार प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए अलग-अलग कानूनो की व्यवस्था देश की एकता के मूलाधार पर ही प्रहार है। यह एक आश्चर्य की बात है कि देश के दो नागरिकों के लिए दो प्रकार के कानून हो।

यदि हम इन परिस्थितियो मे परिवर्तन नहीं कर सके और इसी प्रकार से धीमे-धीमे देश के नागरिको को अलग-अलग खेमो मे बाँटकर अलग-अलग व्यवस्थाएं करते रहे तो वह दिन दूर नही जबकि दो राष्ट्र का सिद्धात फिर से उठ खडा होगा और उस स्थिति मे इस देश के टुकड़े-टुकड़े होने मे कोई शक्ति नही बचा सकती।

और किसका आश्रय लूँ ?

ओइम् न ह्यं ग नृतो त्वदन्यं विन्दामि राधसे । राये द्युम्नाय शवसे च निर्वणे । ऋ० ८/२४/१२

(अंग) हे प्रिय (नृत) नचाने वाले ! (राधसे) साधना सिद्धि व सफलता के लिए (त्वद्) तुझसे (अन्य) अन्य किसी को (न हि) नहीं (विदामि) पाता हूं (निर्वण:) हे वाणी से सभजनीय (राये) धन के लिए (द्युम्नाय) तेज के लिए (च) और (शवसे) बल के लिए मैं और किसी को नहीं पाता !

आश्रय किसका लिया जा सकता है ? जो अपने से बड़ा और शक्तिशाली हो। शक्ति और बल के विषयों में विचार करते हैं तो प्रभु से बड़ा और महान् हमें कोई नहीं दिखाई देता। कभी कभी मनुष्य अभिमान या अवमान की अवस्था से ग्रस्त होकर मार्गभ्रष्ट हो जाता है। इन दोनों अवस्थाओं से बचने का एक मात्र तरीका है प्रभु के दोनों विराट रूप का दर्शन। यह वह रूप है जहा पहुंच कर मनुष्य के सब दुखों, कष्टों कामनाओं का अन्त हो जाता है। बूंद से पूछिए वह किसको खोज रही है ? वह कहेगी समुद्र को। दीपक की लौ किसकी तलाश में है ? वह सूर्य को खोज रही है जो ज्योतियों की ज्योति है—स्रोत है। मन से पूछो तू किसकी खोज में भटक रहा है तो वह कहेगा—उस लक्ष्य को पाने के लिए जहां पहुंचकर यात्रा की थकान मिट जाती है, जहां पहुंचकर आगे चलने की चाह नहीं रहती। वह कौन है ? वह सबको नचाने वाला वह एकमात्र प्रभु है। छान्दोग्योपनिषद् का ऋषि कहता :—"यो वै भूमा तत्सुखम् नाल्पे सुखमस्ति 'जो महान है, फैला हुआ है, व्यापक है, उसी में सुख है अल्प सुख नहीं। महान में ही सुख है। इसलिए उसी महान प्रभु का आश्रय लो। वह प्रभु 'रसो वै स: रसो का रस है।

लेखक :
सुरेशचन्द्र वेदालंकार

इसलिए अनन्त आनन्द के लिए उसी की शरण जाना होगा। इस प्रभु की सत्ता को समझना हो तो देखो-नजर उठाकर इस विशाल विश्व को देखो, जिसके हर पत्ते की रचना को समझने में, मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान, जिसका उसे अभिमान है असमर्थ है। उस प्रभु के नियम अटूट और अविचल है, जिनकी व्यवस्था अचम्भे में डालती है, जिसका न्याय अक्षुण्ण और अपूर्व है, सम्पूर्ण विषयों के भण्डार वेद जिसके निःश्वास मात्र हैं अनन्तकाल से संसार में प्रकाश-प्रसार करने वाले सूर्य और चांद जिसकी लीला के निमेष मात्र है, ऊंची लहरो में उमड़ता समुद्र जिसकी आज्ञा से सीमा न छोड़ने को विवश हैं और जिसके हुकुम को बजाने के लिए हजारों आत्माएं हर समय हाथ जोड़कर खड़ी हैं। यही प्रभु जब प्रलय का महातांडव करता हैं, धरती कांप उठती हैं आसमान में चमकने वाले चन्द्र सूर्य और सितारे टूट पड़ते हैं, ऊंचे खड़े पहाड़ों के कण-कण चकनाचूर हो जाते हैं, विशाल समुद्र की बूंद-बूंद सूखकर आसमान मे विलीन हो जाती हैं। इस विशाल विश्व के सचालक प्रभु की कृपा से हमें ऐश्वर्य मिलता है, धन मिलता हैं, तेज मिलता है, बल मिलता हैं तब मैं दूसरी जगह क्यों भटकूं ? इस 'अणोरणीयान् महतो महीयात्' अणु से अणु और महान् से महान् प्रभु के रूप का जो दर्शन कर लेता हैं तब वह उसे छोड़कर कही और नहीं जाना चाहता। एक कवि ने प्रभु की विशालता का उल्लेख करते हुए कहा है :—

किसका था भ्रूभंग प्रलय सा
जिसमें ये सब विकल रहे।
अरे प्रकृति के शोभा चिन्ह ये
फिर भी कितने निबल रहे।
विकल हुआ सा कांप रहा था
सकल भूत चेतन समुदाय
उनकी करनी बुरी दशा थी
वे थे विवश और निरुपाय

सृष्टिकर्ता के लिए कुछ भी असंभव नहीं वह नीचे पड़े हुओं को उठाता है। डूबतो को बचाता है। पतित से पतित का उद्धार कर सकता है। उसकी एक वर्षा से सूखे और मुरझाए हुए घास पत्ती और पेड़-पौधे फिर से लहलहा उठते हैं। इसलिए हमें विश्वकर्ता की शरण के सिवाय और किसी का भरोसा नहीं। बिगड़े जीवन को वह बना देगा, सब तुच्छता को मिटा देगा, हमें महान बना देगा।

अत: यदि हम अपने को सुखी बनाना चाहते है तो हमें उस सुख सागर के पास जाना चाहिए। सिकन्दर, सीजर हिटलर, मुसोलिनी, हिन्दी अमीन सबने उसकी शक्ति को नहीं पहचाना, अपने को सब कुछ समझा पर कोई जीतेजी और कोई मरकर अपनी स्थिति में नहीं बचे-चले गये। अत: हे प्रभु अब मैं तुम्हारी शरण से आया हूं, तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जो मुझे सफलता और सिद्धि दिला सके। मुझे धन तेज बल जो भी कुछ मिलता है, वह सब तेरा है, तेरी कृपा का पुल ही है। अत: मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ, भव सागर से पार करो।

छोड़कर नर नगर जाऊं कहां ?
तुम सा वरदाता भूला पाऊं यहां ?
शक्ति दो, धन दो प्रभो, बल दो मुझे
पूर्ण कर सब कामना फल दो मुझे।
गा रही सब वाणियां तुमको यहां
भेंट मैं अन्यत्र पहुंचाऊं कहां ?

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय : मालवीय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का भाषण।

छात्रसंघ काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के तत्वावधान मे मालवीय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का भाषण १६ नवम्बर १९८० को मालवीय भवन मे आयोजित किया गया। किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री का प्रथम बार मानक भाषण आयोजित किया गया। श्री त्यागी जी ने महामना मालवीय जी की चिन्तन-धारा एवं हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों की विशद व्याख्या की। आपने बताया कि भारत को खंडित करने के लिए इस समय तीन प्रकार के षड्यन्त्र कार्यरत हैं। साम्प्रदायी शक्तियां जो पहले दक्षिण भारत मे अलगाव पैदा करना चाहती थी, अब उत्तरी सीमा पर आक्रमण कर रही हैं। विदेशी एजेन्ट नागालैंड तथा अन्य पूर्वोत्तर प्रान्तों और आदिवासी क्षेत्रो मे अराष्ट्रीय मनोवृति उत्पन्न कर रही है। धर्म के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सगठन बनाकर इस्लामी देश कश्मीर तथा अन्य विभिन्न स्थानों पर अशान्ति उत्पन्न कर रहे हैं। और पाकिस्तान को शस्त्र भेज रहे हैं। इन खतरो से निपटने के लिए राष्ट्रवादी शक्तियो को सशक्त बनना चाहिए। श्री त्यागी जी ने विद्यार्थियो का आह्वान किया कि वे दहेज प्रथा को समाप्त करने, जातीय भेद-भाव मिटाने और गरीबो की सेवा करने का व्रत लें, सभा के अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिक डा० रामलोचन सिंह जी ने अपने भाषण में विद्यार्थियो से अपील की कि वे अपने जीवन को उन्नत बनायें और इस विश्वविद्यालय में मालवीय जी के आदर्शों का प्रचार करें। अफ्रीका से पधारी हुई श्रीमती विद्यावती ने अपने देश में बसे भारतीयों के जन-जीवन का परिचय दिया। प्रारम्भ मे डा० आनन्द प्रकाश ने सभा-मन्त्री का परिचय देते हुए यह बताया कि वे ऐसे गिने-चुने व्यक्तियो मे से एक है जिन्होंने सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक सभी क्षेत्रो मे उल्लेखनीय कार्य किया और देश-विदेश में व्यापक भ्रमण कर भारतीय संस्कृति के सशक्त प्रवक्ता के रूप अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। छात्रसघ के उपाध्यक्ष श्री गोपाल रेड्डी ने छात्रों की ओर से एव डा० रणधीर सिंह ने अध्यापको की ओर से मान्य वक्ता को धन्यवाद दिया। □

अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष

महिला जागृति में आर्यसमाज का योगदान

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने महिला वर्ष की प्रगति और नारी जागरण के लिये जो कार्य किया है, अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष मे उस पर एक विहगम दृष्टि डालना उपयुक्त होगा। स्वामी दयानन्द:सरस्वती और आर्यसमाज ने यह कार्य दो रूप में किया : (क) सैद्धान्तिक रूप में (ख) रचनात्मक रूप में।

सैद्धान्तिक रूप मे देव दयानन्द भारत की समृद्ध आचार्य-परम्परा में सर्वाधिक उदार थे। नारी जाति के प्रति उनके हृदय में अपार स्नेह, ममता, निष्ठा तथा श्रद्धा की भावना थी। गांधीवादी भारत ने दयानन्द के भारत का विकास तथा परिष्कार किया था। नारी जागरण में गांधी जी का योगदान महर्षि के पश्चात् आता है। इसीलिए कांग्रेस के इतिहासकार डॉ॰ पट्टाभि-सीतारमैया ने यदि गांधीजी को 'राष्ट्र-पिता' कहा तो दयानन्द को 'राष्ट्रपिता-मह'। महात्मागांधी ने लिखा था कि "ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात् जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का श्रेय महर्षि दयानन्द और उनके आर्य-समाज को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द तथा उनके आर्यसमाज ने प्रजा में नव-चेतना पैदा की है। हिन्दू समाज की अनेक कुरीतियो को दूर करने का प्रयत्न किया है, राष्ट्रीय शिक्षण, स्त्री शिक्षण तथा दलितोद्धार आदि न भुलाई जा सकने जैसी राष्ट्र की महान सेवा की है। मुझे आर्यसमाज बहुत ही प्रिय है।"

एक बार दयानन्द ने एक मन्दिर के चबूतरे पर खेलती हुई छ: वर्षीया बालिका के समक्ष अपना मस्तक झुका लिया था। लोगो ने इसे उन पर प्रतिमा की शक्ति का प्रभाव माना, परन्तु उन्होंने उत्तर दिया था :—मैंने अपना माथा मूर्ति को नहीं झुकाया, अपितु इस छोटी-सी बालिका को झुकाया है। मैं इसका अभिवादन कर रहा हू।

स्वामीजी चाहते थे कि भारतीय नारियां सुशिक्षित-सुसंस्कृता होकर गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियों के समान महिमामंडिता बनें। नारी-उत्थान, नारी-शिक्षा तथा नारी-स्वातन्त्र्य की दिशा मे स्वामीजी के विचार प्रगतिशील थे। इस क्षेत्र में आर्यसमाज अपने युग से काफी आगे था।

उन्नीसवीं शताब्दी में, नारीजाति असंस्कार, अशिक्षा, परदा प्रथा, रूढ़ियो तथा अन्धकार से परिपूर्ण थी। न उसका कोई सम्मान था और न कोई प्रतिष्ठा। वह अत्यन्त उपेक्षिता, विस्मृता, त्यक्ता पद-दलिता, संत्रस्ता तथा दुखी थी। उसे नारकीय यातनाएं सहन करनी पडती थीं। उसे घोर परदा प्रथा में जकड़ दिया गया था। ऐसे परिवेश मे स्वामीजी शलाका पुरुष सिद्ध हुए।

स्वामीजी ही प्रथम आचार्य थे जिन्होंने यह उद्घोष किया कि नारी को वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है। उनसे पूर्व समस्त आचार्यों ने स्त्रियों तथा शूद्रों को वेदाध्ययन से सर्वथा वंचित कर दिया था। इस क्षेत्र में स्वामी जी ने क्राति का बिगुल बजाया और विद्रोह का मार्ग प्रशस्त किया। स्त्री जाति के प्रति पूर्व आचार्यों के संकुचित-सकीर्ण तथा कलु-षित विचारों की कारा के विध्वस का श्रेय आर्यसमाज को है।

स्वामी जी के युग में इस्लाम धर्म तथा ईसाई मत का जो प्रवाह चल रहा था उसमें भी स्त्रियों को स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्राप्त नहीं था। इस्लाम के मतानुसार स्त्रियों में कोई रुह नहीं होती ईसाई विचारधारा भी उनके साथ पुरुष के चाहे जैसे व्यवहार का समर्थन करती है।

लेखक :
डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे

वेदों की व्याख्या में स्वामी जी ने क्रातिकारी परिवर्तन करते हुए आचार्यो की परम्परा से अलग हटकर, स्त्रियों के मामले में अनुकूल, विश्वसनीय और निष्ठामयी उपपत्तियां प्रस्तुत की और अनुदार अभिमतो का जबर्दस्त खडन किया। स्वामी जी ने ग्रन्थ लेखन, व्याख्यान, भाषण, प्रवचन शास्त्रार्थ तथा अपनी टिप्पणियो के द्वारा नारी-जाति के सम्मान तथा अभ्युत्थान मे अपना संपूर्ण योगदान दिया। इस दिशा मे उनका 'सत्यार्थप्रकाश' दीपस्तम्भ का कार्य करता है। जगद्गुरु आचार्य शकराचार्य ने 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' में वेदो के पठन-पाठन से स्त्रियो एव शूद्रो को सर्वथा वंचित कर दिया था।

सुविख्यात वेद भाष्यकार सायणा-चार्य भी वेदाध्ययन का अधिकार स्त्रियो को नही देते। इस बात को उन्होने अपने ग्रथ 'ऋग्वेद सहिता भाष्य' मे स्पष्ट किया है। इस परम्परा के रहते हुए भी वैदिक धर्म के परम उद्धारक महर्षि दयानन्द ने अपने हृदय की विशालता, सहिष्णुता तथा उदारता का भव्य परिचय दिया। वे 'ऋग्वेदादिभाष्य' की भूमिका में सबको वेद शास्त्रों के पढ़ने का अधिकार प्रदान करते है। आर्य-समाज अपने पूर्व तथा युग के नारी अत्याचार को सहन नहीं कर सका। उसने सिंह गर्जना करते हुए घोषित किया कि नारी नर की अर्धांगिनी है। गृहस्थ के आधे अंग को पुरुष बनाता है तो आधा अग नारी के द्वारा निर्मित होती है। उसका उद्बोध वेदों के आधार पर यह है—

ब्रह्मचर्येण कन्यायुवानं विन्दते-पतिम्।

अर्थात् जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशीलता को प्राप्त होकर युवती विदुषी तथा अपने अनुकूल नारियो के साथ विवाह करते हैं; वैसे ही कन्या भी ब्रह्मचर्य से वेदादि को पढ़कर युवा-अवस्था में अपने सहाय युवक-पुरुष को प्राप्त हो।

आर्यसमाज ने शुरू से ही नारियों को शुद्ध, पुनीत तथा यज्ञाधिकारिणी के रूप में स्वीकार किया—

शुद्धा: पूता योषितो यज्ञियो इमाः।

आर्यसमाज नारियों को गृह-संर-क्षिका मानता है—

एभा ते कुलया राजन। तामुते परि-दक्षसि।

उसकी मातृभूमि से यह विनती है कि कन्याओ मे जो तेज होता है वह हमें प्रदान करा कन्यायां यद् भूमे। तेनास्मा अपि समृज।

आर्यसमाज महिलाओ को कल्याण-कारिणी तथा उद्देश्य-सहयोगी के रूप से स्वीकार करता हैं—सुमंगली प्रतरणी गृहाणाय।।

आज आर्यसमाज के सत्यप्रयासो तथा निरन्तर क्रियाशीलता के कारण ही समाज में नारियो को यथेष्ठ सम्मान तथा गौरवमय स्थान मिला है। उसने यह प्रमागित कर दिया कि 'माता निर्माता भवति।'

'सत्यार्थ प्रकाश' तृतीय समुल्लास में उन्होने नारी जाति के अनेक तात्त्विक तथा व्यावहारिक प्रकरणों पर गंभीरता तथा सहानुभूति पूर्वक विचार किया है। उन्होने स्त्रियो के प्रति उच्चाभाव तथा सद्भाव प्रकट किए है। उन्होने वेदो मे कन्याओं को पढ़ने-पढाने के प्रभाव ढूढ़े और स्पष्टोक्ति की जो स्त्रियो के पढने का निषेध करते है, वे अपनी मुर्खता, स्वार्थ तथा निर्बुद्धिता का परिचय देते हैं। स्त्रियों को ब्रह्मचर्य तथा विद्या ग्रहण करना चाहिए। उनका स्पष्ट अभिमत का था कि स्त्री के लिए पति और पति के लिए पत्नी पूजनीय है। उन्होंने शतपथ ब्राह्मण (का॰ १४) से भी उद्धृत करके स्पष्ट किया है कि प्राचीन भारत मे भ्रमण रूप गार्गी= आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ के पूर्व विदुषी हुई थी। वे पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी तथा स्त्री विदुषि और पुरुष अविद्वान के पग मे नही थे। ऐसी में तो नित्य प्रति घर मे देवासुर संग्राम मचा रहता है। उन्होने दृष्टात से पुष्टि की है कि आर्य्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी क्योंकि जो न जानती होती कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यो कर जा सकती? उनके मतानुसार स्त्रियों को व्याकरण, धर्म वैद्यक गणित शिल्प विद्या आदि अवश्य सीखनी चाहिए। उन्होने चतुर्थ समुल्लास में बताया है कि लडकी की शादी दूर करनी चाहिए। उत्तम कुल के लड़के और लड़कियों का आपस में विवाह होना चाहिए। उन्होंने लड़की की शादी की आदर्श उम्र सोलहवें वर्ष से लेकर चौबीसवे वर्ष तक की मानी है। स्वामी जी की विचार धारा में इतनी आधुनिकता थी कि वे विवाह माता-पिता की सम्मति से नहीं अपितु, लड़के-लडकी की सम्मति से करने के पक्ष मे थे।

स्वामी जी तथा आर्यसमाज बहु-विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाह अन-मेल विवाह, सती प्रथा, परदा पथा आदि के परम विरोधी रहे हैं। वे विधवा विवाह के परम पक्षधर थे। इन समस्त सामाजिक समस्याओ का सम्बन्ध नारी जगत् से रहा है।

इस प्रकार आर्यसमाज ने नारी को परदे तथा घर की दोहरी से बाहर निकालकर, स्वच्छ, निर्मल तथा स्वस्थ परिवेश में ससम्मान सस्थित किया। उसने समाज सुधार के अपने रचनात्मक कार्यक्रमों के अन्तर्गत नारी कल्याग को सर्व प्राथमिकता दी। आर्यसमाज ने स्त्री-शिक्षा के साथ ही साथ सार्वजनिक समारोहो में स्त्रियो की उपस्थिति के प्रति विशेषाग्रह किया। आर्यसमाज ने नारी जाति के कोढ दहेज प्रथा के विरोध मे आन्दोलन चलाया। स्वामी जी ने नारियो की स्वाधीनता, स्वाभिमान, शालीनता, मर्यादा, मुक्ति, सुरक्षा तथा जागरण की दुदुभि-बजायी और इस प्रकार भारतीय सस्कृति के उज्जवलतम पक्ष को प्रस्तुत किया। उन्होने महिला जगत् को नव जीवन, नव चेतना, नई नव स्फूर्ति तथा नई दिशा प्रदान की।

रचनात्मक कार्यो मे आर्यसमाज ने सर्वप्रथम नारी-शिक्षा की सुविन्यस्त व्यवस्था की। महर्षि के स्वर्गवास (सन् १८८३) के सिर्फ तीन वर्ष (सन् १८८६) बाद ही, देश मे जालधर मे सर्वप्रथम कन्या महाविद्यालय स्थापित हुआ।

पहले की अपेक्षा बाल विवाह और वृद्ध विवाह मे काफी कमी आ गई है। विधवा विवाह और अन्तर्जातीय विवाह बढ गए हैं। अंग्रेजो के शासनकाल में केन्द्रीय विधान परिषदो मे हरविलास शारदा और चौधरी मुख्यारसिंह ने बाल विवाह पर प्रतिबंध लगाने और अन्तर्जातीय अथवा अन्तर्धर्मीय हिन्दू शादी को वैध-घोषित करने सम्बन्धी दो कानून बनवाये। ये कानून 'शारद' 'एक्ट' तथा आर्य मैरिज ऐक्ट' कहलाते है। श्री दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्य सम्मेलन के अधिवेशन में स्वामी श्रद्धानन्द ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था—

यह आर्य सम्मेलन निश्चय करता हैं कि शीघ्र ही लेजिस्लैटिव असेम्बली मे आर्य-विवाह बिल को उपस्थित कराया जाये ताकि अर्यसमाज के प्रचार मे जो बाधाए उपस्थित होती हैं; उनका निवारण हो सके और आर्य जनता में गुण कर्म और स्वभावानुसार विवाह आदि सस्कारों का प्रचार हो सके।

सन् १९३७ में जो बिल पारित हुआ। उसका मुख्य भाग यह है—

"चाहे हिन्दू कानून प्रथा अथवा रिवाज कुछ हीं हो आर्य समाजी पुरुष और स्त्री का कोई विवाह जो इस कानून के बनने से पूर्व अथवा पीछे आर्य समाज की विधि से सम्पन्न हुआ हो, फिर चाहे वह पुरुष और स्त्री भिन्न-भिन्न जातियो के हो या विवाह से पहले वह किसी अहिंदू धर्म को मानने हो, नियम विरुद्ध नहीं माना जायेगा।

गढवाल जिले में हरिजन कन्याए विवाहोपरान्त पालकी में बैठकर नही जा सकती थी क्योकि सवर्णो ने उनका विरोध किया था। आर्यसमाज-सेवको ने उनकी पालकियां उठायी, लाला लाजपत राय ने उनको जनेऊ दिया और इस प्रकार समस्या का समाधान किया गया।

आर्यसमाज ने लडको को शिक्षा की अपेक्षा कन्याओं की शिक्षा पर अधिक बल दिया था। इससे पूर्व शिक्षा का प्रसार ईसाईयो द्वारा होता था। इसलिए आर्य समाजियों को ईसाईयों के एजेन्ट होने का लांछन भुगतना पडा। आर्यसमाजियों ने कन्या-शिक्षा का प्रसार करके ईसाईयों को मुंहतोड जवाब दिया था।

सैद्धान्तिक और रचनात्मक मोर्चे के बाद आर्यसमाज ने संगठनात्मक धरातल पर भी नारी समाज के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। स्वामी जी मातृक निर्माण हेतु नारी को 'मतृमान् पितृ-'मानाचार्यवान् पुरुषोवेद,' की उक्ति के आधार पर सर्वोपरि गरिमा प्रदान करते थे। बम्बई में सन् १९१४ में आर्य स्त्री समाज की स्थापना की गई जिसमें साठ-सत्तर-नारियां सम्मिलित होती थीं। उनका प्रत्येक कार्य मे महत्वपूर्ण योगदान रहा करता था। सन् १९४७ में बम्बई में आर्य समाज अनाथाश्रम, आर्य हिन्दू शिशुगृह तथा आर्य बालाश्रम की स्थापना की गई थी। इनमे हिन्दू महिला को तथा बच्चों को सरक्षण प्रदान किया। इस समय आर्यसमाज की लगभग पाँच सौ महिला ममाएं हैं।

महिला शिक्षण सस्थाओं में आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय कनखल, आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्यसमाण, भूड, आर्य कन्या महाविद्यालय हापुड आदि विशेष उल्लेखनीय है।

आर्य महिलाओ मे श्रीमती दमयन्ती श्रीमती लक्ष्मी देवी, श्रीमती मीठीबाई, श्रीमती वेलुबाई दामजी, ईश्वरदेवी प्रभाकर, रुक्मिणीदेवी सोरोत, सुमित्रा देवी अमीन, सुशीला पण्डित जी, चन्द्रावती जी, कमल सिंघवी, प्रमिला बहेन मणिलाल शाह, यशोदाबेन पटेल, नर्मदाबेन वी० जेठवा, वीरादेवी जी, सुमित्राजी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। आर्यसमाज के अन्तर्गत आर्य वीरांगना दल भी है। श्रीमती शिवराजवती के आर्यसमाज सम्बन्धी गीतों को रिकार्ड का रूप प्राप्त हो चुका है।

आर्यसमाज का प्रदेय तथा महान उपलब्धि स्त्री-शिक्षा है जिस पर आज समूचे भारत को गर्व है। उसी का ही यह सुफल मिला कि गांधी जी द्वारा प्रवर्तित राष्ट्रीय आन्दोलन में नारियो ने पुरुषों के साथ-साथ कंधे से कन्धा मिलाकर कार्य किया और प्राणोत्सर्ग किये।

'आर्य समाज' ने भारत मे 'मनुस्मृति' के इस श्लोक को चरितार्थ कर दिया कि जिस गृह में स्त्रियों का सत्कार होता है, उसमें देवता रमण करते है—

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया:।।

आर्यसमाज के उत्सव और विशेष कार्यक्रम

पिछले सप्ताह आर्यसमाज माडल टाउन और आर्यसमाज कीर्ति नगर ने अपने वार्षिकोत्सवों का आयोजन किया। आर्यसमाज माडल टाउन ने ३० नवम्बर रविवार को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमे श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे एक सम्मेलन हुआ। स्वामी जी के ओजस्वी भाषण का यह प्रभाव हुआ कि दिल्ली विश्वविद्यालय मे सस्कृत मे वेद विषय लेकर पढ़ने वाले, छात्रो के लिए छात्रवृतियो की घोषणाए की गई। इस अवसर पर स्वामी जी महाराज ने यह भी बताया कि एम. ए. के पाठ्यक्रम मे जो वैदिक मन्त्र पढाये जाते हैं उनका भाष्य महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य के आधार पर तैयार कर लिया गया है जिसके प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है। यह भाष्य आर्यसमाज के जाने-माने विद्वान और दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के उपाचार्य डा. कृष्णलाल ने तैयार किया है। स्वामी जी की इन घोषणाओ का सम्मेलन मे हर्षध्वनि के साथ स्वागत किया गया।

सभा के मन्त्री श्री विद्या सागर विद्यालकार ने यहा स्वामी जी को उनके वेद सम्बन्धी कार्यो के लिए बधाई दी, साथ ही उन्होने देश की वर्तमान ज्वलत समस्याओ की ओर भी श्रोताओ का ध्यान खींचा। जिनके कारण आर्यसमाज को तथा देश को कठिनाइयो का सामना करना पड रहा है।

इस अवसर पर सभा की ओर से श्री प्रकाशवीर व्याकुल भी उपस्थित थे और उनके भजनोपदेशो का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। श्री व्याकुल पिछले एक सप्ताह से निरन्तर समाज मे भजनोपदेश कर रहे थे।

इस कार्यक्रम में बच्चों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। बच्चो के कार्यक्रम की सराहना तो हुई, इसके साथ ही आर्यसमाज मे बच्चो की रूचि को जागृत करने मे भी सहायता मिली।

आर्यसमाज कीर्ति नगर का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से ३० नवम्बर तक मनाया गया। प्रारम्भिक तीन दिन दैनिक यज्ञ, वेद कथा, प्रवचन और भजनों तक सीमित रहे। २८ नवम्बर को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के निरीक्षण मे बड़ा यज्ञ हुआ और उन्होंने ध्वजारोहण भी किया। इसी दिन शाम को महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे सगीत सम्मेलन हुआ। २९ तारीख मे महिला सम्मेलन हुआ जिसमे श्रीमती प्रेमशीला जी की अध्यक्षता मे वेद सर्वोत्तम क्यों है ? विषय पर भाषण हुए। इसी दिन रात्रि को एक कवि सम्मेलन हुआ। ३० नवम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और दोपहर बाद वेद-सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी जगदीश्वरानंद जी ने की। वक्ताओ मे भूतपूर्व संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री, महेन्द्र विद्यालकार, स्वामी मुनीश्वरानंद जी, आनन्दवेश जी और श्री वेदप्रकाश शास्त्री थे।

आर्यसमाजों के सत्संग

१४-१२-८०

अन्धा मुगल, प्रताप बाग—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, अमर कालोनी—पं० विष्णु देव प्रसाद विद्यालंकार, आर्यपुरा—पं० विश्व प्रकाश शास्त्री, आनन्द विहार—डा० रघुनन्दन सिंह, इन्द्रपुरी—पं० विजयपाल शास्त्री; किदवई नगर—पं० तुलसी राम भजनोपदेशक; कालकाजी—प० देवेश, करोलबाग—प० मुनि शंकर वान प्रस्थी; कोटला मुबारिक पुर—पं० सत्य भूषण वेदालंकार; गांधीनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; गीता कालोनी—श्री मोहनलाल गांधी; ग्रेटर कैलाश-I—प० दिनेश चन्द शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—पं० प्रकाश वीर व्याकुल, गुड़ मन्डी—प० ओम-प्रकाश भजनोपदेशक, १५१-गुप्ता कालोनी—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार तथा पं० आशानन्द भजनोपदेशक; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—आचार्य कृष्णगोपाल, जंगपुरा भोगल—श्रीमती लीलावती आर्या; जनकपुरी सी III—वैद्य राम किशोर, जनकपुरी बी ब्लाक—ला० लखमी दास; टैगोर गार्डन-स्वामी मिथिलेश, तिलक नगर—पं० ईश्वर दत्त एम० ए; तीमारपुर—आचार्य हरिदेव सि० भू०, दरियागज पं० खुशीराम शर्मा; नारायण विहार—पं० हरीश वेदी; न्यू मुलतान नगर—प० रामरूप शर्मा; न्यू मुलतान नगर—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; निर्माण विहार—आचार्य राम शरण मिश्र शास्त्री, पजाबी बाग—प० गुरुदत्त एम०ए, पजाबी बाग एक्स्टैनशन १४।१—प्रो० सत्यपाल बेदार; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनो-पदेशक, बसई दारा पुर—पं० जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; बिरला लाईन्स—डा० सुख दयाल भूटानी, माडल टाउन—पं० अशोक कुमार विद्यालंकार, माडल बस्ती—पं० ओमवीर शास्त्री; महावीर नगर—पं० वीरव्रत शास्त्री; महरौली—डा० वेद प्रकाश महेश्वरी; मोती नगर—पं० भजेन्द्रपाल शास्त्री, मोती बाग—पं० वेदपाल शास्त्री; रमेश नगर—पं० वेद व्यास भजनोपदेशक; राणा प्रताप बाग—प० प्रकाश चन्द वेदालंकार; लड्डू घाटी—पं० देवराज; लक्ष्मीबाई नगर—प० केशव चन्द्र मुन्जाल, विनय नगर—प० हीरा प्रसाद शास्त्री; सदर बाजार पहाड़ी धीरज—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सराय रोहल्ला—श्रीमती सम्पदा आर्या; हौजखास ई-४६—पं० सत्यपाल मधुर भजनोप-देशक; शादीपुर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; सरस्वती विहार सी-३४१—पं० सत्यदेव भजनोपदेशक; कृष्ण नगर—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती।

आर्य जनता के पथ-प्रदर्शन, वेद-विचार को प्रगति देने एवं राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर विचार हेतु

दिल्ली आर्य महासम्मेलन

का आयोजन

दिल्ली के रामलीला मैदान में

बृहस्पतिवार, २५ दिसम्बर से रविवार २८ दिसम्बर १९८० तक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के वीर सेनानी

श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम्

की अध्यक्षता में होगा।

मुख्य आकर्षण :

- वेद पारायण बहु कुण्डी महायज्ञ
- आर्य सम्मेलन
- वेद सम्मेलन
- सस्कृत सम्मेलन
- युवक सम्मेलन
- महिला सम्मेलन
- राष्ट्र सम्मेलन

विशाल जलूस :

२५ दिसम्बर को प्रातः १० बजे से महासम्मेलन का जुलूस

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

के जुलूस में सम्मिलित रहेगा

इस महत्वपूर्ण आयोजन में देश के सुप्रसिद्ध संन्यासी महात्मा, विद्वान् राष्ट्रीय एवं सामाजिक नेता पधार रहे हैं। आप से अनुरोध है कि तन-मन-धन से अपना सहयोग देकर इस आयोजन को सफल बनायें और सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित सम्मिलित होकर अनुगृहीत करें। निवेदक :

सरदारीलाल वर्मा, प्रधान — महाशय धर्मपाल

विद्यासागर विद्यालकार, मत्री — स्वागताध्यक्ष महासम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत)

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

दूरभाष : ३१०१५०, ३१११२८०

१४ नवम्बर से १४ दिसम्बर १९८० तक

जवाहरलाल जी के ९१ में जन्मदिवस

तथा

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित

श्रीमती चन्नन देवी आर्य नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय

सुभाष नगर, नई दिल्ली-२७

की

पांचवीं वर्षगांठ पर

अन्धापन मिटाओ महीना

मनाया जा रहा है। इस अवसर पर

- गरीब और बेसहारा रोगियों को बिना मूल्य चश्मे
- गरीब निःसहाय रोगियों के लिये बिना मूल्य दवाइयां
- बिना मूल्य नेत्र आप्रेशन

औरतों के हर रोग के लिये आज ही पधारें

निवेदक :

महाशय धर्मपाल, प्रधान — (ला०) गुरुमुखकदास ग्रोवर, वरिष्ठ उपप्रधान — ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री

डा० भवानीलाल भारतीय पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर के अध्यक्ष

आर्य जगत् को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि प्रसिद्ध लेखक तथा अनुसंधान विद्वान् डा० भवानीलाल जी भारतीय को पंजाब विश्वविद्यालय चन्डीगढ़ के अन्तर्गत उच्चतर वैदिक अध्ययन हेतु स्थापित दयानन्द चेयर (पीठ) के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। डा० भारतीय शीघ्र ही अपना कार्यभार संभालेंगे। यह स्मरणीय है कि डा० भारतीय विगत ३० वर्षों से आर्य समाज के साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद के ३०वें शान्तिनिकेतन अधिवेशन में डा० भवानीलाल भारतीय ने [illegible] निबंध" "स्वामी दयानन्द की वैदिक अध्ययन को देन" विषय पर पढ़ा अब तक उनकी [illegible] दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। स्वामी दयानन्द तथा स्वामी विवेकानन्द' नामक ग्रन्थ पर उन्हें प्रं० गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार तथा आर्य समाज की अतीत कालीन उपलब्धियां तथा भविष्य के पंथ नामक पुस्तक पर पं० लेखराम स्मारक पुरस्कार मिल चुका है। भारतीय जी अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री हैं तथा सभा के मासिक शोध पत्र परोपकारी का विगत ७ वर्षों से सम्पादन कर रहे हैं। एक प्रौढ़ लेखक [illegible] के सम्पन्न वक्ता प्रमुख विचारक तथा चिंतक भी हैं।

□

रजि० डी (सी) ७२६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा [illegible] ७२७/१-बी, गुरुनानक [illegible], [illegible]
दिल्ली-११ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली [illegible] ११ ० ११०

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ : अंक ९ रविवार २१ दिसम्बर १९८० दयानन्दाब्द १५६

आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष वीर शिरोमणि वन्दे मातरम् रामचन्द्र राव का भव्य स्वागत करें

दिल्ली की आर्य जनता से सभा प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा का अपील

दिल्ली के रामलीला मैदान में २६ से २८ दिसम्बर १९८० को आयोजित आर्य महा सम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष आन्ध्र प्रदेश के सुप्रसिद्ध आर्य नेता वीर-शिरोमणि वन्दे मातरम् रामचन्द्र राव का दिल्ली आने पर भव्य स्वागत करके दिल्ली की आर्य जनता अपनी संगठित शक्ति का परिचय दे। वीर रामचन्द्र राव वह महानुभाव हैं जिन्हें अंग्रेज सरकार ने वन्दे मातरम् का उद्घोष करने पर चौबीस बैंतों की सजा दी थी। यह वीर प्रत्येक बैंत खाने के पश्चात् वन्दे मातरम् का उद्घोष करता ही रहा। उसके शरीर से बैंत पड़ने पर मांस के लोथड़े एवं रक्तधारा बह रही थी परन्तु [illegible] उद्घोष करने से यह वीर नहीं रुका।

यह [illegible] का समय था जब भारत भी अंग्रेजों की दासता में बुरी प्रकार जकड़ा हुआ था। और यह [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] हो चुके थे। इसी समय हैदराबाद में निजाम सरकार के विरुद्ध आर्यसमाज का सत्याग्रह जोर पकड रहा था। और जेलों मे हवन, संध्या, भजन, कीर्तन के साथ वन्दे मातरम् भी गाया जाने लगा। जब अंग्रेज जेलर को पता लगा तो उन्होने इसे रोकने के लिए सख्ती करनी प्रारम्भ की। वन्दे मातरम् गाने वालों का नेतृत्व श्री रामचन्द्र राव कर रहे थे। जेलर ने एकदिन इन्हें बुला कर वन्दे मातरम् का अंग्रेजी में भाव पूछा और उन्हें यह जय-घोष करने से रोका। उस आज्ञा का पालन न करने पर उन्हे चौबीस बैंतों की सजा सुनाई गई। दूसरे दिन इस वीर को बुलाया गया और जेल के मैदान में इनके शरीर से कपड़े उतरवा दिए गये। दोनों हाथों में कमरे के ऊपर करके बांध दिया गया और एक काले हब्शी पहलवान को शराब पिला कर बैंत लगाने की आज्ञा दी गई। प्रत्येक बैंत पर यह वीर वन्दे मातरम् कहता ही चला गया। सारे शरीर से लहू की धारा बह रही थी और मांस की पेशियां और लोथड़े निकल रहे थे। इस प्रकार के यह वन्दे मातरम् वीर हैं। ऐसे वीर का स्वागत करना प्रत्येक देश भक्त एवं आर्य बहिन भाई का कर्तव्य है।

यह भी एक सौभाग्य का अवसर है कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस के भव्य शहीदी जलूस का नेतृत्व इस वर्ष आर्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् करेंगे।

मेरा दिल्ली की आर्य हिन्दू जनता से अनुरोध है कि बृहस्पतिवार २५ दिसम्बर को इस जलूस में भारी संख्या में भाग लेकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। यह जलूस प्रातः १० बजे स्वामी श्रद्धानन्द बाजार स्थित बलिदान भवन से चल कर यथा पूर्व नगर के मुख्य द्वारों से होता हुआ गांधी मैदान मे श्रद्धाञ्जलि सभा मे परिवर्तित होगा।

२६ से २८ दिसम्बर रामलीला मैदान मे विभिन्न सम्मेलनो एवं बहु कुण्डी वेद परायण महायज्ञ में दर्शनीय सुन्दर आयोजन में श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक भारी सख्या में पधार कर देश और धर्म की ज्वलन्त समस्याओ के परिप्रेक्ष्य में आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम के विषय में अपने नेताओ के विचार सुनें और इस आयोजन को सफल बनाये।

शंकराचार्यों को शास्त्रार्थ के लिए आह्वान

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा शकराचार्यों द्वारा हरिजनों व स्त्रियों को वेद न पढ़ने एवं यज्ञ न करने के अधिकार हनन पर तीव्र प्रतिक्रिया की गई। तथा शकराचार्यों एवं करपात्री जी को इस सम्बन्ध में शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया।

एक अन्य प्रस्ताव में परिषद् ने देश के सभी हरिजनों एवं स्त्रियों से अपने अधिकार हनन के विरोध में शंकराचार्यों द्वारा सब्जी मण्डी दिल्ली में १२ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक कराये जा रहे विष्णु महायज्ञ के अवसर पर शकराचार्यों के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए आह्वान किया।

इसी अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश की ओर से भी यजुर्वेद परायण महायज्ञ १५ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक डेसू कालोनी, दिल्ली-७ मे कराया जायेगा।

वेद मनन

अदिति के पुत्र प्रकाश प्रदान करते हैं

महित्रीणामवोऽस्तु द्युक्ष मित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्षं वरुणस्य ।।यजु: ३-३१
नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु । ईशे रिपुरघशंसः ।। यजु: ३-३२
तेहि पुत्रासो अदिते. प्रजीवसे मर्त्याय । ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् । यजु: ३-३३

ऋषि:—सत्यधृतिर्वारुणि: । देवता-आदित्य: ।

शब्दार्थ—(ते) मित्र, वरुण और अर्यमा (अदिते.) पूर्णता प्रदान करने वाली देवमाता के (पुत्रा स) पुत्र हैं । वे (मर्त्याय जीव से) मर्त्य (प्राणी को जीवन प्रदान करने के लिए (अजस्र) निरन्तर (ज्योति:) प्रकाश (यच्छति) देते हैं । (त्रीणा) तीनों अर्थात् (मित्रस्य) मित्रता की भावना उत्पन्न करने वाले प्राण का (वरुणस्य) शत्रुनाशक पाप, रोग निवारक अपान का (अर्यम्ण.) श्रेष्ठ जन को मान प्रदान कराने वाले तथा शत्रु को प्रताडित करने वाले व्यापक मन का (महि) महत्वपूर्ण (द्युक्ष) प्रकाश युक्त (दुराधर्ष) किसी भी अनिष्ट से नष्ट न होने वाला (अव:) रक्षण तथा वर्धन (अस्तु) प्राप्त हो । (तेषां) तीनो अदिति पुत्रो से प्राप्त रक्षण वालो के (अमा) घर से (चना) तथा (वारणेषु अध्वसु) विघ्नयुक्त मार्गों में अथवा वर्णीय धर्म मार्गों में (अघशस:) अनिष्ट चिन्तन करने वाला (रिपु:) आन्तर या बाह्य शत्रु (हि) निश्चय से (न) कभी भी नहीं (ईशे) प्रबलता प्राप्त करता है, या उन पर शासन करने में समर्थ होता है ।

निष्कर्ष—१—मित्र वरुण और आदित्य तीनो अदिति देवमाता के पुत्र हैं । तीनों मिलकर मनुष्य के जीवन को पूर्णता प्रदान करने वाली ज्योति निरन्तर प्रदान करते रहते हैं ।

२ - जिसके जीवन में इन तीनों का रक्षण प्राप्त है । उसके विघ्नयुक्त मार्गो में भी कोई अनिष्ट अचिन्तक शत्रु प्रबल होकर हावी नहीं हो सकता ।

३—इसलिये हम प्रार्थना करते कि हममें—(क) प्राणी मात्र के प्रति मित्रता की भावना उत्पन्न हो, हम किसी का अनिष्ट न चाहें । इसके लिए हमे प्राण की साधना करनी होगी ।

(ख) प्राणीमात्र को पवित्र करने—की इच्छा हो, उसके रोग, शोक, दु.ख दुरित को दूर करने का प्रयत्न चलता रहे । इसके लिए हमें अपान की साधना करके उसे अपने वश में करना होगा।

(ग) यदि मनुष्य मे मित्र वरुण की भावना स्थिर हो जाएगी तो वह अर्यमा (न्याय कर्ता) स्वय बन जाएगा । इस अवस्था में यदि वह किसी को दंड देगा तो वह भी डाक्टर की आपरेशन की तरह दया से प्रेरित और हित के लिए होगा ।

४—इस मन्त्र का ऋषि सत्यधृति: वारुणि है । यह संकेत करता है कि यदि मनुष्य अपने जीवन में सत्य को धारण करेगा, जिसे मानेगा उसे जीवन में अपनाएगा तो वह स्वयं ही वरणीय भावनाओं से युक्त और निवारण करने योग्य भावनाओं से मुक्त होकर वरुण का सच्चा पुत्र वारुणि बन जायेगा । वारुणि बनने के बाद आदित्य =अदिति (परमात्मा) का पुत्र ईश्वर पुत्र (अर्य) बन जाएगा और अर्य की पूजा करने वाला तथा अरि (शत्रु) की हिंसा करने वाला अर्यमा बन जाएगा ।

अर्थ-पोषक प्रमाण—प्राणो मित्र: । शत० ७-५-१-५ त्रिमिदा स्नेहने । अपानो वरुण: । शत० ८-४-२-६ वृञ् वरणे । नि-वारण करना ।

अर्यमा—सप्त होतॄणां होता । ते. २-३-५-६ अर्यान् स्वामिन: श्रेष्ठ पुरुषान् मान्यान् करोति । स्वा० द० अरीन् नियच्छति । नि० ११-२३ इन्द्रियं वै सप्त होता । तै० २-२-८-२, इन्द्रियाणां होता—मन: ।

अर्यमा—आर्यं आचार्यं मन्यते पूज्यत्वेन जानाति इति । भगवदाचार्य: अमा गृहनामसु । नि० ३-४ । अमगति भक्ष शब्देषु । अजस्र निरन्तरम् । (स्वा० द०)

अघशंस:—अघं पाप अनिष्टं वा शंसति—पापाचार: ।

अदिति:—'देवमाता । दो अवखंडने अ + दिति:—पूर्णता देने वाला अखंड परमात्मा ।

वरुण:— शत्रुनाशक— पापनिवारक; वरुणं वरिशादसम् । ऋ: १-२-७

मित्र:—पवित्र बल वाला, हित-चिंतक, मित्रं च पूतदक्षम् । ऋ. १-२ ७

—मनोहर विद्यालंकार

श्वेताश्वतर उपनिषद्

प्रकृति, जीव, परमेश्वर का अज तथा सुपर्ण के रूप में वर्णन

[गतांक से आगे]

वह जो एक है, अद्वितीय है—य: एक:, रंग-रूप रहित है—अवर्ण:, उसने अपनी शक्ति से अनेक तथा रंग-रूप सहित—बहुधा शक्तियोगात् वर्णान् अनेकान्, वस्तुओं मे अर्थ, अर्थात् प्रयोजन निहित कर दिया है—निहितार्थ: दधाति । स्वयं एक है पर अनेक वस्तुओं का निर्माण कर दिया, स्वयं अवर्ण है परन्तु सवर्ण वस्तुओं को पैदा कर दिया, स्वयं का कोई प्रयोजन नहीं परन्तु सब वस्तुओ में प्रयोजन डाल दिया—ऐसी शक्ति है भगवान् की । वह परमात्मदेव ससार का अन्त में संहार कर देता है—विच एति अन्ते, परन्तु आदि में विश्व का निर्माण करता है—विश्वं आदौ स: । ऐसा परमात्मदेव हमें शुभ बुद्धि से युक्त करे—देव: स न: बुद्धया शुभया संयुनक्तु ।।१।।

वही देव अग्नि है, वही आदित्य है, वही वायु है, वही चन्द्रमा है, वही शुक्र है, वही ब्रह्म है, वही जल है, वही प्रजापति है ।।२।।

हे देव ! तू ही स्त्री है, तू ही पुरुष है, तू ही कुमार है, तू ही कुमारी है, तू ही वृद्ध होकर दंड से हमें ठग लेता है—हम तुझे इन भिन्न-भिन्न रूपों में अलग-अलग समझ कर भरमा जाते हैं, पर असल में सब तू—ही—तू हैं । तू जब सृष्टि के रूप में प्रकट होता है, तो स्वयं एक होता हुआ भी नाना-रूप हो जाता है—त्वं जात: भवसि विश्वतोमुख: ।।३।।

इस उपनिषद् में सृष्टि के तीन अनादि-तत्व माने गए हैं । तीनों को 'अज' कहा है । 'अज' दो अक्षरों से बना है—'अ' तथा ज । 'अ' का अर्थ है—नहीं, 'न' का अर्थ है—जन्म । जो उत्पन्न नहीं हुआ, सदा से वर्तमान है, अजन्मा है, अनादि है, उसे 'अज' कहते हैं । जीव तथा परमात्मा 'अज' हैं—अजन्मा हैं । प्रकृति स्त्री-लिंगी होने के कारण 'अजा' है । प्रकृति के लिए कहा गया है —'सत्व रजस् तमसां साम्यावस्था प्रकृति:'—सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण की समावस्था का नाम प्रकृति है । सतोगुण का प्रत्यक्ष रूप शुक्ल है, रजोगुण का प्रत्यक्ष रूप लोहित है, तमोगुण का प्रत्यक्ष रूप कृष्ण है । इस सब आधार को सम्मुख रखकर ५वें श्लोक में कहा गया है कि एक अजा है जिसका स्वरूप लोहित कृष्ण है—अजां एकाम् लोहित शुक्ल कृष्णां, वह अजा, अर्थात् प्रकृति, जो अपने जैसे अनेक प्रकार के पदार्थों का सर्जन कर रही है—बह्वी: प्रजा: सृजमानां सरूपा:, उसे दूसरा अज, अर्थात् जीव—अज: हि एक:, भोग रहा है, उसके साथ सम्बन्ध कर रहा है—जुषमाण: अनुशेते, और तीसरा अज, अर्थात् परमेश्वर इस भोग-भुक्ता अजा, अर्थात् प्रकृति को छोड़ कर अलग रहता है, वह प्रकृति का भोग नहीं करता—जहाति एना भुक्तभोगां अज: अन्य: । इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि एक अजा अर्थात् प्रकृति है, और दो प्रकार के अज, अर्थात् दो प्रकार के जीव हैं । एक जीव प्रकृति के भोग में सना, दूसरा जीव प्रकृति से अपने को अलग रखता है, उसे छोड़ देता है । प्रकृतिवादी भोग का जीवन बिताता है, अध्यात्मवादी त्याग का जीवन बिताता है ।।५।।

लेखक :
सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

उक्त श्लोक में जिस चैतन्य को 'अज'—नाम से कहा, उसी को ६ठे श्लोक में 'सुपर्ण'—अर्थात् पक्षी के रूप में कहा है । क्या कहा है ? दो सुन्दर पक्षी हैं—द्वा सुपर्णा, साथ-साथ मित्र-भाव से रहते हैं—सयुजा सखाया, वे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाजों के सत्संग

२१-१२-८०

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं० सत्य काम वेदालंकार; अशोक विहार के सी ५२-ए पं० वेद व्यास भजनोपदेशक; आर्यपुरा—पं० जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; आनन्द विहार--पं० विश्व प्रकाश शास्त्री; इन्द्रपुरी—पं० प्रकाशवीर व्याकुल; किंग्जवे कैम्प—पं० सुशीराम शर्मा; किशन गंज मिल एरिया—प० राम रूप शर्मा; कालका जी डी० डी० ए फ्लैटस—पं० मनोहर विरक्त, गांधी नगर—पं० विजयपाल शास्त्री; गीता कालोनी—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक, ग्रेटर कैलाश-१—आचार्य राम शरण मिश्रा शास्त्री; गुड़ मन्डी—आचार्य कृष्ण गोपाल; १५१- गुप्ता कालोनी —स्वामी स्वरूपा नन्द भजनोपदेशक तथा पं० ज्योति प्रसाद ढोलक कलाकार; गोविन्द पुरी—पं० देवेश; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; जंगपुरा भोगल—पं० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; जनकपुरी बी ब्लाक—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; जहांगीर के-१४३६—पं० वेदपाल शास्त्री; टैगोर गार्डन —पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; तिलक नगर—पं० वीर व्रत शास्त्री; तीमारपुर—प० विष्णु देव प्रसाद विद्यालंकार; दरियागंज—पं० केशव चन्द—गुन्जाल; नारायण विहार—वैद्य राम किशोर; पंजाबी बाग—डा० सुखदयाल भूटानी; पंजाबी बाग एक्सटेंशन १४।३—श्री चिमन लाल; पश्चिम पुरी जनता क्वार्टर्स—आचार्य हरिदेव सि० भू०, बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बिरला लाईन्स—पं० प्रकाश चन्द वेदालकार, माडल बस्ती—पं० ईश्वर दत्त एम० ए०; महरौली—श्रीमती लीलावती आर्या; मोती नगर– प्रो० सत्यपाल बेदार; रघुवीर नगर—श्रीमती सम्पदा आर्या; रमेश नगर—ला० लखमी दास; राणा प्रताप बाग—प० प्राण नाथ सिद्धान्तलंकार; लड्डू घाटी—पं० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; लाजपत नगर —पं० हीरा प्रसाद शास्त्री; विक्रम नगर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; सुदर्शन पार्क —प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सराय रोहिल्ला—पं० महेन्द्रपाल शास्त्री; सोहनगंज —पं० आशा नन्द भजनोपदेशक; श्री निवास पुरी—श्री मोहन लाल गांधी; हनुमान रोड—पं० शिवकुमार शास्त्री; हौज खास ई-४९ पं० मुनि शंकर वान प्रस्थी; शादीपुर—पं० देव राज वैदिक मिशनरी; सरस्वती विहार—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक;।

आर्यसमाजों की गतिविधियां

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी का वार्षिकोत्सव १८ दिसम्बर से २१ दिसम्बर ८० तक अतिरिक्त जिलाधीश कार्यालय के मैदान में समारोह पूर्वक संपन्न होगा। इस अवसर पर आर्य-जगत् के विख्यात आर्य संन्यासी, महापदेशक, एवं प्राध्यापक और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आर्यसमाज नारायणा विहार की स्थापना

आर्य समाज नरायण विहार नई दिल्ली २८-के. ब्लाक (पंजाब नैशनल बैंक के पीछे) की भूमि में, नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्य महासम्मेलन दिल्ली के स्वागताध्यक्ष श्री महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी वानप्रस्थ (शालवाले) के द्वारा रविवार २१ दिसम्बर को मध्यान्ह १२ बजे आर्यसमाज मन्दिर का चारों वेदों सहित) शिलान्यास होगा। कार्यक्रम प्रातः ७-३० बजे हवन-यज्ञ से प्रारम्भ होकर १-३० बजे तक ऋषि लंगर के साथ सम्पन्न होगा।

निर्वाचन

आर्यसमाज अशोक नगर (रजि.) नई दिल्ली-संरक्षक—श्री सुखदेव जी, श्री राजाराम आर्य, श्री होशियार सिंह जी, श्री देवेश्वर जी महेन्द्र, प्रधान—श्री पुरुषोत्तम जी सेठ, मन्त्री श्री प्रकाश चन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री मिट्ठन लालजी।

'धर्म स्वतन्त्रता बिल १६८०' का घोर विरोध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ला. रामगोपाल शालवाले ने समस्त आर्यसमाजों को आदेश दिया है कि वे २१ दिसम्बर ८० के साप्ताहिक सतसंग में श्री रामजेठ मलानी के 'धर्म स्वतन्त्रता बिल १६८०' का घोर-विरोध करें, साथ ही भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी बाजपेयी से अनुरोध करें कि वे श्री जेठमलानी को इस बिल को वापिस लेने के लिए बाध्य करें अन्यथा उन्हें पार्टी से निष्कासित कर दें।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ : अंक ११ रविवार ११ जनवरी १९८१ दयानन्दाब्द १५६

आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

वेद प्रचार की वृहद् योजना बनाने और समाज निर्माण के कार्यों को तीव्रगति देने के निर्णय :

राष्ट्र-रक्षा के लिए आर्यसमाज फिर आन्दोलन का रूप धारण करे ।

देश की विस्फोटक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में हिन्दुओं के पथ प्रदर्शन, वेद प्रचार को प्रगति देने एवं राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर विचार करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गत २५ से २८ दिसम्बर तक 'आर्य महासम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामचन्द्र राव 'वन्देमातरम्' ने की । दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों की आर्य जनता भारी संख्या में सम्मिलित हुई और यह महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ ।

२५ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान-जयन्ती के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका आयोजन केन्द्रीय सभा ने किया था ।

२६ दिसम्बर को महासम्मेलन का समारम्भ स्वामी विद्यानन्द सरस्वतीजी द्वारा ध्वजारोहण से हुआ । तीनों दिन सुबह शाम बहुकुण्डी महायज्ञ होता रहा ।

इस सम्मेलन में संस्कृत सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया ।

संस्कृत सम्मेलन में इस बात पर जोर दिया गया गया कि संस्कृत देश की सभी भाषाओं की जननी है और स्कूलों में इस भाषा का अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए । श्री गुलाबसिंह राघव ने संस्कृत में गीत गाकर जनता को मन्त्र-मुग्ध कर दिया ।

वेद सम्मेलन में मांग की गई कि वेदों के अध्ययन व अध्यापन के लिए सभी विश्वविद्यालयों में दयानन्द पीठ स्थापित किये जायें ।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में वक्ताओं ने जोर दिया कि आर्यसमाज को फिर एक आन्दोलन का रूप धारण करना चाहिए ।

'आर्यसमाज के सम्पर्क से ही मैं ऊंचे पद पर पहुंच सका'

—विधि मन्त्री श्री शिवशंकर

२५ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान जयन्ती के अवसर पर बोलते हुए केन्द्रीय-विधिमंत्री श्री शिवशंकर ने कहा कि "आर्य समाज के सम्पर्क में आने से ही मैं इस ऊंचे पद पर पहुंच सका हूं ।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी की जयन्ती पर आमन्त्रित होने को अपना सौभाग्य मानते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि हैदराबाद रियासत में जो धार्मिक और राजनीतिक क्रान्ति हुई थी उसका श्रेय केवल आर्य समाज को है ।

श्री शिवशंकर ने खेद प्रकट किया कि हैदराबाद के भारत में विलय के बाद वहां के आर्य समाजी नेता राजनीति में कूद पड़े । उन्होंने कहा कि इससे आर्यसमाज की धार्मिक, सामाजिक और नैतिक क्रान्ति की लहर रुक गई ।

उन्होंने आशा प्रकट की कि आर्यसमाज आज भी युवकों को नैतिक पतन से बचाकर उन्हें देश तथा जाति की सेवा के लिए प्रेरित कर सकता है ।

इस सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता वैदिक साधु आश्रम रोपड़ (पंजाब) के अधिष्ठाता स्वामी वेदानन्द ने की ।

इससे पहले आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में दिल्ली के तथा आसपास के क्षेत्रों के आर्यसमाजियों ने एक विशाल जलूस निकाला । स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामचन्द्र राव 'वन्देमातरम्' ने इस जलूस का नेतृत्व किया ।

श्रीमती शकुन्तला आर्य, श्री पृथ्वी सिंह आजाद श्री शमीम अहमद शमीम, हरिकीर्तन सभा के लाला आज्ञाराम आदि वक्ताओं ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की ।

—ओमप्रकाश, मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा

'वेदों का सन्देश आम जनता तक पहुंचायें'

—श्री जैल सिंह

नयी दिल्ली, २८ दिसम्बर, केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री जैलसिंह ने आज यहां कहा कि अभी भी महर्षि दयानन्द तथा वेदों का सन्देश आम जनता तक नहीं पहुंचा है । उन्होंने कहा कि आर्यसमाज इस कार्य को पूरा करने में आगे आये ।

श्री जैलसिंह ने कहा कि आर्यसमाज ने ऐसे युवा पैदा किये जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने न केवल कुरीतियों को दूर किया बल्कि देश को स्वतन्त्र कराने में भी सहयोग दिया ।

गृहमन्त्री ने आर्यसमाज के कार्यो और गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि छुआछूत को दूर करने, स्त्रियों को बराबरी का दर्जा दिलवाने, रूढ़िवाद को खत्म करने तथा शिक्षा के क्षेत्र में उस समय कार्य किया जब देश मे अन्य सस्थाएं इस ओर सोच भी नही पा रही थीं ।

इससे पहले श्री जैलसिंह का स्वागत महाशय धर्मपाल, लाला रामगोपाल शालवाले तथा अन्य नेताओं ने किया । श्री वीरेन्द्र ने कहा कि श्री जैलसिंह आर्यसमाज के हर काम मे सहायक रहे हैं ।

रिश्ते ही रिश्ते !

संभ्रान्त परिवारो के पुत्र-पुत्रियो के वैवाहिक सम्बन्धों के लिए श्री राममूर्ति कैला, प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली की सेवाओ से लाभ उठायें ।

सम्पादक—वि० सा० विद्यालंकार

वेदमनन :

अबाध गति रथ

परि ते दूऽभो रथोऽस्मां अश्नोतुविश्वत: । येन रक्षसि दाशुष: । यजु: ३-३६

ऋषि:—वामदेव । देवता-अग्नि ।

शब्दार्थ – हे (अग्ने) सबकी उन्नति चाहने वाले परमेश्वर (येन) जिस रमणीय साधन ज्ञान-विज्ञान द्वारा अथवा जिस शरीर रथ को प्रदान करके आप (दाशुष) ईश्वरार्पण कर्म करने वाले भक्तो की (रक्षसि) रक्षा करते हैं। (ते) आपका (दूऽभ) अबाधित अर्थात् सर्वत्र गति करने मे समर्थ ज्ञान विज्ञान और कर्मानुसार प्राप्त शरीर रथ (विश्वत) सब प्रकार से (परि) सब परिस्थितियो मे (अश्नोतु) व्याप्त हो—प्राप्त रहे।

निष्कर्ष- -१—परमेश्वर द्वारा प्रदत्त शरीर, योनि के अनुसार अपनी मर्यादा में रहते हुए सर्वत्र अबाध गति होता है।

२—परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान-विज्ञान के साधन बड़े दुर्गम अर्थात् कष्ट साध्य हैं। लेकिन जो उन्हें प्राप्त कर लेता है उसकी सर्वत्र अबाध गति हो जाती है।

३—परमेश्वर आत्मार्पण करने वाले लोक कल्याण में लगे। भक्तो का सदा ध्यान रखता हैं, विपत्ति पड़ने पर उनकी रक्षा करता है।

४ – मनुष्य यदि अपने शरीर (रथ) को अबाध गति स्वस्थ रखना चाहता है तो उसे अपनी इन्द्रियों को सुन्दर, स्वस्थ रखना चाहिए। कभी उनके अधीन होकर कुमार्गगामी नहीं नहीं बनना चाहिये।

५—यदि सब इन्द्रियां स्वस्थ सुन्दर रहेगी। तो ज्ञान-विज्ञान प्राप्ति के रमणीय साधन स्वय प्राप्त होते रहेंगे। उसका शरीर जीवन पर्यन्त अबाधगति होकर ईश्वरार्पण, कर्मों में लगेगा। वह अग्नि का सखा समानधर्मा बनेगा। परमात्मा उसकी सदा रक्षा और वृद्धि मे सहायक बना रहेगा।

अर्थ पोषक प्रमाण—रथ.—रयते जानाति येन स.—विज्ञानम् । स्वामी दया०

रथ: —रमते अस्मिन् येन वा स:— यानं शरीरं पादोवा । उणादिकोष ।

रथ: —रमण साधनं—ज्ञानं विज्ञानं शरीरं च ।

दूडभ:—दु:खेन हिंसितुं योग्य: — अबाधगति । दुर्दभ: दुर्गमो वा ।

वामदेव:—वाम (सुन्दर+स्वस्थ) +देव (इन्द्रियां) अग्नि:—अग्रेनयनि ।

आत्मानं रथिन विद्धि शरीरं रथमेव च ।

—मनोहर विद्यालंकार

श्वेताश्वतर उपनिषद्

प्रकृति, जीव, परमेश्वर का क्षर-अक्षर के रूप में वर्णन

[गतांक से आगे]

इस उपनिषद् में मुख्य तौर पर त्रित्ववाद पाया जाता है। बार-बार प्रकृति-जीव-ईश्वर का उल्लेख मिलता है। पहले प्रकृति को 'अजा' तो जीव तथा ईश्वर को 'अज' कहा, फिर प्रकृति को 'वृक्ष' तथा उस पर बैठे दो पक्षियों 'सुपर्णा' का जिक्र किया जिनमे से एक वृक्ष का फल खाता है, दूसरा सिर्फ देखता है। इस अध्याय मे दो 'अक्षरो' का वर्णन है, इन दो के अलावा तीसरे ब्रह्म का वर्णन है जो है तो अक्षर, परन्तु उसे यहा अक्षर नही कहा, इन सब से प्रतीत होता है कि उपनिषदो मे भले ही 'सर्व खल्विद ब्रह्म' का वर्णन हो, परंतु साथ ही ब्रह्म के अतिरिक्त जीव तथा प्रकृति का भी अज, सुपर्णा, अक्षर आदि नामो से उल्लेख हैं। इस अध्याय का आरम्भ करते हुए कहा गया है :

दो 'अक्षर' हैं। 'अक्षर'—अर्थात्, जो खरते नहीं, नित्य हैं—ये 'अक्षर'। ये दो अक्षर ब्रह्म पर हैं —अर्थात्, ब्रह्म ही इनका लक्ष्य है—ब्रह्मपरे—ब्रह्म ही इनका आधार है, ब्रह्म पर ही ये टिके हुए हैं, परंतु येदोनो अनंत हैं—तु अनंते इन दोनों में से एक में विद्या गूढ़ रूप में, छिपे रूप मेंविद्यमान हैं, दूसरे में अविद्या भरी पड़ी है—विद्या अविद्या निहिते यत्र गूढे। विद्या जीव का और अविद्या प्रकृति का गुण है। इनमे से अविद्या टिकने वाली नहीं है—क्षरं तु अविद्या, और निश्चय से विद्या अमरता देने वाली है—हि अमृत तु विद्या। प्रकृति तथा जीव के अतिरिक्त एक अन्य है जो विद्या तथा अविद्या का नियमन करने वाला है—विद्या अविद्या ईशते य:तु स. अन्य. ॥१॥

लेखक :

सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

इस श्लोक में चार बातें कही गई हैं। पहली बात यह है कि 'अक्षर'—सताए' तीन हैं—प्रकृति, जीव तथा ईश्वर; दूसरी बात यह है कि इन तीनों में से एक ब्रह्म है, अन्य दो—प्रकृति तथा जीव ब्रह्म पर आश्रित हैं—ब्रह्मपर है, तीसरी बात यह है कि विद्या जीवात्मा का और अविद्या प्रकृति का स्वाभाविक गुण हैं, चौथी बात यह है कि विद्या तथा अविद्या दोनों का नियमन ईश्वर कर रहा है। ईश्वर के विषय में २,३,५ श्लोकों में कहा है।

वह इकला एक-एक कारण अधिष्ठाता है—य: योनिं योनिं अधितिष्ठति एक। इन कारणों से जो कुछ निर्माण होता है, जिस-किसी रूप का भी निर्माण होता है— विश्वानिरूपाणि, और इन कारणों से जो अन्य कारण उत्पन्न हो जाते हैं· योनी: च सर्वा:, उन सब का वही अधिष्ठाता है—योनि: स्वभावान् अधितिष्ठति एक: । सब को फल देने वाला वही है—सर्वान् परिणामयेत् य:, वही इकला विश्व का अधिष्ठाता है—सर्वम् एतत् विश्वम् अधितिष्ठति एक:, प्रत्येक वस्तु के गुण का विनियोजन वही करता है—गुणान् च सर्वान् विनियोजयेत य: ॥२, ३, ५॥

जीव के विषय में विचार

जीवात्मा सत्य, रज, तम – इन तीनों गुणों के पीछे चलने वाला है—गुण अन्वय:, जीवन में जो सुख-दु:ख आदि कर्मों के फल मिलते हैं उन कर्मों को करने वाला जीव ही है—कर्म फल कर्ता, जो कर्म वह करता है—कृतस्य, उसका वह उपभोक्ता है—तस्यैव च उपभोक्ता, यह नहीं हो सकता कि वह कर्म करे —अच्छा या बुरा और उसका फल वह न भोगे। वह अपने कर्मों के फल के अनुसार सब प्रकार के रूपों को धारण करता है —स: विश्वरूप: । क्योंकि वह सत्व, रज, तम—इनके द्वारा त्रिगुणात्मक है इसलिए उसके जीवन के मार्ग भी तीन प्रकार के हैं—त्रिगुण. त्रिवर्त्मा प्राणों का वह स्वामी है—प्राणाधिप, अपने कर्मों के कारण वह भटकता-फिरता है – संचरति स्वकर्मभि· । ॥७॥

जीवात्मा का रूप क्या है, परिमाण क्या है ? इस सम्बन्ध में चर्चा करते हुए अगले श्लोकों में कहा है—जीवात्मा अंगुष्ठमात्र है—अंगुष्ठमात्र:, परन्तु फिर भी सूर्य के समान है—रवि तुल्य रूप:— अर्थात्, सूर्य के तुल्य उसका प्रकाश है। ऐसे रूप के साथ दो गुण और जुड़ जाते हैं—वे हैं 'संकल्प (Determined will) तथा 'अहंकार' (Ego) —संकल्प अहंकार समन्वित: य: । सकल्प बुद्धि का गुण है, अहकार आत्मा का गुण है—बुद्धे· गुणेन आत्मगुणेन च एव । इस प्रकार भौतिक (अंगुष्ठमात्र) तथा मानसिक (संकल्प तथा अहंकार) गुणों वाला आत्मा सुई के नोक के बराबर—आरा अग्रमात्र: —है। वह आत्मा अपर है, अर्थात् इस प्रकार के गुणों वाला कोई दूसरा नहीं है—हि अपर: अपि दृष्ट: ॥८॥

अंगुष्ठमात्र का अर्थ अंगूठे के समान—यह नहीं है। अंगूठे के समान का अर्थ है, इतना सूक्ष्म जैसा बड़े-से शरीर में छोटा-सा अंगूठा होता है। इस बात को स्पष्ट करते हुए अगले श्लोक में कहा है यदि बाल के अग्रभाग के सौ भाग किये जायें—बाल अग्रभागस्य, और फिर उसके सौ भागों की कल्पना की जाय—शतधा कल्पितस्य च, तो उस

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय

आभार-प्रदर्शन

आर्य महासम्मेलन दिल्ली के रामलीला मैदान में गत २६ से २८ दिसम्बर को सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आयोजन के प्रबन्ध में अनेक प्रकार की कठिनाईयां उपस्थित हुई परन्तु प्रभु कृपा से समस्त प्रबन्ध बहुत ही उत्तम प्रकार से हो गया। २१ दिसम्बर से शीत लहर एवं बादलो का इतना अधिक प्रभाव था कि विश्वास नहीं होता था कि समारोह सफलता पूर्वक हो सकेगा। परंतु परमपिता परमात्मा की कृपा हुई और सारा आयोजन सुचारु रूप से सफल हुआ।

इस अवसर पर बहुकुण्ड चारवेद शतक परायण महायज्ञ एव अन्तिम दिवस राष्ट्रमेध यज्ञ का आयोजन था। बहुकुण्ड यज्ञ के उपलक्ष मे कई महानुभावों को भ्रम था कि यह परम्परा पौराणिक है अथवा वेद एव सिद्धात विरुद्ध है परन्तु इस भ्रम को आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वानों ने मिथ्या बतलाया है और आर्य जगत के महान विद्वान श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री ने इस यज्ञ के ब्रह्मा का पद स्वीकार करके बहुत ही सुन्दर रीति से यज्ञ को सम्पन्न कराया। शरीर को चीरने वाली शीत लहर के होते हुए भी प्रातः ७बजे आर्य नरनारी बड़ी ही श्रद्धा से यज्ञ मे भाग लेने के लिए दूर-दूर से पधारते रहे। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि यज्ञ मडप में धुआं न उठे। इस सुन्दर प्रबन्ध के लिए यज्ञ समिति के सयोजक श्री महेन्द्र कुमार जी शास्त्री एवं उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं।

बहुकुण्ड यज्ञ के अतिरिक्त संस्कृत सम्मेलन, महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, युवा सम्मेलन एवं आर्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन का आयोजन था। इन सम्मेलनों की अध्यक्षता क्रमशः पं० विशुद्धानन्द जी शास्त्री, श्रीमती प्रभातशोभा पण्डित सुपुत्री स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द जी स्वामी विद्यानंद जी, पं० सत्यदेव जी भारद्वाज, श्री संजयसिंह एव डा० कृष्णलाल जी, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र, डा० सत्यकाम वर्मा एवं श्री विमल चन्द्र विमलेश ने किया।

युवा सम्मेलन के उद्घाटनार्थ श्री कृष्ण दत्त जी शर्मा अध्यक्ष मध्य प्रदेश विधान सभा एव आर्य महासम्मेलन के खुले अधिवेशन मे अध्यक्ष श्री वन्देमातरम् श्री राम चन्द्र राव हैदराबाद के अतिरिक्त भारत के गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, उपप्रधान श्री पृथ्वीसिंह जी आजाद, एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने पधार कर जनता का मार्गदर्शन किया। हम इन सभी महानुभावों के आभारी हैं।

सम्मेलन संबंधी सभी प्रबन्ध कार्यों में सभी कार्यकर्ताओं एवं संयोजक महानुभावों ने जिस तत्परता एवं लगन से कार्य किया उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। केन्द्रीय युवक परिषद के नवयुवकों ने भी प्रशंसनीय कार्य किया। सभा के सभी अधिकारीगण, कार्यालय के कर्मचारी एवं सेवक, आर्य समाज हनुमान रोड, दीवान हाल, बाजार सीताराम, आर्य बाल गृह दरिया गंज एवं अन्य सभी आर्य समाजों के अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का हम इस सम्मेलन की सफलतार्थ सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

आर्य समाज से संबद्ध संस्थाओं—गुरुकुल मयपुरी, गुरुकुल खेड़ाखुर्द, दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर, कन्या गुरुकुल नरेला, चन्द्रविद्या मन्दिर सूरज पर्वत के छात्र-छात्राओं ने सम्मेलन में भाग लिया। दिल्ली की अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने शोभायात्रा में भाग लिया। इन सभी संस्थाओं के अधिकारियों के प्रति हम आभार प्रदर्शित करते हैं। ☐

गुरुकुल कांगड़ी में क्या देखा ?

गत दिसम्बर माह के मध्य में मैंने दो दिन गुरुकुल कांगड़ी मे व्यतीत किये थे। मैं वहां देखने गया था कि परिस्थितियां अब कैसी हैं। जुलाई मे सहारनपुर के जिला न्यायाधीश के एक निर्णय के अनुसार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय एक बार फिर हमारी सभा के अधिकार में दे दिया था। उसके पश्चात १३ जुलाई को यहा आर्य विद्या सभा की पहली बैठ हुई थी जिसमे गुरुकुल के प्रबन्ध को नियमानुसार चलाने के लिए कुछ आदेश दिये गये थे। मैं अब छ. मास के पश्चात् वहां गया था यह देखने के लिए कि वहा अब स्थिति कैसी है और जो आदेश दिए गये थे उनके अनुसार गुरुकुल का प्रबन्ध किया जा रहा है या नही।

दो दिन मैं वहां रहा और जो कुछ मैंने वहा देखा और जो कुछ सुना उसके आधार पर कह सकता हू कि आज गुरुकुल का वातावरण बिल्कुल ही बदला हुआ है। जहा पहले गोलिया चलती थी और शराब की बोतले जगह जगह पडी दिखाई देती थी वहां अब एक स्वच्छ वातावरण दिखाई देता है। अनुशासन पहले से बहुत अच्छा है। गुरुकुल का परिसर भी अब साफ सुथरा दिखाई देता है। विद्यालय के छोटे छोटे बच्चे जब प्रात पांच बजे उठकर वेद मन्त्रो का उच्चारण प्रारम्भ करते हैं तो लाऊड स्पीकर के द्वारा उसकी ध्वनि गुरुकुल के सारे परिसर में सुनाई देने लगती है। उसके पश्चात कोई सोना भी चाहे तो नही सो सकता। जब प्रात. हवन यज्ञ होता है तो विश्वविद्यालय के कई प्राध्यापक भी वहा पहुच जाते हैं। बच्चो को प्रत्येक दिन वेद मन्त्र याद कराया जाता है। उनके रहन सहन का प्रबन्ध पहले से अच्छा है। गुरुकुल कोई अनाथालय दिखलाई नही देता,परन्तु एक ऐसी सस्था दिखाई देती जिसमें किसी आदर्श को लेकर बच्चो को शिक्षा दी जाती है। जुलाई १९८० मे जब हमने गुरुकुल का कार्य भार फिर से सम्भाला था उस समय गुरुकुल विद्यालय मे विद्यार्थियों की सख्या केवल ३४ थी, आज वह १४० के लगभग है। इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि अब गुरुकुल ने किस दिशा में अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी है और जहां तक विश्वविद्यालय का सबन्ध है वहा अब वह पहले जैसा तनाव का वातावरण दिखाई नहीं देता, प्रत्येक प्राध्यापक यह समझता है कि उसका कुछ उत्तरदायित्व है और उसे वह पूरा करना है। इसलिए गुरुकुल के प्राध्यापको का सहयोग भी अब पहले से अधिक मिल रहा है।

यह सब कुछ होते हुए भी मुझे यह कहने मे कोई सकोच नहीं कि अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। पिछले तीन-चार वर्षों में इस सस्था का जो सत्यानाश करने का प्रयत्न किया गया है, उसके कारण जो कठिनाईया पैदा हुई हैं उन्हें ठीक करने में कुछ समय लगेगा। जिस प्रकार एक फुलवाड़ी के सब फूल तोड लिये जाएं उसके पौधे उखाड़ दिये जाएं, जो स्थिति उसकी होती है वही स्थिति गुरुकुल की थी उस दिन जिस दिन हमने इसका कार्य भार समाला था, आर्य जनता को यह सुनकर आश्चर्य भी होगा और दु:ख भी होगा कि जिन लोगो के हाथ में गुरुकुल रहा है वह वहां से जाते समय गुरुकुल का बहुत सा सामान उठाकर ले गये। कई स्थानों पर शराब की बोतलें पड़ी थीं और कई जगह गोलियो के निशान लगे हुए थे। ऐसी स्थिति में इस सस्था को फिर से अपने पांव पर खड़ा करना आसान न था परन्तु मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं, अपितु प्रसन्नता है कि पिछले छः मास में वहां स्थिति बहुत बदल गई है और उत्साह जनक वातावरण दिखाई देता है। जो कुछ हुआ है इसके लिए मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, उपकुलपति आचार्य श्री निरुपणजी विद्यालंकार और डा० हरिप्रकाश जी का धन्यवाद करता हूं। इन सब ने मिलकर और इनके साथ गुरुकुल के प्राध्यापको ने वातावरण को स्वच्छ बनाने में जो परिश्रम किया है और जिस लगन से वह सब काम कर रहे हैं वह वास्तव में सराहनीय है। इसमें जिला के राज्याधिकारियों का भी पूरा पूरा सहयोग हमे मिला है। मैं उनका भी धन्यवाद करता हू। विशेष कर जिलाधीश, सहारनपुर जिला के पुलिसकप्तान और हरिद्वार के डी० एस० पी० व रैजिडेंट मैजिस्ट्रेट का भी धन्यवाद करता हूं क्योंकि अब वह इस राष्ट्रीय विद्यालय में सामान्य स्थिति बनाने में बहुत बड़ा योगदान दे रहें हैं। आशा रखनी चाहिये कि अब अप्रैल में गुरुकुल का वार्षिक उत्सव होगा तो आर्य जनता एक बिलकुल ही नया गुरुकुल देखेगी।

—वीरेन्द्र

आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रराव 'वन्देमातरम्' हैदराबाद का अध्यक्षीय भाषण :

बन्धुओ तथा मित्रो,

इस आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता का आपने मुझे जो सम्मान प्रदान किया है, उसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हूं। हमारे मध्य अनेक शीर्षस्थ नेता, त्यागी, सन्यासी, वानप्रस्थी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति विराजमान हैं। मैं उनके प्रति आदरभाव प्रकट करता हूं और अपने लिए उनके आशीर्वाद एवं कृपावृष्टि की प्रार्थना करता हूं, ताकि मैं इस महत्वपूर्ण दायित्व को वहन कर सकूं और

१. अपने देशवासियों के कल्याण तथा

२ जिन सिद्धांतो के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवित रहे और अपना बलिदान दिया, उनके प्रसार एवं प्रचारके लिए आयोजित इस समारोह के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने मे योगदान दे सकूं।

इस अवसर पर, मेरठ मे १८८१ मे महर्षि दयानन्द के भाषण के आशय को मैं यहाँ उद्धृत करना चाहता हूं :—

परन्तु मेरे भाइयो! निश्चित ही मैं अधिक दिनों तक जीवित रहने वाला नहीं हूं। यह मेरा शरीर भी नश्वर है। इसका अन्त भी निश्चित है। किन्तु मृत्यु से पूर्व मैं आप लोगों को आत्मनिर्भर देखना चाहता हूं।"'मुझे विश्वास है कि आप लोगों मे से ही कुछ महान् व्यक्तियों के रूप में विकसित होंगे और हमने जो लक्ष्य बनाए हैं उनको प्राप्त करने के लिए भागीरथ प्रयत्न करेंगे। "मुझे इस बात का भी विश्वास है कि आर्यसमाज एक विशाल पेड़ के समान विकसित होकर पल्लवित, पुष्पित तथा फलित होगा। प्रभु की कृपा से यह सब कुछ होगा, पर यह सब कुछ देखने के लिए मैं नहीं रहूंगा।"

मेरठ के इस भाषण का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करने से तीन मुद्दे स्पष्ट होते हैं—

१. अपने स्वर्गवास से पूर्व स्वामीजी हमें आत्म-निर्भर देखने की इच्छा रखते थे।

२. उन्हें आशा थी कि उनके स्वर्गवास के बाद कुछ व्यक्ति ऐसे उभरेंगे जो स्वामीजी द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

३. और अन्ततः आर्यसमाज एक विशाल पेड़ के रूप मे अवश्य विकसित होकर पुष्पित एवं फलित होगा।

महर्षि के स्वर्गवास से पाँच मास पूर्व घटित एक घटना का स्मरण हो आया है। २६ मई, सन् १८८३ के दिन स्वामीजी अजमेर मे थे। महर्षि जोधपुर जाना चाहते थे। स्वामीजी के कुछ भक्त आए और स्वामी जी को जोधपुर जाने से रोकने लगे। इसका कारण यह था कि उन्हें वहा स्वामीजी महाराज के साथ किसी अनिष्ट के घटने की आशका थी। इस पर स्वामीजी ने जो कुछ कहा वह इस प्रकार था—

"इसमें (मेरे जीवन के सम्बन्ध में) चिंता करने की आवश्यकता नहीं।" "सत्यार्थ प्रकाश" अपने असली रूप में पूर्ण हो गया है। मैंने अपना कार्य पूर्ण कर दिया है। मुझे करने के लिए अब कुछ नहीं बचा।"

भक्तो द्वारा चेतावनी-पूर्ण वाक्यों के उत्तर मे स्वामीजी की प्रतिक्रिया अत्यन्त स्पष्ट और बोधक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वामीजी को अपनी मृत्यु की पूर्वकल्पना थी। पं० कमलनयन जी ने इस बात का समर्थन किया है) और वे इस सांसारिक रंगमंच से प्रस्थान करने की पूर्ण तैयारी कर चुके थे। उन्होंने हर तरह से प्रयत्न किया था कि भावी पीढ़ी को लक्ष्य-प्राप्ति की ओर अग्रसर होने के लिए तैयार किया जाए। स्वामीजी महाराज ने अपने विश्व-विख्यात ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश की ओर भी संकेत किया था। उन्हें इस बात का भी समाधान था कि भावी पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए उन्होंने अपने अनुभव की बहुमूल्य निधि को उस ग्रन्थ के रूप में उपयुक्त समय पर छोड़ा है। स्वामी जी अनेक रूपों में हमारे लिए आशीर्वचन छोड़े हैं। उन्होंने "कृण्वंतो विश्वमार्यम्" का नारा दिया है, एक ध्वज, एक सांझी भाषा और एक संगठित राष्ट्र के रूप में विकसित होने की प्रेरणा दी। उन्होंने हमारे शानदार भूतकाल का स्मरण करवाया और सनातन सामाजिक व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म को पुनर्जीवित किया। इन सबके अतिरिक्त स्वामीजी ने हमें आर्यसमाज दिया।

तात्पर्य यह है कि स्वामीजी ने अपनी ओर से वह सब कुछ किया था जिससे प्रेरित होकर उनकी अपेक्षा के अनुरूप हम आत्मनिर्भर हो सकें। पर यहाँ एक प्रश्न उभरता है कि १८८३ मे स्वामीजी महाराज के स्वर्गवास के अवसर पर क्या हम आत्मनिर्भर हो गये थे? आत्मनिर्भर होने के लिए हमारे लिए सभी बातें अनुकूल थी। एक अवधि तक हम आत्मनिर्भर हो भी गये थे। स्वामीजी के तुरन्त बाद प० लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्दजी, पं गुरुदत्त जी तथा देश के ऐसे ही अन्य अनेक सुपूतों ने अपने कार्यों द्वारा उज्जवल उदाहरण प्रस्तुत किया। परन्तु वर्तमान स्थिति बदली हुई है।

मैं निराशा का वातावरण पैदा करना नहीं चाहता। किन्तु हमें स्थिति की वास्तविकता का भी मूल्यांकन करना चाहिए। हमने करोड़ों रुपयों की लागत से आर्यसमाज के मन्दिरों और शैक्षिणक संस्थाओं की भव्य इमारतें खड़ी कर दी हैं। इस दिशा मे हमने मात्र अपने सनातनी भाइयों से होड़ ली है। उन्होंने प्राचीन काल से अपने देवी देवताओं के लिए अरबों और खरबों की लागत के मन्दिर बनाये हैं।

आर्यसमाज के मन्दिरों और शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण करना बुरा नहीं है। किन्तु ऐसी परिस्थिति का उत्पन्न होना आक्षेपनीय है कि बिना आत्मा के भौतिक ढांचे खड़े किए जाएं। राम के परम भक्त हनुमान को सीता ने उनकी सेवा के पुरस्कार स्वरूप अपनी बहुमूल्य माला दी। किंतु हनुमान ने जब माला की मणियो मे राम के दर्शन नहीं किए तो उन मणियों का उनके पास कोई मूल्य नहीं रहा।

आर्यसमाज के मन्दिरों और शैक्षणिक संस्थाओं में सच्चे आर्य समाजियो का निर्माण होना चाहिए। मेरा विचार है कि चार-पाँच वर्षों के अल्पायु बालकों की ओर हमें ध्यान देना चाहिए और उन्हें ऐसे वातावरण में इस तरह संस्कारित करना चाहिए कि उनमें —

१. आर्यसमाज के प्रति प्रेम उत्पन्न हो।

२. देश के प्रति प्रेम उत्पन्न हो और

३. कठोर अनुशासन प्रियता तथा बड़ों के प्रति आदर उत्पन्न हो।

आर्यसमाज : एक समाज

महर्षि दयानन्द की श्रेष्ठता यह है कि उन्होंने कोई कार्य ऐसा नहीं किया जिसके पीछे कोई श्रेष्ठ उद्देश्य न हो। हर समय उनके मस्तिष्क में महान् विचार आये, ऐसे विचार जिनमें सामान्य मानव के कल्याण की भावना निहित थी। उनमें संकुचितता लेशमात्र नहीं थी। वे क्षेत्रीय, साम्प्रदायिक, मत-मतान्तर इत्यादि की सीमाओं के परे थे।

स्वामीजी ने सीधे कार्य क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया। उन्होंने पहले अपने सिद्धान्तों का प्रचार किया। तत्पश्चात् उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। १६ मार्च १८७५ के दिन इसकी शुरुआत हुई। भारत की सुप्रसिद्ध नगरी बम्बई को इस ऐतिहासिक घटना की आरम्भ स्थली होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वामीजी ने जब इसको प्रारम्भ किया था तो उन्होंने आर्य समाज को व्यक्तियों के एक शिथिल संगठन की कल्पना नहीं की थी, जैसा कि भेड़ों या पशुओं का झुंड होता है, उनके सामने ऐसे व्यक्तियों के सुदृढ़ संगठन की परिकल्पना थी, जो निम्न सामान्य-सूत्रों में आबद्ध थे :—

१. समान परिपाटि
२. समान संस्कृति
३. समान भाषा
४. समान धर्म
५. समान लक्ष्य और आकांक्षा

स्वामीजी ने आर्यसमाज के रूप में कभी भी विषम तत्वों के समूह की कल्पना नहीं की थी।

आज भी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और शैक्षणिक संगठन हैं। उनके सम्मुख एक विशिष्ट लक्ष्य होता है। लक्ष्य की प्राप्ति होते ही उस संगठन की उपयोगिता समाप्त हो जाती है। महात्मा गांधी ने स्वाधीनता प्राप्ति के तुरन्त बाद कांग्रेस को विघटित करने की सलाह दी थी। उनका चिंतन स्पष्ट था। १८८५ में जिस लक्ष्य को लेकर कांग्रेस का निर्माण हुआ था, स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही वह समाप्त हो गया था।

उन्होंने यह अनुभव किया था कि एक सामान्य लक्ष्य को लेकर जो विषम-तत्व इकट्ठा हुए थे, उन्हें अलग होने दिया जाए। कांग्रेस एक ऐसी धुरी थी जिसके चारों ओर विभिन्न विचारों के लोग इकट्ठे हुए थे। आजादी के बाद जब तत्व अपने-अपने विचारों का आग्रह करने लगे, तो गांधी जी ने ऊपर की सलाह देना उचित समझा, मैंने इसका उल्लेख इसलिए नहीं किया है कि कांग्रेस के संगठन की आलोचना करूं या उसके विघटन की वकालत करूं। मैंने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए इस संगठन

संगठन का नामोल्लेख मात्र किया है कि स्वामीजी ने आर्य समाज की स्थापना ऐसा कोई संगठन बनाने के उद्देश्य से नही की थी।

वे चाहते थे कि जनता आर्य जीवन पद्धति को अपनाए। आर्यसमाज जीवन यापन की एक पद्धति है—एक पूर्ण जीवन दर्शन है। सार्वदेशिक सभा तथा अन्य प्रतिनिधि सभाएं ऐसे संगठन हैं जिनका गठन एक विशिष्ट लक्ष्य को लेकर किया गया है। अर्थात् भारत और भारत से बाहर लोगों को आर्य जीवन पद्धति के अनुसार जीवनयापन के लिए संगठित करना।

आर्यजीवनपद्धति का शाब्दिक अर्थ ऐसी जीवन पद्धति से है जिसको आर्यावर्त की जनता ने प्रस्तुत किया था। स्वामीजी ने आर्यसमाज के जिन दस नियमों का निर्माण किया है, वस्तुतः वे हमारे शास्त्रों का सारमात्र हैं। इन्ही सूत्रो को लेकर आर्यजीवनपद्धति का ताना-बाना बुना गया है। वर्णाश्रम क्या है ? यह एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज को चारों वर्णों मे और एक व्यक्ति के जीवन को चारों अशों मे विभक्त किया गया है। समाज को इसी आधार पर संगठित करने की स्वामीजी की इच्छा मूर्तरूप ले नहीं सकी, यद्यपि १०५ वर्ष बीत गये। आर्य प्रतिनिधि सभाओ के सामने विस्तृत कार्यक्षेत्र है। इस कार्य मे अकर्मण्यता के परिणाम निश्चित ही कष्टदायक होगे।

जनसमूह राज्य का प्राथमिक भौतिक तत्त्व है। अतः यह स्वाभाविक ही था कि स्वामीजी ने समाज के सुधार की ओर प्रथमतः ध्यान दिया। किन्तु उनके कार्य की यह इतिश्री नहीं है। इस बात के अब प्रमाण मिल चुके हैं कि १८५७-५८ में प्रथम स्वाधीनता संग्राम के अवसर पर स्वामीजी ने महत्वपूर्ण कार्य किया था। किसी भी जनता को राज्यत्व प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उसके लिए एक भू-भाग हो, एक शासन हो और पूर्ण प्रभुसत्ता हो।

इसीलिए स्वामीजी ने अंग्रेजों को देश से निकालने, भारतीयों को पूर्ण प्रभुसत्ता दिलाने और स्वशासन की स्थापना के उस प्रयत्न में पूर्ण योगदान दिया। आर्य प्रतिनिधि सभाएं स्वामीजी के इन कार्यों से मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकती हैं। आर्यसमाज में कुछ लोग हैं जो राजकारण (राजनीति) मे भाग लेने का विरोध करते हैं। वे केवल आत्मा और परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान के प्रसार तक ही आर्यसमाज को सीमित रखने में ही सन्तुष्ट हैं। उनका विश्वास है कि यही उनके [illegible] है।

मुझे यहां पर राजधर्म के सम्बन्ध में युधिष्ठिर का स्मरण हो रहा है। भीष्म पितामह युद्ध क्षेत्र में घायल पड़े हैं। युधिष्ठिर समीप आकर पितामह से राजकरण के सम्बन्ध से पूछते हैं :—

राजधर्मान् विशेषेण कथयस्वपितामह।
सर्वस्य जीवलोकस्य राजधर्मः परायणम्॥

"पितामह, राजकारण प्रत्येक के लिए महत्वपूर्ण आश्रय है। कृपा करके राजकरण के सम्बन्ध में मुझे जानकारी दीजिए।"

युधिष्ठिर द्वारा राजकरण को सभी के लिए महत्वपूर्ण आश्रय समझना बहुत सार्थक है। भीष्म ने कहा—

उदयन् हि यथासूर्यो नाशयत्यशुभं।
राजधर्मास्तथालोल्या निक्षिपन्त्यशुभा गतिम्॥

"जिस प्रकार सूर्य उदित होकर अंधेरे के घेरे को छिन्न-भिन्न कर देता है, उसी तरह राजकरण मानव जाति को स्वर्ग से वंचित करने वाले दुष्कामों से सुरक्षित रखता है।"

इस मे स्पष्ट होता है कि राजधर्म में रुचि लेना आर्य-जीवन-पद्धति का एक अंग था। इसी लिए स्वामीजी ने धर्मार्थ सभा और विद्यार्य सभा के साथ-साथ राजार्य सभा के निर्माण पर काफी बल दिया है। आज हमारे इस भू-भाग भारत को बाहर और भीतर के आक्रमण का खतरा लगा हुआ है। हमारी क्षेत्रीय अखण्डता असुरक्षित है। राज्य के निर्माण में क्षेत्र का दूसरा है। और वह भू क्षेत्र जिस पर हम निवास करते हैं, उसी को खतरा है। क्या आर्य समाजी अपनी मातृ भूमि के इस संकट में भी केवल दर्शक बनकर शान्त रहेगे ? हमारे भीतर की देश-भक्ति की भावना हमे ऐसा नही करने देगी।

हमारे देश की सुरक्षा के खतरे के साथ हमारी जीवन-पद्धति लिए भी खतरा पैदा हो गया है। एक ओर ईसाई प्रचरक, दूसरी ओर ऐसे धर्मान्ध मुसलमान, जो ऐसे सभी देशों को "दारुल-हरब" कहते हैं जिनका पूर्णतः इस्लामीकरण नहीं हुआ है, और किसी भी कीमत पर उनको "दारुल-इस्लाम" करने पर तुले हुए हैं और तीसरी ओर मास्को तथा पेकिंग छाप कम्युनिस्ट हैं। ये सब देश में विध्वंसकारी कार्यों में लगे हुए हैं, और ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन देते रहते हैं। आजकल देश में जितने भी "बन्द" हो रहे हैं जिनमें अधिकांश इन्हीं कम्युनिस्टों द्वारा आयोजित तथा प्रेरित हैं। मुरादाबाद या हैदराबाद जैसे साम्प्रदायिक संघर्षों के पीछे बड़े चतुर हाथ काम कर रहे हैं, और जो निश्चित ही हमारे देश के अकल्याण के उद्देश्य से इन संघर्षों को भड़काने में साधन जुटा रहे हैं। विदेशों में निर्मित शस्त्रास्त्र पकड़े गये हैं, जिनका देश की आन्तरिक शांति का नाश करने के लिए प्रयोग किया जा रहा है। यह एक गम्भीर समस्या है, और विशेष रूप से जब आल इण्डिया मुस्लिम लीग के अध्यक्ष श्री सुलेमान सेठ ने लन्दन मे १९८० मे आयोजित मुसलमानो के एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में यह बयान दिया कि भारत में प्रतिदिन सैकड़ों मुसलमानों की हत्या की जाती है, तो फलस्वरूप मुरादबाद जैसे संघर्ष फूट पड़े, जिससे देश की अपरिमित हानि हुई। इनके अतिरिक्त भी देश के सामने अनेक गम्भीर संकट है। इनमे से कुछ वैधानिक प्रकार के हैं। उदाहरणार्थ हमारे संविधान की धारा(१)का मैं प्रथमतः उल्लेख करूंगा। विधान की पहली अनुसूची में, जिस की ओर उल्लिखित धारा मे संकेत किया गया है, जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न बतलाया गया है। किन्तु संविधान की धारा ३७० के द्वारा देश के इस भू-भाग को अन्य प्रदेशों से भिन्न स्वरूप दिया गया है। संविधान में प्रदत्त बुनियादी अधिकार का यह स्पष्ट उल्लंघन है। यहां बरबस ही मुझे स्व० प. प्रकाशवीर शास्त्री का स्मरण हो रहा है, जिन्होने धा. ३७०को हटाने का प्रयत्न किया था। आप जानते हैं कि जब भी काश्मीर की समस्या का उनके सामने उल्लेख होता था वे कितने उद्विग्न हो उठते थे। काश्मीर की समस्या भीतर ही भीतर सुलगती रहती है और समय-समय पर देश में ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भी उभरती रहती है और उसका कारण यही है कि उक्त धारा में हमने उसको पृथक महत्त्व दे दिया है। एक बार इस धारा का विधान से पूर्ण लोप हो जाए, तो दुनिया इस समस्या को ऐसे ही भूल जायेगी, जैसे हैदराबाद राज्य की समस्या को भूल गई है।

दूसरी समस्या उन लोगों की है जो राष्ट्रीय धारा में अपने आपको समालेने से बचने के निरन्तर प्रयत्न में है। ये लोग अपने आपको अल्पसंख्यकों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अल्पसंख्यक कौन हैं ? हमारे विधान मे इसकी कहीं व्याख्या नहीं की गई है। किन्तु ऐसों के प्रति हमारी उदार चित्त-वृत्ति अब तक आम क्षति के रूप में ही प्रगट होती रही है। स्वाधीनता से पूर्व परिस्थिति कुछ ऐसी बना दी गई थी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के हमारे हर प्रयत्न को यह अल्पसंख्यक बड़ी सफलता के साथ "विटो" किया करते थे। ब्रिटिश सरकार के साथ उनके साठ-गाँठ ने देश का विभाजन कर दिया १९४७ के पृथककरण से यह वर्ग सन्तुष्ट न होकर अब पुनः उसी नीति का अवलम्बन कर रहा है। उनके इस भयानक षड्यन्त्रकारी कार्यों को सफल बनाने के में ऐसा लग रहा है कि कुछ अन्तर्राष्ट्रीय "एजेंसियां क्रियात्मक रूप से इस वर्ग की सहायता कर रही है। इस परिस्थिति मे आर्य समाज की चुप्पी उनके बहुमूल्य सर्वस्व की क्षति के रूप प्रगट होगी।

इस सदर्भ में मैं कुछ ऐसे तथ्य आप के सामने प्रस्तुत करना चाहता हु, जो बड़े उग्र रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। हमारे चारों ओर प्राय सभी मजहबी राष्ट्र हैं, या ऐसे राष्ट्र है जिन्होंने साम्यवाद को स्वीकार कर लिया है। हमारे देश के दो प्रदेश भी ऐसे ही हैं—एक, देश के पूर्वी तट पर—पश्चिमी बंगाल और दूसरा, देश के पश्चिमी तट पर—केरल। दोनों का प्रशासन कम्युनिस्टों के हाथो मे है। और पश्चिम बंगाल पूर्णतः मार्कसवादी कम्युनिस्टो के हाथों मे है। और केरल मे कम्युनिस्ट-प्रधान सयुक्त मन्त्रिमन्डल है। ईसाई नागालैंड और उसके आतराफ़ एक तरह से गुरीला ढग की लड़ाई लड़ रहे है। उनका लक्ष्य है हमारे देश की पूर्वी सीमा पर एक स्वतन्त्र ईसाई-राज्य को स्थापना। क्या मैं अपने आर्य समाजी बन्धुओ से पूंछ सकता हू कि जब हमारी परम्परागत आर्य जीवन पद्धति तथा देश के सन्मुख इतनी भयंकर दुर्गति की स्थिति खड़ी हुई है, तो आप राज्य या शासन के कार्यों से अपने आप को पृथक रखकर तमाशाई बने रहना पसन्द करेंगे ? शायद कुछ महानुभावों का यह तर्क होगा, "हम प्रचलित राज्य या शासन के कार्यकलापों की ओर से पूर्णतः सजग है और अपनी-अपनी विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के माध्यम से अपने-अपने तरीको से कार्य कर रहे हैं।' हम इस प्रकार के कथन से पूर्णतः सहमत हैं। परन्तु हम उन से एक बात पूछना चाहते हैं, "क्या पार्टी के अनुशासन को महत्व देते हैं या देश के हित को ?' आज तक का अनुभव यह दर्शाता है कि पार्टी के अनुशासन को ही महत्व देना पड़ा है और देश के हित की ओर से दुर्लक्ष्य करना पड़ा है।

आज भी आर्य समाज एक प्रभावी शक्ति है, इसकी प्रादेशिक सभाएं सुव्यवस्थित और संगठित है। मैं यह चाहता हूं कि हमारी प्रादेशिक सभाए और अधिक सशक्त और प्रभावशाली बनें, ताकि देश की कोई पार्टी राष्ट्रीय महत्व के राजनैतिक कार्यों और समस्याओ का निपटारा करते समय आर्य समाज की सम्पति की अवहेलना कर सके। आर्य समाज की सभी प्रादेशिक सभाओं का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे देश की समस्याओ की ओर सजग रहकर अभिरुचि लें। मैं यह नही कहता कि उन्हें राजनैतिक कार्यो मे प्रत्यक्ष रूप मे अपने आपको झोकना चाहिए। किन्तु राजार्य सभाएं अपने पवित्र दामन और

—क्रमशः

(पृष्ट २ का शेष)

हजारवा भाग जीव का है—भाग: जीव: स: विज्ञेय: ।एक बाल के अग्रभाग का दस हजारवा हिस्सा कल्पना का ही विषय हो सकता है, इसलिए जीव के परिमाण की यहां कल्पनामात्र की गई है, उसका परिमाण नहीं बतलाया गया। ऐसा सूक्ष्मतम जीवात्मा अनन्त सामर्थ्यवाला है— यह कल्पना की बात है —स च आनन्त्याय कल्पते ॥९॥

अ गुष्टमात्र की बात इसी उपनिषद् के तृतीय अध्याय के १३वें श्लोक में परमात्मा के विषय मे भी कही गई है। वहा भी अ गुष्ट केवल सूक्ष्मता का प्रतीक है, परिमाण का नही।

आत्मा का रूप तथा परिमाण कहने के बाद उसके लिंग के विषय मे कहते हैं वह स्त्री नही, पुरुष नही—नैव स्त्री न पुमान् एप, न ही आत्मा नपुंसक है—न चैव नपुंसक। जिस-जिस शरीर को यह ग्रहण करता है— यद् यद् शरीर आदत्ते, उसी-उसी शरीर के लिंग के साथ उसका नाम रखा जाता है — तेन तेन स: रक्ष्यते। यहा 'रक्ष्यते' से अभिप्राय 'लक्ष्यते' से है, या रखा जाता है। ॥१०॥

जैसे घास की वृद्धि वृष्टि के जल से होती है, वैसे ही संकल्प-मोह, स्पर्शन-मोह तथा दृष्टि-मोह रूपी जल से आत्मा की विवृद्धि—आत्मा का प्रपंच बढता है। यह देही—जीवात्मा — कर्मों के अच्छे-बुरे अनुक्रम से - कर्मानुगानि अनुक्रमेण, भिन्न-भिन्न स्थानो में —स्थानेषु, भिन्न-भिन्न रूपों को— रूपाणि, प्राप्त होता है—अभिसंप्रपद्यते ॥११॥

संकल्पन - मोह, स्पर्शन-मोह तथा दृष्टि-मोह का क्रम बडा मनोवैज्ञानिक है। संसार में मनुष्य जो कर्म करता है उनका क्रम यही है। पहले सकल्प होता है, फिर वह सकल्प जब बार-बार आता है तब सकल्प - मोह की अवस्था मनुष्य पर छा जाती। उसके बाद उस संकल्प को पूरा करने के लिए हाथ-पैर चलने लगते हैं। बार-बार इस क्रम मे पड जाने की अवस्था स्पर्शन-मोह है—स्पर्श से अभिप्राय निकटता मे जाने से है। कर्म की तीसरी अवस्था तब आती है जब जो काम हम करना चाहते हैं वह आँखो के सामने लगातार बना रहता है। इसी को उपनिषत्कार ने दृष्टि मोह कहा है। इन तीनों अवस्थाओं का परिणाम जीवात्मा के भिन्न-भिन्न कर्म हैं। इसका यह भी अर्थ है कि संकल्प, स्पर्श, दृष्टि तथा इनके मोह से मनुष्य कर्म के प्रपंच में फसता है ;

जीवात्मा स्थूल-सूक्ष्म तथा अनेक रूपों को—स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि च रूपाणि देही, अपने अच्छे-बुरे या सत्व, रज, तम आदि गुणो के कारण - स्व गुणै, अनेक रूपो को ग्रहण करता है— वृणोति। ये गुण दो प्रकार से जीवात्मा के साथ आते हैं। एक प्रकार तो वह है जो इसने इस जन्म में क्रियाएं या कर्म किये होते हैं—क्रियागुणै:, दूसरा प्रकार वह है जो इसके पिछले जन्म के कर्म किये होते हैं जो इसका आत्मगुण बन चुके होते हैं —आत्मगुणै: च। इन दोनों प्रकार के गुण—वर्तमान तथा भूत — इनके सयोग का कारण, अर्थात् इन सबको मिलाकर उनका यथार्थ फल देने वाला—संयोगहेतु, कोई ऊपर है, दूसरा है—अपर: अपि दृष्ट:। वह दूसरा परमात्मा के सिवाय कौन हो सकता है? ॥१२॥

वह अनादि तथा अनन्त - अनादि अनन्तम्, जो इस परिवर्तनशील संसार के बीच—कलिलस्य मध्ये, इस विश्व का स्रष्टा है—विश्वस्य स्रष्टारम्, जिसके पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश आदि अनेक रूप हैं—अनेक रूपम्, जो संपूर्ण विश्व को इकला परिवेष्टन कर रहा है —विश्वस्य एकं परिवेष्टितारम्, उस देव को जान कर—ज्ञात्वा देवम्, जीव सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है— मुच्यते सर्वपाशै: ॥१३॥

उसे भावना से, श्रद्धा तथा भक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है—भावग्राह्यम्। उसका कोई नीड—स्थान विशेष नहीं है, वह सब जगह मौजूद है, इसलिए उसे 'अनीड्य' कहा जाता है — अनीड्याख्यम्। वह कल्याणकारी है इसलिए यथोचित रूप मे भाव तथा अभाव दोनो कर देता है—भाव अभाव करं विश्वम्। वह सौन्दर्ययुक्त सृष्टि का रचनेहारा है—कला सर्ग करम् देवम्। जो सृष्टि के रचनहारे भगवान् को जान जाते है वे उस देव की अराधना में इस शरीर को आहुति के रूप में दे देते हैं, अर्थात् फिर उनका पिंड में इस शरीर से तथा ब्रह्माड में इस संसार से मोह नहीं रहता ये विदु ते जहु तनुम् ॥१४॥

□

आर्यसमाजों के सत्संग

११-१-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; अमर कालोनी—पं० सत्य भूषण वेदालंकार; आर्यपुरा—आचार्य हरिदेव सि० भू०; आर० के० पुरम सैक्टर- —पं० हरीश वेदी; आनन्द विहार हरिनगर एल ब्लाक—पं० दिनेश चन्द्र शास्त्री पाराशर; इन्द्रपुरी - पं० ओमवीर शास्त्री; किदवई नगर—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; कालका जी—पं० प्रकाश चन्द शास्त्री; कोटला मुबारिक पुर—श्रीमती लीला वती आर्या; गीता कालोनी—प्रो० वीर पाल विद्यालंकार; ग्रेटर कैलाश-II—पं० मुनि शकर वानप्रस्थी; गुड़मन्डी—प० रामरूप शर्मा; १५१-गुप्ता कालोनी—प० गजेन्द्र पाल शास्त्री; गोविन्द भवन दयानन्द-वाटिका—पं० वीरव्रत शास्त्री; जगपुरा भोगल—पं० प्रकाश वीर व्याकुल; जनकपुरी सी-III—पं० हीरा प्रसाद शास्त्री; जनकपुरी बी ब्लाक—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; तिलक नगर—प० विजय पाल शास्त्री; तीमार पुर—वैद्य राम किशोर; दरियागज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; देव नगर—श्रीमती सुशीला—राजपाल; नारायण विहार—ला० लखमी दास; न्यू मोती नगर—पं० विश्व प्रकाश शास्त्री, निर्माण विहार—प० आशा नन्द भजनोपदेशक; पंजाबी बाग—पं० खुशीराम शर्मा, पजाबी बाग एक्स्टैनशन १४/३ - पं० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; बाग कड़े खां—प० बरकत राम भजनोपदेशक; बासई दारापुर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; बिरला लाईन्स—आचार्य कृष्णगोपाल; माडल टाउन—पं० दिवाकर शर्मा माडल बस्ती—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; महावीर नगर—श्री मोहन लाल गांधी; महरौली—पं० देवेश; मोती नगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी; मोती बाग—डा० महावीर दर्शनाचार्य, रमेश नगर - पं० जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; लड्डू घाटी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; लाजपत नगर—पं० ईश्वर दत्त; लक्ष्मी बाई नगर ई-१२०८—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; विक्रम नगर—पं० अशोक कुमार विद्यालकार; विनय नगर—पं० प्राण नाथ सिद्धान्तालकार; सदर बाजार पहाड़ी धीरज; प्रो० सत्यपाल बेदार; सरस्वती विहार—पं० केशव चन्द्र मुन्जाल, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सराय रोहिल्ला—डा० रघुनन्दन सिंह; शादी खामपुर—पं० हरिदत्त शास्त्री वेदाचार्य; हौजखास ई-४९—पं० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक;

(ज्ञानचन्द डोगरा वेद-प्रचार विभाग)

शोक समाचार

श्री पं० विद्यानन्द जी मस्तकी अब नहीं रहे।

आर्य समाज के विद्वान् उपदेशक, अद्वितीय शास्त्रार्थ-महारथी श्री प० विद्यानन्द जी मस्तकी का देहावसान ९४ वर्ष की अवस्था में २८ नवम्बर १९८० ई० को सायंकाल उनके निवास स्थान (बड़ागणेश) पर हो गया। आदरणीय पंडित जी आर्य सिद्धान्तों के पूर्ण विद्वान्, प्रतिभावान्, ओजस्वी व्याख्याता, तथा अद्भुत शास्त्रार्थ महारथी थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में व्यतीत किया। पिछले कुछ वर्षों से आप रुग्ण थे और वाराणसी मे ही अपने घर पर रहते थे।

उनका अन्त्येष्टि संस्कार २९ नवम्बर को मध्याह्न पूर्ण वैदिक रीति से मणिकर्णिका घाट पर किया गया। उनकी अन्तिम यात्रा में नगर के सभी आर्यसमाज-लल्लापुरा, मुगलसराय, भोजूबीर, शिवपुर, तथा बुलानाला के आर्यसदस्य तथा अधिकारीगण एवं काशी के संभ्रात नागरिकगण सम्मिलित हुए।

महाशय चुन्नीलाल के निधन पर शोक सभा

दिनांक २३-११-८० रविवार को आर्य समाज राजौरी-गार्डन मे एक-शोक-सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सभी सदस्यो ने महाशय चुन्नीलाल जी का निधन समाचार अत्यन्त शोक के साथ सुना।

दिवगत आत्मा अत्यन्त ही दानशील समाजसेवी, धर्म-परायण एवं कर्मठ रही है। उनका जीवन वैदिक संस्कृति से ओतप्रोत रहा है। अपनी सतति को भी उन्होंने आर्य विचार धारा मे दीक्षित किया। उनके सुपुत्र महाशय धर्मपाल जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान पद पर रह कर आज भी समाज की सेवा में सलग्न हैं। महाशय चुन्नीलाल जी के दिवगत होने से न केवल उनके परिवार को अपितु समाज को भी अपार क्षति हुई है।

यह सभा दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है एवं उनके शोक-सन्तप्त परिवार के लिए धैर्य की याचना करती है।

स्वामी श्रद्धानन्द ५४वीं बलिदान जयन्ती के अवसर पर :—

विशाल जलूस

(हमारे संवाददाता द्वारा)

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिल्ली के आर्यसमाजियो ने स्वामी जी की बलिदान जयन्ती के अवसर पर एक विशाल जलूस निकाला। लगभग तीन लाख लोगों ने भाग लिया।

प्रात: १० बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन में यज्ञ के पश्चात जलूस प्रारम्भ हुआ जो पुरानी दिल्ली के विभिन्न मुख्य मार्गों से होता हुआ गांधी मैदान पहुंच कर एक सभा में परिवर्तित हो गया।

जलूस में सबसे आगे 'ओ३म्' ध्वज लिए आर्य वीर चल रहे थे। फिर हाथियों पर सवार सन्यासीगण, स्कूटर सवार तथा एक खुली जीप में श्री वन्देमातरम्, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री वेदराज चौधरी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, एव महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष दानवीर महाशय धर्मपाल जी विराजमान थे। उनके पीछे आर्य बन्धु, स्कूली बच्चे तथा बैण्ड बाजों के साथ आर्यसमाजों तथा संस्थाओं की टोलियां भजन गाती चल रही थीं।

जलूस का आकर्षण युवकों का व्यायाम तथा लाठी प्रदर्शन था। जगह-जगह पर तोरण द्वार बनाए गए थे। घंटाघर टाउन हाल चौक पर जलूस का स्वागत दीवान हाल आर्यसमाज ने किया। कई आर्यसमाजों ने बच्चों में मिठाई बांटी। □

रजि० डी (सी) ७५३

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भारिता प्रैस ७२७/१-बी, ... दिल्ली-२१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ : अंक १३ रविवार २५ जनवरी १९८१ दयानन्दाब्द १५६
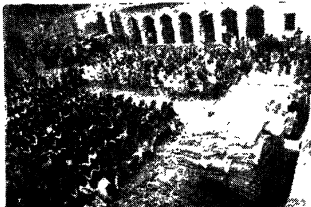
आयोजित सभा का एक दृश्य, सिलाई की मशीनें और रजाईयां बीच में रखी हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवालों का स्वागत करते हुए श्री राममोहन।

मुरादाबाद में दंगापीड़ित हरिजनों की आर्यसमाज द्वारा सहायता :

पीड़ितों में सिलाई मशीनों और रजाईयों का वितरण

मुरादाबाद में मुसलमानों द्वारा हरिजन बस्ती पर आक्रमण करके उनके मकान आदि नष्ट करने और उनकी महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने के समाचार आर्य संदेश में दिए जा चुके हैं। इन पीड़ित हरिजनों की सहायता के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले इस क्षेत्र का निरीक्षण करने गये थे और वहां उन्होंने इस दंगाग्रस्त क्षेत्र के पीड़ित और गरीब हरिजनों की सहायता के प्रथम चरण का श्रीगणेश किया। लाला जी के वहां पहुंचने पर जनता की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया। आर्यसमाज गंज तथा आर्य कन्या विद्यालय ने मिलकर इस स्वागत समारोह का आयोजन किया था।

इस सारे आयोजन का संयोजन मुरादाबाद के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री राम मोहन ने किया था और उन्होंने मान्य अतिथि श्री लाला रामगोपाल जी तथा अन्य प्रमुख अतिथियों का मालाएं अर्पित करके स्वागत किया।

लाला रामगोपाल जी ने उन महिलाओं को सिलाई की मशीनें भेंट की जिनके पतियों की दंगों में हत्या कर दी गई थी। इसके साथ ही असहाय गरीबों को भी रजाईयां वितरित की गईं। दंगों के कारण नष्ट हुए मकानों के निर्माण का कार्य भी शुरू करा दिया गया है। यह भी घोषणा की गई है कि इस क्षेत्र के पीड़ित नवयुवकों को बैण्ड का पूरा सामान दिया जायेगा जिससे वे अपनी आजीविका के लिए किसी पर निर्भर न रहें। साथ ही यहां के लोगों को बर्तनों पर कलात्मक काम का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करने में आर्यसमाज की ओर से सहायता देने की घोषणा की गई।

इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं को भी परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर पारितोषिक वितरण किया गया।

मुस्लिम विश्वविद्यालय के निर्माण का विरोध

मुरादाबाद में ही जैन मंदिर के प्रांगण में आयोजित हिन्दू नागरिकों की एक विशाल सभा में मुस्लिम तुष्टिकरण की सरकारी नीति का विरोध करते हुए मांग की गई कि मुरादाबाद में बन रहे मुस्लिम विश्वविद्यालय का निर्माण रोका जाये। इस आयोजन के प्रमुख वक्ता प्रो० रामसिंह और महात्मा वेदभिक्षु थे।

इसी सिलसिले में महिलाओं की हुई एक सभा में भी इन मांगों को दोहराया गया। □

रिश्ते ही रिश्ते !

सम्भ्रान्त परिवारों के पुत्र-पुत्रियों के वैवाहिक सम्बन्धों के लिए श्री राममूर्ति कैला, प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली की सेवाओं से लाभ उठायें।

इस अंक में......

सम्पादक—वि० सा० विद्यालंकार

वेद मनन :

व्रत पूरा करना है तो त्याग के लिए उद्यत रहो

व्रत कृणुत, अग्नि ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ।
दैवींधियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसम्;
सुतीर्था नो असद्वशेये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवः,
तेनोऽवन्तु ते न पान्तु तेभ्यः स्वाहा ।। यजु. ४-११

ऋषय :—आंगिरसः । देवता—अग्निः, यज्ञो वा ।

शब्दार्थ—अग-अग मे जीवन शक्ति को धारण करने वाला गुरु (ऋषि) शिष्य को जीवनयापन का प्रकार बताने की इच्छा से उपदेश देता है कि —

(अग्नि) स्वय प्रगति करने और दूसरो को आगे बढाने का सकल्प (ब्रह्म) ब्रह्म के समान सखा, बडा बनाने वाला है। (अग्नि) प्रगति सकल्प ही (यज्ञ:) श्रेष्ठ कर्मो का प्रवर्तक है। (वनस्पति) ज्ञान अथवा सम्यक् भक्ति मे श्रेष्ठता (स्वामित्व) प्राप्त करके हो मनुष्य (यज्ञिय) पूजा के योग्य, सगति के योग्य अथवा ज्ञान या भक्ति का प्रसार करने योग्य बनता है। इसलिए इन तीनों बातो को ध्यान मे रख कर (व्रतं कृणुत) अपने जीवन के लिए कोई सकल्प—ग्रहण करो और उसे रूप मे परिणत करने के लिये जीवन भर उसके लिए अनुष्ठान करो।

शिष्य गुरु मे प्रार्थना करते हैं कि —

हम (समृडीकाम्) सुगमता से सुख प्राप्त कराने वाली (वर्चोधाम्) ज्ञान और दीप्ति धारण कराने वाली (यज्ञवाहसम्) सब श्रेष्ठ कर्मों तथा परमेश्वरोपासन को प्राप्त कराने वाली (दैवीधियम्) दिव्य बुद्धि तथा तदनुसारिणी क्रिया शक्ति की (अभिष्ट ये) अपने अभीष्ट सकल्पो की पूर्णता तथा प्राप्ति के लिए (मनामहे) याचना करते है। आप ऐसी कृपा कीजिये कि आपके सान्निध्य मे निवास करते हुए (सुतीर्था) सब बाधाओ को पार करा के, सकल्प को पूर्ण कराने वाली तथा जीवन नदी को तराने वाली दिव्य बुद्धि (नः) हमारे (वशे) वश में (असत्) रहे।

गुरु शिष्य दोनों मिलकर परस्पर सहयोग भावना से प्रण करते हैं कि हम दोनों को इस सकल्प को पूर्ण कराने के लिए —

(मनोजाता.) मन मे उत्पन्न हुई (ये) जो (देवा) दिव्य भावनाए हैं, और (मनोयुजः) मन से संयुक्त होकर कार्य करने वाली (ये) जो (देवा.) ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, और (दक्षक्रतव.) बल तथा दक्षता से कार्य करने वाली (ये) जो (देवा:) कर्मेन्द्रियाँ है (ते) वे सब (न) हमे (अवन्तु) प्रगति, ज्ञान, क्रिया शक्ति प्रदान करके सदा आगे बढाती रहे। (ते) उपरोक्त सब देव (न) हमारी आपत्तियों तथा कठिनाइया आने पर (पान्तु) रक्षा करते रहे।

(तेभ्यः) इन सब दिव्य भावनाओ संकल्पों को पूर्ण करने के लिए हम (स्वाहा=सु—आ—हा) अच्छे रूप में, सब प्रकार के, अपने सुख सुविधाओ को त्यागने के लिए उद्यत रहने का प्रयत्न करते हैं और अभ्यास के द्वारा उनका पूर्ण त्याग करते हैं।

यदि हम अपने संकल्प के लिए जीवन को स्वाहा कर सके, तो हमारे बाद जनसमूह अवश्य कहेगा कि—(स्वाहा) इन गुरुशिष्यो की बुद्धि सत्यमयी थी, वाणी सत्य थी, और जो कहते थे उसे करके दिखाने वाले थे—इनकी क्रिया सत्य थी।

निष्कर्ष—१—प्रथम आगे बढने, बडा बनने, पूज्य बनने के उपाय तथा प्रकार जानने चाहिए। उसके बाद उनमें से किसी एक को अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प लेकर उसे पूरा करने के लिए तदनुकूल ज्ञान प्राप्त करके कर्म करते रहना चाहिए।

सकल्प सिद्धि के अनुकूल अपनी भावनायें बनानी चाहिये। अपनी ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों का प्रयोग करना चाहिए। यहाँ तक कि संकल्पपूर्ति के लिए आत्म बलिदान (स्व आहुति) तक करने को उद्यत रहना चाहिए।

२—इस प्रकार अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सकल्प को पूर्ण करने की इच्छा से आत्म बलिदान करने वाले महापुरुष—स्वामी दयानन्द, महात्मा ईसा, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा बुद्ध और महात्मा गाधी प्रभृति महान् (ब्रह्मसमान) बन जाते हैं। सब उनकी (यज्ञिय) मानकर पूजते हैं। ये महापुरुष ही जाति और देश को आगे बढाने वाले (अग्नि) होते हैं।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि—अगिरस या आंगिरस सकेत करता है कि जब तक गुरु और शिष्य दोनो के अंगो मे जीवनी शक्ति, मनो में दृढ़ सकल्प और आत्मा में परमात्म विश्वास नहीं होगा तब तक वे न स्वयं अग्नि बन पायेंगे, न किसी यज्ञ को पूरा कर पायेंगे।

अर्थ पोषक प्रमाण—मनामहे याञ्चा कर्मसु। नि. ३-१९-१६, यज्ञियः—यज्ञार्हः।

यज्ञ—यज्ञ देव पूजा संगति करण दानेषु। अवन्तु – अव – गति – अवगम क्रिया—वृद्धिपु।

वनस्पति :—वनु ज्ञाने, ज्ञानाध्यक्ष। वणषण सभक्तो भक्तशिरोमणिः।

व्रत: व्रतम्—सकल्प, आचरण, जीवनचर्या, अनुष्ठान, कर्म। आपटेकोश

अगिरस :—अंग-अंग में जिनके रस (जीवनी शक्ति) है।

आंगिरस :—अंगिरा का पुत्र या शिष्य।

अग्नि :—परमात्मा, प्रगति, संकल्प

वर्चोधाम्—विद्यां दीप्ति दधातिताम्। यज्ञवाहसम—यज्ञ परमेश्वरोपासनं वहति प्रापयति। स्वामी दया०। मनोजाता—मन में उत्पन्न भावनाएं।

मनोयुज:—मन से जुड़कर कार्य करने वाली ज्ञानेन्द्रियां। दक्षक्रतव:—दक्षता तथा बल सहित कार्य करने वाली कर्मेन्द्रियां।

स्वाहा—सत्यामतिः, सत्यावाणी, सत्याक्रिया। स्वामी दया०। सु+आ+हा (भगवदाचार्य)

—मनोहर विद्यालंकार

'लेह लद्दाख को केंद्र शासित बनायें' :

शेख अब्दुल्ला के पुराने पैंतरे फिर चालू

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने भारत की प्रधान मन्त्री को पत्र लिखकर लेह लद्दाख की स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट किया है और अपने पत्र में लाला जी ने लिखा है कि यदि तुरन्त लेह लद्दाख को शेख के चगुल से नहीं बचाया गया तो वह क्षेत्र मुसलमान बहुल बना दिया जायेगा।

लेह के सम्बन्ध मे शेख की चाल को उजागर करते हुए आपने लिखा है कि वहाँ पर नियुक्त किए जाने वाले अधिकारी मुसलमान ही होते हैं। ये अधिकारी अपने प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तबलीग (धर्म परिवर्तन) कराकर उनको मुसलमान बनाते हैं।

लेह लद्दाख का व्यापार भी केवल मुसलमानों के हाथ में ही दिया गया है। वहां के निवासी बौद्धों के हाथ से जिविका के साधन छीने जा रहे हैं। जिससे मजबूर होकर बौद्ध इस्लाम को स्वीकार करने पर मजबूर होते है। उनके मुसलमान बन जाने पर शेख सरकार सभी सुविधायें प्रदान कर देती है। अपने पत्र को पूरा करते हुए श्री लाला जी ने शेख साहब के जम्मू में किए कारनामों का भी जिक्र किया है जिसमें बताया है कि जम्मू में बबक खान मुसलमानों को बताकर हिन्दुओं को अल्पसख्यक बनाने की कोशिशें पूरे जोर से चल रही हैं।

भारत सरकार चेते और लेह लद्दाख को केन्द्र शासित बनाकर शेख के चंगुल से बचाये और वहाँ के निवासी बौद्धों और लामाओं को जन जातियों में सम्मिलित करके सुविधा प्रदान करें।

इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि लद्दाख क्षेत्र में काफी समय से यह आन्दोलन चल रहा है कि उसे कश्मीर राज्य से अलग करके केन्द्र शासित क्षेत्र बना दिया जाए। इस मांग का मुख्य कारण स्थानीय लोगों की यह शिकायत है कि उनके साथ भेदभाव बरता जा ता है और उनके क्षेत्र के आर्थिक विकास पर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जाता। अब यह आन्दोलन इस रूप में

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ग्राहकों से निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है, वे कृपया अपना शुल्क शीघ्र से शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

सम्पादकीय

साम्प्रदायिक नियुक्तियां

समाचार पत्रों से पता चलता है कि आन्ध्र प्रदेश में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के १५५ स्थानों को भरने के लिए ४६ मुसलमान २६ अनुसूचित जाति, ११ अनुसूचित जनजाति, ११ भूतपूर्व सैनिक भरती करने का निश्चय किया गया है। शेष ५७ स्थान सर्वसाधारण के लिए होंगे। साम्प्रदायिक आधार पर इस प्रकार की नियुक्तियां न केवल संविधान के विरुद्ध हैं बल्कि भारत सरकार की अब तक की नीतियों के भी विपरीत हैं। सरकारी नियमों के अनुसार अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और सैनिकों के लिए तो स्थान सुरक्षित रखे जा सकते हैं परन्तु मुसलमानों, ईसाईयों, सिखों, हिन्दुओं या अन्य सम्प्रदायों अथवा वर्गों के लिए आरक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए स्थान सुरक्षित रखने की भी सरकारी नियमों में कोई व्यवस्था नहीं है।

साम्प्रदायिक आधार पर की जाने वाली नियुक्तियां क्योंकि संविधान विरोधी हैं। इसलिए सरकार भी इस प्रकार की नियुक्तियों के समाचारों का खंडन करती रही है। सरकार ने अतिरिक्त केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की ७ बटालियन बनाने का जो फैसला किया है उसके प्रथम चरण में ही इस प्रकार की साम्प्रदायिक नियुक्तियों की व्यवस्था की गई है। इसकी पुष्टि स्वयं सरकार द्वारा इन नियुक्तियों के लिए दिये गये विज्ञापनों से हो जाती है।

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश तथा देश के अन्य भागों में जो साम्प्रदायिक दंगे हुए अथवा मुरादाबाद में जो मुस्लिम विद्रोह हुआ, उसके बाद निरन्तर कुछ राजनीतिक दलों और मुस्लिम संगठनों द्वारा यह मांग की जाती रही है कि पुलिस में मुसलमानों को उनकी जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व दिया जाये। इस प्रकार की मांग करने वालों में कांग्रेस आई के संसद सदस्य भी रहे हैं। इसी मांग अथवा राजनीतिक दबाव के सामने भारत सरकार झुक गई और उसने ७ या ८ अतिरिक्त केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल बनाने की घोषणा की इसके साथ ही यह भी समाचार अखबारों में छपा कि इन बटालियनों ने कुछ अल्पसंख्यक सम्प्रदायों को विशेष प्रतिनिधित्व दिया जायेगा। परन्तु इस समाचार का केन्द्रीय गृहमन्त्री ने खण्डन किया। गृहमन्त्री का कहना था कि इन विशेष बटालियनों का उद्देश्य केवल दंगों का सामना करना होगा। परन्तु अब तथ्य जिस रूप में सामने आ रहे हैं उनसे यह स्पष्ट हो गया है कि देश में एक बार फिर से साम्प्रदायिक नियुक्तियों का नया दौर शुरू हो गया है।

ऐसा प्रतीत होता है साम्प्रदायिक आधार पर नियुक्तियां करने का फैसला करते समय केवल अपने वोट बैंक के विस्तार का ध्यान रखा गया। इससे उत्पन्न होने वाले राजनीतिक परिणामों पर ध्यान नहीं दिया गया। दुर्भाग्यवश स्वतन्त्रता पूर्व के उन तथ्यों को भी सामने नहीं रखा गया जिनके कारण सन् ४७ तक आते-आते देश की पूरी प्रशासनिक व्यवस्था साम्प्रदायिक आधार पर बट चुकी थी और प्रशासन के विभिन्न सम्प्रदाय परस्पर विरोधी और देश के हितों के विपरीत कार्य करने में लगे हुए थे। ये नई साम्प्रदायिक नियुक्तियां अब फिर से प्रशासन तन्त्र के भीतर उन साम्प्रदायिक तत्वों को एक दूसरे के आमने-सामने एक दूसरे के विरोधी शिविरों में लाकर खड़ा कर देंगी और इस प्रकार पूरा प्रशासन तन्त्र प्रभावहीन हो जायेगा और देश के विभिन्न सम्प्रदायों को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने के काम में जुट जायेगा।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में इस समय विभिन्न सम्प्रदायों के लिए अलग-अलग कानूनों की व्यवस्था, एक ही क्षेत्र में दो भाषाओं की व्यवस्था, पहले ही देश को एक नये विभाजन की दिशा में ले जा रही है। अब ये साम्प्रदायिक नियुक्तियां इन विभाजनवादी प्रवृत्तियों को और अधिक प्रोत्साहन देंगी और इस प्रकार एक बार फिर से देश के खंडित होने का खतरा पैदा हो जायेगा।

□

जनगणना और आर्यसमाज

इस बार देश भर में जनगणना का अन्तिम दौर फरवरी १९८१ के प्रथम सप्ताह से प्रारम्भ हो रहा है। इसमें अन्य सूचनाओं के साथ परिवार के मुखियां और व्यक्तियों के धर्म भाषा और जाति सम्बन्धी जानकारी भी एकत्रित की जायेगी। आर्यसमाज की दृष्टि से भी इस जनगणना में इन आकड़ों का बड़ा महत्व है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है, प्रजातन्त्र में संख्या का वैसे भी बड़ा महत्व है उसी के आधार पर सरकार की धार्मिक, सामाजिक आदि अनेक नीतियां निर्धारित होती हैं।

सार्वदेशिक सभा का आदेश

गत जनगणनाओं के समान इस बार भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने २३ सितम्बर १९८० के सर्व सम्मत निश्चय द्वारा सब आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण संस्थाओं और आर्य स्त्री, पुरुषों को यह आदेश दिया है कि प्रत्येक आर्य नर-नारी अपनी जाति आर्य और धर्म वैदिक और भाषा हिन्दी लिखाये। संगठन और अनुशासन की दृष्टि से इस आदेश का पालन जरूरी है ही किन्तु सिद्धांत और ऋषि दयानन्द के स्पष्ट आदेशों के आधार पर अपने को केवल आर्य लिखना प्रत्येक आर्य-समाजी का नैतिक कर्त्तव्य भी है। सन् १८८१ की जनगणना के समय स्वयं ऋषि दयानन्द ने अपने एक परिपत्र द्वारा यह आदेश दिया था कि सब आर्य अपनी जाति 'आर्य' तथा धर्म 'वैदिक धर्म' ही लिखाये।

(देखिए कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार पत्र संख्या २०६) इसी आदेश के अनुसार १८८१ से अभी तक की सारी जनगणनाओं में आर्यों ने अपने को आर्य ही लिखाया हैं।

हिंदू आर्य विवाद :—

यह स्मरण रखने योग्य बात है कि जब हिन्दू और आर्य शब्दों के सम्बन्ध के विवाद था तब भी आर्यों ने विरोध और बहिष्कार की चिन्ता किए बिना अपने को सब जनगणनाओं में आर्य ही लिखाया है, अब तो यह विवाद समाप्त प्रायः होकर नमस्ते के समान आर्य शब्द भी लोकप्रिय हो गया है। इस पर भी यदि हम अपने को आर्य लिखाने में किसी प्रकार का संकोच करते है तो यह केवल हमारी अपनी कायरता और कमजोरी का प्रमाण समझा जायेगा।

आर्य लिखने से हम हिन्दू समुदाय से अलग या भिन्न समझे जायेंगे यह आशंका भी अब नहीं रही। जैसा सार्वदेशिक सभा ने अपने आदेश में स्पष्ट कर दिया है कि आर्यों की पृथक गणना होने पर भी उनको हिन्दुओं से अलग नहीं समझा जायेगा, और उनकी गिनती हिन्दुओं की संख्या के योग में ही की जायेगी। यह स्पष्टीकरण भारत सरकार के जनगणना विभाग से अधिकृत सूचना प्राप्त करने के बाद किया गया है। सन १९७१ की भारत की जनगणना की रिपोर्ट के भाग २ (सी) के पृष्ठ ११० से ११६ तक में दिये गये धर्म सम्बन्धी आंकड़ों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि आर्य या आर्यसमाजी अथवा वैदिक धर्म इनमें से कुछ भी लिखाने पर इन सबकी गणना हिन्दुओं के मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत ही की गई है।

लेखक :
श्री दत्तात्रेय वाब्ले

हिन्दु एकता और संगठन

हिन्दू एकता की दृष्टि से भी यदि सनातनी और पौराणिक धर्म से भिन्न होने के कारण हम अपने को आर्य लिखाते हैं तो उसके कारण जैन, बौद्ध और सिक्खों को भी ऐसा करने की प्रेरणा दी जा सकती है, उनके धर्म ग्रन्थों में और प्राचीन साहित्य में उन्हें भी आर्य कहा गया है। किन्तु वर्तमान में हिन्दू का गलत अर्थ केवल हिन्दू धर्म किए जाने के कारण वे अपने को हिन्दुओं से पृथक होने का आग्रह करते हैं। आर्य शब्द वैसे भी श्रेष्ठ तथा स्वाभीमान का वाचक है यही हम सबका अपनी व प्राचीन नाम भी है। इसलिए हम सब आर्य लिखाकर भी अपने भिन्न धर्मों के अन्तर्गत माने जा सकते है।

सावधानी की आवश्यकता

आगामी जनगणना में धर्म, जाति आदि की सूचना परिवार के मुखिया या उस समय घर में उपस्थित व्यक्ति से ली जायेगी इसलिए हमें उन्हें अभी से सावधान कर देना चाहिए कि वे धर्म के उत्तर में आर्य, आर्यसमाजी तथा वैदिक धर्म ही बताए। केवल आर्य लिखाने से भी धर्म वैदिक ही समझा जायेगा। चाहे जाति के उत्तर में हम और कुछ भी लिखा दें यद्यपि आर्यों को जाति के कालम में भी आर्य ही लिखाना चाहिये। इसी प्रकार आर्य या वैदिक के साथ हिन्दू लिखाने की भी आवश्यकता नहीं हैं। बल्कि दोनों लिखने से खतरा है कि गणक केवल हिन्दू ही लिखे और आर्य लिखना छोड़ दे या भूल जाये। कई राज्यों में गणकों को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के अवसर पर :—

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का वेद सम्मेलन में अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण :

(गतांक से आगे)

पकड़-पकड़ कर बलात् यज्ञक्रिया मे घसीटा जाने लगा। इतना ही नही, शतपथ ब्राह्मणादि वेद के व्याख्यान ग्रन्थो तक मे प्रक्षेप कर उन्हे दूषित करने की चेष्टा की जाने लगी। यजुर्वेद के २३वे अध्याय के राजधर्म का प्रतिपादन करने वाले १९ से ३१ तक के मन्त्रो का इतना अश्लील और वेहूदा अर्थ किया गया है कि वैसा करने पर स्वय महीधर ग्लानि अनुभव कर ३२वे मन्त्र का अर्थ करते हुए कहते हैं—"अश्लीलभाषणेन दुर्गन्ध प्राप्तानि अस्माक मुखानि सुरभीणि यज्ञ. करोतु।" अर्थात् इस अश्लील भाषण के कारण जो हमारे मुख दुर्गन्धित हो गये इन्हे यज्ञ सुगन्धित कर दे। मन्त्र मे न अश्लील शब्द है और न मन्त्रो के अर्थों मे कही अश्लीलता है। स्वयं ही पहले अश्लीलता आरोपित कर दी और स्वय ही उस अपराध के लिए प्रायश्चित की वात कह डाली। शतपथ ब्राह्मण मे भी इन मन्त्रो का वैसा अर्थ उपलब्ध है। परन्तु शतपथ ब्राह्मण मे ही अन्यत्र इस मन्त्र का अत्यन्त शुद्ध, युक्तियुक्त एव उपादेय अर्थ भी उपलब्ध है। इससे स्पष्ट है कि मास भक्षण, मदिरापान, पशुबलि गुप्तेन्द्रिय-पूजन आदि आसुरी प्रवृत्तियो का ब्राह्मणादि ग्रथो में प्रक्षेप कर दिया गया और उन्हे वेद की सज्ञा देकर अपनी मान्यताओ की वेद के नाम पर पुष्टि कर दी गई। क्या वेद इसी प्रकार के कुकृत्यो का प्रतिपादन करता है? यदि इसका उत्तर 'हा' मे है तो बुद्ध जैसे पवित्र हृदय महात्मा के स्वर मेस्वर मिला कर लोग यही कहने को विवश होगे कि हम ऐसे वेदो को नही मानते। परन्तु इसमे वेद का दोष नही है। दोष उस ऐनक का है जिसमे से देखने पर सब हरा ही हरा दीख पड़ता है।

इसमे सन्देह नही कि सायणाचार्य ने अपने समय मे वैदिक साहित्य में महान् प्रयास किया। इस प्रयास के लिए हम उन्हे साधुवाद दिये बिना नहीं रह सकते। परन्तु मूलभूत धारणा के भ्रान्त होने के कारण उन्होंने स्वयं ही अपने किये कराये पर पानी फेर दिया।

"सर्व वेदात् प्रसिध्यति"—मानों भगवान् मनु के वचन की व्याख्या करते हुए सायणाचार्य ने तैत्तिरीय सहिता भाष्य के उपोद्घात मे स्पष्ट घोषणा की—

"प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।

एत विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता॥

अर्थात्—प्रत्यक्ष अथवा अनुमान से जो नही जाना जाता वह वेदो से अवश्य जाना जाता है। यही वेद का वेदत्व है।

परन्तु 'राजा कालस्य कारणम्'—शासन व्यवस्था का प्रभाव साधारणतया छोटे बड़े सभी पर पड़ता है। सायणाचार्य विजयनगरम् राज्य मे प्रधान मंत्री थे। वह यज्ञप्रधान युग था और यज्ञो में हिंसा अनिवार्य मानी जाती थी। उसी को लक्ष्य करके उसने वेदभाष्य किया। कारण कुछ भी रहा हो, जब सायणाचार्य के मन मे यह धारणा घर कर गई कि वेदमन्त्र यज्ञ क्रिया का ही प्रतिपादन करते हैं और याज्ञिक अर्थ को ही कहते हैं तो यह स्वाभाविक था कि वेद सर्वज्ञानमयत्व विषयक अपनी प्रतिज्ञा को भूल कर वह अपना समस्त बौद्धिक वैभव यज्ञ प्रक्रिया के लिए समर्पित कर बैठने। त्रिविधप्रक्रिया मे याज्ञिक प्रक्रिया भी एक है, तदनुसार भी मन्त्र का अर्थ होना चाहिए। पर सायणाचार्य ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यो की परम्परा का परित्याग कर वेद मन्त्रो का केवल याज्ञिक प्रक्रिया परक ही अर्थ किया। कर्मकाण्ड की भवर मे फँसा होने के कारण उसने वेदार्थ-विषयक मूलभूत सिद्धांतों की अवहेलना वेद के आशय को यत्नपूर्वक कर्मकाण्ड के संकुचित सांचे मे ढालने की चेष्टा की की जिससे प्रभु की पवित्र वाणी वेद का गौरव जाता रहा। वस्तुतः यज्ञविषयक मिथ्या धारणा ने सायण को वेदमन्त्रों के यथार्थ तक पहुंचने ही नहीं दिया। महीधर आदि का भाष्य वाममार्ग के रंग मे रंगा है। इन भाष्यों को पढने के बाद वेद में किसी की श्रद्धा नही रह सकती और पढ़ने वाला कभी नही मान सकता कि वेद परमेश्वर की बुद्धिपूर्वक रचना है (बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे-वै० द०) या उसमें उत्कृष्ट भावनाओं, उच्च आदर्शों या ज्ञान-विज्ञान का प्रतिपादन है। वेदार्थ के विषय में भ्रान्ति उत्पन्न करके संसार को वेद से विमुख करने में सबसे बड़ा हाथ सायण का रहा है। सायण का नाम बार-बार इसलिए भी आता है कि वेदो तथा ब्राह्मण ग्रथो पर सबसे अधिक भाष्य सायण के ही उपलब्ध हैं।

इधर अनेक पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानो ने सायणादि भाष्यकारो के आधार पर अथवा तुलनात्मक भाषाशास्त्र और निजी उद्भावनाओ के आधार पर वेदों के अर्थ किए। विदेशी विद्वानो का उद्देश्य ही भारतीय जनता मे अपनी प्राचीन सस्कृति, सभ्यता तथा साहित्य के प्रति अश्रद्धा और घृणा पैदा करना था। इस दृष्टि से उन्हें सायण का भाष्य अपने अनुकूल जान पड़ा। उन्होने वेद और वैदिक वांगमय के जो अर्थ अग्रेजी मे किए, वे सब सायण के आधार पर ही किए और इस प्रकार वे वेदो को गडरियो के गीत या जगलियों की बड़बड़ाहट सिद्ध करने मे सफल हुए। यह ठीक है कि विदेशी विद्वानों ने भारतीय न होते हुए भी सस्कृत साहित्य में, विशेषत: वैदिक वाङमय में अनुकरणीय उद्योग किया। परन्तु पक्षपात तथा शास्त्र विषय मे गहरा ज्ञान न होने के कारण वे वैदिक साहित्य को उसके यथार्थ रूप मे प्रस्तुत न कर सके। विदेशियो ने जिस ध्येय को लक्ष्य मे रखकर हमारे साहित्य मे इतना घोर परिश्रम किया उसका पता मोनियर विलियम्स द्वारा अपनी संस्कृत-इगलिश डिक्शनरी की भूमिका में लिखे इन शब्दों से लग जाता है—

"That the special object of this munificent bequest (Boc'ek Chair) was to promote the translation of the scriptures into sanskrit, so as to enable his countrymen to proceed in the conversion of the natives of India to the christian religion.'

भाव यह है कि मिस्टर बोडन के ट्रस्ट द्वारा संस्कृत के ग्रन्थों के अनुवाद का कार्य भारतीयों को ईसाई बनाने में अपने देश (इंग्लैंड) वासियों को सहायता पहुंचाने के लिए हो रहा है। यही मोनियर विलियम्स अपनी पुस्तक The Study of Sanskrit in relation to missionary work in India (1861) में लिखते हैं।

"When the walls of the mighty fortress of Hinduism are encircled, undermined and finally stormed by the soldiers of the cross, the victory of christianity must be signal & complete."

इससे स्पष्ट है कि मोनियर विलियम्स का सारा परिश्रम हिन्दुत्व को नष्ट करके भारत में ईसाईमत की पताका फहराने का था।

समूचे भारत को ईसाई बना डालने का स्वप्न देखने वाले लार्ड मैकाले के जरखरीद गुलाम प्रो० मैक्समूलर का स्थान संस्कृत के यूरोपियन विद्वानों में सर्वोपरि माना जाता है। वेद के अनुसधान और अनुवाद कार्य में प्रवृत्त होने का क्या उद्देश्य था, यह उन्होंने अपनी पत्नी के नाम लिखे एक पत्र में स्पष्ट किया है—

"This edition of mine and the translation of the vedas will hereafter, tell to a great extent on the fate of India. It is the root of their religion, and to show them what the root is, I feel sure, is the only way of uprooting all that has sprung from it during the last three thousand years."

(Life and Letters of Fredrick Maxmullar, Vol. I, Chapter XV, P. 34)

अर्थात् मेरा यह संस्करण और वेदों का अनुवाद भारत के भाग्य को दूर तक प्रभावित करेगा। यह उनके धर्म का मूल है, और उन्हें यह दिखा देना कि यह मूल कैसा है, गत तीन हजार वर्षों में इससे उत्पन्न होने वाली सब बातों को जड़मूल से उखाड़ फेंकने का एक मात्र उपाय है।

इतना ही नहीं, भारत सचिव (Secretary of State for India) के नाम १६ दिसम्बर १८६८ को लिखे अपने पत्र में मैक्समूलर ने लिखा—

"The ancient religion of India is doomed. Now, if Christianity does not step, in whose fault will it be ?"

(Ibid, Vol I, Chap. XVI, P. 378).

अर्थात् भारत का धर्म नष्टप्राय है, अब यदि ईसाईमत इसका स्थान नहीं लेती तो यह किसका दोष होगा ?

सन् १८३३ मे अपनी पुस्तक Religious and Philosophical System of the Hindus के लिखने का उद्देश्य प्रो० विलसन ने इनशब्दों में व्यक्त किया है—

'These lectures were written to help candidates for a prize of f200 given by John Muir, a great Sanskrit Scholar, for the best refutation of the Hindu religious system.''

भाव यह है कि सस्कृत के महान् विद्वान् जानम्यूर न हिन्दू धर्म का खडन करने वाले सर्वश्रेष्ठ निबन्ध लेखक को २०० पौंड का पुरस्कार देने की घोषणा की। उन निबन्ध लेखकों की सहायता के लिए विलसन ने अपने भाषणों को लेख बद्ध किया।

कीथ, वैवर, विण्टरनित्ज, बुहलर, ग्रिफिथ, मैकडानल आदि सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे। सभी ने अपने-अपने ढंग से वैदिक साहित्य एवं संस्कृत को विकृत रूप देने का प्रयास किया। वस्तुत: इस सारे अनर्थ की जड़ मध्य कालीन आचार्यों विशेषत: सायण की वेदार्थ विषयक भ्रान्त धारणायें हैं। यदि इन विदेशी विद्वानो को सायण की अपेक्षा वेद का उत्तम भाष्य मिला होता तो संभवत: वेद की दुर्दशा न होती। पाश्चात्यों के द्वारा प्रस्तुत वेदादि शास्त्रों का वह स्वरूप अवश्य ही न होता जो अब है। सायण के वेदार्थ ने सबकी आंखों पर पट्टी बांध दी और अब राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाने पर भी पाश्चात्यों के भारतीय मानस पुत्रो की आँखों पर वह ज्यों की त्यों बंधी है। ऐसा न होता तो मैं इस विषय का इतना विस्तृत विवेचन न करता भारतीय विद्याभवन के सस्थापक,गुजराती के महान साहित्यकार और भारतीय संस्कृति के प्रसिद्ध पोषक श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी ने ऋग्वेद के आधार पर तत्कालीन आर्यों के विषय में लिखा है—

"इनकी भाषा में अब भी जगली दशा के स्मरण मौजूद थे। मांस भी खाया जाता था, और गाय का भी। 'अतिथिग्व' जो मांस खिलौने वाले की बहुमानास्पद उपाधि थी। सर्वसाधारण सुरा पीकर नशा करते थे। ऋषि सोमरस पीकर नशे मे चूर रहते थे। वे रूपवती स्त्रियो को आकर्षित करने के लिए मन्त्रों की रचना करते थे। कुमारी से उत्पन्न बच्चे अधम नही समझे जाते थे। कई ऋषियों के पिताओं का पता न था। आर्य भेड़िये की तरह लोभी होते थे। बीभत्सता या अश्लीलता का कोई विचार न था आत्मा का कोई ख्याल ही नही था। ईश्वर की कल्पना नहीं, नाम नहीं, मान्यता नही। भारतवर्ष के मूल निवासी शिवलिंग पूजक दस्यु थे।''

—लोपामुद्रा की भूमिका

जब मैंने पत्र लिखकर ऋग्वेद के उन मन्त्रो को बताने का आग्रह किया जिनके आधार पर उन्होने यह सब लिखा था तो उन्होने अपने पत्र दिनांक २ फरवरी १९५० में मुझे लिखकर भेजा—

"I believe the Vedas have been composed by Human beings in the very early stage of our culture and my attempt in this book has been to create an atmosphere which I find in the Vedas as translated by western Scholars and as given in Dr. Keith's Vedic Index. I have accepted their views of life and conditions of those times.''

अर्थात् मैं वेदो को सस्कृति के प्रारंभिक काल मे मनुष्य द्वारा रचित ग्रंथ मानता हूँ। मैंने अपनी पुस्तक मे आर्यों के सम्बन्ध मे जो कुछ लिखा है उसका आधार पाश्चात्य विद्वानो, विशेषत: डा० कीथ द्वारा किया हुआ वेदो का अनुवाद है। मैंने उस समय के लोगो के जीवन और रहन-सहन आदि के सम्बन्ध मे उनका प्रमाण स्वीकार किया है।

श्री मुंशी ने अपनी पुस्तक The Creative Art of Life मे लिखा है।

"Westernism has taught us false values and that to under stand, recapture and live up to the best in our culture it is necessary for a student to discover for himself the Aryan disciple character and outlook and to wrest the secrets of the vedas"

अर्थात पाश्चात्यों ने हमे गलत बातें सिखाई हैं। स्वामी दयानन्द की प्रशंसा करते हुए उस पुस्तक में लिखा— Dayanand was learned beyoud the measure of man."

"अर्थात दयानन्द की विद्वता का पार मनुष्य नहीं पा सकता। जब मैंने श्री मुंशीलाल का ध्यान अपने कथन की ओर दिला कर पूँछा कि जब आप स्वामी दयानन्द की इतनी प्रशंसा और पाश्चात्यों की निन्दा करते हैं तो वेद के विषय में आप दयानन्द की बात न मानकर पाश्चात्य विद्वानो की बात को प्रमाण क्यो मानते है तो अपने पत्र दिनांक ३-२-५१ के द्वारा यह कह कर बात को समाप्त कर दिया—"I am afraid I am too occupied at present with other more important matters to discuss the points raised by you. We shall meet and discuss these academic matters when I have time."

अर्थात् हम कभी फुर्सत के समय मिल कर इन साहित्य सबन्धी बातों पर विचार करेंगे।

लोकमान्य तिलक की देशभक्ति एवं विद्वता पर तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। तथापि वेद के सबन्ध मे उनका दृष्टिकोण भी सामान्य लोगों जैसा ही था। 'मानववेर जन्मभूमि' के अनुसार जब उनसे पूँछा गया कि आर्यों के मूलस्थान के विषय मे आपने जो कुछ लिखा है वह वेदो मे कहाँ है ? तो तिलक महोदय ने स्पष्ट कह दिया— आमि भूल वेद अध्ययन करि नाई। आमि साहिव अनुवाद पाठ करियाछे।'' अर्थात् हमने मूल वेद नही पढ़े। हम तो साहब लोगो के अनुवाद पढ़े हैं।

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान बाबू सम्पूर्णानन्द ने अपनी पुस्तक 'गणेश' में यजुर्वेद (२३-१९) के प्रसिद्ध मन्त्र'गणानां त्वा गर्भधम्' के महीधर कृत भाष्य को और उसमें होने वाले कृत्य को अत्यन्त अश्लील घिनित तथा बेहूदा और फिर भी ठीक मानते हुए मेरे नाम अपने पत्र दिनांक १५ फरवरी १९५१ मे लिखा —"इस मन्त्र का जो अर्थ आपने लिखा है, सभव है, वह ठीक हो। फिर भी मैं ऐसा मानता हू कि वैदिक काल मे मद्य माँस आदि का व्यवहार होता था। पशु बलि भी होती थी।''

दुर्भाग्यवश, प्रकारान्तर से—प्राचीन भारत के इतिहास को निमित बनाकर— वेद और वैदिक कालीन आर्यो का जो चित्र वर्तमान और भावी पीढियो के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है उसे पढ़ कर सुनकर किसी के भी हृदय मे अपने अतीत के प्रति गौरव भावना नही बनी रह सकती। इस सदर्भ मे दिल्ली में १३-१४ फरवरी १९६९ को सम्पन्न India History and Culture Society के वार्षिक अधिवेशन मे दिया बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० लल्लनजी गोपाल का यह वक्तव्य महत्वपूर्ण है—

"Dr. D. N. Jha of Delhi University who is joint Secretary of India History Congress said that beef-eating was part of Socio-economic life of the people of ancient India. He and his colleagues in Delhi University did not hide their Communistic leanings and said that they would live to interpret historical events and facts in Marxian terms. Before the communist party formed its government in China, it carried on for 20 years a systematic Compaign of books interpreting every aspect of chinese life in Marxian terms. The aim behind it was to prepare the minds of the people to accept the correctness of various phases of man's history as described by Marx. A similar attempt is being made by historians here."

—Indian Express, dated February 14-15, 1979.

सारांश यह है कि भारत के प्राचीन इतिहास की रचना योजनाबद्ध रूप से साम्यवादी रग देकर की जा रही है। परिणामत. कुछ समय बाद बुद्धिजीवी वर्ग ही नही, साधारण लोग भी वेद की अमूल्य निधि से हाथ धो बैठेंगे।

सायण और उसके अनुगामी पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानो के निरुक्त प्रक्रिया की उपेक्षा करके लौकिक सस्कृत के आधार पर वेदार्थ करने का यह दुष्परिणाम हुआ कि हम सभ्य ससार के सामने मुंह दिखाने योग्य न रहे। इतना ही नही. ब्राह्मण ग्रंथो, शाखाओ श्रौतसूत्रों आदि अनेकानेक ग्रन्थो को भी वेद मानकर समय-समय पर उनमे हुए प्रक्षेपो सहित सब कुछ वेद के मत्थे मढ़ दिया गया। यौगिक अर्थों को न लेकर रूढ़ अर्थों के आधार पर उन्हे मनोरजक किस्से कहानियों का पिटारा बना दिया। इस प्रकार हमारी मस्तिष्क रूपी भूमि मे वेदो के प्रति अश्रद्धा की चट्टानें खड़ी हो गई।

वेद का एक-एक शब्द अपने पेट मे न जाने कितने ज्ञात एव अज्ञात अर्थों को समेटे हुए हैं और फिर उन अर्थों के विशाल क्षेत्र मे जितना विचरण करते चले जायेंगे, उत्तरोत्तर नवीन अर्थ और ज्ञान की उपलब्धि के कारण वैदिक शब्दों के वास्तविक अर्थों से अनभिज्ञ होने के अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वान् विकासवाद के खूटे से भी बंधे थे। यद्यपि मानव मे ज्ञान का विकास उसकी चिन्तन शक्ति के साहचर्य से होता है, तथापि जो कुछ ज्ञान वह प्राप्त करता है उसका आदि मूल वह स्वय नहीं है। वेद की ध्वनि अपने आदि स्रोत परमेश्वर से नि श्वसित

—क्रमशः

(पृष्ठ २ का शेष)

भी उग्र हो गया है कि धार्मिक दृष्टि से भी यहाँ के बौद्ध लोग अपने धार्मिक और सास्कृतिक अस्तित्व को भी संकट में पाते हैं। अपनी माँगें मनवाने के लिए लद्दाख मे स्थानीय लोगों ने जो आदोलन शुरू किया है इसके कारण दिसम्बर की समाप्ति पर लेह में पुलिस ने गोली चलाई। इसके कारण स्थिति वहाँ और भी अधिक अशान्त हो गई है और असन्तोष फैलता जा रहा है।

लद्दाख क्षेत्र के लोगों की शिकायतो की जांच के लिए लगभग दो दशक पूर्व श्री पी० बी० गजेन्द्रगडकर की अध्यक्षता मे एक आयोग नियुक्त किया था। इस आयोग ने जो सिफारिशे की थी उनसे स्थिति में सुधार नही हुआ। पिछले वर्ष जम्मू क्षेत्र मे क्षेत्रीय भेदभाव की शिकायत होने की उच्चतम न्यायालय के एक और सेवा निवृत न्यायाधीश श्री एस० एन० सीकरी की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया गया था जिससे कि जम्मू कश्मीर राज्य के कश्मीर घाटी जम्मू क्षेत्र और लद्दाख क्षेत्र के असन्तुलन को दूर किया जा सके। इस आयोग ने जब अपना प्रतिवेदन दिया उस समय जम्मू के स्थान पर लद्दाख में क्षेत्रीय आन्दोलन उग्र हो चुका था।

यद्यपि सीकरी आयोग ने अखिल भारतीय दृष्टि से यह बात स्वीकार नहीं की कि लद्दाख को एक स्वशासित क्षेत्र बना दिया जाए अथवा केन्द्र शासित क्षेत्र बना दिया जाए तो भी इस बात पर जोर दिया गया कि लद्दाखी लोगों की भावनाओं को ध्यान मे रखते हुए इस क्षेत्र के आर्थिक विकास के साथ उनके धर्म और उनकी सास्कृतिक परम्परा को सुरक्षित रखने के प्रयत्न किए जाने चाहिए।

यह एक उल्लेखनीय बात है कि जम्मू कश्मीर राज्य का बहुत बड़ा क्षेत्र लद्दाख क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्र की तुलनात्मक दृष्टि से आबादी बहुत कम है। आर्थिक विकास के लिए इस क्षेत्र को जो पैसा दिया जाता है वह आबादी के हिसाब से दिया जाता है। परिणाम यह होता है कि इस क्षेत्र के विकास के लिए बहुत ही कम पैसा उपलब्ध हो पाता है। उनके इस आर्थिक पिछड़ेपन का लाभ कश्मीर सरकार के सरंक्षण प्राप्त मुल्ला वर्ग उठाता है जिसके कारण धीमे-धीमे इस क्षेत्र में बौद्धों की संख्या कम होती जा रही है। शिक्षा की दृष्टि से भी यह क्षेत्र इतना पिछड़ा हुआ है कि इस सारे क्षेत्र में एक भी कालिज नहीं है। पिछड़े सितम्बर मे लद्दाख क्षेत्र के जनस्कार क्षेत्र में जब पुलिस ने गोली चलाई तो पुलिस की गोली से घायल हुए लोगों को ३०० किलोमीटर दूर एक हस्पताल में ले जाना पड़ा क्योंकि इससे अधिक निकट और कोई हस्पताल नहीं था। यह स्थिति इस क्षेत्र के पिछड़ेपन पर अच्छा प्रकाश डालती है। ऐसी स्थिति में इस क्षेत्र के लोगो की अपने आर्थिक विकास के लिए अधिक धनराशि की मांग और अपनी संस्कृति और परम्पराओं की रक्षा की मांग किसी भी प्रकार अनुचित नहीं कही जा सकती।

राजनीतिक स्तर पर लद्दाखी लोगो का कहना है कि शेख अब्दुल्ला उनके क्षेत्र की ओर इसलिए ध्यान नहीं देते क्योंकि लोकसभा और राज्य विधान सभा, दोनों के चुनावों के समय उन्होंने शेख साहब के उम्मीदवारो को वोट नहीं दिए थे। राजनीतिक स्तर पर इस प्रकार का भेदभाव पृथकता की भावना को पैदा करता है और जब उसके साथ धार्मिक समस्या भी जुड़ जाती है तो स्वाभाविक है कि स्थानीय असन्तोष और अधिक बढ़े। □

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का हीरक जयन्ती समारोह

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) का चिर प्रतीक्षित ६६वाँ वार्षिकोत्सव दि० ४, ५, ६ तथा ७ फरवरी १६८१ तदनुसार माघ कृष्णा ३० से माघ शुक्ला ३ सम्वत् २०३७ बुधवार से शनिवार तक हीरक जयन्ती के रूप मे समारोहपूर्वक कुलभूमि में सोत्साह आयोजित किया जा रहा है।

उत्सव में आर्य जगत् के गणमान्य नेता, केन्द्रीय एव प्रान्तीय स्तर के मत्री उच्चकोटि के साधु, सन्यासी, महोपदेशक एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इसी अवसर पर नवीन स्नातकों का समावर्त्तन संस्कार एव दीक्षान्त समारोह भी सम्पन्न होगा। साथ ही वेद सम्मेलन, सस्कृत सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन, आर्य-सम्मेलन, कवि सम्मेलन आदि का अभूतपूर्व आयोजन भी है।

आर्यसमाजों के सत्संग

२५-१-८१

अंधा मुगल प्रताप नगर—वैद्यरामकिशोर; अमर कालोनी—श्रीमती लीलावती; अशोक विहार के-सी-५२-ए—पं० आशा नन्द भजनोपदेशक;—आर के पुरम सैक्टर६—पं० अशोक कुमार विद्यालंकार; आर के पुरम सैक्टर ६—प० हीरा लाल शास्त्री; आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—पं० सत्य पाल मधुर भजनोपदेक; किंग्ज वे कैम्प—पं० प्रकाश चन्द्र वेदालंकार; किदवई नगर—प० देवेश; कालका जी—डा० सुखदयाल भूटानी; कालका जी डी. डी, ए. फ्लैटस एल-१/१४३-ए—प० प्रेम श्रीधर; कोटला मुबारिक पुर—पं० दिनेश चन्द्र शास्त्री; गाँधी नगर—पं० वेदपाल शास्त्री; ग्रेटर कैलाश I—डा० महावीर सांख्य दर्शनाचार्य, ग्रेटर कैलाश II—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; १५१-गुप्ता कालोनी—पं० सीसराम भजनोपदेशक; गोविन्द भवन दयानंद वाटिका—पं० जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; जंग पुरा भोगल—प्रो० वीर पाल विद्यालंकार; जनकपुरी बी/३/२४—पं० प्राणनाथ सिद्धांतलंकार; तिलक नगर—डा० लखमी दास; तीमार पुर—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; दरियागंज—पं० वीर व्रत शास्त्री; नारायण विहार—प० राम रूप शर्मा; न्यू मोती नगर—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; न्यू मुलतान नगर प० प्रकाश वीर व्याकुल पंजाबी बाग—प्रो० सत्य पाल वेदार; पंजाबी बाग एकस्टैंशनन १४/३—प० ओम प्रकाश भजनोपदेशक; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—पं० ईश्वर दत्त एम-ए; माडल टाऊन—पं० प्रकाश चन्द शास्त्री; माडल बस्ती—पं० विजय पाल शास्त्री तथा स्वामी स्वरूपा नन्द भजनोपदेशक; महावीर नगर—प० केशव चन्द्र मुन्जाल; महरौली—पं० हरीश वेदी; मोती नगर—प० हरि दत्त शास्त्री; रमेश नगर—पं० सत्य काम वेदालंकार; राणा प्रताप बाग—श्रीमती प्रकाश वती शास्त्री; रोहतास नगर—पं० दिवाकर शर्मा; लाजपत नगर -पं० सत्य भूषण वेदालंकार; विक्रम नगर—पं० महेश चन्द भजनोपदेशक; विनय नगर—प० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प० खुशी राम शर्मा; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सोहन गंज—प० विश्व प्रकाश शास्त्री; साकेत—आचार्य हरिदेव सि० भू०; हौज खास ई-४६—डा० रघुनन्दनसिंह;

(ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार विभाग)

आर्यसमाज की गतिविधियां

गुरुकुल घरौंडा का उत्सव

श्री वेद विद्यालय गुरुकुल घरौंडा जि० करनाल हरियाणा का ४३वां वार्षिक महोत्सव अन्य वर्षों की भांति फाल्गुन सुदी ८, ९, १० संवत् २०३७ तदनुसार १३, १४, १५, मार्च १९८१ को मनाया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत् के विद्वान तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। १० मार्च से १५ मार्च तक यजुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न होगा, पूर्णाहुति १५ मार्च को प्रातः ९ बजे होगी जिसमे आसपास के देहात के यजमान आहुति देकर लाभ उठायेंगे। उत्सव पर गो रक्षा आदि अनेक सम्मेलनों का भी आयोजन किया जायेगा।

जिला आर्य सभा लुधियाना का निर्वाचन :

प्रधान—श्री रणवीर भाटिया

मन्त्री—डा० एस० बी० बांगिया

कोषाध्यक्ष—श्री बलदेव राज सेठी

तीनो पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुन लिए गए। साधारण सभा ने श्री भाटिया जी को अन्य अधिकारी तथा अन्तरंग सभा के सदस्यों की नियुक्ति का अधिकार दे दिया। शान्ति पाठ के पश्चात वार्षिक अधिवेशन समाप्त हुआ।

वार्षिक निर्वाचन आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश

१. पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण —संरक्षक
२. वैद्य आचार्य विक्रम जी एम. ए. —प्रधान
३. श्री प. चिन्तामणि जी एम. ए. एल. एल० बी० —उपप्रधान
४. श्री यशपाल जी शास्त्री —मन्त्री
५. श्री मेघ श्याम वेदालंकार उपमन्त्री
श्री रूप किशोर शास्त्री ,,
६. श्री पं. ओमप्रकाश आर्य पथिक —कोषाध्यक्ष
७. श्री जयप्रकाश शास्त्री प्रचार मन्त्री
८. श्री प. प्रकाश चन्द्र शास्त्री (पटौदी हाउस) —लेखा निरीक्षक

□

लाला किशोरी लाल शोकग्रस्त

आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली के प्रधान श्री किशोरीलाल जी की धर्मपत्नी का रविवार ११ जनवरी को देहावसान हो गया। परमात्मा से प्रार्थना कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके परिवार को धैर्य प्रदान करे। 'आर्य संदेश' परिवार अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

आर्यवीरदल होडल की स्थापना

आर्यवीर दल, हरियाणा के तत्वावधान मे आर्यवीर दल, होडल की स्थापना की गई है जिसमे सर्व सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

सर्वश्री हेतराम जी (संचालक), अग्रसैन सचदेव (नगर नायक), यशपाल जी (मन्त्री), गुरुदत्त जी, (व्यायाम, शिक्षक), ठाकुरदास जी (बौद्धिकाध्यक्ष, उदयभान जी (अर्थनायक) तथा जगदीशचन्द जी (कुमार सभा संचालक).

(पृष्ठ ३ का शेष)

आदेश है कि वे हिन्दू या आर्य में से एक ही लिखें दोनों नहीं।

इस प्रकार केवल आर्य लिखाने से हिन्दुओं में अपने आप ही गिनती हो जायेगी किन्तु दोनों लिखाने से तो आर्यों में गिनती न किए जाने की आशंका रहेगी। सार्वदेशिक सभा ऋषि दयानन्द के आदेश के अनुसार जनगणना में आर्य ही लिखाने के सम्बन्ध में अभी से आवश्यक सूचना छपवाकर प्रत्येक घर में बटनी चाहिए तथा सभाओं और प्रभात फेरी और व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा प्रचार करना चाहिए। यह कार्य स्थानीय प्रान्तीय व सार्वदेशिकस्तर पर नियमित और संगठित रूप से होना चाहिए। ऐसा न करने से आर्यों की संख्या [illegible] और परिणामस्वरूप यह आर्य समाज की निर्बलता और प्रभावहीनता का ही द्योतक बनेगा और धीरे-धीरे आर्य तथा आर्य समाजियों का नाम तक मिट जायेगा। इसलिए आर्यसमाज की शक्ति और प्रभाव का सही चित्रण करने के लिए भी आर्यों की अधिक से अधिक संख्या होना आवश्यक है।

महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, [illegible] संस्थाओं की ओर से महात्मा हंसराज जन्मदिवस रविवार, १९ [illegible] १९८१ को प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में मनाया जायेगा।

इस समारोह में आर्य नेता, सन्यासी गण तथा डी० ए० वी० के प्राध्यापक आदि पूज्य महात्मा जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री [illegible] द्वारा [illegible]

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४, अंक १४ | रविवार १ फरवरी १९८१ | ...ब्द १५६

इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के पुनर्लेखन का निर्णय

सभा मन्त्री द्वारा इस निर्णय को सतर्कतापूर्वक लागू करने की अपील : आर्यसमाजों को सतर्क होने की आवश्यकता

प्रचार, शिक्षा और रोजगार सबधी विभिन्न मन्त्रालयो के अधिकारियो की एक बैठक मे यह निर्णय किया गया है कि १९८२ और ८३ के शिक्षा वर्ष के शुरू होने से पहले इतिहास और भाषा सम्बन्धी सभी पाठ्यपुस्तको की पूरी तरह से जाँच करके उनमें से साम्प्रदायिक पक्षपात के अश हटा दिये जायेंगे। इसका उद्देश्य यह बताया गया है कि लोगो में विशेष रूप से युवको मे धर्म निरपेक्षता की भावना पैदा की जा सके।

इस प्रयोजन से सरकार के प्रचार विभाग और जनसपर्क के माध्यमो को निर्देश दिए गए हैं कि वे लोगो मे धर्म निरपेक्षता की प्रवृत्ति पैदा करें और इसी आधार पर कार्यक्रम तैयार कर प्रच रित प्रसारित करन के लिए इन विभागो से कहा गया है।

श्रम मत्रालय से कहा गया है कि वह अपने रोजगार विभागसे अल्पसख्यको को पर्याप्त सख्या मे रोजगार दिलाने की व्यवस्था करे। इसी निश्चय के अनुसार बैंकिग विभाग साम्प्रदायिक दगों के शिकार लोगो के तेजी से पुनर्वास के लिए आदेश जारी करेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री ने सरकार के इस निर्णय का स्वागत किया है कि साम्प्रदायिक दगो के पीडित लोगों के पुनर्वास के लिए देश के राष्ट्रीय बैंक भी हिस्सा लेंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि सहायता सम्बन्धी नीति के अन्तर्गत वैसा भेदभाव नही बरता जायेगा जैसाकि मुरादाबाद के मुस्लिम विद्रोह और उसके बाद हरिजन बस्ती पर आक्रमण के बाद बरता गया। मुरादाबाद मे मुस्लिम विद्रोह मे मारे गये लोगो के परिवारो के बसाने की जितनी तेजी से व्यवस्था की गयी उसकी तुलना मे दगे से पीडित हरिजन के पुनर्वास पर बहुत कम ध्यान दिया गया। साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए इस असन्तुलन को दूर करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

विभिन्न मत्रालयों के अधिकारियों के द्वारा पाठ्य पुस्तको के ऐतिहासिक अशो के पुनर्लेखन की नयी नीति की कमी की ओर ध्यान खींचते हुए उन्होने कहा कि देश भर की पाठ्य पुस्तको मे निरतर यह पढाया जाता है कि आर्य लोग इस देश के बाहर से आए हैं और यहाँ आकर उन्होने विनाश कार्य किये। आर्यों के आचार और विचार भी इन पुस्तको मे विकृत रूप मे प्रस्तुत किये जाते हैं। आर्यों के बाहर से आने के प्रमाण न तो भारतीय साहित्य मे मिलते हैं न इस सम्बन्ध मे कोई पुरातत्त्वीय प्रमाण उपलब्ध हैं फिर भी पाठ्य पुस्तको मे यूरोपीय लेखको की कल्पनाये प्रस्तुत करके देश भर के इतिहास को ही विकृत नही किया जा रहा बल्कि विद्यार्थियो के मन मे निरन्तर यह धारणा पैदा की जा रही है कि इस देश मे विभिन्न सस्कृतियो, विभिन्न धर्मों के लोग देश के इतिहास के प्रारम्भिक काल से ही एक दूसरे के विरुद्ध खूनी सघर्ष करते रहे हैं। एक सहज धारणा इससे यह बनती है कि इस देश के लोग स्वभाव से हिंसा वृत्ति के क्रूर, अत्याचारी, भ्रष्ट, और आचरणहीन लोग हैं। समवत इन इतिहास लेखको के दिमाग मे यह बात कभी नहीं आयी कि इस प्रकार के विध्वसकारी लोग कैसे विश्व का श्रेष्ठतम साहित्य तैयार करने, कलात्मक कृतिया प्रस्तुत करने और एक उच्चकोटि की अखिल भारतीय सस्कृति का निर्माण करने मे कैसे सफल हुए।

उन्होने इस ओर भी ध्यान खींचा कि धर्म निरपेक्षता का राजनीतिक क्षेत्रों मे जिस प्रकार दुरुपयोग किया जा रहा है। इसका परिणाम यह न हो कि मध्य काल के ऐतिहासिक तथ्यो को विकृत कर दिया जाये और इतिहास को इस रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाये कि मध्य काल मे जिन विदेशी आक्रमणकारियो ने इस देश पर हमला किया उनका यहाँ के लोगो द्वारा विरोध किरना साम्प्रदायिक था, और उन विरोध के परिणामस्वरूप उन्हे जो अत्याचार सहने पडे और जिस प्रकार अपमानित होना पडा उसकी ऐतिहासिक प्रासगिकता नही है।

सभा मत्री ने सरकारी प्रचार और जनसपर्क माध्यमो की धर्म निरपेक्षता सम्बन्धी नीति की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रमो मे बहुत अधिक साम्प्रदायिक असतुलन रहता है। उन्होने बताया कि जहाँ एक ओर मुस्लिम, सिख और ईसाई पर्वों और त्यौहारो के समाचार विस्तार के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं वहाँ आर्यसमाज जैसे नितान्त धर्म निरपेक्ष सगठन के समाचारो की प्राय उपेक्षा की जाती है और उन्हे बहुत कम समय दिया जाता है।

उन्होने आशा व्यक्त की कि देश के नीति निर्धारण करने वाले लोग यह असतुलन जल्दी से जल्दी दूर करेंगे।

जौनपुर-शाहगंज में ईदमिलादुलनबी के जलूस के दिन आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी

सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले द्वारा न्यायिक जाँच की माँग

जौनपुर और शाहगंज मे ईदमिलादुलनबी के जलूस पर दगा हो जाने मे आर्यसमाज के प्रधान श्री बाबूराम जी तथा अन्य १४ कार्यकर्ताओ की गिरफ्तारी के समाचार पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा केन्द्रीय गृहमंत्री ज्ञानी जैलसिंह जी को तार तथा पत्र लिखकर माँग की है कि इस मामले की न्यायिक जाँच कराई जाये। उन्होंने कहा है कि जिलाधीश ने बिना सोचे-समझे इस आधार के साम्प्रदायिक जलूस की अनुमति दे दी जो पहले यहा कभी नहीं निकला था। उन्होंने स्पष्ट किया कि जलूस वालो ने साम्प्रदायिकता को बढाने का कार्य किया और झगडा हो गया।

श्री शालवाले ने पुलिस द्वारा एक तरफा गिरफ्तारियों की निंदा करते हुए आर्यसमाज के सम्भ्रान्त नागरिकों की तुरन्त रिहाई की माँग की और सरकार से न्यायिक जाँच कराने का अनुरोध किया। यह स्मरणीय है कि आर्यसमाज के प्रधान श्री बाबूराम व अन्य गिरफ्तारियों के विरोध में जौनपुर-शाहगंज मे हडताल की गई।

इस अंक में

सम्पादक—वि०सा० विद्यालंकार

वेद मनन :

नेता और प्रजा दोनों जागरूक रहें

अग्ने त्वं सुजागृहि वयं सुमन्दिषीमहि ।
रक्षाणो अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि ॥ यजु: ४-१४

ऋषि – अंगिरस. । देवता— अग्नि: ।

शब्दार्थ—हे (अग्ने) हे मार्ग दर्शक गृहपते अथवा राजन ! (त्वं सुजागृहि) तू अच्छी तरह से जागकर देखभाल तथा प्रबन्ध करता रह, जिससे (वयं) हम (सुमन्दिषीमहि) आराम से सोते रहें और निर्विघ्न आनन्दपूर्वक अपने काम चलाते रहे । (अप्रयुच्छन्)बिना प्रमाद के (न:) हमारी(रक्षा)देखभाल—रक्षा करता रह और समय आने पर (न:) हमें (पुन:) बार-बार (प्रबुधे कृधि) चेतावनी दे, समयोचित ज्ञान दे और बेखबर सोए पड़े हो तो झटक कर जगा दे ।

निष्कर्ष—१—प्रत्येक (अग्नि) अग्रज, अधिकारी, नेता या शासक का कर्त्तव्य है कि वह अपने अधीनस्थ जनों की सुख सुविधाओं को प्राप्त कराने तथा विघ्न बाधाओं को दूर करने के लिए सदा जागरूक रहे ।

२—जिससे उसकी सुरक्षा में काम करने वाले कर्मचारी, गृहस्थ में सब पुत्र पौत्रादि तथा राष्ट्र के सब अधिकारी निश्चिन्त होकर सो सकें, और नित्य के मनोरंजन की गतिविधियों में सम्मिलित हो सकें ।

३—नेता, राजा या गृहपति को कभी प्रमाद करने का अधिकार नहीं है । क्योंकि उसके प्रमाद करते ही गृह, राष्ट्र और समाज की रक्षा खतरे में पड़ जाती है ।

४—अग्नि स्थानीय व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है कि वह अपने अधीनस्थ व्यक्तियों को गलती या प्रमाद करने पर बार-बार प्रबोध-प्रेरणा देता रहे । यदि वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति सोए पड़े हों तो उन्हें बार-बार जगाए, जिससे संपूर्ण गृह, समाज या राष्ट्र सुव्यवस्थित रह कर उन्नति करते जाएं ।

५—अग्नि (नेता) तो सदा जागरूक रहे । हम भी सदा मस्ती के साथ तेरी स्तुति (आज्ञा पालन) करते हुए क्रियाशील बने रहें ।

विशेष—इस मंत्र का ऋषि अंगिरस संकेत करता है कि यदि इस मंत्र की भावना को चरितार्थ देखना है तो न केवल नेता अपितु प्रत्येक घटक अपने अंग-अंग में रस को धारण करे । केवल नेता के बलवान या जागरूक होने से रक्षा पूर्ण रूप से संभव नहीं । यदि प्रत्येक व्यक्ति अंगिरस बन गया तो नेता का कार्य बहुत सरल हो जाएगा । वह राष्ट्र समाज या घर को बहुत जल्दी अग्रणी बना देगा ।

अर्थपोषक प्रमाण—

अंगिरस :—अंगे अंगे रस: शक्तिर्यस्य स:—शक्तिशाली, क्रियाशील ।

सुमन्दिषीमहि—मदिस्तुति मोदमद स्वप्न कान्ति गतिषु ।

स्तुति करते हुए, मस्त होकर क्रियाशील बने रहें । तेरी देखभाल में निश्चिन्त होकर आनन्दपूर्वक सो सकें ।

—मनोहर विद्यालंकार

मानव का सर्वोत्कृष्ट गुण वीरता :
ईश्वर भक्ति और आत्म विश्वास की अनिवार्यता

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।
मध्यम् नमन्तां प्रदिशश्चत स्त्वयाध्यक्षेण पृतनाजयेम । ऋ. ५-३-१

हे (अग्ने) तेजस्वी ईश्वर ! (विहवेषु) युद्धों में (मम वर्च: अस्तु) मेरा तेज होवे । (वयं) हम (त्वा) तुझे (इन्धाना) प्रदीप्त करते हुए, प्रज्वलित करते हुए (तन्वं पुषेम) अपने शरीर को पुष्ट करें । (चतस्र.) चारों (प्रदिश.) दिशायें (मध्य) मेरे सामने (नमन्तां) नम्र हों । (त्वया अध्यक्षेण) तुझ अध्यक्ष के साथ (पृतना: जयेम) युद्धों में विजयी बनें ।

वीरता मानवों का सर्वोत्कृष्ट गुण है । वीरता की पताका ज्ञान, प्रेम, युद्ध और सामाजिक कार्यों में फहराया करती है । परन्तु वीरता का आधार परमेश्वर की शक्ति है । हमारी आत्मा में एक अलौकिक शक्ति भरी हुई है, जिसका विवेचन या वर्णन तो नहीं किया जा सकता परन्तु उसे अनुभव किया जा सकता है ।

मान लीजिए, हम यह विचार करें कि हम नाचीज तुच्छ, क्षुद्र और हीन हैं तो हमारी आत्मा के रजिस्टर में ये सब बातें लिख ली जायेंगी और उसका परिणाम यह होगा कि हम सचमुच वैसे ही बन जायेंगे । अगर हम निश्चयपूर्वक यह विश्वास अपने हृदय में बैठा दें कि विश्व की सम्पूर्ण उत्तम भावनायें मुझमें हैं और मैं उनको प्राप्त करके रहूंगा, भले ही मुझे इसके लिए आत्मोत्सर्ग भी क्यों न करना पड़े तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यह वीरता जीवन के मार्ग में आने वाली संपूर्ण कठिनाइयों और पराजयों को समाप्त कर देगी । यदि हमारा यह निश्चय है कि शक्ति मेरी है, स्वास्थ्य मेरा है, ज्ञान और बल मुझमें हैं, आधि, व्याधि, निर्बलता और विरोध से मेरा कोई मतलब नहीं है तो मानो हम मन में उत्पादक और निश्चयात्मक शक्ति उत्पन्न कर रहे होंगे जो हमारी संपूर्ण अभिलाषाओं, मनोरथों एवं ऊंचे जीवनोद्देश्यों को परिपुष्ट कर सफल करेगी । बिना घबराये जीवन के लक्ष्यों की ओर बढ़ना ही तो वीरता है । वीरता एक ऐसी वस्तु है जिसे देखकर दूसरे स्वयं प्रभावित होते हैं । परन्तु उस प्रभाव से दूर भगते हैं, भिन्न उस प्रभाव से श्रद्धान्वित बनते हैं । उदासीन बचते नहीं । इसलिये मंत्र में अग्नि स्वरूप परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे तेजस्वी ईश्वर, युद्धों में मेरा तेज हो । युद्ध राष्ट्रों के बीच होते हैं, युद्ध समाज में होते हैं, युद्ध आत्मा में होता है । युद्ध किसी भी क्षेत्र में हो उसमें हमारी विजय हो । हिन्दी के एक कवि ने लिखा है :—

युद्ध निरन्तर, युद्ध विश्व हैं, युद्धों की ही एक कहानी ।
शान्ति । शान्ति कहां है ?
यहां तो प्रतिपल रिपुओं से लड़ना है।
नित्य उलझना समरांगण में,
निज सीना ताने अड़ना है ।
भोले-भाले सीधे-सादे,
नहीं यहां पर जीने पाते ।
जो लड़ते आगे बढ़ते हैं,
वे ही जीवन गाना गाते ।
नहीं मिली है, शक्ति बैठने को ।
हमको यह अनमोल जवानी ।
युद्ध निरन्तर युद्ध विश्व है,
युद्धों की ही एक कहानी ।

वैदिक धर्म युद्ध से डरता नहीं । ऋग्वेद ८।१९।२० मंत्र के एक भाग में कहा है 'भद्रं मन. कृणुष्व वृत्रतूर्ये' तू संग्राम में भी अपने मन को कल्याणकारी कर । छत्रपति शिवाजी और वीर दुर्गादास का जीवन पढ़िए । औरंगजेब की बेगम गुलेनार ने दुर्गादास के चरणों में अपने को समर्पित कर दिया परन्तु उसने उसे स्वीकार नहीं किया । शिवाजी के सामने औरंगजेब की पुत्री को लाया गया तो उन्होंने अपने सेनापति से कहा 'काश, मेरी मां इतनी सुन्दर होती ?' यह कल्याणकारी युद्ध है ।

कल्याणकारी युद्ध के लिए ईश्वर भक्ति और आत्म विश्वास की आवश्यकता होती है । ईश्वर में विश्वास रखता हुआ मनुष्य विजयी बनने के लिए अपनी आत्मोन्नति करे । परन्तु आत्मा की उन्नति के लिये शरीर का विकास आवश्यक है । 'शरीरमाद्यं खलुधर्म साधनम्' शरीर ही धर्म का पहला साधन है । 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य:' निर्बल शरीर इस आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकता ।

धर्माचरण के कार्यों के लिए, जिनमें वीरता का प्रभाव आवश्यक होता है, बिना शरीर के विकास के नहीं हो सकता । जब शरीर में वीरता होगी, हृदय में परमेश्वर की भक्ति होगी तब हममें पराक्रम स्वत: आएगा । और उस पराक्रम की बदौलत हम संसार की शक्तियों का, उन शक्तियों का जो हमें दुष्टता की ओर ले जाती हैं, सामना करने को उद्यत हो जायेंगे । उस समय चारों दिशायें हमारी वीरता से नत हो जाएंगी और विश्व में हमारा जय जयकार होने लगेगा ।

लेखक :

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

भाद्रपद संवत् १९३६ में स्वामी जी बरेली ठहरे हुए थे । वहां उनके व्याख्यानों में पादरी, कलक्टर, कमिश्नर, यूरोपियन आदि सभी आया करते थे । एक दिन स्वामी जी ने पुराणों की आलोचना और खंडन किया तो यह सब बहुत प्रसन्न हुए । पर, ज्यों ही ईसाई मत की बारी आई तो उनकी आलोचना सुनकर कमिश्नर साहब का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा । उन्होंने सेठ लक्ष्मी नारायण को जहां स्वामी जी ठहरे हुए थे बुलाया और कहा 'अपने पंडित जी को कह दीजिये, अधिक

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सम्पादकीय

हिन्दी की स्थिति और संविधान

संविधान की व्यवस्था के अनुसार १९६५ में देश की राजभाषा के रूप में हिन्दी का व्यवहार शुरू हो जाना चाहिए था। राजभाषा के रूप में हिन्दी के व्यवहार में सम्भावित कठिनाईयों की भी पहले से ही कल्पना कर ली गयी थी। यह आशंका थी कि तकनीकी और वैज्ञानिक कार्यों के लिए हिन्दी के प्रयोग में कुछ कठिनाई हो सकती है। इसलिए संविधान मे ही यह व्यवस्था कर दी गयी कि यदि आवश्यकता अनुभव हो तो सन् १९६५ के बाद तकनीकी और वैज्ञानिक कार्यों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग सीमित समय के लिए जारी रखा जा सकता है। परन्तु सविधान द्वारा अंग्रेजी के इस सीमित प्रयोग की व्यवस्था की उपेक्षा करके १९६३ मे एक भाषा अधिनियम पारित किया गया जिसमे अंग्रेजी के अबाधित प्रयोग की छूट दे दी गयी। स्पष्ट रूप से यह व्यवस्था संविधान के प्रावधान के अनुकूल नही है।

इसे हिन्दीभाषियों की कमजोरी कहा जाये अथवा हिन्दी विरोधी आदोलन का आतंक कहा जाये, यह स्पष्ट है कि सविधान की भावना के प्रतिकूल इस व्यवस्था को किसी हिन्दी प्रेमी ने कभी चुनौती नही दी। सम्भव है कि कुछ लोग इसे हिन्दी प्रेमियों की सहिष्णुता बताकर उनकी प्रशसा करें परन्तु तथ्य यह है कि इस अवधि में जितना हिन्दी विरोधी वातावरण तैयार किया गया उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी प्रेमी हतोत्साह हो गये हैं और सविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा के रूप में हिन्दी को उसका उपयुक्त स्थान दिलाने मे हिन्दी प्रेमी समर्थ नहीं रहे।

अपनी इस सफलता के बाद अंग्रेजी प्रेमियो का उत्साह अब इस सीमा तक पहुंच गया है कि अनेक अंग्रेजी प्रेमियो ने यह कहना शुरू किया है कि इस देश मे हिन्दी की कोई आवश्यकता नहीं है और सम्पर्क भाषा का काम अंग्रेजी पूरी तरह से कर सकती है। देश की ९९ प्रतिशत जनता से सम्पर्क न रखने वाले लोगो का यह आंदोलन समझ मे आता है क्योंकि इस एक प्रतिशत की सम्पर्क भाषा अंग्रेजी है जिसे वे देश के ९९ प्रतिशत लोगो पर लादे रखना चाहते हैं।

देश पर अंग्रेजी को लादे रखने के लिए निरन्तर यह प्रचार किया जा रहा है कि इस देश की जनता पर हिन्दी नहीं लादी जानी चाहिए। अभी पिछले दिनो मद्रास में एक सार्वजनिक सभा मे भूतपूर्व केन्द्रीय मत्री श्री सी० सुब्रह्मण्यम् ने बहुत जोरदार शब्दो में इस बात का विरोध किया कि अहिन्दीभाषियो पर हिन्दी लादी जा रही है। यद्यपि वहां उपस्थित श्री कमलापति त्रिपाठी ने इसका खडन किया कि किसी पर हिन्दी लादी जा रही है तो भी श्री सुब्रह्मण्यम् अपनी बात को बराबर दोहराते रहे।

इस घटना के कुछ ही दिन बाद अन्तर्राष्ट्रीय तमिल सगम के मदुराई अधिवेशन में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह घोषणा की कि हिन्दीतर भाषियों पर हिन्दी नहीं लादी जायेगी। प्रधानमत्री ने यह घोषणा कितनी ही सद्भावना से क्यों न की हो, यह प्रश्न बार-बार उठ खड़ा होता है कि यदि सविधान मे की गई व्यवस्था के अनुकूल हिन्दी प्रचार अथवा हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था हिन्दी लादना है तो यह सोचने की बात होगी कि अन्य सवैधानिक प्रावधानो को भी लादना कहा जा सकता है या नही? ऐसी स्थिति मे सविधान में 'धर्म निरपेक्षता' और 'लोकतन्त्र' का जो प्रावधान किया गया है क्या उसे देश पर लादने का नाम देकर इनका विरोध किया जा सकता है या नहीं? हमारी दृष्टि से यह सविधान द्वारा की गयी व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत स्थिति है कि देश का कोई भी नेता इस देश के लोगों को हिन्दी पढने और सीखने की प्रेरणा देने और हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के स्थान पर ऐसा वातावरण तैयार करे, जिसमे ऐसा प्रतीत हो कि हिन्दी लोगों पर संविधान की भावना के विरुद्ध लादी जा रही है और हमारे देश के नेता उस स्थिति से बचना चाहते हैं।

अब समय आ गया है कि देश के बुद्धिजीवी इस समस्या पर गंभीरता पूर्वक विचार करें कि राजनीतिक लाभ उठाने के लिए निरन्तर जो हिन्दी विरोधी प्रचार किया जा रहा है उसे किस प्रकार रोका जा सकता है। यदि सविधान की किसी अन्य व्यवस्था के विरोध में कोई प्रचार सहन नहीं किया जा सकता तो हिन्दी विरोधी प्रचार भी सहन नहीं किया जाना चाहिए और इस पर तत्काल रोक लगायी जानी चाहिए।

बुद्धिजीवियों के सामने हमने यह समस्या इसलिए रखी है क्योंकि देश के प्रथम श्रेणी के कुछ बुद्धिजीवियो ने यह बौद्धिक प्रचार शुरू किया है कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए भाषा का कोई महत्त्व नहीं है। इस नये सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले और कोई नहीं बल्कि अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री एम० आर० अन्सारी हैं। उन्होंने इस पर भी संदेह व्यक्त किया कि राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी कोई महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। उनके इस सिद्धान्त की सबसे रोचक बात यह है, जो उनके इस प्रतिपादन का खंडन भी करती है, कि १९५६ मे भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन प्रादेशिक सकीर्णता को जन्म देने वाला रहा है। यह सत्य है कि भाषाओं के आधार पर बनाये गये राज्यो के कारण संकीर्णता और प्रान्तीयता को प्रोत्साहन मिला है इसलिए स्वय यही तथ्य यह सिद्ध करता है कि देश को राष्ट्रीय एकता बनाये रखने के लिए केवल एक राजभाषा अथवा सम्पर्क भाषा की ही जरूरत नहीं है बल्कि एक 'राष्ट्रभाषा' की भी जरूरत है। सम्भवतः अपनी बात की विसगति को न्यायमूर्ति अन्सारी स्वय भांप गये और इसलिए तत्काल उन्होने यह भी कह दिया कि हिन्दी के बाद उर्दू एक अखिल भारतीय भाषा हो सकती है जो कि सभी प्रादेशिक भाषाओ से अधिक उन्नत है। यद्यपि हिन्दी, प्रादेशिक भाषाओं और उर्दू की तुलना अथवा उनमे से किसी की श्रेष्ठता के बारे मे यहा कहने का अवसर नही है तो भी इस समय देश की भाषाओं का जिस तेजी से विकास हो रहा है उसे ध्यान मे रखते हुए यह कहा जा सकता है कि देश की अनेक भाषाओ के स्तर तक पहुचने के लिए अभी उर्दू को कम से कम आधी शताब्दी का समय चाहिये। प्रश्न उर्दू का नही परन्तु हिन्दी-उर्दू का विवाद खडा करके हिन्दी की समस्या को उलझाये रखने में न्यायमूर्ति अन्सारी का यह वक्तव्य अतुलनीय है इसीलिए देश के बुद्धिजीवियो को सतर्क करने की आवश्यकता अनुभव हुई है।

हमारे सामने मुख्य समस्या देश के विभिन्न वर्गों और विभिन्न भाषाभाषी लोगो को एक सूत्र में बांधने की है। यह कार्य न तो अंग्रेजी सम्पन्न कर सकती है और न उर्दू। पिछले २०० वर्ष से इस देश पर अंग्रेजी लादने का प्रयत्न किया जा रहा है। अंग्रेजी के प्रचार और इसे देश पर लादे रखने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य के उदय के साथ अब तक जितनी धनराशि खर्च की गयी है और इस समय की जा रही है वह धनराशि खरबों की संख्या में पहुचती है। फिर भी, अंग्रेजी के प्रचार पर पानी की तरह से पैसा बहाने पर भी देश का दशमलव एक प्रतिशत व्यक्ति भी ठीक से न तो अंग्रेजी बोल पाता है और न लिख पाता है। सबसे बडी विसगति यही है कि स्थिति के प्रत्यक्ष होते हुए भी देश पर निरन्तर अंग्रेजी लादी जा रही है और राजनीतिक नारा यह लगाया जाता है कि किसी पर हिन्दी लादी नहीं जायेगी। क्या यह विसंगति हमें भाषा सम्बन्धी सारी नीति पर फिर से विचार करने के लिए प्रेरित नहीं करती और क्या राजनीतिक नेताओ से हमे यह अनुरोध करने पर बाध्य नहीं करती कि वे केवल वोट प्राप्त करने के लिए इस प्रकार के भ्रामक प्रचार बन्द कर दे।

तमिलनाडु और हिन्दी

देश भर में एकमात्र तमिलनाडु राज्य ही ऐसा है जहां सरकारी स्तर पर हिन्दी पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं की गयी। यह भी उल्लेखनीय है कि देश भर के किसी अन्य राज्य ने शिक्षा के लिए त्रिभाषी फारमूले का विरोध नही किया जबकि तमिलनाडु राज्य सरकार त्रिभाषी फारमूले का खुला विरोध करती है और केवल द्विभाषी फारमूल को मान्यता प्रदान करती है।

इसका परिणाम यह है कि तमिलनाडु में हिन्दी पढ़ाने की राजकीय व्यवस्था नहीं है फिर भी वहां हिन्दी प्रचार संस्थाएं स्वयं अपने प्रयत्नो से हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा और अनिवार्य रूप से जनसपर्क की एकमात्र भाषा स्वीकार करते हुए उसके प्रचार कार्य में लगी हुई है। इन्ही हिन्दी प्रचार सस्थाओ के प्रयत्नों का परिणाम है कि अब इस राज्य में अंग्रेजी लिखने-पढने वालों की तुलना में हिन्दी लिखने पढ़ने वालों की सख्या कहीं अधिक है। हिन्दी के प्रचार का एक बडा कारण यह भी है कि यहा के लोग यह अनुभव करते हैं कि हिन्दी सीख लेने के बाद उत्तर भारत में उनके लिए रोजगार के अवसर अधिक सुलभ हो जाते हैं क्योंकि रोजगार की दृष्टि से उत्तर भारत कहीं अधिक व्यापक और विस्तृत क्षेत्र है।

स्थानीय लोग यह भी अनुभव करते हैं कि अंग्रेजी सीखने के लिए उन्हे जो मेहनत करनी पड़ती है उसकी तुलना में हिन्दी सीखने मे उन्हें कम श्रम करना होता है। इसका एक कारण यह भी है कि राजनीतिक प्रचार के बावजूद वे अपने अनुभव से जानते हैं कि तमिल में ५०% शब्द संस्कृत के हैं जो कि बहुधा समान अर्थ में हिन्दी में भी प्रयुक्त होते हैं।

फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी-विरोध की राजनीतिक जडें इस प्रदेश में बहुत गहराई तक गयी हुई है। इस विरोध भावना को दूर करने के स्थान पर जब हमारे राजनीतिज्ञ इस क्षेत्र मे जाकर हिन्दी न थोपने के आश्वासन देते हैं

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आहुति के लिए 'स्वाहाकार का प्रयोग'

मार्ग शीर्ष मास के कृष्णपक्ष की १४ शनिवार के दिन प्रात: काल आर्य समाजमन्दिर नया बांस दिल्ली के वाचनालय मे बैठे एक सज्जन ने आर्य सन्देश नई दिल्ली ३० नवम्बर १६८० के पृष्ठ ५ कालम ४ पक्ति १४।१५।१६। १७ मे छपे विश्व वेद परिषद् के निर्णय (पारायण यज्ञों में मन्त्रान्त में स्वाहा आने पर उसे मन्त्रांश समझ कर आहुति के लिए पुन: स्वाहाकार का प्रयोग किया जावे) के सम्बन्ध मे मेरे से पूछा कि क्या निर्णयह ठीक है ?

मैंने माननीय निर्णायक विद्वानो के लिए नमस्कृति पुर्वक उन्हें कहा कि नही, यह निर्णय ठीक नही है। क्योकि यह निर्णय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज एवं श्रौत और गृह्य सूत्रो के बिपरीत है। यत: विश्व वेद परिषद् की गोष्ठी में भाग लेने वाले माननीय विद्वान प्राय: सभी सेवानिवृत्त या सेवारत प्राध्यापक हैं। जिन्होंने जीवनभर कालिजों मे सस्कृत साहित्य के ग्रंथ पढाए हैं। कर्मकाण्ड के ग्रंथ कभी न पढ़े हैं और न ही पढाए हैं। निर्णय को देखकर यह भी नि:संकोच कहा जा सकता है कि मान्य निर्णायको ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रयोग शैली तथा संस्कार विधि ग्रंथ प्रथम संस्करण संहित को या तो समझा नहीं या उसकी उपेक्षा करके 'वयमपिस्म' की भावना से प्रेरित होकर यह निर्णय किया है।

अस्तु । देखो महर्षि ने संस्कारण विधि में यजुर्वेद, अथर्ववेद, मन्त्रब्राम्ह्मण ऐतरेयारण्यक, काल्यायन् श्रौत सूत्र, आश्वलायन गृह्य सूत्र, पारस्करगृह्य सूत्र एव गोभिल गृह्य सूत्र के२५० के लगभग ऐसे मन्त्र सग्रह किये हैं, मूल ग्रंथों में जिनके अन्त मे स्वाहा पद पढ़ा गया है। क्योकि श्री महाराज यह जानते थे कि—

१. स्वाहाकार शब्द: वषट् शब्दश्च प्रदानार्थ: ।

२. स्वाहाकार वषट् कारेण वा देवेभ्यो हवि: प्रदीयते ।

३. स्वाहाकार विधानं अविहित स्वाहाकारेषु प्रदानेषु ।

शाबर भाष्य ८।४।५।१७ तथा १०। ८।१०

(द्रष्टव्य मीमांसाकोष सातवां भाग पृ. ४४८५ पर स्वाहा शब्दार्थ)

(१) स्वाहा शब्द तथा वषट् शब्द हवि प्रदानार्थक हैं (२) स्वाहाकार और वषट् कार यज्ञों में देवो के लिए हवि दी जाती है (३) जिन मन्त्रों के अन्त में स्वाहाकार उपदिष्ट नहीं हुआ है उन्हीं के अंत में स्वाहाकार का विधान है।

यत: उपरोक्त संस्कार विधि में उद्धत यजुर्वेद एवं अथर्ववेदादि ग्रंथों के समस्त मन्त्रों के अन्त में स्वाहा शब्द का प्रयोग आहुति देने के लिए ही हुआ है, इसीलिए महाराज नेतत्तत् स्थलो पर प्रयुक्त मंत्रों के अंत में पढ़े गये स्वाहा, कारों के बाद पुन: स्वाहाकार का प्रयोग नहीं किया और न ही किसी विनियोजक पूर्वाचार्य ने ऐसा नही किया हैं।

अब हम श्रौत सूत्रों, गृह्यसूत्रो एवं महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज के संस्कार विधि ग्रथ के कातिपय प्रमाणों द्वारा यह दिखलाने का प्रयत्न करेगे कि उक्त विश्व वेद परिषद् के विद्वानों का कथित निर्णय कल्प शास्त्र सम्मत हैं।

लेखक :
स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती

अनुष्ठीयमान अग्निहोत्र, संस्कार, संहिताहोम अथवा संहिता स्वाहाकार (वेद पारायण यज्ञ) आदि प्रत्येक कर्म में मंत्र के आदि मध्य तथा अंत में पढ़ा गया स्वाहाकार आहुति प्रदानार्थ होता है। इसलिए जिन मंत्रों केअंत मे स्वाहाकार नहीं पढ़ा गया है उन्ही के अंत में अतिरिक्त स्वाहा शब्द का उच्चारण करके आहुति डालने का विधान किया गया है। यथा—

मंत्रान्ते स्वाहाकार:॥ गोभिल गृह्य सूत्र १।६।२१.

भट्ट नारायण,वृत्ति— मन्त्रस्य अन्तोऽवसानं मन्त्रान्त: तस्मिन् मन्त्रान्ते स्वाहाकारो वक्तव्य इति वाक्य शेष: । अधिकाराद् होम मन्त्रान्ते एव न तु जपादिष्वपीति । कुत: स्वाहाकार: प्रदानार्थत्वाद् हविष : तस्य चार्थस्याम्नायसिद्धे नैव कृतत्वात्। द्वितीयाम्नानमनर्थकं स्यात् ।

यत्र मन्त्रास्यादौ स्वाहाकार: यथा 'स्वाहामरुद्भि: परिश्रीयस्य' यजु० ३७।१३ इति, तत्रापि नैवान्ते स्वाहा, कार: स्यात् । तुल्य त्वात् कारणस्य। तत्रापि स्वाहाकारेणैव हवि प्रदानं कृत्वा मन्त्रं समाधत्तयेत् एवमर्थत्वात् तस्य। तथा चोक्तम्—

स्वाहां कुर्यान्निचाऽन्त्रान्तेन चैव जुहुयाद्धवि: ।

स्वाहाकारेणहुत्वाग्नौ पश्चान्मंत्रं समापयेत् ॥ कर्म प्रदीप २।७।१८

भावार्थ—वृत्ति में दो बातें कहीं गई हैं। पहली—होम मन्त्रों के अंत में स्वाहाकार का प्रयोग (उच्चारण) करके आहुति डालनी चाहिए । उन में भी उन्हीं मंत्रों के अंत में स्वाहाकार का प्रयोग करना चाहिए जिनके अंत में संहिता में स्वाहाकार नहीं पढ़ा है। जिन मन्त्रों के अन्त में संहिता (वेद) में स्वाहाकार पढ़ा गया है उनके अन्त में आहुति देते समय पुन: स्वाहाकार का उच्चारण नहीं करना चाहिए। क्योंकि स्वाहाकारहवि प्रदानार्थ पढ़ा जाता है। हवि प्रदान रूप इस प्रयोजन की सिद्धि आम्नाय (वेद) में पढे गए स्वाहा शब्द से ही हो जाने से दूसरा स्वाहा पद अनर्थक हो जावेगा।

दूसरी बात यह है कि जहां मंत्र के आदि में स्वाहाकार पढ़ा गया है वहाँ भी अंत में स्वाकार का प्रयोग नहीं होना चाहिए। कारण एक सा है। इसलिए ऐसे स्थलों में भी आदि में पढ़े स्वाहाकार से आहुति देकर शेष मंत्र का पाठ मात्र कर देना चाहिए। इस सम्बन्ध में काव्यायन प्रणीत कर्म प्रदीप में ऐसा विधान है कि—आदि में स्वाहाकार वाले मन्त्र के अन्त में पुन: स्वाहाकार पद का उच्चारण करके आहुति नहीं देनी चाहिए अपितु आदि के स्वाहाकार से आहुति देकर पश्चात् मन्त्र पूरा पढ़ देना चाहिए।

इस प्रकार सूत्र में एक तो जिन मंत्रों के अन्त में स्वाहा पद संहिता में ही पढ़ा गया है उन मत्रों के अंत में आहुति के लिए पुन: स्वाहाकार के उच्चारण का निषेध किया गया है और दूसरे जिन मंत्रों आदि में स्वाहा पद उपदिष्ट है उन मंत्रों के आदि में पढ़े गए स्वाहाकार से आहुति देकर शेष मंत्र का पाठ मात्र कर देना चाहिए। मंत्र के अंत में पुन: स्वाहाकार का उच्चारण करके आहुति नहीं देनी चाहिए।

ननु: यजुर्वेद अध्याय ४ मंत्र ६ के आदि में मध्य में तथा अंत में भी स्वाहाकार उपदिष्ट हुआ है। इसकी आहुति देने का प्रकार क्या होगा ?

समाधान: मूल मंत्र का पाठ इस प्रकार है—

स्वाहा यज्ञं मानस स्वाहोरोरन्तरिक्षात् ।

स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा वातादार भो स्वाहा।

इस मन्त्र से आहुतियां यजु० ३६।१ मंत्र के अनुसार देनी चाहिए। वहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मन्त्र में आए प्रत्येक स्वाहाकार से आहुति देने का विधान किया है नासिकवासी श्री पं० अन्नाशास्त्री बारे अपने संहिता स्वाहाकार प्रदीप में लिखते हैं कि—

यत्र तु मंत्र मध्ये स्वाहाकार: तत्र तु तस्मिन्नेव स्वाहान्ते होम: पश्चात् मंत्र समाप्ति: । न तु मंत्रान्ते स्वाहाकार: ।

शास्त्रार्थ परिच्छेद पृ. २३१.

जहां मंत्र के मध्य में स्वाहाकार है वहीं उसी स्वाहाकार से होम अर्थात् आहुति देनी चाहिए। पश्चात् मन्त्र समाप्त करना चाहिए। मंत्रान्त में पुन: स्वाहाकार पढ़ कर आहुति नहीं देनी चाहिए।

इस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज और बारे शास्त्री के अनुसार—

१. स्वाहा यज्ञं मनस: । २. स्वाहा उरोरन्तरिक्षात् ।

३. स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्याम् । ४. स्वाहा वातादारभे ।

इस रीति से चार आहुतियों के पश्चात् एक स्वाहाकार और शेष रह जाता है। इसके संबंध में लाट्यायन श्रौत सूत्र में इस प्रकार विधान किया है कि—

स्वाहाकारेणोत्तराम् ॥ ला. श्रौ. सू. ३।७।६.

वृत्ति :—उत्तरामाहुति केवलेन स्वाहाकारेण जुहुयादित्यर्थ: ।

अर्थात् अगली आहुति केवल स्वाहाकार से देवे ।। कहना यह है कि यह असली आहुति 'ओ३म् स्वाहा' ऐसा उच्चारण करके देनो चाहिए।

प्रसिद्ध वैदिक श्री धुण्डीराज बापट शास्त्री जी के अध्वर्यु हमारे गुरुवर्ण पूज्यवाद श्री पं० दिगम्बर वासुदेव नेत्रे शास्त्री ने हमें अध्ययन काल में अनुष्ठान का यही प्रकार बतलाया था।

इसी प्रकार यजुर्वेद के लगभग १०६ मंत्रों में आदि में अथवा मध्य में अनेक बार स्वाहाकार उपदिष्ट हुआ है। उनके सम्बन्ध मे पूर्वाचार्यों के समान ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भी संस्कार विधि प्रथम संस्करण पृ. १४८ पर ऐसा विधान किया है कि—

'अब स्वाहा प्राणेभ्य: साधिपतिकेभ्य: इत्यादि मन्त्रों से चिता में होम करना। सो जहाँ-जहाँ मंत्रो के बीच स्वाहाकार शब्द है वहाँ-वहाँ आहुति देना। जैसे स्वाहा प्राणेभ्य: साधिपतिकेभ्य: और पृथिव्यै स्वाहा यहाँ दूसरी आहुति देना। इसी प्रकार सर्वत्र जानना'।

ऐसा ही मन और व्यवहार दूसरे गृह्य सूत्रकार आचार्यों का है। महर्षि ने उद्धृत संस्कार की विधि के अनुसार ही तत्तत् स्थलों पर मंत्र के आदि तथा मध्य में आए स्वाहाकार से आहुति देने का विधान किया है। यथा—

वानप्रस्थ संस्कार में यजुर्वेद अ. २२ के मंत्र २०।३२।३३।३४ में ४३ बार स्वाहाकार का पाठ होने से ४३ ही आहुतियां देने का विधान किया है। इसी प्रकार अन्त्येष्टि में भी यजुर्वेद अ. ३६ के १ से ३ तथा १० से १३ इन सात मंत्रों में ६३ बार स्वाहाकार का पाठ है। अत: इन से ६३ ही आहुतियाँ देने का विधान किया है। इसी प्रकार दैनिक अग्नि होम में मंत्रों के बीच में उपदिष्ट प्रत्येक स्वाहाकार से आहुति दी जाती है। एवमेव 'अम्पकं यजामहे' यजुर्वेद के इस मंत्र से दो आहुतियाँ दी जाती हैं। यजुर्वेद अ. १८ मंत्र ३८ से ४३ तक के ६ मंत्रों से विवाह संस्कार में

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के अवसर पर :—

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का वेद सम्मेलन में अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण :

(गतांक से आगे)

वेद की ध्वनि अपने आदि स्रोत परमेश्वर से निःश्वसित होकर परा, पश्यन्ती तथा मध्यमा मार्गों से होती हुई वैखरी रूप में हमें प्राप्त हुई। जिन ऋषियों के माध्यम से वह हम तक पहुंची वे उसके रचयिता या प्रणेता न होकर अभिव्यंजक मात्र थे। अनादि काल से मनुष्य वेद रूपी ज्ञान के निरतिशय एवं अक्षय कोष से अपनी बुद्धि की ज्ञान प्राप्त करने की चेतना अथवा शक्ति के अनुसार ग्रहण करता रहा है। विकासवाद को मानने वाले वेदज्ञान के अनादित्व के सिद्धांत को कैसे स्वीकार कर सकते हैं? सुदूर अतीत में भारतीय आर्योंको अत्यन्त सभ्य, सुसंस्कृत तथा ज्ञान-विज्ञान में अत्यधिक उन्नत जाति अथवा समाज के रूप में देखने में उनका जातीय पक्षपात भी आड़े आता है।

भारतीय साहित्य के अध्ययनार्थ अपनाई गई अर्वाचीन वैज्ञानिक गवेषणापद्धति के उत्साह बाहुल्य में विदेशीय तथाकथित गवेषक विद्वानों द्वारा प्रस्थापित तथा अन्धाधुन्ध उनका अनुसरण करके 'अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः' इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले भारतीय विद्वानो द्वारा अनुमोदित प्रस्थापनाओं को युक्ति, प्रमाण तथा विवेचन द्वारा निराधार सिद्ध करने का श्रेय युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द को है। उन्हीं के प्रयास से याज्ञिकवाद की मिथ्या धारणाओं रूपी घटाटोप बादलों के छिन्न-भिन्न हो जाने पर उनके पीछे अन्तर्हित वेदों के वास्तविक स्वरूप के दर्शन हुए। वस्तुतः ऋषि दयानन्द ने वेदों की अद्भुत तथा अनन्त ज्ञानराशि को उस पर पड़ी हुई धूलि और गर्द गुबार को झाड़ पोंछकर हमारे सामने पुनः प्रस्तुत किया।

वेद भारतीय संस्कृति और भारतीय विचारधारा के आधारभूत स्तम्भ है। उन्हें किसी जाति, मत या सम्प्रदाय के साथ सम्बद्ध नहीं किया जा सकता। वस्तुतः वे विश्ववारा प्रथमा संस्कृति का मूल हैं। आज चाहे संसार ने कितनी ही उन्नति कर ली हो, परन्तु मानवीय समस्या का जैसा समाधान वेद में है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। मानव जीवन के लिए जो कुछ उपयोगी है, वेद में उस सबका निदर्शन है। वेदमें ऐहिक के साथ पारलौकिक ज्ञान, भौतिक के साथ आध्यात्मिक ज्ञान और अभ्युदय के साथ निःश्रेयस् का विवेचन है। यदि मानव के लिए वेद इतना उपयोगी न होता तो ब्राह्मणों ने अपने प्राण देकर उनकी रक्षा के लिए प्रयास न किया होता। वाजिमाल्यो ने वेदों को कण्ठाग्र करना अपने जीवन का लक्ष्य न बनाया होता और 'ब्राह्मणेन निष्कारण षडंगो वेदोऽध्येयः' के अनुसार बिना किंचित् लाभ की आशा के वेद के पाठन में सारा जीवन न खपाया होता।

परन्तु अब भारत और नेपाल दोनों में कुल मिलाकर १७५० पंडित और ६२० शिष्य रह गये हैं। अपने मूल रूप में ११३१ शाखाओ मे से केवल १० उपलब्ध हैं। कारण है वेदानुयायियों की अपनी उदासीनता। पहले महाराष्ट्र मे गणेश चतुर्थी के अवसर पर तथा अन्य समारोहों मे वेदपाठ के लिए पंडितों को आमन्त्रित करने की प्रथा थी। परन्तु अब उनका स्थान अश्लील और बेहूदा फिल्मी गानों को प्रसारित करने वाले ध्वनि विस्तारकों (Loud Speakers) ने ले लिया है। उधर पारिवारिक, सामाजिक, तथा आर्थिक व्यवस्थायें भी आड़े आ रही हैं। पहले ऐसे लोगो को राजा महाराजाओं का संरक्षण प्राप्त था अब वह भी जाता रहा। ऐसी अवस्था मे ब्राह्मणों में वेद के प्रति पहले जैसा उत्साह कैसे बना रह सकता था?

१९६३ में कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु स्वामी चन्द्रशेखरानन्द सरस्वती ने 'वेदरक्षणनिधि' ट्रस्ट की स्थापना की है। ट्रस्ट का उद्देश्य प्रारम्भ में उन शाखाओं के अध्ययन के लिए पाठशालाओं का संचालन करना है जिनके जल्दी ही लुप्त हो जाने की आशंका है। वेदों को सुरक्षित करने के लिए इलेक्ट्रिक उपकरणों की भी सहायता ली जा रही है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान तथा तिरुमल तिरुपति देवस्थान पहले ही कुछ मन्त्रों के पाठ को टेप रिकार्ड कर चुके हैं। यह सारा प्रयत्न वेद के शब्दों को सुरक्षित करने के लिए है। इस तोतारटन्त का भी अपना महत्व है, क्योंकि 'नष्टे मूले न फलं न पुष्पम्'। जड़ ही न होगी तो फूल पत्ते कहा लगेंगे? किन्तु यह न भूलना चाहिए कि बीज बोने का अंतिम ध्येय फल को प्राप्त करना है, जो वेदार्थ के बिना संभव नहीं। परन्तु यदि वह अर्थ सारहीन संकुचित, दरिद्रता पूर्ण रीति से किया जायेगा तो वह वेद और वैदिक वाङ्मय के विषय में अनेक भ्रान्त धारणाओं को उत्पन्न करके उनके संबन्ध में हमारी पवित्र एवं उदात्त भावनाओं को वेद की प्रामाणिकता और उसके दिव्य रूप को हेय बना देगा।

हमारी मान्यता रही है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ज्ञान विज्ञान की ऐसी कोई बात नही जो बीज रूप में वेद में न हो। परन्तु मुख्य उद्देश्य को गौण बना, इधर-उधर की बातों में फंसे रहने के कारण १०० वर्ष से अधिक बीत जाने पर भी हम दुनियां को अपनी बात का विश्वास नहीं करा पाये। वेदों के भाष्यकारों को चूंकि स्वयं उन विद्याओं का परिज्ञान नहीं, इसलिए वे वेदों में वैज्ञानिक निर्देशों को ठीक प्रकार समझ नहीं सकते। वास्तव में वेदों की पूर्ण तथा सन्तोषप्रद व्याख्या के लिए आवश्यक है कि व्याख्याता को सभी विद्यानों और उनकी शाखाओं का ज्ञान हो। ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया गया वेदभाष्य ही सब प्रकार के संशयोंको मिटा कर हमारी प्रतिज्ञा को सत्य सिद्ध कर सकता है। जब तक वर्तमान में वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गये ग्रन्थों के समान वेद तथा वेदानुकूल ग्रंथों के आधार पर एक-एक विद्या को सांगोपांग और क्रमबद्ध प्रस्तुत नहीं किया जायेगा तब तक हमारी स्थापना को मान्यता नहीं मिलेगी। आवश्यकता इस बात की है कि कम से कम २० ऐसे विद्वान् तैयार करें, जो संस्कृत के तो पूर्ण विद्वान् हों ही, उनमें से प्रत्येक एक-एक विद्या का पारंगत विद्वान् हो। प्रत्येक को वेदों में से एक-एक विद्या की खोज करके क्रमबद्ध विवेचन करते हुए स्वतन्त्र ग्रंथ लिखने का काम सौंपा जाये।

विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाने वाले प्राध्यापक स्वयं सायणादि पौराणिक एवं पूर्वाग्रहों से युक्त अधकचरे पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित हैं। इस लिए अपने छात्रों को वे वही कुछ पढ़ाते हैं जो उन्होंने पढ़ रखा है। आगे चल कर यही छात्र अध्यापक बनते और वही कुछ अपने छात्रो को पढ़ाते हैं। इस प्रकार शिक्षित वर्ग वेदों के उसी स्वरूप को जानता और मानता है। इसलिए आर्यसमाज के नेताओं, विद्वानों तथा संस्थानों को चाहिये कि वे विश्वविद्यालयों और कालिजों को अपने प्रचार का केन्द्र बनाये और वहाँ अध्यापन-कार्य में लगे संस्कृत तथा इतिहास विभाग के अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित कर वेदों के संबन्ध में उनका दृष्टिकोण ठीक करें उनके दिमाग बदल जायें तो कालान्तर मे सारा सिलसिला बदल जायेगा। एतदर्थ यह भी आवश्यक है कि हमारी वेद विषयक मान्यताओं के पोषक उच्चस्तरीय मौलिक ग्रन्थों का प्रणयन तथा प्रकाशन सुविचारित योजना के अधीन इस प्रकार कराया जाये कि उनकी पहुंच स्वतः सर्वत्र हो सके।

दिल्ली विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ की स्थापना के लिए सार्वदेशिक सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक सभा तथा डी० ए० वी० कालिज मेनेजिंग कमेटी को एक जुट होकर प्रयास करना चाहिए। मैं सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करूंगा कि वह समस्त प्रान्तीय सभाओं को प्रेरणा करे कि वे सब अपने-अपने क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालयों में दयानंद पीठों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हों।

विदेशों में वेदों का प्रचार एवं प्रसार करने के लिए आवश्यकता है कि वेदों के प्रकाण्ड विद्वानों को जर्मन, फ्रेंच, रशियन, चीनी, जापानी आदि विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण दिया जाये। और जब वे इन भाषा को बोलने लिखने में समर्थ हो जायें तो उन्हें स्थायी रूप से उन-उन देशो मे नियुक्त किया जाये।

समाज तथा राष्ट्र की अनेक समस्यायें हैं। किन्तु एक काम ऐसा है जिसे आर्यसमाज के सिवा अन्य किसी ने न किया है और न करना है। और वह है प्राचीन ऋषियों की अनुसारिणी ऋषि दयानन्द की मान्यताओं के अनुसार वेद का प्रचार एवं प्रसार। जिस काम को करने वाला दूसरा कोई नही, आर्यसमाज की सारी शक्ति उसी काम को करने में लगनी चाहिये। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है। इस परम धर्म का पालन करने वाले जितने लोग होंगे वे ही महर्षि के सच्चे अनुयायी होंगे। प्रत्येक आर्य-गृह में वेदों की पुस्तकें हों। उनके समझने के लिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष संस्कृत सीखें। प्रतिदिन जितना संभव हो, वे उतना वेदमन्त्रों का मनन करें और उन के द्वारा प्राप्त शिक्षाओं के अनुकूल आचरण करें।

☐

ग्राहकों से निवेदन

'आर्य सन्देश' के अनेक कृपालु ग्राहकों का चन्दा २-२, ३-३ वर्ष से प्राप्त नहीं हुआ है। इस अत्यन्त महंगाई के युग में यदि आपका चंदा हमें नही मिलेगा तो आप स्वय ही विचार कीजिए कि पत्र कैसे चल सकेगा। कृपया अपना पूरा चंदा जितनी भी आपकी ओर निकलता है, तुरन्त भेजने का कष्ट करें।

चंदा भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा कीजिए। आपकी ग्राहक संख्या पत्र पर आपके पते के साथ लिखी रहती है।

—सभा मंत्री

आर्यसमाज का निर्णय

आर्यसमाज ने निर्णय किया है, कि मुरादाबाद के दंगा पीड़ित हरिजनों को आर्यसमाज की ओर से मकान बना कर दिये जायेंगे। इस निर्णय को दिल्ली निवासी श्री नूर मुहम्मद ने पसन्द नहीं किया। जिन व्यक्तियों ने 'दैनिक हिन्दुस्तान' हिन्दी के लोकवाणी स्तम्भ में २४-११-८० को नूर साहब का विचार पढा होगा, यदि वे निष्पक्ष या होकर विचार करेंगे, तो समझ जायेंगे कि उनका वह कथन न तो न्यायपूर्ण है और न ही सद्भावना से प्रेरित। वे लिखते हैं, कि आर्यसमाज का उद्देश्य सारे संसार का उपकार करना है, फिर मुरादाबाद के दंगा पीड़ित गरीब मुसलमानों की तरफ भी आर्यसमाज के नेताओं का ध्यान जाना चाहिये था। इस बारे में मेरा यह कहना है, कि मुरादाबाद के मुसलमानों का झगड़ा पुलिस के साथ था, तो फिर निरपराध हरिजनों के मकानों में आग लगाना कहां का विवेक है।

सिद्धांत के साथ कुछ ध्यान हार्दिक पक्ष को देखना भी आवश्यक होता है। नूर साहब ने आर्यसमाज के नेताओं को उनके कर्त्तव्य बोध का उपदेश दिया है, कितना अच्छा होता कि मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ द्वारा भेजी गई आर्थिक सहायता जब मुरादाबाद के मुसलमानों में बांटी जा रही थी, तो उसका कुछ अंश वहां के हरिजनों के हिस्से में भी आ जाता। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। आर्यसमाज का निर्णय न्यायपूर्ण और तर्कसंगत होने के साथ व्यवहारिक भी है। मुरादाबाद के आस-पास जो नई कालोनियां बनाई जा रही हैं, उनमें वहां के गरीब मुसलमानों को बसाया जायेगा। गरीब हरिजनों की उपेक्षित दशा को देखते हुए आर्यसमाज का निर्णय प्रत्येक दृष्टि से उचित ही ठहरता है। जिसके पास एक महीने का राशन पानी पहिले ही मौजूद हो, उसी को और देते जाना और जिसके पास आज के खाने का भी पूरा प्रबन्ध न हो, उसे कुछ भी न देने की बात का कोई भी संवेदनशील व्यक्ति किसी भी हालत में समर्थन नहीं कर सकता। सहायता के पात्र किसी भी व्यक्ति अथवा समुदाय को यदि कहीं से सहायता का आश्वासन मिल रहा हो, तो देने वाले की आलोचना करना, उसके नुक्स ढूंढना आदि से खुदा या ईश्वर नाराज होता है।

— धर्मसिंह आर्य

हवन नगर

जिला गुड़गांव में नगीना से पुनाहाना सड़क पर एक ग्राम है "हवन-नगर"। कभी इस शब्द पर ध्यान नहीं गया कि इस गांव का नाम हवननगर क्यों रखा। परन्तु जब आर्य महासम्मेलन के अवसर पर रामलीला ग्राउंड में बहुकुण्डी यज्ञ का दृश्य देखते ही सहसा मुख से निकल पड़ा—"हवननगर" और तुरन्त उस ग्राम के नाम का अर्थ भी स्पष्ट हो गया कि यह वह नगर है जहाँ घर घर यज्ञ होता रहता होगा।

बड़ी श्रद्धापूर्वक दिल्ली नगर की अनेक आर्य समाजों से बहुत भाई पधारे और अपनी अपनी यज्ञवेदियों पर आसन ग्रहण किया। मध्य में एक बड़ी यज्ञ वेदी और साथ ही अन्य यज्ञवेदियों में स्वाहाकार के साथ समर्पित हव्य की सुगन्ध ने आस-पास के वातावरण को महका दिया।

इस महासम्मेलन में कुछ शंका युक्त "विचार भी आए" हैं यह बहुकुण्डी यज्ञ की प्रथा आर्यसमाज में श्रद्धा पैदा करने के लिए डाली जा रही है। वस्तुत: एक ही कुण्ड के आस-पास सब को बैठना चाहिए ताकि सामूहिक उपासना की भावना की पूर्ति हो सके। (समाधान) यह है कि यज्ञ कर्मकाण्ड का एक महत्व पूर्ण अंग है जो श्रद्धा से किया जाता है यजमान में श्रद्धा पैदा करता है इसमें कोई संदेह नहीं। बहुकुण्डी यज्ञ का विरोध वेद शास्त्रों में भी नहीं है। महर्षि दयानंद जी ने भी कहीं विरोध नहीं किया। इसमें एक भावना सामूहिक संगठन की ही है। जिस प्रकार आर्यसमाजों में एक यज्ञकुण्ड के आस-पास बैठ कर यज्ञ करते हैं वह एक सीमित व्यवस्था है परन्तु बहुकुण्डी यज्ञ में अनेक क्षेत्र के आर्यसमाजों के बहुत भाई सम्मिलित यज्ञ करते हैं। यह अनेक आर्यसमाजों के संगठन का परिचायक है।

दूसरी बात यह है कि पुरोहितजनों से आशीर्वाद भी प्राप्त किया जाता है। महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक संस्कार के यज्ञ के सम्पन्न होने पर आशीर्वाद का विधान लिखा है क्योंकि आशीर्वाद से यजमानों को मानसिक प्रसन्नता के साथ प्रेरणा भी मिलती है आशीर्वाद से यजमान को कोई हानि नहीं होती।

तीसरी बात दक्षिणा की है। महर्षि दयानन्द जी ने दक्षिणा का विधान किया है। शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में तो दक्षिणा को पत्नी की संज्ञा दी है। गीता में भी "विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्" दक्षिणारहित यज्ञ को दोषयुक्त माना है।

(रामकिशोर वैद्य महोपदेशक)

सम्पादक के नाम पत्र

सन्मार्ग की बहक!

साप्ताहिक "आर्य सन्देश" २१ दिसम्बर १९८० में अमेठी के राजा—राजर्षि राजा रणंजय सिंह, के सम्पादक के नाम पत्र को पढ़ने से मुझ जैसे हजारों जनों को जो राजा रणंजय सिंह जी के तपः पूत व्यक्तित्व और आदर्श आर्य के उनके आचरण से परिचित हैं अपार क्लेश हुआ है। राजा रणंजय सिंह के समान सरल स्वभाव वाले महत् जन के प्रति ऐसे ओछे वक्तव्य देकर काशी के प्रतिष्ठित "सन्मार्ग" पत्र के माननीय सम्पादक महोदय ने स्वयं अपने को अपमानित किया है। इससे "सन्मार्ग" की कीर्ति को भी बट्टा ही लगेगा। क्या आशा की जाये कि "सन्मार्ग" के वरिष्ठ सम्पादक महोदय राजा रणंजय सिंह के प्रस्तुत पत्र को पढ़ने के बाद अपनी भूल का सुधार करके सभा-भावना प्रकाशित करने की उदारता प्रदर्शित कर सकेंगे?

राजनाथ पाण्डेय
लक्ष्मी निवास: सिविल लाइन्स,
सुलतानपुर २२८००१

'आर्य संदेश' महासम्मेलन विशेषांक

आर्य महासम्मेलन का यह विशेषांक ऐसी महत्वपूर्ण सामग्री से भरा हुआ है कि इसे आप अपने पास सुरक्षित रखना चाहेंगे।

१. इसमें भारतीय इतिहास की भ्रान्त वैदिक धारणाओं की ओर ध्यान खींचा गया है।

२. आज की परिस्थितियों में आर्यसमाज की प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है।

३. वेद भाष्यों का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है और वैदिक [illegible] व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

४. महर्षि दयानन्द के जीवन और कार्यों का नये दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है।

५. स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन का मर्मस्पर्शी संस्मरण।

मूल्य : ६.००

'आर्य संदेश' के नये ग्राहकों को यह विशेषांक नि:शुल्क भेंट किया जायेगा।

वार्षिक मूल्य : १५.०० रुपये

(पृष्ठ २ का शेष)

कठोर खंडन न किया करें, अन्यथा उनके व्याख्यान बन्द कर दिये जायेंगे।'

अगले दिन स्वामी जी ने बड़ी निर्भीकता के साथ सिंह गर्जना करते हुए कहा "लोग कहते हैं सत्य का प्रकाश न कीजिये क्योंकि कलक्टर कुपित होगा, कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुंचायेगा। अरे! चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाने हम तो सत्य ही कहेंगे। आत्मा सत्य है। उसकी सत्ता को न कोई शस्त्र छेदन कर सकता है और न अग्नि जला सकता है; वह एक अजर अमर अविनाशी पदार्थ है। शरीर तो अवश्य नाशवान है, जिसका जी चाहे इसका नाश कर दे, परन्तु हम देह की रक्षा के लिये सनातन धर्म को नहीं त्यागेंगे—सत्य को नहीं छोड़ेंगे। वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखलाओ जो मेरे अन्तरात्मा को छिन्न-भिन्न करने का घमंड करता हो। जब तक ऐसा पुरुष दृष्टिगोचर नहीं होता दयानन्द के लिए सत्य में संदेह करना स्वप्न में भी असंभव है।"

इसी वीरता ने महाराणा प्रताप को स्वतंत्रता के लिए लड़ने की प्रेरणा दी, इसी वीरता ने छत्रपति शिवाजी को शत्रुओं का मुकाबला करने का साहस दिया, इसी वीरता ने सावरकर को समुद्र में कूदने का बल प्रदान किया, इसी वीरता के वशीभूत होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने अंग्रेजों की विशाल सेना के आदेश की अवहेलना कर अपनी नंगी छाती उनकी बन्दूकों के सामने कर दी, इसी वीरता ने भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को पार्लियामेंट में बम फेंकने की हिम्मत दी, इसी वीरता ने रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह और अशफाकुल्लाह को फांसी की रस्सी चूमने का साहस प्रदान किया, यही वह वीरता है जिसके दिल में आने पर पंजाब के हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में सुमेरसिंह ने अपना बलिदान किया। क्या सुकरात और अभिमन्यु की वीरता हमें प्रेरणा न भरेगी? 'योगी' कवि ने लिखा है:—

लड़ते आओ, बढ़ते जाओ
रुकने का क्या यहां काम है?
रुकना मृत्यु और बढ़ना ही
जीवन का बस एक नाम है?
जो लड़ता है वही राम है,
उसको ही मिलती है सीता,
यही युद्ध की शिक्षा देती,
कृष्ण कन्हैया की है गीता।
जहाँ सत्य, सुन्दर, शिव बसते,
बसती जहाँ शक्ति कल्याणकारी
युद्ध निरन्तर युद्ध, विश्व है,
युद्धों की ही एक कहानी।

प्रभु! हमें यह वीरता प्रदान करो।

आर्यसमाजों के सत्संग

१-२-८१

अंधा मुगल प्रताप नगर—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तलंकार; अमर कालोनी—पं० हीरा प्रसाद शास्त्री; अशोक विहार के- सी-५२-ए—श्री चिमनलाल; आर्य पुरा—पं० वेदपाल शास्त्री; आर के पुरम सैक्टर६—श्री मोहनलाल गांधी; आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—पं० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; किंग्ज वे कैंम्प—आचार्य हरिदेव सि० भू०; कालका जी—पं० मुनि शंकर वानप्रस्थी; कालका जी—डी-डी-ए फ्लैटस—वैद्य राम किशोर; करौल बाग प्रात:९ से १०—पं०अशोक कुमार विद्यालंकार; गांधीनगर—पं० खुशीराम शर्मा; गीता कालोनी—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; १५१-गुप्ताकालोनी—पं०रामरूप शर्मा;गोविन्दपुरी—प०तुलसीराम भजनोपदेशक; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री, जग पुरा भोगल—पं० सत्य भूषण वेदालंकार; जनक पुरी सी-३—पं० प्रकाश चन्द्र शास्त्री; जनक पुरी बी/३/२४—पं० वीरव्रत शास्त्री; जहांगीर पुरी–पं० सत्य पाल माथुर भजनोपदेशक; तिलक नगर—पं० प्रकाश चन्द वेदालंकार, देव नगर—डा० सुख दयाल भूटानी; नारायण विहार—आचार्य कृष्ण गोपाल शास्त्री; न्यू मोती नगर—पं० छज्जू राम शास्त्री; पंजाबी बाग—प० दिवाकर शर्मा; पजाबी बाग एक्स्टैंशन १४/३—प्रो० सत्य पाल बेदार; पश्चिम पुरी जनता कवार्टरज—प० जगदीश प्रसाद विद्या वाचस्पति; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बसई दारा पुर—स्वामी स्वरूपा नन्द भजनोपदेशक; बिरला लाईन्स—प्रो० वीर पाल विद्यालंकार;माडल बस्ती—ला०लखमी दास,महरौली—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; मोती बाग—श्रीमती लीलावती आर्या; रघुवीर नगर—पं० विश्व प्रकाश शास्त्री; रमेश नगर—पं० आशा नन्द भजनोपदेशक; राणा प्रताप बाग—प० ओम वीर शास्त्री; लड्डू घाटी—पं० हरि दत्त शास्त्री; विक्रम नगर—प० गजेन्द्र पाल शास्त्री; विनय नगर—श्रीमती प्रकाश वती शास्त्री; सरस्वती विहार—प० ओम प्रकाश भजनोपदेशक; सराय रौहेला—डा० रघुनन्दन सिंह; सुदर्शन पार्क–प्रो० भारत मित्र शास्त्री; साउथ एक्स्टैंनशन-II ३।। से ५—प०अशोक कुमार विद्यालंकार, श्री निवास पुरी—प० केशव चन्द्र मुन्जाल; हनुमान रोड—पं० हरि शरण, होज खास ई-४६—पं० ईश्वर दत्त एम-ए।

(ज्ञान चन्द डोगरा वेद प्रचार विभाग)

आर्यसमाज की गतिविधियां

टंकारा में ऋषि मेला

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि पर ऋषि मेला मनाया जा रहा है। टंकारा महर्षि दयानन्द जन्म स्थान है। इसलिए भारत भर की आर्य जनता से प्रार्थना है कि वहां चलने की अभी से ही तैयारी कर लें। ऋषि मेला शिवरात्रि पर तीन दिन रहेगा, जिसमे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान, सन्यासी वहां पहुंचेंगे और ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

—मन्त्री, टंकारा सहायक समिति

सीता जयन्ती बोधोत्सव

"आर्यसमाज गुप्ता कालोनी-विजय नगर, रविवार दिनांक २२-२-१९८१ से रविवार दिनांक १-३-१९८१ तक सीता जयन्ती, ऋषिबोधोत्सव स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव मनायेगा। प० रामकिशोर जी वैद्य २३-२-१९८१ से प्रातः यज्ञ और रात्रि को कथा किया करेंगे।

आर्यसमाज गोविन्दपुरी के सदस्यों का चुनाव

आर्यसमाज गोविन्दपुरी की साधारण सभा की बैठक आर्यसमाज गोविन्दपुरी में दि० २१-१२-८० को हुई और उसमें अगले वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारियो का चुनाव सर्व सम्मति से हुआ :—

प्रधान—श्री चमनलाल। उपप्रधान—श्री राजसिंह वर्मा। मन्त्री—विजेन्द्र कुमार सिंहल। उपमन्त्री—श्री सोमदेव मलहोत्रा। कोषाध्यक्ष—टेकचन्द कथूरिया।

इसके अतिरिक्त अन्तरग सभा के सदस्यो का चुनाव भी सर्वसम्मति से हुआ।

(पृष्ठ ३ का शेष)

तो प्रकारान्तर से वे पृथकता और विघटन की राजनीति को प्रोत्साहन दे रहे होते हैं। इसका अभी एक उदाहरण सामने आया है जबकि तमिलनाडु की विधान मण्डल की संयुक्त बैठक मे वहां के राज्यपाल श्री सादिक अली ने प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा मदुराई में आयोजित विश्व तमिल संगम में हिन्दी न थोपने के आश्वासन पर तमिलनाडु की ओर से आभार व्यक्त करते हुए यह घोषणा की कि तमिलनाडु सरकार 'सब कुछ तमिल और सब जगह तमिल' सिद्धान्तों को पूरी तरह से लागू करेगी। स्पष्ट रूप से यह भाषण तमिलनाडु में वहां की राज्य सरकार द्वारा अपनायी जा रही पृथकतावादी और विघटनवादी नीति का परिचायक है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी देश भर में इस पर विचार करने की जरूरत है कि ऐसे कौन से ठोस ऐतिहासिक तथ्य हैं जिनके आधार पर तमिल अथवा द्रविड संस्कृति के अलग होने की चर्चा की जाती है और उसके आधार पर देश के विभिन्न वर्गों मे भेदभाव की दीवार खड़ी की जाती है। इस समय स्थिति यह है कि ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय साहित्य मे किसी पृथक द्रविड़ और तमिल संस्कृति की चर्चा नहीं मिलती। फिर भी इस देश के इतिहास को विकृत करने वाले कुछ यूरोपीय लेखको की मान्यताओ को आधार बनाकर हमारे शिक्षण पाठ्यक्रमों मे निचली कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं तक बार-बार दोहरा कर छात्रों के दिमाग मे यह बात भरी जाती है कि द्रविड़ और तमिल पृथक संस्कृतियां रही है। इस ऐतिहासिक अराजकता को जितनो जल्दी दूर किया जा सके उतना ही देश के हित मे होगा।

अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष का दुर्भाग्यपूर्ण वक्तव्य :

अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष श्री आर० अंसारी के समाचार पत्रों में प्रकाशित वक्तव्य पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा भू० पू० संसद सदस्य श्री ओश्म् प्रकाश त्यागी ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण एवं संविधान के विरुद्ध बतलाया है। श्री त्यागी ने कहा कि श्री अंसारी एक सरकारी आयोग के अध्यक्ष होने के नाते उनके मुख से सविधान द्वारा स्वीकृत देश की सम्पर्क भाषा हिन्दी का विरोध शोभा नहीं देता है।

श्री त्यागी ने कहा कि श्री अंसारी की यह मान्यता कि हिन्दी भाषा कुछ पढ़े-लिखे लोगों की सम्पर्क भाषा बन सकती है, परन्तु जन सपर्क की भाषा नहीं बन सकती, उनकी अनभिज्ञता की द्योतक है। श्री अंसारी जी को विदित होना चाहिए कि मुसलमान और अंग्रेज आक्रान्ताओं से पूर्व भले ही राजनीतिक दृष्टि से देश विभिन्न राज्यों में बंटा था, परन्तु सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से यह देश एक था।

श्री अंसारी की यह मान्यता कि देश की एकता के लिए भाषा का प्रश्न असंगत एव महत्वहीन है—को हास्यास्पद बतलाते हुए श्री त्यागी ने कहा कि यह सर्वमान्य तथ्य है कि भाषा और संस्कृति ही किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है और ये ही उसे एकता के सूत्र में बांधती है। प्रतीत होता है कि श्री अंसारी जी ने जानबूझकर हिन्दी भाषा का विरोध करने के लिए ऐसा कहा है। वह संसार में कोई ऐसा राष्ट्र बतला सकते हैं—जहां कि कोई संपर्क भाषा या राष्ट्रभाषा न हो।

श्री त्यागी ने कहा कि श्री अंसारी ने दबी जबान में सम्पर्क भाषा की आवश्यकता को तो अनुभव किया है परन्तु हिन्दी भाषा को इस योग्य नहीं माना कि यह देश की सम्पर्क भाषा बन सके। परन्तु उन्होंने यह नहीं बतलाया कि हिन्दी के स्थान पर दूसरी कौन सी भाषा सम्पूर्ण भाषा बन सकती है? क्या उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं। सभी भारतीय भाषाओं का अध्ययन कर संविधान के निर्माताओं ने हिन्दी भाषा को ही बहुमत की भाषा मान इसे संपर्क भाषा बनाने का निर्णय लिया।

श्री त्यागी ने कहा कि श्री अंसारी ने परोक्ष रूप से उर्दू भाषा की वकालत की है। उनका यह कहना सत्य है कि उर्दू भाषा का जन्म भारत में ही हुआ है, उनको ज्ञात होना चाहिए कि उर्दू भाषा की जननी भाषा हिन्दी ही है। परन्तु खेद इस बात का है कि इसे विदेशी लिपि और फारसी आदि विदेशी भाषाओं के [illegible] मनोवृत्ति के लोगों ने एक विशेष वर्ग की भाषा बना दिया है। यदि [illegible] ही महत्वपूर्ण हो और राष्ट्रीय [illegible] का प्रतीक [illegible] लिपि और [illegible] सियालकोट [illegible] भारत में हुआ था। इसलिए [illegible] अखिल भारतीय मान्यता दी जानी चाहिये।

श्री त्यागी ने कहा कि दुर्भाग्य इस बात का है कि सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर विराजमान होकर लोग एक ओर एकता के सूत्रों का विरोध करते हैं तो दूसरी ओर एकता की रट लगाते हैं।

□

(पृष्ठ ४ का शेष)

बारह आहुतियां दी जाती हैं। ये सब आहुतियां मंत्र गत स्वाहाकार से ही दी जाती हैं। कहीं भी ऐसा देखने में नहीं आता कि मंत्र पठित स्वाहाकार के बाद आहुति के लिए एक और स्वाहाकार पढ़ा गया हो। इसीलिए हमने प्रारम्भ में ही लिखा है कि विश्व वेद परिषद् की अजमेर में हुई गोष्ठी में मंत्र के अंत में आए स्वाहाकार के बाद आहुति के लिए एक और स्वाहाकार के [illegible] का निर्णय महर्षि दयानंद और [illegible] कर्मकाण्ड के [illegible] के विरुद्ध है। इसलिए यह निर्णय किसी रूप में स्वीकार करने योग्य नहीं कहा जा सकता।

[illegible] स्वाहाकार की तरह मंत्र के अंत में [illegible] हैं। यथा— [illegible] स्वाहाकार [illegible] 'ओ३म् [illegible]' स्वाहा' इस प्रकार [illegible] आहुति [illegible] है। [illegible] स्वाहाकार को [illegible] 'ओ३म् प्राणेभ्य: [illegible] स्वाहा' इस प्रकार आहुति देने का विधान किया है। [illegible]

यद्यपि पारायण यज्ञ विधि ग्रंथों से सर्वथा बहिष्कृत पौराणिक संहिता होम एवं संहिता स्वाहाकार का नामान्तर कर के आर्यों द्वारा ग्रहण किया गया एक [illegible] इसे करना ही है तो प्रत्येक अनुष्ठान उसी प्रकार के विधि विधान पूर्वक हो सके इसके लिए यह आवश्यक है कि अनुष्ठानदिवस से १०।१५ दिन पूर्व वेदपाठी महानुभाव किसी अच्छे विधि विधान के जानने वाले विद्वान् के सामने बैठकर प्रशिक्षण लेकर ही अनुष्ठान करावें। यजुर्वेद पारायण यज्ञ के लिए तो अनुष्ठान से पूर्व प्रशिक्षण बहुत ही आवश्यक है। इन वेद पाठियों के प्रशिक्षण काल में उनका भोजनादि का सारा व्यय उदारता पूर्वक यजमान को वहन करना चाहिए।

□

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा [illegible] प्रेस ७२७/१-सी, [illegible] दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० [illegible]

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ४० पैसे, वार्षिक २० रुपये   वर्ष ४ : अंक १५   रविवार ८ फरवरी १९८१   दयानन्दाब्द १५६

धर्म मन्दिरों के नाम पर जमीनों पर कब्जा

सरकार और प्रशासन द्वारा कोई कार्यवाही न करने के कारण उग्र सम्प्रदायों और पन्थों द्वारा कब्जा करने के कार्य को प्रोत्साहन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पिछले दिनों इस बात का सर्वेक्षण किया गया कि सरकार की विभिन्न एजेंसियों द्वारा विकसित बस्तियों में धर्म स्थानों के लिए कितनी और किस प्रकार की भूमि उपलब्ध है। इस सर्वेक्षण का मुख्य रूप से प्रयोजन नई बस्तियों में आकर बसने वाले आर्यजनों की मांग के अनुसार नये आर्यसमाज के भवनों और मन्दिरों के लिए भूमि की व्यवस्था करना था। इस सर्वेक्षण में यह बात उभर कर सामने आयी कि जबकि आर्यसमाजों की ओर से वैधानिक रूप से आवेदन पत्र ही दिये जाते रहे हैं और अनेक मामलों में तो भूमि संबंधी ये आवेदन पत्र अभी सरकारी दफ्तरों की फाइलों में घूम रहे हैं और आर्यजन उत्सुकतापूर्वक परिणाम की प्रतीक्षा में हैं, दूसरे सम्प्रदायों के लोग इन स्थानों पर अधिकार करके उन पर अपने धार्मिक चिन्ह खड़े कर रहे हैं। ऐसी मान्यता है कि यदि अनधिकृत रूप से इन भूमियों पर कब्जा करके वहां कोई धार्मिक चिह्न खड़ा कर दिया जाये तो सरकार इस अधिकार को बाद में स्वीकार कर लेती है। इस प्रकार के कई मामले इस सर्वेक्षण में सामने आये जबकि किसी जमीन के लिए किसी आर्यसमाज ने आवेदन पत्र दिया और वह इस बात की प्रतीक्षा में रहे कि उसे वह भूमि मिलेगी इस बीच में दूसरे सम्प्रदायों के लोगों ने अनधिकृत रूप से जमीन पर कब्जा करके वहां गुरुद्वारे अथवा मस्जिदें बना ली हैं। इस संबंध में जब अधिकारियों का ध्यान खींचा गया तो उनका एक ही बंधा बंधाया उत्तर था कि आप क्यों झगड़े में पड़ते हैं आपको इसके बदले में कोई और जमीन दे दी जायेगी।

अभी हाल ही में दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा बसायी जा रही नयी बस्ती शालीमार बाग में स्थानीय आर्यसमाज ने जमीन प्राप्त करने के लिए आवेदन पत्र दिया। इस बीच आवेदन पत्र में उल्लिखित जमीन पर सिक्खों ने अधिकार कर लिया और वहां अपना झण्डा गाड़ कर अखण्ड पाठ भी शुरू कर दिया। इसके कारण वहां पर काफी तनाव पैदा हो गया परन्तु बाद में दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा तत्काल दूसरी जमीन देने के कारण और आर्यसमाज के लोगों द्वारा उस जमीन पर अपना दावा छोड़ देने के कारण स्थिति शान्त हो गयी।

जहांगीरपुरी एक ऐसा क्षेत्र है जहां निम्न आय वर्ग के लोग बसाये जा रहे हैं। यहां पर भी कई स्थानों पर गुरुद्वारे बनाने के लिए जमीनों पर कब्जा कर लिया गया है और यह भी बात सामने आयी कि यहां मस्जिदें भी बना दी गयी हैं।

इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि दोनों क्षेत्रों में सिक्खों और मुसलमानों की आबादी बहुत ही कम है। शालीमार बाग में सिक्खों की आबादी एक प्रतिशत भी नहीं है फिर भी वहां सिक्खों ने तीन जमीनों पर कब्जा कर लिया है और अनधिकृत रूप से वहां कमरे बना लिये हैं। जहांगीर पुरी में भी यही स्थिति है। जहांगीर पुरी में ईसाई लोग भी अपना गिरजाघर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं हालांकि वहां ईसाईयों की आबादी लगभग नहीं है। परन्तु उनके प्रचारक धर्म परिवर्तन द्वारा कुछ ईसाई बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं और उन्हें विश्वास है कि वे जल्दी ही इस क्षेत्र में कुछ परिवार ईसाई बना लेंगे और इस प्रकार उन्हें वहां अपना गिरजाघर बनाने के लिए जमीन प्राप्त करने का अधिकार मिल जायेगा।

यहां केवल दो नयी बस्तियों की चर्चा की गयी है परन्तु दिल्ली भर में यह स्थिति बनी हुई है कि कोई भी उग्र सम्प्रदाय और पन्थ किसी भी जमीन पर कब्जा कर लेता है और वहां अपना निर्माण कार्य शुरू कर देता है। इस अनधिकृत कब्जे को विभिन्न सम्प्रदायों के राजनीतिज्ञ प्रोत्साहन देते हैं और इस काम में उन सम्प्रदायों के सरकारी अधिकारी भी शामिल हो जाते हैं। अकेले शालीमार बाग में सिक्खों ने तीन भूमिखण्डों पर कब्जा कर लिया है और यह भूमिखण्ड एक दूसरे के पास पास हैं। इस प्रकार का कब्जा राजनीतिज्ञों और सरकारी अधिकारियों की इच्छा के बिना नहीं किया जा सकता। जब तक दूसरे सम्प्रदाय और धर्मों के लोग इस बारे में सतर्क नहीं होंगे तब तक कब्जा करने का यह काम तेजी से चलता रहेगा। □

श्रीमती कमला देवी को हार्दिक श्रद्धांजलि

आर्य सन्देश-परिवार को यह जानकर यह हार्दिक संवेदना हुई कि ३१ जनवरी के दिन आर्य नेता एवं दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी का आकस्मिक देहावसान हो गया। दीवान हाल तथा दिल्ली की दूसरी आर्यसमाजों में शोक सभाएं कर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अभिव्यक्त की गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शाल वाले ने एक शोक सन्देश में कहा कि श्रीमती कमला देवी और म. कृष्ण के समस्त परिवार ने आर्यसमाज, हिन्दू समाज और देश की सेवा में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

आर्य सन्देश-परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति दें और शोक संतप्त परिजनों और इष्ट मित्रों को सान्त्वना दें।

जनगणना का कार्य आरम्भ

सभी आर्य जनों से अपने आपको आर्य लिखाने की अपील

देश भर में जनगणना के अन्तिम दौर का कार्य शुरू हो गया है। जनगणना करने वाले लोग घर-घर जाकर अन्य सूचनाओं के साथ परिवार के प्रमुख और अन्य व्यक्तियों के धर्म, भाषा और जाति सम्बन्धी जानकारी इकट्ठी कर रहे हैं। आर्यसमाज से सम्बद्ध सभी लोग जानते हैं कि दस वर्ष में एक बार मिलने वाले इस अवसर का बहुत अधिक महत्त्व है क्योंकि लोकतन्त्र में सरकार की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक नीतियां विभिन्न वर्गों, सम्प्रदायों और धर्मों के आधार पर निश्चित की जाती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि इन नीतियों के निर्धारण में आर्यसमाज का भी अपनी जनसंख्या के आधार पर प्रमुख रूप से हाथ हो।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने २३ सितम्बर १९८१ के सर्वसम्मत निश्चय द्वारा सभी आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण संस्थाओं और आर्य स्त्री-पुरुषों को यह आदेश दिया था कि प्रत्येक आर्य नर-नारी अपनी जाति आर्य, धर्म वैदिक और भाषा हिन्दी लिखाये। संगठन और अनुशासन की दृष्टि से सार्वदेशिक के इस आदेश का पालन करना सभी आर्य सदस्यों का कर्त्तव्य है।

इस बारे में यह भी सावधानी बरतने की जरूरत है कि जनगणना के लिए धर्म, जाति भाषा आदि की सूचना परिवार के प्रमुख अथवा उस समय घर में उपस्थित व्यक्ति से ली जायेगी। इसलिए हमें अभी से अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को यह सावधान कर देना चाहिये कि सब अपने आपको आर्य, धर्म वैदिक और भाषा हिन्दी लिखाये।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक—वि०सा० विद्यालंकार

वेद मनन :

देवी की कृपा दृष्टि

समख्ये देव्याधिया सं दक्षिणयो रुचक्षसा ।

मा म आयुः प्रमोषीर्मो अहं तव वीरंविदेय, तव देविसंदृशि ॥ यजु: ४-२३

ऋषि :—वत्स. । देवता—वाक्-विद्युत् वा।

शब्दार्थ—वत्स अर्थात् अविवाहित मैं (दक्षिणया) दाक्षिण्यपूर्ण (उरुचक्षसा) दूर दृष्टि सम्पन्न (धिया) क्रियात्मक बुद्धिमती (देव्या) पवित्र शीलवती देवी के साथ (समख्ये) प्रतिज्ञा करता हू और अपने सम्बन्ध को प्रख्यात करता हूं कि आज से हम दोनो विवाहित हो गये हैं।

(देवि) हे दिव्य गुणों को प्रकट करने वाली देवि ! (तव सदृशि) अपने निरीक्षण मे रखकर (मे आयुः) मेरी आयु को (मा प्रमोषी) लुप्त मत कर, कममत होने दे। (अहं) मैं (तव) तेरी आयु को (मा) कम नहीं होने दूंगा। और (तव संदृशि) तेरी कृपा दृष्टि होने पर (वीरं विदेय) उत्तम गुण सम्पन्न वीर पुत्र को प्राप्त करूं।

निष्कर्ष—१—वाणी में शांति और शत्रुता दोनों को उत्पन्न करने का सामर्थ्य है। विद्युत् में प्रकाश और दाह अथवा निर्माण तथा संहार दोनो सामर्थ्य हैं। इसी प्रकार पत्नी मे घर को बनाने और बिगाड़ने की शक्ति है। इसलिए उसकी सदृक्—कृपा दृष्टि की प्रार्थना की है।

२—पति पत्नी एक दूसरे का ख्याल रक्खें तो दोनों सन्तुष्ट रहते हैं। उनकी आयु सुख पूर्वक गुजरती है। यदि एक दूसरे की उपेक्षा करें तो असंतोष उत्पन्न होता है और उनकी आयु घटती है।

३—पत्नी की कृपा दृष्टि या सहमति हुए बिना उत्तम सन्तान नहीं बन सकती। सन्तानोत्पत्ति तथा उसके सत् निर्माण में पत्नी का प्रत्यक्ष सहयोग आवश्यक है। अन्यथा सन्तान होगी ही नहीं, और यदि हो जाएगी तो उत्तम तथा विद्युत् के समान विख्यात या द्युतिसम्पन्न नहीं बन पाएगी।

४—अपनी बुद्धि को उदार, दूर-दृष्टि तथा कर्ममय बनाना चाहिये और फिर इन गुणों से युक्त बुद्धिमती स्त्री को विचार-विमर्श तथा आलाप-संलाप करने के बाद अपनी सहयोगी बनाने की घोषणा करनी चाहिए और तदनन्तर आयुपर्यन्त साथ रहने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

विशेष—इस मंत्र का ऋषि वत्स है। वत्स, बछड़े को तब तक कहते है, उस पर जब तक जुआ नहीं रक्खा जाता है। उसके बाद वह बैल बन जाता है। इसी प्रकार मनुष्य सतान तब तक वत्स है, जब तक उस पर गृहस्थी का जुआ नहीं रक्खा गया है। यह ऋषि वाक् और विद्युत् गुणो वाली देवी की संदृष्टि प्राप्ति में प्रवृत्त है।

अर्थ पोषक प्रमाण—वत्स:—वह बछड़ा जिस पर अभी तक जुआ नही रक्खा गया है, बैल बनने को उद्यत आपटे कोष।

वाक्—वाणी, सरस्वती, प्रतिज्ञा। विद्युत्—विद्युत्, वज्र। आपटे कोष

संदृशि—सम्यक् निरीक्षणे,

समख्ये—ख्या प्रकथने। ख्यापयामि—वच्मि प्रतिजानामि च।

—मनोहर विद्यालंकार

वीरता का घोष :

कर्म करो कर्म करो

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ यजु: ४०।२

(इह) इस ससार मे (कर्माणि) कर्म (कुर्वन्) करता हुआ ही (शतं समाः) सौ वर्ष तक (जिजीविषेत्) जीने की इच्छा करे (एव) इस प्रकार (त्वयि नरे) तुम, मनुष्य मे (कर्म न लिप्यते) कर्म नही लिप्त होगे।

इस संसार मे हमे कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। गति, कर्मशीलता ही जीवन है। गतिहीन अकर्मण्य मनुष्य पापी हो जाता है। ईश्वर को भी वे ही लोग प्राप्त करते हैं जो कर्मशील हैं, जिनके जीवन में जागृति है, जो सदा सावधान रहते हैं। वेद कहता है—

इच्छान्ति देवा सुन्वन्त
न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः। ऋ. ८।२।१८

विद्वान् लोग कर्मशील को ही चाहते हैं, कर्मशील ही प्रेम करता है, वे निद्रा में पड़े हुए, आलस्य में डूबे हुए, जंभाई लेने वाले आलसी पुरुष से प्रेम नहीं करते। आलस्य रहित मनुष्य ही उस आनन्द स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार इस संसार में कर्म का सम्बन्ध प्रत्येक मनुष्य से है। परन्तु यह कर्म ज्ञानपूर्वक भी हो सकता है, अज्ञान पूर्वक भी। और तीसरी स्थिति यह भी हो सकती है कि हमें कार्य का न्यास या त्याग कर दें। त्याग करने का मतलब होगा कि हम आलसी बन जांय। भर्तृहरि नीति शतक में कहा गया है:—

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो
महान् रिपुः।
नास्त्युद्यम समोबन्धुः य कृत्वा
नावसीदति।
भर्तृ. नीति. ८०

आलस्य मनुष्य के शरीर में विद्यमान सबसे बड़ा शत्रु है और परिश्रम के समान मनुष्य का दूसरा कोई मित्र नहीं है। कई मनुष्य आलस्य के कारण तो नहीं परन्तु ज्ञानमार्गी होने से वैराग्य धारण कर लेते हैं और वे वैराग्य का मतलब यह समझते हैं कि हमें कर्म नही करना चाहिए। कर्म करने को वे संसार में फँसना मानते हैं। परन्तु वेद का ऊपर का मंत्र बिना शर्त यह बात कहता है कि दुनिया में यदि तुम जीना चाहते हो तो कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो। संसार को कुछ लोग जिन्हें हम प्रकृतिवादी कहते हैं सार समझते हैं और वे संसार को भोगने में डटे रहते हैं। अध्यात्मवादी लोग संसार को असार मानते हैं, वे संसार को छोड़ कर भाग जाते हैं परन्तु एक तीसरा दृष्टिकोण यह है कि संसार असार हो सकता है पर इसे छोड़ो नहीं—इससे भागो नहीं, संसार सत् या सारमय है यह ठीक नही परन्तु इसमें डटो रहो। इसे सुन्दर से सुन्दरतर बनाते जाओ। यही दृष्टिकोण इस मंत्र का है। वह कहता है सौ वर्ष तक कर्म करते हुए भी जीवित रहो। श्रीकृष्ण ने गीता में उसे निष्काम कर्म का नाम दिया है। निष्काम कर्म का मतलब कर्म छोड़ देना या निष्कर्मण्यता नहीं। निष्कर्मण्यता में आदमी काम नहीं करता और निष्काम कर्म में लगे रहना है। वैसे तो गीता ने कहा है:—

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु
तिष्ठत्यकर्मकृत्।
(गीता ३।५)

कोई मनुष्य बिना कर्म के एक क्षण भी नहीं रह सकता। और कोई कर्म न सही, आँख की पलक गिरेगी, उठेगी। साँस बाहर निकलेगा, अन्दर आएगी अतः गीता कहती है:—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु
कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूः मा ते
सङ्गोस्त्वकर्मणि ॥
विहाय कामान् यः सर्वान्
पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स
शान्तिमधिगच्छति ॥
(गीता २।७२)

तुम्हारा कार्य करने में अधिकार है परन्तु फल में तेरा अधिकार नहीं। फल में तू अपना अधिकार न समझ। फल में तू आसक्त मत हो अन्यथा फल न मिलने पर तू कर्म ही छोड़ देगा।

इस श्लोक से ऊपर के मंत्र की दूसरी पंक्ति का भाव स्पष्ट हो जाएगा। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। वह अच्छा या बुरा जैसा चाहे कर्म कर सकता है पर फल की प्राप्ति उसके वश की बात नही। अतः गीता कहती है 'मा कर्मफल हेतुर्भूः' मनुष्य! तू समझ ले कि फल का कारण तू नहीं है अर्थात् फल तेरे हाथ में नहीं है। मनुष्य कर्म करेगा तो फल की आशा करेगा ही परन्तु फल यदि इच्छानुकूल न मिले तो निराशा नहीं होना चाहिए क्योंकि फल देने वाला तो दूसरा है। फल देना उसके हाथ की बात है। तुझे इस संसार में खेलना है। जीत और हार तेरे वश की बात नही।

लेखक :
सुरेशचन्द्र वेदालंकार

यह समझ कर जो कर्म करता है, कर्म उससे लिप्त नहीं होते। मन्त्र कहता है 'एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यतेनरे' इस प्रकार कर्म करने से कर्म तुझमें लिप्त नहीं होंगे?"

निष्काम शब्द का उल्टा या विपरीतार्थक शब्द सकाम है। सकाम कर्म का अर्थ है—मन में कामना या वासना उत्पन्न हो जाना। निष्काम कर्म का अर्थ है वासना या आकांक्षा मुक्त कर्म। आकांक्षा या वासनायुक्त या सकाम कर्म में मनुष्य के अन्दर सदा असन्तोष विद्यमान रहता है और उसे शांति नहीं मिलती। निष्काम कर्म में वासना या आकांक्षा न होने से सारा ध्यान कर्म की ओर रहता है और कर्म की ओर ध्यान होने से हम कार्य को अच्छी तरह करना चाहते हैं। साधनों की पवित्रता का ध्यान रखते हैं। अनुचित साधनों का प्रयोग करके येन केन प्रकारेण कार्य

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय

ईसाईयों द्वारा सुविधाओं की मांग

अभी कुछ दिन पूर्व ईसाईयों के प्रतिनिधिमण्डल ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट कर एक स्मरण पत्र दिया जिसमें यह मांग की गई है कि अनुसूचित जातियों और जनजातियों के जो लोग धर्म परिवर्तन करके ईसाई हो जाते हैं उन्हें भी वही सुविधाएं दी जायें जो कि अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों को प्राप्त है। इस मांग के समर्थन में उन्होंने तर्क यह दिया है कि धर्म परिवर्तन के बाद भी इन जातियों के लोगों का आर्थिक स्तर नहीं बदलता। इन लोगों के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए अनुसूचित जातियों और जनजातियों के ईसाई बने लोगों को सुविधाएं दिलाने का प्रचार समाचार पत्रों के माध्यम से भी शुरू कर दिया है।

इस सम्बन्ध में सबसे पहले संवैधानिक स्थिति को समझ लेने की जरूरत है। भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति आदेश १९५० में यह व्यवस्था है कि कोई भी वह व्यक्ति अनुसूचित जाति अथवा जनजाति का नहीं माना जाएगा जो धर्म से हिन्दु या सिख न हो। इस आदेश को बाद में १९५० के संवैधानिक संशोधन में भी स्वीकार किया गया था। इस संवैधानिक व्यवस्था का कारण यह था कि हिन्दुओं में जातिगत आधार पर जो विभिन्न वर्ग बने हुए हैं उस व्यवस्था के अन्तर्गत सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से सारा प्रभुत्व उच्च वर्गों के हाथ में है। ऐसी स्थिति में निम्न वर्गों और जातियों के लोगों को अपनी प्रगति और विकास के अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते। राजनीतिक दृष्टि से संविधान द्वारा जब सभी के लिए समानता का सिद्धान्त स्वीकार किया गया तो यह अनुभव किया गया कि राजनीतिक स्तर पर समानता प्रदान करने पर भी सामाजिक दृष्टि से और प्रशासनिक दृष्टि से निम्न वर्गों और जातियों के लोगों को अपने विकास और प्रगति में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। इसीलिए यह विशेष रूप से व्यवस्था की गयी कि न केवल इन लोगों को समानता के अधिकार प्रदान किये जायें बल्कि ये लोग अपने अधिकारों का प्रयोग भी कर सकें, इसलिए कुछ विशेष व्यवस्थाएं की गई और संविधान में कुछ निदेशात्मक प्रावधान विशेष रूप से किए गये। यह प्रावधान करते समय इस आशंका को ध्यान में रखा गया था कि विकास और प्रगति का कार्य क्योंकि समयापेक्षी होता है इसलिए धार्मिक दृष्टि से अन्य धार्मिक समुदाय इन कमजोर वर्गों की स्थिति का लाभ उठाते हुए इन्हें प्रलोभन देकर अपने धर्म में दीक्षित कर सकते हैं। इसी आशंका को दूर करने के लिए अनुसूचित जाति आदेश १९५० की व्यवस्था की गयी थी।

उस समय व्यक्त की गई यह आशंका बाद में वास्तविक रूप धारण करने लगी। इसका उदाहरण सबसे पहले झारखण्ड में देखने को मिला। स्व० प० जवाहरलाल नेहरू के काल में झारखण्ड क्षेत्र में झारखण्ड पार्टी को इस क्षेत्र के विकास कार्य के लिए करोड़ों रुपये की राशि दी गयी। परन्तु इस पार्टी ने इस पैसे का उपयोग विकास कार्यों में न करके अपने राजनीतिक और धार्मिक कार्यों के लिए किया। परिणाम यह हुआ कि इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर ईसाईयों ने धर्म परिवर्तन का कार्य किया। इससे इस क्षेत्र के गैरईसाई अनुसूचित जातियों और जनजातियों में बहुत असन्तोष पैदा हुआ। कुछ समय पूर्व इसी क्षेत्र के एक संसद सदस्य कार्तिक औरांव के नेतृत्व में संसद सदस्यों को एक ज्ञापन दिया गया था जिसमें यह मांग की गयी थी कि अपने धर्म को छोड़कर ईसाई बनने वाले लोगों को विशेष संरक्षण और आर्थिक सुविधाएं प्राप्त नहीं होनी चाहिए। कार्तिक औरांव ने तो एक विधेयक भी तैयार करके पेश किया था परन्तु बाद में सरकार के दबाव के कारण यह विधेयक वापिस ले लिया गया।

ईसाईयों द्वारा संरक्षण और आर्थिक सुविधाओं की मांग का उद्देश्य राजनीतिक और धार्मिक अधिक है क्योंकि सामाजिक स्तर पर यह देखा गया है कि विदेशों से प्राप्त होने वाले पैसे से जिन आदिवासी क्षेत्रों में धर्म परिवर्तन के जिस कार्य में ये लोग लगे रहते हैं वहां ये लोग न केवल शिक्षा और चिकित्सा की व्यवस्था करते हैं बल्कि इन क्षेत्रों की ईसाई बस्तियों के रहन-सहन के स्तर को भी ऊपर उठा देते हैं। इसका परिणाम स्थानीय कमजोर वर्गों के लोगों पर यह होता है कि वे इस प्रकार का जीवन स्तर प्राप्त करने के लिए तेजी से ईसाईयों की ओर आकृष्ट होते हैं। अब अपने इस कार्य को अर्थात् इन कमजोर वर्गों के लोगों को ईसाईयत की ओर आकृष्ट करने के लिए तथा अपने कार्य को राजनीतिक मान्यता दिलवाने के लिए अब वे संरक्षण और आर्थिक सुविधाओं की मांग करने लगे हैं।

ईसाईयों ने अपने दबाव को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए गृह मन्त्रालय द्वारा नियुक्त अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों की समिति के अध्यक्ष डा० गोपाल सिंह को भी एक स्मरण पत्र दिया है जिसमें यह शिकायत की गई है कि ईसाई बनने के बाद अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों को संरक्षण और आर्थिक सुविधाएं प्राप्त नहीं होतीं। इस आयोग से उन्होंने मांग की है कि वह इस स्थिति को समाप्त करवाके ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने के बाद भी उन्हें यह सब सुविधाएं दिलाने की व्यवस्था करे। इस प्रकार न केवल प्रधानमंत्री के स्तर पर बल्कि आयोग के स्तर पर भी ईसाई लोग संविधान की भावना के विरुद्ध देश भर में ईसाई साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

ईसाई साम्राज्य की बात इसलिए करनी पड़ती है क्योंकि जिन क्षेत्रों में ईसाईयों का बहुमत हो गया है वहाँ पृथकतावादी आन्दोलन शुरू हो गया है। झारखण्ड क्षेत्र, नागालैंड तथा पूर्वांचल के अन्य क्षेत्र इसके उदाहरण हैं। केरल तथा तमिलनाडु के जिन क्षेत्रों में ईसाईयों की स्थिति बन गयी है वहाँ भी प्रायः हिन्दु-ईसाई संघर्ष निरन्तर होते रहते हैं। ऐसी स्थिति में ईसाईयों को इस प्रकार की दी गयी सुविधाएं देश में पृथकतावाद के पक्षधरों की स्थिति को मजबूत बनायेंगी।

समान हिन्दु मुस्लिम कानून की मांग

'आर्य सन्देश' द्वारा निरन्तर यह मांग की जा रही है कि देश भर के सभी नागरिकों के लिए कानूनी व्यवस्थाएं एक सी हों। केवल हमी नहीं बल्कि मुहम्मद करीम छागला जैसे न्यायशास्त्री भी लम्बे समय से इस बात का समर्थन करते रहे हैं कि देश के सभी नागरिकों पर सभी कानून समान रूप से लागू होने चाहिए। अभी इसकी पुष्टि फिर से एक तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामिक गोष्ठी में की गयी है। यह गोष्ठी नई दिल्ली में आयोजित की गयी थी और इसका विषय था "भारत के विशेष उल्लेख के साथ विश्व संस्कृति और सभ्यता को इस्लाम की देन।" इसी गोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० ताहिर मुहम्मद, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के प्राध्यापक श्री अली अशरफ, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के इतिहास के रीडर डॉ. एस० बी० पी० निगम ने यद्यपि अवसर के अनुकूल इस्लाम के भारत पर प्रभाव के बारे में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें की, परन्तु सभी ने निर्विवाद रूप से जिस बात पर जोर दिया वह था कि पश्चिमी प्रभाव की उपेक्षा कर इस्लामी न्यायपद्धति और हिन्दु स्मृति और कानूनी पद्धति को मिलाकर एक नयी राष्ट्रीय कानूनी पद्धति तैयार की जानी चाहिये।

यद्यपि मुस्लिम समाज पर कट्टर पन्थियों का बहुत प्रभाव है, तो भी मुस्लिम जगत में बुद्धिजीवियों द्वारा इस प्रकार की आवाज उठाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। मुस्लिम व्यक्तिगत कानून और इस्लाम के अनुसार बहुविवाह की अनुमति के कारण देश में लम्बे समय से तनाव चला आ रहा है जिसका हमारे सामाजिक जीवन को अस्त-व्यस्त करने में बहुत बड़ा हाथ है। इन सामाजिक तनाव के परिणामों को देखते हुए भी मुस्लिम समाज की ओर से इस दिशा में कोई पहल कभी नहीं हुई। ऐसी स्थिति में कुछ मुस्लिम बुद्धिजीवियों द्वारा हिन्दु और मुस्लिम न्यायपद्धतियों के एकीकरण की बात उठाना स्वागत योग्य है।

इस अवसर पर उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति पी० एन० भगवती ने यह सुझाव दिया कि इस दिशा में मुसलमानों को स्वयं आगे बढ़कर अपने न्यायिक सिद्धान्तों को भारतीय आचार-संहिता में सम्मिलित कराने के प्रयत्न करने चाहिये और समाज का पथप्रदर्शन करना चाहिये। इस गोष्ठी में उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री वी० आर० कृष्ण एय्यर ने भी भारतीय आचार संहिता में इस्लामी न्याय प्रणाली को सम्मिलित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसी प्रकार के विचार भारत के भू. पू. प्रधान न्यायाधीश श्री एम० एच० बेग और उपराष्ट्रपति श्री हिदयातुल्ला ने भी व्यक्त किये।

प्रबुद्ध वर्ग का प्रत्येक व्यक्ति सैद्धान्तिक स्तर पर इस बात का समर्थन करेगा कि देश के सभी नागरिकों के लिए समान आचार संहिता हो और उसमें सभी धर्मों की स्मृतियों, आचार संहिताओं की उपयोगी बातें ग्रहण कर ली जायें। परन्तु धर्म विशेष के आधार पर समान आचार संहिता में कुछ बातों का ग्रहण किया जाना अपनी सम्पूर्ण न्याय प्रणाली को विकृत करना होगा। अधिक उपयुक्त यह होगा कि अब तक के व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर जो न्यायिक और वैधानिक मुद्दे उभर कर आये हैं समान आचार संहिता में उन्हीं मुद्दों पर ध्यान दिया जाये। अधिक उपयुक्त यह होगा कि इस प्रकार की आचार संहिता तैयार करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति बना दी जाये जिसमें अनुभवी न्यायशास्त्रियों को रखा जाये। इन लोगों द्वारा तैयार की गई आचार संहिता देश भर के सभी वर्गों और सम्प्रदायों पर समान रूप से लागू कर दी जाये।

उत्तर पूर्व भारत में आर्यसमाज की आवश्यकता

गंगतौक (सिक्किम) में आर्यसमाज की स्थापना

अभी कुछ दिन पूर्व मैं उत्तर पूर्वी भारत गया। वहां मैंने आर्यसमाज की स्थिति व आवश्यकता का भी अध्ययन किया।

सर्वप्रथम मैं सिलीगुड़ी पहुंचा। महानदी के तट पर ही वहां आर्य समाज बना है। यह मन्दिर वहां हरियाणा के श्री रतिराम जी शर्मा जैसे कुछ कार्यकर्त्ताओ के उत्साह से बना है। अभी तक उसका निर्माण-कार्य चल रहा है। श्री रतिराम जी के घर पर भी यज्ञशाला है। पूरा परिवार हवन करता है। उनके पुत्र पुत्री, पोता, पोती सभी को कुछ वेद मंत्र याद थे। वे मौरीशस तथा लन्दन आर्य महासम्मेलनों में भाग ले चुके थे। श्री रतिराम जी ने बताया कि उत्तर भारत से आए हुए कुछ लोग ही आर्यसमाज की गतिविधि मे भाग लेते हैं। यहा के बगाली इसमे रुचि नहीं ले पाते। वे वहां आर्यसमाज के नेतृत्व तथा सगठन का अभाव अनुभव करते हैं। उनका यह भी कहना था कि हमने यहा आर्यसमाज के कई नेताओं को निमन्त्रित किया है पर इधर आने में उनका उत्साह नहीं है। वे फरवरी के मास में अच्छे स्तर का एक उत्सव अवश्य करते हैं। उसमें विद्वानों व नेताओं को निमन्त्रित भी करते हैं। पर वे वहा सगठन के गतिशील होने की आवश्यकता अनुभव करते हैं।

सिलीगुड़ी से फुन्तसिलिंग (भूटान) गया। वहां आर्यसमाज के होने का प्रश्न ही नहीं था। वहा मैं पी० डब्ल्यू० डी० के मुख्य अभियन्ता श्री प्रधान से मिला। उनसे जब मैने पूछा कि क्या उन्होंने महर्षि दयानन्द का नाम सुना है, तो उन्होंने हां में सिर हिलाया। पर वे उनके बारे मे इससे अधिक नहीं जानते। उन्हें सत्यार्थ प्रकाश के बारे में भी अधिक ज्ञान नहीं था। एक सत्यार्थप्रकाश मैंने श्री प्रधान को दिया। उन्होंने उसे पढ़ने का आश्वासन दिया। भूटान में हिन्दू व बौद्ध संस्कृति है। वहा भी आर्यसमाज के प्रचार की संभावना अत्यधिक है।

केलिम्पांग पश्चिमी बंगाल का पर्वतीय प्रदेश है। बहुत सी जनता यहां घूमने के लिए आती है। वहां श्रीमती कमला (श्री राहुल सांस्कृत्यायन की पत्नी) की बहन से मिला। लगभग ५० वर्ष की थी।

मुझे रतिराम शर्मा ने बतायाथा कि उनका आर्यसमाज से कुछ संबंध है। उनसे मिलने पर पता चला कि उनके दिवंगत पति वकील थे और कुछ लोगो को एकत्र कर यज्ञ आदि भी करते थे। दयानन्द की पुस्तकों को भी पढ़ते थे पर यहां न आर्यसमाज है और न उनके बाद कोई इसमें रुचि लेता है। उन्होंने मुझे एक नवयुवक श्री लोकराज अग्रवाल से सम्पर्क करने के लिए कहा। उनमें मैंने आर्यसमाज की स्थापना की सम्भावनाओं के विषय में पूछा तो बोले यहां उसकी बहुत आवश्यकता है। विशेष रूप से स्कूल अवश्य खोलना चाहिए। उन्होंने भी अभी तक कभी सत्यार्थ-प्रकाश नहीं देखा था। उन्हें भी मैंने एक सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

गगटोक (सिक्किम) पहुंचने पर पाया कि यहां तो आर्यसमाज का कोई नाम ही नहीं जानता था। पर कुछ लोग इस बात के लिए तैयार हो गए कि वे यहा के लोगों की एक बैठक बुला कर मेरा परिचय करा देंगे। इसी मध्य मेरा सम्पर्क एक उत्साही सज्जन श्री गंगदेव वानप्रस्थी से हुआ। वे मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। यह बात भी उनको अच्छी लगी कि मैं चाहता हूं कि यहां एक आर्यसमाज की स्थापना की जाए। वहा बैठक रखने का एक मात्र स्थान ठाकुरवाड़ी था, जहां हनुमान राम आदि की मूर्तियां थीं। मेरे कहने पर उन्होने वहीं बैठक रखी। बैठक में बारह-तेरह लोग उपस्थित थे। मैंने उन्हें सिक्किम में आर्यसमाज की आवश्यकता समझायी। कई लोग तब बहुत देर तक निराशा की बात करते रहे। उनका कहना था कि यहां आर्यसमाज की स्थापना कठिन काम है। वे सभी धन कमाने के लिए दूर देश से आए हैं। हम व्यापारियों के लिए समय निकालना कठिन काम है। बारम्बार उन्हें प्रेरित करने पर एक समिति बनाने का निश्चय किया जिसमें स्वेच्छा से लोगों ने नाम दिये और गगटोक (सिक्किम) में पहले आर्यसमाज की स्थापना हो गयी। समिति का गठन इस प्रकार है—प्रधान : श्री गंगदेव वानप्रस्थी, मन्त्री : श्री चौधरी, कोषाध्यक्ष : श्री मुरारीलाल, अन्य सात सदस्य भी चुने गये। उन लोगों को मैंने सत्यार्थप्रकाश भी दिये तथा अपनी लिखी हुई अन्य पुस्तकें भी दीं। यह भी निश्चय करवाया कि वे प्रति सप्ताह एक दिन किसी के घर एकत्र होकर पारिवारिक सत्संग किया करेंगे। उसमें सत्यार्थप्रकाश आदि की कथा भी होगी। यह उल्लेखनीय है कि श्री वानप्रस्थी जी अब दैनिक हवन करते हैं। आर्यसमाज के लिए भूमि प्राप्त करने का प्रयास आरम्भ करने के लिए भी मैंने कहा। यह सत्य है कि गंगटोक में आर्यसमाज की स्थापना हो गयी है पर इसको शक्ति नीचे से ही भेजनी होगी। वहां की कठिनाइयों को देखते हुए वे स्वयं उसको खड़ा कर लेंगे यह कठिन लगता है।

लेखक :

डा० प्रशान्त वेदालंकार

सिक्कम में शिक्षा मन्त्रालय की सहायता से गांधी सेवाश्रम के तत्वावधान में संचालक श्री सुब्बाराव जी ने राष्ट्रीय योजना का एक शिविर लगाया था, मैं उसी में भाग लेने के लिए गया था। असम, नागालैंड, मणिपुर, पश्चिमी बंगाल तथा सिक्किम के अनेक युवक युवतियो से मैंने साक्षात्कार किया। उनमे से कोई भी आर्यसमाज का नाम नहीं जानता था। दो-एक को महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम का कुछ ध्यान अवश्य था। आधुनिक इतिहास में कुछ ने यह नाम सुना हुवा था। यह भी उल्लेखनीय है कि इन सभी प्रदेशों मे हिन्दी की दुर्गति तो है ही। संस्कृत के अध्ययन की तो कहीं सुविधा नही है। वेद की बात ही क्या करें।

दार्जिलिंग में आर्यसमाज की दुर्दशा

गंगटोक से मैं दार्जलिंग आया। यहां से मैं आर्यसमाज में गया। एक कमरा है उसी में पत्र पत्रिकाएं हैं। होम्योपैथी औषधालय है। कमरे से ही उसकी दीन-हीन स्थिति का परिचय मिल गया। दार्जलिंग क्षेत्र में ईसाई धर्म प्रचार से वहां के लोग भयभीत थे। इस आर्यसमाज की स्थापना सन् १८८२ सम्वत १९३९ में महर्षि दयानन्द के जीवन-काल में ही हुई थी। नेपाली तथा हिन्दी में साहित्य भी यहां प्रकाशित हुआ है। दो वर्ष बाद इस आर्यसमाज की शताब्दी भी मनायी जायेगी। पर कार्य में शिथिलता के कारण वहां के आर्यसमाजी निराश ही थे। इस समय वहां के अध्यक्ष रत्नभारती प्रधान हैं। मंत्री श्री टोलाप्रसाद जी हैं। इन्होंने नेपाली में वैदिक साहित्य की रचना की है। २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस था। दार्जलिंग तथा सिलीगुड़ी में मेरे कहने से मनाया गया था।

दार्जिलिंग में ५-६ नेपाली सज्जन थे हमने पहले यज्ञ किया, फिर दार्जलिंग आर्यसमाज की स्थिति तथा उसकी गतिविधियों का परिचय प्राप्त किया। बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान की गाथाओं को स्मरण करके उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

दार्जलिंग आर्यसमाज इस समय एक छोटे से कमरे में चल रही है। इससे सम्बद्ध दो आर्य विद्यालय भी हैं। पर जहां तक आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार का सम्बन्ध है, वहां यह काफी पीछे है। यद्यपि वहां नेपाली तथा हिन्दी में प्रकाशित आर्य साहित्य था, जिससे यह अनुमान होता था कि कभी यहां प्रचार भी अच्छा चलता था। पर इस समय बहुत शिथिलता थी। शिथिलता का कारण यह बतलाया गया कि पुराने आर्यसमाजी वृद्ध हो गये हैं। नये कार्यकर्त्ताओ का निर्माण नहीं हो सका। यह उल्लेखनीय है कि बूढ़े कहे जाने वाले आर्यसमाजी कलकत्ता आर्यसमाज के एक उत्सव में गये हुए थे। जो व्यक्ति उत्साहपूर्वक आर्यसमाज के उत्सव में एक दूर के नगर में जा सकता है, वह अपने नगर के आर्यसमाज को ऊंचा क्यों नहीं उठा सकता? यह प्रश्न अनुत्तरित रहा।

मैंने उन लोगों को यह परामर्श दिया कि वे मार्च या अप्रैल १९८२ में अपने आर्यसमाज की शताब्दी समारोह पूर्वक सम्पन्न करें। मैंने उनसे यह भी कहा कि सार्वदेशिक सभा को कहूंगा कि वे तब यहां एक आर्य महासम्मेलन करें। उस सम्पूर्ण क्षेत्र मे आर्यसमाज में जो शैथिल्य है, वह उस आर्य महासम्मेलन से दूर हो सकता है। वहां के लोग बढ़ते हुए ईसाईयत के दुष्प्रभाव से चिन्तित थे। पर चिन्ता के शमन का कोई उनमें उत्साह नहीं था।

सिलीगुड़ी आर्यसमाज में भी श्रद्धानन्द बलिदान-पर्व उसी दिन शाम को मनाया गया। मैंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की कहानियां सुनाकर उनको उसी बलिदान भावना से आर्यसमाज के कार्य को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। वहां के लोगों में उत्साह भी था। पर उनका कहना था कि हम लोग व्यापारी हैं, उतना समय नहीं दे सकते। यदि सार्वदेशिक सभा हमें सहयोग दे दे, कुछ कार्यकर्त्ता जुटा दें, तो उनका सारा व्यय हम सहन कर लेंगे। उनकी सहायता से सारा कार्य किया जा सकता है।

—क्रमशः

पाकिस्तान में विस्मृत धर्म स्थान

जिस प्रश्न पर मैं कई वर्ष से विचार कर रहा था, उस विषय पर पिछले दिनों 'आर्य सन्देश' में सामग्री देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं इस बात का दृढ़ समर्थक और अभिलाषी हूं। कि पाकिस्तान तथा यूगांडा जैसे अन्य देशों में, जहां से ईदी अमीन ने सारे भारतीयों को निकाल दिया था, आर्य समाज मन्दिरों की सुरक्षा का प्रश्न आर्यसमाज के नेता बड़े गम्भीर रूप से भारत सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में उठाये। 'एमनेस्टी इण्टरनेशनल' जैसी संस्थाओं के माध्यम से भी इस सम्बन्ध में आन्दोलन उठाया जाना चाहिये और पाकिस्तान में आर्यसमाज की संस्थाओं की स्थिति के निरीक्षण के लिए आर्य नेताओं तथा आर्य जनो को वहां जाने की अनुमति लेनी चाहिए।

इस सम्बन्ध में चर्चा होने पर भी प्राचार्य लक्ष्मी दत्त जी दीक्षित (अब स्वामी विज्ञानन्दजी सरस्वती) का कहना था कि हम किन्हीं भवनों के साथ धर्म या ईश्वर का सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते उधर श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी का कहना था कि हमने क्योंकि आर्य-समाज मन्दिरों के साथ मुसलमानों की तरह धर्म,ईश्वर या पवित्रता का सम्बन्ध जोड़ा नही, अत: हम इस प्रश्न को गम्भीरता से उठा नहीं सकते। एक अन्य बड़े नेता का उत्तर था कि यह प्रश्न तो देश-विभाजन के समय आर्य समाज के नेतृत्व (म. कृष्ण आदि) को उठाना चाहिए था—अब हम क्या कर सकते हैं ?—आदि आदि।

इस सदर्भ मे यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि पाकिस्तान मे श्री धर्मपाल (अब्दुलगफूर) ने वहां की सरकार से मांग की थी कि आर्यों के प्रतिनिधि के रूप मे मुझे आर्यसमाज मन्दिरों की व्यवस्था करने का अधिकार मिलना चाहिए। कई वर्ष पूर्व पाकिस्तान के हरिजनों और पिछड़े वर्गों के प्रवक्ता एक कबीरपन्थी ने पाकिस्तान के शासको से मांग की थी कि उनके उद्धारक के रूप मे महर्षि दयानन्द का स्मृति-दिवस पाकिस्तान में मनाया जाये। प्रसिद्ध लेखक होशियारपुर के श्री सन्तराम बी.ए. ने उनकी अपील आर्य पत्रों में प्रकाशित करायी थी। अब भी पर्याप्त सख्या में हिन्दू (विशेषकर दलित वर्ग) पाकिस्तान मे हैं। हमारी वहा की यात्राओ से उन पर एक स्वस्थ प्रभाव पडेगा।

लेखक :
जयदेव आर्य

गत वर्ष जब मलयेशिया मे हिन्दू मन्दिरों के तोड़े जाने पर अनेक विरोध सभाएं हुई, तो दरियागंज के एक नये से सनातन धर्म मन्दिर में दिल्ली (संभवत: भारत नगर) के एक सज्जन ने पाकिस्तात के हिन्दू मन्दिरों की सुरक्षा के सम्बन्ध में भारत सरकार से किये गये अपने पत्र-व्यवहार और शीर्षस्थ नेताओ के साथ अपने सम्पर्क का कुछ विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया था। बाद मे मुझे बात-चीत में उन्होंने बताया था कि आर्यसमाज मन्दिरों का प्रश्न भी उसमे सम्मिलित हैं। इस समय घर से दूर बैठे मेरे पास उन सज्जन का पता नही है।

कुछ मिलाकर कहा जा सकता है कि यदि पवित्र स्थानों के रूप में न हो, तब भी ऐतिहासिक स्थानो के रूप में अपनी जन्मभूमि के रूप में तथा अपनी मानव-सुलभ भावनाओं की सतुष्टि के लिए हमें पाकिस्तान में अपने ऐतिहासिक स्थानो की रक्षा और उसके दर्शन का प्रयास अवश्य करना चाहिये। आर्यसमाज के इतिहास को पढ़ते हुए हम नयी पीढी के आर्यों को उन स्थानों को देखने की उत्कण्ठा अवश्य होती है। जब दोनो देशों के मध्य आवागमन बढाने के समझौतों की चर्चा होती है, तो हमें भी वहां जाने की अनुमति की मांग अवश्य करनी चाहिए। इसकी कार्यवाही करना आर्यसमाज के नेताओ का कर्तव्य है। □

आर्यसमाज शालीमार बाग के लिए भूमि प्राप्त

आर्यसमाज शालीमार बाग के साप्ताहिक सत्संग पिछले कुछ समय से पारिवारिक सत्संगों के रूप में चल रहे थे और स्थानीय लोग निरन्तर प्रयत्न कर रहे थे कि यहां पर आर्यसमाज मन्दिर निर्माण के लिए भूमि प्राप्त कर ली जाये । हमें प्रसन्नता है कि दिल्ली विकास प्राधिकरण ने स्थानीय आर्य-समाज और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुरोध को स्वीकार करते हुए शालीमार बाग में आर-९ बी० जे० प्लाट मन्दिर निर्माण के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देने की स्वीकृति प्रदान कर दी है । इस भूमि का क्षेत्रफल ५०० वर्ग मीटर है । भूमि राशि लगभग ३६,००० रुपये दो महीने के भीतर दिल्ली विकास प्राधिकरण को दी जानी है इसलिए दिल्ली की सभी आर्यसमाजों से यह प्रार्थना की जा रही है कि स्थानीय समाज की स्थिति को ध्यान में रखते हुए सभी समाजें भूमि का पैसा चुकाने और उस पर मन्दिर निर्माण के लिये अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करने की कृपा करें ।

यहाँ भूमि प्राप्त करने के लिये सब से अधिक कार्य इस क्षेत्र के डा० ओम प्रकाश मान ने किया । उन्हीं के प्रयत्नों के कारण तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री के व्यक्तिगत सहयोग के कारण यह भूमि प्राप्त हो सकी है । इस कार्य में संसद सदस्य श्री सज्जन कुमार तथा भू० पू० संसद सदस्य चौ० दिलीप सिंह ने भी सहायता प्रदान की है । दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री एलावाडी, कमिश्नर श्री के० एल० भाटिया और डी० डी० आई० श्री गुप्त ने भी बहुत सहानुभूति-पूर्वक भूमि संबन्धी आवेदनों पर विचार करके भूमि प्रदान करने के आदेश जारी किये ।

आर्यसमाज मन्दिर पश्चिमपुरी

आर्यसमाज पश्चिमपुरी जनता क्वाटर काफी समय से अपने क्षेत्र में आर्यसमाज के निर्माण के लिए प्रयत्न-शील हैं । इस क्षेत्र में भी दिल्ली प्राधिकरण ५०० वर्ग मीटर जमीन देना स्वीकार कर लिया है परन्तु अभी इस की राशि जमा करायी जानी है । आर्यसमाज पश्चिमपुरी ने यह अपील की है कि आर्यसमाजें, तथा अन्य संस्थाएं और दानी महानुभाव इस कार्य में उनकी सहायता करें । आशा है कि इस अपील को ध्यान में रखते हुए सभी अपना अंशदान देने की कृपा करेंगे ।

आभार प्रकट

मेरी पूज्यनीया माता श्रीमती जसवन्ती देवी के आकस्मिक निधन पर मित्रों, शुभ चिन्तकों, आर्य समाजों व संस्थाओं ने इस महान दुःख में अपनी संवेदना प्रकट करते हुए पत्र लिखकर हमें सबल प्रदान किया है । सबको अलग-अलग पत्र लिखकर भेजना संभव न देखकर इस पत्र से मैं सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ ।

सोमनाथ मरवाहा
सीनियर एडवोकेट
कोषाध्यक्ष-सार्वदेशिक सभा,
दिल्ली

आर्य जगत् समाचार

बच्चों का सांस्कृतिक व मनोरंजक कार्यक्रम

आर्यसमाज मन्दिर बाई ब्लाक सरोजिनीनगर नई दिल्ली में रविवार ८ फरवरी को प्रातः १० से १२ बजे तक यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है । इसमें पांचवीं से बारहवीं श्रेणी तक के बच्चे भाग ले सकेंगे । प्रत्येक वक्ता बच्चे को ४ मिनट का समय दिया जायेगा । बच्चे धर्मवीर हकीकतराय के बलिदान सम्बन्धी गायन, कविता एवं भाषण आदि का कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकेंगे । तीनों विषयों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले बच्चों को पारितोषिक तथा अन्य सभी वक्ता बच्चों को भी उत्साहित करने के लिए श्रीयुत उत्तमचन्द जी चोपड़ा मालिक कैपिटल सरजिकल कम्पनी दरियागंज नई दिल्ली-२ अपनी स्वर्गीया धर्मपत्नी श्रीमती पुरुषोत्तम देवी जी की पुण्य स्मृति में अपने कर कमलों से पारितोषिक वितरण करेंगे ।

माता-पिता तथा आचार्यगण भाग लेने के इच्छुक केवल एक छात्र-छात्रा का नाम ५ फरवरी १९८१ तक प्रतियोगिता संयोजक श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक १६५४, कूचा दखिनीराय दरियागंज नई दिल्ली-२ या मन्त्री हकीकतराय समिति जी-१६१ सरोजिनी नगर नई दिल्ली के पते पर भेज देवें तथा बच्चों के उत्साह सम्वर्द्धनार्थ स्वयं भी इष्ट-मित्रों सहित बहुसंख्या में प्रतियोगिता के अवसर पर पधार कर पुण्य व यश के भागी बनें । □

यज्ञ कथा का आयोजन

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश बी के तत्वाधान में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी शान्ति प्रकाश जी बहल अपने पूज्य पिता परमेश्वरीदास जी की पुण्य स्मृति में १६ से २२ फरवरी १९८१ तक चतुर्वेदीय यज्ञ तथा वेद कथा का आयोजन किया है । यज्ञ प्रातः ७ बजे से ८-३० तक श्री पं. वन्दे कुमार वेदालंकार ई-१० ग्रेटरकैलाश १ में करवाया करेंगे और वेद कथा सायं ८-३० बजे से ९-३० बजे तक आर्यसमाज मन्दिर ग्रेटरकैलास में दयानन्दजी विदेह किया करेंगे ।

(पृष्ठ १ का शेष)

दूसरी भाषा

जनगणना की जानकारी लेते समय दूसरी भाषा और अन्य भाषाओं के बारे में भी पूछताछ की जाती है क्योंकि आर्य नरनारी वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन श्रवण करते हैं इसलिए सभी आर्य नरनारी संस्कृत भाषा और उसके महत्व से परिचित है । इसलिए अपनी भाषा हिन्दी लिखाने के बाद दूसरी दो भाषाएं लिखाते समय संस्कृत को भी अपनी भाषा के रूप में अवश्य लिखवा दें । अपनी संस्कृति और वैदिक धर्म की रक्षा तथा प्रचार-प्रसार के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री ने सभी आर्यों से इस बारे में सावधान रहने की अपील की है और अनुरोध किया है कि उपर्युक्त आदेश का पूरी तरह पालन किया जाये । साथ ही अपने परिचितों और मित्रों को भी इसके लिए प्रेरित करें ।

सम्पादक के नाम पत्र

'आर्य सन्देश' के विशेषांक में लेखों का संयोजन बड़ी सूझबूझ से किया गया है । इन लेखों को जुटाने के लिए जो श्रम आपको करना पड़ा होगा उसका अनुमान मैं लगा सकता हूं । आपका श्रम सफल हुआ, इसकी विशेष प्रसन्नता है । आपको बहुत-बहुत बधाई आर्यसमाज की प्रासंगिकता से संबद्ध तीनों लेख बहुत अच्छे लगे । स्वामी श्रद्धानन्द जी का संस्मरण प्रेरक है । वे और भी होने चाहिये थे । महर्षि दयानन्द पर तीनों लेख प्रभावशाली हैं । इतनी उपयोगी सामग्री जुटाने के लिए आपको हार्दिक बधाई ।

प्रूफ की जो गलतियां रह गई हैं वे खटकती हैं ।

डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री, पो. पी. शिक्षा महाविद्यालय, बघड़ (संगरूर)

'आर्य सन्देश' के विशेषांक के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये । आपके सम्पादकत्व में आर्य सन्देश निखर रहा है । सामग्री, सम्पादन, तथा विचार प्रत्येक दृष्टि से आर्यसन्देश प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है, यह हर्ष का विषय है । 'आर्य सन्देश' आर्यों को संदेश देता रहे तथा हम उस सन्देश को घर घर पहुंचायें यही कामना है । एक बार पुनः हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए ।

रामकृष्ण भारती, बी. ७८, बाली नगर, नयी दिल्ली-१५

—०—

आर्यसमाजों के सत्संग

८-२-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—स्वामी स्वरूपा नन्द; अमर कालोनी—पं० कुशी राम शर्मा; आर्य पुरा—पं० राम रूप शर्मा; आर के पुरम सैक्टर ६—पं० सत्य भूषण वेदालंकार; आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—पं० सत्य पाल मधुर भजनोपदेशक; इन्द्र पुरी—आचार्य हरि देव सि० भू०; किंग्ज वे कैम्प—पं० प्रकाश चन्द शास्त्री; किदवई नगर—पं० प्रकाश वीर व्याकुल ; कृष्ण नगर—पं० देवेश; कालका जी—आचार्य कृष्ण गोपाल; करोल बाग—प० मुनि शंकर वानप्रस्थी; कोटला मुबारिकपुर—पं० हीरा प्रसाद शास्त्री; गांधी नगर—प्रो० वीर पाल विद्यालंकार; गीता कालोनी—पं० दिवाकर शर्मा; ग्रेटर कैलाश-II—प० हरीश वेदी; गुड़मन्डी—पं० वीर व्रत शास्त्री; १५१ गुप्ता कालोनी—पं० देव राज वैदिक मिशनरी; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—पं० ईश्वर दत्त एम-ए; जंग पुरा भोगल—पं० वेद पाल शास्त्री; जनक पुरी सी-३—डा० सुख दयाल भूटानी; जनक पुरी बी ३/२४—पं० ओम वीर शास्त्री; टैगोर गार्डन—पं० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; तिलक नगर—पं० प्राण नाथ सिद्धान्तलंकार; तीमार पुर—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; दरियागंज—श्री चिमन लाल; नारायण विहार—प० गजेन्द्र पाल शास्त्री; निर्माण विहार सी-२०६—वैद्य राम किशोर; पंजाबी बाग—प० दिनेश चन्द्र पराशर शास्त्री; पंजाबी बाग एक्सटेंशन १४/३—पं० तुलसी राम भजनोपदेशक; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बसई दारा पुर—पं० आशा नन्द भजनोपदेशक; बिरला लाईन्स—प्रो० सत्य पाल वेदार; माडल टाऊन—पं० हरि कृष्ण शास्त्री; माडल बस्ती—प० जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; महावीर नगर—पं० विश्व प्रकाश शास्त्री; महरौली—पं० शीश राम भजनोपदेशक; मोती नगर—पं० प्रकाश चन्द वेदालंकार; मोती बाग—प० केशव चन्द्र मुन्जाल; रमेश नगर—पं० छज्जू राम शास्त्री; राणा प्रताप बाग—श्री मोहन लाल गांधी; लड्डू घाटी—ला० लक्ष्मी दास; लक्ष्मी बाई नगर ई।२०८—श्रीमती लीलावती आर्या; विक्रम नगर—श्रीमती प्रकाश वती शास्त्री, विनय नगर—डा० रघुनन्दन सिंह; सदर बाजार पहाड़ी धीरज—पं० अशोक कुमार विद्यालंकार, सराय रोहेला—पं० सत्य देव भजनोपदेशक; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; शादीपुर—पं० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; हौज खास ई-४६—आचार्य राम शरण मिश्रा शास्त्री ।

(ज्ञान चन्द डोगरा वेद प्रचार विभाग)

कन्या गुरुकुल हाथरस हीरक जयन्ती महोत्सव

कन्या गुरुकुल, हाथरस की हीरक जयन्ती ७ से ११ फरवरी १९८१ को होगी। उसकी तैयारियां पूर्ण उत्साह के साथ की जा रही हैं। अनेक विद्वान संन्यासियों, व्याख्याताओं, और भजनोपदेशकों के पधारने की स्वीकृति आ चुकी है। थाईलैंड नेपाल और मारीशस से भी कुछ सज्जन आ रहे हैं।

धन संग्रह का कार्य भी किया जा रहा है। गुरुकुल के स्थायी कोष के लिए पांच-पांच हजार रुपये देकर अब तक दस महानुभाव गुरुकुल के संरक्षक बन चुके हैं। आर्यसमाज बैंकाक, थाईलैंड ने पांच हजार एक सौ ग्यारह रुपये दिये हैं।

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री ८ फरवरी को दीक्षान्त भाषण देंगे। १७ फरवरी माननीया श्रीमती शीला कौल, शिक्षा राज्य मंत्री भारत शासन सरस्वती परिषद् की हिन्दी बैठक की अध्यक्षता तथा पारितोषित वितरण करेंगी ।

जयन्ती का एक विशेष आकर्षण उन दस महानुभावों का अभिनन्दन करना होगा, जिन्होंने अपना जीवन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उन्नयन में लगाया है। इसी अवसर पर कन्या गुरुकुल के कुलपति श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री जी को उनकी अस्सीवर्ष पूर्ति अभिनन्दनग्रंथ—आर्यसमाज शिक्षा जगत—भेंट किया जावेगा।

इसी अवसर पर प्रदेश की आर्य कन्या पाठशालाओं की छात्राओं की क्रीड़ाओं (योगासन, कबड्डी, खो आदि) भाषण, वाद-विवाद आदि की प्रतियोगितायें भी होंगी।

६ फरवरी १९८१ को गायत्री महायज्ञ के साथ बृहद् यज्ञ का कार्य आरम्भ होगा। ७ फरवरी को प्रात दिल्ली निवासी श्री गणेशदास अग्निहोत्री जी यजमान का आसन ग्रहण करेंगे और नवीन यज्ञशाला की आधारशिला रखेंगे। शेष दिन चारो वेदो के शतको से यज्ञ होगा। जो सज्जन यजमान बनना चाहें शीघ्र ही सूचित करने की कृपा करें।

दिल्ली, हरियाणा, हल्द्वानी से यात्रियों की बसें आयेंगी। उधर से आने वाले यात्री उनका लाभ उठा सकते हैं।

सूचना

आर्य युवक परिषद (पंजी०) दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन १ फरवरी १९८१ रविवार को मध्याह्न २ बजे आर्य समाज दरियागज अन्सारी रोड, दरियागज में हुआ। इस अवसर पर वार्षिक अधिवेशन के साथ वर्ष का विवरण, आय-व्यय व पद अधिकारियो का निर्वाचन भी सम्पन्न हुआ।

(पृष्ठ २ का शेष)

सिद्धि नहीं करना चाहते। यदि कर्म मे असफलता भी होती है तो क्योंकि हमारी फल में आसक्ति नही होती अतः हमे कई लाभ होते हैं। एक तो असफलता के बाद निराशा नही होती और हमे सन्तोष रहता है कि हमने कार्य ठीक तरह से तो किया। तीसरा लाभ यह होता है कि हम साधनों की पवित्रता का ख्याल रखते हैं अतः बुरे कार्य नही करते। यह है 'एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे' का भाव। आइए, भगवान से प्रार्थना करें :—

नाथ ! करें शुभ कर्म स्मरण कर,
सदा तुम्हारा नाम।
उन्हें तुम्हें ही अर्पित कर दें,
स्वयं बनें निष्काम।
दो सुबुद्धिमानव हृदयो को,
ठीक-ठीक पहचाने।
पार करें जीवन पथ दुगम,
कुछ भी कठिन न जाने।

अमर शहीद पं० लेखराम स्मारक के लिए धन की अपील

अमर शहीद पंडित लेखराम जी आयपथिक का ६ मार्च १८९७ को बलिदान हुआ था। उनकी वसीयत थी कि आर्यसमाज का तहरीर (लेख) और तकरीर (भाषण) का काम बन्द न हो। पण्डितजी आर्य समाज के निःस्वार्थ तथा अनथक सेनानी थे। उन्होंने अपने एक मात्र पुत्र की बीमारी की भी परवाह न कर उसे मौत से जूझते हुए छोड़ शुद्धि के लिए चल पड़े थे। लड़का मर गया तो कह दिया कि लड़का मरा तो क्या हुआ मैंने जाति के सैंकड़ों लाल बचा लिए हैं। उन्हें कत्ल की धमकियां दी गई, किंतु वे घबराये नहीं और शहीद हो गये। सारा जीवन जिसने तिल तिल जलते हुए वैदिक धर्म की ज्योति को जगाये रखा उस महान बलिदानी का स्मारक अभी तक नहीं बन पाया।

अब जिला केन्द्रीय आर्य सभा गुरुदासपुर ने इस वर्ष अमर शहीद पण्डित लेखराम स्मारक बनाने का संकल्प किया है।

इस संदर्भ में पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने कर कमलों द्वारा स्मारक के भवन का शिलान्यास करके निर्माण कार्य शुरू कर दिया है। सभी धर्म प्रेमी भाई बहनों से अपील है कि इस पुनीत कार्य को पूरा करने के लिए दिल खोल कर दान दें ताकि हम सब इस महान ऋण से उऋण हो सकें।

रामकिशन प्रधान जिला केन्द्रीय
आर्य सभा गुरुदासपुर

□

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा अजय प्रिंटर्स ... द्वारा ... नवीन शाहदरा
दिल्ली ३२ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ : अंक १६ रविवार १५ फरवरी १९८१ दयानन्दाब्द १५६

अखिल भारतीय स्तर पर आर्यवीर दल का सुदृढ़ संगठन

सार्वदेशिक सभा का महत्वपूर्ण निर्णय : युवा-आर्यशक्ति को आमन्त्रण

अधिकृत सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा एक विशेष बैठक में आर्य समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए अखिल भारतीय स्तर पर आर्य वीर दल के सुदृढ़ संगठन की महत्ता अंगीकार की गई और निश्चय किया गया कि जल्दी ही इस प्रकार का संगठन स्थापित किया जाए।

यह भी निश्चय किया कि सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही केन्द्रीय स्तर पर एक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर आयोजित करेगी। इस शिविर में स्नातक-शास्त्री स्तर के युवा व्यक्ति प्रशिक्षित किए जायेंगे। प्रशिक्षण शिविर की सफलता के आधार पर प्रान्तीय संचालक नियुक्त किए जाएं।

सार्वदेशिक सभा ने यह निर्णय भी किया कि आर्य समाज में युवाशक्ति को आकर्षित करने के लिए प्रत्येक प्रान्त में जिला स्तर तक आर्य वीर दल गठित किए जाएँ और प्रत्येक आर्य-समाज में आर्य वीर दल का संगठन किया जाए।

सार्वदेशिक सभा के उक्त निर्णय को दृष्टि में रख कर दिल्ली प्रदेश की प्रत्येक आर्य समाज से अनुरोध किया जा रहा है कि वह आर्य समाज के अन्तर्गत आर्य वीर दल का गठन करे, २. इसके गठन के लिए बजट में उपयुक्त व्यवस्था करे ३. प्रान्तीय आर्य वीर दल के लिए अपने उपयुक्त आर्य वीर प्रतिनिधि चुनें, जिससे उनके उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये।

दिल्ली में विशाल ऋषि मेले का आयोजन

४ मार्च को कोटला फीरोजशाह में ऋषि बोधोत्सव

नई दिल्ली। दिल्ली राज्य की आर्य केन्द्रीय सभा (पंजीकृत) के प्रधान महाशय धर्मपाल और प्रिंसिपल ओमप्रकाश ने एक विशेष पत्रक प्रसारित कर जनता से अनुरोध किया है—

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी युग प्रवर्तक, आदर्श राष्ट्रनिर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोधदिवस के उपलक्ष्य में बुधवार ४ मार्च, १९८१ को प्रातः ८ बजे से सायं ५ बजे तक कोटला फीरोजशाह के मैदान में ऋषि मेला आयोजित किया गया है। इस ऋषि मेले की सफलता के लिए दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्यायुवक मंडलों, आर्य शिक्षण संस्थाओं और आर्य भाई-बहनों से अनुरोध है कि वे निम्न बातों पर विशेष ध्यान दें—

१. अपने क्षेत्रों में बोधदिवस से एक सप्ताह पूर्व ऋषि-जीवन की कथा का आयोजन करें।

२. अपने-अपने क्षेत्र की आर्य-समाजें मिलकर संयुक्त रूप से सार्वजनिक सभाएं और कविसम्मेलन आयोजित करें।

३. २२ फरवरी और १ मार्च के साप्ताहिक सत्संगों में महर्षि दयानन्द के जीवन पर भाषण और संगीत-कार्यक्रम हों।

४. मार्च महीने की पहली तीन तारीखों में अपने-अपने क्षेत्र में प्रभात फेरियों की व्यवस्था कर जनता तक ऋषि मेले की सूचना पहुंचाएं। इसी सम्बन्ध में छोटे-छोटे विज्ञापन या सूचना-पत्र बांटे जायें।

५. ऋषि मेले में आर्यसमाजों के सदस्यों-परिवारों और हितैषियों को लाने के लिए सम्बन्धित अधिकारी ट्रकों और बसों की व्यवस्था करें।

६. कोटला फीरोजशाह के आस-पास की आर्यसमाजें सामूहिक शोभा-यात्रा या जलूस के रूप में मेले के स्थान पर पहुंचें।

७. सभी आर्यसमाजों में पुरोहित ऋषि मेले के बृहद्यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए जनता को प्रेरणा दें।

यह भी ध्यान में रखेंगे कि :

० ऋषि मेले का समय प्रातः ८ बजे से सायं ५ बजे तक होगा।

० प्रातः ८ बजे से बृहद् यज्ञ आरंभ होगा। यज्ञ में सभी आर्यसमाजों के सदस्य, उनके परिवार सभी इष्टमित्रों सहित समय पर पहुंचने की व्यवस्था करें।

इस अंक में···

जनगणना में आर्य लिखाइए

देश भर में जनगणना का कार्य प्रचलित है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश के अनुसार प्रत्येक आर्य समाजी अपना धर्म आर्य या वैदिक लिखाए। भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि आर्यों की गिनती हिन्दुओं में ही होगी।

आर्य हम सबका असली प्राचीन और श्रेष्ठ नाम है, सनातनी तथा पौराणिक हिन्दुओं के धर्म ग्रंथों में भारतीयों का प्राचीन नाम आर्य है, इसलिए समस्त आर्य-हिन्दू अपने को आर्य लिखाएं। वे अपने मातृभाषा हिन्दी लिखाएं। दूसरी भाषा संस्कृत लिखाएं।

शिड्यूल कास्ट एवं अनुसूचित जातियों के लोग धर्म के कालम में आर्य अवश्य लिखाएं। वे चाहे तो जाति के कालम में पृथक अपनी जाति लिखा सकते हैं।

प्रबन्ध सम्पादक—वि० सा० विद्यालंकार सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद मनन :

पथभ्रष्ट को पुनः मार्ग दिखाओ

प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वा परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥ यजु: ४-२९

ऋषि:---वत्स: । देवता---अग्नि: ।

शब्दार्थ---हे (अग्ने) उन्नायक तथा मार्गदर्शक ऐसी कृपा कर और प्रेरणा दे कि हम अबोध शिशु पथभ्रष्ट होने के बाद भी (स्वस्तिगाम) कल्याणमय अस्तित्व प्रदान करने वाले (अनेहसम्) क्रोध रहित-- निर्दोष (पन्थाम) मार्ग को (प्रति अपदमहि) पुन: प्राप्त कर सके (येन) जिस पर चलते हुए मनुष्य (विश्वा द्विष:) सब प्रकार के शत्रुओं तथा द्वेषो को (परिवृणक्ति) त्याग देता है और (वसु) जीवन के लिए वास प्रदान करने वाले सब धनो को (विन्दते) प्राप्त कर लेता है।

निष्कर्ष---१---इससे पहले मन्त्र मे दुराचार से हटाकर सदाचारमय जीवन प्राप्त कराने की प्रार्थना की गई है, किन्तु मनुष्य अल्पज्ञ और अल्पशक्ति होने के कारण नेक इरादों के बावजूद अपने स्वीकृत पथ से विचलित हो जाता है, अत: पुन: सन्मार्ग और कल्याणमय अस्तित्व प्रदान करने वाले निर्दोष मार्ग प्राप्त करने की प्रार्थना करता है।

२---क्रोध मनुष्य का सबसे शक्तिशाली शत्रु है। 'क्रोधो नाशयते सर्वम्'। इसलिए इस मन्त्र मे क्रोध शून्य होने का संकल्प है। यदि क्रोध समाप्त किया जा सके तो अन्य पाप-दोष स्वयमेव समाप्त हो सकते हैं। क्रोध के समाप्त होने पर शारीरिक तथा मानसिक स्थिति उत्तम हो जाती है, इसी स्थिति का नाम स्वस्ति (सु+अस्ति) कल्याणमय स्थिति है।

३---स्वस्ति में निवास करने वाले व्यक्ति के शत्रु शनै: शनै: स्वयमेव शत्रुता त्याग देते हैं। उदासीन हो जाते हैं। तदनन्तर मित्रता की ओर अग्रसर होने लगते हैं। जो व्यक्ति किसी से द्वेष नहीं करता, सबके प्रति मित्र भाव रखता है, उससे भी लोग द्वेष भाव को छोड़ देते हैं।

४---उसे किसी से कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं रहती। कल्याणमय जीवन के लिए आवश्यक सब पदार्थ उसे प्राप्त हो जाते हैं।

विशेष---इस मन्त्र का देवता अग्नि, सबकी उन्नति चाहने वाला, गिरे हुओं को उठाने वाला, रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान करने वाला तथा पापो और दोषो को त्यागने की प्रेरणा देने वाला है। इस मन्त्र के ऋषि वत्स---अबोध शिशु के समान जो व्यक्ति अग्नि के सम्मुख अपने दोषो, अपराधों, पापो को स्वीकार करके पश्चात्ताप और प्रायश्चित करेगा, उसे निर्दोष, कल्याणमय मार्ग अवश्य प्राप्त होगा।

अर्थ---प्रपाण---अनेहसम्---एह इति क्रोधनाम नि० २-१३-६, हन हिंसागत्यो: धातु ।

द्विष: - द्विष अप्रीतौ---द्वेष करना, शत्रुता करना । वृणक्ति वृजी वर्जने---त्यजति ।

प्रति---अपद्महि---पद्यतौ, प्रतिपद्यते---स्वीकरोति ।

उत देवा अवहितं देवा
उन्नयथा पुन: ।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा
जीवयथा पुन: ॥
ऋक् १०-१३७-१

---मनोहर विद्यालंकार

वीरता का घोष :

मेरे अंग-अंग यशस्वी हों ! (१)

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

शिरो मे श्रीर्यशो मुखं, त्विषि: केशाश्च श्मश्रूणि ।
राजा मे प्राणो अमृत सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् । यजु २०-५

(मे) मेरा (शिर:) सिर (श्री:) साक्षात् ऐश्वर्य हैं। (मुखम्) चेहरा साक्षात् (यश:) यश है। (श्मश्रूणि) मूछ (केशा च) और केश (त्विषि:) दीप्ति के अवतार हैं। (मे प्राण: राजा) मेरा प्राण राजा (अमृतम् अमर है (चक्षु) आँख (सम्राट्) सम्राट तुल्य है (श्रोत्रम्) कान (विराट्) बड़ी शक्ति वाला है।

सध्या के मत्रो मे 'इन्द्रिय स्पर्श' मंत्र मे आया है 'ओं शिर:' सिर की शक्ति और उसके यश और बल की प्रार्थना की गई है। पुन. 'मार्जन मंत्र' मे 'भू. पुनातु शिरसि' भू नाम वाला ब्रह्म सिर में पवित्रता करे। और दुबारा 'सत्यं पुनातु पुन: शिरसि' रक्षक और सत्य नाम वाला परमेश्वर फिर सिर में पवित्रता करे। इस रूप में तीन बार सिर यश, बल और मार्जन की प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद के इस मंत्र में कहा गया है 'शिरो मे श्री:' मेरा सिर साक्षात् ऐश्वर्य है। कैसे ?

यदि हम अपना ध्यान बुराई और असत्य से हटाकर अच्छाई और सत्य पर केन्द्रित कर सकेंगे तो हमारा मुख अधिक सुन्दर और यशस्वी बन सकेगा।

दो हजार वर्ष पहले की बात है। शत्रुओ ने यूनान के एक नगर पर आक्रमण किया। यूनानी बड़ी बहादुरी से लड़े और हार गये। आक्रमणकारियों ने उनकी वीरता से प्रसन्न होकर उन्हें अपने इच्छानुसार सामान ले जाने की सुविधा दी। प्रत्येक परिवार के स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े सभी सामान लाद लाद कर निकल पड़े। बोझ से उनकी कमर झुकी जा रही थी। पाँव लड़खड़ा रहे थे, प्यास से मुंह सूखे जा रहे थे। और सब हाँफ रहे थे। सबकी बडी दयनीय थी, लेकिन उनमे एक ऐसा पुरुष था जिसके पास ले जाने को कोई सामान न था। वह खाली हाथ सिर ऊपर, छाती सीधे ताने शान्ति से चल रहा था। वह दार्शनिक था---बायस।

सब उस पर दया कर रहे थे। एक स्त्री ने करुणापूर्ण शब्दों में कहा 'ओह, बेचारा कितना गरीब है, उसके पास ले जाने को कुछ है ही नहीं।'

दार्शनिक हंसा और उसने कहा' अपने साथ में अपनी सारी पूंजी ले जा रहा हूं।'

स्त्री बोली 'पूंजी ?'। तुम तो खाली हाथ हो। तुम्हारी पूंजी कैसी ?'

बायस बोला, 'मेरी पूंजी आत्म-मंथन से निकले हुए विचार हैं।' जिन्हें अपने मस्तिष्क में लिए जा रहा हूं। मेरी यह अदृश्य पूंजी सदा मेरे साथ रहती है। इसका न मेरे दिल पर बोझ है और न शरीर पर। ऐसा है मेरा ऐश्वर्य---ऐसी है मेरी पूंजी ?'

तीन मौलिक शक्तियाँ

मस्तिष्क में ज्ञान, इच्छा और कृति ये तीन शक्तियाँ हैं। सिर ज्ञान का आधार है। मस्तिष्क की इन तीन शक्तियों को अर्थात् ज्ञान, इच्छा और को--पदार्थों या वस्तुओ की यथार्थ सत्ता के अनुकूल ढाल लेना ही मस्तिष्क या सिर की पवित्रता है। यह पवित्रता सिर का ऐश्वर्य है।

पाणिनि मुनि ज्ञान में रमे हुए थे। एक दिन तपोवन में जब वह व्याकरण पढा रहे थे कि एकाएक बाघ आया। बाघ जमीन सूंघ-सूंघ कर चलता है, इसीलिए उसे व्याघ्र कहते है। इस सच्चाई का जब उन्हें बोध हुआ, तब बाघ को देखकर वह 'व्याघ्र' शब्द की उत्पत्ति बताने लगे। बाघ सूंघता-सूंघता आ रहा था। पाणिनि बोले 'व्याजिघ्रति स व्याघ्र. सूंघते-सूंघते आने वाले को व्याघ्र कहते हैं। उन्हें व्याघ्र खा भी गया। परन्तु ज्ञान का उपासक सब कुछ भूल गया यह ज्ञान की कितनी बड़ी उपासना है। ज्ञानोपासना में सब कुछ भूल जाने वाला न्यूटन कितना ऐश्वर्यशाली था। सड़कों पर घूम-घूमकर सत्य की शिक्षा देने वाला सुकरात, संसार के विचारों में क्रान्ति करने वाला कार्लमार्क्स, इग्लैंड में एक झोंपड़ी में रह कर संसार को सहयोग का नया मार्ग दिखलाने वाला निर्वासित महान् कोपाटकिन क्या ऐश्वर्यशाली नहीं कहे जायेंगे। संसार को ज्ञान का प्रकाश देने वाले महर्षि दयानन्द, वेदांत-दर्शन के प्रतिष्ठाता शंकर और बौद्धधर्म संस्थापक महात्मा बुद्ध क्या कम सम्पत्तिशाली थे।

विचार तलवार से अधिक तेज

कहा जाता है कि परमेश्वर का स्वरूप मूलत: ज्ञान है। 'ज्ञानं ब्रह्म' ज्ञान का अर्थ ही है ब्रह्म। ज्ञान का अर्थ ही है परमेश्वर। ज्ञान का अर्थ ही है इन्द्र। यह ज्ञान मस्तिष्क मे रहता है विचार मस्तिष्क या सिर में रहते हैं। विचार तलवार की अपेक्षा अधिक तेज है। विचार नवजीवन देता है। विचार गन्दगी की गदगी को जलाकर राख कर देते हैं, इसलिए मन्त्र कहता है 'शिरोमे श्री:' मेरे सिर मे बड़े-बड़े ज्ञान-विज्ञान का ऐश्वर्य भरा है। शरीर के लिए विज्ञान और आत्मा के लिए ज्ञान। शरीर से सुशोभित आत्मा को, विज्ञान से सुशोभित अध्यात्म या अध्यात्म से सजे हुए विज्ञान की आवश्यकता है।

'मुखम्यश.' मेरा मुख साक्षात् यश हैं। सचमुच जो व्यक्ति हंसमुख है, प्रसन्न-मन है दूसरो के साथ शिष्टाचार का व्यवहार करना जानता है, वह संसार में कहीं भी पहुंच सकता है। जिस झोंपड़े में वह रहेगा उसका प्रफुल्लित चेहरा वहां भी आनन्द की तरंगें उठाएगा। जिस समाज में वह शामिल होगा, उसी का मुकुट हो जाएगा। जिस देश में वह अपने चरण रखेगा, वही अपने आपको भाग्यशाली समझने लगेगा। इस दुःख-दर्द से भरे संसार में जो दूसरे को पल भर के लिए भी स्वर्गिक आनन्द का स्वाद चखा सकेगा, उसका आदर और स्वागत कौन न करना चाहेगा ? पर यह सौन्दर्य आएगा कैसे ? चेहरा यशस्वी बनेगा कैसे ?

(शेष पृष्ठ ४ पर)

उत्तर पूर्व भारत में आर्यसमाज की आवश्यकता

गंगतौक (सिक्किम) में आर्यसमाज की स्थापना

(गतांक से आगे)

ईसाइयत का प्रचार और पृथकता की भावना

सम्पूर्ण उत्तर-पूर्वी-पश्चिमी बंगाल, सिक्किम, असम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड तथा मणिपुर में न केवल मद्य व मांस का दुष्प्रभाव है, वरन् वहां के लोगों को ईसाई बनाने का षड्यन्त्र भी हो रहा है। केवल ईसाई धर्म के सिद्धांतों का पादरी लोग ईमानदारी से प्रचार तक ही सीमित रहते तो भी चिन्ता की इतनी बात नहीं थी। वहां तो एक उन्हें भारत देश से पृथक करने का कुचक्र चलता दिखाई देता है। पश्चिमी बंगाल के कुछ जिलों को छोड़कर शेष कहीं भी संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन नहीं है। हिन्दी नाममात्र के लिए रखी गयी है। पर उसे पढ़ने के लिए निरुत्साहित किया जाता है। यहां तक कि उनके अपने प्रदेश की भाषा का भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्व समाप्त किया जा रहा है। नगालैंड की भाषा ही अंग्रेजी हो गयी है।

नागालैंड में ईसाइयों का बहुमत हो गया है और वह सदा भारत संघ से अपने को पृथक करने की धमकी दिया करता है। यदि यही स्थिति रही तो अन्य प्रदेश भी उसका शीघ्र अनुसरण करेंगे। इन सभी प्रदेशों के अच्छे नगर यूरोपीय प्रतीत होते हैं। स्त्री पुरुष की उन्मुक्तता तथा बाजार हैं बहती मद्य की धारा को देखकर लगता ही नहीं कि हम किसी भारतीय नगर में हैं।

यदि समय रहते आर्यसमाज ने इस क्षेत्र में अपने कार्य की गतिविधियां न बढ़ाईं तो बाद में पश्चाताप की भट्टी में झुलसना पड़ेगा। मैं इस क्षेत्र में कार्य को गति देने के लिए निम्नलिखित सुझाव देता हूं :

कुछ सुझाव :

(१) इन सभी उत्तर-पूर्वी राज्यों में एक पृथक आर्य प्रतिनिधि सभा का तत्काल गठन किया जाये, जिसका कार्यालय सिलीगुड़ी में हो।

(२) अप्रैल १९८२ में दार्जीलिंग आर्यसमाज की शताब्दी के अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से दार्जलिंग में एक विशाल स्तर पर आर्य महासम्मेलन आयोजित हो। यदि लंदन नैरोबी और मौरीशस में आर्य महासम्मेलन आयोजित किये जा सकते हैं, दार्जलिंग मे भी यह हो सकता है।

लेखक :

डा० प्रशान्त वेदालंकार

(३) इस महासम्मेलन की सफलता के लिए अभी से सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी या इस कार्य के लिए किसी अन्य योग्य व्यक्ति को नियुक्त कर वहां तैयारी आरम्भ की जाये। उस आर्य महासम्मेलन में सारे देश से प्रतिनिधि भाग लें। विशेषरूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों के प्रतिनिधि वहां विशेष रूप से आमंत्रित किये जायें।

(४) यह भी आवश्यकता है कि इन प्रदेशों के कुछ बालकों की गुरुकुलों तथा डी० ए० वी० स्कूलों, कालिजों में निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था की जाये।

(५) आवश्यकता तो इस बात की है कि कुछ निष्ठावान् वानप्रस्थी इन प्रदेशों में जाकर आश्रमों की स्थापना करें। उनसे वहां के बच्चों को शिक्षित करें। अभी यह लगन वानप्रस्थियों में न हो, तो सार्वदेशिक सभा को अपने प्रचारकों की मण्डलियां निरन्तर इन प्रदेशों में भेजते रहना चाहिये और प्रायः प्रत्येक वर्ष किसी एक प्रदेश में उच्च स्तर का आर्य सम्मेलन आयोजित किया जाये।

(६) इन प्रदेशों में उत्तर भारत के आर्य युवकों व युवतियों के शिविर भी आयोजित किये जा सकते हैं।

(७) डी० ए० वी० संस्थाओं को इन प्रदेशों में अपने अधिक से अधिक स्कूल खोलने चाहिये। उड़ीसा के बाद इस दिशा में बढ़ना आवश्यक है।

इन प्रदेशों के आर्य सज्जनों ने मेरे सम्मुख आर्यसमाज में व्याप्त निष्क्रियता व शिथिलता की ओर ध्यान आकृष्ट किया। मैंने उन्हें कहा कि यह सच है कि आर्यसमाज के उत्साह की अग्नि पर शिथिलता की राख कुछ समय तक रही है। पर उस राख के नीचे आज भी अग्नि का ताप और प्रकाश यथावत् विद्यमान् है। अग्नि का कोई भी स्फुलिंग शीघ्र ही अपना प्रभाव दिखायेगा।

भूमिभक्ति के बिना राष्ट्रभक्ति सम्भव नहीं

चीनी आक्रमण से पहले १९६२ में राष्ट्रीय एकता परिषद ने एक प्रस्ताव पास किया था—भारत की सब भाषाएं नागरी लिपि में लिखी जाएं। क्या इस दिशा में एक पग भी बढ़ाया गया? उल्टे हिमाचल प्रदेश में उर्दू की वाधित शिक्षा देने की व्यवस्था की गई।

यह नहीं नगालैंड में स्कूली शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। ब्रिटिश राज्य और आजके अंग्रेजी राज में कोई अन्तर है? भारत विभाजक कांग्रेस ब्रिटिश की मानस सन्तान है। ब्रिटिश को इष्ट था, १८५७ के समान पुनः जन-क्रान्ति न हो। स्वतन्त्रता की भट्टी न धधके। कांग्रेस और अंग्रेजी पठित वर्ग, कम्युनिस्ट शब्दावली में बुर्जुआ वर्ग भी यह नहीं चाहता। विभाजन ने भारत-शक्ति की निर्मम हत्या की। एकता का आधार और मूल नष्ट हो गया। क्या बिना आधार के ही राष्ट्रीय एकता पैदा होगी?

पिछले वर्षों में निरक्षरता बढ़ी है, घटी नहीं, १९६१ और १९७१ में ७० प्रतिशत लोग निरक्षर थे। आज की सबसे महत्व की और पहली समस्या महंगाई है। गेहूं दो-दो रुपये किलो मिल रहा है। राशन की मात्रा घटा दी गई है। यह क्यों? आज बाजार में चाय का एक प्याला ५० पैसे में, एक समोसा ५० पैसे में, यही कनाट प्लेसमें ६० पैसे में मिल रहा है। कचौड़ी ६० पैसे में मिलती है। कोई दाल ६ रु० किलो से कम में नहीं मिलती। चीनी कहीं मिलती ही नहीं। सामान्य जीवन कितना कष्ट-कर और दुखपूर्ण है। इसकी कल्पना इससे की जा सकती है।

राजा शिवि ने अपने पास मोक्ष का ज्ञान प्राप्त करनेके लिए आए ऋषियों से कहा था—आपको मेरी अतिथिशाला में ठहरने में कोई आपत्ति न होनी चाहिए, क्योंकि मेरे राज्य में जनपद में कोई चोर नहीं, कोई शराबी नहीं, न मेरे राज्य में कोई अविद्वान है और न कायर है, न कोई प्रतिदिन अग्निहोत्र न करने वाला है, न कोई व्यभिचारी है, फिर व्यभिचारिणी कैसे हो सकती है। आदर्श राज्य के लिए नृपति के शब्द थे—

> न मे स्तेनो जनपदे,
>
> न कदर्यो न मद्यपः।
>
> नानाहिताग्नि नाविद्वान न स्वैरी
>
> स्वैरिणी कुतः ॥

यह एक स्वप्न नहीं था। यह एक वास्तविक तथ्य था। यूनानी राजदूत मैगस्थनीज ने लिखा है पाटलिपुत्र (पटना) में कोई झूठ नहीं बोलता। चोरी नहीं होती। लोग किवाड़ खुले रखते हैं।

१४वीं सदी में इब्नबतूता आया था। उसने लिखा था—भारत में चण्डाल ही शराब पीते हैं क्योंकि फांसी देने का काम ये करते हैं। परन्तु यदि प्रातः शराब पीये हुए मोरी में पाए जाये तो दण्ड पाते हैं।

लेखक :

अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

किदवई ने भारतीय बुद्धि से काम लिया था। कंट्रोल-राशन हटा दिया था। १९५३-५४ में अनाज आयात नहीं किया। एक रु० में ५ सेर गेहूं बिका। चावल गाजीपुर में ६ सेर मिलता था, किन्तु बाद में कंट्रोल-राशन फिर जारी हो गया फूड कार्पोरेशन—स्थापित किया गया। वैयक्तिक साहस का अन्त कर भ्रष्टाचार बढ़ाया। वैज्ञानिक खेती के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

श्रेय या मुक्ति का मार्ग

कठ उपनिषद का निर्माण कठ मुनि ने किया था। कठ का पहला अर्थ है कि तपो से कठिन व्रत वाला दूसरा अर्थ है तीव्र स्मृति वाला। इस उपनिषद में यम और नचिकेता की कथा है।

वाजश्रवा ऋषि के पुत्र उद्दालक ने संन्यास लिया और सब पदार्थ दक्षिणा मे दे दिए। उनके पुत्र नचिकेता ने पिता से कहा, 'आप सब कुछ दान कर चुके हैं अब केवल मैं शेष रह गया हूं। मुझे आप किसे देंगे?'

पिता ने उत्तर नहीं दिया। बालक ने कहा "जो गौएं सब कुछ खा-पी चुकी और दूध भी दे चुकी हैं ऐसी गौओ का दान करने से दाता को अनिष्ट फल की प्राप्ति होगी।'

पिता ने क्रुद्ध होकर कहा, "मैं तुझे मौत के लिए दूंगा।"

नचिकेता ने पिता की प्रतिज्ञापूर्ति के लिए यह अनुरोध किया--'हे पिताजी जो जन्मता है उसका मरण भी अवश्यम्भावी है, इसलिए आपको मेरी मृत्यु से शोक नही होना चाहिए।' इसी भाव से नचिकेता ने हरी खेती का दृष्टान्त दिया कि जिस प्रकार हरी खेती का पक कर नाश होना अवश्यम्भावी है, उसी प्रकार इस असार संसार में कोई वस्तु स्थिर नही, इस भाव को दृष्टिगोचर करके तुम शोक मत करो और मुझे मृत्यु के पास भेजो ताकि मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण कर सकूं।

नचिकेता यम के द्वार पर पहुंचा। जब तीन दिन तक आतिथ्य की प्रतीक्षा करता हुआ वह बिना अन्न-जल के रहा, तब यम के मन्त्रियो ने कहा कि जिसके घर मे अतिथि भूखा निवास करता है उसके सर्व ऐश्वर्य नष्ट कर देता है।

यम ने अपने अपराध के लिए क्षमा मांगते हुए नचिकेता को तीन वर देने स्वीकार किए। नचिकेता ने पहला वर यह मांगा कि उसका पिता उस पर प्रसन्न हो जाए। यह वर यम ने स्वीकार कर लिया। दूसरा वर नचिकेता ने यह मांगा कि 'मुझ श्रद्धालु की वैदिकाग्नि का उपदेश कीजिए जिससे मैं भी स्वर्ग का अधिकारी बनूं। यह कहता है कि यह अनन्त सुखों की प्राप्ति का साधन है अर्थात् ब्रह्मचर्य से लेकर चारो आश्रमों मे इसी के द्वारा वैदिक कर्म करने से सुख की प्राप्ति होती है।'

इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि यम एक देवता विशेष है जो यमपुरी का रास्ता है और चित्रगुप्त उसका मन्त्री है। वस्तुतः मृत्यु के अलंकार से इस उपनिषद की रचना की गई है। इस प्रकरण में 'स्वर्गलोक' का अर्थ लोक-विशेष का नहीं, अपितु सुख की अवस्था विशेष के हैं।

पिता की प्रसन्नता तथा वैदिककर्मों के ज्ञानान्तर अब नचिकेता आत्मदान के विषय को लेकर तृतीय वर मांगता है। उसने यमाचार्य से पूछा—'मरने के अनन्तर जीवात्मा रहता है या नही। इस का उत्तर तथा ज्ञान मुझे दो, यह मेरा तीसरा वर है।

यम ने कहा, 'नचिकेता! पहले देवताओं ने भी इसमें सन्देह किया था और तू भी इसे नही समझता, इसलिए तू और कोई वर माग। चिरजीवी पुत्र पौत्र, पशु, सुवर्ण आदि बहुमूल्य रत्न, पृथ्वी पर बड़ा राज्य यह सब मुझ से मांग, अपना जीना भी चाहता है मांग पर मरने के अनन्तर क्या होता है यह वर न मांग।'

यम ने नचिकेता को इस प्रकार के बहुत प्रलोभन दिए, परन्तु नचिकेता ने कहा कि ये पदार्थ भविष्य में रहने वाले नहीं अर्थात् अनित्य हैं, दूसरे ये भोग भोगी लोगों की इन्द्रियो को शिथिल कर देते हैं, तीसरी बात यह है कि जीना भी थोड़े दिन का है, इसलिए यह भोग, तुम्हारे लिए शुभ हो मुझे इनकी इच्छा नही।'

यम ने नचिकेता को आत्मज्ञान का अधिकारी समझकर उपदेश करना आरम्भ किया है। 'नचिकेता! इस संसार में मनुष्य के सम्मुख दो लक्ष्य है, एक श्रेय—विद्या और दूसरा प्रेय—अविद्या। श्रेय मार्ग में चलने से मनुष्य का कल्याण होता है दूसरा प्रेय मार्ग में पड़कर मनुष्य अत्यन्त दुःखी हो जाता है। इसलिए पुरुष को उचित है कि वह प्रेय पदार्थ के प्रलोभन में कदापि न फंस कर नित्यप्रति श्रेय के लिए यत्न करता रहे।'

हृदयाकाश में जीवात्मा तथा परमात्मा दोनों छाया और प्रकाश के तुल्य वास करते हैं, शरीर रथ के समान है जिसका सारथी बुद्धि है, मन राह है और आत्मा जिसमें सवार है। भाव यह है कि उसी रथी का रथ ठीक चलता है जिसका बुद्धिरूपी सारथी और मन रासें रस ठीक हों।

वह आत्मा जिसका शरीर ब्रह्मचर्यादिव्रतों से आरोग्य, अभक्ष्य पदार्थों के त्यागने से बुद्धि शुद्ध, सत्यादि व्रतों से मन निर्मल और इन्द्रियगण जिसके वशीभूत हैं, वह पुरुष निर्भयता से अपना लक्ष्य प्राप्त करता है।

नचिकेता का तीसरा प्रश्न था कि मरने के पश्चात् क्या शेष रहता है।

उसका उत्तर यम ने दिया जो शक्ति रूप, रस, गन्धादि विषयो का अनुभव करती है वही चैतन्यशक्ति मरने के पश्चात् शेष रहती है। अन्य कुछ नहीं अर्थात् जीवात्मा सतचित है, मृत्यु के अनन्तर रहने से 'सत' और अनुभाविता होने से 'चित' रूप है।

लेखक :
प्रिंसिपल वीरभान 'वीर'

जब जीवात्मा इस शरीर से पृथक हो जाता है तब इसमें कुछ भी शेष नहीं रहता। अर्थात् न प्राण चेष्टा कर सकते हैं और न इन्द्रियां अपने अर्थों को ग्रहण कर सकती हैं। भाव यह है कि जीवात्मा के पृथक होते ही सारी शक्तियां उसके साथ ही निकल जाती हैं। शरीर में चैतन्यता का कोई अंश शेष नहीं रहता। जीवात्मा अणु है, विभु नहीं। यम ने यह उपदेश नचिकेता को दिया कि 'जिनके उत्तम कर्म हैं वे उत्तम योनियों की ओर जिनके मन्दकर्म हैं वे पशुपक्षी आदि योनियो को प्राप्त होते है।

वह परमात्मा प्राणघातक वज्र के समान भयप्रद है अर्थात् उसका नियम तोड़ने से पुरुष को अनन्त दुःखों की प्राप्ति होती है, और जो अनुष्ठानी पुरुष परमात्मा के नियमों का उल्लंघन नहीं करता, वह मुक्ति को प्राप्त होता है। □

बोध कथा :

सच्चे स्नेह का स्त्रोत

एक बार स्वामी रामतीर्थ सयुक्त राज्य अमेरिका जा रहे थे। बन्दरगाह समीप आ रहा था। हर कोई अपना सामान इकट्ठा करने लगा, लेकिन स्वामी रामतीर्थ वैसे ही बैठे रहे और देखते रहे कि कैसे दूसरे लोग अपना सामान इकट्ठा कर रहे थे और इधर से उधर दौड़ रहे थे।

अन्त मे बन्दरगाह आया। जहाज भूमितट पर जा लगा। सैकड़ो लोग किनारे पर आए हुए थे। रिश्तेदार और मित्र लोग आगन्तुको का स्वागत कर रहे थे। इन लोगो की भीड़ का वहा पर इतना हो-हल्ला हो रहा था, परन्तु स्वामी रामतीर्थ वैसे ही बैठे रहे—पूरी तरह शान्त और मौन।

इतने मे एक नवजवान अमेरिकी लड़की वहां आई। उसे देख कर यह अचम्भा हुआ कि जहाज की सारी चहल-पहल का उस व्यक्ति पर कोई असर नहीं हुआ। उसे स्वभावतः जिज्ञासा हुई कि यह कैसा व्यक्ति है, जिसकी कोई तमन्ना नहीं। आखिर उससे रहा नहीं गया। वह उनके पास जाकर पूछने लगी—'आप कहां से आए हैं और कौन हैं?'

स्वामी जी ने उत्तर दिया—'मैं हिन्दुस्तान का फकीर हूं।'

'क्या आपके पास यहा ठहरने के लिए जरूरी पैसा है, या आपका यहां किसी से परिचय है?'

'नही, मेरे पास कोई धन-सम्पत्ति नहीं है। हां, मेरा परिचय अवश्य है।'

'किससे?'

'आपसे और थोड़ा भगवान से।'

'फिर तो आप मेरे घर चलेंगे।'

'अवश्य चलूंगा।'

स्वामी रामतीर्थ इस भद्र महिला के यहां ठहर गए।

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य और भगवान पर ऐसा भरोसा ही सच्चा स्नेह पैदा करता है।

—नरेन्द्र

भीखी ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना होगी

श्रीमती द्रोपदी देवी, धर्मपत्नी रोशनलाल, मन्त्री आर्यसमाज भटिण्डा ने अपने पिता लालसिंह मित्तल से प्राप्त भीखी ग्राम के चार स्थान आर्यसमाज को दिए हैं, फलतः ग्राम में समाज की स्थापना की तैयारी हो रही है।

आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा को जनवरी मास में ये धन-राशियाँ मिलीं, गाय के लिए जातीराम शर्मा, अहमगढ से १०००) निरंजन सिंह सिलीगुड़ी से ५१) त्रिभुवन शास्त्री मानसा मण्डी से १५१), पृथ्वीराज जालन्धर ५०), गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों को सुन्दरलाल सर्राफ भटिण्डा ने नए कपड़े सिलवा कर दिए।

गुरुकुल कांगड़ी में गणतन्त्र समारोह

कुलपति बलभद्र कुमार द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने के बाद एन. सी. सी. छात्रों ने झण्डे को सलामी दी। छात्रों द्वारा संस्कृत कवितावलि प्रस्तुत करने के बाद इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में गुरुकुल कांगड़ी की भूमिका एवं ब्रह्मचारी सर्वमित्र के बलिदान की चर्चा की।

विदेशों में आर्यसमाज की स्थिति

सुरीनाम देश की राजधानी पारा-मारिबो की आर्य संस्था आर्य-दिवाकर ने अपनी पच्चीस वर्षीय स्वर्णजयन्ती मनाई थी। आर्य-दिवाकर एक जीवित जाग्रत संस्था है—इसके अन्तर्गत कई आर्यसमाजें हैं पांच-सात अच्छे यज्ञ-याग कराने वाले पुरोहितगण भी हैं। ये लोग अपना स्वतन्त्र व्यवसाय कृषि, नौकरी, व्यापार आदि करते हैं। बचे समय में ये गृहस्थियों के पर्व, संस्कार यज्ञ आदि शुभ अवसरों पर उनकी सेवा करते हैं। आर्य-दिवाकर संस्था के अन्तर्गत एक पचास साठ बालक-बालिकाओं का वास-आश्रम (अनाथालय) भी है।

इस संस्था के अन्तर्गत कुछ हाई स्कूल भी चल रहे हैं। कहीं-कहीं हिन्दी पाठशाला भी।

इनका स्वर्ण जयन्ती-महोत्सव सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री पं० रघुबीर शर्मा भी न्यूयार्क से पधारे थे—अच्छा जीवन और अच्छी शैली है।

सुरीनाम देश में प्रचार का सशक्त साधन रेडियो-स्टेशन है। भारतीयों द्वारा संचालित अपने रेडियो स्टेशन हैं—एक का नाम राधिका रेडियो स्टेशन है' इस स्टेशन से सभी धर्मों के वर्ग अपना अपना प्रचार का समय (मूल्य देकर) ले सकते हैं। सुरीनाम में मैं एक सौ अस्सी दिन रहा। आर्य दिवाकर संस्था की ओर से साठ बार मैंने भी इस सशक्त प्रचार-साधन का सदुपयोग किया।

रविवार सायकाल समाजों मे सत्सग लगता है और प्रातः रेडियो से प्रवचन होता है पन्द्रह-बीस मिनट। इसके अतिरिक्त कभी-कभी टेलीवीजन द्वारा भी प्रचार का अवसर सुलभ होता है। देखने में यह आया है कि जहां-जहां भी आज से सौ डेढ सौ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश बिहार के सीमावर्ती प्रदेशों से लोग गये वे मौरिशस, फिजी, सुरीनाम, गयाना, ट्रिनिडाड आदि स्थानों पर अत्यन्त निष्ठा से अपनी-अपनी पृष्ठभूमि के अनुसार अपना धर्म प्रचार का प्रयास किये हुए हैं इनमें श्रद्धा है और धैर्य भी है। और पूर्वजों के देश भारत के प्रति निष्ठा व नम्रता भी है। भाषा तो जरूर निर्बल पड़ गई है विशेष रूप से गयाना, ट्रिनिडाड और कुछ-कुछ सुरीनाम में—परन्तु अभी सभ्यता-संस्कृति के बीज बचे हुए हैं। जौर्ज टाउन में एक स्थान पर सत्संग में गया। उपस्थिति बहुत अच्छी थी—एक स्थानीय पंडित महोदय रामायण का प्रचार—पाठ कर रहे थे। परन्तु वहां की रीति रिवाज के अनुसार बाद में इंगलिश में व्याख्या अनिवार्य थी।

यात्रा के उत्तरार्द्ध में मैं हालैंड और इंग्लैंड गया। इन स्थानों में परस्पर प्रचार निष्ठा में काफी अन्तर है। जहां हालैंड में भारत की भांति विचार, सत्संग, पारिवारिक यज्ञ-याग आदि सम्पन्न होते हैं, वहां इंग्लैंड में आये अधिकांश धार्मिक जन अपनी रीति-नीति से हट गये।

लन्दन, नौटिंघम, और आस-पास के स्थानों पर बसे धर्मप्रेमी बन्धुओं के पूजा-स्थानों व क्रिया कलापों को मैंने अत्यन्त निकट से देखा है। लन्दन आर्य महासम्मेलन के अवसर पर मैं इंग्लैंड में ही था—अंतिम दिन का कार्य-क्रम, मण्डप, उपस्थिति, आदि पर मैं ने क्रियात्मक रूप से विचार किया है। सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत यदि इस प्रकार के आर्य महासम्मेलन विदेशों मे हुआ करें—एवं देशी व विदेशी समाचार पत्रों के उत्तरदायी प्रतिनिधि यदि पूर्ण-तया सम्पर्क में रखे जायें तो कहीं अधिक सार्थकता सिद्ध हो सकती है। वैसे मुझे कहीं आशा की किरण-सी दिखाई दी।

इस संदर्भ में एक बात और है यहां के अधिकारी वर्ग के सम्बन्ध मे पहले तो मैं कभी-कभी यह सोचा करता हू—कि वे लोग कितने कर्मनिष्ठ एव प्रदीप्त अग्नि के स्वामी होंगे जिन्होंने प्रारम्भ मे भारत से जाकर इन अधिकारी वर्ग के पूर्वजों मे सत्य धर्म, त्याग और सेवा के बीज बोये यद्यपि आज इन लोगो के भवनों में वे चित्रों के रूप मे ही विद्यमान हैं।

बाल भवन, विद्यालयो के भवन, एवं नये बन रहे आर्यसमाज के विशाल दुमंजिले और अनुपम भवन इन लोगो की नि:स्वार्थ कर्मठता एवं कर्मण्यता का प्रकाश कर रहे हैं।

इस पीढ़ी के द्रष्टा कुछ व्यक्तित्व मुझे स्मरण है एक व्यक्ति है श्री बृहस्पति नारायण। उम्र होगी कोई पैंसठ वर्ष—बाल बच्चो के दायित्व पूर्ण कर के उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर के लगभग चार लाख रुपये के मूल्य का समाज का भवन बना कर, उसे दान कर, आज संस्कृत सीखने के लिए भारत की राजधानी आये हुए हैं।

गायना की राजधानी जौर्जटाउन के सभा मन्त्री भी इसी अनुकरणीय उदाहरण को लिए भविष्य की प्रतीक्षा में हैं।

सुरीनाम के प्रतिष्ठित पंडित, स्वभाव से अति सरल, वाणी से अति मधुर, उम्र बहत्तर (७२) वर्ष की होगी जब मैं अभी पहुंचा ही था सुरीनाम; आए मेरे पास एक दिन। कहने लगे—मैं सीखना चाहता हूं—क्या सीखेंगे आप? संस्कृत भाषा; प्रौढ पद्धति से मैंने कुछ पाठ सिखाए। एक दिन एक श्लोक उन्हें कुछ कठिन लगा—अर्थ समझाते हुए मैं ने अचानक पूछा—पंडित जी? इस ढली उम्र में आप संस्कृत सीख रहे हैं—क्या लाभ इसका?

बोले स्नातक जी? अगले जन्म मे काम आएगी। उनका इतना कहना था मेरी आंखें खुल गईं। अस्तु। मेरी लेखनी अनायास रुक रही है जैसे कह रही हो—आप ने आर्य दिवाकर संस्था के प्रधान श्री राम उदय दिहाल एवं बंसराज जी एडवोकेट 'मन्त्री' के नाम क्यों नहीं लिखे? ठीक बात है—इन दो महानुभावों के दर्शन मे व्यवहार एवं श्वेत वस्त्रो मे साधुत्व की सुगन्ध आती है ऐसे लोग किसी भी संस्था के प्राण कहे जा सकते हैं।

श्याम सुन्दर स्नातक महोपदेशक
बी० २०१ ग्रेटर कैलाश पार्ट-१नई दिल्ली

(पृष्ठ २ का शेष)

सच्चा धर्म अच्छे कार्यों में

सौन्दर्य मनुष्य के रंग और उसकी बनावट में नही, उसके अच्छे कार्यों में निहित है। जब मनुष्य ईमानदारी से रहता है, जो उसे मिलता है उसे धन्य-वाद पूर्वक ग्रहण करता है, बहादुरी से कठिनाइयोंका मुकाबला करता हुआ कर्त्तव्यपथ पर डटा रहता है, तब वह अक्षय सौन्दर्य का दर्शन कर पाता है और यह सौन्दर्य उसके मुखपर छा जाता है। उस समय उस व्यक्ति के मुख के सौन्दर्य में सूर्योदय से अधिक प्रकाश और खिले गुलाब से अधिक भव्यता आ जाती है। यह सौन्दर्य चरित्रवान् व्यक्ति के सौन्दर्य से प्रस्फुटित होता है। उस व्यक्ति का सौन्दर्य आंखो को नही, सबकी समझ में आता है। यदि हम बुराई और असत्य से अपना ध्यान हटाकर उसे सत्य और अच्छाई पर केन्द्रित कर सकेंगे तब हमारा मुख अधिक सुन्दर और अधिक यशस्वी बन सकेगा।

(शेष अगले अंक मे)

१७५, जाफरा बाजार
गोरखपुर (उ० प्र०)

वसन्त मेला समारोह

आर्यसमाज विनय नगर, नई दिल्ली और अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति की ओर से धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस (वसन्त मेला) रविवार ८ फरवरी ८१ को आर्यसमाज मन्दिर वाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-२३ में प्रातः ८-३० बजे से दोपहर १ बजे तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ८ बजे से ९-३० बजे तक राष्ट्र भृत यज्ञ ९-३० बजे से १० बजे तक भजन, १० बजे से १२ बजे तक बच्चों की प्रतियोगिता और १२ बजे से १ बजे तक श्रद्धांजलि सभा ला० रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे हुई जिसमे अनेक विद्वान नेताओं ने पधार कर वीर हकीकत को श्रद्धांजलि दी।

□

सम्पादकीय

समय का तकाजा : हम संयुक्त और सन्नद्ध हों

पानीपत के युद्ध क्षेत्र की कहानी है। मैदान के एक ओर विदेशी आक्रमणकारी अहमदशाह अब्दाली की फौज खडी थी और दूसरी ओर सामने मराठों की फौज खडी थी। संख्या और हथियारो की दृष्टि से मराठों की फौज शत्रु के मुकाबले कहीं बडी थी। दोनो फौजें एक दूसरे के सामने खडी थीं। दोनों ही पक्ष एक दूसरे की ताकत और कमजोरी का ठीक-ठीक अन्दाजा करना चाहते थे, इसलिए एकदम हमला नहीं करना चाहते थे। अब्दाली का इरादा था कि कोई ऐसी कोशिश की जाए जिससे मराठों को खाना न मिले और वह उन पर अचानक हमला कर उन्हे पराजित कर दे। एक दिन शाम के समय अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि मराठो की फौज के शिविर मे स्थान-स्थान पर आग की लपटें निकल रही हैं। उसने अपने सिपहसालार से पूछा—'ये आग की लपटें कैसे चमक रही हैं ?—यह सब क्या हो रहा है ?' उसने जवाब दिया—'इन लोगों में जातिभेद है। ये एक दूसरे का खाना नही खाते, इसलिए अलग-अलग रसोई बना रहे हैं। यह सुनकर अहमदशाह बोला—'तब तो हमने मैदान जीत लिया।' सचमुच ही भारतीय सैनिकों की इस आपसी फूट और मतभेदों से पानीपत के मैदान में अहमदशाह अब्दाली जीत गया। राष्ट्रीय महत्त्व की समस्याओ और प्रश्नो पर संसार के सभी जाग्रत और स्वाभिमानी राष्ट्रो के नागरिक सदा एक रहते हैं। उन देशों में जनतान्त्रिक परम्पराएं हैं। लगभग सभी महत्त्वपूर्ण प्रजातन्त्रीय देशों में दो या अधिक राजनीतिक दल हैं। ये सभी दल देश के आन्तरिक विषयों मे सदा अपने मतभेद प्रकट करते रहते हैं, परन्तु राष्ट्रीय संकट की घड़ियों में ये हमेशा एक हो जाते हैं। सभी प्रमुख राष्ट्रों मे राजनीतिज्ञ अपने देशों को बाह्य आक्रमण से बचाने तथा वहां आन्तरिक सुरक्षा-व्यवस्था रखने में सब प्रकार का विरोध-भाव समाप्त कर देते हैं, पर खेद का विषय है कि हमारे देश की रीति-नीति कुछ उल्टी ही है।

पिछले दिनों उड़ीसा के विविध क्षेत्रों में और इन दिनो गुजरात में कुछ हिंसक घटनाएं हो रही हैं। छोटी-मोटी समस्याओं को आपसी बात-चीत या शांतिपूर्ण अहिंसक आन्दोलन द्वारा न सुलझा कर व्यवस्था एवं अराजकता पैदा करना कभी उचित नही कहा जा सकता। इन दिनो देश में पूर्वी क्षेत्र मे समुद्र-तटवर्ती प्रदेश में एक विद्वान् ने इस बारे में हमारे पास एक बड़ा ही वेदनापूर्ण पत्र भेजा है। उस पत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण अश इस प्रकार हैं—'यहां की परिस्थितियां दिन-प्रतिदिन जटिल होती जा रही हैं। ५ तारीख को प्रदेश में बंद बड़ा सफल रहा, सफलता का कारण यह नही है कि लोगों के मन में···के प्रति कोई विशेष दुर्भावना है या उन्हे वे प्रदेश से बाहर भेजना चाहते हैं। सच्चाई यह है कि कुछ निहित स्वार्थों वाले लोग चाहते हैं कि यहाँ भी अशान्ति-उपद्रव का वातावरण बना रहे, जिससे लोग यह न कह सकें कि प्रदेश मे कुछ हो ही नही रहा है। ' संघर्ष समिति की माँगें इतनी हास्यास्पद हैं कि स्वयं संघर्ष को चलाने वाले लोगो का विश्वास है कि कोई भी सरकार उन्हें स्वीकार नहीं कर सकती है।'' प्रदेश की राजनीति के भीष्मपितामह ···हैं, उन्हें प्रत्येक सरकार को नाच नचाने में महारत हासिल है। वह अपनी कला का निकृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, उनके एक हाथ में आग और दूसरे में पानी है।' पत्र-लेखक कोई सामान्य पाठक या नागरिक नहीं हैं, प्रत्युत वह अपने प्रदेश के एक प्रबुद्ध राष्ट्रवादी शिक्षाशास्त्री हैं। अपने देश की परिस्थिति के विषय में उनका जो मूल्यांकन है, वह प्रदेश-प्रदेश व्याप्त अराजकता और अशान्ति पर प्रकाश डालता है। आज ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई है या धीरे-धीरे पैदा की जा रही है, जिससे आन्तरिक अव्यवस्था एव अराजकता के कारण राष्ट्र की स्थिति को भीषण संकट पैदा हो सकता है।

इस सम्भाव्य भीषण स्थिति का निवारण करने के लिए राष्ट्र की सभी प्रबुद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संस्थाओं एवं दलों को गम्भीरता से अपने दायित्व का चिन्तन करना चाहिए। यह ठीक है कि सामयिक आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए जनमत को जाग्रत करना और जन-अशांति एवं दैन्य को दूर करना प्रत्येक जिम्मेदार एवं प्रबुद्ध नागरिक एवं संस्था का मौलिक अधिकार है, पर इसी के साथ यह भी समझना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है कि किसी व्यक्ति, संस्था या दल को ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे राष्ट्र की बची हुई एकता और अस्तित्व ही संकट में पड़ जाए। इसी के साथ सत्तारूढ़ दलों और प्रशासन का भी यह गंभीर दायित्व है कि देश के जन-जन में व्याप्त दैन्य निराशा, अभाव और कष्ट दूर करने की वे प्राथमिकता दें। 'स्वराज्य' के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए 'सुराज' की स्थापना प्रत्येक प्रशासन का पहला दायित्व है। प्रजा के रंजन या कल्याण से ही 'सुराज्य' की प्रतिष्ठा सम्भव है। जनता के कष्टों, अभावों और विषमताओं को समय रहते जान कर दूर करना किसी भी [illegible] प्रशासन का प्रथम दायित्व है। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज देश में 'सुराज्य' के साथ 'स्वराज्य' की प्रतिष्ठा के लिए दृढ़प्रतिज्ञ रहे, आज भी [illegible] जन देश के 'स्वराज्य' को चिरायु करने के लिए सुराज्य की प्रतिष्ठा सम्बन्धी अपना पूरा उत्तरदायित्व निबाहने के लिए कृतसंकल्प हैं। इस सम्बन्ध में यदि कोई वर्ग, समूह या तत्व देश या प्रदेशों की स्थिति को संकट में डालने के लिए आग से खेलना चाहें तो इस आसन्न संकट की घड़ी में उनका सामना करने के लिए समय का तकाजा है कि हम सब देशवासी संयुक्त और सन्नद्ध हो जाएं। इस स्थिति का निवारण करने के लिए आर्यसमाजों को भी निरन्तर जागरूक होना पड़ेगा कि कहीं हमारी गफलत और फूट से देश की स्वाधीनता, अखण्डता और अस्तित्व खतरे में न पड़ जाए। □

जीवन में बहार लाइए

वैदिक संस्कृति ने सदा आशावाद का सन्देश दिया है। हमारा वसन्त का पर्व उसी आशावाद का प्रतीक है। वेद माता कहती है—

'जिह्वाया अग्रे मधु मे'—मेरी जीभ पर वसन्त आए—मेरी जिह्वा में माधुर्य और सरस्वती का आवास हो। भारतीय परम्परा में—मधु माधवौ वसन्तः स्यात् 'चैत्र और वैशाख के महीने वसन्त काल के प्रतीक हैं। वर्ष में प्रकृति इस प्रकार इस ऋतु में नवजीवन का सन्देश देती है, उसी प्रकार हमारे राष्ट्र और समाज को नवयुग की प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। यजुर्वेद का कथन है—मधु वाता ऋतायते, मधुक्षरन्ति सिन्धवः, माध्वीन सन्त्वोषधीः—वायुमण्डल नई उमंग और माधुर्य दे, देश की पवित्र नदियां अन्न-सस्य के माध्यम से जीवन में माधुर्य लाएं और सब प्रकार की वनस्पतियां और औषधियां जन-जन को नीरोग और दीर्घायु करें। आज हमारे देश और समाज को पतझड़ नहीं, वसन्त चाहिए। सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में नई आशाएं और उमंग जगाने के लिए हमें वार्षिक एवं पंचवर्षीय योजनाएं बनाकर उन्हें पूर्ण करने का संकल्प करना चाहिए। जिस तरह म० बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनके सन्देशों को लिपिबद्ध करने एवं भावी कार्यक्रम के निर्धारण के बारे में समय-समय पर सार्वभौम बौद्ध सम्मेलन आयोजित किए गए, आवश्यकता है कि आज जब ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा किए गए राष्ट्रीय जागरण को सौ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया है, तब सार्वभौम विश्व, देश एवं प्रदेश में ऋषि और समाज का सन्देश व्यवस्थित रूप से प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनना ही चाहिए।

वसन्त का पर्व सरस्वती पूजा का अवसर गिना जाता है। देश के कई भागों में इस अवसर पर सरस्वती-पूजा की जाती है। इसी के साथ यह पर्व देश के कई भागों में परम्परा से आखेट का समय समझा जाता था। रणबाकुरे वीर इस दिन अपने शस्त्रों की परीक्षा आखेट में करते थे। यह दिन हमें कट्टर धर्मान्धता को चुनौती देने वाले वीर बालक हकीकत की कुर्बानी की भी याद दिलाता है। इस प्रकार यह पर्व हमें शस्त्र और शास्त्र का स्मरण कराता है तो यह दिन एक अमर हुतात्मा की शहादत का दिन भी है। आर्यसमाज का इतिहास त्याग-बलिदान की उदात्त परम्परा को स्मरण कराता है। अन्याय, अत्याचार, कष्ट एवं दुःख से संघर्ष करना समाज और आर्यजनों का प्रथम पुनीत कर्त्तव्य रहा है। अपने इस दायित्व को निबाह कर ही आर्यसमाज और आर्यजन राष्ट्रीय नवजागरण एवं स्वतन्त्रता संग्राम की लम्बी अवधि में अपनी उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत कर सके। भविष्य में यह भूमिका बखूबी निभाई जा सके, इसके लिए आवश्यक है कि समाज और आर्यजन त्याग और बलिदान की महत्ता अपने जीवन में अंगीकार करें।

आज हमें समाज में दीनता और पलायन की वृत्ति का त्याग करना होगा। केवल भवनों के निर्माण, वर्ष में मुख्य पर्वों के मनाने मात्र से हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो सकेगी। आज देश पर विधर्मियों, विदेशी भाषा, संस्कृति एवं विजातीय तत्त्वों के कठिन प्रहार हो रहे हैं। अल्पसंख्यकों के नाम पर विदेशी संस्कृति और विचार हमारे राष्ट्रीय तत्त्वों को खंड-खंड कर रहे हैं। इनसे जूझने के लिए आज समाज को पुनः त्याग एवं बलिदान का बाना अपनाना होगा। हमें अपने जीवन से निराशा, भय, [illegible] के पतझड़ का त्याग कर एक वार्षिक एवं पंचवर्षीय कार्यक्रम निर्धारित कर उन्हें कार्यान्वित करने का सुदृढ़ संकल्प करना होगा। देश के पूर्वोत्तर प्रदेशों पर विधर्मी एवं विदेशी नए कुचक्र चला रहे हैं, अपनी भाषा एवं सुविधाओं के संरक्षण [illegible] पर भाषा एवं सम्प्रदायगत अल्पसंख्यक अपनी स्थिति मजबूत कर रहे हैं। इस बढ़ते हुए खतरे का सामना करने के लिए समाज को जीवन में एक नई बहार ही लानी होगी। □

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥

अर्थात् प्रभो, आप ऐसी कृपा करें कि आप हृदय में हमें कभी न बिसारें, [illegible] होकर सदा प्रसन्न रहें। [illegible] [illegible] हम आपसे प्रार्थना करते हैं [illegible] को [illegible] मांगते हैं।

आर्यसमाजों के सत्संग

१५-२-८१

अंधा मुगल प्रताप नगर—पं० प्रकाशचन्द वेदालंकार; अशोक बिहार के-सी-५२-ए—पं० केशवचन्द्र मुन्जाल; आर्यपुरा—पं० छज्जूराम शास्त्री; आर के पुरम सेक्टर-९—आचार्य कृष्ण गोपाल; आनन्द बिहार हरि नगर एल ब्लाक—पं० सत्य देव भजनोपदेशक; इन्द्र पुरी—पं० प्राणनाथ सिद्धांतलंकार; [illegible] कैम्प—पं० रामरूप शर्मा; किशन गंज मिल एरिया—वैद्य राम किशोर; कृष्ण नगर—पं० यशपाल शास्त्री; कालका जी डी. डी. ए. फ्लैटस एन-१/१४३-ए—प्रो० वीर पाल विद्यालंकार; गांधी नगर—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; गीता कालोनी—पं० महेश चन्द भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I—डा० रघुनन्दन सिंह; गुड़ मण्डी—पं० वेदपाल शास्त्री; १५१ गुप्ता कालोनी—पं० अशोककुमार विद्यालकार; गोविन्द पुरी—श्रीमती लीलावती आर्या; जंगपुरा भोगल—पं० ईश्वरदत्त एम-ए; जनकपुरी सी/३/२४—पं० दिवाकर शर्मा; जहांगीरपुरी के १४३६—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक; झिलमिल कालोनी—पं० विद्या सागर विद्यालंकार; टैगोर गार्डन—स्वामी मुनीश्वरानन्द; तिलक नगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी; तीमारपुर—प० वीर व्रत शास्त्री; दरियागंज—श्री मोहनलाल गांधी; नारायण बिहार—पं० मुनि शकर वानप्रस्थी; पंजाबी बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार; पंजाबी बाग एक्सटैनशन १४/३—पं० सत्य पाल मधुर भजनोपदेशक; पश्चिम पुरी जनता क्वार्टरज—पं० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; पटेल नगर—आचार्य हरिदेव सि० भू०; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बिरला लाईन्स—श्री चिमन लाल; माडल टाऊन—आचार्य नरेन्द्र पाल शास्त्री; माडल बस्ती—पं० गणेश दत्त वान प्रस्थी; महरौली—पं० सत्य भूषण वेदालंकार; मोती नगर—पं० आशा नन्द भजनोपदेशक, रघुवीर नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल; रमेश नगर—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; राणा प्रताप बाग—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार; लड्डू घाटी—पं० विश्व प्रकाश शास्त्री; लक्ष्मी बाई नगर—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; विक्रम नगर—पं० हरि दत्त शास्त्री; सरस्वती बिहार—पं० शीश राम भजनोपदेशक; सराय रोहेला—पं० गजेन्द्र पाल शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; तथा श्रीमती कमला आर्य; सोहन गंज—ला० लखमी दास; श्री निवास पुरी—पं० हीरा प्रसाद शास्त्री; शादीपुर खास—श्रीमती प्रकाश वती शास्त्री; हौज खास ई-४६—डा० सुख दयाल भूटानी; डिफेन्स कालोनी—पं० तुलसी राम भजनोपदेशक;

आर्य जगत समाचार

वसन्त मेला

सोमवार, ९ फरवरी, १९८१ को हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में वीर हकीकत वसन्त मेला। प्रातः १० बजे हवन, ११ बजे धर्मवीर हकीकत को श्रद्धांजलि।

निश्शुल्क नेत्र शिविर

२१ फरवरी से १ मार्च, १९८१ तक श्रीमती चनन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, सुभाषनगर के चिकित्सको की देखरेख में आर्यसमाज मन्दिर, कीर्ति नगर मे निश्शुल्क नेत्र शिविर होगा। २१ फरवरी को प्रातः चिकित्सक आंखों की जांच करेंगे और २२ को प्रातः ९ बजे से मोतियाबन्द, कुकरे, परवाल आदि के आपरेशन किए जाएंगे। शिविर में रोगियों के खानपान का प्रबन्ध आर्यसमाज की ओर से होगा। आपरेशन के इच्छुक अपने बिस्तर तथा बर्तनों के साथ २२ फरवरी को ९ बजे आर्यसमाज मन्दिर पहुंच जाएं।

हिसार में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में प्रान्तीय सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह २७ से २९ मार्च तक हिसार नगर मे मनाया जाएगा। समारोह से सम्बन्धित चतुर्वेद महायज्ञ रविवार ८ मार्च से प्रारम्भ होगा। यज्ञ के लिए गुरुकुल आर्यनगर के सचालक स्वामी देवानन्द सरस्वती ने ५ हजार रुपए और ५ मन घी प्रदान किया है। समारोह समिति के अध्यक्ष दयानन्द कालेज, हिसार मे प्राचार्य नारायणदास ग्रोवर संयोजक मनोनीत किए गए।

आर्यसमाज के निर्वाचन

आर्यसमाज मन्दसौर (म० प्र०) अध्यक्ष—कृपाशकर शर्मा, उपाध्यक्ष—अम्बालाल अग्रवाल और मागीलाल बसेर, मन्त्री—मधुसूदन मधु, उपमन्त्री—ईश्वर सिंह, गगाधर शर्मा, कोषाध्यक्ष—नरेन्द्र सिंह, पुस्तकाध्यक्ष—रामावतार शर्मा, प्रचार मन्त्री—सुभाषचन्द्र भाना व श्याम सोनी, सभा प्रतिनिधि—वरदीचन्द्र बसेर और बंसीलाल।

आर्य युवक परिषद दिल्ली (रजि०) प्रधान—देवव्रत धर्मेन्दु, उपप्रधान—नवनीतलाल एडवोकेट व किशनलाल, प्रधानमन्त्री—प्रो० ओमप्रकाश गुप्त, उपमन्त्री मूलचन्द गुप्त एवं वी० पी० सिंगल, परीक्षा मन्त्री—चमनलाल, प्रचार मन्त्री—कमल किशोर आर्य, कोषाध्यक्ष—हरिश्चन्द्र।

१९८१ वर्ष के लिए आर्यसमाज रोहतास नगर, शिवाजी पार्क, दिल्ली-३२ के नये पदाधिकारी—प्रधान—रामलाल शास्त्री; मन्त्री जयपाल भण्डारी, कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश रहेजा, पुस्तकाध्यक्ष बलवान सिंह शर्मा।

□

पृष्ठ ६ का शेष

नाम पर रूस, पोलैंड के ट्रैक्टरो की बिक्री के लिए बैंकों को भगा दिया गया। देशी पौष्टिक गेहू के स्थान पर बौना गेहू बोया गया। कम्पोस्ट को छोड़कर कर्ज लेकर फर्टिलाइजर के कारखाने लगाए गए। ये भारी घाटा दे रहे हैं। ६०० करोड़ वार्षिक खर्च कर कीमतो को बढ़ने से रोकना सम्भव नही रहा। रूस-पोलैंड का अनुभव है—सबसिडी (आर्थिक-सहायता) उत्पादन नहीं बढ़ाती।

सेकुलर का अर्थ क्या है। श्री ज्योतिबसु मानते हैं कि व्यवहार में कोई भी सेकुलर नहीं। कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री यह नहीं जानता कि सेकुलर लौकिक, ऐहिक अर्थ आचार्य बिनोवा का दिया हुआ है।) भूमि-भक्ति के बिना सम्भव नहीं। भूमि भक्ति नष्ट कर राष्ट्रवाद को कुचल कर मजहब और पंथ की शब्दावली में व्यक्ति न जाना जायेगा तो और कैसे माना जायेगा।

कश्मीर आज तक भारत का अन्य रियासतोंके समान एक अंग नहीं बना। इसकी भारत संविधान मे भाषा कश्मीरी लिखी है, किन्तु इसका शासन उर्दू में होता है, क्योकि कश्मीर मुस्लिम बहुल है। शेख इसको आदर्श सेक्युलर राज्य कहता है।

साहित्य एकादमी का पुरस्कार मिलने पर इसके कवि ने कहा—मैं चाहता तो था अपनी मातृभूमि और मातृ भाषा में बोलना, पर मेरी भाषा संविधान को मान्य नही है। राज मान्य नही। इस वास्ते अंग्रेजी में बोलूंगा। अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जवाहर टनल के पार होने के बाद जब नाम पद केवल उर्दू मे देखता तो खुशी से उछल उठता है। कश्मीरी पण्डित देखता है तो कहता है कश्मीर की कोई अपनी लिपि नही कितना भारी अज्ञान है। कश्मीरी की लिपि है, शारदा नागरी से कुछ अन्तर है। गुरुमुखी उसी की अनुवृत्ति है।

इतिहास सदन,
ए-२३९, पंडारा रोड,
नई दिल्ली-११०००३

चिट्ठी-पत्री

'ऋषि' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ

सी ८१७ महानगर, लखनऊ-६ से श्री वीरेन्द्र शास्त्री लिखते हैं—'१८ जनवरी, १९८१ के 'वेदमनन' स्तम्भ के अन्तर्गत मन्त्र व्याख्या में छपा है—'ऋषि कहता है'····'इस मन्त्र का ऋषि दो संकेत करता है'—ये दोनों वाक्य पाठकों में यह भ्रम पैदा करेंगे कि मन्त्र का बनाने वाला ऋषि है। अतः ऐसी भ्रामक भाषा लिखी ही क्यों जाए? कृपया भविष्य में सुधार करें।'

उक्त पत्र के सम्बन्ध में 'वेदमनन' स्तम्भ के लेखक श्री मनोहर विद्यालंकार १५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-६ लिखते हैं—

१. मैं ऋषियों को मन्त्र का कर्त्ता मान कर द्रष्टा और वास्तव में दर्शयिता मानता हूं। वेदमन्त्रों का कर्त्ता तो परमेश्वर ही हैं।

२. १८. १०८. के मन्त्रार्थ में — ऋषि कहता है स्थान में भ्रम को बचाने के लिए परमात्मा कहता है लिखना अत्यधिक अच्छा रहता। जैसे देवता एक है (परमेश्वर) और देवता भी उसी भिन्न-भिन्न शक्तियों का प्रदर्शन करने कारण ही देवता कहलाते हैं। उसी प्रकार ऋषि एक है (परमेश्वर) और सब ऋषि उसके विशेष-विशेष गुणों को अपने अन्दर आचरण में लाने ऋषि कहलाते हैं।

वैसे, भविष्य में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाएगा, जिससे विद्वानों को भ्रम न हो।

'ऋषि दो संकेत करता है'—से मेरा अभिप्राय यह है कि ऋषि शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ ऋषि शब्द का अर्थ या ऋषि शब्द भी संकेत करता है।'—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७२७/१-बी, गुरुनानक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

एक प्रति ३५ पैसे,   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ४ : अंक १८   रविवार १ मार्च १९८१   दयानन्दाब्द १५६

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

प्रभु की कृपा और रक्षा प्राप्त हो

ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीमस्तु। मा विद्विषावहै ॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः तैत्तरीय आरण्यक, नवम प्रपाठके, प्रथमानुवाके

हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर, आपकी कृपा, रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें और हम सब लोग परम-प्रीति से मिल कर सबसे उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ती राज्य आदि सामग्री से आपके अनुग्रह से सदा आनन्द को भोगें।

हे कृपानिधे, आपके सहाय से हम लोग एक दूसरे के सामर्थ्य को पुरुषार्थ से सदा बढ़ाते रहें और हे प्रकाशमय, सब विद्या देने वाले परमेश्वर, आपके सामर्थ्य से ही हम लोगों का पढ़ा और पढ़ाया सब संसार में प्रकाश को प्राप्त हो और हमारी विद्या सदा बढ़ती रहे, हे प्रीति के उत्पादक, आप ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग परस्पर कभी विरोध न करें, किन्तु एक-दूसरे के मित्र होकर सदा व्यवहार करें।

हे भगवन्, आपकी करुणा से हम लोगों के तीन ताप—एक 'आध्यात्मिक' जो कि ज्वरादि रोगों से शरीर में पीड़ा होती है, दूसरा 'आधिभौतिक' जो दूसरे प्राणियों में होता है और तीसरा 'आधिदैविक' जो कि मन और इन्द्रियों के विकार, अशुद्धि और चंचलता से क्लेश होता है, इन तीनों तापों को आप शान्त अर्थात् निवारण कर दीजिए। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

विद्यार्थियों के लिए आचार्य का सत्परामर्श

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास मे आर्यसमाज के श्रेष्ठतम आचार्य महर्षि दयानन्द ने यथोचित ज्ञान-विज्ञान, वेदादिशास्त्रो का अध्ययन और आचार शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थियों के लिए तैत्तिरीय उपनिषद् से दीक्षान्त सस्कार के लिए विदाई के समय का एक सुन्दर उपदेश प्रस्तुत किया था। जीवन-संग्राम में प्रवेश करने वाले भारतीय विद्यार्थियों के लिए वह उपदेश आज भी उपादेय है—

सत्यं वद। धर्मंचर स्वाध्यायान्मा प्रमद। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।

ये के चास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणास्तेषां त्वयासनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।

अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। य तत्र

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

बोधरात्रि का सन्देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में सम्वत् १८९५ (?) की शिवरात्रि का दिन एक महत्त्वपूर्ण दिन है। इसी दिन महर्षि की अन्तलीन सत्यान्वेषिणी चेतना ने एक नया मोड लिया था। १४ वर्ष के बालक मूलशकर ने श्रद्धानिष्ठ होकर पिता द्वारा बनाई हुई विधि का पूर्णतया पालन किया। जब अन्य परम्पराप्रेमी श्रद्धालु प्रौढजन अपने संकल्प को जाग्रत न रख सके और एक-एक करके निद्रा देवी के गोद मे चलते चले गए, वही बालक मूलशकर अपनी आँखो मे पानी के छीटें दे-देकर अपने जागरण व्रत का पूर्णतया पालन करता हुआ अपनी अपार श्रद्धा का परिचय दे रहा था, परन्तु वह श्रद्धा तब कुण्ठित होगई जब छोटे से मूषक को स्वच्छन्द वृत्ति से उछल-कूद करके शिवजी की मूर्ति पर रखे नैवेद्य

सत्यज्ञान का मूलमन्त्र समझकर जनकल्याण कार्यों में जुट जाइए

खाते हुए उन्होंने देखा। 'मेधा' ने बल पकड़ा और सच्चे शिव को जानने की तीव्र अभिलाषा का उदय हुआ। तदनन्तर अपनी प्रिय बहन तथा पूज्य चाचा के आकस्मिक निधन ने उस जलती हुई आग मे घी का काम किया। परिणामतः रोग, जरा, मृत्यु की घटनाओ से उद्वेलित-चित्त सिद्धार्थ गौतम की भाँति बालक मूलशंकर ने सच्चे शिव की प्राप्ति तथा मृत्युञ्जय बनने के उद्देश्य से महाभिनिष्क्रमण का निश्चय किया।

श्रद्धा और मेधा का समन्वय

श्रद्धा और मेधा का समन्वय विपरीत परिस्थितियो मे भी नवयुग का निर्माण करने वाले कृतसंकल्प मेधावी महापुरुषों का प्रधान लक्षण है। वे प्रत्येक बात को श्रद्धा से स्वीकार करते हैं, और उसे मेधा से तौलते हुए सत्य की ओर उन्मुख होते हैं। गौतम बुद्ध आराडकालाम आदि अनेक प्रसिद्ध आचार्यों के आश्रमों में श्रद्धापूर्वक प्रविष्ट हुए और उनके सिद्धांतों व अनुष्ठानों को अपनी मेधा से परखते हुए अन्त में सत्योन्मेष के पात्र बने। ठीक इसी प्रकार बालक मूलशंकर ने श्रद्धानिष्ठ हुए हुए भी अपनी मेधा शक्ति को—सत्यासत्य के विवेक को कभी कुंठित नहीं होने दिया। सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य के त्यागने की वृत्ति को धारण करते हुए उन्होंने कठोर तपस्या एवं एकाग्रनिष्ठ चिन्तन के उपरान्त सच्चे शिव के स्वरूप को तथा मृत्युञ्जय बनने के उपाय को खोज निकाला। सम्वत् १८९५ में हृदयस्थली में बोया हुआ बीज ३१ वर्षों की कठोर तपस्या के बाद पल्लवित और कुसुमित होकर समस्त देश को अपनी सुगन्ध से सुवासित कर गया। जिसमे सारे देश मे एक नई क्रान्ति का जन्म हुआ और एक नये युग का सूत्रपात हुआ।

सत्यज्ञान का मूलमन्त्र

आवश्यकता है इस बात की कि हम इस बोधरात्रि के पावन पर्व पर ऋषि द्वारा उपलब्ध उस बोध के, उस सत्यज्ञान के, मूल मन्त्र को समझें और उसके स्वर मे स्वर मिलाकर पूर्णनिष्ठा के साथ अपने जीवन का तदनुसार निर्माण करते हुए जनकल्याण के कार्यों मे जुट जावें।

महर्षि के उस बोध का प्रथम मूल मन्त्र है—'अन्ध-श्रद्धालु बन कर मूर्ति पूजा करना छोड दो। यह मूर्तिपूजा किसी सुन्दर पाषाण मे उत्कीर्ण ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि की कल्पित प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करना मात्र ही नही, प्रत्युत प्रत्येक ग्रथ, परम्परा, रूढ़ि या कर्मकाड के आन्तरिक भाव को बिना मेधा-बुद्धि की तुला पर तौले, उसके बाह्य रूप पर टिके रहना भी मूर्तिपूजा ही है। उसे भी त्याग दो। प्रत्येक ग्रन्थ, विचार, परम्परा या कर्मकांड को सत्य की तुला पर तौलो और उसमे जो सत्य अश दिखाई दे उसे ग्रहण करो और जो असत्य है उसे छोड़ दो। अपने आपको किसी पूर्वाग्रह या मिथ्याग्रह से ग्रस्त मत करो। जीवन की सिद्धि सत्यनिष्ठ होने में है, केवल परम्पराओ या समारोहों में नहीं। वे अनृत है, अस्थायी हैं, समय के परिवेश में परिवर्तित हो जाने वाले हैं। 'सत्यमेव जयते नानृतम्' यह श्रुतिवचन इसी तथ्य को इंगित करता है। बैक टु द वेदाज' का सन्देश देने पर भी महर्षि दयानन्द सरस्वती कालिदास के इस वचन का समर्थन करते हैं—

> 'पुराणमित्येव न साधु सर्वं,
> न चापि सर्वं नवमित्यवद्यम्।
> सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते,
> मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः ॥'

महर्षि दयानन्द का दूसरा मूलमत्र है—पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते।' अर्थात् न केवल ब्रह्म ही सत्य है और न केवल प्रकृति ही। प्रत्युत ये दोनों ही सत्य एवं पूर्ण हैं। उस पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न प्रकृति भी पूर्ण है, मिथ्या या असत्य नहीं। अतः जीवधारी मानव को 'ऋतावान्:' 'ऋतावृधः' बनकर इन दोनों के ज्ञान तथा तज्जन्य लाभ को प्राप्त करने का प्रयत्न करना होगा। तभी जीवन की सफलता है। केवल योग या ज्ञानमार्ग द्वारा ही शिव की प्राप्ति या भगवान के दर्शन-नहीं होते। करुणा-द्रवित होकर कर्म योग द्वारा समाज का कल्याण करना, उसमें सत्य और न्याय प्रतिष्ठित करके उसे 'सत्यं शिवं सुन्दरं' बनाना भी शिव की उपासना का एक प्रकार है। यह भी शिव की प्राप्ति का एक सुन्दर सोपान है। 'सर्वभूतहिते रति' या 'सर्वलोक-व्यवस्थिति' से शून्य ईश्वरभक्ति सच्ची शिवपूजा नहीं।

धर्मदेव वेदवाचस्पति

इसी कारण ससार के प्राणियों की सर्वथा उपेक्षा करके केवल आत्मलाभ के लिए किसी पर्वत कन्दरा के अन्दर सतत ब्रह्मलीन रहने की अपेक्षा ऋषि ने ईश्वर को साक्षी रखकर 'जनमानस मे सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए और उसके निमित्त अपने जीवन की भी बलि देना स्वीकार किया।

सच्ची शिव पूजा

ऋषि की दृष्टि में आजकल के भौतिक विज्ञान के उत्कर्ष के युग में भोग तृष्णा में सलिप्त तथा असत्य एवं अन्याय से पीड़ित समाज को उससे मुक्त करना सच्ची शिव पूजा है। वैसे तो जातस्य ध्रुवो मृत्युः' इसध्रुव सत्य के अनुसार सभी को एक न एक दिन शरीरत्याग कर मृत्यु की गोद मे जाना है। और उस कार्य के लिए 'चाहे कितना दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जाएं, परन्तु अपने इस मनुष्य धर्म से पृथक् न होना' ही मृत्युञ्जय पद को प्राप्त करने की अचूक औषध है'। यही उनके बोध का तीसरा मूल मंत्र है।

यदि हम इस बोधरात्रि के दिन ऋषि के उस संदेश को जो उन्होंने कठोर साधना के उपरांत प्राप्त बोध के अनन्तर हमें दिया और उसके पूर्वोक्त दो-तीन मूल मंत्रों के स्वर को समझ कर अपने देश के धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र मे व्याप्त असत्य व अन्याय को दूर-करके सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए अपनी-अपनी शक्ति के अनुरूप सेवा का योगदान कर सकें तभी इस बोधरात्रि को मनाने की सार्थकता है, परन्तु इसके लिये हमे स्वयं सत्यनिष्ठ तथा जाति, धर्म, वर्ण, आदि के भेदभाव सेमुक्त होकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से लोकहितकारी कार्यक्रम बनाने होंगे। केवल संस्थाओ के सचालन या वार्षिकोत्सव मनाने से ऋषि के मिशन की पूर्ति सम्भव नहीं। सत्य और अहिंसा (मानवमात्र के प्रति हित बुद्धि) समाज सेवा क एवं मानव समाज मे सच्चे शिव की पूजा के दो आधार-स्तम्भ है। इसी कारण पाँच यमो में इन दो को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। प्रभु हमें शक्ति दें कि हम ऋषि के सन्देश को हृदयंगम करते हुए उनके बनाये मार्ग पर आगे बढ़ सकें।

आधुनिक भारत के निर्माता ऋषि दयानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के आधुनिक तत्ववेत्ता, सुधारक तथा श्रेष्ठ पुरुष ही नहीं थे, प्रत्युत वह आधुनिक भारत के कुछ प्रमुख राष्ट्र निर्माताओं में अन्यतम थे। महर्षि की असंख्य देन हैं मानवता और विश्व को परंतु उनकी तीन ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां कही जा सकती है जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षितवर्ग में नास्तिकता पनप रही थी और सामान्य जनता अन्ध विश्वास और रूढ़ियों से ग्रस्त थी। उन्होंने आचार और धार्मिक पुनरुत्थान के के आधार पर नए भारत की नींव सुदृढ़ की। उन्होंने घोषित किया कि वेदों तथा प्राचीन भारतीय चिंतन में विज्ञानसम्मत एवं नैतिक धार्मिक सत्य निहित है। उन्होंने वेदो तथा प्राचीन तत्त्वज्ञान की ऐसी बुद्धिसंगत व्याख्या की कि कड़े से कड़ा बुद्धिवादी भी उससे सहमत हो गया। इसी के साथ उन्होंने ऐसे शुद्ध ईश्वरवाद की प्रतिष्ठा की जिससे पश्चिमी विचारक और चिंतक भी सहमत थे। प्राचीन धर्मग्रन्थों और तत्त्वज्ञान में से उन्होंने ऐसे मोती प्रस्तुत किए, जिन्हें देशवासियों ने पूरे विश्वास और आस्था के साथ ग्रहण किया, फलतः पश्चिमी एवं प्रतिस्पर्द्धी सम्प्रदायवादियों के आक्रमण पस्त हो गए, हताश भारतीय मानस भारतीय तत्त्वज्ञान की ज्योति से एक नई प्रेरणा प्राप्त कर नैतिक एवं वैचारिक दृष्टि से स्वावलम्बी और शक्तिसम्पन्न होने लगा। ऋषि की यह वैचारिक देन उनकी पहली उपलब्धि थी।

महर्षि गुजरात में जन्मे थे। घर से वह सच्चे शिव की खोज में सत्यज्ञान की प्राप्ति के लिए पन्द्रह वर्ष तक वनों-पर्वतों-एव विभिन्न प्रदेशो मे पर्यटन करते रहे थे। १८६० से १८६३ तक गुरु विरजानन्द के चरणों मे बैठने के बाद वह १८६४ से १८८३ तक निरन्तर बीस वर्ष तक भगवान पर विश्वास कर एकाकी साधक की तरह नवीन आर्यावर्त्त की प्रतिष्ठा के लिए देश भर मे घूमे। आगरा, ग्वालियर, जयपुर, काशी, अजमेर, बम्बई, पूना, कलकत्ता, पटना, जोधपुर आदि नगरो में ही नही, देश में अनेक जनपदो और नगरो मे उन्होने सत्यार्थ प्रकाश और आर्य सिद्धान्तों की अलख जगाई। ससार के अन्य महापुरुषो की भांति उन्होने शारीरिक यातनाएं सही, विरोधियो-प्रतिस्पर्द्धियों के अत्याचारों और विरोधो का सामना किया। पूरे विश्वास और साहस के साथ उन्होंने देश मे व्याप्त कुरीतियो, अज्ञान, विषमता और अन्याय का सामना किया। इसी समय में उन्होंने बम्बई में पहली आर्यसमाज की स्थापना की। इसी के साथ उन्होने सत्यार्थप्रकाश एवं वेदों के भाष्य आदि प्रस्तुत कर हिन्दी के माध्यम से जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उन्होने किसी सस्था, किसी मठ-मंदिर की गद्दी नही सम्भाली, न वह अपने नवीन जन-आन्दोलनों के डिक्टेटर या सर्वेसर्वा बने। वह तो अपने को समाज का एक सामान्य सदस्य कहते थे, इसके बावजूद केवल अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों से उन्होने देश में एक अभूतपूर्व सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति कर दी। शकराचार्य के बाद पदयात्रा के माध्यम से अपूर्व धार्मिक क्रान्ति करने वाले वह दूसरे भारतीय थे। महर्षि की यह धार्मिक क्रांति उनकी दूसरी बड़ी उपलब्धि थी।

आर्यसमाज के माध्यम से देश और विदेशों में शिक्षा, समाज-सुधार, दलितोद्धार, स्त्रीशिक्षा, नवीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, गोरक्षा, हिन्दी प्रचार आदि नानाविध क्षेत्रों में जो कार्य हुआ है, उसे प्रत्येक राष्ट्रवादी स्वीकार करता है, इन कार्यों की महत्ता है और इन कार्यों को सम्पन्न कर आर्यसमाज की गरिमा बढ़ी है, परन्तु महर्षि की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी मानवता को उनकी वह वैचारिक देन थी जो उन्होंने आर्यसमाज के नियमों, सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में नई दृष्टि देकर प्रस्तुत की है। आर्यसमाज के नियम मानवता के लिए सदा मील-स्तम्भ का कार्य करेंगे। ऋषि न स्वयं समाज के सूत्रपात बने, न उन्होने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त किया, प्रत्युत उन्होंने आर्यसमाज के नियमों के द्वारा एक नई जीवन दृष्टि दी। ऋषि ने सीख दी—'विद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए, दूसरे इस समाज का मुख्य उद्देश्य संसार की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। तीसरे सब अपनी उन्नति से सन्तुष्ट न रहें, प्रत्युत सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें, साथ ही मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। ऋषि ने अपने जीवनकाल के लिए तथा बाद के लिए इन नियमों को ही समाज और राष्ट्र का पथ-प्रदर्शक नियुक्त किया था। दूसरे धर्मों और सम्प्रदायों के पैगम्बर और उनकी पूरी धार्मिक परम्परा और उत्तराधिकारी हैं, परन्तु महर्षि ने मानव मात्र की उन्नति, सबकी एवं संसार भर की उन्नति और अविद्या के नाश के कार्य को ही प्राथमिकता दी थी, यह महर्षि की तीसरी बड़ी उपलब्धि थी। ऋषि १८४६ से १८६० तक पन्द्रह वर्ष ज्ञान की खोज में देश भर में भटके थे और गुरु विरजानन्द जी के सान्निध्य में सच्ची शिक्षा ग्रहण कर उन्होंने राष्ट्र को सत्यप्रकाश के माध्यम से सच्ची गुरुदक्षिणा दी थी। ऋषि बोध के पर्व पर हमें महर्षि की तीनों उपलब्धियों का स्मरण करते हुए ऋषि के आदेशों को कार्यान्वित करना चाहिए। □

क्या हम सीख लेंगे ?

बौद्धधर्म का प्रादुर्भाव छठी सदी ईस्वी पूर्व में हुआ था। इतिहास साक्षी है कि म. बुद्ध के अपने जीवनकाल में उनके धर्मप्रचार का क्षेत्र बना—मगध, श्रावस्ती, काशी आदि पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार का मर्यादित छोटा-सा क्षेत्र। इसी के साथ दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि म. बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म के विचार एवं सिद्धांत यद्यपि उनके समय में व्यवस्थित रूप से लेखबद्ध नहीं हो सके थे, तथापि सम्राट् अशोक के समय तक बौद्धधर्म का वैचारिक क्षेत्र एशिया के व्यापक क्षेत्रों में प्रचारित और प्रसारित हो चुका था। इतना ही नहीं, इन कुछ शताब्दियों में ही बौद्ध धर्म के सूत्र और म. बुद्ध के विचार प्रामाणिक ग्रन्थों के रूप में अंगीकार कर लिए गए थे। एक सीमित सम्प्रदाय के स्थान पर बौद्ध धर्म एक सार्वभौम विश्वव्यापी धर्म के रूप में कैसे फैला, इसके बारे में तीन कारण कहे जाते है। पहला कारण तो म. बुद्ध द्वारा अपने शिष्यों से किया वह अनुरोध था जब सारनाथ में धर्मचक्र प्रवर्त्तन करते हुए उन्होने अपने शिष्यों से कहा था, वे सब शिष्य एव भिक्षु बहुजनहिताय, बहुजन सुखाय लोकदया के लिए विचरण करें। शिष्यो से उनकी दूसरी सीख यह थी कि प्रत्येक भिक्षु स्वयं दिया बने। वह अकेले ही धर्मप्रचार के लिए जाए। बौद्ध भिक्षुओं ने अपने गुरु के उपदेश को शिरोधार्य किया और हजारों भिक्षु देश देशान्तरों में पहुंचे। 'सद्धर्म संग्राम' नामक ग्रन्थ मे उन सहस्रो बौद्ध-भिक्षुओं और भिक्षुणियों का विवरण है, जिन्होंने म. बुद्ध के समय से लेकर १३वीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म का प्रचार किया था।

बौद्ध धर्म के सिद्धांतों एवं म. बुद्ध के प्रवचनों एवं शिक्षाओं को लिपिबद्ध करने तथा बौद्ध धर्म को व्यापक रूप देने में कुछ धर्मप्राण बौद्ध विद्वानों एव बौद्ध-धर्म की तीन समीतियो या महासभाओं का बड़ा योगदान है। बौद्धधर्म के प्रसार का यह दूसरा कारण कहा जा सकता है। इस धर्म को सार्वभौम विश्व धर्म बनाने मे तीसरा बडा कारण सम्राट् अशोक का भी बड़ा योगदान है जिन्होने कलिंग-युद्ध के बाद बौद्धधर्म अंगीकार किया था और उसे द्वीप-द्वीपातर और देश-देशातर में फैलाने मे अपनी पूरी शक्ति और प्रयत्न लगा दिए थे। म. बुद्ध की शिक्षाओ और उनके विचारो के विश्व में प्रसार की कहानी की तुलना जब हम आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार से करते हैं तो दो तथ्य उल्लेखनीय है। पहला यह कि पंजाब की पंचनदियों से कन्याकुमारी तक तथा सोमनाथ से गंगासागर तक सारे देश में महर्षि स्वयं घूमे और उन्होने स्वत. आर्य वैदिक धर्म की शिक्षाओं का व्यापक प्रसार किया। दूसरा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि जहाँ म. बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं और धर्म प्रसार के लिए स्वतः एक लेख भी नहीं लिखा, और उनके बाद के शिष्यो और धर्म सभाओं एवं विद्वानो ने यह कार्य किया, वहाँ ऋषि दयानन्द ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका स्वतः प्रस्तुत की। उन्होंने न केवल सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका आदि ऐसे नानाविध ग्रंथ एवं आर्यसमाज के नियम आदि ऐसे पथ-प्रदर्शक सूत्र दे दिए हैं, प्रत्युत उन्होंने अपने ही समय मे परोपकारिणी सभा और आर्यसमाज जैसी सस्थाओ के निर्माण से एक सार्वभौम विश्वधर्म की भूमिका प्रस्तुत कर दी थी।

यह ठीक है कि पिछले सौ-सवा सौ वर्षों में आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का सन्देश इस देश में ही नहीं, देश-देशातर और द्वीप-द्वीपान्तर मे फैला है, पर यह भी एक कटु तथ्य है कि यदि अपने को आर्यजन कहने वाले आर्यप्रचारक ऋषि के सिद्धांतो एवं ऋषि प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश को बहुजनहिताय, बहुजन सुखाय और लोककल्याण के लिए फैलाते तो आज से आर्यसमाज का सौ गुना अधिक प्रचार-प्रसार होता। इसी के साथ महर्षि के पार्थिव शरीर के प्रयाण के बाद यदि विश्व भर के प्रमुख आर्यविद्वान एवं आर्य प्रतिनिधि बौद्ध महासभाओ या समीतियों की तरह एकत्र होकर विवाद ग्रस्त विषयो पर नीति निर्धारण कर विश्व एव भारत देश में आर्य धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये व्यवस्थित पंचवर्षीय, दशवर्षीय योजना बनाते तो बहुत कुछ किया जा सकता था। म. बुद्ध के व्यक्तित्व के तिरोहित हो जाने के बाद बौद्ध सभाएं बौद्ध धर्म के प्रसार के लिये प्रचार-प्रचार एवं यातायात की सुविधा न होने के बावजूद बहुत कुछ कर गईं तो आज नवीनतम साधनो एवं यातायात की सुविधाओं का लाभ उठाकर विश्व के आर्य विद्वान एवं प्रतिनिधि सभाएं योजना-बद्ध कार्यक्रमों के माध्यम से बहुत कुछ कर सकती हैं? पर प्रश्न यह है कि ऋषिबोधोत्सव के पर्व पर ऋषि बोध के डेढ सौ वर्ष व्यतीत होने पर भी क्या हम बौद्ध इतिहास से कोई सीख ले सकेंगे? □

महर्षि दयानन्द : एक अनहोना व्यक्तित्व

अनन्त अज्ञात गगनों से कई ग्रह, नक्षत्र और उनके खण्डपिण्ड निर्दिष्ट यात्रा-पथ से भटक आने के कारण कभी हमारी धरती पर भी आ गिरते हैं। अपनी अकल्पनीय लम्बी यात्रा में घिसते-पिटते वे धरती का स्पर्श होने तक अपनी विपुल काया का अधिकांश और ज्वाला तथा प्रकाश का प्रायः सर्वांश गवा चुके होते हैं। प्राय: गिरने के समय उनका कुछ भाग पृथ्वी की छाती को दरका कर उसमें प्रविष्ट भी हो जाता है। इस प्रकार के उपपात की सूचना होते ही विश्व के कोने-कोने के विशेषज्ञ जिज्ञासाहेतु उनके समीप आना आरम्भ कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द के साथ भी ऐसा ही हुआ था। इस धरा पर भारत भूमि मे वह अपने सम्पूर्ण तेज, प्रकाश और गुरुता के साथ अवतरित हुए एक अनोखे अदृष्टपूर्व नक्षत्र थे, जिनके आगमन से धरती की छाती न तो दरकी-धरकी थी और न ही वह जो भर धसकी थी अपितु सौ गज ऊँची हुमस उठी थी।

ब्रह्मतेज की वह ज्योति

स्वामी जी को विधाता ने ऊँचा कद गौर वर्ण तथा बहुत ही सुघर प्रपुष्ट काया प्रदान की थी। विपुल योगाभ्यास, अखण्ड ब्रह्मचर्य, कठोर

जिन्हें सत्य की वेदी पर शहीद हो जाना पड़ा

श्रम-साधना, व्यापक पर्यटन और सत्संग तथा अगाध पाण्डित्य की गरिमा से मण्डित वह आकाश से सद्य: अवतरित एक देवपुरुष प्रतीत हुए थे। सन् १८८३ ई० के मई महीने में स्वामी जी राजस्थान के शाहपुर दरबार से, जोधपुर नरेश महाराज श्री जसवंत सिंह के निमन्त्रण पर जोधपुर जा रहे थे। वह नगर जब तीन कोस दूर रह गया था, वह सवारी छोड़कर प्रातः कालीन वायु का आनन्द लेते पैदल नगर की ओर चले जा रहे थे। उनके स्वागत मे राजन्य वर्ग के कई लोग दूर जाकर पहले से खड़े थे। नगर में कोठी पर कर्नल प्रतापसिंह तथा रावराजा तेजसिंह अनेक भृत्यो सहित उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। रावराजा के ही शब्दों में स्वामी जी की उस काल की छवि का निम्नांकित निरूपण सर्वथा वन्दनीय है—

"हमने देखा कि कुछ दूर काषाय वस्त्रधारी, हाथ में दण्ड धारण किए, एकविशाल काय सन्यासी गम्भीर गति से चले आ रहे थे। उनका ललाट उन्नत था, वर्ण और मुखमंडल से तेज टपकता था। प्रातः कालीन सूर्य की भांति उनकी छवि अवर्णनीय थी। उनकी मांसपेशियां सुगठित थीं, होठों पर मृदु हास था। हम इस भव्य छवि को देखकर स्तंभित हो गए। सहसा हमारे मुख से महर्षि विश्वामित्र के ये शब्द मुखरित हो उठे—धिग्बलं क्षत्रियबल ब्रह्मतेजो बल बलम्! इस ब्रह्म तेज के समक्ष क्षत्रियों की शक्ति तुच्छ एवं नगण्य है।"

असामान्य प्रतिपत्ति

स्वामी जी की वाणी मे वशीकरण की अपरिमित मोहिनी थी। उसमे धार और भार की प्रचुरता समान थी उनके गुरु ने दीक्षान्त के अवसर पर आशीर्वचन में उन्हे 'कुलकर' और "कालजिह्व" का प्रमाणपत्र दिया था। कुलंकर अर्थात् वह अडिग खूंटा जिसे कोई भी उखाड़ न सके। कालजिह्व वह जिसकी जीभ डंसते ही काल के गाल मे पहुंचा देने की शक्ति रखती हो। इसी आशीर्वाद का प्रभाव था कि स्वामी जी ने जिन सिद्धांतों की स्थापना कर दी, उन्हें काटने वाला आज तक कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ। इधर कतिपय प्रबुद्ध जन स्वामी जी के सिद्धांतो के साथ मार्क्स और एञ्जिल तथा लेनिन के साम्यवादी सिद्धान्तों का ताल-मेल बिठाने का प्रयास कर रहे हैं। मार्क्सवादी सिद्धांत भौतिक क्षेत्र मे अवश्य एक सीमा तक महर्षि दयानन्द के आध्यमिक साम्यवाद के दिशा बोध के निकट हैं। किन्तु मार्क्सवाद को स्वामी जी के साम्यवाद की ऊंचाई तक पहुंचने मे अनेक प्रयोग करने पड़ सकते हैं। किन्तु प्रयास तो जारी रहने ही चाहिये। किसी ने कहा भी है कि—

प्रभु सग लागि रहो मोरे भाई।
तोरी बनति-बनति बनि जाई॥

तथापि जिज्ञासु जन को इस सम्बन्ध में स्वामी सहजानन्द सरस्वती रचित गीता-हृदय 'ग्रन्थ का अनुशीलन कर लेना चाहिए जिसमें पूज्य स्वामी जी ने गीता धर्म और साम्यवाद का समन्वय करते हुए दोनों में एकत्व प्रमाणित किया है। और स्वामी जी के सम्मुख शास्त्रार्थ के लिए जो भी आया, परजित होकर ही लौटा। वह कालजिह्व जो थे।

मानवधर्म की प्रतिष्ठा

सत्य के अति प्रबल और कठोर आग्रह के कारण जब स्वामी जी ने मूर्ति-पूजा, मन्दिरों की भजन-आरती तीर्थयात्रा, अवतारों की वन्दना, जात-पांत की मर्यादा, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष, पुराणों के प्रति विश्वास आदि आदि को मिथ्या कहकर सबसे इन्कार कर दिया, तब हिन्दू धर्म के मूर्तिपूजक पंडित-पुरोहितों कुंठाग्रस्त रूढ़िवादियो ने तिलमिला कर उन्हे कोसना आरम्भ कर दिया। उन लोगों ने उन्माद के वश होकर उनका अंत कर देने के लिए नाना प्रकार के कुचक्रो का आयोजन किया और सन् १८८३ में विष देकर उनका जीवनान्त कर ही डाला। किन्तु केवल एक निराकार परम दैवत की उपासना और मानव धर्म की प्रतिष्ठा को ही मनुष्य का एक मात्र धर्म बता कर स्वामी जी ने विश्व के समस्त एकेश्वरवादी धर्मों के विचारवान सुधी जनो के मन अपने प्रति अपूर्व विस्मय जिज्ञासा तथा अनेक अंशों में अपनपो का भी भाव पैदा किया। फलतः पुराने धर्म मोजेयक या इसरायली या जिओनिज्म, तथा ईसाई और इस्लाम तथा अधतन पन्थ ब्राह्मसमाज और थियोसोफी तक के अनुयायियों को स्वामी जी के विचारों में बड़ा अपनत्व जान पड़ा और उन्हें अपना बना लेने के लिए सभी ने भरपूर प्रयत्न भी किया। यह तो सर्वविदित ही है कि लाहौर में उनके निवास के समय जब कट्टरपन्थी हिन्दुओ ने दबाव डालकर स्वामी जी को एक महाजन के बगीचे से निकाल दिया था, तब लाहौर के एक मुसलमान सज्जन ने ही उन्हें अपनी कोठी के रहने की व्यवस्था की थी।

वह सर्वहितकारी थे

सच तो यह है कि मुसलिम समाज स्वामी थी को उस समय ही नहीं, उसके बाद उनके जीवित रहने तक और मर जाने में बाद भी उन्हें सबका मित्र मानता रहा था। सर सैयद अहमद खां ने जो उनके समसामयिक थे स्वामी जी की मृत्यु पर अपने शोक सन्देश में कहा था कि :—'..."वह ऐसे विद्वान् और सत्यपुरुष थे कि सम्पूर्ण धर्मों के अनुयायियों से प्रतिष्ठा पाने के योग्य थे। उनके समान सारे भारतवर्ष में इस समय कोई नहीं मिल सकता।"...देवबन्द के दारुल उलूम के संस्थापक हजरत मुहम्मद कासिम उन्हें 'रहबरे आजम' और [illegible] माननीया श्रीमती खदीजा बेगम एम० ए० के शब्दो में, "वह भारतमाता के उन सपूतों मे हैं जिसके व्यक्तित्व पर जितना ही अभिमान किया जाए थोड़ा है। नेपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एवं विजेता ससार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी जी उन सबसे बढ कर थे। पाल रिचार्ड ने महर्षि को समग्र मानवता के उद्धारकर्ता के रूप मे देखा था। वास्तव मे पालरिचार्ड ने स्वामी जी की मृत्यु के उपरान्त उनके सम्बन्ध में दो-चार शब्दों में जो तात्त्विक संदेश दिया था, आर्यसमाज और स्वामी जी के सिद्धांतों को विश्वव्यापी बनाने के कार्यक्रम के लिए वह आज भी प्रेरणा प्रदायक है। उन्होने कहा था—"स्वामी दयानन्द निः सन्देह एक ऋषि थे। उन्होने महान् भूत और भविष्य को अपने में मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव मानव को कारागार से मुक्त करने जातिबन्धन तोड़ने के लिए हुआ था।

लेखक :
प्रो० राजनाथ पाण्डेय

सत्य की कठोर कराल धार

यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लाहौर हिन्दुओं के घर-बगीचे से बाहर किये जाने पर जिस मुसलमान भाई ने स्वामी जी को अपनी कोठी में सम्मान सहितलाकर रखा था, उनका नाम डाक्टर रहीम खां था। सचमुच वह रहम या रहमत करने वाले रहीम और डाक्टर थे। यह भी सर्वथा उल्लेखनीय और सतत स्मरणीय है कि आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य से उसका प्रथम अधिवेशन भी इसी कोठी मे हुआ था। और दूसरा अधिवेशन समाज के स्थापन महोत्सव वाला जिस मन्दिर में हुआ था, वह सत्सभा नामक संस्था का मन्दिर था, और उस महान् अवसर पर ब्राह्मण-समाज की ही उपासना-पद्धति का 'अव-लम्बन किया गया था। उन दिनों की प्रसारण और संचार व्यवस्था आज की तरह व्यापक न थी। स्वामी जी की या उनके किसी अनुयायी की ही विदेशों में कोई यात्रा भी नहीं हुई थी। स्वामी जी अंग्रेजी भाषा भी नहीं जानते थे। फिर

(शेष पृष्ठ १३)

वैदिक क्रान्ति के अग्रदूत : महर्षि दयानन्द

विश्वकल्याण के लिए वेदप्रचार में विशेष शक्ति लगनी चाहिए

लेखक :
पं० वीरसेन वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य

भारत ही नहीं संसार के भाग्योदय का सूत्रपात लगभग एक शताब्दी पूर्व शिवरात्रि पर्व पर टंकारा में हुआ। महर्षि स्वामी दयानन्द के बाल हृदय मे शिव उपासना की लालसा जाग्रत हुई। उन्हें बोध हुआ। ज्ञान का अच्छा प्रकाश हुआ। साधना, अन्वेषण, तपस्या मे निरन्तर लीन होने पर प्रभु का प्रसाद, ज्ञान प्रसाद 'वेद' प्राप्त हुआ। वेद के जो गूढ एव प्रकट रहस्य पूर्वाचार्यों एवं ऋषि मुनियों को प्राप्त नही हुए, वे महर्षि दयानन्द को प्राप्त हुए। महर्षि दयानन्द ने 'समस्त मानव मात्र इस वेद ज्ञान का अधिकारी है' यह घोषित करके सबको वेद का अधिकार दिया।

वेदों का भूमण्डल में प्रचार

वेद मानव जाति का पथ-प्रदर्शक है। अतः महर्षि स्वामी दयानन्द ने हमारा ध्यान सर्व प्रथम ईश्वरोपासना और वेदो की ओर आकृष्ट किया। आर्य समाज ने गत एक शताब्दी मे वेदों का बहुत प्रचार किया। जो वेददर्शन मात्र के लिए भी दुर्लभ थे वे आज लाखो की सख्या में देश-विदेश मे उपलब्ध है। वेद सम्बन्धी छोटी-बड़ी लाखो पुस्तकें आज सर्वत्र आर्यसमाज तथा अन्य जनों के घर मे विद्यमान हैं और उनका न्यूनाधिक रूप से पठन नित्य होता है। इस प्रकार लोगो की रुचि वेदों की ओर आर्यसमाज ने उत्पन्न की।

विश्व में वेदमन्त्रों की गूंज

वेदमन्त्रों की ध्वनि भारत में कहीं-कहीं सुनाई पड़ती थी उसका सबको सुनने का अधिकार भी नहीं था। परमात्मा की पवित्र कल्याणी वेदवाणी कुछ ही ब्राह्मणों के कंठ में विराजती थी। महर्षि दयानन्द की क्रान्तिकारी विचारधारा से तथा आर्यसमाज के सतत प्रयास से आज भारत तथा विदेशों में भी वेद मंत्रों की ध्वनि गूंज रही है। चारों वेदों के टेप रिकार्ड कैसेट आज विदेशों में पहुंच गए हैं और उनके द्वारा भी मन्त्र ध्वनि दिग्-दिगन्त में व्याप्त हो रही है।

गायत्री मन्त्र का व्यापक प्रचार

एक समय गायत्री मंत्र गुप्त रखा जाता था और उसे किसी को सुनाने में दोष माना जाता था। आज उसी गायत्री का उच्चारण घर-घर में सभी वर्णों के आबाल वृद्ध-स्त्री, कन्याएं कर रही हैं और सार्वजनिक स्थानों पर सामूहिक रूप से भी कर रहे हैं। यह महर्षि दयानन्द की क्रान्ति का ही फल है और आर्यसमाज के घोर परिश्रम का परिणाम है।

सामूहिक उपासना का प्रचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही सामूहिक प्रार्थना का प्रचार किया। सामूहिक रूप से उपासना करने का भी प्रचार किया। तदनुसार सामूहिक रूप से वेद मत्रो द्वारा सान्ध्योपासना प्रार्थना आदि आयोजित होने लगे। महात्मा गांधी, विनोबा आदि चाहे महर्षि का नाम न लें, परन्तु महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज के सतत सामूहिक प्रार्थना के आयोजनो का देश मे सब अनुसरण करने लगे। यह महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज की ही देन का परिणाम है।

यज्ञों का विश्वव्यापी प्रचार

महर्षि दयानन्द ने रोग, शोक, दुःख दारिद्रय के विनाश के लिये बड़े-बड़े यज्ञों को करने का आदेश दिया तथा नित्य प्रति प्रातः सायं यज्ञ करने का भी आदेश दिया। आर्यसमाज ने अनेक बड़े-बड़े यज्ञ भी किये और दैनिक यज्ञ भी आर्य जनो ने प्रचलित किए। इन यज्ञों का अनुकरण करके तथा प्रतिस्पर्धा के रूप मे अन्य जनो ने एव सस्थाओ ने भी प्रारम्भ कर दिए हैं और आज तो अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोप आदि महा देशों में भी यज्ञ होने लगे हैं। वहां यज्ञ का प्रचार बढ़ता जा रहा है।

गीता और रामायण से यज्ञ

जिन लोगों को वेद मन्त्र नही आते थे, उन्होंने गीता के श्लोकों से, जिन्हें संस्कृत नहीं आती थी उन्होंने तुलसी रामायण की चौपाइयों से यज्ञ प्रारम्भ कर दिए। इसके अतिरिक्त यज्ञ नाम मे पवित्रता, सात्विकता, परोपकार भाव को अनुभव करके लोगो ने यह शब्द का प्रचार भूदान, यज्ञ, योग यज्ञ आदि में प्रयुक्त करना प्रारम्भ किया। यह भी महर्षि दयानन्द की क्रान्ति एवं आर्यसमाज की यज्ञ के प्रति साधना का परिणाम है।

यज्ञ से पृथ्वी पर स्वर्ग

महर्षि दयानन्द क्रान्तदर्शी थे। उन्होने 'स्वर्गकामो यजेत' का वास्तविक अर्थ समझा। उन्होने बताया कि यही पृथ्वी यज्ञ से स्वर्गधाम बनेगी। यही वैतरणी से तरने का साधन है। इस यज्ञ का आश्रय ग्रहण करो—दुःख सागर से पार हो जाओगे। यज्ञ का वैज्ञानिक रीति से लाभ प्रकट करने में महर्षि दयानन्द ही सर्वप्रथम हैं। उन्होंने बताया कि यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध होता है। यज्ञ में हवि रोग विनाशक, सुगन्धित पौष्टिक एव मिष्ट पदार्थों को डालने से समस्त वातावरण शुद्ध, पुष्ट एवं रोग-रहित होगा। महान् औषध का कार्य करेगा। जीवन की वृद्धि, आरोग्य, उत्तम बुद्धि का उदय होगा। दुर्गुण विनष्ट होगे।

यज्ञ चिकित्सालय है

आज रोग निवारण के लिए स्थान-स्थान पर पूर्ण सुविधायुक्त चिकित्सालय स्थापित किए जा रहे हैं। बड़े-बड़े नगरों मे तो अनेक बड़े-बड़े अस्पताल हैं, शासकीय एव अशासकीय, परन्तु वे भी अपर्याप्त अनुभव हो रहे हैं। यदि प्रत्येक नगर मे तथा प्रत्येक अस्पताल मे यज्ञ हो तो रोगो का विनाश तथा आरोग्य की वृद्धि स्वभावतः ही होती रहेगी। आर्यसमाज को यज्ञ के महत्त्व का क्रियात्मक स्वरूप अवश्य बढाना चाहिए।

यज्ञ का प्रचार अनेक संस्थाओं द्वारा

यदि महर्षि दयानन्द से यज्ञ का लौकिक लाभ, जल, वायु की शुद्धि का नही बताया होता तो आज के भौतिक युग मे यज्ञ का प्रचार नहीं हो पाता। आज आर्यसमाज के यज्ञ के प्रचार के कारण ही देश-विदेशो मे यज्ञ हो रहे हैं और अनेक संस्थाएं यज्ञ का प्रचार कर रही हैं। इसमें फाइव फोल्ड मिशन अग्रणी है। यह यज्ञ, दान, तप कर्म और स्वाध्याय का अनुयायी बना रहा है। उसने वाशिंगटन मे अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी स्थापित की है तथा अमेरिका एव यूरोप के अनेक देशो मे क्रियात्मक रूप से यज्ञ का प्रचार किया है। बैरागढ (भोपाल) मे भी माधवाश्रम द्वारा यज्ञ का प्रचार-कार्य हो रहा है।

लोनावाला (पूना) मे न्यू वे आश्रम मे भी यज्ञ के वैज्ञानिक रूप से प्रभाव का अन्वेषण एवं परीक्षण किया जा रहा है। उन्होने यज्ञ के द्वारा अनेक प्रकार के प्रभावो को अनुभव किया है। लगभग २३ प्रकार के कार्य यथा कृषि उत्पत्ति, वनस्पति, वृद्धि, वृष्टि, मानसिक शान्ति, आरोग्य, आदि पर उन्होंने मन्त्रचयन एवं यज्ञ कार्य किए हैं। लगभग ४०-५० पुस्तकें मराठी, गुजराती एव अंग्रेजी मे प्रकाशित की हैं।

इसी प्रकार गायत्री तपोभूमि मथुरा एव उसी की हरिद्वार की संस्था तो इस कार्य मे और भी आगे बढ गई हैं। उसने यज्ञ, मन्त्र-ध्वनि, ध्यान आदि का वैज्ञानिक रीति से प्रभाव सिद्ध करने के लिए करोडो रुपयो के वैज्ञानिक यन्त्र लगाकर अपनी विशाल प्रयोगशाला बनाई है। यह सब कार्य ऋषि दयानन्द की क्रान्ति के प्रतिफल में ही हो रहा है। परन्तु इनका मस्तिष्क ऋषि दयानन्द की प्रत्यक्ष विचारधारा से यदि जुड़ा रहेगा तो अन्वेषण सही होगा। आर्यसमाज को यज्ञ के लिए अपनी अनुसन्धानशाला स्थापित कर सन्मार्ग प्रदर्शन करना चाहिए।

वेद का प्रचार अनेक संस्थाओं द्वारा

महर्षि दयानन्द ने वेद का प्रचार किया। एक शताब्दी मे वेद ही वेद, देश-विदेश मे हो गए। स्विटजरलैंड मे महर्षि महेश ने वेद विश्वविद्यालय खोल दिया तथा देश-विदेशो मे हजारो व्यक्ति वेदमन्त्र ध्वनि नित्य करने वाले नियुक्त कर दिए। दक्षिणी भारत मे जगद्गुरु शंकराचार्य ने अनेक स्थानों पर वेद विद्यालय स्थापित किए हैं और वह उनके लिए अध्यापक एव वेतन भी प्रदान करते हैं। दिल्ली मे महर्षि महेश वेद विद्यालय शीघ्र ही प्रारम्भ कर रहे हैं तथा ऋषिकेश आदि मे चला भी रहे हैं। श्री स्वामी गंगेश्वरानन्द जी ने वृन्दावन मे वेद विद्यालय स्थापित किया है। श्री स्वामी अखण्डानन्दजी के वृन्दावन के आश्रम मे वेद शिक्षण की व्यवस्था प्रारम्भ है। आनन्दमयी मा के आश्रम की कन्याएं सस्वर वेदपाठ करती हैं तथा यज्ञोपवीत भी धारण करती है। यह सब आर्यसमाज के ही प्रताप से वेद का प्रचार बढा है, क्योंकि सर्वप्रथम आर्यजनो ने आर्यसमाज के गुरुकुलो, विद्यालयो एव आर्यसमाज मन्दिरो मे वेदमत्रो की ध्वनि नित्य सायं प्रातः इस विश्व के गगन मण्डल मे गुंजाई और गुंजा भी रहा है।

महर्षि के वेदभाष्य का प्रभाव

महर्षि दयानन्द ने वेदार्थ शैली का

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सत्यार्थ प्रकाश मेरी दृष्टि में

विश्व धर्म का एक ऐसा अद्‌भुत एव अपूर्व कोश जिसका सम्यक् अध्ययन-मनन तथा तदनुकूल आचरण कर मानव की सर्वतोमुखी उन्नति सम्भव

नूतन युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने अपने भक्त और शिष्य राजा जयकृष्णदास की प्रेरणा से १८७५ मे वेदादि शास्त्रो के सिद्धान्तों को सत्यार्थ-प्रकाश नामक ग्रथ में संग्रहीत कर स्व-व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया। इस प्रकार भारतीय नवजागरण के प्रथम सूत्रधार ऋषि दयानन्द की इस अमर कृति को प्रकाश मे आए एक शताब्दी से भी अधिक समय हो गया है। इस बीच यह ग्रन्थरत्न लाखो लोगो के लिए अद्भुत प्रेरणा, स्फूर्ति तथा उत्साह का स्रोत सिद्ध हुआ है। आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग के अद्वितीय विद्वान और विचारक पं० गुरुदत्त ने इस ग्रन्थ के विषय मे स्व उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था—'मैने सत्यार्थप्रकाश को कम से कम १८ बार पढा। जितनी बार मैं इसे पढता हूं, मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ नवीन भोजन मिलता है। यह पुस्तक गूढ़ सचाइयों से भरी पडी है।' भारतीय राष्ट्रवाद को सुदृढ आधार प्रदान करने वाले तथा क्रान्तिकारियो के गुरु वीर विनायक दामोदर सावरकर ने सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध मे अपने मन्तव्य को व्यक्त करते हुए एक बार लिखा था—'हिन्दू जाति की ठण्डी रगो मे उष्ण रक्त सचार करने वाला यह ग्रंथ अमर रहे, यही मेरी कामना है। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।' मनस्वी चिन्तक लाला हरदयाल कहते हैं—' इस महान ग्रथ के अध्ययन से मेरी विचारधारा ही बदल गई। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जाग्रत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।'

विश्वमानव के लिए उपयोगिता

सत्यार्थप्रकाश की लोकप्रियता तथा विश्व मानव के लिए उसकी उपयोगिता इसी बात से विदित होती है कि विगत एक शताब्दी के भीतर इस ग्रंथ के सैकड़ो संस्करण प्रकाशित हुए, लाखों प्रतियां धर्मतत्व के जिज्ञासु पाठकों के हाथो मे पहुंची, स्वदेश-विदेश की बीसियो भाषाओं मे उसके अनुवाद हुए तथा टीका-टिप्पणी, भाष्य, व्याख्यादि के अनेक ग्रन्थ छपे। सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां ससार के प्रमुख देशों के पुस्तकालयो में में सर्वत्र विद्यमान हैं। इस प्रकार यह एक सर्वप्रकट तथ्य है कि ऋषि दयानन्द के अमर ग्रंथ की धार्मिक जगत् में कितना प्रचलन और सम्मान हुआ है।

वस्तुत. किसी ग्रन्थ के तात्पर्य और हार्द हृदयंगम करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठक लेखक के ग्रन्थ लेखन में निहित अभिप्राय को समझने का पूर्ण यत्न करे। ग्रंथकार के मन्तव्य को जाने विना किसी ग्रन्थ का अध्ययन करना कभी-कभी बुद्धिभेद पैदा करनेवाला सिद्ध होता है। इसी भाव को हृदयगम कर ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में अपने ग्रन्थलेखन के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए लिखा था—'जो कोई ग्रन्थकर्त्ता के तात्पर्य से विरुद्ध मनसा से देखेगा, उसको कुछभी अभिप्राय विदित न होगा, क्योकि वाक्यार्थ बोध मे चार चरण होते है, आकाक्षा, योग्यता आसक्ति और तात्पर्य '' । बहुत से हठी, दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं।' लेखक को इस बात का विश्वास था कि यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान लोग यथा योग्यता इसका अभिप्राय समझेंगे।' ग्रन्थ लेखक ने पुस्तक के नामकरण का सकेत करते हुए लिखा—'सत्यार्थ का प्रकाश करना मेरा व सब महाशयों का मुख्य काम है।

धर्म का वास्तविक स्वरूप

इस प्रकार हम देखते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में लेखक का मुख्य अभिप्राय धर्म के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके विभिन्न अंगों की व्याख्या करना तथा धर्म के नाम पर प्रचलित विभिन्न मतो, पन्थों तथा सम्प्रदायों की पारस्परिक फूट, कलह, तथा विद्वेष को फैलाने वाले तत्वों से पाठकों को सावधान करना रहा है। लेखक ने ग्रन्थ को दो भागों में विभक्त किया है—

१. पूर्वार्द्ध—जिसमें धर्म के विधेयात्मक रूप की व्याख्या दस अध्यायों (समुल्लास) में की गई है। २. उत्तरार्द्ध इसमें मानव के सार्वभौम धर्म के विरुद्ध नाना मत सम्प्रदायों के संकीर्ण और मनुष्यता के लिए हानिकर सिद्धांतों का प्रमाण पुरस्सर खण्डन किया गया है। जब हम धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानना चाहते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि शास्त्रकारों ने उसे अभ्युदय और निःश्रेयस का कारण माना है। (यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः (वैशेषिक दर्शन) वास्तविक धर्म मनुष्य को पारलौकिक उन्नति प्रदान करने वाला और आत्मिक शान्ति प्रदान कराने वाला ही नहीं होता, उससे लौकिक उन्नति स्वयं प्राप्त भी होती है आर्य चिन्तन में धर्म के इसी व्यापक स्वरूप की नानाविध व्याख्याएं प्रस्तुत की है। धर्म की इन्ही नाना व्याख्याओं का समाहार करते हुए ऋषि दयानन्द ने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' मे लिखा 'जो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है, उसको धर्म और जो पक्षपात सहित, अन्यायाचरण, मिथ्याभाषणादि ईश्वराज्ञा भग वेदविरुद्ध है, उसको अधर्म मानता है।' कहना नही होगा कि सत्यार्थप्रकाश इसी व्यापक धर्म की एक लोकोपयोगी टीका एव व्याख्या है।

लेखक :
डा० भवानीलाल आर्य
अध्यक्ष दयानन्दपीठ, पजाब
विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

ग्रन्थ का मुख्य प्रयोजन

जब हम सत्यार्थप्रकाश की उपादान सामग्री का विशद विश्लेषणात्मक विवेचन करते हैं, तो हमे ज्ञात होता है कि प्रथम दस समुल्लासो में लेखक ने भौतिक और आध्यात्मिक धर्म की विविध मान्यताओ की व्याख्या और स्पष्टीकरण किया है। प्रथम समुल्लास मे ईश्वर के स्वरूप और उनके विभिन्न शास्त्रोक्त नामो की व्याख्या करते हुए लेखक ने ओंकार को परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम सिद्ध किया है। अध्ययन की दृष्टि से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम षष्ट तथा दशम समुल्लासों को एक साथ लेना चाहिए। इन छह समुल्लासों में लेखक ने मानव के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत की है। 'भूतानां प्राणिनो श्रेष्ठ:' इस उक्ति से सिद्ध होता है कि मानव की श्रेष्ठता को सर्वत्र स्वीकार किया गया है। महाभारतकार के शब्दों में नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित, मनुष्य से श्रेष्ठ इस विश्व ब्रह्माण्ड में कुछ भी [illegible]। [illegible] 'सर्वप्रकृति' [illegible] ईश्वरदत्त जीवन को किस प्रकार सफल बना सकता है यह बताना ही 'सत्यार्थप्रकाश' का मुख्य प्रयोजन है। मानव के सार्वत्रिक विकास का सोपान क्रम 'अथ शिक्षां प्रवक्ष्याम: इस उक्ति के साथ द्वितीय समुल्लास से आरम्भ होता है।

आलोच्य अध्याय में ऋषि दयानंद लिखते हैं कि माता, पिता और आचार्य ही बालकों के प्रमुख शिक्षक होते हैं। यह उनका गुरुतर दायित्व है कि उनके संरक्षण मे पलता और बढता हुआ बालक सुसंस्कार युक्त बने तथा अपने शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक गुणों का सर्वतोमुखी विकास करे। अत: बालक के आचार-विचार, भोजन वस्त्र, शयन तथा शिक्षण की सुचारु रूप से व्यवस्था करना माता-पिता-आचार्य आदि गुरुजनों का परम पुनीत कर्त्तव्य है। लेखक ने इस बात पर विशेष रूप से जोर दिया है कि नाना अन्ध विश्वासो और मूढ़ धारणाओ के बालक के सुकोमल मस्तिष्क को आतंकित और प्रभावित न होने दिया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि भूतप्रेत, डाकिनी-शाकिनी आदि के मिथ्या भय और आतक से बालक सर्वथा मुक्त रखे जाएं। इसी प्रसंग में लेखक ने फलित ज्योतिष तथा जन्म-पत्र आदि के विश्वासों को लेकर उत्पन्न होने वाली भ्रान्तियों का भी उल्लेख किया है, जिनके कारण मनुष्य पुरुषार्थहीन होकर भाग्यवादी बन जाता है।

वस्तुत: द्वितीय समुल्लास की शिक्षाएं बालक को शिष्ट, सभ्य, सभाचतुर बनने की प्रेरणा देती हैं। लेखक ने यहां स्पष्ट कर दिया है कि गुरुजनों के सुचरित ही बालकों के लिए अनुकरणीय हैं उनके दुर्व्यसनों और दुश्चरितों का कथमपि अनुकरण नहीं किया जाना चाहिए—'यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।' (तैत्तिरीयोपनिषद्) इस प्रसंग मे लेखक ने रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, विदुर नीति, पच-तन्त्र, कामन्दकीय नीति, चाणक्य नीति में उल्लिखित बालोपयोगी सूक्तियों और नीतिवाक्यों को पढ़ने और तदनुकूल आचरण करने की संस्तुति की है।

आदर्श शिक्षानीति

बालकों का लालन-पालन और उनका उचित संरक्षण ही उनमें निहित विभिन्न शक्तियों के समुचित उद्रेक तथा विकास का कारण बनता है। यह कार्य शिक्षा के व्यापक कार्यक्रम द्वारा सम्पादित किया जा सकता है। इसी आदर्श शिक्षा नीति की व्याख्या 'अथाध्ययनाध्यापन विधिं व्याख्यास्याम:' शीर्षक से तृतीय

समुल्लास के अन्तर्गत की गई है। सत्यार्थप्रकाश के लेखक महान शिक्षाशास्त्री थे अतः उन्होंने शिक्षा से सम्बन्धित सभी मौलिक समस्याओं के सम्बन्ध में अपना सूक्ष्म किन्तु स्पष्ट चिंतन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार विद्या तथा शिक्षा को धारण करके ही मनुष्य अपने समाज में प्रशस्त तथा आदरणीय बनता है। स्वयं स्वयं रत्नों से निर्मित आभूषणों से मनुष्य की आत्मा उस प्रकार सुशोभित नहीं होती जैसी विद्या रूपी रत्न को धारण करने से होती है। अतः अपने ग्रन्थ के इस अध्याय में लेखक ने सम्पन्न और दरिद्र के भेद को भुलाकर सभी बालक और बालिकाओं की सर्वतोमुखी शिक्षा की व्यवस्था करने का दायित्व शासन के सुपुर्द किया है। यह शिक्षा अनिवार्य, निःशुल्क तथा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए होनी चाहिए। अतः लेखक को लिखना पड़ा—इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वे दण्डनीय हों। प्रसंगान्तर से लेखक ने गायत्री-उपासना अग्निहोत्र, प्राणायाम, ब्रह्मचर्य-धारण, आर्ष पाठविधि, वेदाधिकार विवेचन आदि विषयों का भी सम्यक् विवेचन किया है।

वैवाहिक मर्यादा का पालन

ऋषि दयानन्द का जीवन-दर्शन सर्वतोमुखी तथा सर्वांगीण था, यह इस बात से सिद्ध होता है कि स्वयं सर्व संगपरित्यागी परिव्राजक तथा वित्त लोक, सन्तान आदि की कामनाओं से सर्वथा मुक्त चतुर्थाश्रम होने पर भी उन्होंने समाज के आधार तुल्य गृहस्थाश्रम तथा वैवाहिक मर्यादाओं का परिपूर्ण पालन करने के लिए बल दिया है। विवाह तथा गृहस्थ आश्रम की विधि का व्याख्यान चतुर्थ समुल्लास मे प्रस्तुत किया गया है। हमारे देश का यह दुर्भाग्य ही था कि मध्यकालीन धर्मों और सम्प्रदायों ने इहलोक की उपेक्षा करने वाले वैराग्योन्मुखी चिन्तन को प्रोत्साहन दिया, जिसके परिणामस्वरूप इस देश के नागरिक भौतिक तथा लौकिक उन्नति करने में असमर्थ रहे। इसके विपरीत दयानन्द ने मिथ्या वैराग्य और आडम्बरपूर्ण त्यागवाद का विरोध करते हुए गृहस्थों को धर्मपूर्वक स्वकर्तव्य पालन करने की प्रेरणा दी। उन्होंने मनु के शब्दों में यह स्पष्ट घोषणा की कि जिस प्रकार सारे नदी-नाले सागर में आकर अवस्थित हो जाते हैं, उसी प्रकार अन्य आश्रमवासियों का आधार भी गृहस्थ ही होता है। इस गृहस्थ के महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह करने का सामर्थ्य दुर्बलेन्द्रिय, कायर तथा कार्पण्य मनोवृत्ति वाले व्यक्ति में नहीं होता। स्वस्थ शरीर मन तथा आत्मा वाला व्यक्ति ही गृहस्थ के गुरुतर कर्त्तव्यों को निभाने में समर्थ होता है। अतः इस समुल्लास में प्रसंगानुसार बाल विवाह-खंडन, चातुर्वर्ण्य व्यवस्था तथा गृहस्थों के दैनन्दिन कर्त्तव्य पंच महायज्ञ विधान आदि का उल्लेख हुआ है।

मानव की सर्वतोमुखी उन्नति

आर्य जीवन का आदर्श मानव की सर्वतोमुखी उन्नति तथा प्रगति ही है। कालिदास के शब्दों में रघुवंशी राजाओं की जो जीवनचर्या थी, वही आर्य जीवनादर्श है। शैशव में विद्याभ्यास करना, यौवन काल में गार्हस्थिक कर्त्तव्य-पालन किन्तु जीवन के तृतीय भाग को मुनिवृत्ति मे बिताना तथा योगसाधना के द्वारा शरीर त्याग यही आर्य आदर्श रहा है। शैशवेऽभ्यस्त विद्यानां यौवने विषयेषिणाम्।

वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥ रघुवंश

खाट पर पड़े-पड़े जीवन का अन्त करना जीवन का कोई शोभनीय पटाक्षेप नहीं है। अतः ऋषि दयानन्द ने वानप्रस्थ और संन्यासियों के कर्त्तव्यों का विधान करते हुए पंचम समुल्लास लिखा। तृतीयाश्रम वानप्रस्थ जन समाज सेवा के माध्यम से आत्मविकास का पथ प्रशस्त करते हैं तो चतुर्थाश्रमी संन्यासी अपने सर्वस्व को लोकहित के लिए समर्पित करते हुए स्वयं धर्म में चलकर सब संसार को चलाते हैं, जिससे आप और सब संसार को इस लोक अर्थात् वर्तमान जन्म में परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते कराते हैं।

सत्यार्थप्रकाश अन्य धर्मग्रन्थों से अनेक बातों मे अपनी विशिष्टता रखता हैं। दयानन्द ने राजनीति को भी मनुष्य के लिए आवश्यक बताया है। अतः राज धर्मों की व्याख्या करते हुए उन्होंने प्रजापालक एवं लोकरक्षण को शासक का प्रमुख कर्त्तव्य माना। वेद तथा तदनुकूल शास्त्रो में वर्णित राजव्यवस्था शासन प्रणाली, दण्डनीति, कूटनीति तथा न्याय प्रणाली की विशद व्याख्या कर सत्यार्थ प्रकाशकार ने धर्माचार्यों के द्वारा प्रायः उपेक्षित सब महत्वपूर्ण विषय की ओर अपने पाठको का ध्यान आकृष्ट किया है। दर्शन समुल्लास को भी लौकिक समस्याओं का समाधान करने वाले अध्याय के रूप में परिगणित किया जा सकता हैं।

शेष अगले अंक में

शहीदी अर्धशताब्दी में भाग लें

मैं दिल्ली की तमाम आर्यसमाजों, संस्थाओ व जागरूक नागरिकों, देशभक्त संगठनों से अपील करता हूं कि वे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित 'शहीदी अर्धशताब्दी समारोह' १ मार्च १९८१ रविवार को दोपहर १२ बजे पुरानी सब्जी मण्डी पार्क में मनाए जाने वाले कार्यक्रम मे शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जरूर पहुंचें।

महाशय धर्मपाल
प्रधान
आर्य केन्द्रीय सभा,
दिल्ली राज्य

आर्य प्रतिनिधि उपसभा शाहदरा की ओर से ऋषि बोध उत्सव

८ मार्च को दयानन्द माडल स्कूल बी ब्लाक विवेक बिहार शाहदरा में प्रातः ८ बजे से १२ बजे मनाया जाएगा जिसमें स्वामी विद्यानन्द जी महाराज, स्वामी स्वरूपा नन्द जी महाराज तथा बलराम जी अध्यक्ष लोक सभा के आने की भी सम्भावना है उत्सव के बाद स्कूल की ओर से लंगर का भी प्रबन्ध है।

—मन्त्री उपसभा

फार्म—४

१—प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
२—प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३—मुद्रक का नाम	सरदारी लाल वर्मा
(क्या भारत का नागरिक है)	भारतीय
पता—	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली
४—प्रकाशक का नाम	सरदारी लाल वर्मा
(क्या भारत का नागरिक है)	भारतीय
पता—	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली
५—सम्पादक का नाम	नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
(क्या भारत का नागरिक है)	भारतीय
पता—	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली
६—उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली

मैं सरदारी लाल वर्मा एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक का हस्ताक्षर
सरदारी लाल वर्मा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वे कर्मठ कार्यकर्त्ता, जिनके भगीरथ प्रयत्नों से दिल्ली का आर्यमहासम्मेलन अभूतपूर्व सफलता प्रदान कर सका

महाशय धर्म पाल
वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रा० सभा

श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्
दिल्ली आर्यमहासम्मेलन के यशस्वी अध्यक्ष

श्री सोमनाथ मरवाहा, एडवोकेट
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आ०प्र०सभा

श्री विद्याप्रकाश सेठी
उप प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री राजेन्द्र दुर्गा

श्रीमती प्रेमशीला जी
मंत्रिणी आर्य महिला सभा

श्री विमलचन्द्र विमलेश

आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियों में निरंतर सहयोग देने वाले सहयोगी एवं दानी सज्जन

श्री प्रेमचंद गोयल

श्री ला० इन्द्रनारायण जी

श्री मानीरामजी गुप्ता

श्री प्रहलाद राम जी

श्री जगदीशलाल

सेवक राम किंकर जी

राजकुमार सजय सिंह (अमेठी) सदस्य उ० प्र० विधान सभा आर्य युवक सम्मेलन मे अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

२८ फरवरी जिनकी पुण्य तिथि है—संस्मरण-श्रद्धांजलि

आजीवन आर्यसमाज के प्रति अर्पित

निर्भय सम्पादक : म० कृष्ण

(गतांक से आगे)

महाशय जी का यह प्राय: नियम ही था कि प्रति शनिवार रात को लाहौर से प्रस्थान कर बाहर नगरों-कस्बों की आर्यसमाजों में भाषण देने जाते, अपनी जेब से समूचा व्यय करके उनके। भाषणों को न केवल आर्य, हिन्दू सिख-मुसलमान इत्यादि संकड़ो-हजारो की संख्या मे उत्सुकता से सुनने आते। नि.संदेह महाशय जी लेखनी और वाणी—दोनों के अद्वितीय धनी थे। प्रभु की ओर से उन्हें प्राप्त देह की पुष्टि भी वरदान रूप थी। गौर वर्ण, लम्बा ऊंचा शरीर, अनुपातिक अंग प्रत्यग, शुद्ध धवल ऋतु अनुसार—खादी वेश भूषा के साथ सिर पर खादी की ही घुटी हुई पगड़ी—प्रभावी आकर्षक व्यक्तित्व था।

महाशय जी पत्रकारिता में : 'प्रकाश' का प्रारम्भ

१९०५ मे बी. ए. पास करने के बाद यद्यपि सरकारी नौकरी मिलनी बहुत सहज थी, पर इस युवक ने इस प्रलोभन को लात मार पत्रकारिता के क्षेत्र मे आने का निश्चय किया। उन दिनो यह पेशा न होकर एक ऐसा मिशन था जिसमे कदम-कदम पर काँटे थे। आर्यसमाज पर उन दिनों एक ओर गोरी सरकार की वक्र दृष्टि, दूसरी ओर पौराणिक, मुसलमान, अहमदिया सिख इत्यादि सम्प्रदायो के तीखे आक्रमण—इन सबका अभिमन्यु की तरह अकेला मुकाबला करने और आर्यसमाज के विशुद्ध धार्मिक रूप को प्रामाणिक शब्दों मे उपस्थित करने के लिए महाशय जी ने अपने तीन-चार आर्य युवक मित्रो के साथ मिल १०० रु. से भी कम पूंजी से उर्दू मे साप्ताहिक 'प्रकाश' निकाला। इसके लिए अथ से इति तक सम्पादन, लेखन, प्रकाशन, ग्राहकों के नाम पते, डाक टिकट लगा डाकघर में छोड़ने और फिर लाहौर के बाजारों मे खड़े होकर बेचने—इत्यादि सारा गोरखधंधा यह आर्य मित्र मण्डल ही करता। इसके अतिरिक्त महाशय जी प्रति सप्ताह शनि-रवि को आर्यसमाज के प्रचार के लिए बाहर आते। 'प्रकाश' इन लगनशील आर्ययुवकों की तपस्या के फलस्वरूप शीघ्र ही चमक गया।

१९१९ में पंजाब में फौजी कानून : जलियांवाला बाग

१९१९ में रालेट एक्ट के प्रबल विरोध के हेतु देश का राजनीतिक वातावरण गर्म हो गया और राजनीतिक नेतृत्व गाँधी जी और स्वामी श्रद्धानन्द—उस समय दिल्ली के नेता व बादशाह के हाथों में आ गया। ओडवायर शाही की क्रूरता के फलस्वरूप लाहौर सहित लगभग आधे पंजाब में फौजी कानून लग गया, साथ ही १३ अप्रैल १९१९ बैसाखी पर्व पर अमृतसर के जलियांवाला बाग मे सार्वजनिक सभा मे शान्त निहत्थी भाषण सुनती हजारो की जनता पर जनरल डायर द्वारा बिना किसी पूर्व सूचना के अन्धाधुन्ध मशीनगनो द्वारा गोलाबारी, फलत, हजारों की तत्काल मृत्यु व भयंकर रूप से घायल होना, ३० मार्च १९१९ को गाँधी जी की दिल्ली के पास बम्बई से आते हुए पलवल स्टेशन पर गिरफ्तारी और पुलिस द्वारा वापस बम्बई ले जाना, परिणामस्वरूप दिल्ली में गोली, तीन जनों की मृत्यु, स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा अपनी छाती खोल चाँदनी चौक पर बन्दूक ताने खड़े सिपाहियो को गोली चलाने का आह्वान, इस निर्भयता से पराभूत हो गोरे कमांडर द्वारा आदेश वापस लेना—इस सारे घटनाचक्र से न केवल भारत अपितु समूचे विश्व से एक भयकर हड़कंप आ गया। गोरी सरकार बहुत घबरा गई।

प्रताप दैनिक प्रारम्भ : महाशय जी कालकोठरी में कैद

इस परिवेश मे म. कृष्ण ने ३० मार्च १९१९ को लाहौर से उर्दू दैनिक 'प्रताप' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। पत्र चमक गया नौकरशाही घबरा गई। ११ दिन बाद ही पत्र पर सेसर लगा दिया गया। 'प्रताप' बन्द करना पड़ा। महाशय जी फौजी कानून के, अन्तर्गत पकड़े जाकर लाहौर के किले की काल कोठरी मे नजरबन्द कर दिए गए। लगभग एक साल के बाद रिहा हुए। 'प्रताप' का पुनर्जन्म हुआ। पजाब और उत्तर भारत के अन्य प्रान्तों में खूब धूम मच गई इस पत्र की।

पंजाब में मुस्लिम लीगी शासन : सर सिकन्दर की चिढ़

ब्रिटिश सरकार द्वारा जारी की गई शासन सुधार योजना के अन्तर्गत धारा सभाओं के चुनाव हुए और पंजाब में जमींदारा पार्टी व छद्मनाय के साथ मुस्लिम लीगी शासन सर सिकन्दर हयात के मुख्य मंत्रित्व में चालू हुआ, तब सबसे पूर्व कड़ी नजर 'प्रताप' पर पड़ी। जमानतें जब्त हुईं। महाशय जी की कलम में कोई ढीलापन नहीं आया। वह निर्भयता से लिखते रहे। कुछ साँझे मित्रो द्वारा सर सिकन्दर ने महाशय जी को चाय पर निमन्त्रित किया। महाशय जी ने शीघ उत्तर भिजवाया।

"मुझे सिकन्दर साहब से कोई काम नही है। मैं क्यो उनके पास जाऊं? उन्हें यदि मुझसे कोई काम है, तो वह खुद मेरे पास आ सकते हैं।"

सम्पादक के रूप मे महाशय जीके कई विशिष्ट गुण थे। राजनीतिक घटनाचक्रो और देश-विदेश के ऐतिहासिक तथ्य उनकी अंगुलियो पर थे। वह जो कुछ भी लिखते, वह तर्क संगत और सप्रमाण निर्भयता से लिखते—

इसीलिए सर सिकन्दर और अन्य मुस्लिम नेता महाशय जी से बहुत चिढ़ते और साथ यह भी कहते कि—

"यार! यह कम्बख्त महाशय कलमतोड़ खरा-खरा लिखता है।' सिर कट सकता है झुकेगा नही"—

कृष्ण निर्भय सम्पादक

एक बार सर सिकन्दर ने चिढ़ते हुए असेम्बली में कहा—म. कृष्ण और हिन्दू नेता मुझे आज का औरंगजेब कहते हैं। काश! मैं सचमुच ऐसा होता। अगर मैं औरंगजेब होता तो महाशय जी आज एडीटर न होते, कहीं और ही किसी जगह पर होते।" महाशय जी ने 'प्रताप' मे इस धमकी का जो उत्तर दिया, वह सचमुच एक निर्भय आर्यनेता के पद के अनुकूल ही था। उन्होंने लिखा—

सर सिकन्दर को यह अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि मुझे मेरे गुरु ऋषि दयानन्द से जो शिक्षा मिली है। उसके अनुसार मेरा सिर धड़ से अलग होने को सदा तैयार है, पर झुक कभी नहीं सकता।"

देश की आजादी के बाद 'प्रताप' दैनिक दिल्ली से और वीर प्रताप दैनिक जालन्धर से उनके दोनों सुपुत्र श्री नरेन्द्र और वीरेन्द्र के सम्पादकत्व निकलने लगे। अग्रलेख, प्राय: महाशय जी ही लिखते। महाशय जी की कलम में कोई निर्बलता व चापलूसी नही आई। पजाब की कैरो सरकार की और देश मे नेहरू सरकार की भूलो और गलतियों-विशेषत: मुस्लिम- सिख को खुश करने की छीछालेदर वह निर्भयता से करते रहे। फलस्वरूप आजाद भारत मे भी 'प्रताप' की जितने जमानतें जब्त हुई और जितनी नयी माँगी गई, उतनी भारत में, सम्भवत: किसी से न मांगी गयीं और न ही जब्त हुई। विलायत के एक अंग्रेजी अखबार ने इन्हें एक बार लाहौर का 'फायरी एडीटर' आग उगलने वाला सम्पादक कहा था।

आर्य नेता के रूप में महाशय जी

विभाजन के बाद वह कई वर्ष तक 'आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान रहे। हरियाणा के पृथक प्रान्त बनने के बाद और स्वास्थ्य की गड़बड़ी के कारण महाशय जी ने अपने को आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य आर्य संस्थाओं—जैसे सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा—इत्यादि मे सक्रिय भाग लेने से मुक्त कर लिया।

लेखक :

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

यह भी उल्लेखनीय है कि आर्य नेता के रूप मे महाशय जी हैदराबाद सत्याग्रह मे छठे अधिनायक (डिक्टेटर) के रूप में लाहौर से कृष्ण स्पेशल गाड़ी द्वारा लगभग १ हजार सत्याग्रहियो के साथ गुलबर्गा जेल ६ मास की सजा के साथ गए थे। कैरो सरकार के शासन से, आजादी के बाद वह हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में जेल गये। इस सत्याग्रह मे उनके सुपुत्र श्री वीरेन्द्र भी जेल यात्री बने। गौ रक्षा आन्दोलन में भी महाशय जी को दिल्ली के तिहाड़ जेल जाना पड़ा था।

म० कृष्ण का अन्तिम सन्देश : परलोक यात्रा

शिवरात्रि पर्व पर दिल्ली दरवाजे के बाहर कोटला मैदान में प्रतिवर्ष दिल्ली आर्य केंद्रीय सभा की ओर से ऋषि मेला और ऋषि बोधोत्सव सभा होती है। १९३९ को यह पर्व समारोह म. कृष्ण श्री की अध्यक्षता में २५ फरवरी को हुआ था। उनके जीवन का यह अन्तिम भाषण था। उनके शब्द थे—आर्य सज्जनो और देवियो! आज विश्व एक टक हो आपको देख रहा है—बड़ी आशा के साथ। अपने जीवन को क्रियात्मक बनाओ और ऋषि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार करो। ये शब्द आज भी उत्तर माँगते हैं—आर्य बन्धुओं से।

२८ फरवरी तीन दिन बाद ही लगभग ८५ वर्ष की आयु मे अपने दिल्ली निवास स्थान पर इस अनेक गुणमंडित गौरवास्पद संघर्षशील आर्य नेता का स्वर्गवास हो गया।

वेद के शब्दों में हमारी प्रार्थना है—

"स्वस्ति ते अस्मिन् पथि देवयाने भूयात्" यजु. ५।१३

श्रेष्ठ पुरुषों के इस मार्ग में तुम्हारा कल्याण हो।

ई/३७, शास्त्रीनगर,
जयपुर-६

गुरुकुल कांगड़ी का भावी स्वरूप

जहां वेद-वेदांग के अध्ययन को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए

(गतांक से आगे)

गुरुकुल को उनसे वेतन मिलता है। गुरुकुल को उनसे वेतन का दस प्रतिशत किराये के रूप मे लेना चाहिए। यदि इस दर से गुरुकुल के परिवारगृहो आदि के किराये लिए जाते तो आठ हजार रु. के लगभग किराया वसूल किया जा सकेगा। मरम्मत आदि के खर्च को घटा कर भी इनसे सात हजार के लगभग वह आमदनी गुरुकुल को प्राप्त होगी। गुरुकुल के पास ५०० बीघे के लगभग कृषियोग्य भूमि है। ट्रैक्टर, ट्यूबवेल आदि कृषि के साधन भी गुरुकुल के पास हैं। ५०० बीघे कृषि योग्य भूमि से ४०,००० रुपये वार्षिक या सवा तीन हजार रुपये मासिक के लगभग आमदनी प्राप्त कर सकना सर्वथा सम्भव है। इतनी राशि पर तो कृषि की भूमि को ठेके पर भी दिया जा सकता है। गुरुकुल की जो अन्य सम्पत्ति है, उसे छोड कर केवल परिवार गृहों और कृषि योग्य भूमि से ही गुरुकुल दस हजार रुपयो मे अधिक आमदनी प्राप्त कर सकता है। जो विद्यालय विभाग के स्टाफ को समुचित स्तर पर वेतन देने के लिए पर्याप्त होगी। यदि गुरुकुल विद्यालय मे सुयोग्य व अनुभवी शिक्षक हों, और ब्रह्मचारियों की देखभाल करने के लिए धार्मिक, सदाचारी और सुयोग्य अधिष्ठाता हो, तो गुरुकुल फिर से जनता के आकर्षण का केन्द्र बन सकता है और आर्य लोग वहाँ अपने बच्चो को शिक्षा के लिए भेजने को प्रेरित हो सकते हैं।

(४) गुरुकुल के महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय विभागों की शिक्षा में वेद, दर्शन, संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, हिन्दी साहित्य तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान से सम्बद्ध विषयों के अध्ययन को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए। गढवाल, कुमायूं मेरठ आदि के जैसे विश्वविद्यालय हैं, गुरुकुल विश्वविद्यालय को भी उन्हीं के ढंग पर विकसित करने से कोई लाभ नहीं हो सकता। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल की अपनी विशिष्टता होनी चाहिए, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान (वेद तथा वेदांग) के क्षेत्र मे ही हो सकती है। सम्भवत., विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को विश्वविद्यालय की समकक्षता की जो स्थिति प्रदान की थी, उसका भी यही प्रयोजन था कि उसे वेद-वेदांगों के अध्ययन अध्यापन तथा शोध का केन्द्र बनाया जाए। गुरुकुल के विश्वविद्यालय विभाग में जिन आठ विषयो की शिक्षा की व्यवस्था है, सम्भवतः उचित यह होगा कि उनमे कमी न की जाए। पर भविष्य के लिए हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि वेद वेदांगों के अध्ययन-अध्यापन व शोध का गुरुकुल कांगड़ी न केवल भारत का अपितु विश्व का प्रधान केन्द्र बन जाये। सरकार द्वारा भी इसके लिए सहायता प्राप्त होता रहेगी—यह भरोसे के साथ कहा जा सकता है।

लेखक :

डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार

यह प्राय: अनुमान किया जाता है कि वेदो और दर्शनो के सम्बन्ध मे आर्य-समाज के पास ऐसा साहित्य नही है, जिसे पाश्चात्य विद्वानो द्वारा लिखित ग्रथों की तुलना में प्रस्तुत किया जा सके। मैकडानल्ड और कीथ ने वैदिक माइथोलोजी' नामक जो ग्रंथ लिखा था वही प्राय: सर्वत्र भारत के विश्वविद्यालयों के वेदों के कोर्स में पढाया जाता है और इसे पढाने वाले भी प्रधानतया आर्य-समाजी विद्वान् ही हैं। यही बात वेद विषयक अन्य ग्रन्थों के सम्बन्ध में भी है। गुरुकुल को यह कार्य हाथ में लेना चाहिए कि वेदों के उसी प्रकार के विवेचनात्मक भाष्य तैयार कराए, जैसे कि पाश्चात्य यूनिवर्सिटियो द्वारा प्रकाशित हुए हैं, पर गुरुकुल के वेदविषयक ग्रंथों की रचना महर्षि दयानन्द सरस्वती के मनतव्यों के अनुरूप हो, क्योंकि यास्क की परम्परा के अनुसार वेदों का वास्तविक अभिप्राय इसी प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है। यह कार्य न केवल महत्त्व का है, अपितु वस्तुत गुरुकुल का यही वास्तविक कार्य है। यदि इस दिशा में गुरुकुल के भावी स्वरूप का निर्माण किया जाए, तो उसकी उपयोगिता केवल आर्य जगत् में ही नहीं, अपितु व्यापक क्षेत्र में स्वीकार की जायेगी—यह सुनिश्चित है।

ए I/३२ सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-११००२९

बोध-कथा

संकट की घड़ी और साहस !

बाल गंगाधर अपने साथियो के साथ छात्रावास की छत पर बैठे हुए गपशप कर रहे थे। एकाएक सब साथियों के सामने यह समस्या आई कि यदि अचानक नीचे किसी घर सकट आ जाए तो उसकी रक्षा के लिए नीचे जल्दी से जल्दी जाने के लिए कौन कैसे जाएगा ?

पहला लड़का बोला—"मैं सीढ़ियो से दौड़ता हुआ निकल जाऊँगा।'

दूसरे ने कहा —'मैं रस्सी लगा कर नीचे उतर जाऊँगा।'

सब अपनी-अपनी कठिनाई का वर्णन कर नीचे पहुंचने का रास्ता बतला रहे थे कि एक ने पूछा—'तिलक, तुम संकट की घड़ी में क्या करोगे ?

बाल गंगाधर ने अपनी धोती कसी और बड़ी सावधानता और कुशलता से 'मैं ऐसा करूँगा' कह कर नीचे छलांग लगा दी।

सब साथी चिल्ला पड़े—'अरे यह क्या ?' सब यह देखने के लिए नीचे दौड़े कि कहीं बाल गंगाधर को चोट तो नहीं लगी। जब सब जीने में पहुंचे तब उन्हें यह देख कर आनन्द हुआ कि बाल स्वत ऊपर आ रहा था।

यही बालक आगे चल कर अपने साहसी गुणो के कारण भारतीय असन्तोष का जनक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के रूप मे प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने अपने देशवासियो को 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं' का मूलमन्त्र दिया था।

—नरेन्द्र

राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए

ब्रह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं विशश्च त्विषिश्च
यशश्च वर्चश्च द्रविणं च॥
अथर्ववेद कां १२ मं० ८

(ब्रह्म च) सबसे उत्तम विद्या और श्रेष्ठ कर्म करनेवालो को ही ब्राह्मण वर्ण का अधिकार देना चाहिये। उन्हें विद्या का प्रचार करना चाहिये और उन लोगों को भी चाहिए विद्या के प्रचार के में ही सदा तत्पर रहें। (क्षत्रं च) अर्थात् सब कामों में चतुरता, वीरता, धीरज, वीर पुरुषों से युक्त सगठन बनाकर दुष्टों को दण्ड देना और श्रेष्ठों का पालन करना इत्यादि गुणो को बढ़ाने वाले पुरुषों को ही क्षत्रिय वर्ण का अधिकार देना चाहिए। (राष्ट्रं च) श्रेष्ठ पुरुषों की सभा के अच्छे नियमों से राज्य को सब सुखों से युक्त करना चाहिए, और विशश्च) वैश्य आदि वर्णों को व्यापार आदि व्यवहारों द्वारा भूमण्डल के बीच मे जाने-आने वाले का प्रबध करना चाहिए, जिससे ससार में धनादि पदार्थों और व्यवहार आदि अच्छी रीति से रक्षा करनी चाहिए (त्विषिश्च) सब कार्यों मे सब रात-दिन सत्य गुणों ही का प्रकाश करना चाहिए। (यशश्च) उत्तम कामो से भूमण्ड में श्रेष्ठ कीर्ति बढानी चाहिए। (वर्चश्च) सत्य विद्याओ के प्रचार के लिए अनेक विद्यालयों के माध्यम से पुत्रो और कन्याओं को अच्छी रीति से पढने-पढाने का प्रचार सदा बढाना चाहिए। (द्रविणंच) सब मनुष्यो को उचित है कि पूर्वोक्त धर्म से अप्राप्त पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा से सदा पुरुषार्थ करें और प्राप्त पदार्थों की रक्षा नियमपूर्वक करें। रक्षा किए गए पदार्थों की सदा बढ़ती करनी चाहिए और सत्य विद्या के प्रचार आदि कामो में बढ़े हुए धन आदि पदार्थो का खर्च नियमपूर्वक करें।

पुष्करलाल आर्य राष्ट्रसेवक
वैद्य नेपाल वानप्रस्थी, कलकत्ता-७

भूल-सुधार

१ फरवरी, १९८१ के 'आर्य सन्देश' में स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती के आहुति के लिए स्वाहाकार का प्रयोग शीर्षक प्रकाशित लेख के दूसरे कालम में १४वीं/१५वीं पंक्ति में 'विश्ववेद परिषद के विद्वानो का निर्णय कल्पशास्त्र सम्मत है—' इसके स्थान पर विश्व-वेद परिषद् के विद्वानो का कथित निर्णय शास्त्र सम्मत नहीं है, छपना चाहिए था।

(पृष्ठ ... का शेष)

की इनके नितान्त ज्वलन्त तथा अनहोने व्यक्तित्व की शोहरत दिग-दिगन्त में फैल गई थी। यहां तक कि अमेरिका जैसे सुदूर देश में उस युग के महान् प्रबुद्ध जन अर्थात् थियोसोफिकल सोसायटी के प्रवर्तक कर्नल हेनरी एस. अलकोट एवं मदाम ब्लावात्स्की हेलेना पेत्रोवना (१८३१-१८९१ ई.) स्वामी जी से उपदेश ग्रहण करने भारत आये थे। उन्होने स्वामी जी को वहां से जो पत्र अंग्रेजी में लिखा था उसका कुछ अंश हिन्दी अनुवाद में इस प्रकार है ;—

'पूजनीय गुरो !

अमेरिका तथा अन्य देशों के कतिपय शिक्षार्थी जो अध्यात्म विद्या के हृदय से जिज्ञासु हैं, अपने आपको आपके चरणों में नत करके प्रार्थी हैं कि आप उनके हृदयों को प्रकाशित करें। ...हम आपके चरणों में उसी भाव से आते हैं जिस भाव से कि पुत्र पिता के चरणों में जाते हैं। और हम चाहते हैं कि [illegible] हमारी ओर देखिये और हमको बतलाइये कि हमें क्या करना चाहिये।

—हेनरी अलकोट

(७१ ब्रोडवे, न्यूयार्क, १८ फरवरी १८७८ ई०)

यह भी सर्व विदित है कि वे लोग १७ दिसम्बर, १८७८ को अमेरिका से चलकर लंदन में कुछ दिन ठहरते हुए १६ फरवरी, १८७९ को भारत में आ गये थे तथा सहारनपुर में ठहरे थे। स्वामी दयानन्द के उपदेश उन लोगों ने सहारनपुर में और बाद में मेरठ में कई मास में कई दिनो तक ग्रहण किये थे। उल्लेखनीय है कि अमेरिका से रवाना होने के पूर्व ही अपनी थियोसोफिकल सोसायटी को आर्यसमाज में विलीन करके उसका नाम 'थियोसोफिकल सोसायटी आफ आर्यसमाज आफ इण्डिया' रखने और स्वामी दयानन्द को आचार्य रूप मे ग्रहण करने का प्रस्ताव वे सर्व सम्मति से स्वीकार करा चुके थे।

सैयद अहमद खां और हजरत मुहम्मद कासिम साहब का उल्लेख हम पहले ही कर आये हैं। अनेक क्रिश्चियन पादरी भी जिनमें पादरी ग्रे और पादरी इंग्लैण्ड का नाम अग्रणी है स्वामी के समक्ष धर्मचर्चा के लिए आए थे। किन्तु बहुत दिनों तक वे स्वामी जी के साथ नहीं रह सके। कुछ लोग तो उनके कट्टर विरोधी और दुखदायक भी बन गये। लाहौर के ब्रह्मसमाजियों ने उनके साथ जिस निम्न कोटि का व्यवहार किया था, अप्रिय होते हुए भी यहां उसका उल्लेख प्रसंग की आवश्यकता के कारण अनिवार्य हो गया है। "स्वामी दयानंद के लाहौर निवास में प्रथम दो सप्ताह का व्यय २५ रुपये ब्रह्मसमाज ने दिया था, क्योंकि लाहौर के लाला जीवनदास, पण्डित मनफूल, नवीनचन्द्र राय, और पण्डित अमरनाथ ने ही जो सभी ब्रह्मसमाजी थे, स्वामी जी को लाहौर पधारने का का निमन्त्रण दिया था, किन्तु जब स्वामी जी के साथ लाहौर के ब्राह्मों का मतभेद हो गया तब उन लोगों ने स्वामी जी के भोजन-पानी का व्यय बन्द कर दिया। यहां तक कि जो लोग २५ रु. दे चुके थे उसे भी वापस मांगने और वसूल कर लेने में भी उन लोगों को कोई सकोच नही रहा।' यह विवरण लाहौर के अंग्रेजी मासिक पत्र 'दि रिजेनेरेटर आफ आर्यावर्त' के १८८३ ई० के जनवरी मास के अंक के पृष्ठ ३ पर प्रकाशित हुआ था और इसका कोई खंडन नहीं हुआ। अतः इसे सच माना जा सकता है।

आखिर ऐसा क्यों ?

काशी के सनातनी पंडितों के साथ वहां सन् १८६९ ई० के नवम्बर महीने की १७वीं तारीख को जो शास्त्रार्थ हुआ था और जिसके विषय में स्वामीजी के पराजित होने का झूठा निर्णय उछाला गया था। उस सम्बन्ध में एक तटस्थ व्यक्ति ने अपनी राय अंग्रेजी पत्र 'दि हिन्दू पेट्रियट' के १८७० ई० के १७ जनवरी के अंक में प्रकाशित की थी। जिसके एक अंश का हिन्दी रूपान्तर निम्न प्रकार से है—

"...सभा में दयानन्द के साथ पंडितों का बहुत देर तक वाग्युद्ध रहा। शास्त्रसम्बन्ध में पडितो की तीक्ष्ण दृष्टि होने पर भी वे लोग निस्सशय ही दयानन्द से पराजित हो गये थे, अर्थात् उन्हें न्यायानुसार विचार मे पराजित करना, असभव समझ कर पडितो ने अन्यायुक्त विचार का आश्रय ग्रहण कर लिया था।"...और यह कह कर कि 'दयानन्द पराजित हो गये' उठ खड़े हुए थे। तथापि वे निरुत्साहित नही हैं प्रत्युत अधिकतर उत्साह से वहां के पडितो को शास्त्र सग्राम के लिए आह्वान करते हैं। ...किन्तु वाराणसी का कोई पंडित उनके आह्वान का उत्तर देन के लिए उद्यत नहीं हो सका। ---वह अकेले होने पर भी विपक्षी दल के भीतर महावीर के समान अचल रहे हैं। कारण यही है कि दयानन्द ने सत्यरूपी दुर्भेद्य वर्म (बख्तर) से अपने को आवृत्त किया है। उनकी विजय पताका भी वायु से मंद-मंद आन्दोलित होती है।

'हम एक दिन उनसे मिलने के लिए दुर्गाबाड़ी के निकटस्थ आनन्दबाग मे गये थे। हमने जाकर देखा कि दयानन्द की मूर्ति ऋषि के समान है। उनका मुख सर्वदा ही प्रफुल्लित और प्रकृति अत्यन्त सरल है। हमें उनसे बात करते समय बोध होता था कि उनके मुख से अमृत बरस रहा है। वह सांसारिक सुख का सब प्रकार से परिहार करके कठोर भाव से कालातिपात करते हैं और हिन्दूधर्म के परिष्कार से स्वदेश का यथार्थ कल्याण साधन करने मे आकांक्षित रहते हैं।"

सरलस्वभाव के महापुरुष

इस तरह के अनेक उदाहरण हैं जिनसे यह तथ्य निर्विवाद रूपसे प्रमाणित हो जाता है कि महर्षि बहुत ही सरल स्वभाव के महापुरुष थे। अन्यायपूर्ण विधि से विरोध करने वालों के प्रति भी उनके मन में कोई कटुता नही आ पाती थी। उनके साथ निबहना भी बहुत ही आसान और सुखद था। फिर क्या कारण था कि बड़े-बड़े सुधीजन भी उनके साथ दूर तक चल नही पाए थे। यह भी निर्विवाद है कि इस समस्त छूट-छट की घटनावली मे ऐसा एक भी उदाहरण नही मिलता जहां स्वामी जी ने स्वयं किसी को छोड़ा हो। सच तो यही है कि उनके साथ चलने में सर्वथा असमर्थ जान स्वयं ही उनको छोड़कर कट गये थे। स्वामी जी सत्य निष्ठा की वह कराल कठोर धारा थे, जिसमे स्वार्थ रहित हल्के बोझ वाली नाव ही चल सकती थी। जो लोग आडम्बरो की ढेर भर घासो की गठरी पीठ पर लिये चलना चाहते थे वे सभी उस कराल धारा मे छितरा कर घाट पर आ अटकते थे।

भारतीय हिन्दू धर्म सत्य की धारा से अनेक सदियों से इकट्ठी हुई घास की गाँठें लादकर धर्म की पवित्र धारा से अलग-थलग हो—तट के कीचड़ में रेंगती हुई जर्जर नौका हो विनाश की ओर अग्रसर था। इस विषम परिस्थिति में दयानन्द केवल हिन्दू धर्मावलम्बियों के ही नहीं, अपितु इसी तरह की झंझट मे फंसे अन्य धर्मावलम्बियो के भी उद्धारकर्ता बन कर सबके लिए वेदों की दृढ़ नाव लेकर आये थे। उनके गुरु ने किसी भी मनुष्यकृत ग्रन्थ को प्रमाण न मानने और किसी नए ग्रंथ की रचना कदापि न करने का कठोर उपदेश दिया था। यही कारण था कि महर्षि ने वेदो के अतिरिक्त अन्य किसी ग्रथ को प्रमाण नहीं माना। डाक्टर मैक्समूलर ने तो यहां तक कहा है कि : स्वामी दयानन्द बड़े उदार चरित्र मनुष्य प्रतीत होते हैं। वह ब्राह्मण ग्रंथों मे अपौरुषेय तत्त्व में विश्वास छोड़ देने पर भी उदात्त थे।', और सर सैयद अहमद खां ने स्वामी जी में सच्चे तपस्वी के गुणों की झलक पाई थी। सैयद साहेब ने ठीक ही लिखा है कि "वह केवल ज्योतिमय निराकार परमेश्वर की उपासना की शिक्षा देते थे, उससे भिन्न और किसी की नहीं।' वेद विरोधी मतों को इन्कार करने में स्वामी जी ने वेदविरोधी जैन और बौद्धमतों के समान ही रामानुज, माधवाचार्य, वल्लभाचार्य के मतों को भी अवैदिक धार्मिक विप्लव कह कर अग्राह्य माना उन्होंने पंजाब के गुरुनानक के सिक्खमत और उनके अनुयायी कबीर, सहजोबाई, आदि के ग्रन्थों को तथा नवद्वीप के निमाई संन्यासी आदि के सम्प्रदायों को भी अवैदिक विप्लववाद का नाम देकर त्याज्य निरूपित किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ इनेगिने प्रबुद्ध हिन्दुओं को छोड़कर सारा हिन्दू समाज उनको अपना शत्रु मान बैठा। सन् १८५८ के बाद ब्रिटिश हुकूमत ने नाना प्रकार के प्रलोभनों से उन्हें अपना प्रचारक बनाने का प्रयास किया था, किन्तु उनके क्रांतिकारी रूप से परिचित हो गुप्त रूप से उन्हें परम शत्रु मान उनको विनष्ट करने का षडयंत्र बराबर रचते रहे थे। भारत के राजे-रजवाड़े यदि केवल मूर्तिपूजा का विरोधी स्वर मद कर देने पर राजी हो सकते तो उन्हें हाथोंहाथ लिए रहने को बराबर तैयार थे, किन्तु स्वामी जी इस तरह के सभी प्रस्ताव ठुकराते रहे थे। वह सत्य के सामने किसी से भी किसी भी कीमत पर समझौता करने को राजी नहीं हो सकते थे। 'सत्यार्थप्रकाश' में यहूदी, ईसाई, इस्लाम तथा बौद्ध, जैन आदि धर्मों की समीक्षा करते समय उन्होंने इन धर्मों के मिथ्याडम्बरों की बड़ी पैनी आलोचना की। यद्यपि बार-बार वह कहते रहे कि "जो जो हमने इन मतों के विषय में लिखा है वह केवल सत्यासत्य के निर्णयार्थ है न कि विरोध वा हानि करने के अर्थ तथा यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिए सब मतो का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे, इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खंडन कर गुणों का ग्रहण करें न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ मूठ बुराई व भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो-जो भलाई है वही भलाई और जो बुराई है वही बुराई सबको विदित होवे। "यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद-विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक रह कर परस्पर को लाभ पहुंचाना हमारा मुख्य कर्म है।" तथापि इस ग्रंथ के प्रकाशन के बाद स्वामी जी के प्रति विरोधियों के मन की अग्नि तीव्र से तीव्रतर हो गई। इस कोटि के सत्य के महान् आग्रही की जो नियति अतीत में होती आई है वही नियति महर्षि दयानंद की भी हुई। सत्य की वेदी पर उन्हें शहीद हो जाना पड़ा।

(क्रमशः)

'लक्ष्मी निवास, सिविल लाइन्स,
सुल्तानपुर (उ० प्र०) २२८००१

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रचार किया। वेदों का भाष्य करके वेदों के यथार्थ वास्तविक अर्थ प्रकट किए। उसी से प्रभावित होकर आज अनेक विद्वान् वेदों का भाष्य करने लगे। जो सनातनी सायण एवं महीधर के अर्थों तक ही बंधे थे, उन्होंने स्वतन्त्र रूप से भाष्य करने प्रारम्भ कर दिए। वे सनातनी महर्षि के भाष्य को सुखबंधन करते हुए भी प्रत्यक्ष रूप से अपना पौराणिक स्वरूप बनाये रखने के लिए, राम, कृष्ण, हनुमान, आदि का प्रतिपादन वेद से करते हैं और उन्हीं मन्त्रों का दूसरा वास्तविक अर्थ भी कर देते हैं। यह सब प्रभाव महर्षि दयानन्द की क्रान्ति का ही है। सम्प्रदाय रूपी बादलों से वेदरूपी सूर्य की ज्योति को छिपाने का प्रयास सदा के लिए नहीं हो सकता, फलतः वेदों का प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ेगा ही।

महर्षि दयानन्द के द्वारा उत्पन्न क्रान्ति एक शताब्दी में इतनी व्याप्त हुई है तथा भविष्य में उत्तरोत्तर विकास को प्राप्त होगी। आर्यसमाज अपनी शक्ति वेद के प्रचार में विशेष लगाकर वेद का विश्व में नेतृत्व करे तो विश्व का कल्याण होगा।

लेखराम बलिदान वर्ष मनाइए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने दिल्ली की आर्यसमाजों और आर्यजनों को ध्यान दिलाया है कि आगामी सोमवार ६ मार्च १९८१ के दिन श्री लेखराम वीर तृतीया है। ८४ वर्ष पूर्व उस दिन एक यवन हमलावर ने पं. लेखराम की हत्या कर दी थी।

मंत्री जी ने आर्यजनों एवं आर्यसमाजों से अनुरोध किया है कि उस दिन समाज मंदिरों में विशेष सभाएं की जाएं अथवा रविवार ८ मार्च के साप्ताहिक सत्संग में विशेष भाषणों की व्यवस्था कर हुतात्मा वीर शहीद पं. लेखराम जी के अमर जीवन से प्रेरणा ग्रहण करें।

अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष के उपलक्ष्य में

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित

श्रीमती चन्ननदेवी आर्य नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय

सुभाष नगर, नई दिल्ली-२७

में २८ फरवरी से ३१ मार्च १९८१ तक

सभी प्रकार की सुविधाओं से परिपूर्ण

निश्शुल्क नेत्र आपरेशन शिविर

की व्यवस्था की गई है

इसका उद्घाटन सोमवार २ मार्च को

प्रातः ९॥ बजे दिल्ली के लोकप्रिय

उप राज्यपाल श्री जगमोहन जी करेंगे

स्वागत-समारोह की अध्यक्षता श्री धर्मदास शास्त्री एम. पी. करेंगे

भारत के प्रसिद्ध आर्यनेता लाला रामगोपाल शाल वाले मुख्य अतिथि होंगे

निवेदक

सरदारी लाल वर्मा	विद्यासागर विद्यालंकार	महाशय धर्मपाल	ओमप्रकाश आर्य
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा	

आर्यसमाजों के सत्संग

१-३-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं० रामदेव शास्त्री; अमर कालोनी—पं० प्राणनाथ सिद्धांतालकार; अशोक विहार के-सी-५२-ए—पं० रामरूप शर्मा; आर्यपुरा—प्रो० सत्य पाल बेदार; आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; किग्जवे कैम्प—श्री मोहनलाल गांधी; कृष्ण नगर—प० प्रकाश चन्द वेदालंकार; कालका जी—पं० मुनिशंकर वानप्रस्थी; कालका जी डी. डी. ए. फ्लैट्स एल-१/१४३-ए—पं० हीरालाल शास्त्री; करौल बाग—आचार्य कृष्ण गोपाल; गांधी नगर - पं० खुशीराम शर्मा; गीता कालोनी—पं० तुलसी राम भजनोपदेशक; १५१-गुप्ता कालोनी—वैद्य रामकिशोर; गोविन्द पुरी—पं० हरिदत्त शास्त्री; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—पं० वेदपाल शास्त्री; जंगपुरा भोगल—श्रीमती लीला वती आर्या; जनक पुरी सी-B—पं० दिवाकर शर्मा; जनक पुरी बी ब्लाक—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी; टैगोर गार्डन—पं० ओम वीर शास्त्री; तिलक नगर—पं० छज्जूराम शास्त्री; नारायण विहार—डा० रघुवीर सिंह; पंजाबी बाग—प्रो० वीर पाल विद्यालकार; पंजाबी बाग एक्स्टेंशन १४/३—प० प्रकाश वीर 'व्याकुल'; पश्चिम पुरी जनता क्वार्टरज—पं० शीशराम भजनोपदेशक; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—डा० सुखदयाल भूटानी; बिरला लाइन्स—पं०गणेश प्रसाद विद्यालंकार; माडल टाउन—प० देवेश; माडल बस्ती—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; महरौली—प०केशव चन्द्र मुन्जाल; रमेश नगर—पं० वीरव्रत शास्त्री; राणा प्रताप बाग—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; लड्डू घाटी—जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; लाजपत नगर—आचार्य हरिदेव सि० भू०; विक्रम नगर—पं० मनोहर विरक्त; विनय नगर—पं० ईश्वर दत्त एम,ए; सराय रोहेला—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; श्री निवास पुरी—पं सत्य भूषण वेदालकार; हनुमान रोड—प० हरि शरण; हौज खास—पं० परमेश्वर दत्त शर्मा आर्य; मोती बाग—आचार्य राम शरण मिश्र शास्त्री।

(पृष्ठ १ का शेष)

ब्राह्मणाः सम्मर्शिनो युक्ता आयुक्ता अलूक्षा धर्मकामा स्युर्यथा ते तत्र वर्तेरन् । तथा तत्र वर्तेथाः । एष आदेश एष उपदेश एषा वेदोपनिषत् । एतदनुशासनम् । एवमुपासितव्यम् । एवमु चैतदुपास्यम् ॥ तैत्तिरीय उपनिषत् ७. ११. १-४

तू सदा सत्य बोल। धर्माचरण कर। प्रमादरहित होकर पढ़-पढ़ा। प्रमाद से भी कभी सत्य मत छोड़। प्रमाद से धर्म का त्याग मत कर, प्रमाद से आरोग्य और चतुराई मत छोड़। प्रमाद से उत्तम ऐश्वर्य की वृद्धि को मत छोड़। प्रमाद से पढ़ने-पढ़ाने को कभी मत छोड़। देव-विद्वान माता-पिता की सेवा में प्रमाद मत कर। जैसे विद्वान् का सत्कार करे उसी प्रकार माता-पिता-आचार्य और अतिथि की सेवा किया कर। जो अनिन्दित धर्मयुक्त कर्म हैं, उन सत्य भाषणादि को किया कर, उनसे भिन्न मिथ्या भाषणादि कभी मत कर। जो हमारे सुचरित्र अर्थात् धर्मयुक्त कर्म हों उनका ग्रहण कर और जो हमारे पापाचरण हों, उनको कभी मत कर।

जो हमारे मध्य में उत्तम विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मण हैं, उन्हीं के समीप बैठ और उन्हीं का विश्वास किया कर। श्रद्धा से देना। अश्रद्धा से देना। शोभा से देना। लज्जा से देना। भय से देना और प्रतिज्ञा से भी देना।

जब कभी तुझ को कर्म वा शील तथा उपासना-ज्ञान में किसी प्रकार का संशय उत्पन्न हो तो जो वे विचारशील पक्षपातरहित योगी, अयोगी, आर्द्रचित्त धर्म की कामना करने वाला धर्मात्मा जन हों, जैसे वे धर्ममार्ग में बर्तें, वैसे तू भी उसमें व्यवहार किया कर। यही आदेश, आज्ञा, यही उपदेश, यही वेद की उपनिषत् और यही शिक्षा है। इसी प्रकार व्यवहार करना और अपना चाल-चलन सुधारना चाहिए।

महर्षि दयानंद सरस्वती कृत अनुवाद
'सत्यार्थप्रकाश' तृतीय समुल्लास

शोक-प्रस्ताव

आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली की साधारण सभा ने १ फरवरी के अधिवेशन में श्रीमती कमला देवी, धर्मपत्नी के. नरेन्द्र सम्पादक दैनिक प्रताप के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रैस ७२६/१-सी, गुरुनानक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ : अंक २२ रविवार २९ मार्च १९८१ दयानन्दाब्द १६

खालसा दीवान द्वारा पृथक् सिख राज्य की मांग

सुरक्षा परिषद में सहायक सदस्यता मिले : चण्डीगढ़ में खालसा दीवान की राष्ट्रविरोधी गतिविधि

चण्डीगढ़ । प्रेक्षकों को यह जानकर फिर चिन्ता हो गई है कि भारत के पश्चिमोत्तर सीमावर्ती संवेदनशील क्षेत्र में पुनः साम्प्रदायिक ताकतें सिर उठाने लगी हैं। चीफ खालसा दीवान द्वारा आयोजित ५४वें अ० भा० शिक्षा सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकार कर मांग की गई है कि सिखों को पृथक् राष्ट्र के रूप मे मान्यता दी जाए और उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ में सहायक सदस्य के रूप में बैठने की अनुमति दी जाए । इस अवसर पर खालिस्तान के पक्ष में नारे भी लगाए गए ।

अन्तर्राष्ट्रीय रंग देने की कोशिश

स्थिति के जानकार सूत्रों के लिए चिन्ता का विषय यह है कि अभी तक सिखों की पुरानी संस्था चीफ खालसा दीवान केवल पन्थ और शिक्षा के क्षेत्र में ही संलग्न था, परन्तु उसने पहली बार एक मंच से राजनीतिक नारे लगाए हैं। सुविज्ञ क्षेत्रों को यह जानकर भी अचम्भा नहीं हुआ कि सिखों के लिए अपने पृथक् देश खालिस्तान की मांग की गई है। यह मांग नई नहीं है, सिखों के उग्र तत्त्व पहले भी यह मांग करते रहे हैं, चिन्ता की बात यह है कि सम्मेलन में पहली बार इस मांग को अन्तर्राष्ट्रीय रंग देने की कोशिश की गई है।

चण्डीगढ़ स्थित पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट आफ मेडिकल एजुकेशन के भू० पू० डायरेक्टर डा० जे० ए० नेगी ने सिख शिक्षा संस्थाओं को आधुनिक स्वरूप देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन नियुक्त करने का प्रस्ताव रखते हुए सिखों को आगाह किया कि सोवियत रूस सिख बुद्धिजीवियों को गुरमुखी में अपना साहित्य पहुंचाकर तथा पंजाबी लेखकों को सम्मानित कर उन्हें प्रभावित कर रहा है। उन्होंने मांग की कि सिखों को अपनी तालीमी संस्थाएं अपनी परम्पराओं की दृष्टि से पृथक् रखनी चाहिएं।

एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्प्रदाय

यह भी एक चिन्ता का विषय है कि इस सम्मेलन की अध्यक्षता किसी भारतीय सिख विद्वान् ने नहीं की, प्रत्युत कान्फ्रेंस की सदारत एक अमेरिकी सिख व्यापारी गर्गासिंह ढिल्लो ने की । उन्होंने प्रेस प्रतिनिधियों से चर्चा में कहा यद्यपि उनका विश्वास है कि सिख एक राष्ट्र या नेशन हैं, तथापि उन्हें खालिस्तान की मांग से कोई वास्ता नहीं है। उनका कथन है कि सिख केवल पंजाब और दिल्ली में ही केन्द्रित नहीं हैं, प्रत्युत वे संसार भर में फैले हुए हैं। संसार भर में फैले सिखों की विशिष्ट समस्याएं हैं। उनकी दृष्टि में सिख एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्प्रदाय है, उन्हें यूक्रेनियनों, रेड इण्डियनों और फिलस्तीन मुक्ति मोर्चे की तरह संयुक्त राष्ट्र की सहायक सदस्यता मिलनी चाहिए, जिससे कि वे अन्तर्राष्ट्रीय माध्यमों से अपनी शिकायतें प्रस्तुत कर सकें।

अमेरिकी गुरसिख ढिल्लों को अकाली दल तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति से यह शिकायत है कि वे उन्हें पाकिस्तान सरकार से चर्चा कर पाकिस्तान में सिख यात्रियों को उन्मुक्त रूप से प्रवेश करने के बातचीत में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। उनका ख्याल है कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक उस देश की सिख संस्थाओं के प्रबन्ध एवं सिख यात्रियों के प्रवेश के लिए उपयुक्त सुविधा देने के लिए तत्पर हैं।

प्रवेश के लिए चिन्ता का विषय

चिन्ता का विषय है कि चीफ खालसा दीवान जो अभी तक केवल पन्थ और शिक्षा की उन्नति में संलग्न रहा है, सरदार सुन्दर सिंह मजीठिया, भाई वीर सिंह और सरदार खड़कसिंह जैसे व्यक्तियों का उसे सहयोग मिला है, वह संस्था पहली बार राजनीतिक नारों का अखाड़ा बन गई और उस सम्मेलन को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने का प्रयत्न किया गया । यह भी चिन्ता का विषय है कि जब कम्युनिस्ट गुरु सिख गुरुद्वारों तथा शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से सिख जनता में प्रवेश कर रहे हैं तब अमेरिका भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहना चाहता।

पंजाब ट्रिब्यून ने इस बात पर खेद व्यक्त किया है—'यद्यपि चीफ खालसा दीवान अच्छा कार्य कर रहा है तथापि आजादी की लड़ाई में उसने अंग्रेजों का साथ दिया था, यही कारण है कि आजादी के बाद भी संस्था सिख जनता का दिल नहीं जीत सकी, इस संस्था को अपनी गतिविधियां शिक्षा के क्षेत्र में मर्यादित रखनी चाहिएं, यदि वह सिखों का नेतृत्व करना चाहता है, तो उसे इसका खुला ऐलान करना चाहिए।

जालन्धर के पंजाबी दैनिक 'अजीत' ने लिखा है—'ऐसे बड़े प्रस्ताव को पास करने का क्या फायदा, जब उस पर अमल नहीं हो सकता । दीवान को खालिस्तान की मांग करने से पूर्व नवयुवकों में सिख धर्म की शिक्षा का प्रचार करना चाहिए।' □

आर्यसमाज का ध्वज : शहीदों की कुर्बानी का प्रतीक

आर्यसमाज दीवान हाल के ९६वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य पताका लहराते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुसन्धान विभाग के अध्यक्ष आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने घोषित किया था —'झण्डा समाज, दल या समूह विशेष की भावनाओं और उनके क्रियाकलाप का प्रतीक होता है। मुक्त आकाश में लहराता हुआ ध्वज हमारे अभिमान को ऊँचा उठाता है। आर्य पताका का रंग अग्निशिखा सा है। यह प्रातर्वन्द्य महर्षि दयानन्द सरस्वती से लेकर आज तक के सभी शहीदों की कुर्बानी की कहानियां कहता है। कोई भी ध्वज या झण्डा किसी भी संस्था के क्रियाकलाप और उपलब्धियों का प्रतीक होता है।'

वार्षिकोत्सव का विवरण २२ मार्च मार्च के अंक में प्रकाशित हो चुका है।'

गोवंश हत्या पर पाबन्दी लगाई जाए

इस अवसर पर एक प्रस्ताव स्वीकार कर एक विशेष सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकार कर इस स्थिति पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई कि जनता की बार बार मांग करने पर भी भारत सरकार ने अभी तक गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगाया। हमारे संविधान मे भी सरकार को यह आदेश दिया गया है कि गौरक्षा पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना चाहिए, परन्तु स्वतन्त्रता के ३० वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी अभी तक गोवंश की हत्या बन्द नहीं की गई। आर्यसमाज सरकार का ध्यान एक बार फिर इस स्थिति की ओर दिलाना चाहता है और भारत सरकार से एक बार फिर अनुरोध करता है कि गोवंश की हत्या शीघ्रताशीघ्र बन्द करने के लिए इसे केन्द्रीय सूची सम्मिलित कर गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

याद रखें—आर्यसन्देश का अगला अंक विशेषांक होगा आर्यसमाज-स्थापना अंक : अपनी प्रति सुरक्षित कराएं

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

रुद्र को प्रसन्न करो, प्रेय तथा श्रेय मिलेगा

त्वरुद्रमवीम ह्यव देवं त्र्यम्बकम् ।
यथानो वस्यसस्करत्,
यथा न श्रेयसस्करद्
यथा नो व्यवसाययात् ॥ यजु-३-५८

ऋषि —वन्धुः । देवता—रुद्रः ।

शब्दार्थ—हम (त्रि —अम्बकम्) तीन प्रकार की प्रगति प्रदान करने की इच्छा से त्रयी रूप वेदो का उपदेश करने वाले ब्रह्म स्वरूप भगवान् को (अव-अदीमहि) उसके उपदेशों का पालन करके प्रसन्न करते हैं (यथा) जिससे वह हमें (व्यवसाययात्) सदा निश्चयात्मक विचारो वाला तथा व्यवसाय युक्त रखें। हम कभी व्यवसाय रहित न होने पाए।

हम (देवम्) कर्मानुसार सम्पूर्ण भोग प्राप्त करा कर, आनन्द रूप श्रेय प्राप्त कराने वाले देवाधिदेव विष्णुस्वरूप भगवान् को प्रसन्न करते हैं, (यथा) जिससे वह (न.) हमें (श्रेयसस्करत्) प्रेय की अपेक्षा श्रेय की अधिक कामना करने वाला बनाए।

हम (रुद्रम्) दुष्टों को रुलाने वाले रुद्र रूप भगवान् को (अवअदीमहि) ब्रह्म-चर्य (वेदोक्त आचरण) द्वारा प्रसन्न करते हैं (यथा) जिससे वह (नः) हमें (वस्यसः) जितना धन हमारे पास है, उससे अधिक धन, और जैसा निवास प्राप्त है उससे (बेहतर) निवास (करत्) प्राप्त कराए।

निष्कर्ष—ब्रह्मा को वेदो को प्रकट करने वाला तथा सृष्टिकर्ता माना गया है। वेद त्रयी रूप है, इसलिये उनका उपदेश करने के कारण उसे त्र्यम्बक भी कहते हैं। विष्णु सर्वव्यापक तथा सबका भरण-पोषण करने से देवाधिदेव हैं। रुद्र सबको नियम में रखने के लिए कर्मानु-सार दण्ड, मृत्यु देकर रुलाने से रुद्र कहलाते हैं। वास्तव मे ये तीनों रूप भगवान् के हैं।

जो इन तीनो देवो के उपदेशो का पालन करके इन्हें प्रसन्न करेगा, तृप्त रखेगा, उसे प्रेय और श्रेय दोनों प्राप्त होंगे। उसके इहलोक और परलोक दोनो आनन्दमय होंगे। उसकी सर्वाङ्गीण प्रगति होगी।

विशेष—इस मंत्र का ऋषि बन्धुः है। इस मंत्र में परमेश्वर के सृष्टि-पालन तथा संहार तीनों कार्यों की चर्चा के साथ मुख्य रूप से रुद्र का देवता रूप में वर्णन है। रुद्र में ये तीनों कार्य समन्वित हैं। वह उपदेश देता है, सब रोगों का भिषक है, और आज्ञा कौन मानने पर दण्ड देकर सबको रुलाने वाला है। जो साधक बन्धु के समान उसके बन्धनों को मानता है, उसे वह आगे और आगे ले जाता है। बेहतर बनाता है। प्रेय से श्रेय की ओर ले जाता है और फिर अधिक-अधिक श्रेय प्राप्त कराते हुए परमश्रेय तक पहुंचा देता है। जो उसके उपदेशों का उल्लंघन करता है, उसे रोग, शोक, आधि-व्याधि द्वारा रुलाता रहता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र में डाले रखता है।

अर्थ पोषक प्रमाण—अव अदीमहि —अदभक्षणे। अव+अद्—तृप्त होना या तृप्त करना, संस्कृत धातु कोस (रामलाल ट्रस्ट)। अव+अदि बन्धने, उसके बन्धनों (उपदेशो) को मानकर उसे प्रसन्न करते हैं।

त्र्यम्बकम्—त्रि+अबि शब्दे—अम्ब्यन्ते उच्चार्यन्ते इत्यम्बाः वेदाः, अम्ब गतौ तीन प्रगतियों को देने वाला त्रीन् वेदान् कायति इतितम्।

भगवद्दाचार्य

देवम्—दिवु=क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति स्तुति मोदमद स्वप्न कान्तिगतिषु। यह जगत् देवाधिदेव की क्रीडा (लीला) है। यदि किसी को विजिगीषा है, वह अपने व्यवहार को सफल बनाकर द्युति मोद मद कान्ति, गति प्राप्त करना चाहता है, तो उसे सदा उसकी स्तुति करनी चाहिए। गति (प्रगति—परमगति)।

रुद्रम्—१—रुतः सत्योपदेशान् ददाति इति। रौति—इति रुशब्दे।

२—रुद्—दुःखं दुःखहेतुर्वा तद् द्रावयति नः प्रभुः।

रुद्र इत्युच्यते तस्मात् शिवः परम-कारणम् ॥ वायवीय संहिता।

३—रोदयति पापिनः—इति ईश्वरः। रुदिर्—अश्रु विमोचने।

रुद्रो वै ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च देवानाम्। कौशीतकी २५-१३

ब्रह्मचर्य—ब्रह्म (वेदोपदेश)+चर्य (चर—चरण—आचरण)

श्रेयसः—श्रेयः कल्याणम्। प्रशस्यतरान्। वन्धुः—बन्ध बन्धने।

स्यसः—वसतीति—वासयति—इति, वासो वास्यास्तीति—वस्तुतरा-नित्यर्थः।

—मनोहर विद्यालंकार

वेद का अध्यापन कैसा ?

खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आजकल हमारे कालिजो-यूनिवर्सिटयों में ऋषि दयानन्द को वेदभाष्य नहीं पढ़ाया जाता। अंग्रेज चला गया, पर अंग्रेजियत नही गई। वेदभाष्य पढ़ाया जाता है, मैक्समूलर, पीटर्सन, मैकडानल का। आप कहेंगे, सो कैसे? सुनिए:—

मत्र है:—

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि,
यो दासंवर्ण मधरं गुहा कः।
श्वघ्नीव यो जिगीवांल्लक्ष मादद्,
अर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ॥
(ऋक् सूक्त संग्रह) ऋक् म० २ सू०-१२, म०-४

विदेशी विद्वानों का अर्थ

इसका अर्थ इस प्रकार किया गया है:—

जिसने इन सम्पूर्ण नश्वर भुवनों को स्थिर किया है, जिसने दास अर्थात् शूद्र आदि वर्णों को गुफा आदि गुप्त स्थानों में स्थापित कर दिया है अथवा हिंसक असुर जाति को नरक में डाल दिया है, जिसने लक्ष्य को जीत लिया है और जिसने शत्रुओं के धनों को उसी प्रकार छीन लिया है, जैसे शिकारी या जुआरी छीन लेता है। हे असुरो, वही इन्द्र है।

कहिए, यदि ऐसा अर्थ पढ़कर हमारे छात्र यह समझते हैं कि आर्य लोग शूद्रों से घृणा करते थे, उन्हें, वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार नहीं, असुर नरक के अधिकारी हैं। इन्द्र ईश्वर का भी कोई लक्ष्य होता है, वह शिकारी या जुआरी की तरह आचरण करता है, तो इनमें उनका क्या दोष है? अंग्रेजों का षड्यंत्र सफल हुआ। नादिरशाह और औरंगजेब की तलवार जो काम नहीं कर सकी, वह गौरांग महाप्रभुओं ने कर दिखाया।

लेखक:
सत्यभूषण वेदालंकार

महर्षि दयानन्द का अर्थ

अब तनिक महर्षि दयानंद की द्वारा लिखित अर्थ पर विचार कीजिए:—

पदार्थ:—हे मनुष्यो! जिस ईश्वर ने ये समस्त प्राप्त हुए लोक दृढ़ किए जो हृदयाकाश में रूप को इस हृदय के नीचे (दासम्) देने योग्य करता है और जो (श्वघ्नीव) कुत्तों को दंड देने वाली के समान (जिगीवान्) जयशील (लक्षम्) लक्ष्य के (आदत्) ग्रहण करता है। वह (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् (अर्य्यः) ईश्वर है यह जानना चाहिए।

महर्षि का यह अर्थ कितना तर्क-संगत और सारगर्भित है। हृदयाकाश में (अंगुष्ठमात्रः) उस प्रभु के दर्शन होते हैं। आत्मा परमात्मा का मेल होता है। यह सिद्ध ही है। यही इन्द्र परमैश्वर्यवान् परमात्मा ही सब कर्मों को लक्ष्य-सा रखता है, वह सबको उपासना करने योग्य है।

अब कौन-सा अर्थ ग्राह्य है, कौन-सा अग्राह्य है? उचित है, या अनुचित, यथार्थ है या अयथार्थ, पाठकगण स्वयं निर्णय करें। आर्य विद्वान् नेता भी विचार करें कि वेदाध्यापन कैसा हो?

ग्रीनपार्क, नई दिल्ली

अच्छा सुनो, अच्छा देखो, अच्छा करो

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

हे दिव्य गुणों से सम्पन्न यज्ञ की शक्तियो, आपकी कृपा से हम कानों से अच्छा ही सुनें, आँखों से अच्छा ही दृश्य देखें, आपका स्तवन करते हुए सुदृढ़-अंगों और सुदृढ़ शरीरों से दिव्य गुणों द्वारा प्राप्तव्य दीर्घ-आयु उपलब्ध करें ।

देश में नए पाकिस्तानों का संकट

राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से देश के पूर्वोत्तर प्रदेशों तथा अन्य क्षेत्रों में ईसाई प्रचारक निरन्तर सक्रिय रहे हैं । अभी तक केवल ईसाइयों द्वारा पैसे और प्रलोभन देकर भारत में ईसाई जनसंख्या बढ़ाने का खतरा था । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं भूतपूर्व ससद सदस्य श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने विदेशी ईसाई मिशनरियो द्वारा हिन्दुओं के सामूहिक धर्म परिवर्त्तन की गतिविधियों को रोकने के लिए संसद में धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक रखा था । उस विधेयक के विरोध में विदेशी धर्म प्रचारकों ने पर्याप्त उछलकूद भी मचाई थी । देश की बहुसंख्यक हिन्दू-आर्य-जनता का ईसाइयों से तो खतरा था ही, अब मुसलमानों से नया संकट पैदा हो रहा है । पिछले दिनों समाचार मिला था कि कुवैत सरकार भारत के हरिजनों को मुसलमान बनाने के लिए प्रयत्नशील है, इस कार्य के लिए वह करोड़ो रुपयों की धनराशि खर्च करने के लिए तत्पर है । इसी के साथ यह संवाद भी प्रकाशित हुआ है कि पिछले दिनो करोड़ो रुपये खर्च कर हैदराबाद मे जमायते इस्लामी ने अपना अधिवेशन कर भारत मे मुस्लिम प्रचार का संकल्प किया है ।

अब पत्रों में यह संवाद छपा है कि पिछले दिनो बम्बई के महाराष्ट्र कालेज हाल में इस्लामी विद्यार्थी चेतना (इस्लामिक स्टूडेण्ट मूवमेंट) नामक सगठन का अधिवेशन हुआ था । इस अवसर पर उन उपायों पर खुलकर विचार हुआ कि भारत में इस्लाम धर्म किस प्रकार तेजी से फैलाया जाए । इस मौके पर युवा मुस्लिम छात्रों ने यह शपथ भी ग्रहण की कि वे केवल अल्ला-ताला और पैगम्बर मुहम्मद साहब के सन्देशवाहक बनेंगे और उनके प्रचार के लिए जिन्दगी की अंतिम साँस तक कार्य करेंगे । ठीक है प्रत्येक को अपने मजहब को मानने मे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, पर साथ ही संसार का कोई भी धर्म और इस्लाम भी अपनी मातृभूमि और देश से गद्दारी करने की सीख नहीं देते । आज विदेशों से करोड़ो रुपयो की धनराशि देश में धर्म-परिवर्त्तन के लिए लाने की कोशिश की जा रही है, हैदराबाद और बम्बई में हुए सम्मेलनों में व्यापक इस्लामी प्रसार की योजना बनाई गई है । ये करोड़ों रुपये और यह इस्लामी प्रचार की योजना किसी भारतभक्ति के लिए नहीं है । लक्षणों से तो यही लगता है कि समय रहते सरकार सावधान नही हुई तो देश में नये अलस्टरो या पाकिस्तान बनने का खतरा पैदा हो सकता है ।

खेद का विषय तो यह है कि ईसाइयों तथा मुसलमानों द्वारा देश की बहुसंख्यक हिन्दू जनता विशेषतः हरिजनों को अपने धर्म में लाने की कोशिश के खतरे को नजरन्दाज किया जा रहा है । श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने अपने वक्तव्य में कहा था कि ईसाइयों और मुसलमानो दोनों का ही यह विश्वास है कि हिन्दू जाति को एक न एक दिन उनके किसी एक वर्ग में मिलना होगा, दोनों ही इस होड़ में हैं कि कौन अधिक से अधिक हिन्दुओं को अपने धर्म में परिवर्तित कर सकता है । विदेशी धर्म-प्रचारकों की इस प्रकार की गतिविधियों से सरकार और जनता को सावधान होना चाहिए और धर्म-परिवर्त्तन के प्रत्येक प्रयत्न का डट कर सामना करना चाहिए । हैदराबाद और महाराष्ट्र में इस्लामी धर्म-प्रसार के सम्मेलन हो चुके हैं, विदेशों से मजहबी प्रचार के लिए करोड़ों रुपये आ रहे हैं, इसी के साथ बिहार, उत्तरप्रदेश में साम्प्रदायिक तत्त्वों को प्रसन्न करने के लिए उर्दू को द्वितीय राजभाषा के रूप में मान्यता दी जा रही है, उत्तर प्रदेश के रामपुर-मुरादाबाद आदि मुस्लिम क्षेत्रों की पृथक् इकाई बनाई जा रही है । देश में इस्लाम के प्रसार के प्रयत्नों के बाद मुस्लिम तुष्टीकरण की यह नीति देश मे राष्ट्रवाद और एकता के प्रयत्नों को क्षति पहुंचाएगी, फलतः देश में नए पाकिस्तानों का संकट पैदा हो जाएगा । यह भी दुःख का विषय है कि प्रमुख राजनीतिक दल देश के क्षितिज पर मंडरा रहे इस सकट की अनदेखी कर रहे हैं । ऐसे समय आर्यसमाज तथा दूसरे जागरूक संगठनो को इस सम्भाव्य नए खतरे की समय रहते रोकथाम करनी होगी ।

आंकड़े क्या कहते हैं ?

किसी भी देश की वास्तविक परिस्थिति का मूल्यांकन करने के लिए उसकी जनसंख्या का विवेचन महत्त्वपूर्ण हो सकता है । इन आकड़ो के आधार पर देश के आर्थिक जीवन, उसके सर्वांगीण विकास, बहुसंख्यक जनता की साक्षरता, स्त्रियों की स्थिति एवं अल्पसंख्यकों के वर्तमान तथा भविष्य आदि के विषय में यथार्थ जानकारी प्राप्त हो सकती है । इस वर्ष देश की जनसंख्या की नई गणना की गई है । इसके अनुसार इस वर्ष इस देश की जनसंख्या ६८ करोड़ हो गई है । पिछले दस वर्षों में देश की जनसंख्या १३ करोड़ बढ गई है । पिछले ५० वर्षों में देश की आबादी बड़ी तेजी से बढी है । १९३१ में देश की जनसंख्या २७ करोड़ ८८ लाख थी । इन वर्षों मे भारत के दो बाजू कट गए । आज इन दोनों पार्श्वों मे—पाकिस्तान और बागला देश मे आबादी १५-१६ करोड़ से अधिक है । इस बड़ी आबादी और क्षेत्रफल के कटने के बावजूद इन पचास वर्षों में देश के बचे हुए भाग की जनसंख्या अखड भारत से भी दुगुनी से ज्यादा हो गई है । विशेषज्ञो का ख्याल है कि जनसख्या की वृद्धि यदि इसी रफ्तार से होती रही तो इस शताब्दी के अंत तक हमारे देश की जनसंख्या १ अरब तक पहुंच सकती है ।

जनगणना से यह भी मालूम होता है कि यदि देश में एक हजार पुरुष हैं तो उनकी तुलना में स्त्रियों की गिनती ९९५ है । स्त्रियो की अपेक्षा पुरुषो की गिनती देश मे अधिक होने के लिए तर्क यह दिया जाता है स्त्री शिक्षा और सब तरह की समानता के नारे के बावजूद अब भी लडकियों की अपेक्षा लडकों को प्रश्रय दिया जाता है । यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि देश की स्त्रियों की औसत आयु ५३ है तो पुरुषों की औसत आयु ५४ है । शिक्षा के क्षेत्र मे यदि देश के ४६.७४ प्र० श० पुरुष शिक्षित हैं तो स्त्रिया केवल २४.८८ प्र० श० शिक्षित है । इन तीनो ही प्रकार के आकड़ो से भारतीय समाज में नारी की दुरवस्था उजागर होती है, देश के पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अशिक्षा अधिक है, उनकी औसत आयु पुरुषो से कम है और इन्ही दो तथ्यों से देश की जनसंख्या में भारतीय पुरुषों की अपेक्षा भारतीय नारियो की कमी के आंकडो का वास्तविक कारण भी विदित हो जाता है । आर्यसमाज प्रारम्भ से ही भारतीय नारी की शिक्षा, समुन्नति एव अभ्युदय के लिए प्रयत्नशील है, भारतीय नारियो से प्रतिदिन हो रहे अत्याचारो के समाचार पत्रो मे प्रकाशित होते रहते हैं । उनके साथ में ये आकड़े उनकी दुरवस्था पर प्रकाश डालते हैं, इस सम्बन्ध में आर्यसमाजो और आर्यजनों को अपना दायित्व अनुभव करना चाहिए ।

नई जनगणना के द्वारा देश के अल्पसंख्यको और परिगणित जातियो और जनजातियो का ब्योरा नही दिया गया है । सम्भवतः इस सम्बन्ध में नए आकड़े प्राप्त करने में कुछ समय लगेगा, परन्तु इस विषय मे समय रहते सचेत रहना आवश्यक है । भारत के दोनों बाजुओं पर पाकिस्तान और बांगला देश मे पन्द्रह करोड़ मुस्लिम प्रजाजन हैं । नई जनगणना में इनकी गिनती और बढ सकती है । इसी के साथ यह भी उल्लेखनीय है कि १९७१ मे देश में ६ करोड १४ लाख के लगभग मुसलमान थे । यह भी एक तथ्य है कि देश के दूसरे प्रजाजन एक पत्नी रखने के लिए बाध्य हैं तो मुसलमानों पर एक पत्नी की पाबन्दी नही है, पिछले दिनों उनकी आबादी बढ़ाने के लिए कुवैत, लीबिया से करोड़ो की धनराशि लगाने के समाचार छपे हैं, साथ ही हैदराबाद और बम्बई मे सम्मेलन कर मुसलमानों की संख्या बढाने के नए प्रयत्नो की सूचनाएं भी मिली हैं । ऐसी अवस्था मे जनगणना के नए आंकड़ों में मुसलमानों, ईसाइयों आदि की गिनती बहुत अधिक बढ जाए तो अचम्भा नहीं होगा । यह भी सम्भव है कि देश मे कई विशिष्ट सम्प्रदायबहुल क्षेत्रो में ऐसे अल्पसख्यक अपने नये स्वतंत्र देश या प्रदेश स्थापित करने की कोशिश करें । ईसाई और मुसलमान जिस तरह से विभिन्न क्षेत्रों मे अपनी प्रभाववृद्धि कर रहे हैं, उससे इस तरह के खतरो की आशंका स्वाभाविक है । जनगणना मे नए सम्भावित आंकड़ों का विश्लेषण कर और इस दृष्टि से उनके दूरगामी प्रभाव की रोकथाम अभी से करनी चाहिए ।

महर्षि दयानन्द एक अनहोना व्यक्तित्व :

(४)

२२ मार्च के अंक से आगे

यहां तक तो बात गांधी जी की रही। उनके अनुयायियों ने तो ऐसा कुछ कर डाला जिसकी मिसाल किसी देश के गद्दारों के इतिहास में भी नहीं मिलती। एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी के अनुसार—'''सभ्यता और संस्कृति का दम भरने वाले अंग्रेज शासकों ने १९४६-४७ में अपने भारतीय 'साथियों' को देश का शासनाधिकार सौंपते समय सचिवालयों और आई. बी. (इनटेलिजेन्स ब्यूरो) के दफ्तरो में सुरक्षित हमारे (क्रांतिकारियों से सम्बन्धित) इतिहास की बहुमूल्य सामग्री से महीनों से जो होली खेली थी उसका उल्लेख भी क्या हमारे किसी इतिहास-ग्रंथ में कभी हो पाएगा ? 'अनुशीलन समिति' और अन्य क्रान्तिकारी दलों के इतिहास की बहुमूल्य सामग्री, अंग्रेज शासकों द्वारा देश छोड़ कर जाते समय अग्नि देवता को भेंटकर दी गई। हमारे नेताओं ने अंग्रेजों से शासनतंत्र अपने हाथ में लेते वक्त उनके भाड़ैत अमलो को ज्यों का त्यों बनाए रखने, भूखी जनता से कर वसूल कर उन अमलों को मोटी-मोटी तनखाहें और पेंशनें प्रलय काल तक उनके पास भेजते रहने, और अंग्रेजी भाषा तथा मैकाले के बनाए कानून को 'स्वाधीन' भारत में भी कायम रखने का वचन, अंग्रेजों के आग्रह पर उन्हें दे दिए थे।

महान क्रान्तिकारियों की गतिविधियों और उनके अमरत्वदायी कर्मकलापों से सम्बन्धित समस्त अमूल्य सामग्री का होलिकादाह भी हमारे नेताओं की ही चश्मपोशी से शिमले के अभिलेखागार के प्रांगण में होता रहा था। अंग्रेज शासको और उनके अमलों का स्वार्थ था कि उनके काले कारनामों और गद्दारी का कोई प्रमाण न रह जाए और कांग्रेस नेताओं का स्वार्थ था कि क्रान्तिकारी कर्मियो और शहीदों की अलौकिक वीरता, अदम्य उत्साह और त्यागपूर्ण कार्यकलापो का कोई लेखा न रहे ताकि भटैत (भाटों के समान पुरस्कार के लिए अतिरंजित बखान करने वाले लोग) इतिहास लेखकों से मनचाहा इतिहास लिखवा कर वे कांग्रेसी नेता) स्वाधीनता संग्राम का समस्त श्रेय ले लें और सदा जनता को गुमराह कर उससे सदा वोट प्राप्त करके देश के शासक बने रहें। इस प्रकार के हमारे स्वाधीनता संग्राम के सच्चे वीर सैनिकों और शहीदों के कार्यकलापों का इतिहास और उनके दुर्लभ चित्र सदा सर्वदा के लिए विनष्ट हो गए।' ये शब्द उस प्रसिद्ध क्रान्तिकारी के हैं जिसने अपनी जवानी का दो तिहाई भाग फरारी में बनाया था और जो स्वयं ढाका की अनुशीलन समिति का क्रियाशील सदस्य रह कर कई बार जेल मे रहा था और एक विचित्र संयोग से फांसी के तख्ते पर जाते-जाते बच रहा था।

महान् क्रान्तिकारी श्री त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती उपनाम 'महाराज' लिखित पुस्तक 'तीस बरस जेल मे' की भूमिका (परिचय) में से ही हमने ये शब्द लिए हैं। यह भूमिका प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री इन्द्रचन्द्र जी नारंग (भगत सिंह राजगुरु, सुखदेव आदि के कौमी विद्यापीठ लाहौर के शिक्षक और प्रमुख प्रेरणास्रोत स्व. पं. जयचन्द्र विद्यालंकार जी के अनुज) की लिखी है।

लेखक :

प्रो० राजनाथ पाण्डेय

अहिंसा और हृदय-परिवर्तन के समान ही गांधी जी की आत्मा की पुकार प्रयोपवेशन (आमरण भूख हड़ताल) और आत्म-दाह तथा असहयोग की नीति भी खोखली सिद्ध हुई जिसके परिणामस्वरूप भाषायी आधार पर पहले आंध्रप्रदेश की और बाद में अनेक नये प्रदेशों की स्थापना हुई, जिसके निर्माण में अनशनों और हड़तालों की धमकियों के सामने केन्द्रीय सरकार को बारम्बार झुका कर अप्रत्यक्ष रूप से उस बिराट अनुशासनहीनता को बढ़ावा मिला, जिसे लोहिया और उनके चेलों ने घेराव और तोड़फोड़ की राजनीति में परिवर्तित कर उस राष्ट्रव्यापी तिरस्कार और अहिंसा को जन्म दिया जो आज राष्ट्र के पौधे की जड़ में दीमक बन कर उसे नष्ट कर रही है।

भारत के ही समान इटली को भी अपनी गुलामी की जंजीरें काटने के लिए दीर्घकाल तक कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। जिस प्रकार भारत में बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहरलाल और सुभाषचन्द्र बोस का आविर्भाव हुआ, उसी प्रकार इटली में उन्नीसवीं शताब्दी में मेजिनी, गैरीबाल्डी, कावूर और विक्टर इमानुएल द्वितीय (जन्म सन् क्रमशः १८०५, १८०७, १८१० और १८२० ई.) का अभ्युदय हुआ था। महात्मा गांधी निस्सन्देह मेजिनी की नैतिक गरिमा से सर्वाधिक प्रभावित थे। सत्य और अहिंसा का उनका सिद्धान्त बहुत अंशों में मेजिनी के व्याख्यानों से अनुप्राणित था। मेजिनी के 'यंग इटली' पत्र के ही समान गांधी जी ने अपना 'यंग इण्डिया' पत्र निकाला था। मेजिनी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि 'गुलाम देश में स्वाधीनता के बीज केवल भूमि में नैतिकता की ऊष्मा पाकर स्थायी रूप में अंकुरित और पल्लवित होते हैं।' गांधी जी ने स्वामी दयानन्द के कृतित्व की अनदेखी जान बूझकर या अनजाने कर दी, और आतुरता वश और किंचित प्रभावक सत्य-अहिंसा के सिद्धांत और आत्मा के परिवर्तन, और आत्मशुद्धि या नैतिक दबाव डालने वाली प्रायोपवेशन (आमरण भूख हड़ताल) तथा आत्माकी पुकार आदि नीति को ही स्थायी नैतिकता बढ़ाने का साधन मान लिया, किन्तु अंग्रेजों का भारत छोड़ चला जाना कितना गांधीजी के आन्दोलन के कारण था, इसका विवेचक और लेखा-जोखा आज तक तटस्थता के साथ

(शेष पृष्ठ ७ पर)

लोक-चिन्तन

कर्म के बिना ज्ञान निरर्थक

मेरे नगर में एक बड़े पहुंचे हुए महात्मा आए थे। ध्वनिविस्तारक युग की सहायता से घोषणा की गई थी अमुक महर्षि के परम प्रिय शिष्य महात्मा अमुक जी, मानवकल्याणार्थ एक सप्ताह तक, अमुक स्थान पर, सन्ध्या समय ६ बजे से ८ बजे तक प्रवचन करेंगे। धर्मभीरु मित्र, खींचतान कर मुझे भी वहां तक ले गए। कुछ प्रतीक्षा के बाद महात्मा जी एक चमचमाती कार में कुछ तुन्दिल भक्तों के साथ आए गौर वर्ण, लम्बी काया, गुरुओं जैसी दाढ़ी, रेशमी गेरुआ परिधान, हाथ में घड़ी, आंखों पर चश्मा, पैरों में पालिश किये जूते, माथे पर इन्द्रधनुषी त्रिपुण्ड—कहने का मतलब पूरे वातानुकूलित महात्मा थे। उन्होंने आंग्ल भाषा में धाराप्रवाह और सारगर्भित भाषण दिया। श्रोतागण भावविभोर हो गए। अन्त में शंका-समाधान का समय आया। लोग प्रश्न पूछने लगे। मुझसे भी नहीं रहा गया। मैंने पूछा—'महात्माजी ! आपने जो कहा है, उसके कितने भाग पर आप स्वयं आचरण करते हैं ? उदाहरण के लिए क्षमा, दया, तप, त्याग को ही लें। क्या आप अपनी घड़ी का त्याग मेरे लिए कर सकते हैं ? मेरा प्रश्न सुनते ही महात्माजी आगबबूला हो उठे, उनके श्रीमुख से दुर्वचन निकलने लगे।

विचारणीय विषय यह है कि क्या जानकारी का शाब्दिक आदान-प्रदान करके हो मानवता का कल्याण किया जा सकता है ? क्या कर्म के बिना ज्ञान का कोई तात्विक मूल्य है ?

इस सन्दर्भ में मुझसे महाभारत का एक प्रसंग याद आ रहा है। धृतराष्ट्र दुर्योधन से पूछ रहे हैं—'केनासि हरितः कृशः ? तुम पौष्टिक तथा स्वादिष्ट भोजन करते हो, अच्छे रेशमी वस्त्र धारण करते हो, उत्तम घोड़ों पर सवारी करते हो, तब क्या कारण है कि तुम दुबले और पीले पड़े जा रहे हो ?

उत्तर था—शील और सदाचरण का अभाव। क्षीण होती हुई मानवता की रक्षा के लिए भी यही एकमात्र विश्वस्त और कारगर उपाय है। शील और सदाचार के अभाव में मानव-जीवन अधोगामी बनता है, पतन को प्राप्त होता है। इसके अभाव में न तो आत्मोन्नति हो सकती है न राष्ट्रोत्थान। शील और सदाचार को ही हमारे वेदों में कर्म कहा गया है। पूर्व मीमांसा के मत से कर्म ही वेद का सार्थक तत्त्व है। जैमिनी ने स्पष्ट कहा है—आम्नायस्य क्रियार्थत्वात् आनर्थक्यमतदर्थानाम्। मीमांसा सूत्र १।२।१।'

अस्तु, ऐसे साधु-महात्मा जो घूम-घूमकर दूसरों को उपदेशामृत पान करा रहे है उन्हें चाहिये कि जिस काम को वे स्वयं अपने आचरण द्वारा सिद्ध न कर रहे हों, उसका उपदेश न दें। अन्यथा यदि कभी उनके 'लोकसंग्रह' की कलई खुल गई 'सत्यार्थप्रकाश' में असली चेहरा सामने आ गया तो लोग यही कहेंगे—नारि मुई गृह सम्पत्ति नासी। मूंड मुड़ाई भए संन्यासी।

हिन्दी विभागाध्यक्ष

म. पू. च. कालेज, बारिपदा (उड़ीसा)

महर्षि का सच्चा स्मारक

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपने प्रिय की स्मृति को चिरस्थायी रखने का प्रयत्न करता है। वह उसकी स्मृति में पुस्तक, स्मारिका स्तूप, मठ आदि बनवाता है। वह ऐसा स्मारक चाहता है कि जो शानदार हो और सरल भी। किसी की स्मृति में स्मारिका या पुस्तक प्रकाशित कर देना अपेक्षाकृत सरल तो है पर स्थूल दृष्टि से उतना शानदार नहीं जितना कि ताज महल जैसा कोई स्मारक। भले ही उपयोगिता की दृष्टि से उसका उतना महत्व हो अथवा नहीं। इसी प्रकार ताजमहल आदि बनवा देना शानदार तो है, पर वैसा सरल नहीं। साधारण लोग मध्य मार्ग खोजा करते हैं। परिणामस्वरूप भवन, मन्दिर, विद्यालय, पार्क आदि की स्थापना की जाती है कि जो कुछ अंश तक सरल होते हैं और स्थूल दृष्टि से कुछ शानदार भी। दयानन्द विद्यालय, दयानन्द-उद्यान, दयानन्द-संस्थान आदि के पीछे यही भावना काम करती दिखायी देती है।

'स्वामी दयानन्द का स्मारक यही है कि वेद के सिद्धान्तों का संसार में प्रचार हो जाए' —पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

स्थूलदर्शी लोगों ने संसार के इतिहास में स्थूल वस्तुएं ही स्मारक समझी हैं, किन्तु आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी स्मृति में किसी भी ऐसे स्थूल स्मारक के निर्माण के सर्वथा विरुद्ध थे। और सत्य तो यह है कि स्थूल स्मारक वास्तविक स्मारक होते ही नहीं। वास्तविक स्मारक तो वह हो सकता है कि जो स्मरणीय महापुरुष के उद्देश्यों एवं मन्तव्यों के प्रचार में सहायक सिद्ध होने के साथ-साथ उसकी स्मृति भी दिला सके। यही कारण है कि सूक्ष्म दृष्टि वाले तत्त्वदर्शी लोग किसी सरल तथा शानदार स्थूल स्मारक की अपेक्षा यह देखते हैं कि वह स्मारक स्मरणीय के उद्देश्यों की पूर्ति भी करता है कि नहीं। साथ ही यह भी कि वह स्मरणीय की भावनाओं के अनुकूल है कि नहीं।

दयानन्द की स्मृति में उसकी मूर्ति स्थापना करना दयानन्द की भावनाओं के सर्वथा विपरीत कृत्य होगा। इसी प्रकार उनकी स्मृति में कोई समाधि अथवा स्तूप आदि बनाना भी उनकी भावनाओं के विरुद्ध ही है। महर्षि दयानन्द ने उदयपुर में कविराज श्यामल दास से स्पष्ट कहा था कि मेरे मरने के पश्चात् मेरी अस्थियों को किसी खेत में डाल देना, कोई समाधि या कोई चिह्न कदापि न बनाना। पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति ठीक ही लिखते हैं कि यदि आर्य जनता ऋषि की यादगार में कोई स्तूप या मकबरा बना देती तो आज हिन्दू स्त्रियां उस पर फूल—बताशे चढ़ा कर अपने जीवन को सफल मान रही होतीं। वस्तुतः ईंट-पत्थर के स्थूल स्मारक वास्तविक स्मारक नहीं हो सकते। वास्तविक और सच्चा स्मारक तो वही हो सकता है जो स्मरणीय की विचार-धारा, उसके उद्देश्यों, मन्तव्यों एवं सिद्धांतों आदि का प्रचारक हो। पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि—ईंट-पत्थर पर किसी ऋषि का नाम खुदवा देने से ऋषि का स्मारक नहीं बन जाता, यदि ऋषि का स्मारक स्थापित करना चाहते हो तो उन सिद्धान्तों का प्रचार करके दिखाओ कि जिन सिद्धांतो का प्रचार स्वय ऋषि करते रहे हैं। स्वामी दयानन्द का स्मारक यही है कि वेद के सिद्धांतो का ससार मे प्रचार हो जाए।

आर्यसमाज ही महर्षि का सच्चा स्मारक

यदि गंभीर दृष्टि से देखा जाए तो आर्यसमाज ही महर्षि दयानन्द का सच्चा स्मारक है। आर्यसमाज पर चूंकि महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रचार एवं प्रसार का पूर्ण उत्तरदायित्व है, एवं गत एक शताब्दी से भी अधिक समय से वह महर्षि के सिद्धांतों का सफलतापूर्वक प्रचार कर भी रहा है, अतः आर्यसमाज ही महर्षि दयानन्द का सच्चा स्मारक कहा जा सकता है। प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार आर्यसमाज महर्षि का स्मारक ही नहीं, ऋषि का प्रतिनिधि भी है। ग्रन्थों की, सिद्धांतों की और वस्तुत; वेदों की रक्षा का बोझ आर्यसमाज पर ही है। जो वस्तु किसी के नाम का स्मरण करा सके एवं उसके उद्देश्यों का प्रचार भी करने में सक्षम हो, वही उसका सच्चा एवं वास्तविक स्मारक कहलाने का अधिकारी हो सकता है। इन अर्थों में आर्यसमाज से बढ़ कर महर्षि का दूसरा कोई भी स्मारक नहीं हो सकता। अतः यही उसका सच्चा स्मारक है। और सत्य तो यह है कि आर्यसमाज महर्षि दयानन्द का ऐसा शुभ स्मारक है कि जिसकी नींव का पत्थर भी स्वयं महर्षि दयानन्द ने अपने ही हाथों से रखा था। यह ऐसा अद्भुत स्मारक है कि इसके साथ महर्षि दयानन्द का नाम न जुड़ा होने पर भी उसके नाम के आते ही उसके संस्थापक का स्वतः ही स्मरण हो आता है। पं० लेखराम आर्य मुसाफिर का निम्न कथन बड़ा मार्मिक है कि 'मुसलमान, ईसाई, नास्तिक, जैनी पौराणिक आदि किसी भी पुरुष के सामने आप आर्यसमाज का नाम कह दें, वह सुनते ही आपको दयानन्द का नाम सुना देगा।"

लेखक :
यशपाल आर्यबन्धु

जब आर्यसमाज का नाम आते ही लोग दयानन्द का नाम ले लेते हैं तो वस्तुतः आर्यसमाज से बढ़कर महर्षि का कोई अन्य स्मारक नहीं हो सकता। अमेरिका सरीखे दूर देशों में बैठा कर महान् विद्वान ऐण्ड्रयूस जैक्सन डेविस महर्षि को आर्यसमाज से पृथक नहीं कर सका, तो तो मैक्समूलर जैसा विद्वान् भी आर्यसमाज के साथ महर्षि का अक्षुण्ण सम्बन्ध मानता है। अतः आर्य समाज ही महर्षि दयानन्द का सच्चा स्मारक है।

महर्षि दयानन्द स्वयं भी आर्य समाज को ही अपना स्मारक मानते थे। उनका कथन है कि मेरे शिष्य सभी आर्यसामाजिक हैं, वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्ही के पुरुषार्थ में पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथों की सफलता अवलम्बित है। तो आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर आर्यजन आइए! हम महर्षि की भावनाओं के अनुरूप सिद्ध होने का प्रण करें। तभी महर्षि का स्मारक बन सकेगा।

"ऋषि की निशानी,
बड़ी ही सुहानी है।"
प्रिय आर्यसमाज।

आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक चाहिए

आर्यसमाज मंदिर उसमनगर नई दिल्ली में चलने वाली सीमा स्मारक धर्मार्थ डिस्पेन्सरी के लिए एक योग्य होम्योपेथिक डाक्टर की तुरन्त आवश्यकता है।

मंत्री

सम्पर्क—डा० अकिंचन सी २ बी/७४ ए जनकपुरी, नई दिल्ली

या रविवार को प्रातः मंदिर में मिलें।

आर्य जगत् समाचार

आत्मबोध से ही सच्चा बोध सम्भव

मोतीनगर में संयुक्त बोधोत्सव सम्पन्न

मोती नगर उप-आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव रविवार, १५ मार्च को प्रातः ८ बजे से दोपहर १॥ बजे तक आर्य केन्द्रीय तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व वरिष्ठ उपप्रधान महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इसमें लगभग १२ समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने आर्य परिवारों को ऋग्वेद का यह सन्देश दिया कि ईश्वर की वरुण शक्ति को प्राप्त करने के लिए सुहव्य अर्थात् शिष्टता के साथ शुद्ध सामग्री जुटानी चाहिए और अपने निजी चरित्र को ऊंचा उठाना चाहिए, उस स्थिति में प्रभु की दिव्य विभूति की जानकारी हो सकेगी। आत्मबोध जगाने से ही ऋषि-बोधोत्सव सफल होगा।

दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल जी ने कहा—'हमें अपने परिवार की बोधशक्ति जगानी चाहिए, उसी अवस्था में शिवरात्रि सबके लिए शिवसंकल्प बढ़ाएगी। पूज्यपाद स्वामी मुनीश्वरानंद ने जनता से इस अवसर पर सच्चा आर्य बनने का व्रत लेने का अनुरोध किया, हम उसी अवस्था में सच्चे वैदिक धर्मी बन सकेंगे।

महाशय धर्मपाल जी की संगीत मण्डली ने अपने मधुर संगीत एवं गीतों से समां बांध दिया। बहन कमला और कृष्णा जी ने सामूहिक गीत संगीत के साथ प्रस्तुत किया। अन्त में ब्रह्मचारी प्रियव्रत जी ने योगासन तथा सरिये को मोड़ने, कांच को चूर-चूर कर ब्रह्मचर्य की शक्ति का परिचय दिया।

आर्यसमाज श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज —प्रो० जैन
आत्मा को जाग्रत करें : पाखण्ड को दबाएं —श्री यादव

मन्दसौर। 'शिक्षक राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा करता है। वे टिमटिमाए नहीं वरन प्रज्ज्वलित हों। ये वेद दीपस्तम्भ हैं जो देश को गड्ढे में और हिमालय की ऊँची चोटियों तक ले जा सकते हैं।' उक्त विचार प्रो. रतनलाल जैन ने आर्यसमाज मन्दसौर के ऋषि बोध-रात्रि के कार्यक्रम मे रखे। श्री जैन ने आर्यसमाज को श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज बताया और महर्षि दयानन्द सरस्वती के बुद्धि बोध और चिंतन की बहुत सुन्दर व्याख्या की।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री डी. एम. यादव (जिला सत्र न्यायाधीश मन्दसौर) ने अपने वक्तव्य मे बताया कि आर्य सभ्यता ही सभी को पचाकर दृढ़ रही, जबकि अन्य सभ्यताएं टकराकर चूर-चूर हो गईं। जातिवाद एवं सामाजिक रूढ़ियों से परे हटकर आत्मा को जाग्रत करिये और पाखंड को दबाएं। श्री यादव ने स्वामी दयानंद सरस्वती को समाजवाद का प्रणेता निरूपित किया।

पं० लेखराम बलिदान दिवस

आर्यसमाज भटिण्डा में साप्ताहिक सत्संग के बाद पं. लेखराम बलिदान-दिवस मनाया गया। श्री धर्मदेव ने अपनी कविता प्रस्तुत की। ओम्प्रकाश आर्य ने महर्षि का चरित्र घर-घर पहुंचाने की तड़प, ३३ ग्रन्थों के लेखन, इकलौते पुत्र की मृत्यु की चिन्ता न करते हुए विधर्मियों से हिन्दुओं को बचाने के लिए जान की बाजी लगाने की घटनाओं का ब्योरा देते हुए आर्यपथिक लेखराम जी के बलिदान का ब्योरा जनता के सामने पेश करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

गाँव सुखेरा खेड़ा में आर्यसमाज की स्थापना। ९-१० मार्च के दिन मण्डी डबवाली से म. हुकमचन्द जी, डा. बधवा और आर्य वानप्रस्थाश्रम के अधिष्ठाता ओम्प्रकाश आर्य सुखेड़ा खेड़ा (जिला सिरसा) प्रचारार्थ गए। श्री राधेश्याम ने सपत्नीक यजमान बन कर यज्ञ कराया। तीनों आर्य सज्जनों के प्रभावशाली व्याख्यानों के बाद गाँव में आर्यसमाज की स्थापना हुई। प्रधान श्री राधेश्याम जी तथा मंत्री श्रीमान बाबूराम जी चुने गए।

आर्यसमाज बाजार सीताराम का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बाजार सीताराम का ६१वां वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० मार्च १९८१ को आर्यसमाज मंदिर में समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा। भू० पू० संसद सदस्य आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान् पं० शिवकुमार शास्त्री वेदों की कथा करेंगे। इस अवसर पर आर्ययुवक सम्मेलन, कवि सम्मेलन, आर्य सम्मेलन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है।

साउथ एक्सटेन्शन II के नए पदाधिकारी

नई दिल्ली साउथ एक्सटेन्शन नम्बर २ के नये पदाधिकारी - प्रधान—आर० के० कोहली, उपप्रधान—श्री देशराज खन्ना, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष—बलवंतराय खन्ना, आन्तरंग सदस्य—सर्वश्री आर० सी० दुबे, वेदप्रकाश मेहरा, अर्जुनदेव चड्ढा, लक्ष्मीनारायण बडेरा, सेठ आदि।

द० भारतीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के तत्वावधान में गुरुवार ७ मई से रविवार १० मई, १९८१ तक नरेन्द्रनगर (शालीबण्डा) हैदराबाद अवस्थित सुधा टाकीज के सामने आर्यनगर मैदान में द० भारतीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह तथा एकोत्तर शतज्योति (शतकुण्ड) गायत्री महायज्ञ की व्यवस्था की गई है।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में शास्त्रार्थ महारथी प० बिहारीलाल शास्त्री, प० शान्तिप्रकाश, ओम्प्रकाश जी खतौली वाले, महात्मा आर्यभिक्षु वानप्रस्थ, पं० सत्यभूषण जी सरर, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, ब्रह्मचारी आर्यनरेश, स्वामी विद्यानंद सरस्वती दीक्षित तथा वेदाचार्य सावित्री देवी वेद भारती आदि धुरन्धर विद्वानों के पधारने की आशा है।

आर्यसमाज झण्डेवालान का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज झंडेवालान एक्सटेन्शन (स्वामी रामतीर्थ नगर) का वार्षिकोत्सव शनिवार २८ मार्च और रविवार, २९ मार्च, १९८१ को झंडेवाला एक्सटेन्शन पार्क के दक्षिणी द्वार के समीप मनाया जाएगा। दोनों दिन यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है। यज्ञ के ब्रह्मा श्री जैमिनी शास्त्री होंगे। दोनो ही दिन सत्यपाल जी मधुर अपने भजन प्रस्तुत करेंगे। रविवार २९ मार्च को दोपहर १०॥ बजे आर्य सम्मेलन होगा। इस अवसर पर श्री रामगोपाल शालवाले, संसद सदस्य जे० के० जैन, पं० प्रेमचंद श्रीधर, पं० हरिदेव महोपदेशक, उषा जी शास्त्री, श्री कमल रसवन्त आदि पधारेंगे।

आर्यसमाज सराय रोहिल्ला में पं० लेखराम दिवस

रविवार १५ मार्च के दिन प्रधान दसौंधीराम जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज सराय रोहिल्ला में पं० लेखराम बलिदान-दिवस मनाया गया। पुरोहित गजेन्द्रपाल शास्त्री ने आर्यपथिक के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रधान जी ने स्मरण दिलाया कि जैसा प० लेखराम जी ने कहा था—वैसे ही आज भी उनका कहा सार्थक है—आर्यसमाज में तहरीर-लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिए।

आर्यसमाजों के सत्संग

२९-३-८१

अमर कालोनी—प्रो० सत्यपाल बेदार; आनन्द बिहार हरिनगर एल० ब्लाक—पं० ओमवीर शास्त्री; किंग्जवे कैम्प—श्रीमती सुशीला राजपाल; कालका जी—श्रीमती लीलावती आर्या; कालका जी डी०-डी०-ए० फ्लैट्स—पं० प्रकाशचन्द शास्त्री; गांधीनगर—पं० उदयपाल शास्त्री; गीता कालोनी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-1—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; जनकपुरी बी० ३/२४—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; तिलक नगर—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; तिमारपुर—पं० रामरूप शर्मा; दरियागंज—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; नारायण विहार डा० सुखदयाल भूटानी; पंजाबी बाग—आचार्य हरिदेव सि० भू०; बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—प० दिवाकर शर्मा तथा पं० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक; मोतीनगर—पं० प्रकाशवीर व्याकुल; मोती बाग—प० केशवचन्द्र मुन्जाल; रघुवीर नगर—पं० धीरव्रत शास्त्री; रमेश नगर—पं० खुशीराम शर्मा; विक्रम नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; राजौरी गार्डन—पं० अशोककुमार विद्यालंकार; सराय रोहिल्ला—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा पं० वेदव्यास भजनोपदेशक; सोहनगंज—प० ईश्वरदत्त एम० ए०; हौज खास डी-२०—पं० मुनिशंकर वानप्रस्थी।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार विभाग

महर्षि दयानन्द : एक अनहोना व्यक्तित्व

(पृष्ठ ४ का शेष)

नहीं हुआ है। यदि गांधीवाद में नैतिकता को स्थायित्व देने की क्षमता थी या है, तो यह आज की अनैतिकता क्यों कर व्याप्त हुई है?' वास्तव में राजनीतिक परिस्थितियों-प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय और भारत में जलियां वाला बाग में भारतीयों का जन-संहार और बाद मे द्वितीय विश्व महा-युद्ध—के कारण देश की जनता मे जो तूफानी मानसिक परिवर्तन एकाएक घटित हो गए थे, उसी के प्रभाव से देश की जनता और जन-नेता दोनों ही आगे बढ़े थे। इसी तूफानी वेग के सामने अंग्रेज शासक भी डिग गये और देश छोड़कर चले जाने के लिए तैयार हो गए, किन्तु जाते-जाते वे भारत को नष्ट करते गए। महर्षि दयानन्द के पट्ट शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा थे और श्याम जी कृष्ण वर्मा के प्रशस्त अनुयायियों मे देश से सदा के लिए अंग्रेज शासकों द्वारा निर्वासित लाला हरदयाल मूर्धन्य थे। देशवासियों के नाम स्वीडन से जो वसीयतनामा उन्होंने भेजा था उसमें स्पष्ट किया था—'अंग्रेजों को भारत से तब तक न जाने देना, जब तक तुम्हारी सेनाएं दर्रये खैबर और दर्रये बोलन पर अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर लेतीं!' किन्तु देश के बंटवारे को मंजूर करने वाले हमारे नेताओं को शायद इसका पता तक नहीं था। निदान देश का बंटवारा करके ही अंग्रेज यहां से गया और इस एक चाल से वह भारतवासियों के गले में विषधरियों के लाखों लाख विषधरों की माला बांध गया। परिणामतः देश के नेता जो परिस्थितियों के दबाव से आगे बढ़े थे, जब तक दबाव बना रहा था, अपनी जगह पाक-साफ बने खड़े रहे। किन्तु वे ही नेतागण और उनके ही पद्-चिन्हों पर चलने वाले दूसरे लोग, यहाँ तक कि उनके बेटे-पोते, और नाती-पनाती तक, जब परिस्थितियां बदलीं और दबाव जाता रहा तो, काठ के खोखले पुतलों की तरह लड़खड़ा कर गिर पड़े, और आज यहां तक गिर गये हैं कि अपने साथ-साथ देश को भी भ्रष्टाचार, दुरा-चार और अनाचार के गर्त मे गिरा दिया है। हम आज अपनी वय के ७४वें वर्ष में और सन् १९५४ से आज तक कांग्रेस (और कांग्रेस इ०) के क्रियाशील सदस्य रहकर भी अपने को हर क्षण क्यों असुरक्षित महसूस कर रहे हैं? बड़ी वेदना के साथ हम यह कहने के लिए मजबूर हैं कि देश की वर्तमान दशा को जो निम्नांकित विवरण श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित ने लखनऊ के दैनिक 'स्वतन्त्र भारत' के ३०-१-८१ के अंक में प्रस्तुत किया है (अपने एक ऐतिहासिक दृष्टि' शीर्षक लेख (१) में हम उसे सही मानते हैं। वह लिखते हैं:—

"...... व्यक्ति की झूठी प्रतिष्ठा ने गरीमता पाई है, सामाजिकता भंग हुई है, जातियों की कट्टरता बढ़ी है, द्वेष वैमनस्य, ईर्ष्या, व्यक्तिगत स्वार्थ, अहंकार, आर्थिक असमानता, सत्ता और सम्पत्ति जुटाने के लिए नैतिकता का सर्वनाश दिनानुदिन बढ़ता गया है। समाज का प्रत्येक क्षेत्र भ्रष्ट आचरण का शिकार है।......नीतिशास्त्र किसी घने कोटर में जा छिपा है......"

हमारा दृढ़ मत है कि यह सब गिरावट हमारी वर्तमान राजनीति में किसी ठोस नैतिक आधार न होने के ही कारण है। जिस प्रकार पाचन-क्रिया दूषित हो जाने से पुष्ट से पुष्ट भोजन भी देह को नहीं लगता, वैसे ही नैतिकता का स्वर नष्ट हो जाने से हमारी समस्त आर्थिक और भौतिक उन्नति बेकार हो गई है। अतः आज न केवल भारत अपितु समग्र विश्व और संपूर्ण मानवता के लिए जो अशान्ति और अन्धकार के महार्णव में भटक रहे [illegible] रहे हैं, उन सबको सनातन सत्य को मार्ग सुझाने के लिए दयानन्द के सिद्धान्त और आर्यसमाज ही एक मात्र प्रकाशस्तम्भ (Light House) है। (समाप्त)

सिविल लाइन,
सुलतानपुर

व्यास-आश्रम में योग साधना शिविर

इस वर्ष व्यास आश्रम सप्त सरोवर मार्ग, हरिद्वार में १ अप्रैल से ५ अप्रैल १९८१ तक बृहद् योग साधना शिविर आयोजित किया जाएगा। मुख्य अतिथि राजयोगाचार्य, श्री नारायणदास कपूर हठयोगाचार्य, कुमारी ललितजी एवं कुमारी अरुणा जी वेदों के मर्मज्ञ साधकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण द्वारा लाभान्वित करेंगे। प्रो. रामप्रसाद जी एवं जयदेव जी द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न होगा। समस्त यज्ञ-कार्यों के ब्रह्मा पूज्य महात्मा दयानद जी होंगे।

आर्यजगत् के मार्मिक विद्वान श्री आर्यभिक्षु, संगीत आचार्य महेश जी आदि प्रतिष्ठित महानुभाव पधारेंगे—

माता भागवन्ती, अधिष्ठात्री

वह अपूर्व साहस !

३० मार्च, १९१९ का दिन। दिल्ली में अभूतपूर्व हड़ताल हुई। सब टांगे तथा ट्रामगाड़ियां बन्द थीं। दोपहर के समय स्वामी श्रद्धानन्द जी को खबर मिली कि दिल्ली स्टेशन पर गोली चल गई है। वह तुरन्त वहां पहुंचे। वहां एकत्र भीड़ उनके नेतृत्व में कम्पनी बाग पहुंची। जल्दी ही सभा में २५ हजार की उपस्थिति हो गई। स्वामी जी भाषण दे ही रहे थे कि खबर मिली कि घण्टाघर पर गोली चल गई है और दस-बारह व्यक्ति घायल हो गए हैं। स्वामी जी ने उत्तेजित जनता को शांत रखा।

इसी बीच फौज ने सभा को घेर लिया। घुड़सवार दस्ते के साथ दिल्ली का चीफ कमिश्नर भी वहां आ गया। स्वामी जी ने चीफ कमिश्नर को चेतावनी दी—"यदि आपके आदमियों ने लोगों को उत्तेजित किया तो मैं शांतिरक्षा का जिम्मेदार नहीं हूं।"

सभा से लौटते हुए स्वामी जी घण्टाघर पहुंचे। गुरखे सिपाहियों ने पंक्ति बांध ली। इसी समय गोली दागने की आवाज आई। जनता को शांत खड़े रहने का आदेश देकर स्वामी जी अकेले गुरखा सैनिकों के सम्मुख पहुंचे। तुरन्त दो किरचें उनकी छाती पर तन गईं। सैनिकों ने कहा—"तुम्हें छेद देंगे।"

एक हाथ से उत्तेजित जनता को शांत करते हुए और दूसरे हाथ से अपनी छाती की ओर इशारा करते हुए स्वामी जी बोले—'मैं खड़ा हूं। गोली मारो।' इतने में आठ-दस और किरचें छाती पर तान दी गई।'

तीन मिनट तक यही दृश्य बना रहा। किरचें स्वामी जी की छाती तक पहुंच गई थीं कि एक घुड़सवार अंग्रेज ने सिपाहियों को वापस लौटाया। उस दिन वीर स्वामी श्रद्धानन्द जी के अपूर्व साहस से ही दिल्ली में शांति सुरक्षित रह गई।

—नरेन्द्र

आर्यसमाज स्थापना-दिवस मनाइए

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल और सभा के महामन्त्री प्रिंसिपल ओमप्रकाश ने समस्त आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं और आर्यजनों से अनुरोध किया है —

रविवार, ५ अप्रैल को आर्यसमाज के यशस्वी जीवन के १०६ वर्ष पूर्ण हो जाएंगे, आर्यसमाज की गरिमा के अनुकूल यह दिन मनाने के लिए निम्न कार्य-क्रम बनाया गया है—

१. ५ अप्रैल को चैत्र शुक्ल १ विक्रमी २०३८ मनाने के लिए प्रातः अपने आर्य मन्दिरों में प्रातः यज्ञ और ध्वजारोहण करें।

२. उस दिन रात को अपने घरों पर दीपमाला करें।

३. रविवार, २९ मार्च को समाजों में आर्यसमाज-स्थापना दिवस मनाएं, परिवारों में प्रेम भावना बढ़ाने के लिए सम्मिलित प्रीति-जलपान का आयोजन करें।

४. २-३-४ अप्रैल को प्रभात फेरी निकालें, क्षेत्रीय आधार पर इस दिवस का आयोजन करें।

५. आर्यसमाज के सिद्धान्तों और इतिहास के साहित्य को खरीद कर व्यापक रूप से वितरित करने का प्रयत्न करें।

आप स्मरण रखेंगे कि

रविवार-५ अप्रैल को साय ३॥ से ६॥ तक शास्त्री पार्क, करोल बाग में दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाएं, आर्यसमाजें और आर्यजन संयुक्त रूप से आर्य समाज स्थापना-दिवस मनाएंगे।

उसमें आप सब अधिक से अधिक गिनती में पहुंचे। आर्यसमाजें और आर्य-संस्थाएं अपने सदस्यों को सपरिवार बसों मे लाएं।

प्रत्येक आर्य भाई-बहन अपना दायित्व निभाएं।

आर्यसमाज के स्थापना-दिवस को सफल बनाइयें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७२७/१-बी, गुरुनानक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ : अंक २१ | रविवार १२ अप्रैल १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

देश पर चारों ओर से भयंकर खतरा

मुल्क का दूसरा बंटवारा न होने देंगे : दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशाल सभा में आर्यनेताओं की चेतावनी

जनता और सरकार समय पर सचेत हो जाएं

नई दिल्ली। 'इस समय देश पर चारों ओर से खतरा है, पजाब में फिर अलग मुल्क बनाने की मांग उठाई जा रही है, उत्तर प्रदेश को चार सूबों में बांटने की मांग की गई है। हैदराबाद के पास पहाड़ी शरीफ मे विश्व भर के पांच लाख मुसलमानो ने इकट्ठे होकर एक नए पाकिस्तान की माग की है। भारत में नए विदेशी प्रभाव क्षेत्र स्थापित करने के लिए विदेशी ताकतें अरबों रुपयों की धनराशि खर्च कर रही है':—इन शब्दों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने रविवार के दिन शास्त्री पार्क करोलबाग में आर्यसमाज स्थापना-दिवश पर आर्य केन्द्रिय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित विशेष सभा में एकत्र आर्यजनता को चेतावनी दी।

वर्ष-प्रतिपदा के दिन आर्यसमाज की स्थापना को १०६ वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इस अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों और आर्यसंस्थाओ की ओर से एक सम्मिलित कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। आयोजन में उपस्थित आर्यजनों से श्री शालवाले ने कहा-इस समय देश को खतरा है, वैसा इसमे पहले पहले कभी नही था। हैदराबाद से श्री रामचन्द्रराव वंदेमातरम् ने जमाते इस्लामी का वह पोस्टर भेजा है, जिसमें देश के नए बंटवारे द्वारा नए पाकिस्तान की मांग की गई है। विदेशी ताकते लाखों रुपए को धनराशि लगाकर देश में अपने प्रभावक्षेत्र बना रही हैं। अरबों की धनराशि से मुरादाबाद के पास दो अरबी, विश्वविद्यालय स्थापित करने की कोशिश चल रही थी, अब वहां दो मुस्लिम बस्तियां बनाई जा रही हैं। आर्यसमाज वहीं उनके पास अपनी आर्य-भारतीय बस्ती बनाने की कोशिश करेगा। हम यहां प्रण करते हैं कि देश का दूसरा बंटवारा न होने देंगे। देश में दूसरा पाकिस्तान नहीं बनने देंगे।'

सभा के अध्यक्ष भू० पू० संसद सदस्य एवं सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने आर्यजनता को को चेतावनी दी कि जनता की गरीबी, अशिक्षा का लाभ उठाकर विदेशी ताकतें अरबों रुपए झोंक कर हमारी गरीबी का अशिक्षित जनता को प्रलोभन द्वारा विधर्मी बनाने के लिए तुल गई हैं, हमे इस खतरे का मुकाबला करना होगा। भारत सरकार के इस विदेशी पैसे का नियन्त्रण कर इस विदेशी षड्यन्त्र का अंत करना होगा। यह केवल देश की जनता मे धर्मपरिवर्तन का सवाल नही है, यह भारत धर्म के सस्कृति और उसके अस्तित्व का सवाल है। विदेशी ताकतें अरबो रुपए झोंककर देश का इस्लामीकरण और ईसाई करण करने के लिए तुल गई हैं। ५०००करोड़ से कही अधिक राशि इस घृणित लक्ष्य के लिए लगाई जा रही है।

आर्यसमाज नई दिशा दे

इस अवसर पर भाषण देते हुए प्रो० बलराज मधोक ने कहा—'इस समय आर्यसमाज ही देश को नई दिशा दे सकता है। आज राष्ट्र में आत्मविश्वास पैदा करना होगा। इस भूमि को जो अपना माने उसके लिए जो कुर्बानी-त्याग को वही इसका नागरिक माना जाना चाहिए, शेष सबको हमें विदेशी मानना होगा। आज हमें देश में राष्ट्रवाद की आवाज गुंजानी चाहिए, प्रत्येक देशवासी का भारत विकास होना चाहिए।'

छात्रों से अनुरोध

दिल्ली के छात्र-आंदोलन के नेता एवं श्री रामगोपाल शालवाले के पौत्र छात्र-नेता श्री संजयकुमार ने चेतावनी दी कि इस समय असम विक्षुब्ध है। वहां का छात्र भारत राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा कर वहां से विदेशी मुसलमानो को निकालने के लिए प्रयत्नशील है। अहमदाबाद और गुजरात के दूसरे नगरो के छात्र आर्थिक दृष्टि के आधार पर आरक्षण करना चाहते हैं। एक गरीब को पढने के लिए जीवन में बढने के लिए शिक्षा का मौका मिलना चाहिए, चिकित्सको की नियुक्ति करते समय अयोग्य, अनुभवहीन व्यक्तियों को लेना जनता की जिंदगी से खिलवाड करना होगा। आज बगाल मे विरोध की आवाज को प्रकट करने का मौका नही है, गोआ में विदेशी कामुकता और नग्नता का नृत्य कर रहे हैं, आज राजनीतिक दल अल्पसख्यको के वोटो के लिए सौदेबाजी कर रहे हैं। मैं युवको से अनुरोध करता हूं कि वे एक राष्ट्रभाषा, एक राष्ट्र और नमस्ते के एक अभिवादन के माध्यम से देश को एक और सयुक्त करने का सकल्प कर उसे पूरा करने के लिए जुट जाए।

आर्यसमाज के विद्वान सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने कहा कि पिछले सौ वर्षों मे हम काफी बढ़े हैं, परन्तु आज नये मत-मतातरों, पाखंडों से हमारी मंजिल की दूरी बढ गई है। शंकराचार्य और पौराणिक पडित वेदों के सायण भाष्य पर चिपटे हुए हैं, फलत: वे वेदों की भ्रात व्याख्या करने हैं और यह मानने के लिए तैयार नहीं हैं 'कि वेदों में पशुओ की आहुति का निषेध है।

ब्रह्मचारी आचार्य नरेश ने कहा कि रामायण-महाभारत की सुरक्षा कर पौराणिक भाइयों के—तम्बाकू और धूम्रपान का विरोध कर सिखों के ब्रह्मचर्य एव गोरक्षा के प्रश्न पर नामधारियों के और भोग की प्रतिष्ठा कर ब्रह्मकुमारियों ने सिद्धान्तो की आर्यसमाज ने रक्षा की है। इन सबको आर्यसमाज के झड़े के नीचे एकत्र होना चाहिए।

सुश्री उषा शास्त्री ने आर्यजनता से अपने जीवन मे यज्ञ की भावना लाने का अनुरोध किया—

कवि मनीषी का आह्वान 'भारत की इज्जत नीलाम नही होने देंगे,' जनता को बहुत पसन्द आया।

पहले परिवार को आर्य बनाएं

मुनीश्वरानन्द जी का उद्बोधन

दिल्ली। हम 'इतने वर्षों मे सारी सृष्टि को आर्य क्या बनाते, केवल दिल्ली शहर को भी आर्य नही बना सके अब अब हमे व्रत लेना चाहिए कि प्रत्येक आर्य वर्ष भर में अपने पूरे परिवार को आर्य बनाएगा।''—इन शब्दों मे त्रिवेदतीर्थ स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर 'ओ३म्' की पताका लहराते हुए आर्यजनों का उद्बोधन किया।

स्वामी जी ने कहा—'ओ३म्' की पताका अवतारवाद और पाषाण-पूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद की पताका है. आर्यसमाज स्थापना का दिन वस्तुत: वैदिक धर्म की पुन: प्रतिष्ठा का दिवस है, यह जन्म से जातिवाद के स्थान पर गुण-कर्म से आर्यत्व की स्थापना का दिन है, आज का दिन, सच्चे भाई चारे का दिन है, वेदों की पुन. प्रतिष्ठा का दिन है।'

मुनीश्वरानंद जी ने कहा—'महर्षि हमें जो काम सौंप गए हैं, उसे हमें त्याग, तपस्या और एकता से पूरा करना होगा, हमें जीवन में सच्चा सन्यासी, तपस्वी, परोपकारी आर्य बनना होगा, हम वेदों की प्रतिष्ठा करें, गुण-कर्मों के आधार पर सच्चे पुरुषार्थ से आर्यत्व का विस्तार कर ही ऋषि-ऋण पूरा कर सकते हैं।'

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

तीन आयु प्राप्त हों !

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुष तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् ॥
यजुः ३-६२

ऋषि :—नारायण। देवता—रुद्र.।

शब्दार्थ—(जमदग्नेः) जमदग्नि के पूर्णायु प्राप्त करने का कारण (त्रि—आयुषम) तीन जीवन शक्तियो का उपयोग है। (कश्यपस्य) कश्यप के सम्पूर्ण जीवन के आनन्दमय बनने का कारण (त्र्यायुषम्) तीन प्रकार का आहार है। (देवेषु) दिव्य पितरो या विद्वानो मे (यद्) जिस प्रकार का प्रयोग (त्र्यायुषम्) आयु की तीनो अवस्थाओं मे किया जाता हैं (त्र्यायुष नः) हम भी अपने जीवन की तीनों अवस्थाओ मे (तद्) उसी प्रकार का प्रयोग (अस्तु) प्राप्त करें।

निष्कर्ष—१—जमदग्नि का यह नाम जाठराग्नि, प्राणाग्नि तथा ज्ञानाग्नि के प्रज्वलित करने के कारण सार्थक है। यदि हम भी जमदग्नि की तरह अपनी जाठराग्नि को प्रज्वलित रखेगे तो स्वस्थ तथा नीरोग रहेगे। प्राणसाधना से मन शांत रहेगा और ज्ञान साधना से आत्मा ज्ञान से प्रदीप्त रहेगा।

२—कश्यप का नाम सर्वत्र आँखें खोल कर भले-बुरे के विचार सहित देखने के कारण सार्थक है। हम भी यदि उसकी तरह अन्नमय तथा प्राणमय कोश को वर्चस्वी बनाने वाले अन्न (ब्रह्म) का आहार करेंगे, मनोमय कोश को ईर्ष्या द्वेष आदि आसुरी प्रवृत्तियों से बचाने के लिए वर्म (कवच=संयम) का प्रयोग करके आहार करेंगे, और विज्ञानमय कोश को ज्योतिर्मय बनाने के लिए ज्ञान वर्चस का आहार करेंगे तो कश्यप बनेंगे और उसकी तरह जीवन की तीनों अवस्थाएं बाल्य, यौवन तथा वार्द्धक्य आनन्दमय बन जायेंगी।

३—देवों, पितरों तथा विद्वानों का बाल्य, यौवन तथा वार्द्धक्य तीनो अवस्थाओ को गुजारने का यही प्रकार है। हम भी उनका अनुकरण करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन उसी प्रकार गुजारें।

४—मनुष्य की आयु १०० वर्ष मानी गई है। शतायुर्वैपुरुष.। जीवेम शरदः शतम। इस मन्त्र मे त्रिगुणित आयु की चर्चा है, इसलिए महर्षि दयानद ने इस मत्र के भावार्थ मे लिखा है 'हे जगदीश्वर भवत्कृपया यथा विद्वान्सो विद्या-परोपकार धर्मानुष्ठानेन आनन्दतया त्रीणि शतानि वर्षाणि याव दायुर्भुञ्जते तथैव वयं त्रिशत वर्षं चतुः शत वार्षं वायुः सुखेन भुञ्जीमहि' आपकी कृपा से हम भी ३०० या ४०० वर्षों तक सुखपूर्वक जीवन भोगे।

विशेष—इस मत्र का ऋषि (न+रमते)=नर कुल में उत्पन्न होने के कारण नारायण बना है, जैसे गर्ग कुलोत्पन्न गार्ग्यायण कहलाता है, इसलिए यदि हम उस संकेतों को ग्रहण करके अनासक्त=निष्काम=नर कुलागत परम्परा में विशिष्टता प्राप्त करेंगे तो सम्भवतः तीन सौ वर्ष की आयु भी प्राप्त कर सकेंगे।

नारायण (सगरहित) रुद्र तो बन ही जाता है, क्योंकि वह अनासक्त होकर सबको सन्मार्ग पर लाने के लिए उपदेश देता है। सबके दु खो को दूर करने का प्रयत्न करता है और दूसरों को दुःख देने वाले दुष्टों को बिना पक्षपात के दण्ड देकर रुलाता है। रुद्र के तीन कार्य, आयु की तीन अवस्थाएं, जीवनकाल को सुखी बनाने के लिए तीन आहार तथा जीवन शक्तियां आयु के त्रिगुणित होने की सम्भावना प्रकट करती हैं।

अर्थ पोषक प्रमाण—त्र्यायुषम्
Three fold vital power. ग्रिफिथ
Threefold period of life. ,,

त्र्यायुषम्—क—विद्या शिक्षा परोपकार सहित त्रिगुणमायु.।

ख—बाल्ययौववृद्धावस्था सुखकरं त्रिगुणमायुः।

ग ब्रह्मचर्य गृहस्थवान प्रस्थाश्रम-सुख संपादकं त्रिगुणमायुः।

घ—त्रिशतवर्षं चतु.शतवर्षं वायुः सुखेन भुञ्जीमहि।

—स्वामी दयानन्द

आयु·—एति प्राप्नोति सर्वान्—जीवन कालः। उणादिकोशः। वर्ण.—विज्ञानं स्वामी दयानन्द

जीवन दायिनी शक्तिः। आपटे आयुष=आयु। आयु—जीवन शक्ति, आहार—जीवन काल। मानक हिन्दी-कोश।

आयुषम्—आयुष्यम्—आयु के लिए हितकर।

जमदग्नि :—प्रज्वलिताग्नयः निरु. ६-२४। जिसकी जठराग्नि, प्राणाग्नि तथा ज्ञानाग्नि प्रज्वलित (प्रगतिमय) हैं। जमति—गच्छति नि. २-१४

कश्यप—पश्यतीति। कश्यपः पश्य को भवति सर्वं पश्यतीति सौक्ष्म्यात्।
तै० अ० १-८

रुद्र :—क. रुतः सत्योपदेशान् ददाति।

ख. रुद्—दुःख दुःखहेतुर्वाद्रावयति।

ग. रोदयति पापिनः।

आयुवर्द्धक कश्यप के तीन गुर—
परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य
ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा
मानुषीख सृष्टा वधाय ॥
अथर्व १७ १-२८

—मनोहर विद्यालकार

जीओ तो सम्मान से : मरो तो सम्मान से

यूनान के विवरणों में लिखा है कि सिकन्दर के शासन के विरुद्ध भारत का बुद्धिजीवी वर्ग अपना उग्र रोष हर दृष्टि से प्रकट करने के लिए तत्पर था। सिकन्दर के विरुद्ध एक भारतीय राजा को भड़काने वाले ब्राह्मण से यवनराज सिकन्दर ने पूछा—'तुम क्यों इस राजा को मेरे विरुद्ध भड़काते हो ?'

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—'मैं चाहता हूं, यदि वह जीए तो सम्मानपूर्वक जीए अन्यथा सम्मानपूर्वक मर जाए।'

एक ब्राह्मण संन्यासी ने सिकन्दर से कहा था—तुम्हारा राज्य सूखी हुई खाल के समान है, जिसका कोई गुरुता-केन्द्र नहीं होता। जब सिकन्दर राज्य के एक पार्श्व पर खडा होता है तब दूसरा हिस्सा उसके खिलाफ उठ खड़ा होता है।'

तक्षशिला के एक बूढ़े दण्डी संन्यासी को सिकन्दर के सामने यह डर दिखा कर लाने की कोशिश की गई कि सिकन्दर तो संसार के स्वामी द्यौः (ज्योस) का पुत्र है, यदि तुम उसके सामने नहीं आओगे तो वह तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर देगा।'

यह सुनकर उस दण्डी संन्यासीने उपेक्षा की हंसी में कहा था—'जिस प्रकार सिकन्दर द्यौः का बेटा है, उसी प्रकार मैं भी द्यौः का पुत्र हूं। मैं अपनी मातृभूमि भारत से पूरी तरह खुश हूं जो माता के समान मेरा पालन-पोषण करती है। यदि सिकन्दर गंगा के पार की भूमि में जायेगा तो नन्द की सेना उसे यह दिखला देगी कि वह अभी सारे संसार का स्वामी नहीं हुआ है।'

पश्चिमोत्तर भारत मे सिकन्दर के विरुद्ध जो विद्रोह हुआ था वस्तुतः वह जन-विद्रोह था, उसका नेतृत्व तत्कालीन बुद्धिजीवी वर्ग ने किया था।

—नरेन्द्र

अहमदाबाद के चार लाख हरिजन दुविधा में

गुजरात के आन्दोलन की प्रतिक्रिया : हरिजन क्षेत्रों में आर्य नेता तुरन्त पहुंचें : हरिजनों को मुसलमान बनाने की कोशिश

आर्य नेता श्री आनन्द प्रिय की सामयिक चेतावनी

बड़ौदा, हिन्दू धर्मरक्षक प्रसारक मण्डल कारेली बाग, आत्माराम-पथ, बड़ौदा के प्रधान, तथा गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान आनंदप्रिय ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले से अनुरोध किया है कि—'इस समय चार-पांच मूर्द्धन्य संन्यासी अहमदाबाद में जाकर अड्डा जमाएं और सब हरिजनों में विश्वास प्रकट कर उन्हें सामूहिक रूप से आर्य बनने के लिए प्रोत्साहित करें, अन्यथा मुसलमान मौलवी, पादरी,और बौद्ध साधु आदि धर्मों के प्रचारक अहमदाबाद में अड्डा जमाकर प्रचार कर रहे हैं कि हमें अरब राज्यों और विदेशों से असीम धनराशि मिल रही है, वे उन्हें उकसा रहे हैं, हमारी शरण आओ, इससे तुम हरिजनों की गरीबी दूर हो जाएगी।'

श्री आनंदप्रिय ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान से अनुरोध किया है कि आपने जिस प्रकार मुरादाबाद में हरिजनों की सेवा करके आर्यसमाज की शान बढ़ाई, इस समय दिल्ली के प्रमुख आर्य अहमदाबाद जाकर जुट जाएं तो भारी काम होगा।

आनंदप्रिय जी ने चेतावनी दी है—'गुजरात में जो आंदोलन हो रहा है, उसका रूप विकृत हो चुका है। वर्ग-विग्रह के रूप में चलाया जाने वाला यह आंदोलन चार लाख हरिजन मजदूरों के केन्द्र अहमदाबाद में बिगड़ गया है, इन हरिजनों को प्रेरणा दी जा रही है कि हिन्दू-धर्म त्याग दें। उन्हें पैसों का प्रलोभन देकर मुसलमान बनाने की कोशिश की जा रही है। बहुत से हरिजन इस प्रलोभन के शिकार बन सकते हैं! अम्बेदकरवादी चाहते हैं कि वे बौद्धधर्मी हो जाएं, ईसाई लोग भी प्रयत्नशील है, आशा है आर्य नेता और सार्वदेशिक सभा इस सम्बन्ध में तुरन्त कार्यवाही करेंगे।

हम निर्भय हों !

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥

जिस प्रकार आकाश और पृथ्वी—दोनों ही न दुःख देते हैं और न भयभीत होते हैं, उसी प्रकार हे मेरे प्राण, तू भी भयभीत न हो ।

क्या हम उन्हें भूल गए हैं ?

१०६ वर्ष पूर्व १२ अप्रैल, १८७५ के दिन आर्यसमाज संस्था का सूत्रपात हुआ था । पिछले सप्ताह देश-विदेशों में आर्यसमाज—स्थापना दिवस मनाया गया । इस अवसर पर संस्थापक के अद्वितीय व्यक्ति, कृतित्व एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों नियमों और उनके वर्तमान विस्तार तथा भावी सम्भावनाओं पर ज़ोरदार भाषण हुए, सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकार किए गए । यह सब ठीक है, परन्तु कुछ ऐसा लगता है कि हम आज अपने उन अगणित अनाम आर्यबन्धुओं को भूल गए हैं, जिन्होंने बड़े साहस के साथ आर्यसमाज और उसके कार्य को लोकप्रिय बनाया था । हम उन तपस्वी, और तन-मन-धन की आहुति देने वाले हुतात्माओं और शहीदों को भी भूल गए हैं जिन्होंने धर्म, समाज, जाति के लिए अपनी बलि दी थी । हम उन आर्य सत्याग्रहियों और शहीदों को भी भूला बैठे हैं, जिनके बलिदान से आर्यसमाज ने अन्यायी शासको, अत्याचारी सम्प्रदायवादियो, महन्तों, मठाधीशों से टक्कर ली थी । सम्भवतः हम उन आर्यजनों को भी भुला बैठे हैं जिन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम, मे, भाषा, स्वसमाज-सुधार, कुरीतियो के निवारण के लिए बिना आगा-पीछा किए अपने सर्वस्व की बलि दे दी ।

सदा मन्दिरो और इमारतों के कंगूरे ही चमकते हैं । मस्तूल और स्तम्भों पर लगी पताकाएं और तोरण ही फहराते हैं, परन्तु ये इमारतें तथा ऊंची पताकाएं—विजयध्वज सदा नींव के पत्थरों पर आश्रित होते हैं । हम यह भूल नहीं सकते कि वस्तुतः आर्यसमाज पिछली शती का जन-आंदोलन था । आर्यसमाज की प्रगति का इतिहास असल में नवभारत के पुनर्जागरण का इतिहास है । इसका प्रत्येक व्यक्ति नेता था, हर व्यक्ति ही मानो कोई कर्मठ सस्था था । परिस्थिति और समय के तकाजे को देखते हुए जो उचित होता था, वह उसे कर गुजरता था । यह उल्लेखनीय तथ्य है कि जहाँ देश की दूसरी राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के अखिल भारतीय केन्द्रीय सगठन पहले बने, बाद में उनका प्रादेशिक और क्षेत्रीय विस्तार हुआ, इनकी तुलना में आर्यसमाज का एक अनूठा इतिहास है । गांव-गांव, मुहल्ले-मुहल्ले, कस्बे और नगर-नगर में आर्यसमाज पहले पहुंचा, उसके प्रादेशिक, विविध देशीय और सार्वदेशिक सगठन बहुत बाद मे बने । इसी के साथ आर्यसमाज के प्रसार का श्रेय न बड़े धनिकों को है , न विख्यात नेताओं और बड़े विद्वानों को है, प्रत्युत इसका प्रसार तो जन-जन, नगर-नगर, और गांव-गांव के जागरण के साथ हुआ ।

आज देश के सामने गरीबी, बेकारी, भूख, रोग आदि के अभाव तो हैं ही, देश का बुद्धिजीवी एवं तरुण वर्ग विलासिता और भोग की सामग्रियों में लिप्त होकर आराम और वासना की खोज में बुरी तरह से भटक रहा है । आर्यसमाज का इतिहास त्याग-बलिदान की नींव पर बना है । सहस्रों आर्यजनों ने अपनी निष्ठा, सात्विकता और त्याग के बल पर ही समाज और राष्ट्र को आगे बढ़ाया है । आज भोग के स्थान पर त्याग की फिर पूजा हो, कुर्सी, सत्ता और लक्ष्मी के स्थान पर पुनः विद्वत्ता और गुणों का आदर हो, उसके लिए आर्यसमाज को राष्ट्र के जीवन में नैतिकता और त्याग के आदर्शों की पुनः प्रतिष्ठा करनी होगी । यह कार्य सरल नहीं है । स्वाधीनता-आन्दोलन और समाज के प्रारम्भिक जीवन में जिस प्रकार आर्यजनों ने नेतृत्व की अपेक्षा न कर अपने व्यक्तिगत दायित्व को सर्वोपरि माना था, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक आर्यजन को दूसरों से अपेक्षा न कर पुराने आर्यजनों के त्याग-बलिदान से प्रेरणा कर उनके चरण चिह्नों पर चलना होगा । केवल ऐसी ही स्थिति में हम उन शहीदो और कर्मठ आर्यजनो को स्मरण कर उनकी थाती सुरक्षित रख सकेंगे ।

'खालिस्तान' : एक राष्ट्रविरोधी मांग

पिछले दिनों सिखों की दो संस्थाओं द्वारा पृथक् सिखराज्य की माग फिर उठाई गई है । इन संस्थाओ द्वारा की गई यह मांग पूरी तरह राष्ट्रद्रोहपूर्ण है । अभी तक सिखों का प्रमुख खालसा दीवान सिखों की शैक्षणिक और सामाजिक उन्नति के कार्य में ही संलग्न था, पिछले दिनों इस दीवान ने अपने चडीगढ़—अधिवेशन में पृथक् सिख राष्ट्र की मांग करते हुए सुरक्षा परिषद् में सहायक सदस्यता की मांग की थी । अब पंजाब भर के ऐतिहासिक पूजा स्थलो, पर अनगिनत स्कूलों, कालेजों, अनाथालयों, अस्पतालों, गुरुद्वारों, धार्मिक स्थानों की व्यवस्था करने वाले तथा समस्त 'चढ़ावों' आदि का नियन्त्रण करने वाली संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने एक सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकार कर मांग की है कि दूसरे भारतीयों से पृथक् एक सिखराज्य स्थापित किया जाए ।

इस संस्थाओं ने अभियोग लगाया है कि सरकार सिखो से भेदभाव करती है, उन्हें अपना उचित अधिकार नहीं मिलता । इस अभियोग की परीक्षा तथ्यों से करने को वह असत्य सिद्ध होता है । इस समय सिख भारत की जनसंख्या के केवल दो प्रतिशत तक हैं, इसके बावजूद उन्हें भारत की सुरक्षा सैन्य में दस प्रतिशत स्थान प्राप्त हैं । जनसख्या में उनके प्रतिशत की अपेक्षा पुलिस और प्रशासन मे उन्हें कहीं अधिक स्थान दिए जाते हैं । नाममात्र की—लगभग एक दो प्रतिशत अधिक जन-संख्या होने के कारण जब से अलग पंजाबी सूबा बना है, तब से वहाँ की शिक्षा-संस्थाओं और प्रशासन में पजाबी का बोलबाला है, वहाँ हिन्दी की उपेक्षा है । पंजाबी सूबे के बनने के बाद से वहां सदा सिख ही मुख्य मन्त्री बना है, कभी ४६ या कुछ कम प्रतिशत हिन्दुओ के प्रतिनिधियो को प्रशासन का प्रमुख बनने का सौभाग्य नही मिला । केन्द्रीय मन्त्रिमंडल के सदस्यो तथा राज्यपालो के रूप मे सिख हमेशा नियुक्त किए गए हैं । ये तथ्य सिखों से भेदभावपूर्ण व्यवहार का अभियोग झुटलाते हैं और स्पष्ट करते हैं कि उन्हें उनके अधिकारों एव प्राप्तव्य से कहीं अधिक मिल रहा है ।

अभी तक सिखों के तथाकथित उग्रवादी साम्प्रदायिक तत्त्व ही पृथक् सिख-राज्य-खालिस्तान की मांग करते थे, परन्तु पहली बार यह मांग उन सस्थाओ की ओर से की गई है जो अभी तक सम्प्रदाय की शैक्षणिक, सामाजिक और साम्प्रदायिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील थे । अब इन संस्थाओं द्वारा भी पृथक् मजहबी राष्ट्र की मांग करना, सिखों को एक पृथक् अन्तर्राष्ट्रीय जमात घोषित करने की माग उठाना आसन्न खतरे की सूचना है । यह भी उल्लेखनीय है इस माग के पीछे सयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में बसे कुछ मजहबी सिख हैं और वे संसार की बडी शक्तियों और पडोसी पाकिस्तान के आकाओं से सीधा नाता-रिश्ता कायम करना चाहते हैं । भारत अभी तक भी देश के एक साम्प्रदायिक विभाजन के अभिशाप से मुक्त नही हुआ है, उसके सामने एक नए सम्भाव्य सकट का खतरा मण्डरा रहा है । देश की सम्पूर्ण राष्ट्रवादी शक्तियों को इस नए खतरे का मिलकर सामना करना चाहिए ।

चिट्ठी-पत्री

अत्यधिक सामयिक एवं उपयोगी

द्रोणाचार्य महाविद्यालय हरियाणा के सेवानिवृत प्राचार्य वेदशिरोमणि आर्येन्द्र शर्मा (१३८, जैकमपुरा, गुड़गांव, हरियाणा) लिखते हैं — 'आपका साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' आर्य विचारधारा का निरन्तर प्रसार कर रहा है, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं । 'भारत को विधर्मी बनाने का षडयन्त्र' शीर्षक आपका सम्पादकीय अत्यधिक सामयिक एव उपयोगी है ।

श्री मनोहर विद्यालंकार द्वारा स्थायी स्तम्भ 'वेद-मनन' में प्रकाशित 'यज्ञ-भावना का विस्मरण ही यज्ञ की हिंसा है' प्रत्येक आर्य के लिए पठनीय एव-मननीय तथा कार्यरूप मे प्रतिपादनीय है । आशा है कि 'आर्यसन्देश' इसी प्रकार आर्यजगत् को निरन्तर उद्बोधित करता रहेगा ।'

१३ अप्रैल, १९१९, जलियांवाला बाग की खूनी होली

सेवाकार्य और सत्याग्रह संग्राम में अग्रगण्य आर्यसमाज

पहले महायुद्ध में भारत से जन और धन की प्राप्ति के लिए विदेशी सरकार ने जहां भयंकर अत्याचार किए, वहां साथ में इस आशय के आश्वासन देने में भी कोई सकोच नहीं किया कि युद्ध में विजयप्राप्ति के बाद भारत को औपनिवेशिक स्वशासन दे दिया जाएगा।

विजय प्राप्ति के बाद, तत्काल, विदेशी सरकार की नीयत बदल गयी। औपनिवेशिक 'स्वशासन' देने के बदले समस्त देश द्वारा एक स्वर से प्रबल विरोध के बावजूद रालेट एक्ट=काला कानून-जारी करने की घोषणा की जिसके अन्तर्गत पुलिस और नौकरशाही को बिना वारंट के भी सदिग्ध 'व्यक्ति' होने के बहाने किसी भी व्यक्ति को पकडने और घर की तलाशी लेने के अधाधुंध अधिकार दे दिए गए थे।

गाँधी जी ने इस काले बिल को राष्ट्रीय अपमान घोषित करते हुए इसके विरोध मे समूचे देश मे सत्याग्रह द्वारा प्रबल आदोलन करने की घोषणा की। कांग्रेस ने तत्कालीन नेताओं—लोकमान्य तिलक चितरजनदास, ला० लाजपतराय इत्यादि—और नरम दल के नेता—श्री निवास शास्त्री सी. वाई. चिन्तामणि सर फीरोजशाह मेहता- इत्यादि किसी ने भी गाधी जी के सत्याग्रह प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए। समूचे देश में केवल एक ही ऐसा उल्लेखनीय और साहसी नेता था जिसने इस प्रतिज्ञापत्र सबसे पूर्व डके की चोट हस्ताक्षर किए। यह थे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जिन्हे गाँधी जी अपना बड़ा भाई कहते व मानते थे। गाँधी जी के अफ्रीका सत्याग्रह मे गुरुकुल कांगड़ी के प्राचार्य और मुख्याधिष्ठाता के रूप में स्वामी जी (उस समय महात्मा मुंशीराम) के छात्र और अध्यापकों सहित मजदूरी कर और एक समय का भोजन त्याग कर जो धनराशि बचायी वह श्री गोखले द्वारा द० अफ्रीका में गाँधी जी को सन् सन् १९१५-१६ मे भिजवाई। इससे गाँधी जी अत्यन्त प्रभावित हुए। आर्य समाज के नेता के रूप में स्वामी श्रद्धानंद जी के इस सत्याग्रह में, गाँधी जी के साथ, देश का नेतृत्व ग्रहण करने का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज—देश की एक मूर्धन्य संस्था के सामूहिक व व्यक्तिगत–रूप में सत्याग्रह आंदोलन मे सक्रिय सोत्साह भाग लेने लगा।

दिल्ली के बेताज बादशाह : "मेरी छाती पर गोली मारो" स्वामी जी

१९१९ फरवरी, घटनाचक्र में तेजी आई। इससे पहले ही गाँधीजी की गिरफ्तारी और गुजरात वापसी की खबर आग की तरह सारे देश मे फैल गया। उस दिन ३० मार्च ही था। दिल्ली मे रेलवे स्टेशन के पास दंगा हो गई। गोली चल गई। स्वामी श्रद्धानन्द उन दिनों, दिल्ली के बेताज बादशाह थे। ३-४ आदमी मर गये। शाम को जामा मस्जिद के सामने परेड के मैदान में आर्यसभा थी। वातावरण गर्म था। मस्जिद के मच से स्वामी श्रद्धानन्द का, वेदमंत्र पाठ के साथ अहिंसा और शान्ति के साथ, आन्दोलन चलाने और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण हुआ। हजारों-लाखो की भीड थी। सभा के बाद स्वामी जी के नेतृत्व में उनके पीछे सर्वथा मौन चली आ रही जनता का जलूस जब चांदनी चौक घटाघर के पास पहुंचा, तब गोरे सार्जेंट और गोरखा सिपाही जनता की ओर बंदूक ताने खड़े थे। स्वामी जी ने अपनी स्वभाविक के निर्भयता के साथ सार्जेंट के सामने अपनी छाती खोल ऊंचे स्वर में कहा—'इस जलूस का नेता मैं हूं। गोली चलानी है तो मेरी छाती पर चलाओ। इस शाम, बेकसूर जनता पर गोली क्यों चलाते हो। स्वामी जी के इस आत्मविश्वासपूर्ण, साहस और निडर, भरे शब्दों से सार्जेंट एकदम हतप्रभ हो गया। उसके हुकुम से संगीनें नीचे झुक गईं। स्वामीजी के पीछे आ रहा हजारो का जलूस शान्तिपूर्वक आगे बढ गया।

पर यह समाचार बिजली की तरह कुछ ही समय मे सारे देश मे फैल गया। चारों ओर से स्वामी जी की इस असाधारण निर्भयता से सत्याग्रह आंदोलन मे प्रबल तेजी आ गई। गाँधी जी ने स्वामी जी को इस साहस के लिए बधाई देते हुए कहा—स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निर्भय व्यक्ति मैंने अपने जीवन में नहीं देखा।'

पंजाब में फौजी कानून : नेतृत्व आ. स. के हाथ में

घटनाचक्र ने पंजाब मे आकर विकट रूप धारण कर लिया। पंजाब का लेफ्टि. गवर्नर ओडवायर अत्यन्त नृशंस, क्रूर और अत्याचारी शासक था। उन दिनों पजाब के गांवों में नौजवान कम ही दिखायी देते थे। सबको जबदस्ती फौज में भरती कर लिया गया था। खून पीने वाली जोक की तरह अमीर-गरीब सबसे धन चूस लिया गया था। पजाब में रालेट-एक्ट विरोधी और सत्याग्रह दिवस ६ मार्च १९१९ निश्चित किया गया था। पंजाब का नेतृत्व-राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक—आर्यसमाज के ही हाथ में था। ९ मार्च को रामनवमी का त्यौहार था। उसी दिन प्रान्त के कांग्रेस नेता और प्रमुख आर्यसमाजी अमृतसर निवासी डा. सत्यपाल, चौधरी बग्गा, और मुस्लिम नेता डा. किचलू—इन सबको पकड़ किसी अज्ञात स्थान में नजरबन्द कर दिया गया।

महाशय कृष्ण को लाहौर के किले में कालकोठरी मे बन्द कर दिया गया। इसी प्रकार कांग्रेस नेता व प्रमुख आर्य ला० दुनीचन्द, हरकिशनलाल, ला० दुनीचन्द बैरिस्टर, रामभजदत्त चौधरी व अन्य नगरों-रावलपिंडी गुजरां वाला, पेशावर—इत्यादि नगरो के नेताओं को पकड़ जेल मे डाल दिया गया।

अमृतसर में गोली

अमृतसर में अमानवीय अत्याचारों की पराकाष्ठा हो गयी। ६ मार्च को नगर के चारों नेताओं की गिरफ्तारी और निष्कासन के विरोध में शहर के कई हजार व्यक्तियो का शात और मौन जलूस अपना विरोध प्रकट करने और नेताओं की रिहाई की मांग करने डिप्टी कमिश्नर की कोठी पर प्रातः १० बजे के लगभग रेल के पुल को पार कर माल-रोड की ओर जब जा रहा था, तब हथियारबन्द और घुड़सवार पुलिस व फौज ने उसे रोक लिया। नगर नेताओं के बार-बार अनुरोध पर भी जब रास्ता नहीं मिला और पुलिस अड़ी रही, तब किसी सिपाही ने बिना किसी पूर्व सूचना के गोली चला दी।

पंजाब में बैसाखी पर्व

पजाब मे प्रथम वैशाख नव वर्ष के प्रारम्भ होते-होते एक विशिष्ट पर्व के रूप मे बड़ा पवित्र और महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। पंजाब की सबसे मंडी—विशेषतः कपड़े व अन्य समान की—अमृतसर में बैसाखीपर्व दो-तीन दिन पहले ही दूर-दूर के व्यापारी माल खरीदने आते हैं, दूसरी ओर पंजाब का किसान गेहूं की फसल काट प्रसन्न मुद्रा में अमृतसर में बैसाखी का मेला देखने और खरीद कराने-करने आता है। अमृतसर में यद्यपि ६ अप्रैल के फिसाद के बाद मार्शल ला लगा दिया गया था, पर सब अखबारो के बद किए जाने और उस समय संचार सुविधाओं की कमी हेतु देहात के लोगों को यह पता नहीं था कि अमृतसर में फौजी कानून लगा हुआ है। फलतः प्रतिवर्ष की तरह हजारों-लाखों की जनता वैशाखी का त्यौहार मनाने और मेले का आनन्द लूटने वहां जमा हो गई।

अमृतसर में देहात के हजारों यात्री सरकारी जासूसों की शरारत

सरकार द्वारा नियुक्त हंटर कमेटी ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि कि १३ अप्रैल को अमृतसर में बाहर से आए लोगों को फौजी कानून की खबर नहीं थी और न ही उस दिन इसके लिए कोई ढिंढौरा पीट जनता को सावधान किया गया। कांग्रेस द्वारा नियुक्त जांच समिति ने कई प्रमाणों से यह रहस्य खोला है कि कुछ सरकारी जासूसों ने—इनमें से कुछ के नाम भी रिपोर्ट मे दिए गए हैं—नगर में यह घोषणा शहर में डुगडुगी पीट कर दी कि—आज शाम को ४ बजे जलियांवाला बाग में कांग्रेस की ओर से एक आम जलसा होगा जिसमें मौजूदा सियासी हालात पर नेताओं के भाषण होंगे।

लेखक :
आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

जलियांवाला बाग का स्वरूप

जलियावाला बाग वस्तुत. बाग के सर्वथा उलट एक उबड़-खाबड़ घनी बस्ती मे एक ऐसा मैदान, उस समय था जो तीन ओर करीब ५-६ फुट ईंट की दीवार से घिरा और पश्चिमकी ओर २-३ मंजिले ऊंचे बने मकानोंके पीछे भी ऊंची दीवारों से रहा घिरा टुकड़ा, केवल एक तंग दरवाजा आने जाने के लिए और एक ओर पुराना कुआं—यह उसका स्वरूप था। करीब ३॥ बजे ही श्रोताओं से—जिनमें अधिकांश बाहर से आये लोग थे यह बाग भर गया। इन जासूसों में से ही तक मच पर खड़ा भाषण दे रहा था।

डायर द्वारा शान्त जनता पर गोलाबारी

करीब ४॥बजे इस बाग के एक मात्र दरवाजे पर जनरल डायर के आदेशों से मशीनगनों ने बिना किसी पूर्व सूचना व सावधानता की घोषणा के जहां शांत, निहत्थी, निरअपराध लगभग १० हजार की शांत जनता पर गोले बरसाने शुरू कर दिए वहां बाग के तीनों ओर संगीन ताने खड़े सिपाहियों ने किसी को बचकर

बाग आने के भी रास्ते लगभग रोक दिये। मशीनगन लगभग १० मिनट तक गोले बरसाती रही। हजारों लोग कुछ ही क्षण में से इस पाशविक अत्याचार के शिकार हो गए, जख्मी हो गये, कुछ भागदौड़ में कूद फांद बच गये, कई कुएं में कूद गये।

हंटर कमेटी के सामने अपनी गवाही में क्रूर डायर ने यह स्वीकार किया कि वह करीब १० मिनट की गोलीबारी के बाद फौजियों सहित वापस चला गया। एक प्रश्न के उत्तर में उसने साफ कहा"' "मरे हुओ और घायलो की दवा-दारु-इलाज उसका काम नहीं था।" सारा अमृतसर शहर रोने-पीटने और श्मशान की तरह बन गया। जो लोग देहात से आए थे, उनका तो सिवाय कुत्तो और गीदड़ो व चील-कौओं के कोई वली-वारस न था।

हंटर कमेटी के अनुमान से करीब ४०० लोग मरे जबकि कांग्रेस जाँच समिति के अनुसार मृतकों की संख्या करीब दो हजार थी।

पंजाब क्षत-विक्षत : स्वामी श्रद्धानन्द का नेतृत्व

क्रूर विदेशी सरकार के इस जघन्य और राक्षसी दुष्कृत्य के फलस्वरूप क्षत-विक्षत वीरभूमि पंजाब के सकट काल में सेवा और राहत के लिए जो व्यक्ति और संस्था सबसे प्रथम मैदान में आयी, वह स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व मे आर्यसमाज ही था। स्वामी जी ने बिना एक दिन की भी देरी किए लाहौर मे म. कृष्ण के "प्रताप" कार्यालय के एक कमरे मे पंजाब सेवा समिति का कार्य प्रारम्भ कर अमृतसर, लाहौर तथा अन्य प्रभावित नगरों मे राहत और सहायता कार्य चालू कर दिया। इन पंक्तियो का लेखक उस समय गुरुकुल विश्वविद्यालय (गंगापार) की १३वीं कक्षा में था। महाविद्यालय विभाग के समस्त छात्र, स्वामी जी के निर्देशानुसार, विभिन्न नगरों में कार्यरत हो गए। अमृतसर मे हम १० छात्र नियुक्त किए गए। सबसे पूर्व पीड़ित परिवारों की ब्योरेवार सूची बनाई गई। अमृतसर के आर्य सज्जनों ने इसमें पूरा सहयोग दिया। इन्हीं महानुभावों के निर्देशन में गांवों के पीड़ित व्यक्तियों की भी तालिका बनाई गई। सहायता के लिए धन, वस्त्र, अन्न इत्यादि की व्यवस्था स्वामी जी के नेतृत्व में, पं० मदनमोहन मालवीय और कांग्रेस नेताओं तथा अन्य दानी-उदार संस्थाओं व व्यक्तियों द्वारा पर्याप्त मात्रा में होती रही।

१९१९ का कांग्रेस अधिवेशन अमृतसर में : स्वागताध्यक्ष स्वामी जी ही

१९१९ का कांग्रेस अधिवेशन, एक वर्ष पूर्व ही पंजाब कांग्रेस नेताओं के विशेष अनुरोध पर, अमृतसर में होना निश्चित हो चुका था। प्रमुख कांग्रेसी नेता तो जेलों में व नजरबन्द थे। ला० लाजपत राय अमेरिका में थे और ब्रिटिश सरकार उनके भारत वापस आने पर रोक लगाए हुए थी। कांग्रेस नेताओं ने इस संकट काल मे, जेल मे बन्द कांग्रेस नेताओ पंजाब के विशेष अनुरोध पर स्वामी श्रद्धानन्द को ही एकमात्र इस महान् दायित्व को सभालने के योग्य समझा। फलत: गांधी जी और मोतीलाल नेहरू ने व्यक्तिगत रूप से स्वामी जी से अमृतसर कांग्रेस का दायित्व संभालने का अनुरोध किया। पंजाब सेवा समिति का कार्य कुछ विश्वस्त और योग्य व्यक्तियों को सौंप स्वामी जी १९१९ मे अमृतसर कांग्रेस के दिसम्बर मास के अंतिम सप्ताह में होने वाले अधिवेशन की तैयारी में जुट गये। स्वागत समिति के अध्यक्ष का पद उन्हें ही सौंपा गया।

नवदिशा प्रेरक अधिवेशन : स्वामी जी द्वारा प्रथम बार हिन्दी व हरिजन समस्या

दिसम्बर मास, शीतु ऋतु यौवन पर, विशेषत: पंजाब में फिर अमृतसर में दो दिन पूर्व जोरदार वर्षा। स्वामी जी पुन: गुरुकुल कांगड़ी के महाविद्यालय विभाग के छात्रो को सेवा के लिए बुलाया। हम छात्रो मे रेलवे स्टेशन पर पड़े पत्थर के कोयले की राख को ठेलों-गड्ढों पर भर नगर की मुख्य सड़को पर बिछा दिया। इससे कांग्रेस का जलूस खूब शान से निकला।

कांग्रेस इतिहास में अमृतसर अधिवेशन देश की राजनीति को क्रांतिकारी मोड़ देने के लिए सदा स्मरणीय रहा है। यह पहला अवसर था जब स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस मंच से वेद मंत्र पाठ के साथ हिन्दी में अपना भाषण पढ़ा और पहली बार तथाकथित अछूतो के उद्धार की आवश्यकता पर स्वामी जी ने देश का ध्यान आकृष्ट किया।

इस अमृतसर कांग्रेस की सफलता के फलस्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में आर्यसमाज ने, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप मे, सत्याग्रह आन्दोलन मे सर्वाधिक योगदान किया।

ई।इ७ शास्त्री नगर, जयपुर-७

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन में पुलिस की नादिरशाही

हवन करते हुए आर्य सज्जन पकड़े गए : उपद्रवी तत्वों की उपेक्षा

नई दिल्ली। आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के आर्य सज्जन रविवार २९ मार्च के दिन आर्यसमाज के एफ ब्लाक स्थित अपने प्लाट पर हवन कर रहे थे कि उन्हें कुछ शरारती तत्वों ने हुल्लड़ और पत्थरबाजी से परेशान किया। मौके पर फ्लाइंग स्क्वैड और पुलिस ने उपद्रवी लोगो के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की पर वह हवन करते हुए आर्य सज्जनों को पकड़कर पुलिस थाने ले गई। पुलिस की इकतर्फा कार्यवाही से पश्चिमी दिल्ली की आर्य समाजों और आर्य जनता मे क्षोभ की लहर फैल गई है। क्षेत्र की आर्य जनता विक्षुब्ध है, वह आर्यसमाज के प्लाट पर निरन्तर वेदपाठ और हवन आदि का कार्य प्रचलित रखे हुए हैं।

सारी घटना की पृष्ठभूमि इस प्रकार है —

मानसरोवर गार्डन एक मंजूरशुदा, प्राइवेट कालोनी है। इस कालोनी मे आर्यसमाज की स्थापना कई वर्ष पूर्व हो गई थी, परन्तु निश्चित स्थान के अभाव के कारण आर्यसमाज के सत्संग और साप्ताहिक अधिवेशन पारिवारिक सत्संगों के रूप में होते रहे। स्थान के अभाव को दूर करने के लिए आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के कालोनाइजर श्री मानसिंह जी से समय-समय पर अनुरोध करती रही थी, मूलत: उन्होंने समाज को ३२५ वर्गमीटर का प्लाट दान में दे दिया। इस बारे में उन्होंने अपना स्वीकृति-पत्र भी दे दिया। यह प्लाट हायर सकैण्डरी स्कूल, मानसरोवर गार्डन एफ ब्लाक के साथ है और इसके सामने पन्द्रह फुट की एक गली छोड़कर एफ ३६-३७-३८ के तीन मकान अवस्थित हैं।

उल्लेखनीय है कि एफ ३६ के मालिक श्री कन्हैयालाल ठेकेदार ने शनिवार २८ मार्च के दिन आर्यसमाज के सदस्यों को विश्वास दिलाया कि उनकी लाइन में पड़ने वाले मकान मालिको को प्रसन्नता होगी यदि आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन का मंदिर शीघ्र बन जाए, जिससे जनता जल्दी से जल्दी इसका लाभ उठाए। इस बात का ख्याल रखते हुए समाज के सदस्यो ने रविवार २९ मार्च का सत्संग समाज के अपने प्लाट पर आरम्भ कर दिया, पर कुछ ही समय बाद कुछ लड़के वहाँ आ गये और हुल्लड़ कर पत्थर-ककड़ फेंकने लगे। अभी यह हुल्लड़ चल ही रहा था कि फ्लाइंग स्कवाड भी आ गया। कुछ समय बाद मोती नगर पुलिस का जत्था भी पहुंच गया।

अत्यन्त अचम्भे और खेद की बात है कि फ्लाइंग स्कवाड और पुलिस ने हुल्लड़ करने वाले और पत्थर फेंकने वालो के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। इसकी इस इकतर्फा कार्यवाही तथा सत्सग में उनके अचानक हस्तक्षेप से उनकी मिलीभगत का अहसास हो ही रहा था कि वे यज्ञ करने वाले सत्सगी भाइयों को जबरदस्ती मोतीनगर थाने ले गए। आर्यसज्जनों की तलाशी ली गई। एस० एच० ओ० ठाकुर ने भी बाहर से थाने में आकर समाज के लोगों पर दबाव डालकर उन्हें अपने लिखे पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया और यह सब करने के बाद शाम को चार बजे समाज के कार्यकर्त्ताओं को घर जाने की अनुमति दी गई। □

'आर्य सन्देश' के ग्राहकों से हार्दिक अनुरोध

आज की भीषण महगाई मे 'आर्य-सन्देश' आपकी सेवा में पन्द्रह रुपये मात्र के वार्षिक शुल्क से उपलब्ध कराया जा रहा है एव प्रतिवर्ष घाटा उठाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार मे सदैव अग्रणी रही है। इस पत्रिका में वैदिक विद्वानो के लेख एवं प्रतिवर्ष ३, ४ आकर्षक विशेषाक निकाले जाते हैं। ऐसी स्थिति में आपसे अधिक सहयोग की आकांक्षा है।

इस दृष्टि से आर्यसन्देश के ग्राहकों से हार्दिक अनुरोध है कि जिन महानुभावों ने अपना वार्षिक शुल्क २-३ वर्षों से अभी तक नहीं भेजा है कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें। साथ ही पत्र के अधिकाधिक ग्राहक बनाकर, विज्ञापन अथवा दान देकर भी पाठकवृन्द हमें अनुगृहीत करेंगे। इस निवेदन पर जो शुल्क भेज रहे हैं एवं दान दे रहे हैं और पत्र के नूतन सदस्य एवं आजीवन सदस्य बन रहे हैं उन्हें आर्य-सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

आपसे पुन: निवेदन है कि ग्राहक महानुभाव शेष शुल्क भेजते समय या पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखने का कष्ट किया करें। —व्यवस्थापक

आर्य जगत् समाचार

आर्यसमाज की शिथिलता उचित नहीं है

आर्यसमाज बाजार सीताराम वार्षिकोत्सव

नेताओं का सत्परामर्श

दिल्ली। 'आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा यदि किसी ने भाग लिया तो वे आर्यसमाजी ही थे—'इन शब्दों में संसद सदस्य श्री भीखूराम जैन ने दिल्ली की एक सर्वाधिक प्राचीन आर्य समाज बाजार सीताराम के ६१वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए देश के स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज के योगदान की प्रशंसा की। श्री जैन ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि आज आर्यसमाज के प्रचार मे कुछ ढीलापन देखता हूं जो राष्ट्र के लिए हित मे नहीं है। महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होने छूआछात मिटाने, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह, शराब बन्दी, बाल विवाह विरोध की आवाज उठाई। हम सब को मिलकर महर्षि का कार्य पूरा करना चाहिए।
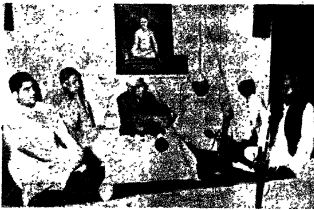
प्रो० बलराज मधोक ने कहा—'इस समय हमारा राष्ट्र काफी परेशानियों से घिरा हुआ है। हर राजनीतिक दल वोट की खातिर मुसलमानों और ईसाइयो के वोट लेने के लिए उनकी हर अनुचित बात मानने को तैयार है, चाहे उनसे राष्ट्र का नुकसान ही क्यो न हो। जो व्यक्ति इस देश का खाते-पीते हैं और दूसरे देशो के गीत गाते हैं, उनके वोट का अधिकार समाप्त होना चाहिए।'

आर्य सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा—'अब समय आ गया है कि हमे संगठित होकर योजनाबद्ध तरीके से समाज मे व्याप्त कुरीतिया समाप्त करनी चाहिए। आर्यसमाज हरिजनों और सवर्णों मे कोई भेद नही मानता।' भू० पू० संसद सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्द ने कहा कि आज के आर्यसमाजियों मे पुराने आर्यसमाजियो जैसा जोश नहीं है। हमें अपने कहे पर आचरण करना चाहिए। आर्यसमाज बाजार सीताराम के मन्त्री श्री मामचन्द रिवारिया ने चेतावनी दी कि यदि पिछड़े वर्गों और हरिजनो में ठीक प्रचार कर उन्हें अपनाया नहीं गया तो वे लोग मुसलमान और ईसाई बन जाएगे और हिन्दू समाज अल्पसंख्यक हो जाएगा।

आर्य युवक सम्मेलन में भाषण देते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने आर्य युवको से अनुरोध किया कि उन्हें पिछड़े समुदाय में जाकर उनसे निकट सम्पर्क बनाना चाहिए। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री प्रिंसिपल ओम्प्रकाश और सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री सच्चिदानन्द ने भाषण देते हुए कहा कि केवल युवक ही आर्यसमाज का कार्य बढ़ा सकते हैं।

इस अवसर पर कवि सम्मेलन और स्त्री सम्मेलन के कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

—•—

आर्य विद्या परिषद् की परीक्षाओं की लोकप्रियता बढ़ी

यह प्रसन्नता का विषय है कि आर्य विद्यार्थियों में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की लोकप्रियता निरन्तर बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि आर्य विद्यापरिषद् के तत्त्वावधान में १९८०-१९८१ में आयोजित नीति-परीक्षाओं मे भाग लेने के लिए १०९६ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे। इन नीति-परीक्षाओं में ९८५ छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, उनमें ९५६ छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए, केवल २९ असफल रहे।

नीति-प्रवेशिका

नीति-प्रवेशिका की परीक्षा के लिए ३८७ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे, उनमे ३७६ परीक्षार्थियो ने भाग लिया और २६८ छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए। कवल ८ परीक्षार्थी विफल हुए।

इस परीक्षा में आर्य कन्या गुरुकुल नया राजेन्द्र नगर की कु० सुनीता सुपुत्री राजाराम आर्य रोल नम्बर ४४० प्रथम रही। उसने १०० में से ९१ अंक प्राप्त किए।

परीक्षा मे द्वितीय स्थान भी उक्त कन्या गुरुकुल की छात्रा सुमित्रा, सुपुत्री श्री भरतसिंह, रोल नम्बर ४४१ ने १०० में से ८९ अक प्राप्त कर उपलब्ध किया।

परीक्षा में दूसरा स्थान उक्त कन्या गुरुकुल की छात्रा कु० मधुबाला, सुपुत्री श्री खैरातीलाल रोल नम्बर ४४६ ने १०० में ८९ अंक प्राप्त कर लिया।

परीक्षा मे तृतीय स्थान आर्यपुत्री पाठशाला गांधीनगर के छात्र अश्विनी कुमार सुपुत्र श्री योगेन्द्रपाल, रोलनम्बर २८२ ने १०० में ८८ अंक प्राप्त कर लिया।

नीति-अधिकारी

नीति-अधिकारी की परीक्षा के लिए ३२२ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे, उनमें से २९७ परीक्षा में बैठे, २७६ उत्तीर्ण हुए और २१ विफल हो गए।

इस परीक्षा मे सतभावां आर्यकन्या महाविद्यालय का छात्रा कु० रजनी चड्ढा, सुपुत्री ताराचन्द रोलनम्बर ५६४ ने १५० में से १३१ अक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस परीक्षा में द्वितीय स्थान भी सतभावां आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० वसुधा, सुपुत्री श्री सुदर्शनदेव रोलनम्बर ५५५ ने १५० में से १२९ अंक प्राप्त कर लिया।

इस परीक्षा में भी तीसरा स्थान सतभावां आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० करुणा भाटिया, सुपुत्री अश्विनी भाटिया, रोलनम्बर ५६६ ने १५० में १२७ अंक प्राप्त कर लिया।

नीति-ज्ञानी

नीति-ज्ञानी की परीक्षा के लिए १८७ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे। ११८ परीक्षार्थी बैठे, सभी सफल रहे। बिरला आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० लक्ष्मी सुपुत्री श्री रघुनाथ प्रसाद रोलनम्बर ८२८ ने २०० में १७३ अंक लेकर पहला स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० मुक्ता सुपुत्री श्री के० एल० मनोचा रोलनम्बर ८९४ ने २०० मे से १५८ अक प्राप्त कर लिया। तीसरा स्थान बिरला आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा सविता सुपुत्री हरिकृष्ण रोलनम्बर ८०१ ने २०० मे से १५४ अंक प्राप्त कर लिया।

नीति-विशारद

नीति-विशारद की परीक्षा के लिए २०० छात्र-छात्राओ ने फार्म भरे थे। १३४ परीक्षार्थी बैठे, सभी सफल रहे। परीक्षा में पहला स्थान रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय, राजा बाजार की छात्रा कु० सुनीता शर्मा, सुपुत्री श्री वी० एल० शर्मा रोलनम्बर ११६७ ने २०० में से १६७ अंक प्राप्त कर लिया। परीक्षा में दूसरा स्थान भी उक्त रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० सुनीता पाराशर, सुपुत्री श्री के० एन० पाराशर, रोलनम्बर ११५७ ने २०० में से १६६ अक प्राप्त कर लिया। तीसरा स्थान बिरला आर्यकन्या महाविद्यालय, बिरला लाइन्स की छात्रा कु० सुनीता सुपुत्री श्री कैलाशचन्द्र रोलनम्बर १०१५ ने २०० में से १५९ अंक प्राप्त कर ग्रहण किया।

—प्रो. भारतमित्र शास्त्री,
प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली

——०——

आर्यसमाजों के सत्संग

१२-४-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं. उदयपाल शास्त्री; अमर कालोनी—आचार्य कृष्णगोपाल; आर्यपुरा—पं. तुलसीराम भजनोपदेशक; आर. के. पुरम् सैक्टर-७—पं. मनोहर विरक्त'; आनन्द विहार हरिनगर एल ब्लाक—प. देवराम वैदिक मिशनरी; किदवई नगर—पं. प्रकाशवीर व्याकुल; कालकाजी—पं. दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री; करोल बाग—प्रो. सत्यपाल देदार; गांधीनगर—प. देवेन्द्र द्विवेदी; ग्रेटर कैलाश-I—डा. रघुवीर वेदालकार; ग्रेटर कैलाश-II—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; गुड़मंडी—प. महेशचन्द भजनोपदेशक; १५१-गुप्ता कालोनी—पं. अशोककुमार विद्यालकार; गोविन्द भवन दयानन्दवाटिका—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; चूनामंडी पहाड़गंज—श्रीमती भगवानदेवी; जंगपुरा भोगल—प हीराप्रसाद शास्त्री; जनकपुरी सी-३—पं. महेन्द्र प्रताप शास्त्री; जनकपुरी बी ३/२४—डा. सुखदयाल भूटानी; तिलकनगर—पं. दिवाकर शर्मा; तीमारपुर—श्री मोहनलाल गांधी; दरियागंज—प. वेदपाल शास्त्री; नयाबांस—पं. गजेन्द्रपाल शास्त्री; पजाबी बाग—आचार्य हरिदेव सि. भू.; पजाबी बाग एक्सटेन्शन—प. रामरूप शर्मा; बाग कड़े खां—पं. बरकतराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—पं. केशवचन्द्र मुन्जाल; बिरला लाइन्स—पं. विजयपाल शास्त्री; मोडल बस्ती—प. ओमप्रकाश भजनोपदेशक; महावीर नगर—प विश्वप्रकाश शास्त्री; मोतीबाग—पं. ओमवीर शास्त्री; मोती नगर—पं. विष्णुदेवप्रसाद विद्यालकार; रघुवीरनगर—प. सीसराम भजनोपदेशक; रमेशनगर—प. छज्जूराम शास्त्री; राणाप्रताप बाग—पं. ईश्वरदत्त म. ए.; लड्डू घाटी—पं. वीरव्रत शास्त्री; लाजपतनगर—श्रीमती लीलावती आर्य; लोधी रोड [illegible]—डा. रघुनन्दन सिंह; विक्रम नगर—प. प्राणनाथ सिद्धातालंकार; विन[illegible]—पं. सत्यभूषण वेदालकार; राजौरी गार्डन—प्रो. वीरपाल विद्यालंकार; [illegible] पहाड़ी धीरज—वैद्य रा[illegible]किशोर; सराय रोहला—प. महेन्द्रप्रताप शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो. भारत[illegible] शास्त्री; शकूर बस्ती रानी बाग—पं. प्रकाशचन्द शास्त्री; हौज खास डी-[illegible]; शालीमार बाग—प. सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार विभाग

आर्यसमाज बेतिया (चम्पारन) के वार्षिक चुनाव में श्री भगवानप्रसाद आर्य विद्यारत्न प्रधान तथा श्री महन्त प्रसाद आर्य मन्त्री नियुक्त हुए।

आर्यसमाज नरेला का ४१वां उत्सव

आर्यसमाज नरेला का ५१वा वार्षिक उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर खेलों का आयोजन भी किया गया व भाषण प्रतियोगिताएं भी हुईं। १४ ता० को भव्य जलूस शोभायात्रा निकाली गई। इस शुभ अवसर पर स्वास्थ्य-सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, ग्राम-सुधार-सम्मेलन हुए, जिनमें पूज्य स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती, स्वामी अमृतानन्द जी, आचार्य ब्रह्मदत्त जी शर्मा, डा० गोविन्दराम जी चौधरी, प्रि० रतीराम पाराशर प्रि० मेहरलाल पंवार, बाबू जगन्नाथ, श्री विश्वम्भर प्रसाद गुप्ता, मा० मांगेराम आर्य, पं० हेमचन्द, मा० पूर्णसिंह आर्य व आर्यमुनि ब्र० राजेन्द्र शर्मा व स्वामी नारायणानन्द जी दयानन्द मठ रोहतक आदि के भजन हुए। श्री धर्मव्रत शास्त्री द्वारा मलखम्भ व व्यायाम प्रदर्शन बड़ा आकर्षक रहा।

—राजपाल आर्य मंत्री

आर्यसमाज मस्जिद मोठ की गतिविधियां

नये वर्ष के पदाधिकारी—प्रधान—श्री सूर्यप्रतापतरनेजा, उपप्रधान—वैद्य प्रभुदयाल एव फकीरचन्द, मन्त्री—ओम्प्रकाश भावल, कोषाध्यक्ष—सत्यपाल भारल।

१९८० वर्ष में आर्यसमाज मदिर की भूमि डी. डी. ए. से मुक्त कराई गई, समाज मदिर की चारदीवारीबनाई गई। मदिर में यज्ञशाला की बुर्जी बनाई गई और मदिर मे पानी की व्यवस्था की गई।

श्री जगतराम खन्ना का स्वर्गवास

आर्यसमाज स्वरूपनगर के मत्री एवं केन्द्रीय आर्यसभा कानपुर के प्रचार-मत्री श्री जगमोहन खन्ना के पूज्य पिता श्री जगतराम खन्ना का आकस्मिक निधन हृदय गति रुक जाने से हो गया। ४ मार्च के दिन बालनिकुंज स्वरूपनगर में अनेक सामाजिक एवं शिक्षा सस्थाओं के प्रतिनिधियों ने दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि चढाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

शुद्धि-प्रचार के लिए आर्य विद्वान् चाहिए

शुद्धिसभा, शाखा बरेली (सनाढ्य सदन, फाटक गोकलचन्द, छोटी ब्रह्मपुरी) के संयोजक पं० रामप्रसाद मिश्र सूचित करते हैं कि बरेली शाखा को शुद्धि-प्रचार के लिए एक अनुभवी व विद्वान प्रचारक की आवश्यकता है।

卐 'आर्य... स्वयं... — दूसरों को बनाए'
卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए
卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें दूसरों को भी पढ़ाइए—

रजि० नं० डी (सी)७५६

1104 श्री पुस्तकाध्यक्ष जी पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार-(उ०प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए ... शर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा चाँदिया प्रैस ७२७/१-सी, गुलनाक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओइम्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ४ : अंक २५   रविवार १२ अप्रैल १९८१   दयानन्दाब्द १५६

हकूमते हिन्द से मुसलमानों के लिए अलग इलाके की मांग

हैदराबाद में पोस्टर लगे : भारतीय जनता सावधान हो-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी की चेतावनी

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री भू. पू ससस्य सदस्य श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने एशिया और अफ्रीका के अरब देशों द्वारा भारत के हिन्दुओ विशेषत: हरिजनो को मुसलमान बना कर भारत मे अपना बहुमत बनाने के षडयन्त्र के बारे में देश की जनता को सावधान किया है। इससे पूर्व श्री त्यागी कुवैत से प्रकाशित १६ जनवरी, १९८१ के 'अरब टाइम्स' की कतरन देश के समाचार-पत्रों मे प्रसारित कर चुके हैं जिसमे कुवैत ने भारतीय उपमहाद्वीप में हिन्दुओं विशेषत: हरिजनों को आकर्षित करने के लिए मुसलमानो को मदद करने के कार्यक्रम में पूरी आर्थिक सहायता देने की पेशकश की थी।

श्री त्यागी ने अब हैदराबाद के मुसलमानो की ओर से शहर की दीवारो पर लगाए गए उस पोस्टर की फोटोस्टेट कापी भेजी है, जो देश मे मुसलमानो की गिनती बढाकर नए मुस्लिम प्रदेश बनाने की योजना का ही एक अग दिखाई देता है। ये पोस्टर पिछले दिनो हैदराबाद के समीप पहाडी शरीफ मे हुए जमायते इस्लामी के अधिवेशन के अवसर पर लगाए गए थे। ये पोस्टर शास्त्रीनगर, फतहनगर, रेलवेगेट, सनतनगर, हैदराबाद, आंध्रप्रदेश के एक ऐसे सिर-फिरे दिमाग ने प्रसारित किए हैं—जिसका दावा है कि वह किसी किस्म का नबी-रसूल-ईसा और मेंहदी नहीं है इतने पर भी उसका दावा है कि वह हजरत मुहम्मद साहेब का आफरीनी और आखिरी रसूल है—

वह अपने सलामतीनामा मे दावा करता है—अल सलातीन (बादशाहों का बादशाह) खिजरी शाख हाशमी हलीफ हलफनामा सालिस उम अल हलूफ मत-बुआ १५ फरवरी, १९८१ की मुद्दत हलफ ४० योम (दिन) १२ फरवरी, १९८१ से शुरू होकर २६ मार्च, १९८१ तक खतम हो चु ी और मैं अल्ला-ताला के फजलो-करम से-मेरी मुद्दत हलफ में फौत (मौत) नहीं हुआ, बल्कि आजतक जिन्दा सलामत हूं। मैं यानी खलीफता-उल-मुसलमीन सुल्तान अल-सलातीन खिजरी शाख हाशमी ने हजरत मोहम्मद रसूल अल्ला सलाम-अल्ला अलाओ सलम के हुकम की तामील में 'मुसलमानों' को लुटने-पीटने कटने से बचाने और उनकी औरतों को बेइज्जती से बचाने के लिए पहली मर्तबा ६ मई, १९८० को रजिस्ट्री रसीद तलब नम्बर २२३५ के जरिया से और दूसरी मर्तबा हलफनामा सालिस उम-अल-हुरूप मत-बुआ १५ फरवरी, १९८१ के जरिये से हकूमते हिन्द से यह मुतालबा किया है कि हकूमते हिन्द मुमलमानो को अलग इलाका दे दे।'

साफ है कि मजहबी फिर्कापरस्त देश के बटवारे से शान्त नही हुए हैं, वे मुरादाबाद के बाद नई मजहबी बस्तियाँ बसा कर वहाँ किलेबन्दी कर तथा देश के दूसरे इलाको के हरिजनो को खाडी देश के अरबो की अरबो रुपयो की दौलत से अपने चगुल मे लाना चाहते हैं। इतना ही नही आजादी के बाद पूरी शान्ति और अमन से रहने और मुरादाबाद मे कहर बरसाने के बावजूद अल्पसख्यको की कथित सुरक्षा के नाम पर ये नये मुल्क की मांग फिर उठा रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री त्यागी ने देश के आर्यजनो और आर्य समाजो से अनुरोध किया है कि वे हरि-जन बन्धुओ मे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार का विशेष प्रबन्ध करे। इसके अतिरिक्त यदि उनके क्षेत्रो का कोई हिन्दू-हरिजन लोभ-लालच और भय के बल पर मुसलमान या ईसाई बनाया जाता है तो उसकी सूचना तुरन्त सार्वदेशिक सभा को दी जाए जिससे उस सम्बन्ध मे उचित कार्यवाही की जा सके।

देश की युवा पीढ़ी को संगठित किया जाएगा

१ से १५ जून तक गुरुकुल कांगड़ी में आर्य वीर दल-प्रशिक्षण शिबिर का आयोजन : आर्यसंस्थाओं से सक्रिय सहयोग की अपेक्षा

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यवीर दल समिति के प्रधान संचालक श्री बाल दिवाकर हंस ने देश भर की आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्यसमाजो के पदाधिकारियों को सावधान किया है कि तेल उत्पादक मुस्लिम राष्ट्र और ईसाइयत के प्रबल समर्थक करोड़ों रुपये खर्च कर भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक मान्यताओ को नष्ट कराने के लिए प्रयत्नशील हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने युवा पीढी को ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन के मूल्यों में नियुक्त करने के लिए आगामी १ जून से १५ जून, १ ८१ तक गुरुकुल कांगड़ी के प्रांगण त सार्वदेशिक आर्यवीर दल शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है।

अधिकृत रूप से यह भी ज्ञात हुआ है कि सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सचालक वर्ग इस प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के जिए प्रत्येक प्रदेश के ऐसे दस-दस युवकों की मांग की है, जो शारीरिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ-सबल हो और शैक्षणिक दृष्टि से गुरुकुल के स्नातक, बी ए. शास्त्री, प्रभाकर, साहित्यरत्न हो अथवा इन उपाधियों के समकक्ष योग्यता रखते हो। आर्यवीर दल ने प्रतिनिधि सभाओं और समाजो से अनुरोध किया है कि मुस्लिम तथा ईसाई राष्ट्रों के द्वारा जिस प्रकार हमारी निर्धन, अशिक्षित जनता को विधर्मी बनाने का प्रयत्न चल रहा है, उसकी रोकथाम करने के लिए आर्यसमाज को बहुत से मोर्चो पर कार्य करना होगा। इस दृष्टि से देश के युवको का संगठित मोर्चा बनाने के लिए युवाओ के चयन एव शिविर-प्रवेश की प्रेरणा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। आशा है सब आर्यसमाजें अप्रैल के अत कर आर्य-युवको का चयन कर उनकी सूची प्रति-प्रतिनिधि सभाओ को भेज देंगी।

आर्यसमाजो से यह अनुरोध भी किया गया है कि विदेशी धर्मों के प्रचार प्रसार को रोकने तथा आर्यवीर दलो के प्रशिक्षण के लिए आवश्यक वेशभूषा एव मार्ग-व्यय आदि के लिए अधिकतम आर्थिक सहयोग व प्रतिनिधि सभाओ को देने की व्यवस्था करेंगी।

□

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

मेरे कल्याण के लिये दूर देश से आइए

भद्रोमेऽसि प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान्यभि धामानि।
मात्वा परिपरिणो विदन् मात्वा परिपन्थिनो विदन् मात्वावृका अघायवोविदन्।
श्येनो भूत्वा परापत यजमानस्य गृहान् गच्छ तन्नौ संस्कृतम्॥
यजु० ४-३४

ऋषि—वत्सः। देवता—सोमः।

शब्दार्थ—हे आनन्दवर्षक सोम, तू (भुवस्पते) भुवनपति होते हुए अपने वत्स तुल्य प्रिय मुझे (भद्रः) कल्याण और सुख देने वाला (असि) है, इसलिए (विश्वानि धामानि) अपने सब धामो को छोड़कर (अभि प्रच्यवस्व) मेरी ओर दौड़कर आ, और सब धामो के सुख तथा कल्याण का प्रवचन कर। मेरी ओर आते हुए (त्वा) तुझे मार्ग में (परिपरिणः) मेरे विरोधी तथा प्रतिपक्षी (मा विदन) न मिलें। (त्वा) तुझे परिपन्थिन.) बटमार लुटेरे (मा विदन्) न मिलें और (त्वा) तुझे (वृका) हिंसक (अघायव) पाप की पर्वाह न करने वाले डाकू भी (मा विदन्) न मिलें। (श्येनो भूत्वा) बाज के समान अनजाने मे (यजमानस्य गृहान्) संगम करने योग्य पूज्य मनुष्य के घरो मे (परापत) अचानक पहुच जा। क्योंकि (तत्) वह घर (नौ) भक्त और भगवान् दोनो के लिए (संस्कृतम्) सब ऋतुओं मे रहने योग्य अच्छी प्रकार बनाया गया है।

निष्कर्ष—१—प्रत्येक घर, समाज, राष्ट्र और भुवन का उत्पादक तथा स्वामी अपनी अधीनस्थ प्रजा का कल्याण चाहता है और सुख देने का प्रयत्न करता है। मैं आपका वत्स हू और आप मेरे उत्पादक तथा सुखप्रदाता हैं, इसलिए मैं आप को बुलाता हू, और चाहता हू कि जब मैं बुलाऊं, आप भाग कर तत्क्षण पहुंच जाएं।

२—आप सशक्त तथा न्यायकारी होने से लुटेरो-दुष्टो, हिंसको तथा पापी डाकुओं को दंड देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, इसलिए मैं चाहता हूं कि जब आप मेरे पास आ रहे हों, तब आपको ऐसा दुष्ट या पापी कोई न टकराए, जिसके कारण मेरे पास पहुचने में आपको देर लगे।

३—मैं जानता हू कि आप पुजनीय सत्संगी और दानी (यजमान) पुरुषों के घरो में जाते हो, इसलिए मैंने यजमान बनने का प्रयत्न किया है। आप इसमें बाज की तरह से चुपचाप और एकदम पहुंच जाइए।

४—मैंने अपने देह को जो हम दोनों का निवास है, तप और संयम की आग से खूब संस्कृत और पवित्र कर रखा है, इसलिए आप आने में हिचकिए नही। यहां आपको किसी प्रकार का कष्ट नही होगा, अपितु प्रसन्नता ही होगी।

विशेष—इस मन्त्र का देवता सोम है। यह उत्पत्ति और आनन्द का देवता है। अपनी प्रजा को आनन्दित देखना चाहता है और ऋषि वत्स है। यदि हम वत्स के समान सरल और निष्कपट बनेंगे तो वह हमे सुख देगा, कल्याण करेगा।

महर्षि दयानन्द ने इसका भावार्थ लिखा है—मनुष्यैः उत्तमानि विमानादीनि यानानि रचयित्वा, द्वीपान्तरं गत्वा, धनं प्राप्य, दुष्टेभ्यः दूरं स्थित्वा सर्वदा सुखं भोक्तव्यम्।

श्येन की तरह झटपट सब धामों से आने की चर्चा से स्वामी जी ने इस मंत्र में विमान-निर्माण की कल्पना की है। सब धाम (देशो) में आने-जाने के वर्णन से देश-देशान्तर मे जाकर धनार्जन और सब तरह से पवित्र (संस्कृत) रह कर सुख-भोग की इच्छा की है।

अर्थपोषक प्रमाण—सोमः—सु प्रसवैश्वर्ययो। सोम The Lord of wine of delight and immortality. वैदिक ग्लासरी पृ. १०० श्री अरविन्द।

वत्स.—वदतीति, शिशु तुल्य सरल हृदयभक्त। प्रच्यवस्व—च्युङ् गतौ। 'छन्दसि परिपन्थि परिपरिणौ पर्यवस्थातरि' पाणिनि ५-२-८९ पर्यवस्याता—प्रतिपक्षी।

भद्रः—भदि कल्याणे सुखे च भद्रं राति ददाति। वृकाः विकर्तनशीलाः हिंसकाः।

अघायव—अघं पाप कर्तुमिच्छन्ति ते। संस्कृत शिल्पविद्यासंस्कारयुक्तं सर्वर्तुकम्।

यजमानस्य—यज देवपूजा संगतिकरण दानेषु। परा दूरार्थे

—मनोहर विद्यालंकार

आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

आर्यसमाज !
आर्यभूमि पर अरुणोदय-सा, उठा उष्ण तू सज कर साज !
आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

अधकार था चारो ओर, देख लिया पर तूने चोर,
घर मे शोर मचाया घोर, सोते स्वजनो को धिक्कार,
जगा दिया ठोकर तक मार, कि हो प्राप्त भय का परिहार।
अलम-प्रमादी-अवसादी, हम थे सोने के आदी।

जागा—तू भैरववादी लगे विवादी भी कुछ स्वर।
पर हम चौंक उठे सस्वर, उतरा कुछ तो तन्द्रक ज्वर॥
किया क्या तूने खडन मात्र ? स्वय तथा मडन का पात्र,
गए गुरुकुल मे वर्णी छात्र, हिन्दू-मानस-महाराष्ट्र तू,
धरे राष्ट्रभाषा की लाज, आर्यसमाज ! आर्य-समाज !!

शोक न कर, तू कर अभिमान, कर निज वेद-विजय, रसपान।
किया वीर तूने बलिदान, विधर्मियों से घर की फूट।
करा रही थी अपनी लूट, तू सतर्क हो उठा अटूट !!
पर जो मुह की खाते हैं, मन ही मन चिढ़ जाते हैं
छिप कर घात लगाते हैं।

सहा सभी तूने प्यारे, सिद्ध कर गए हत्यारे।
निज अविजय न्यारे-न्यारे, मुह न छिपाया भय को देख।
लिखा निज शोणित से लेख।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' जयति कृतबुद्धि-कार्यम्।
शुद्धि वितान—तजे श्रद्धा का दान किया तूने द्विजराज।
आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

लोक-चिन्तन

पापी कौन है ?

डा० विजय द्विवेदी

पिछले दिनों उडीसा की राजधानी भुवनेश्वर मे एक बड़ी निर्मम हत्या हुई। सिंचाई विभाग के अधीक्षक-इंजीनियर श्री चौधरी की पत्नी श्रीमती गौरी चौधरी को उनके घरेलू नौकर कान्हू बारिक ने कुल्हाडी से काट डाला और फरार हो गया। राजधानी मे आतंक छा गया। जितने मुंह उतनी बातें हुईं। अन्त मे कान्हू दिल्ली मे पकडा गया। कहते हैं अपना अपराध स्वीकार करते हुए, उसने बताया कि वह पिछले छह-सात बरस से उक्त विभाग मे अस्थायी मजदूर के रूप में काम कर रहा था और श्री चौधरी उसकी सेवा को स्थायी न कर उससे अपने घर का काम-काज करा रहे थे। उसमे निराशा के कारण प्रतिशोध की भावना पैदा हुई और वह हत्या जैसा जघन्य काम कर बैठा।

हिंसा एक निन्दित और क्रूर कर्म है। वह अमानवीय है, अत वर्ज्य है। इस दृष्टि से कान्हू ने जो कुछ किया, वह अक्षम्य है, किन्तु इसी के साथ प्रश्न यह उठता है कि मि. चौधरी ने इतने वर्षों तक जो कुछ किया, वह क्या है ? क्या किसी की जिजीविषा, सुख-प्राप्ति की अभिलाषा, प्रगति आदि की भावना का सम्मान न करके उन्होने कोई अपराध अथवा पाप नहीं किया ? क्या दूसरों का स्वत्व छीनना अपराध नहीं है और यदि है तो इसके लिए व्यवस्था ने उन्हें क्या दण्ड दिया ?

मुझे 'कुरुक्षेत्र' में भीष्म के मुख से कही गयी कवि 'दिनकर' की पंक्तियां याद आ रही हैं—'पापी कौन, मनुज से उसका न्याय चुराने वाला ! या कि न्याय खोजते विघ्न का शीश उड़ाने वाला ! और उत्तर भी—'किसने कहा पाप है समुचित स्वत्वप्राप्ति हित लड़ना ? उठा न्याय का खड्ग समर में अभय मारना-मरना ?'

न्यायदर्शन के प्रणेता महर्षि 'गौतम' ने 'न्यायसूत्र' में लिखा है - मानव संकीर्ण भावनाओं को पारस्परिक व्यवहार का आधार न बनाए। इससे अपनों के प्रति भेदभाव, पक्षपात, मोह एवं अभिमान पैदा होता है, दूसरों के प्रति घृणा, अन्याय, शोषण और ईर्ष्या अतः मनुष्य के साथ समानता के आधार पर व्यवहार करना चाहिए। वैयक्तिक अपेक्षाओं के साथ दूसरों की सुख-सुविधाओं पर भी दृष्टि रखनी चाहिए।

आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस बात पर विचार करना चाहिए कि वह किस तरह पाप, अपराध और शोषण से दूर रहते हुए दूसरों की उन्नति में सहायक हो सकता है। दूसरे जो शोषित-पीड़ित तथा दलित हैं, यदि ऐसे ही बने रहे तो एक दिन उनमें प्रतिशोध-भाव जागेगा, कातिल हाथ उठेंगे, तब मानवता का क्या होगा ?

(हिन्दी विभागाध्यक्ष, म. पू. ज. कालेज, बारिपदा, (उड़ीसा)

ज्ञानियों और शूरों की एकता से पुण्यभूमि

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत. सह ।
तं लोक पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ यजु. २०.२५

जिस राष्ट्र में ज्ञानी और शूर पुरुष समान विचार से राष्ट्रहितकारक कार्य करते रहें, वह देश ही पुण्यभूमि है, वहां सब प्रकार का कल्याण होता है।

स्वयं आर्य बनें : परिवार को आर्य बनाएं

रविवार, ५ अप्रैल के दिन शास्त्री पार्क करौल बाग मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो और आर्य संस्थाओ की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में संयुक्त रूप से आर्य समाज स्थापना-दिवस मनाया गया। दिल्ली मे १५० से अधिक आर्यसमाजें हैं, लगभग इतनी ही आर्यसंस्थाए और महाविद्यालय-विद्यालय आदि है। इन आर्य समाजों और आर्य संस्थाओं से सम्बद्ध लाखो बालक- बालिकाएं, युवक-युवतियां, स्त्री-पुरुष हैं। आर्य समाज संस्था से सीधे सम्बद्ध न होने वाले भी ऐसे लाखों स्त्री-पुरुष इसी भारत की राजधानी में हैं जो संस्था में सम्मिलित न रहने के बावजूद महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के मन्तव्यो, सिद्धान्तों और उनके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विचारो से सहमत हैं। आर्य समाज की इतनी अधिक शक्ति, संगठन और व्यापकता के बावजूद उस दिन शास्त्री पार्क मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो और सगठनो की शक्ति का नमूना देख कर बडी वेदना हो रही थी। यह ठीक है कि पार्क मे बना सभा-मंच भरा हुआ था, कनातो के साथ कुर्सियो की एक पंक्ति भी भरी थी, सामने कुछ दर्जन श्रद्धालु देवियां और सज्जन भी उपस्थित थे परन्तु सारा विशाल पण्डाल खाली पडा था। कडी धूप मे बचने के लिए झण्डावन्दन के समय शामियाने की एक पतली पट्टी सी लगाई गई थी, कुछ दर्जन श्रोता वहां भी बैठ गए थे।

एक समय अनुशासन और संगठन की दृष्टि से आर्यसमाज की अपनी छवि और धाक थी, परन्तु आर्यसमाज स्थापना-दिवस के अवसर पर सयुक्त सभा की उपस्थिति देख कर पुराने आर्य प्रेमी दु खी हो गए। सारे कार्यक्रम भी घोषित समय-क्रम के अनुसार नहीं हुए। सम्भवत: इस स्थिति का मूल्याकन करते हुए बडे वेदना-पूर्ण स्वरो मे 'ओ३म्' की पताका फहराते हुए त्रिवेदतीर्थ स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि एक शताब्दी पूर्व आर्यसमाज की स्थापना के समय समस्त विश्व में आर्य बनाने का संकल्प किया गया था, पर इन सौ वर्षों में हम सारी सृष्टि को क्या दिल्ली को भी आर्य नहीं बना सके। आज आर्यसमाज स्थापना-दिवस के अवसर पर हमें सारे संसार या दिल्ली को नहीं अपने परिवार को आर्य बनाने का संकल्प करना होगा।' हमें संकल्प करना होगा कि हम मन-वचन-कर्म से स्वय आर्य बनें और अपने परिवार को सच्चा आर्य बनाएँ। दिल्ली के कथित आर्यजन यदि पूरी गम्भीरता और ईमानदारी से एक वर्ष के इस एकसूत्री कार्यक्रम को पूरा कर सकें तो वर्ष भर मे ही बहुत कुछ हो सकता है।

म० बुद्ध के निर्वाण की घडी समीप आ गयी थी। उनका शिष्य आनन्द आसन्न संकट से भयभीत होकर रोने लगा और कातर स्वर में बोला 'आपके जाने पर क्या होगा?' म० बुद्ध ने उत्तर दिया था—रोते क्यों हो, तुम अपने दीए स्वयं बनो 'आत्मदीपो भव'। अपने पथ-प्रदर्शक स्वयं बनो, आर्यसमाज का एक शताब्दी का इतिहास राष्ट्रीय पुनर्जागरण का जन-आन्दोलन रहा है। प्रत्येक आर्यजन ने सकट और परीक्षा की घड़ी में अपने बलबूते पर संस्था को अपने खून, पसीने और मेहनत से पल्लवित और पुष्पित किया है। १०६ वर्ष पूर्व ऋषि ने अवतारवाद पाषाण पूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद की पताका लहराई थी, उन्होंने महाभारत के समय लुप्त हुए वैदिक धर्म की पुन: प्रतिष्ठा की थी, उन्होंने वेदों और वैदिक परम्परा की प्रतिष्ठा की थी, इसी के साथ उन्होंने जन्म के स्थान पर गुण-कर्म के आधार पर त्याग-बलिदान की समिधा से आर्य यज्ञ मे अपनी आहुति दी थी। आज स्थिति कितनी दु खद है उसका एक नमूना और देखिए। दिल्ली की प्रतिनिधि सभा को ओर से समाज-समाज मे आर्य युवको का संगठन सुदृढ करने के लिए प्रत्येक आर्य-समाज से अनुरोध किया गया था। इस अनुरोध के उत्तरमे एक आर्यसमाज के जिम्मे-दार अधिकारी ने उत्तर लिखा है—'हमारी समाज में अभी एक भी युवक सभासद नही है, अत आर्यवीर दल के सगठित करने का सवाल ही नही है, कृपया नोट कर लें। इस दु खद स्थिति को देखते हुए अब समय आ गया है कि यदि हम बिखरे हुए आर्यजनो, आर्य परिवारो और आर्य शक्ति को सगठित करना चाहते हैं तो हमें सकल्प करना ही होगा कि हम केवल नाम से नही प्रत्युत मन-वचन कर्म से वर्ष भर मे स्वय आर्य बनेंगे; अपने व्यक्तिगत जीवन मे तप-त्याग-परोपकार की सच्ची यज्ञ भावना लाएगे और अपने साथ अपने परिवार के छोटे-बडे बाल-युवक-स्त्री-पुरुष प्रत्येक को भी मनसा-वाचा-कर्मणा वर्ष भर मे पूरा आर्य-कथनी-करनी से-श्रेष्ठ आर्य बनाने का पूरा प्रयत्न करेंगे। यदि बुद्ध के शिष्यो की तरह आचार्य महर्षि दयानन्द के शिष्य भी वर्ष भर मे स्वय आर्य बन सके और अपने परिवार को भी आर्य बना सके तो अगले आर्यसमाज-स्थापना दिवस पर नई आर्यशक्ति का अभ्युदय अवश्य-म्भावी है। □

उगते सूरज के देश से सीख

हम प्रति दिन सन्ध्यावन्दन के मन्त्रो में प्रार्थना करते हैं—'सूर्यमगन्म ज्योति-रुत्तमम्'—हे परमेश्वर, हम आपके उत्तम ज्योतिस्वरूप को प्राप्त हो। साधक आराधना करता हुआ वन्दना करता है—'प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिता ऽऽदित्या इषव'—आपने सूर्य को रचा है उसकी किरणो द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। प्रतिदिन सुबह उषा की लालिमा बखेरता हुआ दिनकर सूर्य आता है। यह आदित्य अपनी रश्मियो से तेजस्विता का विस्तार करता है। प्राचीन भारत के ऋषियो ने उगते सूर्य से जीवन मे नियमबद्धता और तेजस्विता सीखी थी, हमारे देश मे आज अनन्त साधन और मानव शक्ति है, पर हम अपनी समस्याओ, अभावो और कष्टो को दूर करने के लिए विदेशो की आर्थिक, तकनीकी एव सैनिक विशेषज्ञता की सहायता पर अवलम्बित हैं। उसकी तुलना मे 'निपन' या उगते सूर्य के देश-जापान का अवलोकन कीजिए।

जापान मे तेल या पेट्रोल का अत्यन्ताभाव है उसके पास प्राकृतिक साधन भी नही हैं। उसे तेल और प्राकृतिक साधनों का आयात करना पड़ता है, इतने पर भी जापान ने अपनी मोटरों, रेडियो, टेलीविजन सैटो, घडियो, कैलकुलेटरो, वीडियो टेपो, कैमरो तथा दूसरे माल से ससार के सभी प्रमुख देशो विशेषत अमेरिकी और यूरोपीय मण्डियाँ भर दी हैं। जापान का अच्छा माल कम कीमत पर संसार की मण्डियो या बाजारो मे छाता जा रहा है। विदेशी कच्चे माल को आयात करने के बावजूद आज के औद्योगिक, व्यावसायिक राष्ट्रो की तुलना मे जापान को इस अभूतपूर्व सफलता से विश्व के सभी विशेषज्ञ त्रस्त और चकित है। इस सफलता के मूल मे जापान के औसत नागरिक का परिश्रम और देशभक्ति है। जापानी अधिक मेहनत करते हैं और हर काम पूरी सजीदगी और निष्ठा से करते है। इसी के साथ न तो वे उद्योगो मे न राजनीति मे और न विश्व की अर्थनीति मे आपसी मतभेद का प्रदर्शन करते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे वे पूरा निष्ठा, समर्पण और सहयोग से काम करते हैं। उनके इस मेल मिलाप का एक नमूना देखिए कि वहाँ ससार के सब देशो की अपेक्षा सबसे कम अपराध होते हैं। आज जापान के वकीलो का धन्धा पट्ट पड रहा है, क्योकि वहा की जनता मानसिक दृष्टि से स्वस्थ और सबल है, उन्हे आपसी सौहार्द की अधिक जरुरत रहती है।

उगते सूरज के देश जापान से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। पिछले महायुद्ध में वह मित्र राष्ट्रो की आणविक शक्ति से पराजित हो गया था, युद्धक्षेत्र मे भी हार कर वह मन से हारा नही। उसने अपनी मानवीय शक्ति का अपूर्व उपयोग किया। उसने परिश्रम और लगन से हारी हुई बाजी फिर जीत ली है। आज औद्यो-गिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से जापान ससार का दूसरा राष्ट्र बन गया है। जापान की अपेक्षा भारत साधनो और मानवशक्ति की दृष्टि से अपनी अनूठी स्थिति मे है। यदि देश के उपलब्ध साधनो और अपूर्व मानव शक्ति का व्यवस्थित नियमबद्ध उपयोग किया जा सके तो कुछ ही वर्षों मे भारत भी औद्योगिक एव व्यावसायिक दृष्टि से संसार का अग्रणी राष्ट्र बन सकता है, बशर्ते हम भी उगते सूरज के देश जापान से तेजस्वी सूर्य के समकक्ष जीवन मे नियमबद्धता, अनुशासन, और तेजस्विता और मेल मिलाप के गुण अपना सकें।

—·—

समीक्षा

महर्षि दयानन्द की राजनीति-विज्ञान को देन

आयसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द को वेदों का विद्वान्, समाज सुधारक, सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्र-दूत आदि तो माना जाता है किन्तु उन्हें राजनीति-दर्शन का प्रणेता मानने वालों की सख्या बहुत सीमित है।

उपेक्षा के कारण

राजनीतिक चिन्तक के रूप मे महर्षि दयानन्द की उपेक्षा के दो प्रमुख कारण हैं। एक तो भारतीय विश्व-विद्यालय मे पढाया जाने वाला राजनीति शास्त्र का पाठ्यक्रम मूलत: विदेशी विद्वानो के द्वारा बनाया गया है। कुछ वर्षों पहले तक यह माना जाता था कि प्लेटो या अरस्तू, हाब्स, लाक या रूसो की तरह भारत मे कोई विद्वान राज-नीति-दर्शन के क्षेत्र मे हुआ ही नहीं। राजनीति-दर्शन के इतिहास का अर्थ था—ग्रीक, रोमन तथा कुछ यूरोपीय विद्वानो के चिन्तन का इतिहास। ऐसी स्थिति मे जबकि मनु, शुक्र, कौटिल्य, कामन्दक और बोधायन की कोई गिनती नही थी तब महर्षि दयानन्द को कौन पूछता? यह तो गांधीजीके चलते भारतीय चिन्तको पर हमारे राजनीतिशास्त्रियो की दृष्टि पडी और आजकल कुछ विश्वविद्यालयो मे भारतीय राज-दर्शन का पर्चा पढाया जाने लगा है। उसमे ऋषि दयानन्द का भी जैसे-तैसे उल्लेख आ जाता है।

महर्षि दयानन्द की उपेक्षा का दूसरा कारण यह हैं कि उन्हे आर्यसमाज के परकोटे में बाँध दिया गया है। आर्य-समाज की खडन-मडन की नीति के कारण उसके प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द का नाम अनावश्यक ही हिन्दू सम्प्रदाय-वादियों के साथ जुड़ गया है। साधारणतया महर्षि के भक्तों ने भी महर्षिकृत वेदभाष्यों तथा अन्य मौलिक ग्रन्थों का अवगाहन इसी दृष्टि से किया है कि वे उनके धार्मिक विचारों को जनता के सामने प्रस्तुत कर सकें।

आधुनिक भारतीय राजनीतिचिंतन पर कुछ विद्वान प्राध्यापको ने अच्छी पुस्तकें लिखी हैं लेकिन उन्होने महर्षि दयानंद तथा अन्य विचारकों को इस ढंग से चित्रित किया है कि सम्पूर्ण आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन को रहस्य-वादी चिन्तन की सज्ञा मिल गयी है। इस दृष्टि से महर्षि दयानन्द पर डा० रामेश्वरदयाल गुप्त ने उत्तम शोध कार्य किया है।

उनके बाद अब इस कमी का निरा-करण डा. शान्ता मल्होत्रा ने अत्यन्त योग्य प्रकार मे कर दिया है। डा. मलहोत्रा का शोधग्रन्थ, स्वामी दयानद के राजनीतिक चिन्तन को जो उनके अनेक ग्रंथों में मोतियों की तरह बिखरा पड़ा था, न केवल एक सूत्र में पिरोता है अपितु उसकी तर्कसंगत व्याख्या और निष्पक्ष विवेचन भी करता है।

डा. मल्होत्रा का शोधग्रन्थ ध्यान से पढ़ने पर राजनीतिशास्त्र का कोई भी विद्वान् यह कहे बिना न रहेगा कि यदि बेन्थम, जान स्टूअर्ट मिल और टामस हिल ग्रीन को राजनीतिक चिन्तक माना जाता है तो महर्षि दयानद को क्यों न माना जाय ? इसमे सन्देह नहीं कि यद्यपि महर्षि ने अरस्तू की तरह न तो संविधानो का अध्ययन करके आधुनिक अर्थो मे शासन—प्रणालियो के बारे मे बहस चलायी है और न ही उन्होने हाब्स, लाक या रूसो की भांति राज्य की उत्पत्ति का कोई सिद्धान्त प्रतिपादित किया है, तथापि उनकी विशेषता यह है कि उनकी कृतियो में राज्य के सम्बन्ध में वे सब विचार बिखरे पड़े हैं, जिनके समुच्चय को ही राज-दर्शन कहा जाता है और विचार भी ऐसे कि जो उनके पूर्ववर्ती भारतीय चिन्तकों और समका-लीन विचारकों की तुलना में भिन्न और मौलिक हैं। यह आवश्यक नहीं कि राजनीति के सम्बन्ध में महर्षि दयानंद का प्रत्येक विचार आज स्वीकार्य ही हो, किन्तु वास्तविकता तो यह है कि भारत में सातवीं शताब्दी के बाद ऋषि ही ऐसे पहले व्यक्ति हुए हैं, जिन्हें राज-दार्शनिकों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

अर्थव्यवस्था, विदेशनीति, शिक्षा, मानव-स्वभाव, मानव-संरचना आदि विषयों पर महर्षि दयानन्द ने उसी गहराई के साथ विचार किया है, जिस गहराई के साथ आधुनिक विचारकों ने किया है

दैवी सिद्धान्त का निषेध

महर्षि दयानन्द ने मनु द्वारा प्रति-पादित राज्य के दैवी उत्पत्ति के सिद्धांत को निरस्त कर दिया है। राजा ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं, वह नागरिकों का प्रतिनिधि है। यह भी गलत है कि राजा का बेटा ही राजा बने। राजा सदैव निर्वाचित सभापति हो। निर्वाचित सभापति को ही राजा कहा जाए। सम्प्रभुता का निवास राजा मे नही, 'राजधर्म' में हो। दयानन्द का यह 'राजधर्म' रूसो की 'सामान्य इच्छा' के समान ही हं। दयानन्द की 'सामान्य इच्छा' का अधिष्ठान जनता है। वह कहते हैं"...राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक हं, जो प्रजा न हो तो राजा किसका ?...प्रजा की साधारण सम्मति के विरुद्ध राजा व राजपुरुष न हों।"

महर्षि की दृष्टि मे राजा या राज-पद स्वयं में साध्य नहीं है, बल्कि वह लोकहित सम्पादन का साधन मात्र है, इसलिए उन्होने लिखा है कि "...किसी एक मनुष्य को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देवें, किन्तु शिष्ट पुरुषों की जो सभा है उसके अधीन राज्य के सब कार्य रखें।" दूसरे शब्दों मे जिस प्रकार ज्यां बोदाँ और टामस हिल ग्रीन ने राज्य की सम्प्रभुता पर अनेक अकुश स्वीकार किए हैं, उसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने भी राजा को विभिन्न सभाओ के मातहत रखा है। दयानन्द अन्यायी राजा के प्रति बगावत और प्रतिरोध के अधिकार का भी स्पष्ट सम-र्थन करते हैं। 'किसी क्षुद्राशय पुरुष की प्रजा होना स्वीकार मत करो।' इस जनाधिकार और महर्षि के राष्ट्रवाद का गहरा सम्बन्ध है। ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि विदेशी राजा अन्यायी ही होगा, इसलिए उन्होंने स्वराज्य की 'सत्यप्रकाश' में डटकर वकालत की है और उसके अलावा वेदो का भाष्य करते हुए स्पष्ट कहा है "...अन्य देशवासी राजा हमारे देश मे कभी न हो तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।' महर्षि दयानन्द ने अन्यायी राजा की आज्ञा मानने और उसे कर देने का भी विरोध किया है।

प्लेटो से अधिक लोकतान्त्रिक

राजा को निर्वाचित करने और उसके विरोध को उचित मानने का ऋषि दयानन्द का विचार उनकी समाज रचना की समग्र दृष्टि से काफी मेल खाता है। प्लेटो के समान महर्षि भी समाज का विभाजन विभिन्न वर्गों में करते हैं। इस विभाजन का आधार जन्म नहीं, कर्म है। प्लेटो तीन वर्ग मानते हैं और महर्षि दयानंद चार। अपने कर्मणा वर्णाश्रम धर्म के अनुसार ऋषि दयानंद का कहना है कि ब्राह्मण का लड़का शूद्र बन सकता है और शूद्र का ब्राह्मण तथा आवश्यक नहीं कि पिता की सम्पत्ति उसके पुत्र को ही मिले। यदि वैश्य पिता के पुत्र में ब्राह्मण के गुण हों तो वह अपना समय पठन-पाठन मे लगाये और उस पिता को अपने पुत्र के बदले गुरुकुल से किसी अन्य का बेटा, जिसमें वैश्यत्व के गुण हों, मिल जाएगा। ऋषि दयानद का यह वर्ण-परिवर्तन प्लेटो के साम्यवाद के समान क्रान्तिकारी है। हालांकि हैं, दोनों ही अव्यावहारिक। इस तथ्य के बावजूद उक्त सिद्धान्त से यह सिद्ध होता है कि जो ऋषि दयानन्द सामान्य गृहस्थो के लिए आनुवंशिक उत्तराधिकार को नहीं मानते, वह राजापद के लिए आनुवंशिक सिद्धान्त को कैसे मान लेंगे ?

लेखक :

डा० वेदवती वैदिक

(दिल्ली विश्वविद्यालय से पी. एच. डी उपाधि प्राप्त एवं सीनियर फैलो इण्डियन कौंसिल आफ हिस्टारिकल रिसर्च)

प्लेटो की तुलना मे महर्षि दयानन्द इस दृष्टि से अधिक लोकतांत्रिक हैं कि प्लेटो अपने 'दार्शनिक राजा' को असीम अधिकार देते हैं जबकि ऋषि दयानद कहते हैं कि राजा "...अपने मन से एक भी काम न करे जब तक सभासदों की अनुमति न हो।" वास्तव में, ऋषि की कल्पना का राज्य 'प्रतिनिधि-सभाओं के माध्यम से चलने वाला गणतान्त्रिक राज्य है। उनकी राय में प्रत्येक गाँव और शहर में एक विधान सभा होनी चाहिए। उसी विधान-सभा को राजा या निर्वाचित सभापतियों के सहयोग से राज्य-व्यवस्था चलानी चाहिए।" अकेला राजा स्वाधीन का उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है।"

महर्षि दयानंद ने तीन प्रकार की केन्द्रीय सभाओं की स्थापना की बात कही है। राजार्य सभा, विद्यार्य सभा और धर्मार्य सभा। कार्यपालिका, विधानपालिका और न्यायपालिका का आधुनिक विभाजन महर्षि दयानन्द के चिन्तन में स्पष्ट नहीं है किन्तु तीनो के बारे में बल्कि प्रशासन के सचालन में भी उन्होंने विस्तार से विचार किया है। अर्थ-व्यवस्था, विदेश-नीति, शिक्षा, मनुष्य, स्वभाव, सामाजिक संरचना,

(शेष पृ० ८ पर)

वैदिक मन्त्रों में आहुतियों का प्रयोग

शंका-क्या जहाँ-जहाँ 'स्वाहा' शब्द आए वहाँ-वहाँ मन्त्र के आदि मध्य या अन्त में सर्वत्र आहुति देनी चाहिए ?

(श्री पं० वीरेन्द्र जी शास्त्री उपाध्यक्ष वि. वे. परिषद लखनऊ ।

समाधान—स्वाहा पद के विषय में अभिधान चिन्तामणि नामक ग्रन्थ के पृ. ३६६पर उल्लेख है कि श्रौषट् वषट् और स्वाहा ये चारों शब्द यज्ञ-कर्म में आहुति देने के लिए प्रयुक्त होते हैं ।

इसी प्रकार मीमांसा-कोश (सातवां भाग) पृ. ४४८५ पर लिखा है—

स्वाहाकार शब्दः वषटकार शब्दश्च प्रदानार्थः ।

शाबरभाष्य ८।४।५।१८

अर्थात् स्वाहाकार तथा वषट्कार शब्द यज्ञ में आहुति देने के प्रयोजन से प्रयुक्त होते हैं । भाव पद यह है कि मंत्र गत स्वाहाकार का प्रसंगवश चाहे कुछ भी अर्थ हो, पर यज्ञानुष्ठान समय में उसका प्रयोग स्वरूप से आहुति देने के लिए ही किया जाता है । इसका अर्थ विशेष पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । वह तो अपने आप में अक्षुण्ण बना रहता है । उदाहरण के लिए महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद अध्याय २२ तथा ३९ का भाष्य देखा जा सकता है । इन अध्यायों में मन्त्रो के आदि मध्य तथा अन्त मे भी स्वाहाकार उपदिष्ट है तथा महर्षि ने उनका अर्थ भी भिन्न-भिन्न किया है एव उन सभी स्वाहाकारों से आहुति देने का विधान भी किया है । यथा—

यैर्मनुष्यैर्यज्ञेषु सुगन्ध्यादि द्रव्य हवनायाऽद्भ्य. स्वाहा ।

वार्भ्यंभ्य:स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तिभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहाऽर्णवाय स्वाहा सरिराय स्वाहा च विधीयतेते सर्वेषा सुखप्रदा जायन्ते ।

देखो यजुर्वेद २२/२५ का अन्वय

अर्थात् जो मनुष्य यज्ञों में सुगन्ध्यादि द्रव्यो का होम करने के लिए उक्त प्रकार से अद्भ्यः स्वाहा आदि क्रम से स्वाहाकार से अग्नि में आहुतियाँ देते हैं, वे सब को सुख देने वाले होते हैं ।

इसी प्रकार ३९ वें अध्याय के प्रथम मन्त्र के भावार्थ में महाराज लिखते हैं —

कर्पूरेण प्रदीप्तमग्निं चितायां प्रवेश्य यदा प्रदीप्तोऽग्निर्भवेत् तदैतैः स्वाहान्तैरेतदध्यायस्थैर्मन्त्रैः पुनः पुनरावृत्या घृतं हुत्वा शवं सम्यक् प्रदहेयुः ।

भावार्थ की भाषा —कर्पूर से अग्नि को जला कर चिता में प्रवेश कर जब अग्नि जलने लगे, तब इस अध्याय के इन स्वाहान्त मन्त्रों की बार-बार आवृत्ति से घी का होम कर मुर्दे को सम्यक जलावें । ऐसा ही निर्देश भगवान् दयानन्द संस्कार विधि प्रथम संस्करण के अन्त्येष्टि कर्म में करते हैं कि —

'अब स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्य. इत्यादि मन्त्रों से चिता में होम करना । सो जहाँ-जहाँ मन्त्रों के बीच मे स्वाहा शब्द है, वहां आहुति देना । जैसे स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः और पृथिव्यै स्वाहा यहां दूसरी आहुति देना । इसी प्रकार सर्वत्र जानना, ।

'संस्कार विधि' प्रथम सस्करण पृ. १४८

यहां पर भी स्वाहा शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ होते हुए भी मन्त्र के आदि, मध्य तथा अन्त में उपदिष्ट प्रत्येक स्वाहाकार से आहुति देने का आदेश श्री महाराज ने किया है । इसलिए स्पष्ट हुआ कि मंत्रों मे उपदिष्ट प्रत्येक स्वाहाकार से आहुति देने से इनके विभिन्न अर्थों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, अपितु उनकी पुष्टि होती है । साथ ही मत्र में उपदिष्ठ स्वाहाकार से ही आहुति देने का विधान किया है, आहुति के लिए द्वितीय स्वाहाकार के ग्रहण करने का विधान नहीं किया । अतः वि. वे. परिषद् का निर्णय निश्चय ही वेद और महर्षि दयानन्द के मन्तव्य के विरुद्ध है ।

मंत्र के आदि तथा मध्य मे उपदिष्ट स्वाहाकार आहुतिसे देने के विषय मे विभिन्न स्मृतिकार लिखते हैं—

मंत्रादौ मंत्र मध्ये या स्वाहा-
शब्दोऽस्तिचेत्तदा ।
वान्ते प्रयोक्तव्य इति प्रोक्त-
वानाश्वलायन : ।।५१
भवेदव्यवधानेन देवतापदतः पुरा ।
स्वाहाकारस्य पाठश्चेत् तदा
नान्तेभवेदयम् ।।५२

(भट्ट गोपीनाथ प्रणीत 'सस्कार रत्नमाला' मे परिभाषा कारिका पृ.९९)

अर्थ—महर्षि आश्लायन का कथन है कि मंत्र के आदि या मध्य में यदि स्वाहा शब्द है तो उस स्वाहाकार से आहुति देकर अन्त में पुनः स्वाहाकार का प्रयोग करके आहुति नहीं देनी चाहिए । (५१) और यदि व्यवधान रहित देवता पद से पहले स्वाहाकार का पाठ हो तो उसी आनुपूर्वी से (जैसे स्वाहा वाचस्पतये) आहुति देकर अन्त में पुनः स्वाहाकार का उच्चारण करके आहुति नहीं देनी चाहिए (५२) अपितु दोनों ही स्थलों में आहुति के पश्चात् मंत्र शेष पाठ से ही पूरा कर देना चाहिए । ऐसे स्थलों में अंत में आहुति नहीं देनी चाहिए । इसको और अधिक स्पष्ट करने के लिए महर्षि कात्यायन अपने 'कर्म-प्रदीप' २।७।१४ में कहते हैं कि—

स्वाहां कुर्यान्निवाऽत्रान्ते न चैव
जुहुयाद्धविः ।
स्वाहा कारेणहुत्वाऽग्नौ पश्चान्मन्त्रं
समापयेत्

अर्थात् मंत्र के आदि या मध्य में उपदिष्ट स्वाहाकार से वहीं अग्नि में आहुति देकर अन्त में न तो स्वाहा का उच्चारण करे और न ही आहुति देवे । अपितु उस-उस स्थल मे उपदिष्ट स्वाहाकार से ही आहुति देकर पश्चात् मंत्र शेष पाठ करके पूरा कर देवे । इस सन्दर्भ मे नासिक निवासी श्री वारेशास्त्री अपनी संहिता 'स्वाहाकार-प्रदीप' में लिखते हैं—

यत्र तु मत्रमध्ये स्वाहाकारः
तत्र तु तस्मिन्नेव स्वाहान्ते
होम. पश्चान्मंत्र समाप्तिः । न तु
मंत्रान्तेपुनः स्वाहाकारः ।
शास्त्रार्थ परिच्छेद पृ २३१

अर्थ—जहाँ मंत्र के मध्य में स्वाहाकार है, वहां उसी स्वाहाकार से होम अर्थात् आहुति देनी चाहिए । पश्चातमंत्र शेष पाठ करके समाप्त करना चाहिए । मंत्रान्त मे पुनः स्वाहाकार पढ़ कर आहुति नहीं देनी चाहिए ।

गोपथ ब्राह्मण उत्तर भाग २।१७ में प्रवृत्त आहुति होम का विधान है जिसमे देवता पद से पहले स्वाहाकार का प्रयोग है । जैसा कि सस्कार-रत्नमाला' की परिभाषा कारिका ५२ में वर्णित है । अपने लिए आशी - आश्वसन पूर्वक यजमान—

स्वाहा वाचे । स्वाहा वाचस्पतये ।
स्वाहा सरस्वत्यै । स्वाहा
सरस्वत्या इति पुरस्तात् स्वाहा-
कारेण जुहोति ।

देवता वाचक पद से पहले प्रयुक्त स्वाहाकार से चार आहुतियाँ देता है, जिनमे स्वाहाकार की आहुति डालकर देवता का नामनिर्देश करता है ।

महर्षि आपस्तम्ब प्रणीत आपस्तम्ब श्रौतसूत्र में परिभाषा खंड ३ के चौथे सूत्र—

'जुहोति चोदनः स्वाहाकार प्रदान :' की वृत्ति मे श्री हरदत्ताचार्य एक ब्राह्मण वचन उद्धृत करते हुए लिखते हैं—

'पुरस्तात् स्वाहाकृतयो वा अन्ये देवाः । उपरिष्ठात् स्वाहा कृतयो अन्ये । इति द्वयोरेव नियमात् । अतरे यथा दावन्तेवा स्वाहाकारः पठ्यते तत्र तेनैव स्वाहाकारेण प्रदानम्' ।

अर्थात् कुछ मत्र ऐसे हैं, जिनमें देवता वाचक पद से पहले स्वाहाकार पढ़ा गया है और कुछ ऐसे हैं, जिनमें अन्त में पढ़ाया गया है । इसलिए जहाँ आदि या अंत में स्वाहाकार पढ़ाया गया है वहां उसी स्वाहाकार से आहुति प्रदान करनी चाहिए ।

इतनी लम्बी प्रमाण-शृंखला के पश्चात् निवेदन है कि मंत्र के आदि या मध्य में जहां स्वाहाकार हो वहां उसी स्वाहाकार से आहुति देनी चाहिए तथा ऐसे मंत्रों के अत में पुनः आहुति नहीं दी जाएगी ।

लेखक :

स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ

इसी प्रकार स्वाहाकार से उत्तरवर्ती देवता के लिए तथा स्वाहाकार से पूर्ववर्त्ती देवता के लिए आहुति देने की प्रक्रिया है ।

अब शंका के अंतिम भाग के समाधानार्थ मत्रान्त मे स्वाहा उपदिष्ट हो या न हो प्रत्येक अवस्था में आहुति देने का प्रकार क्या हो इस विषय का प्रतिपादन करते हैं । महर्षि गोभिल अपने गोभिलीय गृह्य सूत्र के १।९।२१ मे लिखते हैं—

'मत्रान्ते स्वाहाकारः' ।।

भट्टनारायण वृत्ति —मत्रान्तोऽवसानं मंत्रान्तः तस्मिन् मत्रान्ते स्वाहाकारो वक्तव्यः इति वाक्य शेषः । अधिकाराद् होममन्त्रान्ते एव न तु जपादिष्वपीति तत्रापि अनाम्नात स्वाहाकारेषु न तु आम्नात स्वाहा कारेष्वपि । कुतः स्वाहाकारः प्रदानार्थत्वात् हविष. । तस्य चार्थस्याम्नाय सिद्धेमेव कृतत्वात् । द्वितीयस्याम्नानमनर्थकं स्यात् । यत्र पुनर्मन्त्रस्यादौ स्वाहाकारः यथा 'स्वाहामरुदभिः परिश्रीयत्व०

यजु० ३७।१३ इति तत्रापि नैवान्ते स्वाहाकारः स्यात् तुल्यत्वात् कारणस्य । तत्रापि स्वाहाकारेणैव हविः प्रदानं कृत्वा मन्त्रं समावर्त्तयेत् एवमर्थत्वात्स्य ।

भावार्थ—सूत्र मे वृत्यनुसार दो बातें कहीं गई हैं ।

(शेष आगामी अक मे)

आर्य जगत् समाचार

नरेला थाने में न्यायालय व पुलिस शक्ति का दिन दहाड़े खुला अपमान

अधिकृत सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि दिल्ली के मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री डी. एन. कादियान के २७ मार्च, १९८१ के आदेश तथा नरेला के एस० एच० ओ० के २८ मार्च के आदेश के अन्तर्गत कन्या गुरुकुल नरेला के कुछ कार्यकर्त्ता नरेला नगरवासियो एव नरेला थाने के कर्मचारियों विशेषतः ए० एस० आई रतन सिह की उपस्थिति में अपना सामान नरेला थाने के मालखाने से उठाकर बुग्गियो मे रख रहे थे कि साधुराम, महावीर, अशोक, राजेन्द्र, शिव कुमार, श्याम, ओम प्रकाश आदि ने गुरुकुल के कार्यकर्त्ताओं से मारपीट शुरू कर दी। ए० एस० आई० रतन सिंह और थाने के सिपाही मूक दर्शक बने यह सारी कार्यवाही देखते रहे।

ज्ञात हुआ है कि बाद मे दिल्ली राज्य के प्रमुख पुलिस अधिकारियो ने पहुच कर उक्त ए० एस० आई० को निलम्बित कर दिया और अदालत तथा पुलिस अधिकारी के आदेश की तामील करते हुए आर्य कार्यकर्त्ताओ को गुरुकुल की सम्पत्ति ले जाने दी।

कन्या गुरुकुल नरेला के अधिकारी और नरेला की जनता न्यायालय और पुलिस के आदेश की अवहेलना एव साधु राम और उसके परिवार द्वारा की गई मारपीट मे थाने के पुलिस अधिकारियों की उपेक्षा से बेचैन हो गए हैं, आशा है कि जनता की बेचैनी दूर करने के लिए राज्य की सरकार सारे मामले की न्यायिक जाँच का आदेश देगी।

१८०० अपहृत कन्याएं बचाई गईं

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने पत्रकारो को सूचना दी है वेश्यावृत्ति पर कानूनी प्रतिबन्ध होने के बावजूद कानपुर नगर महिलाओ के क्रय-विक्रय का बहुत बडा बाजार है। कानून की पकड से बचने के लिए वेश्यावृत्ति कराने वाले लोग कई-कई युवतियो को अपनी पत्नी बना कर उनसे वेश्यावृत्ति क ाते हैं।

श्री आर्य ने पत्रकारो को बतलाया कि उन्होंने अपने बीस वर्ष के कार्यकाल मे १८०० से अधिक अपहृत लड़कियां और महिलाए गुन्डो-बदमाशो के चगुल से बचाई हैं। उनमें से ५०० लडकियो के विवाह उनके माता-पिताओ की स्वीकृति से कराए गए हैं। ३०० लड़कियो के विवाह मे उन्होंने स्वत: अभिभावक बन कर कन्यादान किया है।

गुरुकुल कांगड़ी में गोवर्द्धन शास्त्री पुरस्कार

स्वामी श्रद्धानन्द जी के समय के गुरुकुल के प्रधानाध्यापक प्रो० गोवर्द्धन शास्त्री की स्मृति में उनके सुपुत्र एवं कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी श्री बलभद्र कुमार ने संघड़ विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर के माध्यम से १२००० रु० की स्थिर निधि से गुरुकुल कांगड़ी में गोवर्द्धन शास्त्री पुरस्कार की व्यवस्था की है। इस धनराशि का एक सहस्र ब्याज वैदिक एवं आर्षसाहित्य या विज्ञान अध्यात्म के जीवनोपयोगी साहित्य को जन संचार माध्यमो से जनता तक सर्वोत्तम रूप से पहुंचाने वाले व्यक्ति को दिया जाएगा।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के नए पदाधिकारी

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के ये अधिकारी निरन्तर तीसरे वर्ष के लिए चुने गए—प्रधाना—श्रीमती शांतिदेवी मलिक, उपप्रधान—श्रीमती सुशीला आनन्द, शकुन्तला आर्या, सरला मेहता प्रधान मन्त्रिणी—प्रेमशीला महिन्द्रू सहमन्त्रिणी—कृष्णा चड्ढा, उपमन्त्रिणी—प्रकाश आर्या, ईश्वररानी मेहता, कोषाध्यक्षा—श्रीमती सन्तोष धवन, सहकोषाध्यक्षा—तारा वैद्य।

तलवण्डी में आर्य पुत्री मॉडल पाठशाला

तलवण्डी साबो जिला भटिण्डा में १ अप्रैल को यज्ञ के बाद आर्य पुत्री मोडल पाठशाला प्रारम्भ कर दी गई है। पुत्री पाठशाला के लिए चौ० आत्मसिह जी की पत्नी श्रीमती सन्तो देवी तथा श्री जनकराज की माता श्रीमती प्रसन्नी देवी ने ५०१-५०१ की धनराशिया तथा तलवण्डी साबो माल के पटवारी श्री गुरुबख्शसिह तथा पाठशाला के मैनेजर श्री वेदकुमार जी सुपुत्र श्री किशोरचन्द जी ने १०१-१०१ रुपये दिए। गुरुकुल भटिण्डा के श्री भगवान वानप्रस्थी ने ५१) तथा श्री गुरुबचनसिह ने ११) रु० दिए।

महिला आर्यसमाज, महानगर लखनऊ के अधिकारी

नये वर्ष के ये अधिकारी चुने गए प्रधान—श्रीमती विमला शास्त्री, उपप्रधाना—श्रीमती शांति देवबाला, मंत्रिणी—गीता आर्या, कोषाध्यक्षा—श्रीमती शांति शर्मा।

भटिण्डा में आर्यसमाज स्थापना दिवस

५ अप्रैल को श्री वजीरचन्द जी की अध्यक्षता मे आयोजित आर्यसमाज स्थापना दिवस की सभा में सर्वश्री रामचन्द्र, धर्मदेव, ओम्प्रकाश वानप्रस्थी, रिखीराम, प. योगेन्द्रपाल आदि ने राष्ट्र-निर्माण मे आर्यसमाज की निस्सवार्थ सेवाओ पर भाषण दिए।

आर्यसमाज भटिण्डा ने आर्यगर्ल्स हाई स्कूल भटिण्डा की प्रिंसिपल श्रीमती कमला भाटिया की माता जी के स्वर्गवास पर शोक प्रस्ताव स्वीकृत किया।

गुरुकुल करतार पुर में दाखिला शुरू

श्री गुरु विरजानद वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालधर (भारत सरकार यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन द्वारा मान्यता प्राप्त गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित) मे नये छात्रों का प्रवेश १ मई १९८१ से शुरू है। स्कूल में पढाए जाने वाले विषय समानस्तर गणित व अंग्रेजी आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत व धार्मिक शिक्षा विशेष है।

नि:शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य अध्यापकों का प्रबन्ध स्वच्छ वातावरण तथा भोजन दुग्ध घृत आवास आदि की नि:शुल्क व्यवस्था छात्रों को सुविधाए हैं।

प्रवेश कम-से कम कक्षा ४ या ५ उत्तीर्ण होना जरूरी है, हिन्दी अवश्य जानता हो।

आर्य निर्देशिका के पदाधिकारी

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के आर्य निर्देशिका योजना मण्डल के वर्ष ८१ में निम्न पदाधिकारी नियुक्त किए गए—

सरक्षक—स्वामी ओमाश्रित सरस्वती, उपसरक्षक—श्री लेखराज तन्दा, योजनामंत्री—श्री कमल किशोर आर्य, सयोजक—श्री कृष्णलाल, प्रचार मन्त्री—श्री गुरुदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष एवं कार्यालय-मन्त्री—कुमारी सुषमा शर्मा।

हिन्दी के साहित्यसेवी पं० शंकर देव विद्यालंकार का स्वर्गवास

सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक-साहित्यसेवी प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. शकरदेव विद्यालंकार का दो मास की बीमारी के बाद ७४ वर्ष की आयु मे २ अप्रैल की रात को बम्बई मे देहान्त हो गया। वह अपने पीछे दो पुत्रियां, हजारो की संख्या मे शिष्य-शिष्याएं और साहित्यिक मित्र छोड गए हैं।

प. शकरदेव का जन्म गुजरात के एक प्रख्यात आर्यसमाजी परिवार में हुआ था। १९२८ में वह गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक हुए, बाद में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी-सस्कृत मे एम.-ए. किया। गुजरात के गुरुकुल सूपा, महिला कालेज पोरबन्दर तथा गुरुकुल कांगडी आदि में ४८ वर्ष तक अध्यापन कार्य करने के बाद वह पिछले ४ वर्षों से कन्या गुरुकुल पोरबन्दर के प्रबन्धक-ट्रस्टी थे।

उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'नैवेद्य', 'चित्रांगना' 'फूलों की डाली' आदि बगला तथा अनेक गुजराती कृतियो का हिन्दी रूपान्तर किया। 'प्राचीन भारत के विद्यापीठ' उनकी विशिष्ट कृति है। उनके लेख नवनीत, कादम्बिनी, गुजराती 'कुमार' आदि पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित होते रहे। वह काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रतिष्ठित सदस्य थे। नागपुर के प्रथम विश्व हिन्दी-सम्मेलन में अहिन्दी भाषी-हिन्दी सेवियो मे उन्हें पुरस्कृत किया गया था। उनके निधन से एक अहिन्दी भाषी हिन्दी-सेवी आर्य विद्वान् सदा के लिए उठ गया है।

साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' शंकरदेव जी के असामयिक निधन पर परमदयालु परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता है और उनके शोकसंतप्त परिजनों से हार्दिक सवेदना प्रकट करता है।

आर्यसमाजों के सतसंग

१६-४-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं० वेदपाल शास्त्री; अशोक विहार के-सी-५२ ए—प० देवराज वैदिक मिशनरी; आर्यपुरा—पं० सीसराम भजनोपदेशक; आर के. पुरम सैक्टर १—डा० रघुनन्दन सिह; आनन्द विहार हरिनगर एल ब्लाक—पं० खुशीराम शर्मा एम-एम-सी; इन्द्रपुरी—श्रीमती सुशीला राजपाल; किग्जवे कैम्प—प० हरिदत्त शास्त्री; किशनगज मिल एरिया—प० महेश चन्द्र भजन मन्डली, कालकाजी डी. डी. ए फलैट्स—डा सुखदयाल भूटानी/; गांधी नगर—प० विष्णुदेव प्रसाद विद्यालकार; गीता कालोनी—पं० ओम प्रकाश भजनोपदेशक; गुड़ मन्डी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; १५१ गुप्ता कालोनी—प० उदयपाल शास्त्री; गोविन्द पुरी—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; जंगपुरा भोगल—प० मनोहर 'विरक्त' जहांगीर पुरी के-१४३६—प० प्रकाशवीर व्याकुल; टैगोर गार्डन—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, तिलक नगर—प० सत्यभूषण वेदालकार; तिमारपुर—पं० सत्यदेव भजनोपदेशक; नारायण विहार—डा० देवेन्द्र द्विवेदी; नया बांस—मास्टर ओम प्रकाश; न्यू मुल्तान नगर श्रीमती भगवान देवी; पजाबी बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार; पंजाबी बाग एक्स्टेन्शन १४/३—आचार्य कृष्णगोपाल; पश्चिम पुरी जनता क्वार्टर—पं० छज्जूराम शास्त्री; बाग कड़े खां—प० बरकत राम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, माडल बस्ती—श्री मोहनलाल गांधी; महरौली—पं० महेन्द्रप्रताप शास्त्री; मोती नगर—पं० ईश्वर दत्त एम-ए.; रमेश नगर—प० रामदेव शास्त्री; राणा प्रताप बाग—पं० वेद व्यास भजनोपदेशक; लड्डू घाटी—प० विजयपाल शास्त्री; विक्रम नगर—पं० वीरव्रत शास्त्री; सराय रोहेला—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सोहन गज—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; शादीपुर—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; शकूर बस्ती रानी बाग—प० केशव चन्द्र मुन्जाल शालीमार बाग—डा० रघुवीर वेदालंकार;

—ज्ञानचन्द्र डोगरा, वेद प्रचार विभाग

रविवार ५ अप्रैल को आर्यसमाज रघुवरपुरा मे आर्यसमाज स्थापना दिवस के निमित्त बृहद् यज्ञ हुआ। आर्यसमाज स्थापना के विषय मे आचार्य रामचन्द्र शर्मा, आचार्य सत्यप्रिय और डा० सत्येन्द्र योगी के भाषण हुए।

चिट्ठी-पत्री

आहुति के लिए 'स्वाहा' का प्रयोग

आर्य संदेश के १-२-८१ के अंक में स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती का लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होने अजमेर वेदसगोष्ठी के ११ नियमो में से एक—आठवें निश्चय को (कि 'वेदपारायण यज्ञो मे—मन्त्र के अन्त मे 'स्वाहा' आने पर आहुति के लिए पुन: स्वाहा शब्द बोला जाए) ठीक नहीं बताया है।

इस सम्बन्ध में संक्षेपत: निम्नलिखित निवेदन है—

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदमंत्रो मे आए 'स्वाहा' शब्द का अर्थ 'सत्य क्रिया, सत्य मधुर वाणी, स्वार्थ त्याग, दान आदि मानते है और वेदो को सृष्टि के प्रारम्भ मे प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान मानकर यज्ञों मे वेदमत्रो का विनियोग परवर्त्ती मानते हैं जब कि सायण, महीधर आदि वेदों को यज्ञ करने के लिए ही बनाया गया और 'स्वाहा' का अर्थ केवल आहुति ही मानते हैं।

२. पौराणिको के ब्रह्मपारायण यज्ञों से आर्यसमाज मे प्रचलित ब्रह्मपारायण यज्ञों की विधि भिन्न है।

३. हमारे वेदपारायण यज्ञो का उद्देश्य वेद का स्वाध्याय करना-कराना है। अत: ये यदि सार्थक मन्त्र पाठ से किए जाएं तो और भी अच्छा हो।

४. इनमे प्रत्येक मन्त्र के बाद 'स्वाहा' लगाकर आहुति दी जाती है। मन्त्र मे आए 'स्वाहा' शब्दो पर आहुति नही दी जाती है।

५. अत. मन्त्रगत 'स्वाहा' का महर्षिकृत अर्थ अक्षुण्ण रखते हुए आहुति के लिए अन्य 'स्वाहा' का अन्त में प्रयोग आवश्यक होता है।

६. इसी लिए मन्त्रान्त 'स्वाहा' के पश्चात् भी आहुति के लिए दूसरे 'स्वाहा' का प्रयोग होना वेद संगोष्ठी में निश्चित हुआ है।

—वीरेन्द्र शास्त्री, उपाध्यक्ष, विश्ववेद परिषद
सी-८१७ महानगर, लखनऊ-६

महर्षि दयानन्द की देन······

(पृष्ठ ४ का शेष)
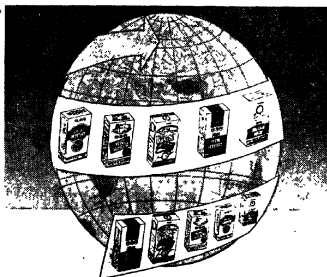
आदि विषयो पर ऋषि दयानन्द ने उसी गहराई के साथ विचार किया है, जिस गहराई के साथ अनेक भारतीय और पश्चिमी विचारको ने किया है।

चक्रवर्ती साम्राज्य

डा० शान्ता मल्होत्रा ने अपने शोध-ग्रन्थ में इन सब विचारों का सुन्दर सकलन किया है। डा० मल्होत्रा ने दयानन्द की 'चक्रवर्ती साम्राज्य' की कल्पना को स्पष्ट करके आधुनिक राजनीतिशास्त्र की बड़ी सेवा की है। 'चक्रवर्ती साम्राज्य' से दयानन्द का अभिप्राय साम्राज्यवादी राज्य से नहीं, न ही किसी एक व्यक्ति या देश के अन्य राष्ट्रो पर आधिपत्य से है। उनका अभिप्राय एक प्रकार के विश्व महासंघ से है, जिसका निर्माण विभिन्न राष्ट्रों की प्रतिनिधि सभाओ से होगा और जिसका सचालन एक सर्वोच्च 'महाराज सभा के द्वारा होगा। दयानन्द का यह विचार लोहिया के विश्व महासंघ और विश्व संसद के विचार के बहुत निकट है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि एक भारतीय चिन्तक ने १८वीं सदी में इतने प्रगतिशील विचार व्यक्त किए।

मुझे विश्वास है कि डा० मल्होत्रा का शोधग्रन्थ भारत के राजनीतिशास्त्रियों की आंख खोलने का काम करेगा, हालांकि यदि वह महर्षि दयानंद के हर विचार की तुलना सम्बन्धित पश्चिमी विचारकों के दर्शन के साथ विस्तार से करतीं और ग्रन्थ में अलग से एक अध्याय इसी विषय पर रखतीं तो उन पश्चिमी विद्वानों को भी सबक मिलता, जो यह मानकर चलते हैं कि भारत में राजनीति-दर्शन की परम्परा ही नहीं है। अंग्रेजी में लिखे गये इस शोधग्रंथ को भद्रलोकीय विद्वतवर्ग तो पढ़ेगा ही, किन्तु यदि इसका हिन्दी अनुवाद हो जाए तो उस वर्ग को भी काफी लाभ होगा जो महर्षि दयानंद का भक्त तो है किन्तु उन्हें ठीक से समझता नहीं।

चर्चित ग्रंथ 'पोलिटिकल थॉट [illegible] स्वामी दयानन्द, लेखिका—डा० [illegible] मल्होत्रा, प्रकाशक—आर्य [illegible] केन्द्र, ए १/३२ सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली-११००१६ मूल्य ५० रु०।

बी-२/६१ सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली-११००१६

महात्मा हंसराज जन्म-दिवस

रविवार, १९ अप्रैल १९८१ को प्रातः ९ से १२-३० बजे तक डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली में महात्मा हंसराज दिवस समारोह मनाया जाएगा। अध्यक्ष श्री इन्द्रकुमार गुजराल होंगे।

--०--

आर्य समाज करौलबाग का ५२वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज करौलबाग, नई दिल्ली ५ का ५२वां वार्षिकोत्सव ३ मई से ११ मई, १९८१ तक मनाया जाएगा। इसमे वेदों के विद्वान् स्वामी मुनीश्वरानन्द जी तथा भजनोपदेशक जयदेव बिलोई वाले पधार रहे हैं। १४ से ९ मई तक प्रातः ६ से ८ बजे तक यज्ञ वेदो पदेश होगा और ३मई से ९ मई तक रात्रि ८ से १० बजे तक भजन और वेदोपदेश होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार १० मई को ९।। बजे के लगभग होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७२७/१-बी, गुलाबक बस्ती, शौबीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एकप्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ४ : अंक २६   रविवार २६ अप्रैल १९८१   दयानन्दाब्द १५६

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

न्यायमूर्ति एच० आर० खन्ना का दीक्षान्त भाषण

४५० स्नातकों को उपाधियां : ५२ ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार

आर्य भट्ट विज्ञान प्रदर्शनी का आकर्षक आयोजन—हजारों नर-नारी आयोजन में सम्मिलित हुए।

कई वर्षों के पश्चात इस वर्ष ११-१३ अप्रैल को विश्वविख्यात गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव एवं दीक्षान्त समारोह उत्साहपूर्ण वातावरण में विश्वविद्यालय हाल मे मनाया गया। दीक्षान्त-भाषण न्यायमूर्ति (अवकाश प्राप्त) श्री एच. आर. खन्ना ने दिया एवं विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति डा० बलभद्रकुमार हूजा द्वारा ३५० स्नातकों को विभिन्न उपाधिया वितरित की गई। आचार्य श्री निरूपण विद्यालंकार ने ५२ नवविद्यार्थियो का वेदारम्भ संस्कार कराया।

इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, बहिन मीराजी यति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एवं उपप्रधान आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले, मंत्री श्री ओ३मप्रकाश जी त्यागी एवं कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी एडवोकेट दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा एवं मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार, भारत सरकार के शिक्षा सचिव श्री चतुर्वेदी जी, श्री राजगुरु शर्मा, श्री सच्चिदानद शास्त्री, डा० सत्यकेतु विद्यालकार, पं० सत्यदेव भारद्वाज, वेदालंकार श्री बलराज मधोक, भूतपूर्व कुलपति, आचार्य प्रियव्रत जी एवं अनेक आर्य विद्वान गुरुकुल मे पधारे।

यजुर्वेद परायण महायज्ञ का आकर्षक आयोजन ८ अप्रैल से प्रारम्भ हुआ जिसके ब्रह्मा सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् एव याज्ञिक श्री प० राजगुरु शर्मा थे। अन्याकर्षण आर्य भट्ट विज्ञान मेले का उद्घाटन रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय द्वारा किया गया जो इस मेले में आयोजित प्रदर्शनी को देखकर बहुत सतुष्ट हुये और उन्होने गुरुकुल विश्वविद्यालय को अपने विश्वविद्यालय का पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की। इस प्रदर्शनी में हजारो नर-नारी प्रतिदिन देखने आ रहे थे। इसी कारण प्रदर्शनी रविवार १९ अप्रैल तक चलती रही।

यज्ञ की पुर्णाहुति रविवार १२ अप्रैल को प्रात वेदारम्भ सस्कार के बाद हुई जिसमे सभाओ के अधिकारी वर्ग के अतिरिक्त सभी अध्यापकों, प्राध्यापकों, कर्मचारियो एव आर्यजनों ने परिवार सहित भाग लिया।

नेरोबी में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक संस्थान की स्थापना

आर्यजन अपनी जिम्मेवारी निबाहें—प्रधान की सलाह

नैरोबी। ५ अप्रैल के दिन आर्यसमाज मंदिर नैरोबी (साउथ सी) में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक संस्थान—इन्टरनेशनल वैदिक इन्स्टीट्यूट की अधिकृत रूप से स्थापना करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका के प्रधान श्री पी० एस० सैनी ने घोषित किया कि आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आर्यजनों को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि क्या हम आर्यसमाज की उन्नति के लिए अपना फर्ज निबाह रहे हैं?

मंदिर में ओ३म् की पताका लहराते हुए आर्यसमाज नैरोबी के संस्थापकों में से अन्यतम श्री बी० डी० भारद्वाज ने कहा—आज के दिन हमें आर्यसमाज की उन्नति के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देने का संकल्प करना चाहिए।

आर्यसमाज साउथ सी के साथ निर्माणाधीन अतिथिशाला की आधारशिला डा० पी० पी० आर्य ने रखी। अतिथिशाला के लिए उन्होंने ५० हजार रुपये दान किए। आर्यसमाज के संरक्षक एवं सदस्य श्री इन्दरसिंह मिस ने अतिथिशाला में लगने वाले सम्पूर्ण लकड़ी के कार्य का खर्चा देना स्वीकार किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका के प्रधान श्री पी० एस० सैनी हिन्दू कौंसिल, केन्या के उपाध्यक्ष चुन लिये गये हैं।

उर्दू को द्वितीय भाषा बनाना देश के लिए घातक

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाये जाने के निर्णय को देश के लिए घातक बताया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा महासचिव श्री ओमप्रकाश त्यागी ने एक वक्तव्य में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा इस विषय में की गई घोशणा को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि इस निर्णय से हिन्दी को भारी आघात पहुंचेगा तथा पृथकतावादी तत्वों को प्रोत्साहन मिलेगा।

आर्य नेताओं ने वक्तव्य में कहा है कि इससे पहले बिहार सरकार ने भी इसी प्रकार व्यर्थ ही उर्दू के नाम पर गड़े मुर्दे उखाड़ कर राज्य में अशान्ति का वातावरण पैदा किया था, उत्तरप्रदेश सरकार ने भी उसी नीति का अनुसरण करके घातक कदम उठाया है, जिसका देश के अन्य राज्यो पर भी बुरा प्रभाव पडना स्वाभाविक है।

उन्होने कहा कि जिस स्कूल में उर्दू के केवल दो-चार छात्र हो उनके लिए भी उर्दू शिक्षकों की व्यवस्था करने से सरकारी कोष का दुरुपयोग ही कहा जाएगा। आर्य नेताओं ने उत्तरप्रदेश की

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

परम ज्ञान से वरणीय परमेश्वर की प्राप्ति

शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि
चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन ।

सग्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तप-
सस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः ।

परमेण पशुना क्रीयसे सहस्रपोषं
पुषेयम् ॥ यजु ४-२६

ऋषि.—वत्सः । देवता—यज्ञः ।

शब्दार्थ—हे (यज्ञ) पूजनीय और सकल पदार्थों तथा सुखो के दाता भगवन् (सग्मे) ससार मे (ते गौः) तेरी वाणी तथा उसके द्वारा प्रसृत ज्ञान सर्वत्र व्याप्त है। (तपस· तनूरसि) तू तप का विस्तारक तथा तपस्वी को बढ़ाने वाला है। (प्रजापते. वर्णः) गृहस्थ द्वारा वरणीय है। (परमेण पशुना) दिव्यदृष्टि या परमोत्कृष्ट ज्ञान द्वारा (क्रीयसे) प्राप्त किया जाता है, वश मे आता है।

अपने प्रिय वत्स पर ऐसी कृपा करो कि मैं (सहस्रपोषं) आह्लाद युक्त सहस्र पुष्टियों के द्वारा (पुषेयम्) सदा पुष्ट रहूं। तेरी पूजा और सगत का गुर मैं समझ गया हूं। इसलिए (शुक्र त्वा) शुक्र स्वरूप तुझे (शुक्रेण) अपने अन्दर शुक्र को बढ़ा कर और दूसरों को शक्र देकर (चन्द्र त्वां) आह्लादस्वरूप तुझे (चन्द्रेण) अपने अदर आह्लाद को बढ़ा कर और दूसरों को आह्लाद देकर (अमृत त्वा) अमृत स्वरूप तुझे (अमृतेन) अपने में अमृतत्व को व्यक्त करके और दूसरों को अमृतत्व की ओर अग्रसर करके (क्रीणामि) प्राप्त करता हूं अपने वश में करता हूं। जिससे (अस्मे) मुझे सब (चन्द्राणि) आनन्द और पोषण मिलते रहें।

निष्कर्ष—१—साधक भक्त, भगवान् को जिस रूप में अपना आराध्य मानता हो, उसे अपने में उसी गुण और स्वरूप को विकसित करना चाहिए।

भगवान् के गुण को साधक जितना विकसित करेगा, वह उतना अन्तरंग सखा बनकर उसे प्राप्त कर लेगा। अर्थात् भगवान् भक्त का क्रीत या वश-वर्ती बन जाएगा। इसी बात को महर्षि दयानन्द ने कहा है—"शुद्धिकारकं शुद्ध भावेन, क्रीणामि--गृह्णामि'। और स्वामी भगवदाचार्य ने कहा है—'सत्यप्रियोहि भगवान् सत्येन प्रीतो भगवतीति वक्तव्यार्थः।

२—शुक्र शरीर में अंतिम सारभूत रस होने से शारीरिक पुष्टि की ओर निर्देश करता है। चन्द्र (चन्द्रमा मनसो जातः) मानसिक शान्ति का संकेत करता है। और अमृत आत्मा की सांसारिक आसक्तियों से मुक्ति का द्योतक हैं।

३—यद्यपि परमेश्वर के शिव, रुद्र, चन्द्र आदि रूपों में से चाहे जिस रूप को अपने में विकसित करके सिद्ध किया जा सकता है, लेकिन परमेश्वर का वरणीय रूप तो दिव्य दृष्टि अथवा परम ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त होता है।

४—दिव्य दृष्टि प्राप्त होने के बाद कोई कामना शेष नहीं रहती। सब प्रकार के आह्लाद (स+ह्ल) और पोषण स्वयमेव प्राप्त हो जाते हैं।

विशेष—जीव मात्र परमेश्वर को वत्स (शिशु) तुल्य प्रिय हैं। यज्ञ का अर्थ पूजनीय, संगति योग्य तथा सब पदार्थों का दाता भगवान् है। शुक्र. चन्द्र और अमृत उसी के भिन्न-भिन्न रूप हैं। इस मंत्र के ऋषि वत्स की तरह जो व्यक्ति अपने को भगवान् का वत्स मान कर उसकी पूजा और सगति करेगा, उसे भगवान् सब प्रकार के आनद और आह्लादजनक पदार्थ देता रहेगा।

अर्थपोषक प्रमाण—यज्ञ=यज देवपूजा संगतिकरण दानेषु—पूजनीय सगत्ति करने योग्य, सब पदार्थों का दाता=भगवान्।

सग्मे—संसारे, ग्मा पृथिवीनामसु नि० १-१ तथा सह वर्तते तस्मिन्—ब्रह्माण्डे।

पशुना—पश्यति अनेन इति पशुः ज्ञानं दृष्टिर्वा। शुक्रं वीर्यम्। चन्द्रं चदि आल्हादे, आल्हादो मानसिको भवति। अमृतं मुक्तिः आत्मनो भवति।

तनूः—विस्तारकः—तनु विस्तारे वर्णः—वृञ् वरणे वरणीयः।

प्रजापते.—गृहस्थस्य मनुष्यमात्र-स्येति तात्पर्यम्। —भगवदाचार्यः।

क्रीणामि—गृह्णामि—स्वामी दयानन्द। वशे नयामि—भगवदाचार्य।

—मनोहर विद्यालंकार

उर्दू को द्वितीय भाषा बनाना ... (पृष्ठ १ का शेष)

तमाम आर्य समाजों से अनुरोध किया है कि वे उत्तरप्रदेश सरकार की उर्दू विषयक इस नीति का डटकर विरोध करें।

उन्होंने कहा कि आज जब कि देश अनेक आन्दोलनों के कारण विघटन के कगार पर खड़ा है, इस प्रकार के कदम को घोर अदूरदर्शितापूर्ण तथा एक आन्दोलन को जन्म देने वाला ही कहा जाएगा। आर्यनेता इस विषय को न्याया-लय में ले जाने पर विचार कर रहे हैं।

□

बोट क्लब पर स्थापना-दिवस

मंगलवार २१ अप्रैल, १९८१ के दिन दोपहर १२॥ से २ बजे तक वैदिक सत्संग बोट क्लब की ओर से आर्यसमाज स्थापना-दिवस मनाया गया।

हम अपनी अच्छाई क्यों छोड़ें ?

उन दिनों स्वामी दयानन्द सरस्वती अनूप शहर की सती की मढ़ी में निवास करते थे। एक दिन एक ब्राह्मण स्वामी जी के पास पहुचा, उसने भक्ति भाव से उन्हे पान का एक बीडा भेंट किया। स्वामी जी ने सहज भाव से वह पान मुंह मे रख लिया। पान का रस लेते ही उन्हें अनुभूति हो गई कि उन्हें पान में विष दिया गया है, उन्होंने उस ब्राह्मण को कुछ नहीं कहा। जहर दूर करने के लिए स्वामी जी गंगा पार चले गए, वहा उन्होने वस्ती और न्योली आदि क्रियाओं से पेट की सफाई की।

स्वामी जी को जहर देने की खबर तुरन्त फैल गई। वहां के तहसीलदार सैयद महम्मद अरबी- फारसी के विद्वान थे, स्वामी जी के सत्संग के प्रभाव से वह उनके भक्त बन गये थे। स्वामी जी को जहर देने की बात तहसीलदार को मालूम हुई। उसने उस पापी ब्राह्मण को पकड़ कर हवालात में डाल दिया और बड़ा प्रसन्न होकर स्वामी जी के पास पहुँचा। वह सोच रहा था कि आज स्वामी जी बहुत प्रसन्न होंगे ! निकट जाने पर जब स्वामी जी ने उनकी ओर नजर भी नहीं डाली तब बड़ी आजिजी से तहसीलदार ने स्वामी जी से उनकी अप्रसन्नता का कारण पूछा।

स्वामी जी बोले !मैंने सुना है कि आज आपने मेरे लिए एक आदमी को हवालात में बन्द कर दिया है, परन्तु मैं तो आदमियों को बन्धनों में बंधवाने नहीं आया हूँ, परन्तु उन्हें छुड़वाने आया हूं। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़े तो क्या हम अपनी अच्छाई और श्रेष्ठता छोड़ दें।'

तहसीलदार को बड़ा अचम्भा हुआ। उसने आज तक ऐसा इन्सान नहीं देखा था जो बुराई करने पर भी अपने दुश्मन को क्षमा कर देता हो। तहसीलदार स्वामी जी के सामने हाथ जोड़ कर नमस्कार कर चला गया और उस ब्राह्मण को छोड़ दिया।

—नरेन्द्र

सत्याचरण का व्रत ग्रहण करूं

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ।

इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥ यजुर्वेद १/५

हे सत्यपते परमेश्वर, मैं जिस सत्यधर्म का अनुष्ठान करना चाहता हूं, उसकी सिद्धि आपकी कृपा से ही सम्भव है। सो यह व्रत है कि जिसको मैं निश्चय से पूर्ण करना चाहता हूं। उन सब असत्य कामों से छूट कर सत्याचरण करने मे सदा दृढ़ रहूं।

अलग देश की मांग !

भारत में जिन धर्मों का प्रादुर्भाव और विकास हुआ है, उनमें किसी प्रकार का आंतरिक सांस्कृतिक भेदभाव प्रतीत नहीं होता। उन सब में एक अविच्छिन्न सांस्कृतिक परम्परा एव विचारधारा प्रवाहित होती दीखती है। म० बुद्ध, महावीर स्वामी, आचार्य शकर, गुरु नानक और महर्षि दयानन्द ने शाश्वत भारतीय चिन्तन एवं नैतिक विचार तत्त्वों का ही प्रकाश फैलाया है। गुरु नानक और उनके अनुवर्ती नौ शिष्यों ने गुरुभक्ति, ईश्वर निष्ठा, श्रम, ईमानदारी और सदाचार की बुनियाद पर प्राचीन भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा का बीड़ा उठाया था। सिख धर्म में प्रेम और भाईचारे पर सबसे अधिक जोर दिया गया है। गुरु नानकदेव ने कहा था—जहां-जहां देखई तहं-तहं-रामा, हरि के चरन नित धिआवै नामा।' सिख गुरुओं ने प्राचीन धर्म और सस्कृति के संरक्षण और राम-हरि के संकीर्तन के लिए अपने सर्वस्व की बाजी लगा दी थी। इसी धर्म, गुरुओं और हरि के पन्थ की सुरक्षा के लिए उन्होंने माला के स्थान पर पन्थ को कड़े और कृपाण और तलवार आदि से सुसज्ज किया था।

खेद है कि जिस खालसा पन्थ की स्थापना ही गुरुवाणी, गुरुओ के देश और उनकी संस्कृति व देश की सुरक्षा के लिये की गई थी, आज कहा जा रहा है, कि भारतीयों से सिखो की अलग कौम है, उनका अलग देश है, पंजाब में उनका अलग देश बनना चाहिये। पिछले दिनो आनन्दपुर साहब मे विश्व सिख सम्मेलन में सिखों के पृथक् पंजाब देश की माँग की गई है। यह माँग भी की गई है कि उन्हें संयुक्त राष्ट्र सभा मे सहायक सदस्यता मिलनी चाहिए। कई साम्प्रदायिक सिख नेताओं ने पिछले दिनों पृथक् सिख राष्ट्र—आजाद पंजाब देश और खालिस्तान की माँग की है। मजहबी सिख नेता अतीतकाल में भी पृथक् सिख मुल्क की माँग करते रहे हैं, परन्तु उनकी इस बार की माँग के पीछे जो तत्त्व कार्य कर रहे हैं, उनकी जानकारी होने पर थोड़ी चिन्ता होनी स्वाभाविक है। दिल्ली की जामा मस्जिद के कथित शाही इमाम ने सिखों के आंदोलन को समर्थन दिया है। इसी के साथ इस खालिस्तान की मांग करने वाले गंगासिंह ढिल्लों पिछले दिनों कई बार पाकिस्तानी तानाशाह जन० जिया से भी मिले हैं। ये संवाद भी मिले हैं कि सिखों की माँग से पाकिस्तानी तानाशाह की सहानुभूति है।

इस प्रकार के समाचार भी प्राप्त हो रहे हैं कि विदेशों में बसे सिखों के नाम पर अकाली दल को विदेशों से अंधाधुंध पैसा मिल रहा है। पिछले दिनों भारत में अल्पसंख्यकों में विदेशी ईसाई प्रचारक ईसाई धर्म के व्यापक विस्तार के लिये प्रयत्नशील रहे हैं। इस प्रकार के पुष्ट समाचार भी मिले हैं कि मध्यपूर्व के समृद्ध तैल राष्ट्र अपनी अंधी कमाई के पैसे के आकर्षण से भारत के आठ करोड़ हरिजनों को अपने मजहब में लाने के लिए प्रयत्न शील हैं। ईसाइयों और मुसलमानों के षड्यन्त्र के बाद विदेशी आकाओं और पैसों के बल पर सिखों को भारतीय जनता से पृथक् करने का प्रयत्न बहुत ही विघातक राष्ट्रद्रोह है। देश के सभी राजनीतिक दलों तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक नेताओं को अपने सभी मतभेद भुला कर देश की एकता को खंडित करने वाले ऐसे प्रयत्नों को विफल कर देना चाहिए।

—०—

उन्नति के तीन तत्त्व

भारतीय चिन्तन मे तीन तत्त्वों की महत्ता है। भगवान् के तीन गुणों के आधार पर भक्तों ने उन्हें जग के निर्माता, व्यवस्थापक और सहारक के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में देखा है। जीवन मे सात्त्विक, राजसिक और तामसिक तीन वृत्तियो का संतुलन ही मानव विकास मे सहारा देता है। चिकित्सक शरीर की बात, पित्त और कफ की स्थिति का ठीक मूल्यांकन कर उनकी समुचित चिकित्सा कर सकता है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज में भी श्वेत, केसरिया और हरे रंगो से राष्ट्र मे कई उदात्त गुणो एवं विभिन्न सस्कृतियो के एकीकरण की कल्पना की गई है। पिछले दिनो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ८२वें दीक्षान्त अभिभाषण को प्रस्तुत करते हुए सर्वोच्च भारतीय न्यायालय के भू० पू० न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एच० आर० खन्ना ने भारतीय नवयुवकों विशेषतः छात्रो से जीवन में तीन उदात्त गुण अपनाने की सलाह दी है।

न्यायमूर्ति श्री खन्ना ने जापानी नवयुवको और देशवासियो के तीन उत्कृष्ट गुणो को सराहते हुए भारतीय युवको से अनुरोध किया है कि वे सभी उन्हे अपने जीवन में लायें। ये तीन गुण हैं—कड़ा अनुशासन, कठिन परिश्रम और उच्च नैतिक गुण। इन तीन गुणो को जीवन की घुट्टी मे समाविष्ट कर लेना चाहिये। जापान दूसरे महायुद्ध में पराजित हो गया था। वह अनाज और उद्योग मे प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल और मुख्य ऊर्जा स्रोत तेल और पेट्रोल की दृष्टि से एक परावलम्बी राष्ट्र था। पहाड़ी ऊबड़-खाबड़ देश होने के बावजूद आज जापान अपनी आवश्यकता का अन्न अपनी भूमि पर तथा दूसरी भोज्य सामग्री समीपस्थ समुद्री प्रदेश से प्राप्त कर लेता है। पेट्रोल, मिट्टी के तेल और कच्चे माल को आयात करने के बावजूद जापान आज ससार का एक सर्वाधिक सम्पन्न विकसित औद्योगिक राष्ट्र है तो केवल अपने कड़े अनुशासन, कठिन परिश्रम और ऊंची देशभक्ति के कारण।

हमारे देश में अपार प्राकृतिक साधन हैं, अनन्त मानव शक्ति है। इसके बावजूद हमारी आधी से अधिक जनसंख्या गरीबी की सीमारेखा या मापदण्ड से निम्न स्तर पर है। संसार के सबसे अधिक गरीब, बेरोजगार और निठल्ले-आलसी प्रजाजन हमारे ही देश में हैं। यह स्थिति हमारे सभी उन्नति के प्रयत्न और आयोजनो को व्यर्थ कर देती है। हमारे देश का शिक्षित नवयुवक जबतक जीवन मे उन्नति के उक्त तीन बुनियादी तत्त्वों को ग्रहण नहीं करेगा, तबतक स्थिति मे सुधार सम्भव नही है। हाँ, ये तत्त्व आज का युवक अपनाये इसके लिए देश की सरकार और शिक्षा की रीति-नीति के नियामको को आज के युवक को ऐसी शिक्षा देनी होगी जिससे वह स्वाभिमान के साथ अपने श्रम का ठीक उपयोग कर सके। ☐

भारतीय आज कहाँ हैं ?

देश की बीमारी का आर्यजन मुकाबला करें

—डा० बलभद्रकुमार हूजा, कुलपति, विश्वविद्यालय कांगड़ी

आज देश और समाज में सर्वत्र विघटनकारी शक्तियो का प्रादुर्भाव हो रहा है। एक राष्ट्र, एक विधान, एक निशान की भावना धूमिल हो रही है। भारत में चिराग लेकर भी ढूढिए तो भारतीय या हिन्दुस्तानी जन मुश्किल से मिलेगा। यहां कोई पंजाबी है तो कोई बंगाली, कोई असमिया है तो कोई मारवाड़ी, कोई मराठा है तो कोई गुजराती, कोई ब्राह्मण है तो कोई शैव या वैष्णव, कोई सिख या जाट है तो कोई हरिजन या अहीर, शिया या सुन्नी, लेकिन हिन्दुस्तानी आज कहा है ? आज देश मे प्रान्तीयता और उपजातिवाद की बीमारी घुन की तरह लगी हुई है। ऋषि दयानन्द ने हमें राष्ट्र प्रेम का मन्त्र दिया था। दयानन्द के सैनिक आर्य जन ही इस बीमारी का दृढ़ता से मुकाबला कर सकते हैं।

—०—

अनुशासन, श्रम और नैतिकता से ही देश की प्रगति

नवयुवक मुश्किलों का सामना करें—न्यायमूर्ति एच० आर खन्ना का गुरुकुल कांगड़ी के नए स्नातकों को परामर्श

हरिद्वार । भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के भू. पू. न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एच. आर. खन्ना ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के ८२वें उत्सव पर नए स्नातकों को दीक्षान्त भाषण देते हुए देश की वर्तमान समस्याओं को सुलझाने के लिए अनुशासन, परिश्रम और नैतिकता के गुण अपनाने का परामर्श दिया। श्री खन्ना ने कहा—

गुरुकुल कांगडी देश को स्वामी श्रद्धानन्द जी की देन है । स्वामी श्रद्धानन्द जी जिनका पहला नाम मुन्शीराम जी था, उन्होने महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु के बाद आर्यसमाज का बीडा अपने हाथो में लिया । यह बीड़ा बहुत भारी बीड़ा था। महर्षि दयानन्द भारतवर्ष के उच्च कोटि के समाज सुधारक और धार्मिक नेता थे। महर्षि जी ने हम को एक नई रोशनी दी और हमारे अन्दर सत्य और ज्ञान की जो अनादि और अनन्त हैं, और जिससे वेदों के पृष्ठ भरे हुये हैं उनकी जागृति पैदा की । महर्षि जी ने भारतीय समाज के अन्दर जो त्रुटियां आ गई थी, और जो घुन की तरह हमे अन्दर से खा रही थी उनको खत्म करने के लिए भीष्म युद्ध चलाया । छूआछूत, बाल विवाह, विधवाओ के विवाह पर रोक और स्त्रियो की दशा सुधारना कुछ ऐसे विषय थे जिनकी ओर उन्होने ध्यान दिया ।

उस समय महर्षि ने कैसे बिल्कुल अकेले, जहालत, कट्टरपन और पाखण्ड-बाजी का मुकाबला किया । इसके साथ-साथ उन्होने एक चट्टान की भांति खड़े होकर हिन्दू समाज को सांस्कृतिक आक्रमण से बचाया और उससे टक्कर लेने की शक्ति प्रदान की। महर्षि दयानन्द उन महान् विभूतियों मे से थे, जिन्होंने उन आतरिक कुरीतियो और बुराइयों को जो हमारे समाज की शक्ति को खत्म कर रही थी, ललकारा । उन्होंने हमारी जड़ो को मजबूत किया और हममें अपने अन्दर और अपने भविष्य के सुहानेपन में एक नया विश्वास पैदा किया जिसके फलस्वरूप हिन्दू जाति की रगो में एक नया खून दौड़ने लगा । महर्षि के उपदेशों से, जैसा कि स्वाभाविक ही था, एक नई जागृति देश को स्वतन्त्र कराने के लिये पैदा हुई ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का महर्षि दयानन्द जी के उपदेशो से प्रभावित होकर गुरुकुल कांगडी की स्थापना करना भी एक स्वाभाविक कदम था। महर्षि दयानन्द जी की तरह स्वामी श्रद्धानन्द जी बड़े निश्चयवादी थे, धुन के पक्के थे । उन्होंने आर्य धर्म की विरोधी शक्तियो का मुकाबला करने के लिए आर्य जनता को एक नया बल दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भारत को स्वतन्त्र कराने में भी पूरा भाग लिया। १९१९ में जब अमृतसर मे काग्रेस अधिवेशन, जलियांवाला बाग के काण्ड के बाद हुआ, उसमें स्वामी जी स्वागत समिति के अध्यक्ष थे । स्वामी जी का और महात्मा गांधी का एक दूसरे के निकट आना इन हालात में कुदरती था ।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन् १९०० में हुई । इसको स्थापित करने मे स्वामी जी का उद्देश्य था कि वह एक ऐसी सस्था पैदा करें जहां विद्यार्थी शान्ति और पवित्र वातावरण मे रहें और जहां पर वैदिक ज्ञान और सांस्कृतिक शिक्षा पर जोर हो और उसके साथ-साथ आधुनिक विज्ञान और दूसरे विषयो पर भी पूरा ध्यान दिया जाए, ताकि उनके समन्वय से छात्रो का विविध कला सम्पूर्ण व्यक्तित्व बने तथा वह भारत के चरित्रवान् और उत्तम नागरिक बन सकें।

जिन छात्रों ने इस दीक्षान्त समारोह में उपाधियां ली हैं मैं उनको बधाई देता हूं और साथ ही उनसे यह भी कहना चाहता हूं कि यह न समझें कि इन उपाधियो के प्राप्त करने से उनकी शिक्षा का कोर्स खत्म हो गया है । यह तो एक आरम्भ है उस शिक्षा का जो हमें सारा जीवन सीखनी है। और कभी-कभी बड़ी कीमत देकर भी सीखनी है, परन्तु उससे घबराना नहीं चाहिये। जीवन के हर मोड़ पर हमे रोज परीक्षाओ में से निकलना पड़ेगा मगर उससे हिम्मत नहीं हारनी चाहिये । जीवन तो एक सघर्ष है और उसमें वे लोग सफल होते हैं जो ठण्डे साहस के साथ मुश्किलो का सामना करते हैं और मुश्किलो को आसान बना लेते हैं ।

गुरुकुल और कालिज, शिक्षा उस बड़ी शिक्षा को प्राप्त करने का एक साधन बन सकती है, उसकी जगह नहीं ले सकती । गुरुकुल की एक शिक्षा जो हमको अपने साथ सदैव रखनी चाहिए और जो हमेशा हमारे काम आयेगी वह है कि हम अपने अन्दर मानसिक शक्ति और बल पैदा करें, हम साहसी हों, भीरु या डरपोक न बनें। इसी उद्देश्य के लिये आर्याभिविनय में प्रार्थना मन्त्र है—

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।
बलमसि बलं मयि धेहि ।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ॥
ओजोऽस्योजो मयि धेहि ॥
सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

मेरे नवयुवक मित्रो ! हम एक बहुत महान् देश के, जिसका पुरातन बहुत उज्ज्वल रहा है, वासी हैं। हम सब को भारत का नागरिक होने में गर्व हासिल करना चाहिए। यह ठीक है कि हमारे अन्दर बहुत से ऐसे नेता लोग हैं जो उन आदर्शों से गिर गए हैं। मगर उनके कारण हमे अपने अन्दर से अपने देश पर से, अपनी संस्कृति पर से अपनी परम्पराओं पर से और अपने उज्ज्वल भविष्य पर से विश्वास नहीं खो देना चाहिए। पिछले वर्षों में बहुत-सी ऐसी घटनायें हुई हैं जिनसे हम सबको बहुत दुःख होता है और हमारे मन को आघात पहुंचता है। यह भी सच है कि देश के अन्दर जो जटिल समस्यायें हमारे सामने आ गई हैं उनकी जिम्मेदारी के लिये हम पिछली पीढ़ी के लोगो को दोषी करार दे सकते हैं। मगर इन बातों में पडने से और कीचड़ उछालने से हमें कोई ठोस लाभ नहीं मिलेगा क्योकि हमारे सामने तो इस समय आवश्यक कार्य यह है कि किस तरह भविष्य के लिये हम अपने देश को सुदृढ़ बनाए। आज आवश्यकता है कि आने वाले समय में देश खूब प्रगति करे ताकि आज के नवयुवक जो भविष्य के असल मालिक एवं स्वामी हैं उसको सुखमय और उज्ज्वल पावें।

तीन चीजें आवश्यक

आज जिन चीजों की देश को सबसे अधिक आवश्यकता है, वे हैं अनुशासन, परिश्रम और नैतिक मूल्य । इन तीनों के बिना कोई देश प्रगति नहीं कर सकता है और नहीं इनके बिना चरित्र-निर्माण हो सकता है। सच पूछो तो ये देश की त्रिमूर्ति है ।

पहले अनुशासन को लीजिये । आज तो ऐसा अनुभव होता है जैसा कि हमारे शब्दकोश से अनुशासन का शब्द किसी ने निकाल लिया हो। विश्वविद्यालयों की दशा देखो । पुराने समय मे गुरु का स्थान बहुत ऊंचा होता था और छात्रों के मन में उनका सच्चा सम्मान होता था। आज उसके बदले यह आम विचार है कि विश्वविद्यालयों में अध्यापक बनना अपने मान और जीवन दोनों को जोखिम में डालना है।

विश्वविद्यालयों के अलावा जीवन के बाकी क्षेत्रों में से अनुशासन जा रहा है। सरकारी दफ्तरों में देख लीजिए। कितने सरकारी कर्मचारी अपने दफ्तरों में ठीक समय पर आते हैं और कितने दफ्तरों के समय के अनुसार डट कर काम करते हैं ? कारखाने और बिजली को देखो । उत्पादन-क्षमता आधी से भी कम हो रही है ।

एक बार संसद् के अध्यक्ष ने कहा था कि ससद के एक-दो मिनट के लिए देश को कितने हजार रुपए खर्च करने पड़ते हैं । इसके बावजूद विधान सभाओं और संसद् में कितनी दफा कार्यवाही रोकनी पड़ती है, इस वजह से कि कुछ सदस्य संसद् प्रणाली के नियमों का उल्लंघन करते हैं और उनका पालन नही करते ।

अब परिश्रम की ओर देखो ! जहां आगे एक मनुष्य काम करता था वहां उसकी जगह तीन या चार काम करते हैं और फिर भी काम पूरा नहीं होता और अधूरा रहता है। आज हमारे देश के सब कारखाने और बिजलीघर पूरी उत्पादन क्षमता के अनुसार काम करें तो देश इतना समृद्ध और प्रगतिशील हो जायेगा कि सब आश्चर्यचकित रह जायेंगे। जर्मनी और जापान ने द्वितीय महायुद्ध के बाद इतनी प्रगति की है, उसका सबसे बड़ा कारण है जर्मन और जापानी लोगों का परिश्रम। हर कर्मचारी दिन मे १० या १२ घण्टे काम करता है। हमारे देश के अन्दर सब साधन हैं, धातु हैं, पानी है, नदियां हैं, पहाड़ हैं, लकड़ी है और अपार जनशक्ति है। सिर्फ कमी है तो इस चीज की कि हम इन सब प्राकृतिक एवं मानवीय साधनो का ठीक तरह से उपयोग नहीं कर सके और उनसे लाभ नहीं उठा सके।

व्यक्तिगत रूप से तो हम भारतीयों की बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति जिसको अंग्रेजी में आई० क्यू० कहते हैं, वह किसी देश के नागरिको से कम नहीं। यह इस बात से सिद्ध होता है कि हम भारतीय जब दूसरे देशों के विश्वविद्यालयों में जाते है तो हम परीक्षाओं में बहुत ऊंचा स्थान लेते हैं ! मगर पता नहीं क्या बात है कि जहां हमें एक दूसरे के साथ मिलकर सामूहिक रूप से काम करना होता है तो वहां पर हम किसी न किसी तरह फिसल जाते हैं और दूसरी बातों में फंस जाते हैं।

हम अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारने लिए दर्जनों योजनाएं बनाए किन्तु उनसे यथोचित फल तो तब ही प्राप्त

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वैदिक मन्त्रों में आहुतियों का प्रयोग

गतांक से आगे

पहली बात-होम करते समय मंत्रों के अन्त में स्वाहाकार का प्रयोग करके आहुति देनी चाहिए। उनमें भी उन्हीं मन्त्रों के अन्त में स्वाहाकार का प्रयोग करना चाहिए, जिनके अंत में संहिता (वेद) में स्वाहाकार नहीं पढ़ा है। जिन मंत्रों के अंत में वेद में स्वाहाकार पढ़ा गया है उनके अंत में आहुति देते समय पुनः स्वाहाकार का उच्चारण नहीं करना चाहिए, क्योंकि स्वाहाकार हवि प्रदान करने के लिए पढ़ा जाता है। हवि प्रदान रूप इस प्रयोजन की सिद्धि वेद में पढ़े गए स्वाहाकार से ही हो जाने से दूसरा स्वाहाकार निष्प्रयोजन हो जाएगा इसलिए दूसरा स्वाहाकार नही पढ़ना चाहिए।

लेखक :

स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ

दूसरी बात यह कहीं गई है कि जहाँ मंत्र के आदि में स्वाहाकार पढ़ा गया है यहाँ भी अंत में स्वाहाकार का प्रयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि आहुति तो आदि में उपदिष्ट स्वाहाकार से दे दी गई अतः यहां भी अत मे स्वाहाकार का प्रयोग निष्प्रयोजन ही रहेगा, इसलिए ऐसे स्थल में आदि मे पढ़े स्वाहाकार से आहुति देकर शेष मत्र का पाठ मात्र कर देना चाहिए। अन्त मे फिर से आहुति नहीं देनी चाहिए।

इस गोभिल वचन से सिद्ध हुआ कि जिन मन्त्रों के अन्त मे स्वाहापद संहिता में ही पढ़ा गया है उन मंत्रों के अन्त में उसी स्वाहाकार से आहुति देनी चाहिए तथा आहुति के लिए दूसरे स्वाहाकार का प्रयोग नही करना चाहिए तथा जिन मंत्रों के अन्त में स्वाहाकार उपदिष्ट नही हुआ है आहुति के लिए उनके अंत में स्वाहाकार का प्रयोग —उच्चारण करके आहुति देनी चाहिए। दूसरे जिन मंत्रों के आदि में स्वाहाकार उपदिष्ट है, उन मत्रों में आदि में पढ़े गए स्वाहाकार से आहुति देकर शेष मंत्र का पाठ करके पूरा कर देना चाहिए । उस मंत्र के अन्त में फिर से आहुति नहीं देनी चाहिए।

लेख में निर्दिष्ट प्रमाणों और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की तदनुसार प्रयोग-पद्धति के आधार पर यह सिद्ध हुआ कि मत्र के आदि मध्य या अंत में जहाँ-जहां स्वाहाकार पढ़ा गया है वहाँ-वहाँ सर्वत्र उसी स्वाहाकार से आहुति देनी चाहिए और जिन मंत्रों के अंत में स्वाहापद नहीं पढ़ा गया है उनके अन्त में स्वाहा का प्रयोग उच्चारण करके आहुति देनी चाहिए। क्योंकि—

'होममन्त्रं स्वाहान्तं प्रणवाद्यं च कारयेत् ॥ (धर्म सि धौ)

अर्थात् होम में मंत्र के आदि में प्रणव और अन्त मे स्वाहाकार का प्रयोग करना चाहिए।

सन्यास आश्रम, दयानन्द नगर
(गाजियाबाद)

लोक-चिन्तन

सूरज हमेशा पूरब से निकलता है !

—डा० विजय द्विवेदी

साप्ताहिक 'रविवार' के १५ मार्च '८१ अंक में रजनीश का एक व्याख्यान छपा है, शीर्षक है –'यंत्रों के मामले में गांधी जी का विचार गलत था'। रजनीश का कहना है कि 'भारत ने गाँधी जी का—बात सुन कर आत्मघात किया है, क्योंकि गाँधी जी को भविष्य का कोई बोध नहीं था। गांधी जी भरे-भराये अतीत के प्रशंसक थे, मनुष्य ने मनुष्य के जीवन को समृद्ध करने के लिये जो कुछ भी विकसित किया है, सबके खिलाफ थे'। इतना ही नहीं रजनीश के अनुसार 'गांव का कोई भविष्य नहीं है, भविष्य होना भी नहीं चाहिए। सुसम्पन्न, सुशिक्षित सुनियोजित नगरों का भविष्य है। जब कोई देश समृद्ध होता है तभी धर्म पैदा होता है। धर्म पश्चिम में उगेगा, सूरज पश्चिम मे उगेगा, पूरब मे तो डूब चुका है।' व्याख्यान का अंत इस तरह हुआ है—'यह एक महान क्षण है, महाक्रान्ति का। उसकी पूर्व तैयारी के लिए मैं सन्यास का आयोजन कर रहा हू। अगर तुम्हें रात बहुत गहरी मालूम होती हो, तो घबराओ मत इतना ही समझो कि सुबह करीब है। सुबह करीब होने के पहले रात बहुत अंधेरी हो जाती हैं'।

रजनीश के विचार विवादास्पद ही नहीं निन्दनीय हैं। इनसे देश-जाति-धर्म और सर्वोपरि मानवता विरोध की गंध निकलती है। गरीब-अमीर के बीच घृणा की दीवार खड़ी होती है और इससे पूंजीवादी शोषण को समर्थन मिलता है। प्रश्न उठता है—रजनीश ऐसा क्यों कह रहे हैं ? क्या इसके पीछे सचमुच मानवता का हित-चिन्तन है ? क्या सचमुच वह सोचते हैं कि विज्ञान की असीम प्रगति से भावी मनुष्य को सुखी, सम्पन्न और धार्मिक बनाया जा सकता है ? अगर ऐसा है तो पश्चिम के वे देश जो रजनीश की दृष्टि मे विज्ञान के क्षेत्र मे अति उन्नत तथा भौतिकता की दृष्टि से अति समृद्ध हैं; अशान्त और अधार्मिक क्यो हैं ? वहां भी रात इतनी अंधेरी क्यों मालूम पड़ रही है ?

रजनीश ने अपने व्याख्यान मे दो बातो का उल्लेख शायद जानबूझ कर नही किया है। पहली बात तो यह कि सारे विश्व की भाषा अंग्रेजी होगी और दूसरी यह कि इक्कीसवीं शताब्दी मे जो असंख्य 'बुद्ध पैदा होंगे, वे उन देशी कम विदेशी तरुणियों की कोख से अधिक पैदा होंगे, जो रजनीश-आश्रम में 'संभोग से समाधि तक' पूरा पाठ पढ़ने के दौरान गर्भ-धारण करेंगी। इन आने वाले बुद्धों की परवरिश के लिए रजनीश को विदेशी पूंजी, यन्त्रविधि, औद्योगीकरण, अन्तरिक्ष बस्तियां और सागर की छाती पर बड़े-बड़े महानगर चाहिए। यही सब पाने के लिए वह संन्यास का आयोजन कर रहे हैं। करें, मुझे कोई आपत्ति नही है। स्वाधीन देश में कोई कुछ भी कह और कर सकता है।

रजनीश भी संन्यास का आयोजन करें। मगर यह बता दें कि सन्यास की संकल्पना का आधार उन्हें कहां से मिला है—पूरब से अथवा पश्चिम से, वेदों से या बाइबिल से ? जहाँ तक क्रांति का प्रश्न है, मुझे भी भावी क्रान्ति की गड़गड़ाहट और धर्म के विस्फोट के धमाके अभी से सुनाई दे रहे हैं। इन्हीं के बीच हथियारों के तेज किये जाने की कर्कश आवाज भी आ रही है, किन्तु इसी के साथ पूरब के क्षितिज पर उग रहे नव प्रभात के वेद-सूर्य की अरुणाभा भी फूटती दिखाई दे रही है। पौ फट चुकी है, फिर भी —

हर सिम्त अन्धेरा है, खामोशी है, घुटन है।
मुझे माहौल नया सूर्य सजाने नहीं देता।

सुबह हो चुकी है,'सत्यार्थ प्रकाश' फैल चुका है। पश्चिम की ओर मुह कर बैठे रहने वाले स्वार्थान्ध लोग नहीं देख पा रहे हैं। देख भी नही सकते हैं क्यो कि सूरज हमेशा पूरब से निकलता है।

हिन्दी-विभागाध्यक्ष, म. पू. च. कालेज, बरिपदा (उड़ीसा)

अनुशासन, श्रम और नैतिकता…

(पृष्ठ ४ का शेष)

होगा जब हर व्यक्ति अपना योगदान करेगा। हमें इस बात को सदैव याद रखना चाहिए कि हर राष्ट्र की खुशहाल अर्थव्यवस्था के पीछे खून-पसीना बहाने की रहस्यमय कहानी निहित है, जिसमें निरन्तर कठिन परिश्रम और सुनिश्चित धन का बहुत महत्व रहा है।

तीसरी आवश्यकता है नैतिक मूल्यों की। कोई भी देश ऊंचा नही बन सकता जो अपने सामने कुछ सात्विक मर्यादाएं न रखे और उनका पालन न करे। आज आम जनता का राजनीतिक नेताओं में थोड़ों को छोड़कर, बाकी पर से विश्वास क्यों उठ गया है ? उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बहुत से नेता लोग 'कहते हैं कुछ और, करते हैं कुछ और।' आज भ्रष्टाचार बहुत ही बढ़ गया है। भ्रष्टाचार में साथ काले धन का बहुत सम्बन्ध है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। पिछले समय मे महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल के लिये लोगों के हृदय मे इतना अधिक मान था और उनके कथन के अनुसार लोग क्यों चलते थे ? उसका सबसे बड़ा कारण था उनकी नैतिक और राजसी आस्था पर सबका अटल विश्वास ! आजकल तो कभी-कभी कुछ लोगो के व्यवहार से ऐसा लगता है जैसा कि हम नैतिक मूल्यों की चिता जला रहे हैं।

एक और बात, जिसकी तरफ मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हू, वह है आदर्शवाद की महत्ता की आवश्यकता। आदर्शवाद राष्ट्रीय जीवन को ढालने में उतना ही योगदान देता है जितना कि दूसरे तत्त्व। इसके साथ-साथ आदर्शवाद के असल रखवाले होते हैं। हमे देखना यह है कि वह सरोवर सूखने न पाए और वे रखवाले कमजोर न पड़ जाएं।

मैं एक बार फिर उन स्नातकों को जिन्होंने आज उपाधियां प्राप्त की हैं बधाई देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वे देश के सच्चे नागरिक बनें और अपने जीवन की हर दशा मे सफलता पायें।

आर्य जगत् समाचार

गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द जी की भावना से चलाया जाए

गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर विभिन्न कार्यक्रम : आर्यनेताओं के सत्परामर्श

हरिद्वार। कुलाधिपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय एवं प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब श्री वीरेन्द्र जी ने कुलपताका फहराने के बाद अपने भाषण मे कहा कि सभी धर्मों और शास्त्रों का यह सार है कि मनुष्य देवता कैसे बने। हमें गुरुकुलो में यह संकल्प लेना चाहिए कि हम यह संस्कार अपने अन्दर पैदा करें। हमको मिलकर यह प्रयत्न करना चाहिए कि इस गुरुकुल को स्वामी-श्रद्धानन्द जी की भावना के अनुकूल बनाए।

गुरुकुल के आर्य संग्रहालय मे आर्य-समाज से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य एवं आर्यसमाज के महान नेताओं की सामग्री प्रदर्शित की जाएगी। इसी आर्य स्वाध्याय केन्द्र में आर्यसमाज का सात खंडों मे इतिहास भी लिखा जाएगा : इस समारोह की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र जी ने की। आर्य संग्रहालय का उद्घाटन प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता स्वामी ओमानंद सरस्वती ने किया। स्वामी जी ने अपने भाषण मे कहा कि उन्होंने आर्यसमाज से सम्बन्धित इतनी सामग्री एकत्र की हुई है कि उसके प्रदर्शित करने के लिए अनेक भवन चाहियें। इस अवसर पर कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि आर्य-समाज एक गतिशील संस्था है और जितने भी क्रान्तिकारी हुए हैं उन सभी पर आर्यसमाज का प्रभाव है। आर्य-समाज के इतिहास के मुख्य सम्पादक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार होंगे और इस समारोह का आयोजन डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा ने किया।

वेदों के अनुसार आचरण करें

इसके पश्चात् वेद-सम्मेलन हुआ जिसके अध्यक्ष आचार्य प्रियव्रत वेद-वाचस्पति थे। उद्घाटन-भाषण प० राजगुरु शर्मा ने किया। उन्होने वेदो की उपादेयता पर गभीरतापूर्वक प्रकाश डाला। इस सम्मेलन में गुरुकुल के बहुत से विद्वानों एव ब्रह्मचारियो ने वेद विषय पर भिन्न-भिन्न लेख पढ़े। इसी अवसर पर प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार को संघड़ विद्या सभा की ओर से १०००/-रु० की नकद राशि से सम्मानित किया गया। प्रो० गोवर्धन शास्त्री की स्मृति में यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष उस विद्वान अथवा उस प्रचारक को मिलेगा जो वेदों का संदेश घर-घर पहुंचायेगा। प्रो० रामप्रसाद की ७५,००० पुस्तकें वितरित हो चुकी हैं। इस अवसर पर आचार्य प्रियव्रत ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि वेद आर्य जाति के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। हमें वेदो का केवल स्वाध्याय ही नहीं करना चाहिए अपितु उनके अनुसार आचरण भी करना चाहिए।

वैज्ञानिक प्रगति से दरिद्रता का अंत

आर्य भट्ट मेले का उद्घाटन

'विज्ञान और वेद का समन्वय ही भारत की समस्याओं का समाधान है'-ये शब्द कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय श्री वीरेन्द्र जी ने उस समय कहे जब आर्यभट्ट मेले के उद्घाटन से पूर्व उन्होंने आर्यभट्ट पत्रिका का विमोचन किया। आर्यभट्ट पत्रिका विश्वविद्यालय की पहली विज्ञान पत्रिका है, जिसका प्रकाशन हिंदी में आरम्भ हुआ। मेले का उद्घाटन रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति डा. जगदीश नारायण ने किया। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ने कहा कि वैज्ञानिक प्रगति से ही भारत की दरिद्रता समाप्त हो सकती है। मेले के विज्ञान विभागों ने अपनी-अपनी उपलब्धियां दर्शाई हुई थीं। दर्शकों के आकर्षण के लिए एक वायुयान के मोडल को भी उड़ाया गया था। इस प्रदर्शनी में भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स तथा उत्तर-प्रदेश की एन० सी० सी० ने भी भाग लिया था। सभी वक्ताओं ने इस संपूर्ण प्रदर्शन को बहुत सराहा। मेले का आयोजन विज्ञान महाविद्यालय के प्रिंसिपल श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री ने किया.

यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति दीक्षांत भाषणकर्ता न्यायमूर्ति श्री एच० आर० खन्ना, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले और विश्व-विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाहा ने भाग लिया। सम्पूर्ण यज्ञ का आयोजन श्री राजगुरु जी शर्मा ने किया। वेदारम्भ संस्कार आचार्य निरूपण विद्यालंकार द्वारा सम्पन्न हुआ।

ग्रीष्मकालीन युवक प्रशिक्षण शिविर

युवकों में शारीरिक क्षमता, चारित्रिक बल, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता एव आर्यत्व जगाने के लिए केन्द्रीय आर्य-युवक परिषद् की ओर से २१ से ३१ मई, १९८१ तक हसराज माडल स्कूल, पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली-२६ मे ग्रीष्मकालीन युवक-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर मे उच्चकोटि के व्या.ख्यानाचार्य एवं विद्वान् योग, आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, सन्ध्या-यज्ञ आदि का प्रशिक्षण देंगे। नौवी और उससे ऊपर के विद्यार्थी शिविर मे भाग ले सकेंगे। प्रवेशार्थी अपने प्रवेशपत्र ३०) रुपये शिविर शुल्क के साथ १० मई तक ७०४८ बेरीवाला बाग, आजाद मार्केट, दिल्ली-६ पर भेज दें।

रोहतक में आर्यवीर महासम्मेलन

एक हजार आर्य वीर भाग लेंगे : अध्यक्ष डा० सत्यप्रकाश सरस्वती होंगे

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आजकल हरियाणा के प्रत्येक जिले में आर्यवीर दल की शाखाएं चल रही हैं। आर्ययुवक बड़े उत्साह से दल-कार्यों में जुट गए हैं।

यह सूचना भी मिली है कि आर्य-वीर दल हरियाणा का प्रादेशिक महा-सम्मेलन श्रद्धेय डा० सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता मे १६-१७ मई, १९८१ को रोहतक नगरपालिका के सामने स्वामी श्रद्धानन्द नगर, रोहतक मे बड़े समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इसमें प्रदेश के कोने-कोने से लगभग एक-हजार आर्यवीर पूरे गणवेश में आकर्षक आर्य रैली मे भाग लेंगे।

इस सम्मेलन मे आर्य-जगत् के उच्च कोटि के विद्वान एव विचारक भाग लेंगे।

आर्यसमाज गांधीनगर का २५वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गांधीनगर का २५वां वार्षिकोत्सव २३-२४-२५-२६ अप्रैल को नेहरू गली से पार जनता पार्क में मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रदेश और देश के बड़े आर्य विद्वान, उपदेशक और गायक पधार रहे हैं।

अपने समाज का वार्षिक विवरण आर्य सन्देश में प्रकाशित कराइए

हमें यह सूचना देते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि आर्यसमाजों एवं आर्य-संस्थाओं की प्रतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए 'आर्य संदेश' के आकार के ८ पृष्ठों के एक फार्म की ५०० रुपए की धनराशि अग्रिम जमा करवा कर आप अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव अथवा वार्षिक विवरण आदि की विस्तृत रपट साप्ताहिक 'आर्य-सन्देश' में प्रकाशित करवा सकते हैं। इस प्रकाशन से आपके समाज का विवरण व्यापक रूप से प्रचारित और प्रसारित हो सकेगा। आशा है कि इस अभिनव-प्रचार-कार्यक्रम का आप तुरन्त लाभ उठाएंगे।

—विद्यासागर विद्यालंकार
मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

आर्यसमाजों के सत्संग

२६-४-८१

अमर कालोनी—प० खुशीराम शर्मा; अशोक विहार के-सी ५२-ए—प० वेदपाल शास्त्री; आर के पुरम् सैक्टर —श्रीमती लीलावती आर्या; आर के पुरम सैक्टर ६—पं० हीराप्रसाद शास्त्री; आजाद विहार—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; किंग्जवे कैम्प—पं० महेशचन्द्र भजनोपदेशक; किशनगंज मिल एरिया प० छज्जूराम शास्त्री; किदवई नगर—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; कालका जी—पं० देवेश; गांधीनगर—स्वामी स्वरूपानन्द; ग्रेटर कैलाश I—पं० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री व्याकरणाचार्य; ग्रेटर कैलाश-II—प० मेघश्याम वेदालकार; गुडमंडी—प० ईश्वरदत्त एम-ए; गोविन्द भवन दयानन्दवाटिका—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; जंगपुरा भोगल—प० प्रकाशवीर व्याकुल; जनकपुरी बी ३/२४—श्रीमती सुशीला राजपाल; तिलकनगर—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार, तिमारपुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; दरियागंज—प० देवराज वैदिक मिशनरी, नारायण विहार—पं प्रेमचन्द श्रीधर; नया बांस—पं० सत्यकाम वेदालकार; निर्माण विहार—आचार्य हरिदेव सि० भू०; पंजाबी बाग—आचार्य कृष्णगोपाल; पजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—प्रो० सत्यपाल बेदार; बाग कड़े खाँ—प० बरकतराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—श्री मोहनलाल गांधी, बिरला लाइन्स—पं० विष्णुदेव प्रसाद वेदालंकार; माडल बस्ती—पं० उदयपाल शास्त्री; महावीर नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; मोतीनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; रमेशनगर—श्रीमती भगवानदेवी; राणा प्रतापबाग—प० वीरव्रत शास्त्री; लड्डू घाटी—प० रामरूप शर्मा; लाजपत नगर—डा० सुखदयाल भूटानी; विक्रम नगर प० सीसराम भजनोपदेशक; विनय नगर—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; राजौरी गार्डन—डा० रघुनन्दन सिंह; सदर बाजार पहाड़ी धीरज—पं० महेन्द्रप्रताप शास्त्री; सराय रोहेला—पं० धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, साकेत पं० सत्यभूषण वेदालकार; सोहनगंज—प० केशवचन्द्र मुन्जाल; हौज खास—पं० चन्द्रभानु सि० भू०; शालीमार बाग—पं० सत्यपाल सुधांशु।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेदप्रचार विभाग

चिट्ठी-पत्री

इतिहास के साथ खिलवाड़

'आर्य सन्देश' के आर्यसमाज स्थापना दिवस विशेषांक मे श्री रामगोपाल शालवाले का एक लेख 'आर्यसमाज: अतीत और वर्तमान' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उन्होंने इस लेख में दादा भाई नौरोजी और लोकमान्य तिलक की भेंट का उल्लेख किया है। उन्होंने ऐसा ही उल्लेख अपने एक अन्य लेख मे एक बार पहले भी किया था। यह बात बिल्कुल निराधार है। लाला जी मुझे बताया था कि उन्होंने 'सैनिक समाचार' में प्रकाशित एक लेख के आधार पर ऐसा लिखा था। यद्यपि 'सैनिक समाचार' में प्रकाशित होने मात्र से (जब तक कि वह अन्यथा इतिहास से प्रमाणित न हो) किसी बात को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, तथापि घटना का महत्त्व देखते हुए मुझे इसकी खोज करनी आवश्यक जान पड़ी। मैंने 'सैनिक समाचार' के कार्यालय में जाकर उसमे प्रकाशित लेख के लेखक का पता लिया और उनसे मिला और उनकी एतद्विषयक जानकारी का मूल स्रोत पूछा। उन्होंने बड़ी सरलता से उत्तर दिया—'मैंने तो यू ही लिख दिया था।'

१५ मई, १९७६ के 'धर्मयुग' मे प्रकाशित एक लेख मे कहा गया था कि 'स्वामी दयानन्द ने नाना साहब को संन्यास की दीक्षा देकर उनका नाम दिव्यानन्द स्वामी रख दिया था।' लेखक बड़ौदा के कोई दादूमिया थे। पं० आनन्दप्रिय जी द्वारा पूछताछ करने पर पता चला कि 'लेखक इस विषय मे खोज कर रहे हैं। अभी तो उन्होने बिना किसी प्रमाण के यू ही लिख दिया है।'

'वेदवाणी' मे प्रकाशित एक लेख मे मैंने पढ़ा कि स्वामी दयानन्द के अमृतसर मे कहा था कि 'यदि यहा के लोग मुझे ५० हजार रुपये दे दें तो यहाँ से पहले हवाई जहाज बना कर और उड़ाकर दिखा दूंगा। सम्पर्क किये जाने पर लेखक ने मुझे पत्र द्वारा सूचित किया कि यह बात उन्होंने अपने घर मे सुनी थी।

अभी पिछले दिनो पढ़ने को मिला कि पं० मदनमोहन मालवीय हरिद्वार मे सत्यार्थ प्रकाश बांटते फिरा करते थे। पूछने पर लेखक ने बताया कि उन्होने किसी उपदेशक का भाषण में सुना था। सम्बन्धित उपदेशक महोदय ने कहा कि ऐसी बहुत सी बातें हम अपने भाषण को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिये कह दिया करते हैं।

'मेरे पिता' नाम से स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में लिखे अपने संस्करणों में उनके सुपुत्र प० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने सप्रमाण बड़े विस्तार से लिखा है कि स्वामी जी का बलिदान शुद्धि के कारण हुआ था और मुसलमानों ने ऐसा अपनी धर्मान्धता की प्रेरणा से और महात्मा गाँधी के द्वारा भड़काए जाने पर किया था। किन्तु श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी के अवसर पर आर्यसमाज मे उच्चस्तर पर स्वामी जी के विषय मे जो साहित्य प्रकाशित हुआ कि स्वामी जी की हत्या विदेशी सरकार के इशारे पर की गई थी। उन पुस्तको मे शुद्धि का उल्लेख तक नहीं किया गया। यह सब योजनाबद्ध रूप में जानबूझ कर किया गया।

'योगी का आत्मचरित' तो गप्पो से भरा है।

यदि इसी प्रकार काल्पनिक बातें चलती रही तो रामायण, महाभारत और पुराणों आदि मे वर्णित रामकृष्ण आदि की तरह स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र में भी सच्चाई कम और झूठ का अंश अधिक हो जायेगा। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए' तथा 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करना चाहिए' आदि नियमों पर आधारित आर्यसमाज के विद्वानो तथा नेताओं को बिना पुष्ट प्रमाणों के न कोई बात कहनी चाहिए और न लिखनी।

—विद्यानन्द सरस्वती,

आर्यसमाज मन्दिर
माडल टाउन, दिल्ली-९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वाटिया प्रैस ७९७/१-बी, गुलाबक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष : ४ अंक २९ | रविवार १७ मई १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

आर्यसमाज को हर चुनौती का सामना करना होगा

जनसम्पर्क से ही समस्याओं का समाधान : जनकपुरी आर्यसमाज के शिलान्यास पर आर्यनेताओं का उद्‌बोधन

नई दिल्ली । 'आलोचक कहते हैं कि आर्यसमाज समाप्त हो गया, वह ढीला हो गया, पर वस्तुस्थिति यह नहीं है । आज बनारस के दिग्गज पण्डित भी मानते हैं कि आर्यसमाज ने सिद्ध पक्ष अपने पास रख लिया, साध्य पक्ष हमारे लिए छोड़ दिया, हम उससे कैसे शास्त्रार्थ करें ? आज ईसाई-मुसलमान धन के प्रलोभन से हमारे धर्म और संस्कृति पर खुला आक्रमण कर रहे हैं, हम इस चुनौती का सामना जन-सम्पर्क द्वारा ही कर सकते हैं ।'—इन शब्दों में जनकपुरी आर्यसमाज के शिलान्यास के अवसर पर विभिन्न आर्यनेताओं ने आर्यजनता को सचेत किया ।

रविवार १० मई के दिन आर्यसमाज पंखा रोड (सी ब्लाक) के मन्दिर की आधारशिला श्री अमर स्वामी जी ने रखी । मन्दिर के लिए डेढ़ लाख रुपए की धनराशि एकत्र हुई । शिलान्यास कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यनेता श्री सोमनाथ एडवोकेट ने की । इस अवसर पर अमर स्वामीजी के अतिरिक्त भू. पू. संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, वैद्य पं. ब्रह्मदत्त जी आयुर्वेदालंकार, गाजियाबाद के पं. वीरपाल विद्यालंकार ने सामयिक भाषण किए ।

विश्व में मुसलमानों की गिनती एक अरब

विश्व मुस्लिम गजेटियर के अनुसार इस शताब्दी के अन्त तक संसार के मुसलमानों की संख्या १ अरब से बढ़ जाएगी । १९७६ में विश्व के मुसलमानों की गिनती ८८ करोड़ थी जो कि विश्व की कुल जनसंख्या का २१ प्रतिशत थी । सर्वेक्षण से मालूम हुआ है कि जनसंख्या की दृष्टि से ईसाइयों के बाद मुसलमानों का दूसरा धर्म है । वे विश्व की कुल जनसंख्या का पांचवां भाग हैं, अधिकांश मुसलमान देशों में २ प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, अधिकतर मुस्लिम देशों ने परिवार-नियोजन कार्यक्रम को स्वीकार नहीं किया है ।

सर्वेक्षण से यह भी मालूम हुआ है कि भारत, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश, चीन, सोवियत संघ और नाइजीरिया में ५० करोड़ मुसलमान निवास करते हैं । इन्डोनेशिया में १४ करोड़, भारत में १३ करोड़, बांग्लादेश में ७ करोड़, ६० लाख और पाकिस्तान में ७/११२ करोड़ मुसलमान निवास करते हैं ।

ये आंकड़े क्या कहते हैं ?

करोड़ों आर्य-हिन्दुओं का कर्तव्य

क्या आप जानते हैं सन् १९४७ में जब देश स्वाधीन हुआ था, उस समय भारत मे

० ७० लाख ईसाई थे, जो अब बढकर दो करोड़ से अधिक हो गए हैं । अब ये साई और मुसलमान १० करोड़ वनवासियों और पिछड़ी जातियों को विधर्मी बनाना चाहते हैं । भारत का हर तीसरा रोमन कैथोलिक केरल में रहता है । इस समय भारत में ७६ ईसाई देशों में ३७३२ पादरी हैं । विदेशी मुसलमान प्रचारक पृथक हैं ।

० संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् २००० तक भारत की जनसंख्या कम से कम ९० करोड़ हो जाएगी, उनमे ४० करोड हिन्दू, ३५ करोड़ मुसलमान तथा १५ करोड़ ईसाई होंगे । इस प्रकार इस शताब्दी के अन्त तक हिन्दू अल्पमत में हो जाएंगे ।

० असम तथा भारत के दूसरे पूर्वोत्तर राज्यो की अनुसूचित जन जातियों में ५१ प्रतिशत लोग ईसाई बन चुके हैं, मणिपुर के चार जिलो मे ८६ प्रतिशत ईसाई हो चुके हैं । केवल एक जिला बचा है । नागालैंड के दो जिलों में ६१ प्रतिशत से ९६ प्रतिशत ईसाई हैं । मेघालय के तीन जिलो में ८६ प्रतिशत ईसाई हैं ।

० नागालैंड, मेघालय और मिजोरम मे ईसाइयो का बाहुल्य होने के कारण वहां की राजभाषा अंग्रेजी और मुख्य धर्म ईसाइयत की घोषणा हो चुकी है ।

० ईसाई धर्म प्रचार की दृष्टि से भारत को १०७ धर्म प्रान्तों में बांटा गया जिनमे से बहुसंख्यक प्रान्त विदेशी राष्ट्रों के निर्देशन में कार्य करते हैं ।

० भारत में ईसाई भिक्षुओं की संख्या प्रति वर्ष दो हजार बढ रही है । इस समय उनकी गिनती ४६००० है ।

भारत मे विद्यमान २०० ईसाई प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र प्रतिदिन छह नए मिशनरी तैयार करते हैं ।

० प्रत्येक पन्द्रह दिन में एक नई ईसाई संस्था जन्म लेती है

० भारत का दो लाख छः हजार वर्गमील क्षेत्र विदेशी पादरियो के प्रभाव-क्षेत्र में है ।

० आद्यशंकराचार्य की जन्मस्थली ईसाईबहुल बन गई है ।

० ईसाई मिशनों को लगभग ४०० करोड रुपए प्रतिवर्ष प्रचार के लिए विदेशों से आते हैं ।

"हुए करोड़ों अपने भाई, गो-भक्षक मुस्लिम ईसाई ॥
उन्हें फिर से आर्य बनाओ, ए आर्यवीर गण आओ ॥

प्रमुख आर्यनेता दक्षिण भारत के दौरे पर

धर्मान्तरित हरिजनों से सम्पर्क करेंगे

दिल्ली : मद्रास के निकट एक गांव के हरिजनों को जबर्दस्ती मुसलमान बनाए जाने के बाद स्थिति पर विचार करने के लिए आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में रविवार १० मई के दिन दक्षिण भारतीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, सुप्रसिद्ध आर्यनेता श्री पृथ्वीसिंह आजाद, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र और सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी तिनकाशी जिले के मीनाक्षीपुरम जाएंगे । वे आर्यनेता हरिजनों से सम्पर्क स्थापित कर उनकी समस्याएं सुलझाने का प्रयत्न करेंगे ।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रगति के लिए स्वाहा की भावना अपनाइए

उरु विष्णो विक्रम स्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।

घृत घृतयोनेपिब प्रप्र यज्ञपति तिर-स्वाहा ।। यजु ५-३८

ऋषि—अगस्त्य. । देवता-विष्णु: ।
छन्द·—भुरिग् आर्षी अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ—हे(विष्णु.) व्यापक प्रभो, राजन् गुरो व गृहपते (उरु) प्रभूत मात्रा में (विक्रम स्व) पराक्रम कर और (उरु क्षयाय)महान् निवास व प्रगति के लिए (न.) हमे(कृधि)समर्थ बना । हे (घृतयोने) दीप्तिज्ञान के कारणभूत (घृतं) दीप्ति व ज्ञान का (पिब) पान करा तथा रक्षण कर और (यज्ञपति) यज्ञ भावना से काम करने वाले यजमान को (प्रप्र तिर)प्रकृष्ट भावना के निमित्त प्रकर्ष सहित बढा । (स्वाहा)मैं उत्तम प्रगति के लिए स्वार्थ को त्यागने के लिए सदा उद्यत रहूं, और मधुरवाणी का प्रयोग करू ।

निष्कर्ष—१. उत्तम प्रगतिशील बनने के लिए तथा विस्तृत निवास प्राप्ति के लिए विशेष पराक्रम करना आवश्यक है ।

२ प्राणी घृत (वीर्य) से उत्पन्न होता इसलिए वीर्य की रक्षा करना आवश्यक है । घृत दीप्त और ज्ञान को बढाने वाला है, इसलिए घृत का पान करना चाहिए । घृत-सेवन से शरीर दीप्त होता है और मन मनन करने मे समर्थ होता है ।

३. यज्ञ की भावना से कार्य करने वाले अर्थात बड़ो का आदर करने वाले बराबर वालों के साथ सहयोग करने वाले और अपने से छोटो को सलाह तथा सहायता प्रदान करने वालों को परमात्मा तथा राजा और गुरु तथा गृहपति बढाते हैं । उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और आवश्यकता पडने पर सहायता करते हैं ।

४. उत्तम प्रगति के लिए स्वार्थ-त्याग आवश्यक है । इसके बिना कुल समाज या राष्ट्र की प्रगति सम्भव नही है । सर्वव्यापक प्रभु से हमारी प्रार्थना है कि वह हमारी उपयुक्त कामना सफल करें ।

विशेष— इस मन्त्रको ऋषि अगस्त्य का शब्दार्थ सकेत करता है कि यज्ञपति बनने अर्थात् यज्ञ परार्थ (भावना को विकसित करने के लिए आत्म निरीक्षण करके अपने दोषों को दूर करना आवश्यक है । मनुष्य अगस्त्य बन जाए तो यज्ञपति या विष्णु बनना आसान हो जाता है ।

इस मन्त्र के छन्द अनुष्टुप का शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य यदि अपने सकल्प के अनुकूल प्रयत्न करने के बाद स्तुति करेगा, तभी उसकी सुनवाई होगी ।

अर्थपोषक प्रमाण—अगस्त्य: अस्तदोष: 'दोषों को फेकने वाला, स्वामी दया० ६-३३-१०

विष्णु — विष्लृ व्याप्तौ विश प्रवेशने । वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् स:—परमेश्वर , राजा, गृहपति., न्यायकारी, गुरु स्वामी दयानन्द विष्णुर्वै यज्ञ: । शत० १-१-२-१३ विष्णुर्वै यज्ञस्य दुरित पाति । ऐत० ३-३८

यज्ञपति —यजमानो हि यज्ञपति. । शत० ४-२-२-१० यज्ञपतिम् यज्ञकर्तारं निष्कपट माप्तम्-न्यायपालकम् स्वा० द० घृत-घृक्षरण दीप्तयो. ।

क्षयाय - क्षि निवास गत्यो: । स्वाहा-सु+आ+हा(गतौ) स्व+ आ+हा (त्यागे) सु+आह+आ ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि=ब्रूते=आह अष्टाध्यायी ३-४-८४

—मनोहर विद्यालकार

आर्यसमाज धार्मिक अल्पसंख्यक है

ज्वालापुर । पिछले दिनों यहा त्रैत-वादीय आर्यपीठ हरिद्वार का वार्षिक उत्सव मनाया गया । इस अवसर पर भारत भर से आए आर्यसमाजी बौद्धिकों की तीन गोष्ठियाँ त्रैतवादीय आर्यपीठ हरिद्वार के तत्वावधान में सर्वश्री सत्य भिक्षु, आर्य भिक्षु जी ट्रस्टी परोपकारिणी सभा के सभापतित्व में हुईं ।

बैठकों में व्यापक विचार विमर्श के पश्चात निश्चय किया गया कि त्रैतवादीय दर्शन के अनुसार वैदिक धर्म प्रचलित हिन्दू धर्म से पृथक है, अत: आर्यसमाज को चाहिए कि अपने अस्तित्व को चिरस्थायी बनाने तथा अपनी सुरक्षा, सुविधा एवं राजनीति वर्चस्व प्राप्त करने के लिए स्वयं को हिन्दू राष्ट्र के बृहत क्षेत्र का भाग मानते हुए भी बौद्ध जैन एवं सिख आदि की भांति धार्मिक अल्पसंख्यक घोषित करे ।

उल्लेखनीय है कि उक्त सन्दर्भ मे प्रिंसिपल दत्तात्रेय बावले (अजमेर) के सभापतित्व में ११ सदस्यों की एक उप-समिति भी बनाई गई जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु जनमत तैयार करेगी ।

लोक-चिन्तन

चिकित्सा राजरोगी की

—डा० विजय द्विवेदी

राम एक बार भृगुवंश में पैदा हुए थे, जब उन्होंने परशु धारण किया था, तब परशुराम कहलाए थे । तब पहले पिता की आज्ञा से माँ का सिर काटा था फिर माँ के आदेश पर इक्कीस बार हैहय वंशी क्षत्रियों का संहार किया था । इस परशुराम के गुण थे—

('मुख मे वेद, पीठ पर तरकश, कर में कठिन कुठार विमल ।
(शाप और शर दोनो ही थे इस महान ऋषि के सम्बल । (दिनकर)

राम दूसरी बार रघुवंश में पैदा हुए थे,धनुष धारण किया था,मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए थे । पितु वचन मानकर वन गए थे, राक्षसों का 'राम नाम सत्य है' किया था । यह वह राम थे—

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मा दिदेवासुरा ।
यत्सत्वादमृषव भाति संकतं रज्जौ यथाहेभ्रम: ।

तीसरी बार राम यदु वंश में पैदा हुए थे, हल धारण किया था, हलधर बलराम कहलाए थे । महाभारत में वह कौरवों की ओर से लड़े थे, हल में लपेट कर मूसल-प्रहार से अपने विरोधियों का विनाश किया था ।

कलियुग की बीसवी शताब्दी मे राम एक बार फिर अवतरित हुए । इस बार हरिजन वंश में । कांग्रेस धारण किया और जग्गू से जगजीवन राम बनकर पूरे पचास बरस तक सत्ता का सर्वोदय सुख भोगा । इस सुख मे और भी वृद्धि करने की इच्छा हुई तो 'लोकतंत्री' करवट बदल कर 'जनता' के बाबूजी बन गए । वहां जब दाल नहीं गली, तो लौट कर जग्गू घर वापस आ गए । मगर तब तक घर बँट चुका था । घर की मालकिन ने घर की सफाई करके कूड़ा-कचरा बाहर फेंक दिया था । लुटे-पीटे रामजी को वहा भी जगह नही मिली । मालकिन की मर्जी पर इस गदगी को अन्दर नहीं बुलाया गया । फलत: रामजी कूड़े के ढेर पर ही पैर फैलाकर लेट गये । थोड़ी देर तक लोट-पोट करते रहे फिर सन्निपात रोग ग्रस्त होकर चिल्लाने लगे—हरिजनों पर घोर अत्याचार हो रहा है । मुष्टिभर ब्राह्मणो ने पूरे चालीस साल से सत्ता पर अधिकार जमा रखा है । अत: अब फैसला हो जाना चाहिए कि यह देश किसका है ।

लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि रामजी को हो क्या गया है ? यह जातिप्रेम की नई रामलीला है अथवा स्वार्थसिद्धि का नया महाभारत ? सत्ता सुख भोगते समय रामजी को कभी हरिजनों की याद नहीं आई, सत्तायुक्त होते ही उनका जाति-प्रेम अचानक कैसे उमड़ पड़ा ?

लोग जाने या न जाने परन्तु मैं जानता हूं राम जी को क्या हुआ है । दर-असल बात यह है कि राम जी को राजरोग हो गया है । इस रोग की विशेषता यह है कि इसमें आदमी के दिमाग मे सत्ता के कीटाणु घुस जाते हैं, शरीर पर बेहिसाब चर्बी चढ़ जाती है बैंक बैलेंस तोद की तरह बढ़ जाता है । कुर्सी के अभाव में सारे सुख खाक हो जाते हैं । आदमी-आदमी को जाति धर्म वर्ण सम्प्रदाय में बंटा हुआ दिखाई देने लगता है, आदमी अपने कमीनेपन को भूल जाता है । रामजी इसी राजरोग से पीड़ित हैं । इस रोग का उपचार किसी हकीम वैद्य, अथवा डाक्टर के पास नहीं है इसका इलाज सिर्फ एक ही जगह हो सकता है और वह जगह है आर्यसमाज, डा०हैं महर्षि दयानन्द । स्वामीजी की वैदिक पद्धति के अनुसार निर्मित, रसायन' आर्यसमाज का नियमित सेवन करते रहने से शारीरिक, सामाजिक तथा आत्मिक उन्नति होती है अविद्या से उत्पन्न भ्रम-भेद दूर होते है—दृष्टि स्वच्छ हो जाती है । इससे ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शूद्र का भेदभाव नहीं पैदा होता । सबकी उन्नति में ही रोगी को अपनी उन्नति नजर आती है ।

अत: कलियुग की बीसवीं सदी के राजरोगी राम अर्थात जगजीवन के राम अथवा जनता के बाबूजी से सादर अनुरोध है कि वह जाति युद्ध का शंखनाद न कर यथा-शीघ्र आर्यसमाज का सेवन करना प्रारम्भ कर दें, क्योंकि यह समाज आदमी को ब्राह्मण शूद्र के रूप में न देख कर केवल आर्य के रूप में देखता है और आर्य वे सभी हैं जिनमें मानवीय गुण, तप, त्याग शील और सद्धर्म है ।

हिन्दी विभागाध्यक्ष, म. पू. च. कालेज, बारिपदा (उड़ीसा)

प्रभु हमारा कल्याण करें

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ओ३म् स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ साम-१८७५

प्रवृद्ध कीर्तिवाले परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हों, सदा पुष्टि करने वाले विश्ववेत्ता परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हो, (तार्क्ष्यः) सर्वत्र व्याप्त (अरिष्टनेमि) ब्रह्माण्डचक्र की नेमिरूप परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हो, (बृहस्पतिः) बड़ी से बड़ी शक्तियों के स्वामी हमे कल्याण प्रदान करे । वेदज्ञान के अधिष्ठाता परम प्रभु हमारा कल्याण करें।

ओ३म्
इतिहास सच्चाई की नींव पर

'आर्यसदेश' के २६ अप्रैल के अंक में आर्यसमाज के विद्वान संन्यासी श्री विद्यानन्दजी सरस्वती (आर्यसमाज मन्दिर माडल टाउन, दिल्ली-६) ने आर्यजगत का ध्यान एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर आकर्षित करते हुए लिखा है—यदि इसी प्रकार काल्पनिक बातें चलती रहीं तो रामायण महाभारत और पुराणों आदि में वर्णित राम-कृष्ण आदि की तरह स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र में सचाई कम और झूठ का अंश अधिक हो जाएगा ।' मान्य स्वामी जी ने आर्यसमाज के विद्वानो तथा नेताओ से अनुरोध किया है कि वे बिना किसी पुष्ट प्रमाण के कोई बात न कहें और न लिखें। कई पत्रों में यह सम्वाद छपा था कि स्वामी दयानन्द ने नाना साहब को सन्यास की दीक्षा दी थी । एक पत्र में यह सम्वाद भी छपा था कि अमृतसर में महर्षि दयानन्द ने कहा था कि यदि उन्हें निर्धारित धनराशि मिल जाए तो वह हवाई जहाज बनाकर उड़ा सकते हैं। दोनों ही सम्वाद पुष्ट नहीं हो सके ।

पिछले दिनों दिल्ली के एक प्रमुख अंग्रेजी दैनिक पत्र में छपा था कि स्वामी श्रद्धानन्द ने 'रंगीला रसूल' लिखा था । उसके ग्रन्थ के वास्तविक मूल लेखक का पता वर्षों तक नहीं चला, प्रकाशक ने उसे सदा अज्ञात ही रहने दिया और इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने के कारण वह धर्मान्ध मजहब परस्तों के नापाक षड़यन्त्र के शिकार हो गए । सन्तोष का विषय है कि महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रामाणिक जीवन चरित्र और उनका साहित्य सुरक्षित है । इसके बावजूद इन नेताओं के कर्तृत्व के विषय में बिना किसी पुष्ट प्रमाणों के बहुत-सी बातें कही जाती हैं। प्रामाणिक लेखों, दस्तावेजों, शासकीय गुप्त रिपोर्टों तथा अन्य पुष्ट प्रमाणों के आधार पर इन प्रातः स्मरणीय राष्ट्र निर्माताओं के जीवन के अनमोल तथ्यों की खोज न करते हुए उनके विषय में रहस्य और चमत्कार का वातावरण प्रस्तुत करना वांछनीय नहीं कहा जा सकता ।

सचमुच इतिहास के साथ कभी खिलवाड़ नही होना चाहिए । एक बंगाली सज्जन ने वर्षों की साधना के बाद ऋषि के जीवन के बहुत से विस्मृत सुनहरे परिच्छेद आर्यजनता के सामने प्रस्तुत किये थे। उनसे महर्षि का जीवन अधिक प्रामाणिक और गरिमापूर्ण हो उठा। अपने प्रातः स्मरणीय आर्यनेताओं का जीवन अनोखा, असम्भव और चमत्कारपूर्ण बातों से गरिमापूर्ण नहीं हो सकेगा । उन्होंने अन्याय, परंपरा कुरीतियों और विषमता से अकेले ही जूझते हुए जो कार्य किया, उसकी विस्मृत एवं अज्ञात कड़ियों को ढूंढकर प्रकाश मे लाकर ही हम आर्यसमाज के आधारस्तम्भों के प्रति अपना दायित्व पूर्ण कर सकेंगे ।

गोरक्षा : हमारा राष्ट्रीय दायित्व

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को एक पत्र लिखकर इस कटु तथ्य की सूचना दी है कि हरियाणा से बड़ी गिनती में गौएं सहारनपुर और मुजफ्फरनगर में लाई जाकर काटी जाती हैं और मांस के व्यापारी उस मांस को भैंस का मांस कहकर बेचते हैं। श्री वानप्रस्थ ने अपने पत्र मे यह दुखद सूचना भी दी है कि उत्तर प्रदेश के दोनों पश्चिमी जिलो सहारनपुर और मुजफ्फरनगर जिलो से हजारो मन गोमांस भैंस का मास कहकर देश के कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े नगरो एवं विदेशों को भेजा जाता है ।

यदि उक्त कटु तथ्य ठीक हैं तो यह अत्यन्त दुःखद विषय है। भारतीय संविधान के अनुसार गोसंवर्द्धन करना केन्द्रीय शासन का दायित्व है । पशुओ का वध रोककर उनकी रक्षा करना सविधान के अनुसार प्रदेशो के अधिकार क्षेत्र में अन्तर्हित है । हरियाणा और उत्तरप्रदेश दोनों ही प्रदेशो ने कानून बनाकर अपने क्षेत्रो मे गो-वंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ है। दोनो प्रदेशो के प्रतिबन्धक कानून की उपेक्षा करते हुए मांस के व्यापारी बड़ी गिनती मे गौएं हरियाणा से उत्तरप्रदेश के जिलों में ला रहे हैं और उनकी हत्या कर उनका मांस भैंस के मांस के रूप मे स्थानीय बिक्री कर रहे हैं और उसे वे बड़े नगरो तथा विदेशो को भी निर्यात कर रहे हैं। इस कार्य की मिली भगत मे दोनों प्रदेशो के सीमा रक्षक, नगर के स्वास्थ्य अधिकारी सभी सम्मिलित हैं। सबकी मिली भगत के बिना यह जघन्य कार्य यह निन्दनीय व्यापार चल ही नही सकता।

महर्षि दयानन्द ने 'गोकरुणानिधि' ग्रन्थ लिखकर तथा लाखों देशवासियों के हस्ताक्षरों से स्मरण पत्र लिखवाकर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार से गोवध की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की थी। पिछली एक शताब्दी से अधिक समय से आर्य-समाज अपने कार्यक्रमों में गोरक्षा को अपना पवित्र दायित्व समझता रहा है । इस सम्बन्ध में समय-समय पर हुए गोरक्षा-आंदोलनो मे भी आर्यसमाज की उल्लेखनीय भूमिका रही है। देश की बहुसंख्यक धर्मप्राण हिन्दू-आर्य जनता गोरक्षा का सिद्धान्त स्वीकार करती है। राष्ट्र के आर्थिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक जीवन में गोवश की बड़ी महत्ता है। पिछले वर्षों में चमड़े तथा पशुमांस के लिए जिस प्रकार गोवंश की भीषण क्षति की जा रही है, यदि उस सम्बन्ध मे भारत सरकार और प्रादेशिक सरकारें सावधान और कृतसंकल्प होकर अपना राष्ट्रीय दायित्व नही निबाहेंगी और गोवंश का संहार इसी प्रकार प्रचलित रहने देंगी, तो कुछ ही वर्षों मे देश मे अच्छी गायों का मिलना असम्भव नहीं तो दूभर अवश्य हो जाएगा।

चिट्ठी-पत्री

इतिहास के साथ खिलवाड़

आर्यसंदेश के २६ अप्रैल के अक में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का इतिहासके साथ खिलवाड पढ़ा। वस्तुस्थिति यही है जो स्वामीजी ने वर्णित की है। आर्यसमाज के विद्वानो में इतिहास की खोज तथा अन्वेषण की प्रवृत्ति समाप्त हो चुकी है । हम भी पुराणकारो की भांति स्वामी दयानन्द जी के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की अतिरंजित बातो को उछालने में लगे हैं जिनसे स्वामीजी के व्यक्तित्व पर अलौकिकता का आवरण चढ़ जाय। १५ मई १९७६ को धर्मयुग मे प्रकाशित दादूमियां के लेख को लेकर जो चर्चायें चली उनकी वास्तविकता को जानने के लिए मैं सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार दिसम्बर, १९७६ मे स्वय बड़ौदा जाकर दादू मिया से मिला था जो वस्तुतः डॉ० दामोदर नेने है किन्तु दादूमियां के छद्म नाम से लेखन कार्य करते हैं उन्होंने मुझसे स्पष्ट कहा कि स्वामी दयानन्द और नाना साहब के बारे मे मैंने जो कुछ बातें अपने लेख में लिखी हैं वे योगी के आत्म चरित्र नामक पुस्तक पर आधारित हैं। जब मैंने योगी के आत्म-चरित्र की अविश्वसनीयता सिद्ध को तब उन्होने मेरे कथन को सही माना। मेरी उनसे एतद् विषयक वार्ता टेपरेकार्ड कर ली गई है।

निवेदन है कि आर्यसमाज में इतिहास विषयक संचेतना को पुनः जाग्रत करना आवश्यक है अन्यथा पं० लेखराम, देवेन्द्र बाबू, पं० घासीराम, प० भगवद्दत्त, प० युधिष्ठिर मीमांसक तथा प० महेश प्रसाद मौलवी आदि ऋषि जीवन पर नानाविध अनुसंधान करने वाले इतिहासज्ञों का श्रम व्यर्थ जायगा और स्वामी दयानन्द की जीवनी भी एक पुराण का रूप धारण कर लेगी। इस विषय पर मैं स्वय विस्तृत रूप से आपकी सेवा में एक लेख भेजूंगा।

—डा० भवानीलाल भारतीय

दयानन्द पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़

राष्ट्ररक्षा और सेना

प्रत्येक राज्य का कर्त्तव्य है राष्ट्र की रक्षा। इसे राजा ब्रह्मचर्य और तप से पूर्ण करता है। कहा भी है :

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
(अथर्व ११।५।१७)

इस मंत्र मे उससे संयमशील और श्रमी जीवन की अपेक्षा है, तभी सारी प्रजा अपने जीवन में उसकी नकल करती है। 'यथा राजा तथा प्रजा'। राजा ही रहन-सहन की प्रणाली का प्रस्तुतकर्ता भी है। राष्ट्र की रक्षा आन्तरिक और बाहरी दो प्रकार के शत्रु से अपेक्षित है।

(१) आभ्यन्तरीय शत्रु से राष्ट्र-रक्षा :

यजु० ६।१ मे राजा से प्रतिज्ञा कराई है :

इदमहं रक्षसा ग्रीवो अपिवृन्तामि॥

मैं राष्ट्र मे विद्यमान विनाशक व्यक्तियों की राष्ट्र रक्षा हेतु गर्दन तक काट सकता हूं।

अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः। (यजु. २।२९)

राक्षस वृत्ति के व्यक्ति निश्चय ही उन्मूलन के योग्य हैं। राष्ट्र में प्रस्तुत पंचमार्गियों फिफ्थ कालमिस्ट का उच्छेद भी राजा का पावन पुनीत कर्त्तव्य है कहा है कि :

ये रूपाणि प्रतिसंचमाना असुराः अन्त स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥
(यजु० २।३०)

(जो अन्दर से आसुरी तथा ऊपर से अपने रूप को छिपाए हुए हैं राष्ट्र की अग्नि उन्हें विनष्ट कर दे।)

योऽस्मभ्यमरातीयाद्यश्च नो द्वेषते जन।
निन्दाद्योऽस्मान् धिप्साच्च सर्वं तं भस्मसा कुरु।
यजु० (११।८०)

जो जन (राष्ट्र का नागरिक होता हुआ भी) राष्ट्र से मन में शत्रुता रखे, द्वेष करे निन्दक ही बना रहे, दम्भ दिखावे या छल करे उसे तो सम्पूर्ण रूप से भस्म कर देना चाहिए। उपर्युक्त ये सब कार्य सेना की अपेक्षा रखते हैं।

(२) बाह्य शत्रु से राष्ट्र रक्षा : क) डिप्लोमेसी द्वारा राज्य का परम पावन पुनीत कर्तव्य है कि अपने को स्थिर रखे। तथा बाहरी शत्रुओं से अपनी रक्षा करे प्रायः पड़ोसी राष्ट्र शत्रु होता है और पड़ोसी पर गृद्ध दृष्टि लगाए रखता है। अतः एव पड़ोसी के उस पार के पड़ोसी से मित्रता रखनी चाहिए। बराबर की शक्ति वाले पड़ोसी तथा अपने बीच में एक तटस्थ न्यूट्रल बफर स्टेट बनाए रखना बुद्धिमता होती है। तोभी जब दो राष्ट्रों के सम्बन्धों में दरार पड़ जाती है तो यह सर्वसम्मत है कि वे उसे परस्पर वार्ता द्वैत या तृतीय पक्ष की विद्यमानता या मध्यस्थता अथवा पंच निर्णय के माध्यम सुलझा लें। अधुना संयुक्त राष्ट्र संघ अथवा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय मे समस्यायें सुलझाई जा सकती हैं। पर ये संस्थान सहमति मे ही कार्य करते हैं, सब राष्ट्रों पर एक महाराष्ट्र बनना असम्भव है। महाराष्ट्र तो ईश्वर का ही बन सकता है। संयुक्त राष्ट्र में तो भारी पलड़े वाले दल का अपनी ओर होना आवश्यक है, तभी उसका संरक्षण मिल सकता है।

(ख) सैन्य शक्ति से-पर संयुक्त राष्ट्र की व्यवस्था है कि उनके द्वारा सहायता पहुंचाना असम्भव हो सकता है अथवा उसमें देरी हो सकती है। ऐसी अवस्था में हर राष्ट्र को उचित है कि अकेले अथवा अपने मित्र राष्ट्रों सहित आक्रामक का सेना से मुकाबला करें।

यो नो अग्ने भिदासत्यन्ति दूरे पदीष्ट सः।
अस्माकमिद्वृधे भव॥ (ऋग्वेद-१।७९।११)

हे (अग्ने) तेजस्वी सेनापति! (यः) जो (अतिदूरे) पास अथवा दूर से (नःअभिदासति) हमें दास करने की इच्छा करता है। (स प्रदीष्ट) वह नीचे गिर जाए। हे देव! तू (अस्माकं वृधे) हमारी वृद्धि के लिए हो।

दास अथवा नाश करने वाले जो होंगे, वे आक्रामक सब शत्रु नष्ट करने योग्य हैं। हां स्वयं नहीं होना चाहिए। जब एक पक्ष को अपनी बात में निष्ठा हो जाती है, वह ही उसका महान ध्येय हो जाता है और उस उद्देश्य के हेतु किया जाने वाला युद्ध धर्मयुद्ध कहाता है। स्वभावतः कोई युद्ध धर्मयुद्ध नहीं होता। महाभारत युद्ध में राज्य पर धृतराष्ट्र का बड़े होने से स्वाभाविक अधिकार था। उनके पुत्र होने से कौरव ही राज्य के वध उत्तराधिकारी थे, परन्तु कृष्णजी पांडव पक्ष को उचित समझते थे और जब अर्जुन रक्त की होली खेलने में झिझका तो कृष्णजी ने कहा—

सुखिना पार्थ क्षत्रियाः स्वर्गं द्वारस्मीदृशम-पावृत्तं।

(क्षत्रिय भाग्यशाली है कि युद्ध में मर कर उसे स्वर्ग बिना तपस्या के सहज में ही मिल जाता है।)

तस्मात्त्वमिस्ठ कौन्तेय। युद्धायकृत-निश्चय।

इसलिए अर्जुन युद्ध करने का निश्चय करके उठ खड़े हो। अस्तु अपने स्वत्व की रक्षा के लिए युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

हीगेल ने कहा था कि युद्ध राष्ट्रों का व्यायाम भी है जिसमें शक्तिशाली उभरता है और मनुष्य उत्कृष्टतम त्याग करने को उद्यत होता है और विधना ने जिस राष्ट्र को विश्व का नेतृत्व सौंपना होता है उसे वह विजयी बनाता है। यहां तक आप हीगल से सहमत न हों पर मनुष्यों में जब तक मोह व अन्याय है वह राष्ट्रीय नीतियों में परिलक्षित होगा और अन्याय के शमन के लिए दूसरे राष्ट्रों को शस्त्र उठाना ही होगा। अस्तु वेद में युद्ध में विजय का आह्वान है ही—

प्राचीमारोह। दक्षिणामारोह। प्रतीचीमारोह।
उदीचीमारोह। ऊर्ध्वामारोह। प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः॥
(यजु० १०।१०।१६ तक)

लेखक :
डा० रामेश्वरदयाल गुप्त
अध्यक्ष त्रैतवादीय आर्यपीठ

सब दिशाओं मे आरोह कर के सेना स्थायी नियुक्त करके शत्रुओं को नतमस्तक करती है इसके लिए आयुध चाहिए। वास्तव में देखा जाए तो युद्धों में उपयुक्त आयुधों से पिछड़ापन ही भारत को परतन्त्रता का मूल कारण रहा है। जब आक्रान्ता घोड़े प्रयोग करने लगे थे, तो हमारे पास हाथी ही थे। जब वे बारूद और बन्दूक का प्रयोग करते हैं, तब हमारे पास भाले और तीर कमान ही थे। जब हमारे पास बन्दूक आई, तब आक्रान्ताओं के पास भीषण बम थे। और हमारे पास साधारण बम हैं तो हमारे शत्रुओं के पास परमाणु बम तथा राकेट हैं। हा हन्त! हम सदा परास्त हो जाने के बाद ही उन्नततर आयुधों को प्राप्त करते हैं। जून १९७४ में हमारा भी अणु विस्फोट हो चुका है, इसलिए युद्ध और विजयश्री का चिन्तन वेद का सदैव उद्घोषित रहा है।

(३) वैदिक उद्धरण —

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माक-मंशमुदवा भरे भरे।
अस्मभ्यमिन्द्रवरिवः सुगंकधि प्रशत्रूणां मघवन वृष्ण्या रुज॥
ऋग्वेद मंडल। सूक्त १०२ मंत्र ४

१. हे इन्द्र (राज्यशक्ति) मघवन्।
त्वा युजा वयं जयेम।
आपके साथ वर्तमान, आपके सहाय से हम लोग दुष्ट शत्रुओं को जीतें।
२. आवृत्तम—तू हमारे बल से बढ़े।
३. भरे भरे अस्माकमंशमुदवा—युद्ध-युद्ध में हमारे अंश (बल-सेना) का उत्कृष्ट रीति से कृपा करके रक्षण करो। युद्ध में हमें विजयश्री दिलवाओ।

४. शत्रुणाम् वृष्ण्या प्ररुज—हमारे शत्रुओं के पराक्रमादि को प्रभावहीन करके नष्ट कर दे। शत्रु का मनोबल नष्ट कर दे।

५. अस्मभ्यं वरिवः सुगं कृधि—हमारे लिए चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य धन को सुख से प्राप्त करा।

(आर्याभिविनय में स्वा. दयानन्द भाष्य से)

शत्रु का पराभव करना चाहिए।

यो नो दास आर्यो वा पुरुष्टुतादेव इन्द्र युधेय निकेतति।
अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान्वनुयाम संगमे॥

हे (पुरुष्टुत) प्रशंसित (इन्द्र) राज्य-शक्ति! (अदेवः) राक्षसी स्वभाव वाला दुष्ट (नः युध्यं) हमारे साथ युद्ध करना (निकेतति) चाहता है, (तेशत्रवः) ये सब शत्रु (अस्माभिः) हमारे द्वारा (सुसहाः सन्तु) पराजित हों, और हम (त्वया) तेरे साथ रहकर (संगमे) युद्ध में (अनुवाम) विजय प्राप्त करेंगे। (सातव लेकर भाष्य से)

मूढा अमित्रा न्यर्बुदे जह्येषां वरं वरम्।
अनया जहि सेनया॥ (११।१०।२१)

हे (न्यर्बुदे) वीरो (अमित्राः) शत्रुओं को (मूढाः) मूर्ख बनाओ। (एषा) इनके वरं वर) मुखियाओं को (जहि) मारो। (अनया) इस (सेनया) सैन्य से (जहि) शत्रु को मार दे।

युद्ध के विषय में प्रायः यह धारणा है कि उसका रक्त-पिपासु पहलू क्रूर एवं अवैध है। वास्तव में युद्ध के बाद लम्बे समय तक के लिए शान्ति खरीदी जाती है। युद्धों में जन-धन की हानि होती है, पर वे अंचलों में एक स्थिरता ला देते हैं जो कि दो या तीन या अधिक पीढ़ियों तक चलती है। मरे हुए मनुष्यों की संख्या वह मूल्य है जो अंचल अनेक पीढ़ियों की शान्ति के लिये चुकाता है। यूरोप में १७६५ ई० से १९१८ ई० तक लगभग डेढ़ सौ वर्षों में ७ मुख्य महायुद्ध हुए हैं। इनमें युद्धाहतों तथा मृतकों की संख्या इस प्रकार रही है :—

युद्धाहत तथा मृतकों की संख्या—

(१) सप्तवर्षीय युद्ध १७६५ ई० से १७७२ ई०—३०५४०० (आस्ट्रियन एवं प्रुशियन)

(२) नेपोलियन के युद्ध (१७७३-१८१५)—४५८३३

(३) नेपोलियन के रूस से युद्ध १८१२)—५९५०००

(४) रूस और टर्की के युद्ध १८२४ ई०—१०५३२९

(शेष पृष्ठ ८ पर)

युग की मांग है कि हिन्दू एक और सतर्क हों

विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन में नेपाल नरेश की सलाह :
आर्य कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन में भाग लिया

वीरगंज (नेपाल)। धर्मनगर,पीपरामठ वीरगंज (नेपाल) में सम्पन्न हुए विश्व हिन्दू सम्मेलन में आयरलैन्ड, जावा, अमेरिका, गायना, लंका आदि देशों के प्रतिनिधि तथा भारत के विभिन्न स्थानों के बौद्ध, जैन, सिख, पारसी आर्यसमाजी तथा हिन्दूधर्म के साधु सन्यासी और गृहस्थ उपस्थित थे। पीपरामठ में बने धर्मनगर के विभिन्न द्वारों पर हिन्दुओं के सभी सम्प्रदायों के झंडों के साथ बड़ी संख्या में राजकीय झण्डे फहरा रहे थे। सभामंच के पास राजकीय झण्डे के साथ ही वैदिक ओ३म् की पताकाएं लहरा रही थीं जिन पर लिखा हुआ वेद की ज्योति जलती रहेगी।

उद्घाटन भाषण देते हुए नेपाल नरेश ने हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों की एकता पर बल दिया। उन्होंने कहा—युग की मांग है कि हम सतर्क रहें। सम्मेलन में गौ, ओ३म् और स्वस्तिक चिह्न युक्त प्रतीक रखे हुए थे। चम्पारण जिला आर्यसभा और आर्यसमाज रक्सौल की तरफ से धर्म नगर मे आर्यसमाज का शिविर लगा हुआ था। इस शिविर में उत्तर बिहार और चम्पारण जिले की आर्यसमाजों के अधिकारी और सदस्य अपने-अपने परिवारोंके साथ आए हुए थे। गोरक्षा, शिक्षा, संस्कृत विषयक सम्मेलनों में चम्पारण जिला आर्यसभा के अधिकारियों और विद्वानों ने अपने विचार प्रगट किए। इस अवसर पर आमन्त्रित विद्वानों और नेपाल नरेश के सम्मुख आर्यसमाज का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए किसी विख्यात आर्य विद्वान् की अनुपस्थित खटकती रही।

—बी० के० शास्त्री

युवक शारीरिक-आत्मिक दृष्टि से सक्षम बनें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य ने एक परिपत्र द्वारा प्रदेश के युवकों को सचेत किया है—आज देश विषम परिस्थिति से गुजर रहा है। अनेक समस्याएं देश की एकता को चुनौती दे रही हैं। देश की इन भीषण परिस्थितियों में युवकों को शारीरिक और आत्मिक दृष्टि से सक्षम करने के उद्देश्य से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् २१ से ३१ मई तक हंसराज माडल स्कूल, पंजाबी बाग मे आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर रही है।

श्री आर्य ने आर्यसमाज के पदाधिकारियों से अनुरोध किया है कि अपने क्षेत्र से कम से कम दो युवक शिविर मे भाग लेने के हेतु अवश्य तैयार करें। असमर्थ शिविरार्थियो का शुल्क सम्बन्धित समाजें वहन करें। एक शिविर मे भाग लेने वाले युवक को ३० रुपए शिविर-शुल्क देना होगा। इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज मन्दिर कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली-७ से सम्पर्क किया जा सकता है।

मुरादाबाद नगर की तलाशी ली जाए

शस्त्र व हथियार रखने वाले पकड़े जाएं

मुरादाबाद। मुरादाबाद की हिन्दू रक्षा-समिति ने प्रधानमंत्री से मांग की है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर मुरादाबाद की स्थिति संभालें और वहां की शांति भंग न होने दें। समिति के प्रवक्ता ने बताया कि पिछले दिनों भारी मात्रा में हथियारों का पकड़ा जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मुस्लिम वर्ग के पास हथियारों का भण्डार है, जिनका प्रयोग अराजक तत्त्व करेंगे।

समिति ने सुझाव दिया है कि तीन दिन के लिए उचित साधन अपनाकर सारे नगर की तलाशी ली जाए और जिनके पास हथियार मिलें, उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाए।

□

नेपाल में वैदिक धर्म का प्रचार

ग्राम फहिजनूवा (नेपाल) तराई के जिला-प्रचारक पं० भगवान शर्मा, पं० रामाकान्त द्विवेदी ने अपने दल के साथ [illegible] वैदिक धर्म का प्रचार किया। ९ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा मांस-मदिरा त्याग करने का व्रत लिया। इन दिनों हजारों लोगों ने इन उपदेशों को सुनकर आर्यसमाज के कार्यों में अपनी दिलचस्पी प्रकट की।

मानवता की पुकार : धार्मिक संस्थाओं का दायित्व

—आनन्द मोहन

अत्यधिक विषमता बुराई का मूल है। अत्यधिक संपत्ति ही अथवा अत्यधिक निर्धनता दोनों से ही बुराई उत्पन्न होती है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं भोजन, कपड़ा, मकान और शिक्षा के पूर्ण न होने से दुराचार, आलस्य कामचोरी, अनैतिकता और अपराधों की उत्पत्ति होती है। ऐसी हालत में समाज न तो सुखी रह सकता है न उन्नति कर सकता है। और जहां मूलभूत सुविधायें नहीं मिलतीं और लोग छोटी-छोटी चिन्ताओं ही मे घुल रहे हों या सड़-गल रहे हों तो वहां आध्यात्मिकता का चिन्तन संभव नहीं।

इस समय प्राथमिक काम जो सामने है वह है जनता की मूलभूत आवश्यकतायें भोजन, कपड़ा मकान व शिक्षा को पूरा करना।

भोजन, कपड़ा व मकान की कमी की पूर्ति के लिए गांवों में स्थानीय ग्रामीणों द्वारा चलने वाले छोटे-छोटे व्यवसायों का खुलना नितान्त आवश्यक है इस पुण्य कार्य में सरकार, सार्वजनिक संस्थाओं, उद्योगपतियों तथा बुद्धिजीवियों सब को कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करना चाहिए।

शिक्षा-साक्षरता और औद्योगिक दोनों ही प्रकार की होनी चाहिए। इस क्षेत्र में खास तौर से साक्षरता को बढ़ाने में सरकार और उद्योगपतियों के अतिरिक्त धार्मिक संस्थायें भी बहुत योगदान कर सकती हैं। अगर हरेक मन्दिर, आर्यसमाज, गुरुद्वारा, मसजिद तथा चर्च में पूजा पाठ के साथ-साथ वहां के पुरोहित तथा अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा साक्षरता के लिए विद्याभवन चलाए जाएं और जहां अक्षर ज्ञान के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाए तो देश में कितनी प्रगति हो सकती है। धार्मिक संस्थायें मानवता की पुकार को सुनकर जब इस तरह समाज के हित में लगेंगी, तभी वे मानव को निर्मल कर सकेंगी तथा शान्ति या सिद्धि दे सकेंगी।

२८, आनन्दलोक नई दिल्ली-११००४६

मेवात में हिंदू रक्षा सम्मेलन

नूह। दिल्ली से तीस मील दूर मेवात के विभिन्न नगरों से आए प्रतिनिधियों की एक बैठक स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में हुई। बैठक में निश्चय किया गया कि मेवात के किसी स्थान में जून माह में, क्षेत्रीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित किया जाए। मेवात में बाहर से आए मुस्लिम-मुल्लाओं की गतिविधियां इन दिनों बढ़ जाने से क्षेत्र में आतंक पैदा हो रहा है। इस पर हिन्दू नेता प्रो. रामसिंह व महात्मा वेदभिक्षु ने मेवात का दौरा किया और यहां बैठक मे भाग लिया।

—०—

श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती दुर्घटनाग्रस्त

कन्या गुरुकुल दाधिया (राजस्थान) के उत्सव से आर्यसमाज होली मुहल्ला करनाल के उत्सव पर जाते हुये १० मई की रात्रि को श्री स्वामी ओमानन्द जी की जीपगाड़ी डीघल ग्राम (रोहतक) के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गई। गाड़ी की टायरायड टूटने से स्टीयरिंग फेल हो गया और जीप काबू से बाहर होकर पानी से भरे जोहड़ में जा घुसी। स्वामी जी के सिर, दोनों हाथ और पैर पर चोट आई है। जीपगाड़ी बिल्कुल टूट चुकी है।

अतः सभी आर्यसमाज और आर्य-शिक्षण-संस्थाओं से निवेदन है कि कोई सज्जन स्वामी जी को उत्सव आदि का निमन्त्रण न दें। स्वस्थ होने के पश्चात् भी स्वामी जी गाड़ी के अभाव मे कहीं नहीं जा सकेंगे। ईश्वर करे श्री स्वामी जी शीघ्र स्वस्थ हों।

विरजानन्द
कन्या गुरुकुल नरेला
दिल्ली—४
फोन—८६३४०

करौलबाग समाज आर्यमहासम्मेलन

नई दिल्ली। आर्यसमाज करौलबाग का ५२ वां वार्षिकोत्सव म. धर्मपाल जी, प्रधान केन्द्रीय आर्यसभा की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाया गया। रविवार, १० मई के दिन आयोजित आर्यमहासम्मेलन की अध्यक्षता श्री महाशयजी ने की। सुश्री सविता बहन, खुशीराम जी, ओमप्रकाश जी शास्त्री आदि ने राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं की ओर ध्यान खींचते हुए इस समय एकता पर विशेष बल दिया। सभी कार्यक्रमों का संयोजन आचार्य पं. हरिदेव जी शास्त्री ने किया।

आर्य जगत् समाचार

भारत का नक्शा बदलने का प्रयास

आर्य नेताओं की चेतावनी

दिल्ली। आर्यसमाज दीवानहाल द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने कहा—१९७३ से भारत के नक्शे को बदलने की पूरी कोशिश की जा रही है। पहले ईसाई इस काम मे लगे थे, अब मध्यपूर्व के मुसलमान अरब लोग।

प्रसिद्ध हरिजन नेता श्री पृथ्वीसिंह आजाद ने कहा—स्वतन्त्रता से पूर्व हरिजनो को मुसलमानों बनाने का षड़यंत्र रचा गया था। उस समय म० गांधी ने मुझे बुलाकर कहा था—'हरिजनों का धर्म-परिवर्तन रोका जाए।' मैंने आर्यसमाज की सहायता से एक भी हरिजन को मुसलमान नहीं होने दिया, अब अरब देशों द्वारा भारत के इस्लामीकरण और हरिजनों को मुसलमान बनाने की योजना चली है, इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर मैं पुनः इस कार्य को रोकने के लिए तत्पर हुआ हूं।

छोटे मुस्लिम डिवीजन की स्थापना अनुचित

शासन की उर्दू सम्बन्धी नीति अनुचित —श्री कैलाशनाथ सिंह

लखनऊ। उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री एवं उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री कैलाशनाथ सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को एक पत्र लिखकर चेतावनी दी है कि उत्तरप्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाना अवैधानिक एवं अन्याय पूर्ण है। इतना ही नहीं सम्प्रति १३ जिलों को विशेष रूप से उर्दूभाषी घोषित करना तथा अरब देशों के धन से मुरादाबाद तथा वाराणसी आदि स्थानों में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलना, मुरादाबाद, बरेली, रामपुर आदि मुस्लिम-बहुल जिलों को आबादी के लिहाज से कानून और व्यवस्था की आड़ में एक डिवीजन बनाकर छोटे मुस्लिम प्रदेश बनाने की योजना की पेशकश करने जैसे कार्य अनुचित, राष्ट्रीयता के विरुद्ध तथा करोड़ों भारतीयों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ है।

श्री कैलाशनाथ सिंह ने पत्र में अनुरोध किया है कि वह उर्दू सम्बन्धी तथा मद्य निषेध सम्बन्धी अपनी नीति पर पुनर्विचार कर जनमानस को विक्षुब्ध होने से बचाए, अन्यथा आर्यसमाज को बाध्य होकर आन्दोलनात्मक कदम उठाने पड़ेंगे।

—०—

गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य की कामना

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के श्री बालकृष्णन द्वारा गुरुकुल कांगड़ी का निरीक्षण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उप-सचिव श्री एम० पी० बालकृष्णन ने २८ अप्रैल के दिन गुरुकुल के समस्त विभाग देखे। पुस्तकालय, संग्रहालय, विज्ञान महाविद्यालय, वेद महाविद्यालय, कृषि फार्म, विद्यालय, व्यायाम शाला, गोशाला आदि देखकर उन्होंने कहा कि उनके मन में गुरुकुल के प्रति जो धारणा थी उसमे उसकी वर्त्तमान स्थिति देखकर काफी परिवर्तन आया है। उनका विचार है कि संस्था में प्रगति के लिए पर्याप्त मात्रा में क्षमता है और गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। कृषि भूमि को देखकर उनके विचार थे कि यदि हम कोई आहार योजना बना सकें तो उचित रहेगा। उन्होंने श्री बलभद्रकुमार जी हूजा, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की काफी सराहना की।

हिन्दू युवती की रक्षा

कानपुर। केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान तथा आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने गोविन्द पुरी स्टेशन के निकट एक सत्रह वर्षीय युवती मोती को गुण्डों के चुंगल से छुडाकर थाना गोविन्द नगर पुलिस के सुपुर्द कर दिया। जिला बांसवाड़ा के ग्राम सरोपन की यह ब्राह्मणी युवती घर से नाराज होकर आगरा की एक वेश्या के चक्कर में पड़ गई थी। समय पर सचेत होने पर वह आगरा के नारी निकेतन पहुची। वहां से कुछ दिन के बाद कुछ लडकियां निकाल दी गईं उनमें तीन लडकियां कानपुर चली आईं उनमें दो तो गुण्डों के चंगुल में फंस गईं। श्री आर्य ने युवती मोती की सूचना उसके माता-पिता और ससुराल वालों को भेज दी है।

श्री रामवक्षलाल जी का स्वर्गवास

बेतिया। चम्पारण-बेतिया-बिहार के आर्य नेता एवं सार्वदेशिक सभा के अन्तरग सदस्य श्री रामवक्षलाल जी का देहावसान ९ अप्रैल को हो गया। २२ अप्रैल को उनकी स्मृति में आयोजित शान्ति-यज्ञ के अवसर पर दरिद्रनारायण को भोजन-वस्त्र दिया गया।

—०—

गायत्री महायज्ञ

ग्राम सपही थाना तुरकोलिया पू० चम्पारण में ३ दिन तक गायत्री महायज्ञ में हजारों का जनसमूह एकत्र हुआ। भजनों और उपदेशों का कार्यक्रम भी अच्छा रहा।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

कन्याएं विशिष्ट प्रतियोगिताओं में भाग लेंगी

वाराणसी। पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का दसवां वार्षिकोत्सव शुक्र, शनि, रवि २२, २३ और २४ मई को मनाया जाएगा। इस अवसर पर पटना के आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के आचार्य पं० सत्यप्रिय, भू० पू० चिकित्सा-स्वास्थ्य अधिकारी राजस्थान सत्यदेव आर्य, अजमेर के सगीताचार्य प० पन्नालाल पीयूष, अलीगढ़ के संगीतज्ञ कुंवर भद्रपाल, आकाशवाणी के कलाकार पं० ओम्प्रकाश आदि विद्वान् एवं संगीत-महारथी पधारेंगे।

इस अवसर पर महाविद्यालय की कन्याएं लयताल बद्ध वाद्ययन्त्रों के साथ वेदमन्त्र प्रस्तुत करेंगी। अष्टाध्यायी की अन्त्याक्षरी एवं संस्कृत मे भाषण और कविताओं के विशिष्ट कार्यक्रम भी रखे गए हैं। पत्रकार गोष्ठी के अतिरिक्त शारीरिक व्यायाम का अनूठा प्रदर्शन भी किया जाएगा।

आर्यसमाज बांकनेर के नए पदाधिकारी

वर्ष २०३८ विक्रमी के लिए आर्यसमाज बांकनेर दिल्ली-४० के ये पदाधिकारी चुने गए—प्रधान—श्री मांगेराम आर्य, उपप्रधान—श्री मेहरलाल पंवार, मन्त्री श्री रामकरण, उपमंत्री—श्री बिलेसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश गुप्त, लेखा निरीक्षक—श्री भीम सिंह डागर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हवा सिंह, अन्तरंग सदस्य सर्वश्री दयानन्द, गुरबचन सिंह, रणधीर सिंह।

आर्यसमाजों के सत्संग

१७-५-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक; अशोक विहार—के सी-५२-ए—पं० रामरूप शर्मा; आर्यपुरा—पं० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; आर. के. पुरम सैक्टर ६—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; आनन्द विहार—प० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक; इन्द्रपुरी—पं० उदयपाल शास्त्री; किंग्जवे कैम्प—पं. रामदेव शास्त्री गाजियाबाद; किशनगंज मिल एरिया—श्री मोहनलाल गांधी; कालकाजी डी. डी. ए. फ्लैटस—आचार्य हरिदेव सि. भू.; गांधी नगर—प. ईश्वरदत्त एम. ए; गीता कालोनी—पं. आशानन्द भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I प्रो० सत्यपाल बेदार; गुड़ मण्डी—पं. रामदेव शास्त्री; १५१-गुप्ता कालोनी—प. हरिदत्त शास्त्री वेदाचार्य; गोविन्दपुरी—प्रो. वीरपाल विद्यालंकार; जमपुरा भोगल—प. देवराज वैदिक मिशनरी; जनकपुरी बी ३/२४—प. सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; टैगोर गार्डन—श्रीमती सुशीला राजपाल डिफैन्सकालोनी—प. महेशचन्द भजन मण्डली, तिलक नगर—पं. केशवचन्द मुन्जाल; तिमारपुर—प. प्राणनाथ सिद्धान्तालकार दरियागंज—डा. रघुनन्दन सिंह; नारायण विहार—आचार्य कृष्णगोपाल; नया बास—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—डा. सुखदयाल भूटानी; पश्चिमीपुरी जनता क्वार्टर—पं. वीरव्रत शास्त्री; बाग कड़े खां—प. बरकतराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—पं. प्रकाशचन्द शास्त्री; बिरला लाइन्स—प. महेन्द्रप्रताप शास्त्री; माडल बस्ती—पं. छज्जूराम शास्त्री; महरौली—प. हीराप्रसाद शास्त्री; मोतीनगर—प. रमेशचन्द; रमेशनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; राणा प्रताप बाग—पं. गणेशदत्त वानप्रस्थी; लड्डू घाटी—प. वेदपाल शास्त्री; लाजपत नगर—मास्टर ओमप्रकाश; लक्ष्मीबाई नगर ई-१२०८—श्रीमती लीलावती आर्या; विक्रमनगर—पं. सत्यभूषण वेदालंकार; सुदर्शन पार्क—प्रो. भारतमित्र शास्त्री वेदालंकार; सोहनगंज—ला. लखमी दास; सराय रोहल्ला—पं. प्रकाश वीर व्याकुल; श्रीनिवासपुरी—पं. मनोहर विरक्त; शादी खामपुर—पं. विष्णु देवप्रसाद विद्यालंकार; शकूरबस्ती रानीबाग—डा० देवेन्द्र द्विवेदी शालीमार बाग—पं. राजपाल शास्त्री, हौजखास—प. चन्द्रभानु सि. भू.;

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेदप्रचार विभाग

आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर में प्रवेश

आर्य कन्या गुरुकुल, हसनपुर जिला फरीदाबाद (हरियाणा) मे १ मई, १९८१ से प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। प्रवेश की अन्तिम तारीख १५ मई हैं। स्थान सीमित हैं। इस वर्ष केवल कक्षा छठी में ही प्रवेश होगा। गुरुकुल में प्रविष्ट छात्राओं को गुरुकुल छात्रावास मे ही रहना अनिवार्य होगा। गुरुकुल में संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि सभी विषयो को पढने की पूरी व्यवस्था होगी।

आर्यसमाज शक्तिनगर का २६वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज शक्तिनगर के २६ वें वार्षिकोत्सव पर ऋग्वेदीय यज्ञ, वेदकथा, प्रवचनो, महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। शुक्रवार ८ मई को दोपहर के समय श्रीमती ईश्वरी देवी की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन हुआ। सम्मेलन मे श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, ब्रह्म., कलावती आचार्या, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की मन्त्रिणी श्रीमती प्रेमशीला जी के भाषण हुए। ९ मई को दोपहर के समय स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन हुआ। प्रमुख वक्ता आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, डा. वाचस्पति उपाध्याय, खतौली वाले श्री ओम्प्रकाश शास्त्री और प्रो. वीरेन्द्रकुमार थे।

रविवार को प्रातः ९ बजे ऋग्वेदीय यज्ञ की आहुति हुई। दोपहर को आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ। प्रमुख वक्ता पं. रामदयालु शास्त्री, डा. गणेशदत्त शास्त्री, प्रो. रमेशचन्द्र शास्त्री आदि थे।

बोध-कथा

सच्चा आनन्द

एक जिज्ञासु साधक सच्चे आनन्द की खोज में एक महात्मा के पास पहुंचा। उसने महात्मा जी से बड़े आग्रह से प्रार्थना की कि वह सच्चे आनन्द पर प्रकाश डालें। महात्मा जी ने अपनी सहज शान्त मुस्कान से उस दु:खी व्यक्ति की ओर देख कर कहा—'आज तो मैं बहुत अधिक व्यस्त हूं। आज तुम जाओ, दस दिन के बाद आना, मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हें सच्चे आनन्द की प्राप्ति हो जाए। हां, इन दस दिनों में तुम परिवार, समाज सबसे अलग रहकर एकान्त में मौन व्रत में अपना समय बिताना।'

वह साधक सच्चे आनन्द का जिज्ञासु था। उसने महात्माजी की शर्त का अक्षरशः पालन किया। वह उन दस दिनों तक सबसे [illegible] रहकर पूर्ण मौन रहकर आत्म-चिन्तन में लगा रहा। दस दिन के बाद वह साधक जब महात्मा जी के पास पहुंचा; तब वह उनसे कोई जिज्ञासा करने के स्थान पर बोला। 'आपकी शर्त ने मुझे आनन्द-सागर में गोते लगाने का अवसर दे दिया। इतने वर्षों में मुझे जो आनन्द नहीं मिला, वह मुझे इन दस दिनों के एकान्तवास और मौन में मिल गया। अब मेरी कोई जिज्ञासा नहीं रह गई।'

सच है कि मौन अवस्था में हमारी सब वृत्तियां मरती नहीं, वे प्राण के स्रोत में पहुंच कर अन्तर्मुखी होकर नव-जीवन का घूंट पीने लगती हैं। जब वे बहिर्मुखी होती हैं, तब अपने को क्षीण करती हैं, अन्तर्मुखी होकर वे शक्ति और आनन्द का स्रोत बन जाती हैं। सच है कि बोलना सीखने में समय नहीं लगता, किन्तु चुप रहना हम उम्र भर नहीं सीख पाते।

—नरेन्द्र

राष्ट्र-रक्षा.........

(पृष्ठ ४ का शेष)

(५) क्रीमिया युद्ध १८७७=२६०१४ (अंग्रेज—फ्रेंच—आस्ट्रियन)

(६) रूस-टर्की युद्ध १८७७=६५००० (रूसी टर्की)

(७) प्रथम महायुद्ध १९१४ से १९१८=४८,००,००० (जर्मन—फ्रेंच ब्रिटिश—आस्ट्रियन—इटेलियन—टर्क अमेरिकी) कुल योग ६८.८ लाख।

यह यूरोप की तत्कालीन जनसंख्या का सहस्रांश भी नहीं है। लगभग ४ हजार व्यक्ति प्रतिवर्ष का औसत है पर १५० वर्ष तक करोड़ों आदमियों ने इन युद्धों के फलस्वरूप शान्ति का जीवन बिताया है। अस्तु हमारी सैन्य तथा आयुधों की स्थिति सदा सर्वोपरि रहनी चाहिए।

आर्यनगर, ज्वालापुर (जि० सहारनपुर)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित [illegible] में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली [illegible]

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ४ : अंक ३२   रविवार ७ जून १९८१   दयानन्दाब्द १५६

लाला रामगोपाल पुनः सार्वदेशिक सभा के प्रधान निर्वाचित

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

धर्मरक्षा के लिए अखिल भारतीय अभियान चलाने का महत्त्वपूर्ण निश्चय

नई दिल्ली। आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यसमाज दीवान हाल में हुए त्रैवार्षिक चुनाव मे श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) पुनः सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिए गए। श्री शालवाले विगत कई वर्षों से इस पद पर चुने जा रहे हैं।

इस चुनाव मे भाग लेने के लिए विभिन्न राज्यों और देशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्यसमाजो के दो सौ से भी अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे। यह उल्लेखनीय है कि विदेशी शक्तियों द्वारा पैसे के प्रलोभन द्वारा देशकी पिछड़ी जातियों को विधर्मी बनाने के षड़यन्त्र को देश के कई भागों मे कार्यान्वित करने वाली घटनाओं एवं पश्चिमोत्तर सीमावर्ती राज्य पजाब में पृथक् पंजाब राज्य या खालिस्तान की मांग से उत्पन्न होने वाले संकट को देखते हुए आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा के चुनाव मे एकत्र प्रतिनिधियो और आर्य नेताओं ने जितनी एकता और सहमति दिखाई दी, उतनी पहले कभी दिखाई नहीं दी थी।

अखिल भारतीय अभियान

प्रतिनिधियों ने नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री रामगोपाल वानप्रस्थ को ही अपनी अन्तरंग सभा एवं पदाधिकारियों को चुनने का भी सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किया। सार्वदेशिक सभा ने सर्वसम्मति से निश्चय किया कि देश में विदेशी धन के द्वारा विधर्मियों के कुचक्र को नष्ट करने के लिए आर्य हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अखिल भारतीय अभियान चलाया जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव साधारण अधिवेशन ३०-३१ मई, १९८१ को आर्यसमाज दीवान हाल में सम्पन्न हुआ। ३० मई को विभिन्न प्रतिनिधि सभाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा विधानानुसार दो वीतराग सन्यासी - स्वामी ओमर स्वामी गाज़ियाबाद एवं स्वामी सर्वानन्द, दीनानगर तथा तीन प्रतिष्ठित सदस्यों के रूप में सर्वश्री पण्डित आनन्द प्रिय, भगवानदेव शर्मा एव डा हरिप्रकाश बहुसम्मति से चुन लिए गए। असफल उम्मीदवारों मे डा. सुरेश शास्त्री, झांसी, रामलाल मलिक, दुर्गादास आर्य गजट, एवं देशराज बहल उल्लेखनीय थे। विगत वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही की सम्पुष्टि एवं वार्षिक रिपोर्ट पर विचार के उपरान्त कार्यवाही समाप्त हुई।

रविवार, ३१ मई को आर्यसमाज दीवान हाल के साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त विभिन्न प्रादेशिक सभाओ से आए प्रतिनिधियो का स्वागत आर्यसमाज दीवानहाल के कर्मठ प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने किया। डा. दुःखनरामजी बिहार ने स्वागत का उत्तर दिया। इसके बाद सर्वसम्मति से लाला रामगोपालजी शालवाले वानप्रस्थ पुन तीन वर्ष के लिए प्रधान चुन लिए गए। प्रान्तीय सभाओं के प्रधानों ने सार्वदेशिक सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री लालाजी का फूलमालाओं से स्वागत किया। सर्वसम्मति से लाला जी को अपने मन्त्रिमण्डल के गठन का अधिकार दिया गया। इस अवसर पर प्रदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री मुलखराज भल्ला ने सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित गो-दुग्ध केन्द्र के लिए एक लाख रुपये अपनी ओर से देने की घोषणा की। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल ने इस कार्य के लिए ग्यारह हजार रुपये की पहली किस्त दी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विद्या प्रकाश सेठी ने ५००१) की धनराशि देने की घोषणा की।

नए पदाधिकारी

साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकारो के अनुसार सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने अपने मन्त्रिमण्डल की घोषणा इस प्रकार की —

उपप्रधान—सर्व श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् (हैदराबाद), डा. दुःखनलाल जी (बिहार), श्री मुलखराज भल्ला (प्रादेशिक सभा), श्री पृथवीसिंह आजाद (पंजाब), चौ० माडूसिंह (हरियाणा), श्री कैलाशनाथ सिंह (उ. प्र.), श्री बटुकृष्ण वर्मन (बगाल)

महामन्त्री—श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सयुक्त मन्त्री—छोटूसिंह एडवोकेट, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, उप मन्त्री श्री राज गुरु (म. प्र.), श्री विमलेश (दिल्ली) श्री जयदेव (मद्रास), श्री वासुदेव शर्मा (पटना) कोषाध्यक्ष—श्री सोमनाथ एडवोकेट।

दिल्ली-अमृतसर में राष्ट्रविरोधी मजहबी ताकतें सिर उठा रही हैं

नई दिल्ली। पिछले दिनो दिल्ली, अमृतसर तथा पजाब के दूसरे नगरो मे इस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं, जिनसे अनुभूति होती है कि कुछ राष्ट्रीय विरोधी तत्त्व देश की एकता को खंडित करने के लिए सुनिश्चित लक्ष्य से कार्य कर रहे हैं। पिछले दिनो नई दिल्ली के एक सभागार में पृथक खालसा देश के समर्थकों की एक सभा हुई। सभा मे कई वक्ताओं ने कथित ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर यह ऐलान किया कि उनका खालसा या सिख देश पृथक है। इस सभा मे देश की एकता और मातृभूमि भारत की अखंडता को प्रतिष्ठित करने वाले एकमात्र वक्ता प्रो. गोपाल सिंह को श्रोताओं ने बोलने का मौका तक नही दिया।

२७मई के दिन नई दिल्ली के एक व्यस्त बाजार में जत्थेदार जगदेव सिंह तलवण्डी के नेतृत्व मे अकालियों ने यातायात रोका। ये लोग डंडों, तलवारो, भालो, गंडासो और दूसरे हथियारो से लैस थे। ये लोग नारे लगा रहे थे-हमारा पंजाब देश अलग है, सिखों का अलग देश है। हमे खालिस्तान चाहिए। इन प्रदर्शन कारियो ने यातायात एव गाडियो पर हमला भी किया।

अब समाचार मिला है कि अमृतसर की चार दीवारी के अन्दर सिख छात्र वहां के दुकानदारो को बीडी सिगरेट बेंचने पर रोक लगाने के लिए ताकत एव हथियारों का प्रदर्शन कर रहे हैं। शहर के हिन्दू दुकानदारों के विरुद्ध छात्रों यह कार्यवाही पूर्णतया साम्प्रदायिक है। आर्य समाज के नेतृत्व मे हजारों के जन समूह ने इस प्रकार की मजहबी कार्यवाही पर रोक लगाने की मांग की है। आर्यसमाज तम्बाकू के विरुद्ध है, क्या सिख छात्र मॉस-मदिरा के विरोध में आर्यसमाज के साथ मिल कर संयुक्त कार्यवाही करने के लिए तत्पर हैं? आर्य युवको ने सिख छात्रो से अनुरोध किया फिर साम्प्रदायिक लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे तम्बाकू के विरोध के नाम पर अपना साम्प्रदायिक खेल न खेलें। यदि उन्हें तम्बाकू का विरोध करना है तो वे मास मदिरा का भी विरोध करें।

प्रेक्षको की दृष्टि मे चण्डीगढ तथा दूसरे नगरोंमें पृथक खालिस्तान की माग के पूर्ति के लिए किए गए सम्मेलनो के बाद उक्त घटनाएं सिद्ध कर रही हैं कि विदेशी शक्तियो के इशारे पर देश की अखण्डता को चुनौती देने के लिए कुछ शरारती मजहबी तत्व तुल गए दीखते हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद-मनन

उदार बनकर सौहार्द बनाए रक्खो, पाप स्वयं नष्ट हो जाएगा।

मा भेर्मा संविक्था अर्ज धत्स्वधिषणे वीड्वी सती।
वीडयेथांमूर्जं दधाथाम्। पाप्मा हतो न सोमः॥ यजु. ६-३५

ऋषि—मधुच्छन्दा। देवता—द्यावापृथिव्यौ। छन्द. भुरिगार्षी—अनुष्टुप्।

शब्दार्थ—हे राजन् (मा भेः) तू दुष्टों से मत डर, और उन्हें दंडित करने में (मा संविक्था) न्याय पथ से विचलित मत हो, (अर्जं धत्स्व) अपने अंदर आत्म बल और पराक्रम को धारण कर। हे राजन् और प्रजागण (धिषणे) परस्पर धारक बनने के लिए (वीड्वी सती) एक दूसरे को पसन्द करते हुए तथा गुणों की सराहना करते हुए (वीडयेथाम्) एक दूसरे को बलयुक्त बनाओ और स्वयं (अर्जं दधाथाम्।) प्राणशक्ति और अन्न को धारण करो। इस प्रकार के व्यवहार से (पाप्माहतः) पापी जन नष्ट होगा और (सोमः) राष्ट्र के सत्य श्रीः और ज्योति (न) नष्ट नहीं होंगे।

गृहस्थ में—(धिषणे) पति-पत्नी हैं, वे एक दूसरे को सराहेंगे और बलयुक्त बनायेंगे तो उनमें से (पाप्मा) पाप नष्ट होगा और (सोम) परस्पर का सौहार्द और आह्लाद (न) नष्ट नहीं होगा।

निष्कर्ष—१. राजा और प्रजा तथा पति और पत्नी को दुष्टजनों तथा दुष्ट भावनाओं से डरना नहीं चाहिये और कर्त्तव्य पालन से विचलित नहीं होना चाहिये।

२ परस्पर की सराहना और प्रशंसा एक दूसरे को दृढ़ बनाते हैं।

३, इस प्रकार के व्यवहार से दुष्टजन और पाप नष्ट होते हैं, और सत्य श्री और ज्योति तथा आह्लाद नष्ट होने के बजाय बढ़ते हैं।

विशेष—मन्त्रणामार्षेय छन्दो दैवतविद्—श्रेयोऽधिगच्छति। सर्वानुक्रमणी १-४

१. मधुच्छन्दा.—राजा और प्रजा तथा पति और पत्नी को परस्पर मधुर भावनाए रखकर मधुर व्यवहार करना चाहिये।

२. द्यावा पृथिव्यौ—राजा और प्रजा तथा पति पत्नी को एक दूसरे का द्यावा पृथिवी की तरह धारक और पूरक बनने का लक्ष्य बनना चाहिए।

३. अनुष्टुप्—अनुष्टुमा सोम उक्थैर्मह स्वान्। ऋक् १०-१३०-४

एक दूसरे से सन्तुष्ट रहकर, एक दूसरे को प्रसन्न करने की भावना ही परस्पर तेजस्विता उत्पन्न करती है। इस प्रकार अनुष्टुप् को साधन बनाकर परस्पर प्रशंसा के द्वारा राष्ट्र और गृहस्थ में सत्य, श्री ज्योति और सब प्रकार की समृद्धि के द्वारा राष्ट्र ने सोम महिमाशाली बनता है, शान्ति का राज्य होता है।

अर्थपोषक प्रमाण—

सोमः—सत्यं श्री ज्योतिः सोमः। शत ५-१-२-१० सर्वं हि सोमः। शत ५-५-४-११

धिषणे—धि धारणे, षणु दाने। परस्पर धारण के लिये अपने पास जो हो वह दूसरे को देने के लिए उद्यत रहना चाहिये। द्यावा पृथिवी नाम सु. नि.।

वीडु—बल नाम सु। नि. २-९ वि+ईऽस्तुतौ (सराहना व प्रशंसा करना) स्वा. दया.

मधुच्छन्दाः—मधु (मधुर)+छन्द (छद अपवारणे, छदि) अर्जने; चदि आह्लादे) एक दूसरे के प्रति मधुर व्यवहार द्वारा, परस्पर के दोषों को दूर करके बलवान बनाने तथा आह्लादित करने वाला।

अनुष्टुप्—स्तुञ् स्तुतौ, स्तुच प्रसादे, परस्पर अनुकूलता से सराहना करके प्रसन्न करने की क्रिया द्वारा।

—मनोहर विद्यालंकार

गृहस्थ परोपकार से पूर्ण जीवन बिताएं

स्वामी मुनीश्वरानन्दजी का परामर्श

आर्यसमाज सुदर्शन पार्क का ५वां वार्षिकोत्सव २१, २२, २३, २४ मई को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज की वेदकथा हुई। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से अपना जीवन यज्ञमय बनाने का अनुरोध किया। शनिवार को श्री महाशय धर्मपाल जी वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में उत्सव बड़ी शान से सम्पन्न हुआ जिसमें श्री स्वामी जी, तथा श्री सरदारी लालजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री मंगतराम जी प्रधान आर्यसमाज बसई दारापुर की वक्तृतायें हुई। आर्यसमाज कीर्तिनगर, मानसरोवर गार्डन, बसईदारापुर, मोतीनगर, न्यू मोतीनगर, रमेशनगर आदि समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

उत्सव की सफलता का श्रेय उप आर्य प्रतिनिधि सभा को ही प्राप्त है।

लोक-चिन्तन

यह देश क्या मानवता के हत्यारों का है ?

—डा० विजय द्विवेदी

यह देश कभी प्रकृति का पालना, मानवता का क्रीडास्थल माना जाता था। इस देश की शस्यश्यामला धरती हिरण्यगर्भा, वसुमती, वसुन्धरा होने के कारण ही देवताओं की प्रिय थी। देवता कहते थे—धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे। वेदों की जन्मदात्री, अवतारों की लीलाभूमि, विश्व में जो कुछ भी महानतम है उसकी उत्सवाहिका यही सर्वसहा भारत भूमि थी। आज इसी देश, इसी धरती पर ऐसे-ऐसे काण्ड हो रहे हैं, जिन्हें देख सुन और पढ़कर सिर शर्म से झुक जाता है, अन्तर्मन चीत्कार कर उठता है। नरबलि, दहेज, बलि, लूट-पाट, दंगे हंगामे, डकैती, हत्या, खून-खराबा-समाचार माध्यम ऐसी ही खबरों से पटे रहते हैं। ऐसी स्थिति में एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठ खड़ा होता है कि क्या इस देश को सुशासित—सभ्य-सुसंस्कृत देश कहा जा सकता है, क्या यह देश मानवता के हत्यारों का देश है ?

पिछले महीने उड़ीसा के केन्द्रपाड़ा जिले में खूनी चक्रवात आया। सैकड़ों लोग मरे हजारों परिवार बेघरबार हो गये। बड़े-बड़े पेड़, बिजली और टेलीफोन के खंभे, मकानों की छतें उखड़ गईं। एक महिला पत्रकार ने प्रकृति की इस विनाश लीला को देखा और आंखों में आंसू भरकर कहा—मानव जीवन तो नश्वर है, जो मर गये फिर पैदा हो जायेंगे। मकानों पर दुबारा छतें पड़ जायेंगी, घरों के आंगन में बच्चों की किलकारी भी गूंजेगी। परन्तु हाय ! पक्षियों के कलरव बहुत दिनों तक इस इलाके में न सुनायी पड़ेंगे क्योंकि गिरे हुये पेड़ धीरे-धीरे ही खड़े होंगे। इस महिला पत्रकार की शिक्षा सराहनीय है। इनकी रुचि पीड़ित मानवताकी अपेक्षा पशु-पक्षियों में अधिक जान पड़ती है। मानवता के हत्यारे केवल वे ही नहीं हैं जो खून खराबा कर रहे हैं। मानव के प्रति मानव की उपेक्षा भी—जो इस देश के शिक्षित सम्भ्रान्त व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनिवार्य अंग बन चुकी है—इस प्रकार की हत्या ही है।

नरमेध, नारीमेध, बलात्कार और सामूहिक हत्याओं वाले इस देश में पिछली ३-४ मई की रात बम्बई-हबड़ा रेलपथ पर जनता एक्सप्रेस में जो भयावह काण्ड हुआ उसने न केवल देश की कानून और व्यवस्था में सुधार होने के तर्क को आघात पहुंचाया, अपितु असामाजिक तत्वों की निरंकुशता और राजनीतिक लोगों की लोक मंगल की भावना को भी नंगा करके रख दिया। उस काली रात में शस्त्रधारी डकैतों ने, सतना और बादा के बीच उक्त गाड़ी के तीन डिब्बों में घुसकर न केवल सैकड़ों यात्रियों को लूट लिया अपितु एक यात्री महिला के साथ हजारों की आंखों के सामने बर्बरतापूर्ण ढंग से बलात्कार किया और दो महिलाओं को लूट के माल के साथ उठाकर भी ले गये। इस घटना पर टिप्पणी करते हुए बंगला दैनिक आनंद बाजार पत्रिका के सम्पादक ने लिखा है—विवरण पढ़ने से लगता है जैसे यह मध्ययुग के किसी लावारिस देश की कहानी हो। भारत एक स्वाधीन देश है, देश में एक सरकार है, रेल विभाग का कामकाज देखने के लिये अलग मंत्री है, इसके लिये सिपाही तथा सुरक्षा बल का भी अभाव नहीं है। सबसे बड़ी लज्जा की बात यह है कि ये नये डाकू पहले से सूचना देकर आए थे। तब भी न तो यात्रियों के जानमाल की रक्षा हो सकी न महिलाओं की इज्जत बचायी जा सकी। रेल मंत्री तथा रेलवे के प्रबन्धकों के चेहरे पर इस घटना से कोई शिकन नहीं पड़ी। सभी आराम से अपनी-अपनी कुर्सियों पर जमे रह कर दूसरों की ईमानदारी, नैतिकता तथा स्वच्छ प्रशासन का चरणामृत पान कराते रहे, जन हित की चिन्ता में शरीर की चर्बी गलाते रहे, किन्तु इसके लिये केवल सरकारी मशीनरी या तंत्र को ही दोष देना काफी नहीं है—हमें अपना अंतःकरण भी टटोलना होगा। अपनी समाज व्यवस्था की शव परीक्षा करनी होगी, क्योंकि शाश्वत मानव मूल्यों तथा देश के सम्मान को निर्मम आघात पहुंचाने वाले लोग हमारे बीच से, हमारे समाज से ही पैदा हो रहे हैं। वे एक निश्चित उद्देश्यतः ऐसा कर रहे हैं किन्तु उन्हें मालूम नहीं है कि उनके कुकर्मों का क्या सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व है, इससे स्वदेश 'स्वजाति, स्वधर्म की कितनी हानि हो रही है।

हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारा देश मानवता के हत्यारों का नहीं मानवता के पुजारियों का देश है। यह देश महर्षि दयानन्द का देश है जो मानवता के पथ-प्रदर्शक ही नहीं उसके आदर्श भी थे। उनके जैसा करुणावान्, क्षमाशील, उदार, साहसी और वेद-विहित पथ दिखाने वाला आधुनिक युग में दूसरा कौन महामानव है ? हमें महर्षि के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये। तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी होंगे, तभी स्वदेश, स्वजाति, स्वभाषा तथा स्वधर्म के गौरव की रक्षा करते हुये हम गर्व पूर्वक कह सकेंगे—

अस्मिन देशे प्रसूतोऽपि सकाशाद् अग्रजन्मनः
स्व-स्व चरितम् शिक्षेरन् पृथिव्याम् सर्वमानवाः।

—म. पू. च. महाविद्यालय बारीपदा (उड़ीसा) पिन—७५७००१

सुख-शान्ति की प्रार्थना

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः।

शं न इन्द्रो बृहस्पति श नो भवत्वर्यमा ॥ यजु ३६. ऋ० १ ९०

हम सब के स्नेही सबको मरण से त्राण दिलाने वाले परम पुरुष परमेश्वर शान्तिदायक हों। सर्वश्रेष्ठ सबके वरण करने योग्य एव शत्रुओ का निवारण करने वाले परम पुरुष कल्याणकारी हों। व्यापक, सर्वत्र प्रभुता मे सम्पन्न या व्यवस्थापक पुरुष हमे शान्तिदायक हो। ऐश्वर्यवान् बृहती वाणी के पालक विद्वान् पुरुष और दुःखो के नियामक न्यायकारी परम पुरुष हमें सदा सुख-कल्याण प्रदाता हो।

ओ३म्

आर्य सन्देश

युवा क्षात्र शक्ति को सन्नद्ध कीजिए

हरियाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल के महा सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण देते हुए स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने देश और जनता की सुरक्षा के लिए आर्यवीरो के संघटन की महत्ता पर प्रकाश डाला है। उन्होंने माग की कि देशी-विदेशी मत-मतान्तरो के नवीन आक्रमणो से देशवासियो के रक्षा-कार्य में आर्य वीरो की उल्लेखनीय भूमिका हो सकती है। आर्यसमाज के इतिहास मे आर्यकुमार सभाओ ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। आर्यकुमार सभाएं आर्यसमाजो की पूरक रही हैं। कही-कही तो आर्यकुमार सभाएं आर्यसमाजो से भी अधिक सक्रिय रही हैं। अब राष्ट्र की परिस्थिति देखते हुए देश की युवा क्षात्र शक्ति को संगठित और सन्नद्ध करने का समय आ गया है।

हमारी वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना मे एक ओर जहाँ अध्यात्म ज्ञान के धनी तपस्वी आदर्श ब्रह्म तेज से सम्पन्न तथा बुद्धिमान वर्ग के उत्पन्न होने की प्रार्थना की गई है, वहाँ सर्वशक्तिमान् अविनाशी प्रभु से वीरता से परिपूर्ण शस्त्र-शास्त्र मे निपुण विकट विघ्न-बाधाओं का निर्भयतापूर्वक सामना करने वाले महान् योद्धा वीरों के उत्पन्न होने की आकांक्षा करते हुए प्रार्थना की गई है—आ राष्ट्रे राजन्य. शूर-इषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम्। यह हमारा दुर्भाग्य है कि एक पीढ़ी पहले आर्य-युवको के सगठनो में जैसा उत्साह और लगन थी, वैसी आजकल देखने को नही मिल रही है। इसी के साथ एक कटु तथ्य यह भी रहा है कि स्त्री समाजो के साथ आर्यकुमारी सभाओ या आर्य युवती सभाओ का संघटन सुदृढ नही किए। गए आलोचकों का कथन है कि इस आर्यनारी युवा शक्ति की उपेक्षा का ही फल है कि आज हमारी आर्यसमाजें बूढ़ी दादियो और सासो की संस्थाएं रह गई हैं।

आज आर्यसमाज का दायित्व बहुविध है। उसे देश मे फैले भ्रष्टाचार, अनैतिकता, स्वार्थ की प्रवृत्तियों का उन्मूलन कर सच्चे आर्यत्व की प्रतिष्ठा करनी है। इसी के साथ देश-विदेशी मत मतान्तरो के आक्रमण से देश की रक्षा करनी है। आज विधर्मियों के देश में प्रसार का प्रश्न केवल साम्प्रदायिक या धार्मिक प्रश्न ही नहीं है, प्रत्युत यह निश्चय ही देश की स्वतन्त्रता और सार्वभौमसत्ता को परराष्ट्रो के हाथ में सुपुर्द करने का है। इन आसन्न सकटो से देश को बचाने के लिए राष्ट्र की युवा क्षात्र शक्ति को आज समय रहते संगठित और सन्नद्ध करना ही होगा। इस दिशा में आर्यकुमार सभाओ का संगठन एक उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत कर सकता है।

नैतिक शिक्षा अनिवार्य हो !

देश की राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश में प्रचलित शिक्षाप्रणाली की कई त्रुटियों के साथ एक सबसे बड़ी कमी उभर कर आई है, वह है उसमें नैतिक या धार्मिक शिक्षा का अत्यन्त अभाव। धर्म उन शाश्वत सत्य नियमो का नाम है जिनके आधार पर परिवार,समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व एवं मानवीय प्रजा का धारण किया जाता है। सच्चा धर्म कहता है कि केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहो, सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझो। व्यक्ति परिवार, समाज राष्ट्र, मानवता के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करे। संसार में जहा तक इन्सानियत-मानवता का धर्म है—वह विश्व का एक धर्म है, वही सनातन है, वही वैदिक है, दूसरी ओर मत-मजहब मनुष्यो ने चलाए हैं, इसलिए सर्वोत्तम यही है कि प्रत्येक छात्र को बचपन से ही सच्चे मानव धर्म की सीख दी जाए। इसे दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि नैतिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।

भारतीय शैक्षिक अनुसन्धान एव प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् ने अपने एक अध्ययन के फलस्वरूप सूचना दी है कि इस समय भारत के नौ राज्यो तथा एक केन्द्र शासित इकाई के पाठ्यक्रम मे नैतिक शिक्षण की व्यवस्था है। इन राज्यों में नैतिक शिक्षा का कोई निर्धारित कार्यक्रम प्रचलित नही है, परन्तु उन राज्यो में प्रचलित शिक्षण सस्थाओ मे कुछ समानता उल्लेखनीय है। इन राज्यो के नैतिक शिक्षण पाठ्यक्रम मे सभी धर्मों के प्रति समान आदरभाव, एक नागरिक के लिए उपयुक्त गुणो के विकास, देशभक्ति की भावना जाग्रत करने, माता, पिता और गुरुजनों के प्रति सम्मान उत्पन्न करने, सद्व्यवहार, न्याय, सच्चाई और ईमानदारी आदि के गुणो के विकास पर बल दिया जाता है। उक्त अध्ययन से इस तथ्य पर भी प्रकाश पडा है कि देश मे प्रचलित शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य परीक्षाओ मे उत्तीर्ण होना है और नैतिक शिक्षा में उत्तीर्ण होने में बाध्यता न होने से इसकी महत्ता नहीं रह गई है।

देश मे आज स्वार्थ, स्वेच्छाचार, भ्रष्टाचार का बोलबाला है। देश में अव्यवस्था एव दुरवस्था का अन्त करने के लिए नैतिकता की पुन प्रतिष्ठा होनी चाहिए। राष्ट्रीय जीवन मे नैतिकता या सच्ची इन्सानियत या मानव धर्म की प्रतिष्ठा करने के लिए शिक्षा क्षेत्र मे नैतिक या धार्मिक शिक्षण अनिवार्य होना चाहिए। नैतिक शिक्षा के अध्ययन के अभाव मे युवा वर्ग से इन गुणो की अपेक्षा करना व्यावहारिक नही है।

—o—

चिट्ठी-पत्री

चुनाव सम्बन्धी शिकायतें : पत्रों पर पूरे नाम-पते लिखे जाएं

एक आर्य सज्जन लिखते हैं—'एक प्रतिष्ठित समाज का वार्षिक चुनाव बिना कोरम के सम्पन्न हुआ। समाज के कुल ११४ सदस्यो मे केवल २६ ही उपस्थित थे। इतना ही नहीं, इस चुनाव सभा मे दो ऐसी महिलाएं उपस्थित थी जो समाज की सदस्या भी नही थी फलतः सारी कार्यवाही अवैध और गैर कानूनी है।'

आर्य-बन्धुओ से सभा-प्रधान के नाम कुछ पत्र (जिसमे से एक पत्र का एक अंश प्रकाशित किया गया है।) प्राप्त हो रहे हैं, जिनमे विशिष्ट आर्यसमाजो के निर्वाचन के विषय मे आपत्तियाँ की गई हैं, परन्तु पता लिखने वाले अपने नाम व पते नही लिखते। ऐसे महानुभावों की सूचनार्थ निवेदन है कि जो सज्जन अपने नाम पते दिए बिना शिकायत करेंगे, उन पत्रो पर कोई कार्यवाही नही की जाएगी, इसलिए पत्र भेजने वाले अपने पूरे नाम व पते पत्र पर अवश्य लिखेंगे।

—सरदारीलाल वर्मा

प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

सोमरस की उपयोगिता एवं प्राप्ति

'आर्य सन्देश' के ३ मई के अक मे श्री प. मनोहर जी विद्यालकार का सोम की महत्ता' लेख बहुत खोजपूर्ण और ज्ञानवर्द्धक है। अगर विद्वान् लेखक आज के परिप्रेक्ष्य में सोमरस की उपयोगिता, प्राप्ति के साधन, ओषधि या बूटी के गुणदोष इत्यादि पर भी प्रकाश डाल सकें तो कृपा होगी। 'सोम' के साथ 'मद' के प्रयोग को कई वेदमन्त्रो मे देख इसे एक प्रकार का मद्य समझने लगते हैं। आज इस नाम का बहुत दुरुपयोग हो रहा है। आयुर्वेद इत्यादि की दृष्टि से भाई मनोहरजी इस पर भी आर्यसंदेश के माध्यम से प्रकाश डाल सके तो लाभ होगा।

—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार,

ई—३७, शास्त्रीनगर, जयपुर (६)

मैं अभय बनूँ

अभयं मित्रादभयममित्रात् अभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

(मित्रात्) मित्र से मुझे भय न हो (अमित्रात्) अमित्र से (अभय) अभय हो (ज्ञाताद् अभय) जो मालूम हो गया है उससे भय न हो और (य) जो (पुरः) आगे आने वाला है, उससे (अभयम्) अभय हो। (न नक्तम् अभयं) हमे रात में भी अभय हो (दिवा अभय) दिन मे भी अभय हो (सर्वा आशा) सब दिशाए, सब दिशाओ के वासी प्राणी (मम मित्र भवन्तु) मेरे मित्र हो जाये, मेरे मित्र रूप रहे।

इस मत्र में भय से बचने की प्रार्थना की गई है। भय क्या है? कभी सोचा है आपने? भय का मतलब है कि आप ईश्वर पर विश्वास नही करते। आप नास्तिक हैं। यदि आप ईश्वर पर विश्वास करते तो सर्व शक्तिमान् प्रभु के विद्यमान रहने पर भय होता ही क्यो?

भय पैदा कैसे होता है? कही से किसी अनहोनी बात की सम्भावना आपके मन मे आ घुसती है, धीरे-धीरे उसका साफ नक्शा आप अपने सामने देखना शुरू कर देते हैं और फिर उससे डरने लगते हैं। आप मे उसका प्रभाव अपने शरीर पर अनुभव होने लगता है? लगता है दिमाग खाली होता जा रहा है, पसीना छूटने लगता है, पैरो में कमजोरी आ जाती है, पेट मे मीठा-मीठा दर्द होने लगता है और विचार तरतीब से नहीं जुट पाते कटे पतग की तरह इधर-उधर उडते रहते हैं और डर की इस प्रतिक्रिया की समाप्ति के बाद तो और भी बुरी गति होती है। आप अपने डर के सिवाय कुछ सोच भी नही पाते।

एक कहानी कही पढ़ी थी। एक डाकू था जिस पर कई हत्याओं के अभियोग थे और वह आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा था। एक दिन अचानक वह जेल के दरवाजे के पास बने जेल के पहरेदार के कमरे मे पहुचा और पहरेदार तथा उसके साथियो की ओर पिस्तौल तानकर बोला—'हाथ ऊपर उठाओ।'

उस पहरेदार और उसके साथियो ने उसे खतरनाक आदमी समझकर उसके आदेश का पालन किया। उसने उनसे चाबियो का गुच्छा ले लिया तथा सरदार को छोड़कर सबको जेल की कालकोठरी मे बन्द कर आया। सरदार से उसने कहा जेल का फाटक खोलो और मुझे सरकारी मोटर मे शहर ले चलो। सरदार उसे लेकर जेल के फाटक के बाहर निकला, जहां जेलर पेडों के नीचे टहल रहा था। जेलर ने एक कैदी को सरदार के साथ सरकारी गाडी मे जाते देखा तो उसे कोई सन्देह नही हुआ। उस समय डाकू ने पिस्तौल कपडो के नीचे छिपा रखा था पर वह तनी सरदार की ओर थी।

कुछ मील जाकर डाकू ने सरदार को मोटर के नीचे उतार दिया। स्वय मोटर चलाने लगा। उसने मोटर के चलते ही हंसकर सरदार को नमस्ते की और अपनी पिस्तौल उसके सामने फेंक दी। सरदार जब होश मे आया तो उसने देखा कि वह पिस्तौल तो लकडी की थी। यह डाकू ने जेल मे बना ली थी। इस नकल ने असल का काम किया।

इसी प्रकार भय लकडी की नकली पिस्तौल है। हमारा भय और निराशाये लकडी की पिस्तौल की छलना हैं। और हम इन छलनाओ की वास्तविकता को पहचानते नही है। इससे भय मे इतनी शक्ति आ जाती है कि हमे वे कि कर्तव्य विमूढ बना देते है।

इसीलिए मंत्र कहता है 'मुझे मित्र से भय न हो, मुझे अमित्र से भय न हो। मुझे मेरे सामने रहने वाले से भय न हो और परोक्ष मे रहने वाले से भी मैं न डरू। मुझे रात मे डर न हो और मुझे दिन मे भी डर न हो। ससार के सभी पदार्थ और प्राणी मेरे मित्र हो।'

एक मनोविज्ञान की पत्रिका मे एक लड़की की कहानी पढी थी। लड़की को—जिसकी आयु केवल ५ वर्ष की थी—रात मे वह स्वप्न देखती है और इतनी डर जाती है कि उसका प्रभाव उसके अगले दिन के कार्यक्रम पर पड़ता है और कमजोर होती चली जाती है।

एक बार उसके माता पिता उसे लेकर डाक्टर के यहाँ गए और डाक्टर ने सपने की बात सुनकर कहा "अरे, मेरे सपने मे भी तो यही शेर आता है। पहले मैं भी उसे देखकर डर जाया करता था पर मुझे पता चला कि वह बहुत भला शेर है। वह लोगो से खेलना पसन्द करता है। वह तुमसे खेलने के लिए ही तो तुम्हारे सपनों में आता है। उसमे दोस्ती करो तो वह तुमसे प्रेम करने लगेगा—खेलने लगेगा।

उस दिन रात को सपने के बाद थोड़ी देर के लिए तन-सी गई और जोर-जोर से सांस लेने लगी। परन्तु, हमेशा की तरह वह चौंकी नही और उसके ओठों पर मुस्कराहट दौड़ने लगी। बच्ची के हृदय का शेर का भय निकला गया और शेर से उसकी दोस्ती हो गई। सत्य तो यह है कि समस्यायें हमे भय से कपाती रहती हैं परन्तु वे सपने के शेर से भी अधिक निरापद हैं। जब हम उन्हें उस दृष्टिसे देखने लगेंगे और उनसे मैत्री स्थापित करना शुरू कर देंगे तो हमारी समस्याओ को हमे नुक्सान पहुचाने की शक्ति चली जाएगी और उनसे हमें लाभ भी होने लगेगा।

इसलिए भय पर विजय प्राप्त करने का सरल उपाय यह है कि आप मित्रता का क्षेत्र बढाइए और अपने भय से भी मैत्री कीजिए। उसके विषय मे लोगो से बात कीजिए और जब वह सामने आए तो उसका स्वागत कीजिए और कहिए "न तो तुम मेरे प्राण ही ले सकते हो, न मैं तुम्हारी वजह से पागल ही हुआ जा रहा हूं। तुम केवल एक मानसिक विचार हो जो परमेश्वर में अविश्वास के कारण मुझमें आ गया है। चले जाओ। बाहर मत रहो। अब मैंने परमेश्वर को आपने हृदय मे रख लिया है और उसके प्रकाश और दीप्ति के सामने तुम्हारा निर्बल रूप मुझे स्पष्ट दीखने लगा है। मैं तुमसे डरूंगा नही। मैं तो अपने अतर्यामी से कहूंगा, हे मेरे अंतर्यामिन् मुझमें ऐसा ज्ञान प्रदीप्त करो कि मेरे सब भय हट जाए। ऐसा बल दो कि अंधकार हो या प्रकाश, विपत् हो या संपत्, अनुकूलताएं हो या प्रतिकूलताएं इन सब दशाओ में मैं निर्भय रह सकूं। संसार में मुझे किसी भी दिशा में और दशा मे गम न हो।

अब अधिक न हो प्राणी निराश
हो जाय सबका क्लेश नाश,
हे देव! करो उन्मुक्त भय,
जाते हैं करने हम प्रकाश!

लेखक :
सुरेशचन्द्र वेदालंकार

१७५ जाफरा बाजार, गोरखपुर

जीवन की सर्वोच्च साधना

नदी की एक सूखी तलहटी थी। कंकड़-पत्थरों मे हीरा-माणिक खोजने वाला खोजी थकान से शान्त-क्लान्त हो गया था। वह अत्यन्त परेशान होकर अपने साथियो से बोला—'मैं अपनी इस खोज से पूरी तरह निराश हो गया हूं। कई दिनों की निरन्तर मेहनत से मैंने निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे पत्थर बटोर लिए होगे, परन्तु मुझे अपने ढेर में हीरे-माणिक का एक कण भी नहीं मिला।'

उसके एक साथी ने हसकर कहा—'भाई, एक पत्थर बटोर लो। अपने पत्थरों की गिनती पूरी एक लाख कर लो। शायद उसी मे तुम्हारा अरमान पूरा हो जाए।'

निराश साथी ने एक पत्थर और उठा लिया। वह दूसरे पत्थरों से अधिक भारी था। उस चमकीले पत्थर को देखकर वह चिल्लाने लगा—दोस्तो, यह तो वाकई में हीरा है। असल मे हमें हीरो की खान मिल गई है।'

लोकमान्य बाल गगाधर तिलक जीवन-यज्ञ मे अनवरत प्रयास की निरन्तर आहुति देने में ही जीवन की सफलता अनुभव करते थे। उन्होंने लिखा था—'संसार में एक ही वस्तु को मैं परम पवित्र मानता हूं, वह है अपनी प्रगति के लिए मनुष्य का अनवरत प्रयास। मानव-मात्र के प्रति निश्छल प्रेम-भाव रखते हुए और ईर्ष्या-द्वेष आदि भावनाओ की कलुषित छायाओं से दूर रह कर निष्काम भाव से अमरत रहने की भावना ही जीवन की सर्वोच्च साधना है।'

—नरेन्द्र

सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश देश भर में पहुंचाया जाएगा

उदयपुर में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी के अवसर पर दिल्ली से विशेष आर्य स्पेशल की व्यवस्था : यात्रा कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

नई दिल्ली । आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १६-१७-१८ अक्तूबर, १९८१ के दिनों मे अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी का आयोजन किया गया है । इस विशेष समारोह के उपलक्ष्य में सत्यार्थप्रकाश का संदेश भारत के कोने-कोने मे पहुचाने तथा देश के प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों को देखते हुए उक्त शताब्दी समारोह मे सम्मिलित होने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली के तत्वावधान में २१ सितम्बर १९८१ के दिन दिल्ली जंक्शन से गत वर्ष की तरह एक आर्य स्पेशल ट्रेन चलाने की व्यवस्था की गई है ।

इस आर्य स्पेशल ट्रेन के लिए यथोचित सहयोग देने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, सभा—कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तराय खन्ना तथा स्पेशल ट्रेन के प्रबन्धक श्री दीनानाथ गुप्ता तथा सहायक प्रबन्धक श्री प्राणनाथ घई ने आर्य जनता से एक विशेष पत्रक द्वारा अपील प्रसारित करते हुए स्पेशल ट्रेन का निम्न ब्योरा दिया है—

दिल्ली से आने-जाने के मार्ग-व्यय में—रास्ते का भोजन, चाय, चिकित्सा एव नेपाल-काठमाण्डू, सिक्किम, दार्जीलिंग, माउण्ट आबू एवं टंकारा आदि पर्वतीय एवं दर्शनीय स्थानों तक बसों द्वारा दिखाने का किराया भी सम्मिलित है । प्रथम श्रेणी का २१२०) तथा टू टायर का द्वितीय श्रेणी का किराया १२२० रुपए तथा थ्री टायर द्वितीय श्रेणी का किराया १०२० रुपए प्रति व्यक्ति होगा । प्रत्येक यात्री को सोने की सीट उपलब्ध होगी ।

रेलवे पास होल्डर एव एल. टी. सी. वाले इस स्पेशल ट्रेन में यात्रा कर सकेंगे । रेलवे पास होल्डरों को भोजन तथा बसों आदि के किराये के लिए निम्न राशि जमा करानी होगी—क. प्रथम श्रेणी १०७० रुपए ख. टू टायर द्वितीय श्रेणी—९५०रुपए ग. थ्री टायर द्वितीय श्रेणी—७५० रुपए । रेलवे पास होल्डर स्पेशल ट्रेन के प्रोग्राम के अनुसार पास की संख्या के बारे में हैड आफिस नार्दन रेलवे, बड़ौदा हाउस से सम्पर्क स्थापित करें ।

दिल्ली से बाहर के आने वाले यात्री चैक न भेजकर केवल नकद या दिल्ली के किसी बैंक का ड्राफ्ट—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, ११०००१ के पते पर भेजें । स्पेशल ट्रेन के लिए अग्रिम धनराशि रेलवे अधिकारियों के पास जमा करवानी होती है, इसलिए यात्रियों से अनुरोध है कि वे शीघ्र से शीघ्र—अधिक से अधिक १५ जुलाई, १९८१ तक पूरे पते के साथ अपनी धनराशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली—११०००१ मे जमा करवा कर अपनी सीटें सुरक्षित करवा लें । यात्रियो से प्रार्थना है कि आरक्षण के लिए अपने प्रार्थना पत्र स्थानीय आर्यसमाजो के मंत्री एवं प्रधान द्वारा प्रमाणित कर भिजवाए । द्वितीय श्रेणी मे सीटों का आरक्षण टू टायर एव थ्री टायर की उपलब्धि के अनुसार किया जाएगा । अभी इस श्रेणी के यात्रियो की बुकिंग अस्थायी रूप से की जाएगी ।

यात्रा के कार्यक्रम मे परिवर्तन का पूरा अधिकार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को होगा । आर्य स्पेशल ट्रेन मे धूम्रपान, मदिरा, मांस, अंडा आदि का प्रयोग बिल्कुल निषिद्ध होगा ।

आर्य स्पेशल ट्रेन के विषय मे विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली (दूरभाष—३१०-१५०, ३१११८०) दीनानाथ गुप्ता, प्रबन्धक स्पेशल ट्रेन एच ४०२; नारायणा, नई दिल्ली—११००२८ (दूरभाष—५३५७०२) अथवा श्री प्राणनाथ घई, सहायक प्रबन्धक, डी—५, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली—११००४८ (दूरभाष—६३६०२१) से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है ।

आर्य स्पेशल ट्रेन का कार्यक्रम

आर्य स्पेशल ट्रेन २१ सितम्बर को सायंकाल ४ बजे दिल्ली जंक्शन से रवाना होगी । यह आगरा फोर्ट पर २२ सितम्बर को प्रातः ४ बजे पहुचेगी । दिन भर आगरा के दर्शनीय स्थान देखने के बाद यह गाड़ी रात को ९ बजे कानपुर के लिए रवाना होगी । प्रातः ८ बजे गाड़ी कानपुर पहुंचेगी । यह गाड़ी २३ सितम्बर को रात के १२ बजे तक लखनऊ के लिए रवाना होगी, दो घंटे मे रात को २ बजे लखनऊ पहुंच जाएगी । २४ सितम्बर को रात के ८ बजे उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ से स्पेशल चलेगी और वह पूर्वी उत्तरप्रदेश के नगर गोरखपुर २५ सितम्बर को प्रातः ६ बजे पहुंचेगी । गोरखपुर से शाम को ६ बजे रवाना होगी । रेल २६ सितम्बर को प्रातः ५ बजे रक्सौल पहुचेगी ।

२६ सितम्बर को प्रात १० बजे बस द्वारा रवाना होकर यात्री शाम को ७ बजे नेपाल की राजधानी काठमाण्डू पहुचेंगे । डेढ दिन के प्रवास के बाद २८ सितम्बर को प्रातः १० बजे बस द्वारा काठमाण्डू से रवाना होंगे और शाम को ७ बजे रक्सौल पहुंच जाएंगे । इसी दिन रात्रि को ११ बजे रक्सौल से रवाना होकर २९ सितम्बर को दोपहर तीन बजे सिलीगुडी पहुचेंगे ।

सिलीगुडी मे बस द्वारा १० बजे ३० सितम्बर को प्रात चलकर पर्वतो की रानी दार्जीलिंग दोपहर दो बजे पहुचेंगे । १ अक्तूबर को प्रात. ६ बजे दार्जीलिंग से बस द्वारा रवाना होकर दोपहर १ बजे सिलीगुड़ी पहुंचेंगे । दोपहर दो बजे बस द्वारा सिक्किम (गगटोक) के लिए रवाना होंगे और रात को ८ बजे वहा पहुंच जाएंगे । अगले दिन २ अक्तूबर को गांधी जयन्ती के दिन दोपहर २ बजे बस द्वारा सिक्किम से रवाना होकर रात्रि को ७ बजे सिलीगुड़ी लौट आएंगे ।

सिलीगुड़ी से २ अक्तूबर के ही दिन रात्रि को ११ बजे स्पेशल रवाना होगी और वह सोनपुर के प्रसिद्ध स्थान पर ३ अक्तूबर को प्रातः ११ बजे पहुचेगी । यहां से दोपहर के दो बजे रवाना होकर रात मे ८ बजे गोरखपुर वापस आयेगी । यहा से रात को १२ बजे रवाना होकर ४ अक्टूबर को प्रात ८ बजे सीतापुर पहुचेगी । सीतापुर से ४ अक्टूबर को रात मे १० बजे रवाना होकर ५ अक्टूबर को प्रातः चार बजे स्पेशल बरेली पहुंचेगी । दिन भर बरेली के दर्शनीय स्थान देखने के बाद ५ अक्टूबर को रात्रि १० बजे स्पेशल वृन्दावन के लिए रवाना होगी । और वह अगले दिन ६ अक्टूबर को प्रात. चार बजे वृन्दावन पहुच जाएगी ।

वृन्दावन-मथुरा कृष्ण की लीला स्थली है । मथुरा गुरु विरजानन्द की तपो भूमि है । यहा से ६ अक्टूबर को दोपहर एक बजे रवाना होगी और शाम को ४ बजे भरत पुर पहुच जाएगी । इसी दिन रात को ११ बजे भरत पुर से रवाना होकर स्पेशल ट्रेन राजस्थान की राजधानी जय पुर ७ अक्टूबर को प्रात ४ बजे पहुंच जाएगी । दिन भर जय पुर के व्यस्त कार्यक्रम के बाद रात १० बजे जयपुर से रवाना होकर ८ अक्टूबर को प्रातः ६ बजे जोध पुर पहुंचेगी । इस ऐतिहासिक नगर के परिभ्रमण के बाद ८ अक्टूबर को रात के ९ बजे स्पेशल जोधपुर से चल कर ९ अक्टूबर को प्रात. ४ बजे आबूरोड पहुंचेगी । उसी समय बसों द्वारा माउण्ट आबू के लिए रवाना होंगे ।

माउण्ट आबू के दर्शनीय स्थानों में परिभ्रमण के बाद दोपहर १२ बजे वापसी बस यात्रा से १ बजे तक माउण्ट रोड लौट आएंगे । ९ अक्टूबर को शाम ४ बजे स्पेशल गुजरात के प्रसिद्ध नगर पोरबन्दर के लिए रवाना होगी, अगले दिन १० अक्टूबर को सुबह आठ बजे यहां पहुच जाएंगे । पोरबन्दर से ११ अक्टूबर को रात २ बजे श्री कृष्ण की लीला भूमि द्वारिका सिटी के लिए प्रस्थान करेंगे और वहा प्रातः ८ बजे पहुंच जाएंगे । द्वारिका सिटी से दोपहर २ बजे रवाना होकर दोपहर ३बजे तक ओखा पहुचेंगे । ओखा से रात के१० बजे रवाना होकर रात को तीन बजे जामनगर पहुंचेंगे, जामनगर से दोपहर १२बजे रवाना होकर रात को ७ बजे राजकोट पहुचेंगे । १३ अक्टूबर को प्रात ८ बजे राजकोट से रवाना होकर महर्षिदयानन्द की जन्मभूमि टंकारा बसो द्वारा जाएंगे, वहा प्रात. ९ बजे पहुच जाएंगे । दोपहर दो बजे टंकारा से रवाना होकर बसों द्वारा ३ बजे तक राजकोट पहुच जाएंगे । राजकोट से रात के १२ बजे स्पेशल चलेगी वह १४ अक्टूबर को प्रातः ५ बजे वीरावल पहुचेगी । १६ अक्टूबर को शाम के ४ बजे वीरावल से चलकर १५ अक्टूबर का प्रात. ४ बजे स्पेशल गुजरात के महानगर अहमदाबाद पहुचेगी । यहां से शाम को ४ बजे रवाना होकर स्पेशल अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह के स्थान उदयपुर १५ अक्टूबर को रात के १२ बजे पहुचेगी ।

१५ से १८ अक्टूबर तक सत्यार्थप्रकाश शताब्दी कार्यक्रम में भाग लेने के बाद स्पेशल १८ अक्टूबर को रात के १२ बजे उदयपुर से रवाना होगी, वह १९ अक्तूबर को प्रातः ४ बजे राजस्थान के प्रसिद्ध नगर चित्तौडगढ़ पहुंचेगी । यहां से प्रातः ११ बजे रवाना होकर १९ अक्तूबर को शाम के ६ बजे ब्यावर पहुचेगी । २० अक्तूबर रात के १ बजे ब्यावर से चलकर स्पेशल महर्षि की निर्वाणस्थली अजमेर प्रात. ३ बजे पहुंचेगी । २० अक्तूबर को रात के १० बजे स्पेशल अजमेर से चलकर २१ अक्तूबर को प्रात ५ बजे अलवर पहुंचेगी । इसी दिन दोपहर को १ बजे अलवर से रवाना होकर शाम के ५ बजे स्पेशल ट्रेन वापस दिल्ली जंक्शन लौट आएगी । □

श्री रामवक्षलाल चिरायु हों !

चम्पारण-बेतिया-बिहार के आर्यनेता एवं सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य श्री रायवक्ष लाल जी चिरायु हो, वह लम्बी उम्र तक आर्य जाति और देश की सेवा करते रहें । खेद है कि १७ मई, १९८१ के 'आर्य संदेश' मे उनके देहावसान का भ्रामक समाचार छप गया था । उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हुआ है । इस भूल के लिए हमें खेद है ।

'मैं स्वामी दयानन्द का पक्का चेला हूं'

—स्वातंत्र्यवीर सावरकर

गतांक से आगे—

चक्की, कोल्हू इत्यादि में काम का उत्पादन कम होने पर पहली बार एक सप्ताह की हथकड़ी, दो बार अपराध करने पर एक सप्ताह की हथकडी और ४ दिन का भूखा रखनेवाला भोजन तीसरी बार का दंड एक या दो मास के लिए पैरो में बेड़ियाँ अथवा दोनों टाँगो में क्रासबार जिससे दोनो टाँगे सदा अलग-अलग रहे, फिर जुर्म करने पर बेड़ियाँ सहित छह मास अधिक की तनहा कैद। भोजन ऐसा गन्दा कि पशु भी उसे न खाए। गणेश सावरकर और विनायक सावरकर दोनो भाई इस जेल में रहे पर एक बार भी वे आपस मिल न सके। इन अत्याचारो से तंग कुछ क्रान्तिकारी काला पानी कैदियों ने आत्म हत्या कर ली। कुछ शोर मचा पर गोरी सरकार ने एकदम दबा दिया।

सावरकर बंधुओ के साथ ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए इस बर्बर अत्याचार से देश के हजारों युवक-युवतियो को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। भारत की आजादी के संग्राम के साथ सावरकर बंधुओ का नाम और वलिदान अमर रहेगा।

काला पानी से मुक्ति · गांधी-हत्या में पुन: कैद

सावरकर १९१० से १९२१ तक काला पानी जेल मे रहने के बाद, वहाँ से महाराष्ट्र के रत्नागिरि जेल मे १९३७ तक नजरबन्द रहे। १९३७ में देश के अनेक प्रदेशो मे जब कांग्रेस शासन स्थापित हुआ, तब सारवकर को रत्नागिरि से मुक्त कर दिया गया। ३० जनवरी, १९४८ के दिन गांधी जी की हत्या मे सम्मिलित होने के केस में बंदी बना फिर फँसाया गया। सावरकर जी ने अपने ५० पृष्ठों के बयान में अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि गांधीजी की नीतियो और विचारो के साथ गहरा मतभेद होने और उनका कटु आलोचक होने पर भी उनकी हत्या के साथ मेरा दूर का भी संबन्ध नहीं है।' १० फरवरी १९५९ को न्यायाधीश आत्माचरण ने ससम्मान निरपराध घोषित कर मुक्त कर दिया।

मेरे जीवनकाल में मेरा लक्ष्य पूरा हो गया।

१९५७ में समस्त देश में १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के उपलक्ष्य में दिल्ली में मनायी गयी प्रथम शताब्दी के अवसर पर वीर सावरकर ने अपने अभिनन्दन के उत्तर में विशाल जन सभा मे कहा था—"आज तक जिस व्यक्ति ने मेरा साथ दिया है, उसे काला पानी, निर्वासन या फांसी मिली है। इससे अधिक मैं किसी को कुछ दिला भी नही सकता। मुझे तो इसी बात की प्रसन्नता है कि मेरे जीवन मे ही मेरा जीवन लक्ष्य पूरा हो गया। अंग्रेज यहां से चला गया और भारत स्वतंत्र हो गया। देश की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखना और इसे समृद्धि के शिखर पर पहुंचाना हम सबका काम है। जहाँ तक मेरा संबंध है मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे अपने भाग्य पर कोई पश्चात्ताप नही है।

आर्यसमाज के आन्दोलन में सावरकर जी

शोलापुर के आर्य महासम्मेलन में हैदराबाद सत्याग्रह का निर्णय किया गया था। सावरकर जी उसमे सम्मिलित हुए थे, खूब प्रोत्साहन दिया और सत्याग्रह प्रारम्भ होने पर इस धर्मयुद्ध मे उनका पूरा सक्रिय सहयोग और आशीर्वाद रहा। सिंध में सत्यार्थ प्रकाश" के १४ वें समुल्लास पर लगाई गई जप्ती के विरुद्ध भी सावरकर जी ने जोरदार आवाज उठाते हुए आर्य समाज के आन्दोलन मे सोत्साह भाग लिया।

आर्यसमाज का संस्मरण

इसी प्रसंग में हम एक संस्मरण का उल्लेख करना चाहते हैं। हिंदू महासभा के अध्यक्ष के रूप मे वीर सावरकर १९३८ मे अमृतसर पधारे थे। उन दिनों हम अमृतसर रहते थे और आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार वहा की मुख्य समाज के प्रचार मंत्री के पद पर थे। कुछ मित्र और सहयोगियों के साथ उनसे मिले और समाज के कार्य कलापों का वर्णन जब उन्हें सुनाया, बहुत प्रसन्न हुए। हमारे विशेष अनुरोध पर सावरकर जी आर्य समाज मंदिर मे पधारे और अपने भाषण मे महर्षि दयानन्द की विशेष श्रद्धा और निष्ठा से प्रशंसा करते हुए बोले—हिन्दू जाति की रक्षा और राष्ट्र सेवा में स्वामी दयानन्द से लेकर आज तक जितने बलिदान त्याग, उत्सर्ग आर्य समाज ने किये हैं, देश की अन्य किसी संस्था ने नहीं किए।

स्वातंत्र्य वीर का महाप्रयाण, अन्तिम आकांक्षा

जनवरी १९६५ के ताशकन्द समझौते मे सावरकर जी के हृदय को इतना गहरा धक्का लगा कि २६ फरवरी, १९६६ को उनका इस संसार से महाप्रयाण हो गया। उनकी अन्तिम आकांक्षा यह थी—

"मेरी मृत्यु पर किसी तरह की हड़ताल या छुट्टी करके दैनिक कार्य का कहीं भी किसी प्रकार भी हर्ज न किया जाए। सब यात्रा का भारी भरकम जलूस भी न निकाला जाए। वेद मंत्रों के साथ बिजली के शवदाह मैशीन में शरीर भस्म कर अन्त्येष्टि पूरी कर ली जाए। इसके बाद पिंड दान या श्राद्ध जैसी कोई क्रिया न हो।

लेखक : आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार
ई।३६ शास्त्री नगर जयपुर

श्री अमरनाथ शर्मा का देहावसान

आर्यसमाज सुदर्शन पार्क के प्रतिष्ठित सदस्य श्री अमरनाथ शर्मा का २२-५-८१ को निधन हो गया। सभी समाज के अधिकारियों व सदस्यो ने गायत्री जाप के उपरान्त २ मिनट का मौन रखा और ईश्वर से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा परिवार को शान्ति-प्राप्ति की प्रार्थना की।

—मंत्री आर्यसमाज सुदर्शनपार्क

आर्यनेता लाला हरिवंश जी का देहावसान

प्रसिद्ध आर्यनेता लाला हरवंश जी का देहावसान २१ मई को हो गया। उनके पार्थिव शरीर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रधान तथा आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, शुद्धि सभा के महामन्त्री श्री द्वारकानाथ सहगल आदि ने तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने पुष्पमालाएँ अर्पित की। आर्यसमाज चूनामंडी के प्रधान श्री प्रीतमदास और सभा-मंत्री श्री श्यामलाल आदि ने मार्ग में पुष्पमालाएं अर्पित कीं। श्मशान-यात्रा एवं श्रद्धांजलि सभा हजारों में शोक सन्तप्त आर्य जनों ने अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

भारतीय शुद्धि सभा बिरला लाइन्स, आर्यसमाज चूनामंडी के भवन निर्माण मे श्री हरिवंश जी के योगदान की श्री रामनाथ सहगल ने चर्चा की।

लाला जी का चौथा रविवार २४ मई के दिन आर्यसमाज चूनामंडी में सम्पन्न हुआ। आर्यसन्देश परिवार की ओर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को भगवान सद्गति देंगे और शोक सन्तप्त परिजनों को हार्दिक सान्त्वना देंगे।

आर्यसमाजों के सत्संग

७ जून, ८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं० ईश्वरदत्त एम.ए; अमर कालोनी—डा०—रघुनन्दन सिंह; अशोक विहार के-सी-५२-ए—प. ओमवीर शास्त्री-७ आर्यपुरा—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी; आर के पुरम सैक्टर ६—प० केशव चन्द—मुन्जाल; आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक; किंग्जवे कैम्प—प० रामरूप शर्मा; कालका जी—आचार्य कृष्ण गोपाल; कालका जी डी डी ए फ्लैटस एल-१।१४३-ए—प० अशोक कुमार विद्यालंकार; करोल बाग—का० महेश विद्यालकार, गांधी नगर—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; गीता कालोनी—पं० राम देव शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प० वेदपाल शास्त्री; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—प० गणेश दत्त वानप्रस्थी; जगपुरा भोगल—आचार्य रामशरण मिश्रा; जनकपुरी सी-३—पं० रामदेव शास्त्री, जनकपुरी बी ३।२४—प० छज्जूराम शास्त्री; टैगोर गार्डन—पं० खुशीराम शर्मा; तिलक नगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; देव नगर—पं० वीर पाल विद्यालकार; नारायण विहार—प्रो० सत्य पाल बेदार; नया बांस—डा० रघुवीर वेदालंकार; निर्माण विहार—आचार्य हरिदेव सि० भू०; पंजाबी बाग—प० हरिदत्त शास्त्री वेदाचार्य; पश्चिम पुरी जनता क्वाटर्ज—प० ओमपकाश भजनोपदेशक; बाग कडे खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—कविराज बनवारी लाल शादा—भजन मण्डली; बिरला लाइन्स—पं० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; मोडल बस्ती—डा० देवेन्द्र द्विवेदी; मोतीबाग—प० सत्यभूषण वेदालंकार; राणा प्रताप बाग—प० प्रकाशचन्द वेदालकार राजौरी गार्डन—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; लड्डूघाटी—तुलसीराम भजनोपदेशक; लाजपत नगर—स्वामी मिथिलेश; लखूनगर—पं० सत्यदेव स्नातक—भजनोपदेशक भजन मण्डली; विक्रमनगर—प० विष्णुदेव प्रसाद विद्यालंकार; विनय नगर—श्रीमती लीलावती आर्या; सुदर्शन पार्क;—प्रो० भारतमित्र शास्त्री वेदालंकार; सराय रोहेला—डा० सुखदयाल भूटानी; श्री निवास पुरी—पं० उदयपाल शास्त्री; शालीमार बाग—पण्डित शिव कुमार शास्त्री; हनुमान रोड—पण्डित हरिशरण सिद्धान्तालंकार हौज खास डी-२० पं० हीरा प्रसाद शास्त्री;

—वेद प्रचार मण्डल द्वारा प्रचारित

पारिवारिक सत्संग

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से दिनांक २४-५-८१ दिन रविवार को श्री राम शकल जी यादव के निवास स्थान पर, कर्तारपुरा (नजदीक काश्मीर नगर) मे पारिवारिक सत्सग किया गया। पंडित रामकुमार आर्य, पुरोहित आर्य-समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना; ने हवन यज्ञ कराया, यह यज्ञ उस बस्ती में जाकर किया गया, जहाँ के लोग यह जानते भी नही थे कि आर्यसमाज क्या है। दो नवयुवक हवन यज्ञ से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उसी समय यज्ञोपवीत अपनी श्रद्धा से धारण किया। हवन यज्ञ के पश्चात् श्री कृपाराम जी आर्य एवं पंडित रामकुमार जी आर्य के मनोहर भजन हुए। उसके पश्चात् स्वामी चिदानन्द जी का मनोहर प्रवचन हुआ।

आर्यसमाज अशोक विहार को सहायता दें

आर्यसमाज अशोक विहार III संस्था को दिल्ली विकास प्राधिकरण डी. डी. ए. ने ५०० वर्गमीटर भूमि देने की स्वीकृति दे दी है। आगामी १ जुलाई ८१ तक भूमि की कीमत ३६००० रुपए देना है तथा इस पर निर्माण करने के लिए प्रभूत धनराशि आर्यसमाज को उपेक्षित है।

अत: आर्य-हिन्दु जनता से प्रार्थना है कि वह Crossed Draft या चैक आर्य-समाज अशोक विहार के नाम पर ए-१०३, अशोक विहार III दिल्ली-५२ पर अपनी सहायता भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—

अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें—दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें—दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७२७/१-बी, दुकानक मार्ग, बाँदीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ०१०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ : अंक ३४ | रविवार १ आषाढ, वि० २०३८ २१ जून १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

लालच देकर धर्म-परिवर्त्तन पर तुरन्त रोक लगाई जाए

इस कार्य के लिए विदेशी धन का आयात बन्द हो : तमिलनाडु के हिंदू संघटन की मांग : हमें पैसा देकर विधर्मी बनाया गया

भुक्तभोगियों की करुण कथा

नई दिल्ली। 'हमारी दो मागे हैं एक तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम गांव में हुए सामूहिक धर्म-परिवर्तन के मूल कारणो विशेषत विदेशी धन के प्रलोभन से हुई घटना की तुरन्त न्यायिक जाच कराई जाए और निर्धन एव उपेक्षित हरिजनो एव जनजातियो का दूसरे आर्थिक प्रलोभनों द्वारा सम्भावित धर्मपरिवर्तन रोकने के लिए विदेशी धन का आयात तथा लालच देकर धर्म-परिवर्तन करने पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाए—इन शब्दो मे पानपोली, तमिलनाडु की गतिशील सस्था हिन्दू समुदाय बालार्ची मानरम् के प्रधान श्री पी. रामचन्द्रन तथा मन्त्री श्री के. एस. अनन्तराम शेषन ने मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो के सामूहिक धर्म-परिवर्तन के विषय मे अनुसूचित एव अनुसूचित जनजातियो के क्षेत्रीय निदेशक (मद्रास) के वक्तव्य को आश्चर्यजनक एव खेदजनक कहा है। यह सूचना भी प्राप्त हुई कि वे अपनी मागो का औचित्य सिद्ध करने के लिए जल्दी ही गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह से भी मिलेंगे।

लालच देकर विधर्मी बनाए गए

उक्त दोनो सज्जनो ने बुधवार ता० १० जून को प्रेस क्लब मे आयोजित एक प्रेस सम्मेलन में घोषित किया कि मीनाक्षीपुरम गाव के हरिजन आर्थिक प्रलोभन से मुसलमान बनाए गए हैं। धर्म परिवर्तन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ५००) दिए गए। उन्होने यह आरोप भी लगाया कि इस सामूहिक धर्म-परिवर्तन के लिए आयोजित समारोह मे ६०,००० हजार रुपये खर्च किए गए। पन्द्रह हजार रुपयो मे एक जमीन मार्केट में खरीदी गई और एक लाख रुपए से मस्जिद बनाने का आश्वासन दिया गया। यह भी उल्लेखनीय है कि इस धर्म परिवर्तन के समय स्थानीय एम. एल. ए. सबल हमीद और एम. पी. अब्दुल समद के अतिरिक्त अरब के इमाम और श्री लंका की ससद के अध्यक्ष मौजूद थे। मीनाक्षी पुरम जैसे छोटे से गांव मे यह विदेशी पैसे से हुआ और यह प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है कि उस छोटे से गांव मे इन विदेशियों के आने की क्या जरूरत थी?

सवाददाता को सूचना देते हुए उक्त दोनो सज्जनो ने बतलाया कि अनुसूचित एव जनजातियो के क्षेत्रीय निदेशक ने अपनी जाच के बाद सामूहिक धर्म-परिवर्तन के लिए सवर्ण हिन्दुओ द्वारा किए व्यवहार को कारण बताया, जो पूरी तरह गलत है। दोनो सज्जनो के अनुसार उस क्षेत्र में छूआ-छूत की कोई घटना नहीं हुई। वर्षों से गाव मे सभी सम्प्रदाय भाईचारे की भावना से रहते है।

प्रेम सम्मेलन मे पुन हिंदू बने अरुणाचलम और परम शिवम ने बतलाया कि वे ५००-५०० रुपए लेकर मुसलमान बने थे। उनके गाव के आधे लोग पैसे लेकर मुसलमान बन गए थे। अब तीन दर्जन के लगभग पुन: हिंदू बन गए हैं। □

आर्यसमाज लन्दन द्वारा जनकल्याण-कार्य

आर्यसमाज लन्दन के तत्त्वावधान मे साप्ताहिक सत्संग वन्देमातरम् भवन मे बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहे हैं। आर्यसमाज की बहनों द्वारा प्रस्तुत ऋषि कीर्तन के सामूहिक गान से समस्त वातावरण भक्तिपूर्ण हो जाता है। प्रति सप्ताह एक वेद मन्त्र की व्याख्या की जाती है जो कि वर्तमान सामाजिक मूल्यों के अनुकूल होती है।

प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, श्रीमती सावित्री छाबड़ा, श्रीमती कैलाश भसीन श्री कपिलदेव प्रिजा, श्री जगदीश शर्मा तथा पं. गिरीश चन्द्र ने विविध स्थानों पर यज्ञ करवा कर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

जन कल्याण तथा सेवा

पश्चिम की रगबिरगी चकाचौंध तथा तीव्र गति से भागने वाले जीवन में उलझकर आहत हुए व्यक्तियो को सांत्वना सहयोग प्रदान करने मे आर्यसमाज सदैव अग्रणीय रहा है। विगत दिनो ऐसे ही शारीरिक तथा मानसिक रूप से पीड़ित ६२ वर्षीय बगाली श्री क्षितीश सेन की दुर्घटना का समाचार सुनकर प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज (प्रधान आर्यसमाज) ने लन्दन के हैमर स्मिथ हास्पिटल मे भेंट करके उन्हे सात्वना प्रदान की तथा आर्य साहित्य भेंट किया तथा अन्य सहयोग का आश्वासन देकर राहत पहुंचाई। □

—०—

दिल्ली सभा का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिलेगा

धर्मरक्षा अभियान एवं विविध विषयों पर अन्तरंग सभा के महत्वपूर्ण निर्णय

नई दिल्ली। रविवार दिनांक १४ जून के दिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के अधिवेशन मे दिल्ली प्रदेश मे धर्मरक्षा महाभियान को व्यापक रूप देने के लिए ५ जुलाई, १९८१ को कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन करने का निश्चय किया गया। इस सम्मेलन के पश्चात् दिल्ली के प्रत्येक क्षेत्र मे क्षेत्रीय आर्यसमाजों के तत्त्वावधान मे सभाओ के माध्यम से विदेशी धन के दुरुपयोग से पिछड़े वर्गों के धर्म-परिवर्त्तन के प्रति जनता को सतर्क किया जाएगा।

सभा ने यह निश्चय भी किया जिन घरो मे दहेज के कम आने से देवियो पर अत्याचार किए जाते हैं उन घरो के सामने आर्यसमाज धरना देगा। इस सम्बन्ध मे सम्बन्धित परिवारों की सूचना निकट की आर्यसमाज को दी जाए, जिससे कि आर्यसमाज इस बारे में उचित कार्यवाही करे।

हरिजन एवं पिछड़ी बस्तियो में सफाई, चिकित्सा एवं यज्ञो के व्यवस्थित कार्यक्रम बनाए जाएगे। दहेज सम्बन्धी अत्याचारो के दोषी परिवारो के विषय मे दिल्ली प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से भेंट करेगा। □

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद-मनन

राष्ट्र के आह्वान पर सम्पूर्ण प्रजा भागकर एकत्र हो जाए

प्रागपागुदगधराक्सर्वतस्त्वा दिश आधावन्तु ।
अम्ब निष्पर समरीर्विदाम् ॥ यजु ६-३६

ऋषि: मधुच्छन्दा: । देवता-सोम: ।
छन्द : उष्णिक्

शब्दार्थ—हे सोम राजन्, प्रजाएं मधुर भावनाओं से युक्त होकर (त्वा) तेरे पास (प्राक्) पूर्व (अपाक्) पश्चिम (उदक्) अपर या उत्तर (अधराक्) नीचे या दक्षिण (सर्वत: दिशा) सब दिशाओ से (आधावन्तु) अनुकूलतापूर्वक भागती आए और तुझे शुद्ध तथा पवित्र बनाए रखें। (अम्ब) हे मातृभूमि तू राजा और प्रजा दोनो को (निष्पर) अन्न सामग्री से भरपूर रख, जिससे (अरी) प्रजाएं तुझे और राजा को (सविदाम्) माता के समान स्नेहपूर्ण जाने और प्रेम करें।

निष्कर्ष—राजा का कर्त्तव्य है कि वह अपनी सपूर्ण प्रजा के लिए अन्न जल और ओषधियो को मिलावट रहित प्राप्त कराने का तथा इस मन्त्र मे पर्याप्त अन्न व्यवस्था करने की चर्चा है।

२. अम्ब द्वारा मातृभूमि को सम्बोधित किया है और उससे भरपूर रखने की प्रार्थना है, इसलिए अन्न का ग्रहण किया है। भूमि के अतिरिक्त और कोई अन्न दे भी नही सकता।

३. यदि राजा और मातृभूमि मिलकर प्रजा को अन्न, जल और चिकित्सा की पूर्ण व्यवस्था से सन्तुष्ट रखेगे, तब प्रजाए राजा के आह्वान पर भागी चली आएंगी, और सब प्रकार का त्याग करने को उद्यत रहेंगी।

प्रजाओं को राजा के आह्वान पर भाग कर उपस्थित होना चाहिए, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि राजा विषयों मे लिप्त होकर, अथवा अपने व्यक्तियों के साथ पक्षपात करके अशुद्ध या पथ भ्रष्ट न होने पाए।

४ महर्षि दयानन्द ने भावार्थ में लिखा है कि राजपुरुष प्रजा से अनीति पूर्वक धन न ले। प्रजा के साथ अन्याय न करें। और दुष्टों को सदा दण्ड दिया करे।

विशेष—१. मधुच्छन्दा: ऋषि संकेत करता है कि राजा और प्रजा दोनो को एक दूसरे के प्रति मधुर भावनाएं रखनी चाहिएं। परस्पर अन्न की सुव्यवस्था रखनी चाहिये।

२ सोम देवता - इस मन्त्र का विषय है। सोम औषधियो का राजा है, इसलिए राजा का मुख्य कर्तव्य अन्न व्यवस्था करना भी है।

३. उष्णिक् छन्द - सकेत करता है कि राजा प्रजा को परस्पर शुचि (शुद्ध) रखना चाहिए, और सब तरह से स्नेह करना चाहिये।

अर्थपोषक प्रमाण—उष्णिक—ष्णा शौचे, स्निह प्रीतौ। निरुक्त.

मधुच्छन्दा—अन्न वै मधु। ता० ११-१०-३. छदयति अर्चतिकर्मा। नि० ३-१४।

सोम—सोम ओषधीनामधिराज.। गो० ३०१-१७ अन्न सोम.। को० ८-६ सोम. पय:। शत. १२-७-३-१३. ओषधय: फलपाकान्ता:=अन्न।

आधावन्तु—धावु गति शुद्ध्यो:। प्रजावा: अरी:। शत ३-६-४-२१

—मनोहर विद्यालंकार

तू मानव है, निर्भय होकर, नव इतिहास बनाता चल !

—भैरवदत्त शुक्ल

तेरी सजग मनीषा क्यो अब, कलुष-गली मे भटक रही है।
मेधा श्रद्धा से कट-हट कर कदम-कदम पर अटक रही है॥
तर्क-न्याय के नश्वर स्वर को, कलह क्रुद्ध हो हटक रही है।
साम्य-एकता के परिसर मे, घोर विषमता मटक रही है॥
तन को बन्धन जकड रहे हैं, मन में क्रंदन अकड़ रहे हैं।
उलझन के व्यूह तोड़ सारे, शिव विश्वास जगाता चल।
नव इतिहास बनाता चल॥

जड़िमा की काई से फिसली, चेतनता का रग ढला है।
नासमझी के घेरे से घिर, ज्ञान विभा-का अग गला है॥
मत-मतान्तरो की ज्वाला मे, पौरुष का ढब-ढंग जला है।
भ्रष्टाचार डाल मल बाहीं, अनाचार के संग पला है॥
नारेबाजी की छाया मे, प्रदर्शनों की मल-माया में।
व्यवहारों के शुद्ध रूप से, सबल प्रयास उठाता चल।
नव इतिहास बनाता चल॥

जड़-पूजा मे आग लगाकर, रूढ़िवाद का महल ढहा दे।
आर्य-त्रिपथगा की लहरों से, अतिचारी अवरोध बहा दे॥
वेद-पर्वों से भ्रम आवर्त्तों -का आलोड़ित नीर बहा दे।
तरुण भुजाओं में सुकर्म की, सजग पताका तुरत गहा दे॥
दयानन्द की प्रिय थाती ले, सच्चित्-क्षमता उफनाती ले।
सन्त्रस्त जगत् के पतझर मे, प्रिय मधुमास सजाता चल।
नव इतिहास बनाता चल॥

भौतिकता की बुनियादों पर, आध्यात्मिक प्रासाद बना ले।
वहसो की बारीकी लेकर, निष्कर्षों का वैभव पा ले॥
परम लक्ष्य पर, आन-बान पर, निज प्राणो की भेंट चढ़ा ले।
आत्मा के आलोक-पुंज से, परमात्मा के गुण-गण गा ले॥
गायत्री का सरक्षण कर, अजन-जना दूषण-शोषण हर।
वसुधा की गरिमा-गोदी मे, विभु-आकाश जिलाता चल।
नव इतिहास बनाता चल॥

—कैसरी गंज, पो. रायपुर गज, जि. —सीतापुर (उ. प्र.)

ग्रीन पार्क में शराब की दुकान बन्द की जाए

आर्यसमाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली ने एक प्रस्ताव स्वीकृत कर ग्रीन पार्क मार्केट मे शराब की दुकान खोलने का विरोध किया है और दिल्ली के उप राज्यपाल से अनुरोध किया है कि बस्ती की शराब की दुकान शीघ्रातिशीघ्र बन्द की जाए अन्यथा ग्रीन पार्क की महिलाएँ शराब की दुकान पर विराव और धरना देने के लिए उद्यत हैं।

आर्य सदेश आर्य समाज नैरोबी का प्रवक्ता बने

'आर्यसन्देश' की प्रतियां मिली। छपाई व सम्पादन देखकर मन गद्गद हो गया। आशा है कि आपकी तपस्या, श्रद्धा और निष्ठा 'आर्यसन्देश' को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज को सर्वोच्च शिखर पर पहुंच कर रहेगी।

मैं चाहता हू आपका 'आर्यसंदेश' आर्य नैरोबी के प्रवक्ता या स्पोक्समैन का काम करे। 'परस्पर भावयन्त: श्रेय: परमवाप्स्यथ'। आपके पत्र 'आर्यसन्देश' मे नैरोबी के समाचार पढ़कर बहुत ही खुशी हुई।

उदयपुर सम्मेलन में भाग लेने के लिए आर्यसमाज नैरोबी के सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल भारत आ रहा है। वहां स्वाहिली में सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन होगा। यहाँ आर्यसमाज का बहुत बढ़िया काम चल रहा है। बहुत आनन्द आ रहा है।

—सत्यपाल शर्मा

आर्यसमाज, पो. बाक्स ४०२४३, नैरोबी

प्रवेश-सूचना

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय खेड़ा खुर्द, दिल्ली-८२ में प्रथमा (६) से आचार्य कक्षा पर्यन्त छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ है। यह संस्था सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध तथा दिल्ली प्रशासन से सहायता प्राप्त है।

संस्कृत व्याकरण, दर्शन, साहित्य आदि प्राच्य तथा गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि आधुनिक विषयों के उत्तम अध्यापन के साथ-साथ छात्रों के आवास-भोजन आदि का उत्तम प्रबन्ध है।

शास्त्री एवं आचार्य के छात्रों के लिए नि:शुल्क भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था है। प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क करें।

भवदीय

(वेदराज बहल) कुलपति

अपनी भाषा, सभ्यता और मातृभूमि की रक्षा करें

इला सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः ।
बर्हि सीदन्त्व स्निधः ॥ ऋग्वेद १. १३. ९

(इला) मातृ भाषा, (सरस्वती) मातृ सभ्यता और (मही) मातृभूमि-ये (तिस्र) तीनो देवियां (मयोभुव) कल्याण करने वाली हैं । ये तीनो (अस्निधः) अहिंसित और (बर्हि) वृद्धि को प्राप्त होकर (सीदन्तु) विराजमान रहें ।

वीरभोग्या वसुन्धरा !

इतिहास की सीख है कि राष्ट्रो और जनजातियो के जीवन-संघर्ष मे कायर, निर्बल जातियां और राष्ट्र समाप्त हो जाते हैं, केवल वीर जातियां और राष्ट्र ही जीवित रह जाते हैं। इतिहास की इस सीख से जब हम अपने राष्ट्र का मूल्यांकन करते हैं, तब आशा और निराशा-दोनो ही भावनाएं उत्पन्न होती है । म बुद्ध द्वारा दी अहिंसा की शिक्षा ग्रहण करने से पूर्व हमारे देश के आर्य भारतीय प्रजाजन शस्त्र और शास्त्र द्वारा देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर तक पहुचना अपना आवश्क कर्त्तव्य मानते थे । उस समय तक हम कूपमण्डूक नही थे । जीवन-संग्राम मे संघर्ष कर आक्रान्ता तथा दूसरी जातियो के अच्छे तत्त्वो को पचा जाना हमारा जीवन-दर्शन था । कालान्तर में हम जीवन-संघर्ष में और जीवन दृष्टि मे कूपमण्डूक बन गए ।

सम्भवत: हमारी इसी संकुचित वृत्ति का परिणाम था कि जब यूनानी विजेता सिकन्दर घोड़ों की अपूर्व सेना लेकर आया, पुरु ने उसका मुकाबला अपने हाथियो के अनन्त सैन्यबल से किया । तेज घुड़सवारी की सेना के सम्मुख शिथिल गजवाहिनी टिक नहीं सकी । फिर मुगल आक्रान्ता बारूद लेकर आया, उसकी तोपों और बन्दूको के सम्मुख राणा सांगा की तेज तलवारो और भालो का शौर्य कुछ काम नही आया । फिर आए पुर्तगाली, फ्रेंच और अंग्रेज । ये आधुनिक नौ सेना और स्थलीय आयुधों के साथ आये थे, फिर डूप्ले और क्लाइव ने अनुभव किया कि भारतवासी अपने मातृभूमि के प्रति निष्ठा रखने के स्थान पर विदेशियों के भाड़े के टट्टू बनने मे कोई आगा-पीछा नहीं करते । इतिहास प्रमाण है कि जब विदेशी आधुनिक शस्त्रास्त्रो के साथ लैस होकर आए तो हमारे देशवासी केवल शौर्य और पुराने परम्परागत हथियारों पर ही आश्रित रहे ।

हमने इतिहास से कुछ सीखा नही । आज पाकिस्तान इस्लामी अणुबम बनाने के लिए तुला दीखता है । क्या हम छोटे से इजराइल से कुछ सीख ग्रहण कर सकते हैं ? २६ लाख की आबादी का छोटासा इजराइल दस करोड अरब प्रजाजनो के राष्ट्रो से घिरा हुआ है । अरब राष्ट्रो के नीति-निर्धारक बार-बार इजराइल को समाप्त करने की बात कहते हैं वे उसके बन्धक पकड़ कर दूर अफ्रीकी भूभाग मे ले जाते हैं, साहसी इजराइल योद्धा उन्हे छुड़ा लाते हैं । अरब राष्ट्र इजराइल को नष्ट करने के लिए इस्लामी अणुबम बनाने की बात कहते हैं और इजराइल उनके आणविक संयन्त्रों को ही नष्ट कर देता है । नीति कहती है कि 'शठ प्रति शाठयम्' । शठ के साथ शठता करने में कोई दोष नहीं है। पिछले तैंतीस वर्षों में पाकिस्तान भारत पर तीन बार आक्रमण कर चुका है, अब वह फिर बड़ी ताकतो से हथियार लेकर युद्ध की तैयारी कर रहा है, विदेशी विशेषज्ञ स्वीकार करते हैं कि इस वर्ष में वह आणविक शस्त्रास्त्र तैयार कर लेगा, ऐसे समय भारत को शान्त बैठे रहना ठीक नहीं । सिकन्दर, बाबर और दूसरी विदेशी ताकतों के ही समान पाकिस्तान अथवा उसके साथी भारत को शक्तिशाली और स्वावलम्बी देखना पसन्द नहीं करते । वे हम पर अणुबम से आक्रमण करें, उस क्षण के लिए हमें समय रहते तैयार होना होगा । हमें भूलना नही होगा कि 'वीर भोग्या वसुन्धरा'—केवल वीर राष्ट्र ही जीवित रहते हैं, कायर ओर निर्बल इतिहास के पन्नों से गायब हो जाते हैं ।

उर्दू की जंग: निशाना कुछ और है !

बिहार ने उर्दू को द्वितीय भाषा के रूप मे मान्यता दी है । इसके बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिह ने आश्वासन दिया है कि जल्दी ही प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय भाषा के रूप में मान्यता दे दी जायेगी, अब केवल रस्मी कार्यवाही शेष है । पिछले दिनों लखनऊ में एक गैर मुस्लिम लेखक सम्मेलन हुआ था । उसमे गैर मुस्लिम लेखक तो अगुलियों पर गिन सकते थे, परन्तु उस अवसर पर मुस्लिम अधिकारी और दर्शक सैकडो की गिनती मे उपस्थित थे । उनमे ही कुवैत के अरब टाइम्स के सम्पादक भी उपस्थित थे । स्मरण रहे कि इसी 'अरब टाइम्स' ने जनवरी के महीने में सम्वाद दिया था कि कुवैत आदि अरबो रुपयो की धनराशि खर्च कर भारत के हरिजनों को मुसलमान बनाने के लिए प्रयत्नशील है ।

उसी बदनाम पत्र के श्री नजमी ने ऐलान किया है—'उर्दू की जंग उर्दू के दूसरी सरकारी भाषा घोषित किए जाने पर समाप्त नहीं होगी, बल्कि उस मान्यता के आधार पर आगे बढ़ाई जाएगी । ताकि उर्दू को अंग्रेजी के बाद दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान दिलाया जा सके ।' इस सम्मेलन की रोशनी मे २६ अप्रैल को सोनीपत के साप्ताहिक पैगाम की सूचना मे कहा गया है कि हरियाणा के शिक्षा-मन्त्री श्री देसराज ने घोषणा की है कि हरियाणा मे पहली कक्षा से दसवी कक्षा तक उर्दू अनिवार्य रूप से पढाई जाएगी । सम्भवत. पंजाब मे भी कुछ ऐसी ही तैयारियां हो रही होंगी । यदि ये सूचनाए और सम्वाद सत्य हैं तो पूर्वी बिहार से लेकर पाकिस्तान की सीमा तक उर्दू भाषा और उसकी आड़ मे जो कुछ भी हो रहा है क्या उससे कुछ समय बाद भाषायी एकता के आधार पर अलग राष्ट्र की मांग की सम्भावना से इन्कार किया जा सकता है ।

एक ओर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कहते हैं कि उर्दू किसी पर थोपी नही जाएगी दूसरी ओर इन्द्रकुमार गुजराल कहते हैं कि मैंने गुजराल कमीशन मे यह शिफारिश की है कि भारत के भावी अफसरों की नियुक्ति के लिए उर्दू का ज्ञान होना अनिवार्य शर्त होनी चाहिए । यह ठीक है कि देश की दूसरी प्रादेशिक भाषाओ की तरह उर्दू अपनी उन्नति और विकास करे परन्तु जब उसके तथाकथित हितैषी पाकिस्तान, कुवैत और अन्य अरब देश आवाज उठा रहे हैं तो अनुभूति होती है कि उर्दू की जंग वस्तुत: भाषा की उन्नति का युद्ध नही है, वस्तुत: उसका लक्ष्य या निशाना और है । इसकी उन्नति और अभिवृति के नाम पर पूर्वी बिहार से पाकिस्तान की सीमा तक एक नया गलियारा मांगने की कोशिश की जा रही है, उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के दोनों बाजुओ को मिलाने के लिए कभी जिन्ना ने ऐसे ही गलियारे की मांग की थी । क्या सरकार और जनता इस प्रकार विखण्डनात्मक प्रयत्नों की निरन्तर उपेक्षा करते रहेंगे ?

—•—

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय शताब्दी समारोह

आर्यजगत् के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् स्वर्गीय पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का जन्म ६ सितम्बर, १८८१ ई० को हुआ था । हम लोग ६ सितम्बर, १९८१ ई० को उनकी जन्मशती का समारोह देश के सभी नगरों मे आयोजित करने की चेष्टा कर रहे हैं । आर्यजनता से हमारा आग्रह है कि वह शताब्दी समारोह का आयोजन ६ सितम्बर, १९८१ को, अथवा उसी के निकट सुविधानुसार किसी तिथि को करे । इस दिन यज्ञादि के अनन्तर उपाध्याय जी की जीवनी, और उनके साहित्य पर व्याख्यान आयोजित करें ।

भवदीया
(डा.) सु० रत्नायकी
निदेशिका, डा. रत्नकुमारी स्वाध्याय सस्थान,
विज्ञान परिषद् भवन, दयानन्द मार्ग, इलाहाबाद १

पं० धर्मभिक्षु के शास्त्रों का ब्योरा भेजिए

आर्य सज्जनो ! कृतघ्नता बड़ा भारी पाप है । रईसुल् मुनाजिरीन श्री पं० धर्म भिक्षु जी लखनवी को आर्यसमाज भूलता जाता है ।

आपको श्री पं० धर्म भिक्षु जी के मुबाहिसो की जितनी पंक्तिया यादहों शीघ्र ही मेरे पास लिखकर भेजने का कष्ट उठाइए ।

अमर स्वामी सरस्वती,
वेद मन्दिर (झोपडी) कविनगर (गाजियाबाद)

हमारा इतिहास तोड़ा-मरोड़ा जा रहा है

वास्तविक तथ्यो या सत्य के उदघाटन के लिए इतिहास एक अनुपम माध्यम है। तथ्यो की सही-सही रपट और न्यायाधीश की भाति सचाई की तलाश यही है इतिहासकार का कार्य। वह कोई रसायनशास्त्री या केमिस्ट नही है, उसे तथ्यों को बदलने या सुधारने का कोई अधिकार नही। वह तो एक छायाकार या फोटोग्राफर है बीते हुए जमाने का। जर्मनी के साथ हुई घटना के प्रति इतिहासकारो का रुख इसका उदाहरण है। प्रथम विश्वयुद्ध के लिए जर्मनी को दोषी मानकर उस पर बहुत बडा हर्जाना लाद दिया गया था। इतिहासकारो ने धैर्यपूर्वक सामग्री का चयन किया और दुनिया के सामने यह सचाई ला दी कि केवल जर्मनी ही नही, अपितु सभी देश, विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेदार थे। जर्मनी को इस रहस्योद्घाटन से लाभ हुआ और वह हर्जाने की शेष रकम चुकाने से बच गया।

लगता है भारत के विद्यालयो मे पढाई जाने वाली इतिहास की पुस्तको मे इस सर्व हितकारी मान्यता को भुलाकर, उसे एक प्रचार का साधन बनाया गया है, छठी कक्षा की इतिहास की पुस्तक की प्रस्तावना मे प्रशासन के अनुकूलन की बात की गई है, जो अनुचित है। भारतीय इतिहास के माध्यम से अंग्रेजी की खुली वकालत और सस्कृत भाषा को विदेशियों और हमलावरो की भाषा बताना, नितान्त निन्दनीय प्रयास है। केवल यह प्रभाव डालने का प्रयत्न है यदि आज केवल बगाल मे कम्युनिस्ट राज है, ता कल सम्पूर्ण भारत मे होगा। इतिहास मे यह सिद्ध करने की कोशिश की गई है स्वतन्त्रता आन्दोलन और दूसरे आन्दोलन बगाल से शुरू हुए हैं। मोहम्मद तुगलक, सिकन्दर लोधी, अकबर की विरुदावलि इन इतिहास की पुस्तको मे भाट के समान की गई है किन्तु राणा, खुसरो शाह, हेमू प्रताप आदि पर दो पक्तिया भी नही लिखी गई। फरीद खाँ और चिश्ती आदि पर पन्ने के पन्ने भर दिए है परन्तु तुलसी जैसी हस्ती पर दो शब्द भी नही दिए गए।

कुछ नमूने देखिए

इतिहास की इन तथाकथित पुस्तको की बानगी देखिए :—

१. अरब के मरुस्थलो की सीमा पर सभ्यता का विकास—मानव सभ्यता का विकास 'धन्वाकार उपजाऊ प्रदेशों (Fertile Crescent) अरब, ईरान, के मरुस्थलो की सीमाओं पर शुरु हुआ ऐसे गाँवो के खण्डहर उत्तरी सीरिया, ईरान, ईराक मे मिले हैं, जिनसे स्पष्ट है कि पशुपालन और कृषि बहुत जल्दी फिलस्तीन से इन देशो मे फैल गई। वही से लगभग ५ हजार ईस्वी पूर्व मे दोनो व्यवसाय नील नदी की घाटी मे पहुचे। शिकार और भोजन इकट्ठा करने की स्थिति से कृषि और पशुपालन तक का परिवर्तन भारत मे बाद मे हुआ (सभ्यता की कहानी पृ० १३-१४ भाग प्रथम।)

२. भारत की आदि सभ्यता—'मुसलिम' जैसी सभ्यता २५००ई० पूर्व मेसोपोटामिया के प्रभाव से सिन्धु घाटी में सभ्यता का विकास हुआ। सुन्दर नगर बने। सिंधु निवासी दाढ़ी रखते थे, मूंछे कटवाते थे। कुत्ते और बकरियाँ आंगन में रखे जाते थे। ये लोग अपने मुर्दो को कब्र मे गाड़ते थे।

३. सस्कृत भाषी विदेशी—आर्य (हिन्दुओ के पूर्वज) हमलावर, विदेशी खानाबदोश कहे गए हैं। 'आर्यों के आगमन के पश्चात् भरे पूरे नगर सुनसान हो गए और टीले मात्र रह गए। लगभग एक हजार वर्षों तक भारत मे इतने भव्य नगर नहीं देखे गए। भारत के निवासी सुव्यवस्थित योजना के अनुसार शहर बनाना लगता है कि भूल ही गए।' (सभ्यता की कहानी प्र. भाग पृ २७) '१५००ई० पूर्व जब आर्य भारत मे प्रवेश करने लगे, हड़प्पा सस्कृति नष्ट होने लगी' यह सुझाव है नगरो पर आक्रमण हुआ हो और यहा के निवासी अपनी रक्षा करने मे असमर्थ रहे हो। हड़प्पा सस्कृति का पतन भारतीय इतिहास की दुखद घटना है। आर्य जो बाद मे आए नगर के जीवन से अपरिचित थे। (प्राचीन भारत पृ. ३४)

४. अरब सभ्यता श्रेष्ठतम—'विदेशियो के भारत आने के कारण, भारत का बाहरी ससार से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। तुर्क, अफगान और मुगल शासक कुछ और नवीन विचार और परिवर्तन समाज मे लाए। उनसे भारतीय सस्कृति और समृद्ध बन गई। (मध्यकालीन भारत) पृ०३) 'इस्लाम का उपदेश महत्वपूर्ण घटना थी, जिससे अरब जातियो का सगठन हुआ। उन्होंने जोर्डन, सीरिया, ईराक, तुर्की, सिंध और मिश्र जीत लिए। अरबो का उद्देश्य विजय प्राप्त करना ही नही था, वे व्यापार को भी प्रोत्साहित करते थे। इस युग की अरब सभ्यता ससार की सबसे अधिक विकसित सभ्यता थी। (म. भारत)

५. मुगलों की विरुदावलि—'मुगल भारत की भलाई को सदैव अपनी दृष्टि के सामने रखते थे। मुगल यह भी नही चाहते थे कि बहुत बड़ी संख्या में हिन्दुओ को मुसलमान बना लिया जाए। भारत मे पहले से ही बडी सख्या में मुसलमान रहते थे' (म. कालीन भारत पृ. ११६) 'भारत को एक राष्ट्र के रूप संगठित करना अकबर का एक महान स्वप्न था। वह चाहता था कि लोग अपने क्षेत्रीय और धार्मिक भेदभाव को भूल जाए और सभी अपने को केवल भारत का नागरिक समझें।'''अकबर में एक बड़ा भारी गुण था उसकी निर्भीकता। जब वह क्रोधित हाथियो पर सवारी करके उनको पालतू बनाता था या जब वह वर्षा की बढी हुई नदियों को तैरकर पार करता था, तब उसका महान साहस दिखलाई पड़ता था। उसने उस समय भी अपने महान साहस का प्रदर्शन किया, जब उसने उन व्यक्तियों का विरोध किया, जो अपनी शक्ति का प्रयोग नये विचारों का प्रचार और भारतीय समाज और विचार धारा में होने वाले परिवर्तनों को रोकने मे कर रहे थे। उसकी निर्भीकता की जड़े उसकी इमानदारी के ऊपर जमी हुई थी।' (म. कालीन भारत पृ. १३४-३५)

एक इतिहास पंडित

६. राष्ट्रवाद: अंग्रेजी राज की देन—'१८३३ई० मे भारत मे प्रशासन का केन्द्रीकरण शुरू हो गया। शिक्षा का विकास हुआ। इनके कारण भारत के मध्यम वर्ग में भेदभाव को भुलाकर एकता की भावना आ गई। एकता की यही भावना जल्द ही राष्ट्रीयता के रूप मे व्यक्त हुई जिससे महत्वपूर्ण परिवर्तन आए।' (आधुनिक भारत पृ. ८२-८३) ब्रिटिश शासन और पाश्चात्य सभ्यता के प्रसार के कारण अन्य क्षेत्रो मे भी भारत को आधुनिक बनाने के आन्दोलन चले। समाज सुधारको ने जनमत तैयार किए, जिनमे सरकार को समाज सुधार की दिशा मे कदम उठाने को बल मिला' (आ. भा पृ. ९२)।

अंग्रेजी की वकालत . 'नई शिक्षा पद्धति के अनुसार प्रारम्भिक स्कूलो में भारतीय भाषाओ की जगह अंग्रेजों ने नहीं ली। उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप मे सस्कृत और अरबी की जगह अंग्रेजी का प्रयोग होने लगा। अंग्रेजी शिक्षा पाकर भारतीय आधुनिक विचारो और वैज्ञानिक चिन्तन के तरीकों के बारे मे जान सके। वे स्वतन्त्रता और जनतन्त्र के विचारों से भी परिचित हो गए। किन्तु थोड़े से ही लोग अंग्रेजी शिक्षा पा सके। नई शिक्षापद्धति ने कई आन्दोलनों को जन्म दिया। (आ. भा. पृ. ८६)

८. कम्युनिज्म का प्रच्छन्न प्रचार—यह दर्शाने का प्रयत्न किया गया है जो आज बंगाल में हो रहा है, कल सारे भारत में होगा। ऐसा इसलिए कि बंगाल, पाश्चात्य शिक्षा के कारण, लीडर बन चुका था।' ऊपर हमने जो कहा है, वह अधिकांशतः बंगाल के माध्यम और उच्च वर्गों के बारे मे हैं। वहाँ जो परिवर्तन. वे ही सारे भारत मे हो गए'। (आ. भा. पृ ९४) 'अधिकतर आधुनिक आन्दोलन बगाल से शुरू हुए। सबसे पहले ब्रिटिश शासन बंगाल में कायम हुआ था। इस प्रकार यह प्रांत अन्य प्रांतो की अपेक्षा पाश्चात्य शिक्षा, संस्कृति और विचारों के प्रभाव में पहले आया' (आ. भा. पृ ८६)।

स्पष्ट ही इन पुस्तकों को तैयार कराने में निम्नलिखित उद्देश्य सिद्ध करने की चेष्टा की गई है:—१. अल्प सख्यको का तुष्टीकरण २। उच्च वर्ग की अंग्रेजी परस्ती ३. कम्युनिस्टो का प्रचार व प्रसार।

राजनीति मे विभिन्न विचारधाराओ के शान्ति पूर्ण प्रसार का काम राजनीतिक दलो का है। इतिहास के माध्यम से ऐसा करना जनतन्त्र की मर्यादाओ के प्रतिकूल है। यह तो एक खतरनाक घुसपैठ है, जिसे रोकना, प्रत्येक समझदार नागरिक का कर्तव्य है।

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर में ६१ युवक प्रशिक्षित

परिषद के कार्यों से आशा बंधी : सरदारीलाल जी का उद्बोधन

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में २१ से ३१ मई १९८१ तक 'आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर' हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग में आयोजित किया गया, शिविर में युवकों को साधना करने का अच्छा अवसर मिला। प्रातः से सायं तक युवकों को डा० देवव्रत आचार्य ने योग-आसन, दण्ड बैठक, स्तूप आदि शारीरिक सैनिक शिक्षण दिया। मानसिक विकास के लिए श्री उत्तमचन्द शरर, महात्मा इन्द्रमुनि, स्वामी सत्यप्रति महाराज, पं० क्षितीश वेदालकार; विजय चौधरी, डा० राज सिंह आर्य, डा० विजय भूषण आर्य, श्री प्रेमपाल शास्त्री, डा० विवेक भूषण आर्य, आदि ने बौद्धिक स्तर पर निर्माण का कार्य किया।

अंतिम दिन शिविर समापन समारोह के अध्यक्ष श्री दरबारी लाल, उप-प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने कहा—'आर्यसमाज के क्षेत्र में जो निराशा के बादल छाते जा रहे थे, उसको परिषद् ने जिस ढंग से दूर करते हुए, प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया है, उससे हमारी आशाएं बंधी।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाशय धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य ने ध्वजारोहण व ध्वजावतरण किया। उन्होंने आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से भी सहयोग का आश्वासन दिया।

समारोह के अन्त में विशाल ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया। आर्य युवकों ने ११ जून को प्रातः रैली निकाली, परिषद् की एक वेशभूषा व बैण्ड की सभी ने प्रशंसा की। १५ क्षेत्रों के शाखाध्यक्षों की नियुक्तियां की गईं। कार्यक्रम का संयोजन श्री अनिल कुमार आर्य ने किया। ब्र० राम अवतार ने गले व आँख से सरिए मोड़ने व थाली फाड़ने आदि यौगिक व्यायाम क्रियाओं का भी प्रभावशाली प्रदर्शन किया। ६१ शिविरार्थियों ने शिविर में भाग लिया।

सनातनी मंच से नारियों द्वारा वेदोच्चारण

बम्बई में धर्म-प्रचार की धूम

सत्य और निर्भयता के प्रचारक वेदोद्धारक जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकार के कारण अन्धविश्वास और पाखण्ड का खण्डन आर्यसमाज की तरह अब सनातनी भाई भी जोर-शोर से कर रहे हैं और सनातनी मंच से नारियां भी वेद-मन्त्रोच्चारण कर रही हैं।

गत दिनों बम्बई के क्रास मैदान में वेदों के विद्वान पूज्य स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज की जन्म शताब्दी बड़े उत्साह के साथ मनाई गई। स्वामी जी ने उदारता पूर्वक आर्यसमाज के सन्यासियों, विद्वानों एवं पंडितों को भी वेद-पाठ एवं वेद-प्रचार के लिए निमन्त्रित किया था।

शताब्दी-समारोह में आर्य सिन्धु आश्रम के स्टाल ने मानो आर्यसमाज के शिविर के रूप में कार्य किया जहाँ स्वामी ओमानन्द जी, पं. वीरसेन वेदश्रमी, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, ब्रह्मचारी सत्यानन्द जी, पं. हुकुमचन्द वेदालकार एवं आर्य सिन्धु आश्रम के प. श्री नरेन्द्रकुमार और अशोक किशोर वेदालंकार वैदिक संस्कृत के श्रद्धालुओं और जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करते रहे।

सारे समारोह में रोशनी की काफी रौनक थी, किन्तु ओ३म का झण्डा केवल आर्य भिक्षु आश्रम के स्टाल पर लहरा रहा था।

इस धार्मिक समारोह में देश-विदेशों से हजारों महात्मा साधु सन्यासी ब्रह्मचारी मठधारी एवं स्वामी जी के शिष्य सेवक और श्रद्धालु आकर एकत्र हुए थे।

चि० अरुण एवं सौ. रश्मि यशस्वी हों

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लालजी वर्मा के सुपुत्र चि० अरुण का शुभविवाह रविवार ७ जून को नई दिल्ली में श्री एम० एल० खुल्लर की आत्मजा सौ० रश्मि के साथ वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। 'आर्यसन्देश' परिवार की हार्दिक आकांक्षा एवं प्रार्थना है कि वर-वधू को जोडी जीवन में दीर्घायु, यशस्वी और सम्पन्न हो और समाज और राष्ट्र की समुन्नति के लिए वे दोनों परिवार की उदात्त परम्परा को सार्थक करें।

धर्म की नींव

□ लेखक : आनन्द मोहन

आजकल देश की हालत भौतिक मानसिक, सामाजिक अथवा आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में स्वस्थ नहीं है। सवाल उठता है कि इस बिगड़ी हालत का सुधार कैसे हो? यह सोचकर बैठे रहने काम नहीं चलेगा कि कोई शक्ति या अवतार आकर समाज को श्रेष्ठ और देश को महान बना जाएगा। इस प्रकार के चिन्तन से तो हमारी अकर्मण्यता ही फल स्वरूप गिरावट और भी तेजी से आएगी।

सोचकर देखा जाए तो पता चलता है कि इसके सिवा कोई चारा नहीं कि हमें ही प्रयत्न करके उठना है। महायुद्ध के बाद जर्मनी और जापान की क्या हालत थी और यह सर्वविदित ही है कि उनके देशवासियों के निरन्तर प्रयत्न के बाद आज वे कहाँ है।

प्रयत्न कैसे आरम्भ हो? यदि मकान मजबूत बनाना हो तो उसकी नींव, उसका मसाला और प्रत्येक ईंट बढ़िया होनी चाहिए। इसी तरह देश को मजबूत करने के लिए उसके प्रत्येक देशवासी को आदर्श पुरुष स्त्री बनाना अनिवार्य है।

श्रेष्ठ मानव कौन ?

स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि आदर्श व्यक्ति के लक्षण क्या हैं। श्री कृष्ण द्वारा भागवत में बताया गया एक विवरण यह है 'जो दूसरों का दुख सहन नहीं कर सकता, सत्य ही जिसका बल है, जो सबका सहायक है, जिसका मन वासनाओं से कलुषित नहीं है, जो दूसरों से सम्मान की आशा नहीं रखता पर सबको आदर देता है, और जो मेरे साथ-साथ जन-जन से प्रेम करता है। वास्तव में वही सर्वश्रेष्ठ है।'

धर्म का चलन इस देश में सदा से रहा, पर आदर्श मानव और आदर्श समाज बनाने का ध्येय हम से दूर ही होता गया है। कारण कि प्रचलित धर्मों के पंडित, पुरोहित अधिकतर वही विचार फैलाते रहे हैं कि नेक, शिष्ट, और उद्यमी बने बिना ही मनुष्य केवल मंत्र रट कर, पैसा चढ़ा कर या ईमान लाकर अपने पापों को भस्म कर सकता है और परमात्मा को प्रसन्न करके मोक्ष पा सकता है।

शास्त्र की पुकार

पर शास्त्र पुकार-पुकार कर कह रहा है कि केवल अच्छे मनुष्य ही भगवान को प्रिय हो सकते हैं। दुरात्मा, अनाचारी, आलसी जो दूसरों के दुख सुख की ओर से उदासीन रहते हैं वे न तो सुख के खुद अधिकारी हैं, न समाज में सुख और शान्ति ला सकते हैं। सबसे प्रथम जो आवश्यकता है वह है चरित्र निर्माण की।

आदर्श व्यक्ति को अपने जीवन के लौकिक और परिलौकिक दोनों ही पक्षों की देखभाल करनी चाहिए। आदर्श समाज को सच्चे भक्तों, ध्यानियों और साधुओं की ही नहीं, वरन् बड़ी संख्या में आदर्श गृहस्थ, पुत्र, पुत्रियों, विद्यार्थियों, राजनीतिज्ञों, उद्योगपतियों, कर्मचारियों तथा नागरिकों की आवश्यकता है। ये सब आदर्श व्यक्ति लौकिक कार्यों जैसे परिवार पोषण, समाज के लिए आवश्यक सामान और सेवाओं का उत्पादन तथा समाज से गरीबी और भूख मिटाने के महायज्ञ में सच्चे परिश्रम द्वारा लगें तो देश का वास्तविक कल्याण हो, तभी धर्म की नींव पक्की होगी।

२८, आनन्द लोक,
नई दिल्ली-११००४९

पाणिनी कन्या महाविद्यालय की प्रगति के दस वर्ष : वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वाराणसी। २२-२३-२४ मई, १९८१ को पाणिनि कन्या महाविद्यालय का दसवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। संस्था ने दस वर्षों के छोटे से समय में कन्याओं की आर्ष-शिक्षा में वैदिक मर्यादानुकूल अनेक नए आयाम जोड़े हैं। पिछले वर्ष विद्यालय के समीप वानप्रस्थ-आश्रम के लिए पचास हजार रुपए की भूमि खरीदी गई। उत्सव के अवसर पर नवीन भूमि का उद्घाटन श्रीमती सुन्दरी देवी टाण्डा ने किया। २२ मई की रात को विद्यालय की छोटी कन्याओं ने पाणिनि के पांचों ग्रन्थों के आधार पर अन्त्याक्षरी प्रस्तुत की। श्री रामप्रसाद त्रिपाठी ने पाणिनि कृत अष्टाध्यायी और धातुपाठ की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

दूसरे दिन भारतीय पर्वों की उपयोगिता पर कन्याओं ने एक सुन्दर पत्रकार गोष्ठी आयोजित की। तीसरे दिन सात्विक भावपूर्ण यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद पू० माता शान्ति देवी ने वेदमन्त्रों से आहुति देकर 'शान्ति वाचनालय' का उद्घाटन किया। पत्रकार प० क्षितीशकुमार वेदालंकार एवं संसद सदस्य श्री धर्मवीर आर्य के सामयिक उद्बोधक भाषण हुए।

आर्य जगत् समाचार

आर्यसमाजों का दायित्व : वे सावधान रहें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को सूचना प्राप्त हुई है कि कुछ अवाछनीय तत्व आर्यसमाज के सगठन को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो में आर्य सन्यासी के वेश या आर्य प्रचारक के रूप मे उपदेशार्थ आते हैं। समाज की वेदी पर उन्हें आर्य सिद्धान्तों की चर्चा करनी चाहिए अथवा वर्तमान कठिनाइयो के सन्दर्भ मे आर्यसमाज के दायित्व की चर्चा करनी चाहिए, ऐसा न कर ऐसे वक्ता अपने तथाकथित उपदेशो मे सभा के सगठन एवं सभा अधिकारियों के विरुद्ध उकसाते रहते हैं और इस प्रकार के भाषणों से कई आर्यसमाजो के अधिकारी इस भ्रम मे आ जाते हैं कि सभा के अनुशासन मे रहकर उसके आदेशो का पालन करना उनके लिए आवश्यक नही है।

इसी प्रकार के कुछ आर्य सदस्यों ने सभा के नियन्त्रण की अवहेलना कर अपनी आर्यसमाज के झगड़े या विवाद कोर्ट कचहरी मे ले जाकर अपनी आर्यसमाज को सभा के सगठन से पृथक् सिद्ध करने का प्रयत्न किया और छोटी अदालतो में उन्हे कुछ आशिक सफलता भी मिली, परन्तु दिल्ली हाईकोर्ट के मान्य न्यायाधीश ने जो निर्णय किया वह सबकी जानकारी के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। जिससे आर्यसमाजें किसी के बहकावे मे न आकर अपने सगठन एवं अधिकारियो के प्रति विरोध या उपेक्षा का दृष्टिकोण न अपनाते हुए सभा के अनुशासन मे रहकर अपना दायित्व निबाहे।

दिल्ली हाईकोर्ट का ऐतिहासिक निर्णय :

सम्पत्ति नियन्त्रण का अधिकार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को

वादी-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्री सी०एल० नागर एडवोकेट। प्रतिवादी मास्टर विष्णुदास और अन्य द्वारा श्री नन्दलाल चौधरी एडवोकेट-सिविल रिवीजन स १०६६ सन् १९८० फैसले की तारीख—११ मई, १९८१।

दिल्ली हाईकोर्ट के माननीय एस० बी. वाड ने घोषित किया—

यह संशोधित सुनवाई दिल्ली के प्रथम श्रेणी के सब जज के दिनाक ७ अगस्त, १९८० के आदेश के विरुद्ध है। विद्वान जज ने सिविल प्रोसीजर कोड के आदेश नियम १० के अन्तर्गत प्रार्थी का प्रार्थनापत्र रद्द कर दिया था।

आर्यसमाजियो का एक फेडरल आर्गनाइजेशन या सघीय सगठन है। इसकी शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। राज्य स्तर पर प्रतिनिधि सभाएं हैं। दिल्ली की इकाई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कहलाती है। संघीय संस्था तथा संघों की इकाइयां रजिस्टर्ड या पंजीकृत सस्थाएं हैं और उनके अपने संविधान या कान्स्टीट्यूशन हैं। निस्संदेह संघीय सस्थाओं फेडरल बोडी का सविधान सर्वोच्च है। स्थानीय संघटन राज्यों की प्रतिनिधि सभाओं से सम्बद्ध होने हैं। सार्वदेशिक सभा के नियम ४३ के अन्तर्गत स्थानीय संस्थाओं पर स्पष्ट प्रतिबंध है कि अपने संविधान या सम्पतियों का पृथक पंजीकरण या रजिस्ट्रेशन नहीं करवा सकते। (नियम ४०) के अतर्गत स्थानीय सस्थाए राज्य के नियन्त्रण और पथ-प्रदर्शन में कार्य करती हैं।

यहाँ सुभाष नगर की एक स्थानीय सस्था का मामला है। उसके कुछ सदस्यो का दावा है कि उनकी एक रजिस्टर्ड संस्था है। इस दावे पर वाद किया गया है। कुछ सदस्यों ने दिल्ली प्रतिनिधि सभा से एक पक्ष के रूप मे शामिल न होते हुए तीन पदाधिकारियो के विरुद्ध स्थायी निषेधाज्ञा प्राप्त करने के लिए वर्तमान मामला उठाया है।

सुभाष नगर की बस्ती मे धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय खोला गया। २५ जुलाई, १९७९ के दिन इस धर्मार्थ सस्था का सम्पति का एक हिस्सा पट्टे या लीज पर दिया गया। इस वाद मे मांग की गई है कि उक्त लीज या पट्टा अवैध और अव्यावहारिक घोषित कर दिया जाए। बाद में यह मांग भी की गई कि समाज की सम्पति के कब्जे से सम्बन्धित किसी भी इकरारनामे से उक्त तीनों प्रतिवादियों को रोका जाए। ट्रायल कोर्ट ने सम्पत्ति के विषय मे अन्तरिम निषेधाज्ञा जारी कर दी थी। बाद में वादियों का पक्ष सुनने के बाद यह आदेश रद्द कर दिया गया था। शुरू में न्यायालय ने रेकार्ड या कागजपत्रों की जब्ती के लिए कमिश्नर की नियुक्ति भी की थी। प्रार्थी या मुद्दई का इस मामले से गहरा सम्बन्ध है क्योकि सुभाष नगर की संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध है और उक्त राज्य-संस्था के नियन्त्रण और पथ-प्रदर्शन मे ही वह कार्य करती है। प्रार्थी के अनुसार नियन्त्रण के अन्तर्गत सम्पत्ति का नियन्त्रण भी सम्मिलित है।

निचली अदालत के निर्णय मे कुछ विसगतियाँ है। यद्यपि न्यायालय की फाइल में सार्वदेशिक और दिल्ली प्रतिनिधि सभा के सविधान मौजूद हैं तथापि न्यायालय ने निर्णय किया कि आर्य-समाज का संविधान पेश नही किया गया। दूसरी ओर विद्वान न्यायाधीश यह निर्णय भी देते हैं कि प्रतिनिधि सभा के ९ और १० नियमों के अन्तर्गत सस्थाओं की मान्यता अनिवार्य नहीं है। जब संविधान फाइल में ही नहीं था तब उन्होंने ९-१० नियमो का हवाला कैसे दे दिया। न्यायाधीश द्वारा ९-१० नियमो की व्याख्या भी ठीक नही है। रिकार्ड के कागजात से सुभाष नगर आर्यसमाज की मान्यता की पर्याप्त साक्षी मिलती है। आर्यसमाज सुभाष नगर ने मान्यता के लिए प्रार्थनापत्र दिया था, उसे दिल्ली प्रतिनिधि सभा ने मंजूरी दी थी। रिकार्ड से यह बात भी पुष्ट होती है कि प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज सुभाष नगर के आय-व्यय निरीक्षक से हिसाब की किताबें मंगवाई थीं। मामला एक तथ्य से और पुष्ट होता है—यह भी मंजूर किया गया है कि दिल्ली प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज सुभाष नगर की प्रबन्ध समिति को बर्खास्त कर एक एडमिनिस्ट्रेटर या प्रशासक नियुक्त किया था। प्रतिवादियों ने उक्त आदेश को कोई चुनौती नही दी थी। इससे प्रमाणित हो जाता है कि स्थानीय संस्थाओं का वास्तविक नियन्त्रण राज्य की सस्था करती है। प्रार्थी को हस्तक्षेप करने वाला मेडलर नहीं कहा जा सकता। राज्य की सस्था का यह उत्तरदायित्व है कि वह एक स्थानीय सस्था की सम्पत्ति की सुरक्षा करे। आर्यसमाज सुभाष नगर के प्रबन्ध को स्थगित कर एडमिनिस्ट्रेटर की नियुक्ति से मामले का सम्पूर्ण संदर्भ ही बदल गया है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं कि बर्खास्तगी के उक्त आदेश को चुनौती नहीं दी गई, फलत: प्रतिवादी को मामले मे भाग लेने का अधिकार नहीं है। दिल्ली प्रतिनिधि सभा को इस मुकदमे में वादी या प्रार्थी के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। उक्त युक्तियो के संदर्भ में रिवीजन पेटीशन खर्चे के साथ मजूर की जाती है।

प्रवेश प्रारम्भ

सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्धित सरकार द्वारा एम. ए समकक्ष आचार्य पर्यन्त मान्यता प्राप्त महर्षि दयानन्द संस्कृत गुरुकुल म० वि० पटेल मार्ग गाजियाबाद उ० प्र० में १ जुलाई से नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। अपने बच्चो को सर्वांगीण उज्ज्वल भविष्य के लिए गुरुकुल मे प्रविष्ट करायें।

प्रवेश के लिए मिलें अथवा लिखें।

नोट—एक विज्ञान अध्यापक तथा प्रौढ धारा प्रवाह संस्कृत वक्ता साहित्याचार्य की आवश्यकता है।

समरभानु व्याकरणाचार्य
—प्रधानाचार्य

महर्षि दयानंद (संस्कृत) गुरुकुल महा० पटेल मार्ग, (गाजियाबाद)

—o—

आर्यसमाजों के सत्संग

२१ जून, १९८१

अन्धामुगल प्रतापनगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; अशोकविहार के-सी ५२-ए—प० रामदेव शास्त्री; आर्यपुरा—पं० रामरूप शर्मा; आर. के. पुरम सैक्टर-९—डा० सुखदयाल भूटानी; आनन्दविहार (हरिनगर एल ब्लाक)—श्रीमती सुशीला राजपाल; किंग्जवे कैम्प—पं० केशवचन्द मुन्जाल; किशन गंज मिल एरिया—पं० ईश्वरदत्त एम. ए.; कालका जी डी. डी. ए फ्लैटस—आचार्य कृष्णगोपाल; गांधी नगर—आचार्य केशवकंवल वेदाचार्य; ग्रेटर कैलाश-I—प० अशोककुमार विद्यालकार गुड मण्डी—कविराज बनवारी लाल शादी भजन मण्डली; गुप्ता कालोनी—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; गोविन्द पुरी—पं० सत्यभूषण वेदालंकार; जगपुरा भोगल—पं० महेशचन्द्र भजनोपदेशक; जनकपुरी बी ३/२४—आचार्य रमेश चन्द्र; टैगोर गार्डन—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; तिमारपुर—प० हरिदत्त शास्त्री; दरियागज—पं० छज्जूराम शास्त्री; नारायण बिहार—डा० रघुनन्दन सिंह; पजाबीबाग एक्स्टेन्शन १४/३—पं० उदयपाल शास्त्री; पश्चिमपुरी जनता क्वार्टज—प० सीसराम भजनोपदेशक; बाग कड़े खाँ—पं० बरकतराम भजनोपदेशक; बिरला लाइन्स—डा० देवेन्द्र द्विवेदी; माडल बस्ती—पं० वेदपाल शास्त्री; महरौली—श्रीमती लीलावती आर्या; राजौरी गार्डन—प्रो० सत्यपाल बेदार; राणा प्रताप बाग स्वामी ओम आश्रित लड्डू घाटी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; लाजपत नगर—मास्टर ओमप्रकाश आर्य; लेखराम नगर—पं प्रकाश वीर व्याकुल; लक्ष्मीबाई नगर ई-१२०८—प० हीराप्रसाद शास्त्री; विक्रम नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; सुदर्शन पार्क प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सोहन गंज—श्री मोहनलाल गांधी; सराय रोहेल्ला—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री; श्रीनिवासपुरी—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; शादीपुर—प० रामदेव; शालीमार बाग—डा० रघुवीर वेदालकार; हौज खास डी-२०—पं० चन्द्रभानु सि. भू.

—वेद प्रचारिणी सभा द्वारा प्रचारित

आदर्श वैदिक विवाह

२४-२५ मई के दिन आर्यसमाज नरेला के कार्यकर्त्ता एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री पूर्ण सिंह आर्य के सुपुत्रों चि० सुरेन्द्र आर्य तथा चि० नरेन्द्र आर्य का शुभ विवाह क्रमश: कुमारी सरोज सुपुत्री श्री स्वरूप सिंह और कुमारी सुमित्रा सुपुत्री श्री ईश्वर सिंह काणौदा से सम्पन्न हुआ। वग्दान टीके मे केवल एक रुपया स्वीकार किया गया और नरेला से केवल २५ आर्यजनों की बारात कणौदा हरियाणा गई। श्री आर्य ने आर्यसमाज और कन्या गुरुकुल को ६५०) का पवित्र दान किया। यज्ञ के उपरान्त आर्यजनों, इष्टबन्धुओं और कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणयों का सात्विक भोजन से सत्कार किया गया।

वैदिक विवाह

दिनांक ४-५-८१ को श्री नरेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री कैलाश बहादुर मस्जिद मोठ, नई दिल्ली का शुभविवाह कुमारी लक्ष्मी सुपुत्री श्री कृष्ण पिल्ले, मद्रास के साथ आर्य समाज मन्दिर, मस्जिद मोठ में बड़ी सादगी से हुआ।

दूसरी ओर दिनांक १७-५-८१ को श्री महेश कुमार सुपुत्र श्री (स्वर्गीय) जालिम सिंह, आर के पुरम; नई दिल्ली का शुभ विवाह कुमारी मीरा आनन्द सुपुत्री श्री सुरेश आनन्द, जनकपुरी नई दिल्ली के साथ आर्यसमाज मदिर, मस्जिद मोठ मे बड़ी सादगी से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाजों के चुनाव

जालन्धर आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर—प्रधान—श्री योगेन्द्रपाल सेठ, उपप्रधान—सर्वश्री चन्दूलाल अग्रवाल, देशराज सेठी, मन्त्री—श्री प्रकाशचन्द कालडा, उपमंत्री—सर्वश्री सोहनलाल वैदिक मिस्नरी, कुन्दनलाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष—श्री सोहनलाल सेठ, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बृजलाल कालिया, लेखानिरीक्षक—श्री हसराज शर्मा।

आर्यसमाज नयाबांस—प्रधान—श्री प्रेमचन्द गोयल अनाजवाले, उपप्रधान—लाला जयनारायण तेलवाले पूर्णचन्द्र जी अरोड़ा, मंत्री—श्री ओम प्रकाश जी कपड़े वाले, उपमंत्री—श्री शिवकुमार आर्य, बाकेबिहारीलाल जी, कोशाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रनाथ गोटेवाले पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र वर्मा।

—०—

पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र रुपयों से तौले जाएंगे

लुधियाना। आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के प्रधान श्री रणवीर भाटिया ने एक भेंट में बतलाया कि समाज के वार्षिकोत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी रुपयो से तौले जाएंगे, उतने वजन की धनराशि उन्हें सभा-कार्य के लिए भेंट कर दी जाएगी।

समाज का वार्षिकोत्सव २५ से २८ जून तक मनाया जाएगा। इन दिनो महात्मा आर्य भिक्षु जी की वेद-कथा होगी। उत्सव पर आचार्य सत्यप्रिय जी, महोपदेशक पं निरजनदेव जी, डा० बालकृष्ण जी, आर्य कालेज के प्रो. रामदेव जी, श्री वेदप्रकाश शास्त्री आदि आदि विद्वान भाग ले रहे हैं। उत्सव में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, सभा-मन्त्री श्री जावेद जी, उपप्रधान श्री पृथ्वी सिंह आजाद, बहन कमला आर्या, बहन शान्ता गोड़ आदि अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर दिल्ली के प्रियव्रत जी योगाचार्य अद्भुत शारीरिक प्रदर्शन प्रदर्शित करेंगे।

—०—

आर्यसमाजें दशांश, वेद-प्रचार एवं 'आर्य सन्देश' शुल्क की राशि सभा को शीघ्र भेजें

आर्यसमाजो मे इससे पूर्व भी 'आर्य-सदेश' पत्र के माध्यम से एवं परिपत्रों द्वारा अनुरोध किया जा चुका है कि सभी आर्यसमाजें अपने सदस्यों के १९८०-८१ वर्ष में प्राप्त सदस्यता शुल्क (शतांश) की राशि का दशाश, वेदप्रचार-निधि एवं सभा मुखपत्र 'आर्यसदेश' का वार्षिक शुल्क शीघ्र सभा-कार्यालय को भिजवाने का कष्ट करे। सभा की ओर से श्री प्रकाशवीर जी 'व्याकुल' कवि जो सभा के उपदेशक हैं, वह उपर्युक्त धनराशियां प्राप्त करने हेतु सभी आर्य-समाजों मे जाएगे। आर्यसमाजो के अधिकारी अपनी समाज द्वारा दिल्ली प्रतिनिधि सभा की प्राप्तव्य निधिया उन्हें देकर अपना सहयोग सभा को प्रदान करें।

—सरदारी लाल वर्मा
सभा प्रधान

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज रघुबरपुरा सं. २ प्रधान श्री कैलाशचन्द्र गुप्त, उपप्रधान (वरिष्ठ) प० विश्वदेव शास्त्री, उपप्रधान श्री अशोककुमार, मंत्री श्री जितेन्द्रकुमार गुप्त; उपमंत्री—श्री मोहनलाल, उप-मन्त्रिणी—श्रीमती उमारानी; प्रचार मन्त्री—श्री राधाकृष्ण आर्य; कोषाध्यक्ष—श्री घनश्याम आर्य; आयव्ययनिरीक्षक—श्री शिवराज सिंह त्यागी।

महिला समाज, रघुबरपुरा सं. २ प्रधाना श्रीमती द्रौपदी देवी, मन्त्रिणी—श्रीमती उमारानी।

आर्यसमाज किदवई नगर—प्रधान श्री रामसिंह शर्मा, उपप्रधान—श्री ओंकारशरण गर्ग एवं श्रीमती शकुन्तला सूद, मन्त्री—श्री जीवनलाल, प्रचार-मंत्री—श्री मदनपाल वर्मा, कोषाध्यक्ष-श्री राजेन्द्रनाथ मलिक, आयव्यय-निरीक्षक—श्री आर. एल. सचदेव।

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वय ग्राहक बनें —
दूसरो को बनाए
卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वय बनें —
दूसरों को बनाइए
卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
" " (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—

अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित ... प्रेस ५२७/१-सी, ... गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ · अंक ३६ | रविवार २१ आषाढ़, वि० २०३८ | ५ जुलाई १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

दिल्ली की आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं का ५ जुलाई को विशेष सम्मेलन

दिल्ली में धर्मरक्षा-महाभियान का श्रीगणेश : दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का आयोजन : सार्वदेशिक के नेता मार्गदर्शन करेंगे

नई दिल्ली। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री ने एक अत्यावश्यक परिपत्र प्रचारित कर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो एवं आर्यसंस्थाओं के पदाधिकारियो तथा समस्त आर्यजनों को राष्ट्र मे व्याप्त भीषण परिस्थिति के प्रति सचेत कर सूचना दी है—'समाचार पत्रों द्वारा भली प्रकार सब को यह जानकारी प्राप्त हो चुकी है कि अरब देश पेट्रोल की कमाई से उपलब्ध धन के प्रयोग द्वारा भारत के इस्लामीकरण का सपना ले रहे हैं। इस नापाक इरादे को पूरा करने के लिए कई मजहबी सस्थाओ के स्थान-स्थान पर अधिवेशन हो चुके हैं और उनके उसी कार्यक्रम के आधार पर पिछले दिनो अलीगढ़, मुरादाबाद और तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम आदि स्थानो पर जो कुछ हुआ उससे जनता भली प्रकार परिचित है।

दिल्ली में धर्म-रक्षा महाभियान

इस भीषण परिस्थिति का सामना करने के लिए आर्यसमाज की शिरोमणि सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने ३१ मई के अधिवेशन मे सारे देश मे धर्मरक्षा महा-अभियान चलाने का निश्चय किया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार सभी प्रान्तीय सभाए इस महाभियान को कार्यान्वित करने के लिए समस्त आर्यसमाजो एव आर्यसस्थाओ के कार्यकर्त्ताओ के सम्मेलन आयोजित करवा रही है। दिल्ली की आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ताओ का एक सम्मेलन आगामी रविवार दि० ५ जुलाई, १९८१ के दिन दोपहर ढाई वजे आर्यसमाज मन्दिर, करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५ मे आमन्त्रित किया गया है। प्रसन्नता का विषय है कि प्रदेश के आर्य प्रतिनिधियो के मार्गदर्शन के लिए इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) एव सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी (त्यागी) पधारेगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदय ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो, आर्यसस्थाओं के पदाधिकारियो, सदस्यों एव आर्यजनो से अनुरोध किया है कि 'सार्वदेशिक सभा द्वारा आहूत धर्मरक्षा महाभियान मे अपना सक्रिय योग देने के लिए इस कार्यकर्त्ता अधिवेशन मे समस्त अधिकारी वर्ग एव सभी कार्यकर्त्ता निश्चित समय पर पधार कर अपना उत्तरदायित्व निबाहे, केवल इसी प्रकार महाभियान की सफलता मे आप अपना सक्रिय सहयोग देकर पुण्य के भागी बन सकते हैं।'

धर्मान्तरित तथा बिछड़े भाइयों को वापस लेंगे

शुद्धि-चक्र में तेजी लाओ—अ० भा० शुद्धि सभा का आह्वान

नई दिल्ली। अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की प्रमुख आर्य सस्थाओं एव आर्य हिन्दू जनों की एक विशेष बैठक शुक्रवार ता० २६ जून, १९८१ को सायं काल ६ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली में प्रो०रामसिंह जी की अध्यक्षता में हुई।

दक्षिण भारत में हुए हरिजनों के धर्म-परिवर्तन एवं मुरादाबाद, अलीगढ़ में बिगड़ी हुई साम्प्रदायिक परिस्थिति के मूल में अरब राष्ट्रों से आने वाली धनराशि के भीषण खतरे पर कार्यकर्ताओ ने अपने विचार प्रकट किए और निश्चय किया गया कि प्रत्येक कार्यकर्ता इस सम्बन्ध मे सावधान और सन्नद्ध रहे। प्रत्येक हिन्दू आर्य संस्था एव कार्यकर्ता को प्रयत्न करना चाहिए कि धर्मान्तिरित हरिजन तथा दूसरे लोगो को पुनः हिन्दू बनाया जाए और दूसरे धर्मावलम्बी पुराने बिछड़े लोगों से निरन्तर सम्पर्क कर उन्हें भी हिन्दू धर्म की अच्छाइयो और विशेषताओ का परिचय देकर फिर से अपने साथ लाया जाए।

□

पूर्वी अफ्रीका के यात्री दल

भारत में सत्यार्थप्रकाश का वितरण करेंगे

नैरोबी। आर्य प्रतिनिधिसभा पूर्वी अफ्रीका के तत्त्वावधान मे एक बड़े प्रतिनिधि मण्डल के अक्तूबर मास में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह के अवसर पर उदयपुर पधारने की उम्मीद है। विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा केन्या के प्रतिनिधि मण्डल को गवर्नमेंण्ट रेस्ट हाउस मे ठहराने की व्यवस्था करवा रही है।

इस शताब्दी समारोह के सिलसिले में पूर्वी अफ्रीका में प्रवासी भारतीयो के यात्री-दल ७-८ दिन की यात्रा के लिए वातानुकूलित बसो की व्यवस्था कर रहे हैं। वे इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत मे सत्यार्थ प्रकाश के वितरण की व्यवस्था करेंगे। यह भी प्रसन्नता की बात है कि सभी भारतीय भाषाओ मे सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद हो गया है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद-मनन

श्रेष्ठ संस्कृति

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितार. स्याम।
सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्नि ॥ यजु: ७-१४.

ऋषि:—अवत्सार: काश्यप: देवता— विश्वेदेवा: । छन्द: विराड् जगती

शब्दार्थ--(देव सोम) हे दिव्य सोम राजन् हम (ते) तेरे द्वारा (अच्छिन्नस्य) निरन्तर प्रवाहित (सुवीर्यस्य) वीर्य और पराक्रम तथा (रायस्पोषस्य) समृद्धि को स्वय प्राप्त करके तदनन्तर (ददितार: स्याम) अभावग्रस्तो को देने वाले हों।

(सा) पहले स्वय प्राप्त करके अभावग्रस्तो का दान करने वाली (सस्कृति.) सम्यक् आकृति की धारिका सस्कृति (प्रथमा) सबसे उत्तम और विकासशील तथा पूर्ण है, और अतएव (विश्ववारा) सबके द्वारा स्वीकार करने योग्य है। और (स.) इस सस्कृति का उत्पादक तथा प्रसारक सोम राजा भी (प्रथम) सर्वश्रेष्ठ है क्योकि वह (वरुण:) प्रजा के रोग, कष्ट और दु:ख का निवारण करने वाला (मित्र.) सबके साथ मित्रता का समान व्यवहार करने वाला और अत एव (अग्नि) सब को आगे ले जाने वाला सच्चे अर्थों मे नेता होता है।

निष्कर्ष—१. पहले अपने लिए वीर्य-पराक्रम-समृद्धि और पोषण जुटाने चाहिए। तदनन्तर अभावग्रस्तो मे इनका वितरण करना चाहिए। जो अपने लिए जुटाए बिना दूसरो को देने लगेगा, वह देर तक मेवा नही कर सकेगा। और जो अपन लिए ही जुटाता रहेगा, वह स्वार्थी परिग्रही कहलाएगा। दोनो स्थितिया अधूरी हैं।

२. इसलिए उत्तम सस्कृति वह है, जो स्वय सशक्त बनकर दूसरो की सेवा करना सिखाती है।

३. वही शासक उत्तम है जो अपनी प्रजा के कष्टो-दुखों का निवारण करता है, समान व्यवहार करता है और सबको आगे बढने के समान अवसर प्रदान करता है।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि पदार्थ (शब्द का धातुर्ज अर्थ) सकेत करता है कि जो राजा अपनी प्रजा के प्रत्येक वर्ग के उत्कृष्ट व्यक्तियों का संरक्षण करेगा और प्रजा के अभावों से कष्टों का सदा निरीक्षण करेगा—उसके राज्य के सब विद्वान, अधिकारी और प्रजाजन उससे सन्तुष्ट रहेगे। इसके लिए राजा को छन्द नाम विराड् जगती के शब्दार्थ से संकेतित उपायो को अपनाना चाहिए अर्थात (क) स्वय सब गुणों से दीप्त होकर सच्चे अर्थों मे राजा बनना होगा। (ख) प्रजा की इच्छाओ और आवश्यकताओ को पूर्ण करने का प्रयत्न करना होगा। (ग) उन्हे समान अवसर, न्याय और सहायता प्राप्त करानी होगी। (घ) इन तीनो की पूर्ति के लिए स्वय सदा कर्मण्य (जागरूक) रहकर अपने अधिकारियो को भी प्रजा की सेवा मे व्यस्त रखना होगा।

अर्थपोषक प्रमाण—विराड् जगती-विराट् १. विराजनात् स्वय दीप्त राजा बनना होगा २. विराधनात् राध्र ससिद्धौ ३. विप्रापजाप्—विशेष रूप से प्राप्त कराना होगा और ४. जगती गम्लृ गतौ—सदा गतिशील जागरूक रहना होगा। प्रथमा—प्रथ विस्तारे। अवत्सार: काश्यप: सारं+अवति, पश्यतीति कश्यप: उसमे प्रवीण=काश्यप वरुण:—वृञ् वरणे–दु.ख कष्ट का निवारण करने वाला मित्र:—मित्रवत् व्यवहार करने वाला. अग्नि:—अग्रे+नयति। अग्निर्वै पथ: कर्ता—शत ११-१-५-६.

—मनोहर विद्यालंकार
५२२ ईश्वर भवन, खारी बावडी,
दिल्ली-६

—०—

लोक चिन्तन

अमर शहीद बाबी सैण्ड्स

—डा० विजय द्विवेदो

बाबी सैण्ड्स मानव मूल्यों एवं मानव महत्ता में अटूट विश्वास रखने वाला, अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करने वाला, महान देशभक्त—दीर्घ ६६ दिनों के अनशन के बाद बलिदानियों की परम्परा, गौरव एव गरिमा को अमर करता हुआ इतिहास के पृष्ठो पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। बाबी सैण्ड्स ने यह अपूर्व बलिदान उत्तर आयरलैंड की जेलो में बन्दी बनाकर रखे जा रहे क्रान्तिकारियों के साथ होने वाले अमानवीय आचरण को दूर करने तथा उत्तर और दक्षिण आयरलैंड को मिला कर एक स्वाधीन गणराज्य की स्थापना के लिए किया है। २६ वर्ष की अल्पायु वाला सैण्डस अभी हाल ही में ब्रिटिश संसद के लिए चुना गया था। वह चाहता तो आराम से ससद-सुख भोग सकता था, भारतीय नेताओ की तरह दूसरों को त्याग-तपस्या-बलिदान का उपदेश दे सकता था, किन्तु उसने अपने लिए कुछ भी नहीं चाहा सोद्देश्य मृत्यु के सिवा। उसकी माग थी—आयरिश क्रान्तिकारियों को जो ब्रिटिश जेलो मे घुट-घुट कर मर रहे हैं उन्हें राजनीतिक बदियों का दर्जा, सुख तथा सुविधाए दो अथवा भूखा मरने दो।

इतिहास अपने को दोहराता है, गत जनागत बनकर फिर लौट आता है। सेण्ड्स की शहादत से यतीन्द्रनाथ दास की याद आ रही है। जतीन ने भी इसी तरह इन्ही उद्देश्यों को लेकर, इसी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लाहौर जेल मे ६२ दिन तक अनशन करके आत्माहुति दी थी और क्रान्तिकारियो के इतिहास में अपना नाम अमर किया था। सैण्ड्स और जतीन के लक्ष्यो तथा कार्य प्रणाली मे अद्भुत समानता देख कर ऐसा लगता है जैसे अग्रेजी शासन से बदला लेने स्वयं जतीन ही बाबी सैण्ड्स के रूप मे अवतरित हुए हों। आयरलैंड के स्वाधीनता आन्दोलन में सैण्ड्स के पहले मैकस्वीनी तथा बाद में फासीसी ह्यूज और अभी-अभी रेमण्ड क्रीश आमरण अनशन करके अहिंसा को कायरो का नही वीरों का साधन प्रमाणित कर चुके हैं। अहिंसा विश्व को भारत की देन है। यह उनका अमोघ अस्त्र है जो जीव मात्र की परवशता, पीडा, यातना तथा अन्याय को देखकर मरणजयी बन दूसरों को सत्पथ का ज्ञान कराने के लिए ग्रहण करते हैं। म० महावीर, म० बुद्ध, गांधी जी ने इसी अहिंसा को अपना साधन बनाया था। ससार आज उनका संदेश भूल चुका है, किन्तु इससे न तो महापुरुषों का महत्त्व कम हुआ है और न अहिंसा की शक्ति। मानवतावादियों, देश भक्तो और आजादी के दीवानों का आत्मदान भी इस से नहीं रुका है।

बाबी सैण्ड्स और उसके साथियों के बलिदान पर ब्रिटिश शासकों की अमानवीय हत्यारी नीतियों की जितनी निन्दा की जाए कम है। इससे ससार भर के सत्ताधारियों को भी शिक्षा लेनी चाहिए। उन्हें यह जान लेना चाहिए कि शिवि 'दधिचि से देव जाति, मातृभूमि पर शीश चढाने की जो अक्षय परम्परा आरम्भ हुई है वह ज्योति पुंज बन कर पुण्यपथ के असंख्य पथिकों को सत्य, धर्म मानवता के पुजारियो को अपनी अस्थियां जलाने की प्रेरणा देती रहेगी। त्याग और बलिदान यही मानवता के आभूषण हैं। वेदों मे इन्हें ही मानव का सर्वश्रेष्ठ धर्म बताया गया है।

—म० पू० च० कालेज, बारीपदा (उड़ीसा)

संगीत के आधुनिक वाद्यों द्वारा वेद-प्रचार

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष ब्र० विजय-भूषण आर्य द्वारा हरिद्वार मे वैदिक मोहन आश्रम पंजाब सिंध क्षेत्र, व हर की पौड़ी आदि स्थानो पर वैदिक प्रचार किया गया। बच्चों को आधुनिक वाद्यो द्वारा भजन सिखाए गए व उन्हें प्रतिज्ञाए भी कराई गई। हर की पौडी पर शका-समाधान बहुत सुन्दर ढग से किया गया। एक बगाली स्वामी जी से वहा शास्त्रार्थ भी हुआ, केवल १५ मिनट मे ही वह मैदान छोड़कर भाग गए। आर्यसमाज ज्वालापुर में रविवार के प्रात कालीन सत्संग में मधुर संगीत के साथ भजनोपदेश का कार्य-क्रम भी हुआ।

—०—

डा० सूर्यदेवजी शर्मा द्वारा पचास हजार रुपए का दान

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान तथा डी० ए० वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक डॉ० सूर्यदेव जी शर्मा मन्त्री आर्यसमाज अजमेर ने अपने जीवन की सात्विक संचित आय की पचास हजार रुपये की की राशि आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर को दान में दे दी है। इसके उपलक्ष्य में शिक्षा सभा ने उनके नाम पर सूर्यदेव आर्यसमाज आर्य माध्यमिक विद्यालय की स्थापना करने का निश्चय किया है। इस नवीन स्कूल का शिलान्यास राजस्थान के शिक्षा मन्त्री करेंगे।

—०—

विजय प्राप्त करो !

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥

हे मनुष्यो, आगे बढ़ो, विजयी बनो, इन्द्रस्वरूप भगवान् तुम्हें सुख और शान्ति दें, तुम्हारी बाजुएं अदम्य हों, फलतः तुम अजेय हो जाओ ।

अवसर है, काम करने का

महाभारत का प्रसग है । वीर योद्धा अर्जुन को एक दूरस्थ मोर्चे पर उलझा कर कौरव पक्ष के छह योद्धाओ ने मिलकर उनके सुपुत्र बाल योद्धा वीर अभिमन्यु को धोखे से मार डाला था । उस समय श्रीकृष्ण जी ने अभिमन्यु की वीर माता सुभद्रा को परामर्श दिया था--'यह घडी रोने की नही है, यह है अवसर कायर शत्रु को पराजित करने का । 'सर्वे तां गतिं यान्तु याभिमन्योर्यशस्विन.' आज के युद्ध मे एकाकी अभिमन्यु ने जिस प्रकार कौरव महारथियो का सामना कर उनसे दो-दो हाथ किए हैं, इस लड़ाई में वीर अभिमन्यु को जो सद्गति प्राप्त हुई है, उसे प्राप्त करने के लिए योद्धागण अनेक जन्मो तक तरसते हैं ।'

उसदिन सजय गांधी की बरसी पर उनकी मा इन्दिरा गाधी ने देशवासियो विशेषत: नवयुवको से अनुरोध किया था कि आज का दिन आसू बहाने का या शोक करने का नहीं है, बल्कि साहस, निर्भीकता तथा कार्य की लगन से प्रेरणा ग्रहण करने का है । आज आर्य हिन्दू जाति के समक्ष भी इसी प्रकार भयभीत होने का अवसर नही है, प्रत्युत समय एव परिस्थिति के अनुसार अपने दायित्व को निबाहने का है । इसी पृष्ठ पर 'चिट्ठी-पत्री' स्तम्भ के अन्तर्गत जालन्धर नगर के सुधी विद्वान् श्री सत्यदेव विद्यालकार का एक पत्र प्रकाशित हो रहा है । उसमे उन्होने अन्न एव जीवनोपयोगी वस्तुओं की महगाई एवं अशिक्षा निवारण के दुख को दुख न मानने पर चिन्ता व्यक्त की है और स्वतन्त्र भारत देश में ईसाइयों तथा मुसलमानो से हिन्दुओ की रक्षा की असमर्थता को उतना महत्त्वपूर्ण नहीं माना है ।

रोटी-कपडा-मकान की समस्या विश्वव्यापिनी है और युग की पुकार है,उससे जन-जन, राष्ट्र-राष्ट्र जूझ रहा है, जहा तक बहुसख्यक होते हुए भी अपार विदेशी धन के बल पर भारत की बहुसख्यक विशेषत निर्धन पददलित जनता को विधर्मी बनाने के षड्यन्त्र का प्रश्न है, उसे केवल आर्यसमाज जैसा सास्कृतिक संगठन ही अपनी पूरी शक्ति लगाकर सुलझा सकता है । कथित धर्म निरपेक्षता के नाम पर राष्ट्रीय सरकार अपना दायित्व निबाहने मे संकोच कर रही है, फलत: जनता को जाग्रत कर विदेशी धन के बल पर देश को विधर्मी बनाने के कुचक्र को आर्यसमाज आदि सास्कृतिक संगठन ही राष्ट्रीय महाभियान चला कर ही विफल कर सकते हैं । सचमुच यह अवसर व्यर्थ की चर्चाओ का न होकर जनता को भटकने से रोकने का है और अपना दायित्व निबाहने का है ।

——०——

'संघे शक्ति कलौ युगे ।'

वर्षों पहले की बात है । उस समय दिल्ली में बहुसंख्या में होकर भी हिन्दू सामान्य दंगों और आपसी संघर्षों में अल्पसंख्यक सम्प्रदाय से बुरी तरह पिट जाते थे । उस समय दिल्ली की निर्बल असंघटित आर्य जाति को संघटित और सुदृढ करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अखाड़ों और व्यायाम शालाओं में जाकर आत्मरक्षा के लिए शारीरिक व्यायाम और कसरत अपनाने की सीख दी थी । युवकों द्वारा आत्मरक्षा के लिए संघटित होने एवं आर्यवीर दल आदि के निर्माण से भयभीत जनता में खोए हुए आत्मविश्वास ने स्थान ग्रहण किया था । आज देश में आन्तरिक अव्यवस्था एवं बाहरी आक्रमण की जैसी विभीषिका बढ रही है, उसे देखते हुए सामाजिक एवं राष्ट्रीय बुराइयों को दूर करने के लिए सामाजिक एव राष्ट्रीय सगठन का सुदृढ करना आवश्यक है ।

आज देश में सामान्य आचार-व्यवहार, सामाजिक स्थिति निरन्तर अवनत होती जा रही है । चोरी-डकैती, लूटपाट, राहजनी, नारी-अपमान, हत्या,ठगी-धूर्तता, नशाखोरी, लूट-कूट कर खाने की बीमारी बढ़ती चली जा रही है । आज दुष्प्रवृत्तियां बढ रही हैं, सामाजिक ऊंच-नीच की दरार फैलती जा रही है । समाज के निर्बल, पीडित एवं शोषित वर्ग या तो उपेक्षित हैं अथवा उनके बलबूते पर नई शक्तिया पनप और विकसित हो रही हैं । आज समाज की नैतिकता समाप्त हो रही है,कानून का बन्धन शिथिल हो रहा है । राजनीतिज्ञो और राजनीतिक दलो को जनता का दुख-दैन्य पीडित नही करता । सत्ता और धन के स्वामी अपनी-अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए प्रयत्नशील हैं ।

स्थिति का समुचित आकलन इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए विवश करता करता है कि स्थिति के सुधार के लिए जनसेवी जन संगठनो को सुदृढ करना ही चाहिए । हाथ की अगुलिया पृथक् रहकर निर्बल होती हैं, परन्तु जब वे एक मुठ्ठी या पजे मे मिल जाती हैं तो उनकी शक्ति अद्वितीय हो जाती है, इसी प्रकार बढने के लिए पैरो, कार्य करने के लिए हाथो, सोचने-समझने के लिए मस्तिष्क-बुद्धि का उपयोग करना आवश्यक होता है । देश की आन्तरिक अव्यवस्था को दूर करने के लिए आज आर्यसमाज को आर्यवीर दल एवं आर्ययुवको एवं युवतियो के माध्यम से एक व्यापक राष्ट्रीय सगठन बनाना ही चाहिए । प्रत्येक युवा को कराटे, युयुत्सु एव नई विधाओ मे आत्मरक्षा की कला मे दीक्षित करना चाहिए । इस कलिकाल मे सघटन की शक्ति अपूर्व होती है, इसके समुचित एकत्रीकरण, सुमज्जा और उपयोग से सामाजिक एव राष्ट्रीय क्षेत्र मे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन सम्भव है ।

——०——

चिट्ठी-पत्री

अपने देश में ही रक्षा में असमर्थ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रै-वार्षिक अधिवेशन मे नए प्रधान मान्य श्री रामगोपाल शालवाले जी ने धर्मरक्षा महाभियान की घोषणा की है यह इस्लामीकरण और ईसाईकरण के विरुद्ध है ।

मैंने समझा था कि महामान्य प्रधान जी की यह धर्मरक्षा महाभियान घोषणा पाकिस्तान अथवा बगला देश मे हिन्दुओं की रक्षा के लिए है, पर पढने से पता लगा कि यह खतरा भारत में है ।

स्वतन्त्र भारत मे हिन्दुओ की संख्या ईसाई और मुसलमानो से कई गुणा अधिक है । जब से मैंने होश सम्भाला है—लगभग साठ साल से ये खतरे की घण्टियां सुन रहा हू । क्या स्वतन्त्र भारत के ३४ वर्ष बाद भारत मे भी हिन्दू अपनी रक्षा मे समर्थ नही हो पाए ? क्या आने वाले सौ वर्ष तक हो जाएंगे ?

भारत के बाहर जो इस घोषणा को पढेंगे वे क्या समझेंगे—अपने देश में इतने गुना होते हुए भी हिन्दू ईसाई और मुसलमानो से जूते खा रहे हैं । और जो सामान्य हिन्दू-मुसलमान-ईसाई भूखा मर रहा है । ८) किलो खाड, ३) किलो पानी मिला दूध ६) किलो दाल, ८) किलो भुना चना, सीमेण्ट आदि के नितान्त अभाव मे नरक भोग रहा है—उसका कोई दुःख नही ।

उसका बच्चा पढ नही सकता, और पढे तो रोटी कमा नही सकता—उसका कोई दु.ख नही ।

—सत्यदेव विद्यालकार, शान्ति सदन, १४५/४ सैण्ट्रल टाउन, जालन्धर नगर

—✱—

श्री नारायण दास जुनेजा को श्रद्धांजलि

बम्बई की आर्यसंस्थाओं द्वारा आर्यनेता के प्रति शोक अभिव्यक्त

बम्बई । आर्यसमाज सान्ताक्रुज (बम्बई) के प्रधान एव बृहत्तर बम्बई के लोकप्रिय आर्यनेता श्री नारायण दास जुनेजा का विगत '' जून १९८१ के दिन बम्बई में ६६ वर्ष की उम्र मे अचानक देहावसान हो गया । सोमवार ८ जून १९८१ के दिन बम्बई की सभी आर्यसस्थाओ एवं आर्यसमाजी भाई बहनो की एक श्रद्धांजलि सभा सान्ताक्रुज आर्यसमाज भवन मे हुई । इस सभा मे दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए तथा शोकसन्तप्त परिजनो को सान्त्वना के लिए प्रार्थना की गई और कहा गया कि स्व० जुनेजा जी त्याग और सेवा के प्रतीक थे, वह जिस लोक मे भी जाए उन्हें मृत्युलोक से सच्चे अमरत्व की प्राप्ति हो ।

हरिजनों से

जो तुमको ईसाई-मुसलमां बनाने आएं उनको ही आर्य बनाओ तुम

कुमारी तृप्ता शर्मा

इस्लाम व ईसायत की काली घटाएं,
भारत के आकाश पर घनीभूत होती जा रही हैं।
धन के लालच मे आकर,
हरिजन हरि का नाम छोड़ते जा रहे हैं।
क्यो भूल गए वाल्मीकि की सन्तान हो तुम,
क्यो भूल गए रविदास की औलाद हो तुम,
क्यो भूल गए गांधीजी की रचनाएं हो तुम,
क्यों भूल गए देव दयानन्द की आशाएं हो तुम ?
'ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता हैं तुम्हारे ही वशज,
'रामायण' को लिखने वाले हैं तुम्हारे ही तो पूर्वज,
क्यो अपनी खुदी को भूल चले तुम।
अपना प्यारा धर्म छोड चले तुम।
ऐ ऐतरीय (शुद्रा का पुत्र) के नौनिहालो—
'चरैवेति-चरैवेति' का उपदेश
स्वय रोहित को देकर, 'क्यो'?
अपने कदमो को पीछे मोड चले तुम।
ऐ गांधीजी के प्यारे पुत्रो—अब भी समय है—
'जागो' अब्दुला गाधी 'से' पुन हीरालाल गाधी बन जाओ'
'मजा तो तब है जो तुमको ईसाई-मुसलमा बनाने आए,
उनको ही आर्य बनाओ तुम।

संग का प्रभाव

एक बार एक सैनिक घोड़े पर सवार होकर शिकार के लिए जंगल जा रहा था। रास्ते मे डाकुओं की एक बस्ती पडी। एक घर के दरवाजे के साथ रखे पिंजरे मे बैठा एक तोता चिल्ला उठा—'भागो, पकड़ लो, इसे मार डालो, इसका घोड़ा और माल-असबाब छीन लो।'

तोते की आवाज से सिपाही सतर्क हो गया। उसने अपना घोड़ा दौड़ा दिया और घने जगल मे रहने वाले एक साधु की कुटिया के पास पहुंच गया। इस कुटिया के बाहर भी एक पिंजरा लटका था। पिंजरे में बैठे एक तोते ने कहा—'भाई आओ, थक गए हो, विश्राम करो, तुम्हारा स्वागत है।'

आवाज सुनकर साधु महाराज अपनी कुटिया से बाहर पधारे और उन्होने उस थके हुए सिपही की अगुआनी की। सिपाही ने पूछा—'महाराज, एक बडा सवाल है। क्या आप उसका जवाब दे सकेंगे? अभी मैं थोड़ी देर पहले डाकुओ की बस्ती से गुजरा तब वहाँ के एक तोते ने मुझे पकडने और लूटने की बात कही, परन्तु आपकी कुटिया के तोते ने मीठी-मीठी बात कर मेरा स्वागत किया। महाराज एक ही जाति के दो परिन्दो यह फर्क कैसा ?'

यह सुनकर साधु का तोता बोल उठा—
'अहं मुनीनां वचनं श्रृणोमि, श्रृणोत्ययं यद् यवनस्य वाक्यम्।
न चास्य दोषो न च मे गुणो वा संसर्गजा दोषगुणाः भवन्ति।'

मैं साधुओं की वाणी सुनता हूं, वह तोता क्रूर डाकुओं की बात सुनता है। न उसमें कोई बुराई है और न मेरे में कोई अच्छाई है। अच्छी या बुरी संगत से ही गुण या दोष पैदा होते हैं।

—नरेन्द्र

वन्दन है महर्षि दयानन्द का

वन्दन हैं ऐसे महर्षि दयानन्द का जो जिज्ञासु, तत्त्वज्ञानी, मनस्वी जन, हर्षविवाद मय, वासना ग्राहसंकुल, मृगमरीचिका व्याप्त असार संसार का त्याग कर समस्त मानव जाति का कष्टोन्मूलन करने को उद्यत हो परमार्थ पथ पर चलकर सत्य की गहन साधना मे अहर्निश तत्पर होते हैं। अपार धन वैभव, सुत कलत्र को ठोकर मारकर, परमार्थ चिंतन में लीन हो विषय पंकिल लोलुप मन को विषयों से सर्वथा हटाकर भगवान का गुणानुवाद करने से ही जिनकी रसना आप्लावित रहती है।

नमस्कार है ऐसे तपस्वी को जो सच्चिदानन्दघन परब्रह्म की मधुर मोहनी मूर्ति को पलभर भी तनसे वियुक्त नहीं होने देते। क्या पुरस्कार क्या तिरस्कार क्या मधुर, क्या कटु, क्या सुगन्ध क्या दुर्गंध, क्या सपत्ति क्या विपत्ति, क्या प्रशसा क्या निन्दा सग मे सम भाव से विचरते हैं, जो चराचर विश्व मे एकी भाव से स्थित, परोपकार परायण दयार्द्र चित, भगवद् भक्ति मग्न परमानन्द में सतत संलग्न है, जो श्रुति रसायन द्वारा मुमूर्ष राष्ट्र के अतिजर्जर कलेवर में अपार बल और अदम्य शक्ति का संचार करके भी सर्वथा अनासक्त रहकर भव-चरणारविन्द में अपने को समर्पित कर देते हैं। जिनकी एकही भृकुटि से तीनों लोक विकम्पित हो उठते हैं, जो इतने महान् हैं, कि मणिरत्न मंडित सिंहासन विविधाभरण भूषिता कामिनिया अपार धन-राशि जिनके चरण-कमलों की रज का भी स्पर्श नहीं कर सकती, [उन योगी महात्माओं में सबसे आग्रणी, विपुल बलधारी शस्त्र शास्त्र निष्णात दुष्ट दानव दमनकारी, दीन दुर्बलता पहारी, सत्यव्रत धारी वेदविद्या प्रचारी, पददलित मानवोद्धारक स्वातन्त्रीयनादोद्घोषक, अविद्यन्धकार निर्मूलक, अनाथ प्रतिपालक, असहाय सहायक, भव्य भावनोद्बोधक, आर्य साम्राज्य संस्थापक, अनार्योन्मूलक स्वदेश स्वजाति रक्षक, अन्धविश्वास रूढ़िवादोन्मूलक, ऐक्य प्रचारक अनैक्य निवारक, सर्वप्रथम राष्ट्र-भाषा प्रसारक, सत्यार्थ प्रकाश प्रसारक योगिराज पदाधिष्ठित महर्षि दयानन्द को मेरा, समस्त मानव जाति का शतशः कोटिशः प्रणाम (इदं नम ऋषिभ्य।

लेखक :
सत्यभूषण वेदालंकार

तीनों वर-वधु यशस्वी हों

प्रसन्नता का विषय है कि आर्यसमाज के विद्वान महोपदेशक एवं गुरुकुल कागडी के तीन स्नातक बन्धुओ के पिछले दिनों वैवाहिक सम्बन्ध हुए हैं। श्री विष्णुदेव विद्यालकार सुपुत्र श्री मधुसूदन प्रसाद का शुभविवाह ६ जून को साहबगज बिहार मे आयु० लक्ष्मी सुपुत्री श्री नारायण साहू से सम्पन्न हुआ। श्री गणेश विद्यालकार सुपुत्र श्री शिवशकर प्रसाद का शुभविवाह आयु० पुष्पा सुपुत्री श्री शिवकुमार केसरी के साथ १५ जून को जगदल पश्चिम बगाल मे सम्पन्न हुआ। श्री सत्यकाम विद्यालंकार सुपुत्र श्री कुशलराम जी आर्य का शुभविवाह आयु० गायत्री सुपुत्री श्री शकरदत्त जी शर्मा के साथ १५ जून को दूधवा राजस्थान मे सम्पन्न हुआ।

आर्यसन्देश-परिवार की ओर से तीनो वर-वधुओं के सुखी, दीर्घ एव यशस्वी वैवाहिक जीवन की मंगलकामना है।

गांव-गांव, नगर-नगर में युवाशक्ति संगठित करो

युवाशक्ति ही स्वस्थ समाज की प्राणशक्ति : आर्यवीरों को नई प्रेरणा गुरुकुल कांगड़ी में सार्वदेशिक आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर समारोह सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी। 'आप लोग ग्राम-ग्राम और नगर-नगर मे जाकर युवा शक्ति को आर्य ऋषियों द्वारा निर्देशित दिनचर्या मे नियुक्त करेंगे'—इन शब्दों मे सार्वदेशिक सभा द्वारा गुरुकुल कांगड़ी आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर के मुख्य अतिथि एव उत्तर प्रदेश के संस्कृत विभाग के निदेशक महोदय ने शिविर मे प्रशिक्षित आर्यवीरो का उद्बोधन किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने राष्ट्र की सर्वाधिक बहुमूल्य सम्पदा युवाशक्ति को संगठित करने के लिए जून के दो सप्ताहो मे सार्वदेशिक आर्य-वीर दल के सचालन प० बाल दिवाकर हस के नेतृत्व मे गुरुकुल कांगड़ी के प्रागण मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के शिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर का आयो-जन गया था। इस शिविर मे उत्तर प्रदेश, पजाब, हरियाणा, राजस्थान मध्यप्रदेश, बिहार, बगाल, आन्ध्र प्रदेश, जम्मू-कश्मीर आदि अनेक राज्यो के स्वस्थ सुगठित आर्यवीर युवक एकत्र हुए थे। शिविर का उद्घाटन करते हुए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवस्थापक डॉ० हरिप्रकाश ने कहा—'निसन्देह किसी भी सगठन मे युवाशक्ति उसकी प्राणशक्ति होती है। इस राष्ट्रीय प्राणशक्ति का सवर्द्धन स्वस्थ समाज और व्यक्ति निर्माण की दिशा मे रचनात्मक पग है।'

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने आर्यवीरो का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हे कर्मक्षेत्र में उतर कर दलितो का सरक्षण करना चाहिए। इस समय धन या भूमि के प्रलोभनो से धर्म-परिवर्तन आत्मघात के समान है। श्री त्यागी ने इस प्रकार के धर्मपरिवर्तन पर राष्ट्रीय सरकार द्वारा तुरन्त प्रतिबन्ध लगाने की माग की।

शिविर में व्यायामाचार्य ब्रह्म० वेदव्रत बम्बई के शिक्षक रामसिंह चौहान, हरि-याणा आर्यवीर दल के शिक्षक श्री सत्यपाल आर्य, आन्ध्रप्रदेश के सूबेदार व्यकटेश्वर आदि ने सामान्य व्यायाम, योगासन, लाठी, छूरे, युयुत्सु, सैनिक प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षणार्थियो का महात्मा आर्य भिक्षु श्री ओम्प्रकाश त्यागी, गुरुकुल कांगड़ी के उप कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा, राजकीय आयुर्वेद महा विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ० सुरेशचन्द्र शास्त्री, श्री बाल दिवाकर हस, प० फूलसिंह शास्त्री एवं जितेन्द्र जी आदि ने बौद्धिक पथ-प्रदर्शन किया।

उपसचालक श्री देवदत्त आचार्य ने आर्यवीरो से सद्गुणो का व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा करवाई। आर्यवीरों ने वृक्षारोपण भी किया। कुलपति श्री हूजा ने इस नई वीथी को आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्वत् २०३८ की सज्ञा दी।

—०—

इस वर्ष का वेदप्रचार सप्ताह स्वामी वेदानन्द जी की स्मृति में मनाएं

—के० एल० गुलाठी

आर्यसमाज के जिन विद्वानो ने वेद का प्रचार तथा प्रसार का कार्य किया, उनमें पांच चोटी के विद्वानों में श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ महा-राज एक हैं। एक प्रकार से उनके स्तर के वेदों के विद्वान् और व्याख्याता कम ही होंगे। स्वामी जी का सन्यासी नाम स्वामी दयानन्द तीर्थ था, परन्तु वेदों में उनकी अगाध श्रद्धा, भक्ति और रुचि को देखकर आर्यजगत् में उनका नाम स्वामी वेदानन्द प्रसिद्ध हो गया। वेदो के बारे मे उनका पाण्डित्य और लिखा गया साहित्य देखकर बहुत से लोग स्वामी दयानन्द को वेद-उद्धारक और स्वामी वेदानन्द जी को 'वेद प्रचारक' और 'वेद प्रसारक' कहते हैं।

स्वामी वेदानन्द जी ने विद्याध्ययन और वेद-विद्या तो काशी (बनारस) में प्राप्त की थी, परन्तु उनका वेद-प्रचार का कार्य पंजाब, हरियाणा, देहली, उत्तर प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर प्रान्तो में अधिक रहा। वैसे इस कार्य के लिए वह समस्त देश मे घूमे। लाहौर में पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुदत्त भवन में पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के साथ कई वर्षों तक दयानन्द-उपदेशक-महाविद्यालय में अध्या-पन कार्य करते रहे। स्वामी जी से पढ़े उनके हजारों शिष्य सारे भारतवर्ष मे फैले हुए हैं। जिन लोगों ने किसी आर्य-समाज के वार्षिक उत्सव पर स्वामी जी का वेदोपदेश या किसी सम्मेलन में वेद सम्बन्धी भाषण सुना होगा, उनके सामने मच पर विराजमान, वेद मन्त्रो का उच्चारण तथा उनकी व्याख्या करती उनकी सौम्य और ओजस्वी आकृति आज भी उनकी आंखो के सामने घूम जाती होगी।

देश के बटवारे के पश्चात् श्रीस्वामी जी दिल्ली आए और उन्होने विरजानन्द वैदिक संस्थान की स्थापना की। १९५६ मे उनकी दिल्ली मे २६ नवम्बर को हृदय की गति रुक जाने के कारण स्वर्गवास हो गया।

स्वामी जी का स्वर्गवास हुए पच्चीस वर्ष हो गए हैं। यह वर्ष (नवम्बर १९८१) उनका रजत जयन्ती पुण्यवर्ष है। देश के बटवारे के कारण तथा देश की राजनीति मे परिवर्तन के कारण पंजाब आर्य प्रति-निधि सभा के तीन प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ मे बट जाने के कारण पिछले पच्चीस वर्षों मे काफी लोग स्वामी जी के नाम, काम और शक्ल को भी भूल गए होंगे।

मै स्वामी जी के अनेक शिष्यो, श्रद्धालुओ, भक्तो, प्रशसको और समर्थको से प्रार्थना करता हू कि स्वामी जी के इस रजतजयन्ती पुण्यवर्ष को बड़ी धूम-धाम और उपयुक्त ढंग से मनाए और इस प्रकार स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धा, भक्ति का प्रदर्शन करें।

इस सम्बन्ध मे कुछ सुझाव आर्य नेताओ के विचार-विमर्श के लिए इस प्रकार हैं—

(१) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली अपने एक परिपत्र द्वारा देश भर की आर्यसमाजों को स्वामी जी का पुण्य वर्ष मनाने का आदेश दें।

(२) प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपनी आर्यसमाजो को विस्तारयुक्त कार्य क्रम बनाकर भेजें और अपने अधीन आर्य समाजो को उसके अनुसार कार्य करने का आदेश दें।

(३) इस वर्ष का वेद प्रचार सप्ताह (अगस्त मास मे श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी तक) "स्वामी वेदानन्द स्मृति वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाए।'

(४) इस सप्ताह मे हर एक आर्य-समाज अपने यहा श्री स्वामी वेदानन्द जी के वेद सम्बन्धी किसी ग्रन्थ की कथा कराए।

(५) आर्य प्रकाशक उनकी किसी पुस्तक को सुन्दर ढंग से छपवाकर सस्ते दामो पर बाटें।

(६) सम्पन्न तथा समर्थ आर्यसमाजें स्वामी जी के किसी एक ट्रैक्ट को छपवा कर मुफ्त या सस्ते दामो पर बांटें।

(७) स्वामी जी के १९५६ में स्वर्ग-वास होने के एक वर्ष बाद १९५७ मे आर्यकुमार सभा किंग्ज़वे कैम्प दिल्ली ने ब्रह्मचारी जगदीश चन्द्र विद्यार्थी (स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती) द्वारा लिखित लघु जीवन चरित्र ट्रैक्ट रूप में छापा था। इसके पश्चात् किसी सभा या समर्थ आर्यसमाज ने अनुकरण नही किया। उनकी जीवनी प्रकाशित होनी चाहिए।

—०—

आर्य जगत् समाचार

'साम्प्रदायिक तत्वों को उभरने नहीं देंगे'

अवैध हथियार जब्त किए जाएं तभी मुरादाबाद में शान्ति

सम्भल (मुरादाबाद) हिन्दू रक्षा सम्मेलन ने सर्वसम्मति से भारत सरकार से मांग की है कि वह राष्ट्रहित की दृष्टि से तुष्टीकरण की नीति छोड़े।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने कहा—'हम किसी भी मूल्य पर देश मे साम्प्रदायिक तत्वो को आगे नही उभरने देंगे।' वक्ता ने कहा—'जब तक मुरादाबाद मे जमा हथियार जब्त करने के लिए प्रभावपूर्ण कदम नहीं उठाए जाते, तब तक इस क्षेत्र मे शान्ति नही हो सकती।

प्रो० रत्नसिंह की अध्यक्षता मे स्थानीय आर्यकार्यकर्ताओं की एक बैठक मे हो रहे धर्मपरिवर्तन पर चिन्ता प्रकट की और सरकार से अनुरोध किया कि वह यह धर्मपरिवर्तन अविलम्ब रोके क्योंकि ऐसा स्वार्थपूर्ण धर्म-परिवर्तन राष्ट्रभक्ति समाप्त कर देता है।

मुरादाबाद में क्षेत्रीय हिंदू सम्मेलन

७ जुलाई के दिन मुरादाबाद मे क्षेत्रीय हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया गया है। सम्मेलन को सफल बनाने मे श्री दयानन्द एडवोकेट और श्री जगदीश शरण माहेश्वरी पूरी शक्ति से लगे हुए हैं।

धर्मरक्षा अभियान १६ जून से ३० जून तक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आदेश से धर्मरक्षा अभियान के अन्तर्गत श्रीमती चन्दनदेवी आर्यसमाज नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय ने १६ जून से ३० जून तक हरिजन सेवा पखवाडा मनाया गया इस पखवाड़े मे चिकित्सालय की ओर से हरिजन बस्तियो मे जाकर हरिजन भाई बहनो के नेत्र का उपचार किया गया तथा साथ ही हरिजन बच्चों के स्वास्थ्य का भी परीक्षण किया गया। महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से निशुल्क दवाइया एवं चश्मों का प्रबन्ध किया गया।

१६ जून के दिन पखवाड़े का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने किया। सभा की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने की। इस अवसर पर हरिजन भाई-बहनों ने दूसरे आर्य भाई-बहनो के साथ मिलकर यज्ञ एवं हवन किया। हरिजन बच्चों ने प्रभु-भक्ति के गीत एव वेद मन्त्र सुनाये। लाला रामगोपाल शालवाले ने पहली पर्ची अपने हाथो से बनाकर इस अभियान का उद्घाटन किया। इस अवसर पर १८५ हरिजन भाई बहनों की आँखों के उपचार के बाद नि.शुल्क दवाइयां दी गई। इस अवसर पर ट्रस्ट के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने घोषणा की कि इस पखवाड़े मे हरिजन बस्तियों में जा जाकर हरिजन भाई बहनों की आखों के रोगो की चिकित्सा करेंगे।

चिकित्सालय के मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य ने घोषणा की कि हमारी शिरोमणि सभा ने जो धर्मरक्षा अभियान छेडा है, इसको बडी दृढता से चलाया जाएगा तथा सभा जो आदेश देगी उनका अक्षर-अक्षर पालन किया जाएगा। आपने भारत सरकार से माग की कि सिविल कोड समस्त भारतीयो के लिए एक बनाया जाए।

—o—

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति करो

अनुशासन से रहो : श्री वानप्रस्थ का आह्वान

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे दिल्ली राज्य की युवक रैली को सम्बोधित करते हुए शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले (वानप्रस्थ) ने अनुशासन से रहने का सदेश देते हुए देश के अन्दर फैली हुई सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध क्रान्तिकारी कार्यक्रम का आह्वान किया।

उन्होने 'केन्द्रीय आर्य युवक परिषद' एवं 'आर्य वीर दल' दोनो को आर्यसमाज का युवक संगठन घोषित किया और सामाजिक क्षेत्र का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल तथा परिषद के अध्यक्ष ब्र० राजसिंह आर्य ने भी युवको सम्बोधित किया।

सभा से पूर्व कमला नेहरू पार्क पुरानी सब्जी मण्डी मे आठ क्षेत्रो की कबड्डी की टीमो के मुकाबले हुए। गौतम नगर की महात्मा नारायण स्वामी टीम सर्वप्रथम रही। द्वितीय स्थान गु० ते० ब० नगर की पजाब केसरी टीम को मिला। विजयी टीम को श्री रामनाथ सहगल ने कप प्रदान किया। ब्र० विवेक भूषण आर्य को दिल्ली राज्य का प्रधान शिक्षक नियुक्त किया गया। सर्वश्री धर्मपाल आर्य, श्री रन्तिदेव आर्य, विनय कुमार आर्य, ब्र० प्रदीप कुमार आर्य शिक्षक नियुक्त किए गए।

—o—

आर्यसमाज की लोकप्रियता के लिए कुछ उपयोगी सुझाव

२१ जून को आर्यवानप्रस्थ आश्रम भटिंडा गुरुकुल में भटिंडा, जीद, अबोहर, गोनियाना मण्डी, रामा मण्डी, फरीद कोट, मण्डी डबवाली आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो की एक संयुक्त सभा में आर्य समाज को व्यापक एवं लोकप्रिय बनाने के लिए ये सिद्धान्त स्वीकार किए गए १. प्रत्येक आर्यसभासद के घर कम से कम मास में एक पारिवारिक सत्संग किया जाए २. सब आर्यसमाजों के अन्तर्गत आर्य स्त्री समाजें संगठित की जाएं ३. आर्य समाज की सभी शिक्षा संस्थाओं मे धर्म शिक्षा अनिवार्य हो, ४. प्रत्येक नगर की आर्यसंस्थाए प्रमुख आर्य हिन्दू पर्व मिलकर उत्साह से मनाएं ५. विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा के प्रसार के लिए शिक्षकों में आर्य विचारधारा प्रसारित की जाए। ६. भटिण्डा की आर्य संस्थाएं मिलकर वार्षिक या अर्द्धवार्षिक पत्रिका प्रकाशित करें।

व्यायाम कार्यक्रमों में युवकों की दिलचस्पी

आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम् गुड़गाव के तत्वावधान मे १० जून से गुरुदत्त व्यायामशाला एव अखाड़े के कार्यक्रम चल रहे हैं। भार उठाने, गोला फेकने, छाती बढाने, एव मोगरी उठाने के कार्यक्रम मे युवक भारी दिलचस्पी ले रहे हैं। श्री सुभाष खुराना एव श्रीमती पुष्पा माकन मे व्यायामशाला हेतु आर्थिक सहायता दी।

— o —

भारत के राष्ट्रपति श्री रेड्डी नैरोबी में

आर्यसमाज द्वारा भव्य स्वागत

नैरोबी। भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम सजीव रेड्डी की केन्या यात्रा के अवसर पर उनका हवाई हड्डे पर आर्यसमाज के विद्यालयो के तीन सौ बच्चो ने भव्य उत्साहवर्द्धक स्वागत किया। इस अवसर पर प्रतिष्ठित स्वागतकर्ताओं मे आर्यसमाज की ओर से श्री एस० बी० भारद्वाज ने राष्ट्रपति का स्वागत किया। नैरोबी के प्रीमियर क्लब में हिन्दू कोसिल, केन्या के स्वागत समारोह मे केन्या की ६० धार्मिक संस्थाओ ने भारतीय राष्ट्रपति का स्वागत किया था। इस अवसर पर आर्यसमाज के अध्यक्ष ने राष्ट्रपति को माल्यार्पण किया।

आर्यसमाज संस्कृति की सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील

बैंक आफ इंडिया के अध्यक्ष श्री वाधुल की सम्मति

नैरोबी के साउथ सी के आर्यसमाज मन्दिर में बैंक आफ इन्डिया के अध्यक्ष श्री एन० वाधुल पधारे। आर्यसमाज के प्रधान श्री एस० बी० भारद्वाज ने इतनी छोटी उम्र में उनके बैंक के संचालक मण्डल के अध्यक्ष बनने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

स्वागत का उत्तर देते हुए श्री वाधुल ने कहा 'मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्यसमाज नैरोबी ने रामायण-कथा की व्यवस्था की है, और वह भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील है। हमें प्रयत्न करना चाहिए कि नई पीढ़ी ऋषियों और मुनियों की संस्कृति से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करे अन्यथा वह फैशन के बहाव में हम से दूर हो जाएगी।

आर्यसमाजों के सत्संग

५ जुलाई'८१

अन्धा मुगल प्रतापनगर –पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; अमर कालोनी प्रो० सत्यपाल बेदार; अशोक विहार—पं० प्रकाशवीर 'व्याकुल'; आर्यपुरा—पं० रामदेव शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर-६—श्री देशराज खन्ना; आनन्द विहार (हरिनगर एल ब्लाक)—प० देवचन्द्र शास्त्री; किंग्जवे कैम्प—पं० देवराज वैदिक मिशनरी; कालका जी—पं० मनोहर 'विरक्त'; कालका जी डी. डी-ए फ्लैट्स—डा० रघुनन्दन सिंह; करोल बाग—डा० देवेन्द्र द्विवेदी; कृष्णनगर—पं० देवेश; गांधीनगर—स्वामी स्वरूपानन्द तथा पं० सत्यदेव स्नातक; गीता कालोनी—पं० सीसराम भजनोपदेशक; गुप्ता कालोनी १५१—प० रामरूप शर्मा; गोविन्दपुरी—पं० वेदपाल शास्त्री; गोविन्दभवन दयानन्द वाटिका—पं० ईश्वरदत्त; जंगपुरा भोगल—श्री मोहन लाल गाधो; जनकपुरी सी-३ पार्क—प० हरिदत्त शास्त्री वेदाचार्य; जनकपुरी वी३/२४—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; टैगोर गार्डन—पं० ओमवीर शास्त्री; तिलकनगर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; देवनगर—पं० अशोककुमार विद्यालकार; नारायण विहार—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; निर्माण विहार—प० प्रकाशचन्द शास्त्री; पजाबी बाग—डा० महेश विद्यालकार; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—पं० छज्जूराम शास्त्री; पश्चिमपुरी जनता क्वार्टर—श्रीमती भगवान देवी; बाग कड़ेखाँ—पं० बरकतराम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—पं० केशवचन्द्र मुन्जाल; बाजार सीनाराम—प० अमरनाथ कान्त; बिरला लाइन्स—स्वामी ओम आश्रित; मोडल बस्ती—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; माडल टाउन—प० सुधाकर स्नातक; महरोली—प० सत्यभूषण वेदालंकार; मोतीबाग—डा० सुखदयाल भूटानी; रघुवीर नगर—प० महेशचन्द भजन मण्डली; रमेशनगर—प० रमेशचन्द्र शास्त्री; राणा प्रतापबाग—कविराज बनबारी लाल शादां भजन मण्डली; राजौरी गार्डन—लाला लखमीदास, लड्डु घाटी—श्री मोहनलाल आर्य भजनोपदेशक; लेखनगर त्रिनगर—प० उदयपाल शास्त्री; लारेन्स रोड—प० सत्यपाल मधुर; विक्रम नगर—प० आशानन्द भजनोपदेशक; विजय नगर—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सराग रोहेला—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; श्री निवासपुरी—श्रीमती लीलावती आर्या; शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री; हनुमान रोड—पं० हरिशरण सिद्धान्तालकार; होज खास डी-२०—प० हीरप्रसाद शास्त्री।

—वेद प्रचारिणी सभा दिल्ली द्वारा प्रचारित

अमर स्वामी ग्रन्थ का विमोचन

[महात्मा अमर स्वामी लिखित 'शास्त्रार्थ-एक शंकराचार्य से' शीर्षक ग्रन्थ का विमोचन ११ जुलाई, १९८१ को सायं ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में प्रो० वेदव्यास एडवोकेट, प्रधान प्रादेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा।

—०—

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज महावीर नगर, नई दिल्ली-१८। प्रधान—श्री यशपाल मल्होत्रा; उपप्रधान—श्री मुंशीराम जौहर; मन्त्री—श्री भीमसेन; प्रचार-मन्त्री—श्री प्रेमदास; कोषाध्यक्ष—श्री विशन दास, लेखा-निरीक्षक—श्री जे० आर० चानना। पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री महेंद्रकुमार।

०—०

आर्यसमाज आर्यपुरा सब्जीमण्डी—प्रधान—श्री राजेन्द्रप्रसाद; उपप्रधान—सर्वश्री ओम्प्रकाश वर्मा; गणेशीलाल वर्मा, मन्त्री—श्री हरिसिंह गुप्ता; उप-मन्त्री—सर्व श्री सत्यपाल वर्मा; एव रणवीर सिंह, कोषाध्यक्ष—श्री श्याम बहादुर सेनी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री पुष्पराज कोहली; भण्डारी—गजेन्द्रसिंह; लेखा निरीक्षक—रमेशचन्द्र सेनी।

आर्यवीर दल, फरीदाबाद—नगर नायक—देवेन्द्रकुमार; मन्त्री—श्री लव देव, कोषाध्यक्ष—श्री सन्तलाल; शाखा-नायक—श्री दिनेशकुमार शर्मा; बौद्धिक शिक्षक—डॉ० दिनेशकुमार विद्यार्थी; वर्गनायक—श्री मनोहरलाल; श्री नवीन कुमार; संरक्षक—महेशचन्द्र।

आर्यसमाज हरदोई—प्रधान—डॉ पूर्णदेव; उपप्रधान—सर्वश्री श्यामसुन्दर वाजपेयी, श्री बन्सीसिंह एव श्रीमती विमला पाण्डिया; मन्त्री—श्री अनूप कुमार; उपमन्त्री—सर्व श्री भगवान दयाल शर्मा, विश्वम्भर नाथ मिश्र, श्रीमती हेमलता मिश्र, कोषाध्यक्ष—श्री ब्रह्मस्वरूप पाण्डेय, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र शुक्ल।

—०—

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ४ : अंक ३७   रविवार २६ आषाढ़, वि० २०३८   १२ जुलाई १९८१   दयानन्दाब्द १५६

२६ जुलाई को देशव्यापी धर्म-रक्षा अभियान की शुरूआत

देश में व्याप्त भीषण स्थिति का मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज दृढ़संकल्प—सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी की घोषणा

दिल्ली ५ जुलाई। 'आर्य हिन्दू जाति के सामने जितना भयंकर खतरा आज है, उतना औरंगजेब के सामने भी नहीं था। उस समय भी ऐसा सामूहिक धर्म-परिवर्तन नहीं हुआ था। आज देश के सामने जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित है। आज इस भीषण परिस्थिति में देश की राजधानी होने से दिल्ली की आर्यसमाजो एव आर्य जनों पर विशेष उत्तरदायित्व है, उन्हें इस कठिन परिस्थिति में देश का पथ-प्रदर्शन करना है।' इन शब्दो में आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने रविवार के दिन आर्यसमाज करौलबाग के सभाभवन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित दिल्ली के आर्यकार्यकर्त्ताओ के सम्मेलन में धर्मरक्षा-अभियान का प्रारम्भिक भाषण दिया। सम्मेलन की अध्यक्षता केन्द्रीय आर्यसभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल ने की।

श्री त्यागी ने भारत की वर्तमान परिस्थिति की पृष्ठभूमि की चर्चा करते करते हुए सूचना दी कि फरवरी १९५३ में कम्युनिस्टों का सामना करने के लिए भारत में व्यापक ईसाईकरण की योजना बनाई गई। पूर्वोत्तर भारत मे इस योजना की अभूतपूर्व सफलता देख कर १९७३ मैंपान इस्लामिक लीग ने देश मे इस्लामीकरण की योजना बनाई। कुवैत के 'अरब टाइम्स' ने उस योजना का समाचार छापा था जिसमें देश के बेचैन हरिजनो का धर्मान्तरण कर अगले दशक में भारत के मुसलमानों की गिनती २० करोड़ करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। पिछले दिनो देश के कई भागों—मुरादाबाद, वाराणसी, कोचीन, भोपाल आदि में विशाल मुस्लिम संस्थाएं बनाने की पेशकश की की गई। श्रीनगर में इस्लामिक यूथ कांफ्रेंस करने की अनुमति शेख अब्दुल्ला ने नहीं दी, वही सम्मेलन बम्बई में किया गया। वहां निश्चय किया गया कि जब तक काफिरों की एक-एक मूर्ति नष्ट नहीं होगी, तब तक चैन नहीं लिया जाएगा। इसके बाद हैदराबाद के समीप पहाड़ी शरीफ में लाखों की उपस्थिति में मुस्लिम जमीयत का अधिवेशन हुआ जिसमें पृथक् मुस्लिम राष्ट्र स्थापित करने की मांग की गई।

श्री त्यागी ने कहा—'इस बार मुसलमानों ने बिलकुल गुप्त रूप में हरिजनों के धर्मान्तरण का प्रयत्न किया था। इस प्रयत्न की पहली सफलता की घोषणा 'कुवैत टाइम्स' ने की थी, पर उस समय यह मालूम नही पड़ सका था कि भारत के किस भाग में यह हरिजनो का सामूहिक धर्मपरिवर्तन हुआ। सबसे पूर्व 'टाइम्स आफ इण्डिया' के मलिक ने रहस्योद्घाटन किया कि मीनाक्षीपुरम का पूरा गांव मुसलमान हो गया। पिछले दिनो ये सूचनाएं भी मिली हैं कि रामनाथपुरम और मदुराई मे सामूहिक धर्मपरिवर्तन हुआ है। पिछले कुछ महीने में ८००० हरिजन सामूहिक रूप से मुसलमान बन चुके हैं। इतना ही नहीं, केन्द्रीय गृहराज्य मन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाणा ने तिरूनिलवेली जिले मे मीनाक्षीपुरम गांव के हरिजनों को मुसलमान बनाने की घटना के लिए मूल रूप से तमिलनाडु सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। श्री मकवाणा की सम्मति में राज्य सरकार हरिजनों के जीवन और सम्पत्ति की रक्षा करने में विफल रही है। इसी के साथ केन्द्रीय सरकार की गुप्तचर एजेन्सिया पता लगा रही हैं कि तमिलनाडु में व्यापक स्तर पर धर्म-परिवर्तन के पीछे अरब देशों का धन भी काम कर रहा है'। श्री त्यागी ने कहा—स्थिति का मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज को नेतृत्व करना होगा, सभी वर्गों के सहयोग से धर्मरक्षा-अभियान चलाया जाएगा, दक्षिण भारत मे व्यापक रूप से क्षेत्रीय प्रचारकों की सहायता से आर्यसमाज कार्य करेगा। खतरे का मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज जन-जागरण करेगा, २६ जुलाई को देश भर मे हरिजनों के सहयोग से यज्ञ, शोभायात्रा एव प्रीतिभोज आयोजित किए जाएगे, हरिजनो को यज्ञ मे सम्मिलित कर यज्ञोपवीत दिए जाएगे।

दिल्ली में २६ जुलाई को विशाल शोभायात्रा का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा धर्म-रक्षा अभियान का श्रीगणेश

दिल्ली। आर्य प्रतिनिधि सभा ने रविवार २६ जुलाई को दोपहर दो बजे से दिल्ली के रामलीला मैदान से प्रारम्भ कर नगर के विभिन्न मोहल्लों मे होते हुए लालकिले पर विशाल शोभायात्रा या जलूस निकालने का निर्णय किया है। दिल्ली भर की आर्यसमाजो एवं आर्य-संस्थाओं से अनुरोध किया गया है कि उस दिन वे अपने सभी कार्यक्रम स्थगित कर इस जलूस मे सम्मिलित हों। आर्य-संस्थाए अपने साथ अधिक से अधिक गिनती मे हरिजनो को लाए, उन्हें उस दिन यज्ञ मे यज्ञोपवीत एव सामूहिक प्रसाद देने की भी व्यवस्था की जाए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर पाँच दानी आर्य सज्जनों ने आर्यसमाज के प्रचार अभियान में योग देने के लिए पाँच वैदिक धर्मी प्रचारकों का वेतन देने का सकल्प किया है। हरिजन बस्तियों मे जाकर यज्ञ एवं दूसरे कार्यक्रमो से जन सम्पर्क करने का भी निश्चय किया गया।

रविवार २३ अगस्त को सभा का वार्षिकोत्सव

वेद-प्रचार की राशि एवं दशांश भिजवाएं

जिन आर्य समाजों ने अपने सदस्यों की आय का दशांश और वेद प्रचार की राशि नही भिजवाई है, वे उसे तुरन्त भिजवाए।

स्मरण रहे कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिकोत्सव रविवार २३ अगस्त के दिन है। उसमें आप की समाज का प्रतिनिधित्व समाज के दशांश, वेद प्रचार की राशि एवं 'आर्य सन्देश का वार्षिक चन्दा देने पर ही सम्भव है।

पं० सत्यदेव भारद्वाज का दिव्य दान

नैरोबी पूर्वी अफ्रीका के वैदिक विद्वान् एव उद्योगपति श्री प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार ने घोषित किया है कि वह केन्या, उगाण्डा और तजानिया के उन युवको की आर्थिक सहायता करेंगे जो मैकेनिकल और इलक्ट्रीकल इजीनियरी के उच्चतर अध्ययन के लिए भारत जाना चाहते हैं। उन्होंने घोषित किया कि ऐसे छात्रों का सम्पूर्ण आर्थिक व्यय बिना किसी शर्त के वह वहन करने के लिए तैयार हैं। □

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद-मनन

सूर्य-सेवन से काम-नियंत्रण

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्।
सजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्ड.
शुक्रस्याधिष्ठानमसि ॥ यजु ७-१३

ऋषिः—काश्यपोऽवत्सारः । देवता—विश्वेदेवाः । छन्द—निचृदार्षी त्रिष्टुप ।

शब्दार्थ— परमात्मा मनुष्यो को सम्बोधित करता हुआ उपदेश करता है- हे मनुष्य (सुवीर) स्वय सब प्रकार से वीर बन और (वीरान्) वीर पुत्रो को (प्रजनयन्) उत्पन्न करता हुआ, और व्यापार के लिए (पृथिव्या) पृथिवी पर तथा (दिवा) द्यु लोक में (परिसजग्मान) चारो ओर आवागमन करते हुए (यजमानम्) यज्ञकार्य में प्रवृत्त जन को (रायस्पोषेण) सब प्रकार के धन और पोषण के द्वारा (अइभिह्रि) चारो ओर से सन्तुष्ट रख।

तू (शुक्रस्य अधिष्ठानमसि) वीर्य और उसके रक्षण से उत्पन्न दीप्ति का आश्रय है। (शुक्रशोचिषा) सूर्य की दीप्ति के सेवन द्वारा (शण्ड) कामवासना का ज्वार और नपुंसकता दोनो ही (निरस्त.) दूर कर दी जाती है, और तू (शुक्र असि) सूर्यतुल्य दीप्त बन जाता है।

निष्कर्ष १. जब तक मनुष्य स्वय वीर नही बनेगा, उसकी सन्तान भी वीर नही बन सकती है, इसलिए उसे वीर बनने की प्रेरणा दी है। वीर बनने का उपाय बताया हैं, वीर्य की रक्षा।

२. वीर्य का स्रोत और नियन्त्रण करने वाला है सूर्य। ऋक् १०-९४-५ (पुस्नरेतो दधिरे सूर्यश्वित) मे स्पष्ट लिखा है कि सूर्य का सेवन करने वाले प्रभूतवीर्य धारण करते हैं, इसलिए धूप में काम करने वाले ग्रामीण कृषकों मे प्रजनन शक्ति अधिक होती है।

बढ़ी हुई कामवासना को कम करने के लिए भी सूर्य का सेवन बताया गया है। हरिनिकाम.। सुवर्हि हरिशिप्रः। आविष्कृधि हरये सूर्याय। ऋक् १०-९६ से स्पष्ट है कि हरि सूर्य है और वह काम आदि को शान्त करता है।

३. रायस्पोष की प्राप्ति के लिए व्यापार के निमित्त पृथिवी और द्यु लोक मे सर्वत्र विचरण करना चाहिए।

विशेष—नाम च धातुजमाह निरुक्ते। ऋषि नाम भी सार्थक होते हैं। १. ऋषि नाम काश्यप अवत्सार का धातुज शब्दार्थ संकेत करता है कि सार वस्तु (वीर्य) की रक्षा करने वाला काश्यप (सूर्य) सम्बन्धी दीप्ति को प्राप्त करके अवत्सार काश्यप बनता है।

२. देवता नाम विश्वदेवाः इस मन्त्र का प्रतिपाद्य विषय है। यदि मनुष्य अवत्सार काश्यप बनेगा तो उसकी सब इन्द्रियां (विश्वदेवा.) पुष्ट एव दीप्त होंगी, और विश्व के सब देव उसके सहायक बनेंगे।

छन्दनाम त्रिष्टुप का पदार्थ त्रिधा स्तुति को साधन बनाने का संकेत करता है।

क. सूर्य से प्राप्त शक्तिका स्तम्भन करने से रोग आक्रमण नही करते, और प्रजनन शक्ति नियन्त्रित होती है। स्तुभु-स्तम्भे।

ख. यज्ञ भाव से कर्मरत (यजमान) के लिए रायस्पोष का प्रबन्ध करना हो तो स्वयं तेजस्वी बनकर हर स्थिति मे प्रसन्न रहना चाहिए। स्तुच प्रसादे।

ग. शुक्र(सूर्य तथा वीर्य) के गुणो को जानकर यथायोग्य सेवन करना, और स्वय समर्थ बनकर जनहित के लिए सर्जन में व्यस्त रहना चाहिए। स्तुञ् स्तुतौ।

घ. अर्थात १) देवता पदार्थ (शब्द के अर्थ) को अपना लक्ष्य निर्धारित करके (२) छन्द पदार्थ (शब्द के अर्थ) को अपना साधन बनाकर (३) ऋषि पदार्थ (शब्द के अर्थ) को अपने आचरण मे लाकर मनुष्य स्वयं मन्त्र का द्रष्टा बनता है और दूसरो को भी उस अर्थ का दर्शन कराने मे समर्थ बनता है।

अर्थपोषक प्रमाण—

काश्यप अवत्सार—सारमवति, पश्यति चराचर दर्शयति च पश्यकः कश्यपः। कश्यपः सूर्यः, उससे शिक्षा लेने वाला काश्यपः। काश्यपः—काशृ दीप्तौ काशते इति। शण्डः नपुंसक। आप्टे. शुक्रः—असौ वा आदित्य शुक्रः शत १२-८-२-२२. शण्ड सांड=कामुकः। आप्टे शुक्रम्—वीर्यम्। निरस्तः—निः+असु क्षेपणे। तुदत् हिनस्ति। सायण. हरी सूर्यं शेते=हरिशिप्रः।
त्रिष्टुप्—त्रि+स्तुभु स्तम्भे—सूर्य से शुक्र का स्तम्भन करना।
स्तुच प्रसादे—स्वयं तेजस्वी बनकर प्रसन्न रहना।
स्तुञ् स्तुतौ—स्तुतिर्हि गुण दोष कीर्तनमा स्वामी दया० गुणदोष को जानकर उन्हे अपने जीवन में घटाना ही सच्ची स्तुति है।

—मनोहर विद्यालंकार
५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी दिल्ली-६

आज क्या तट पर रुकूं मैं ?

—शरर एम० ए०

आज क्यो तट पर रुकू मैं आज लहरों में निमन्त्रण,
देखता हू छा रहा है, राज्य चारों ओर तम का,
हर पथिक के मन मे जिसको देख कर उठती है शका,
किन्तु मेरा लक्ष्य उज्ज्वल।
कर रहा पथ दीप्त प्रतिक्षण···आज क्या तट···

× × ×

मेरी नौका तेज लहरों के बवन्डर में बढ़ेगी,
चीर कर सागर का वक्षस्थल यह तट को चूम लेगी
आज झंझा के झकोरों में।
करेगा नृत्य कण-कण···आज लहरो में···

× × ×

आपदाओ को चुनौती दीजिए बढ़-बढ़ के आएं,
आज सागर से उलझने को मचलती हैं भुजाएं,
आज दिल की धड़कनों पर हो नहीं सकता नियन्त्रण···आज···

× × ×

मेरी नौका से रहेगा दूर कितनी दूर साहिल,
चूमने बढ़ती है वीरों के पगों को स्वय मंजिल,
लक्ष्य सिद्धि मे हुआ करता है जब सर्वस्व अर्पण,
आज लहरो मे निमन्त्रण।

मकान संख्या ३०/८ पानीपत [हरियाणा]

आर्यसमाज अशोक विहार के निर्माण में योग दें

'आर्यसमाज अशोकविहार-III को दिल्ली विकास प्राधिकरण [DDA] ने ५०० वर्गमीटर भूमि देना स्वीकार किया है इस भूमि को खरीदने और इस पर मन्दिर एव भवन बनवाने के लिए पर्याप्त धन चाहिए।

अभी तक उक्त लक्ष्य की पूर्ति के लिए पर्याप्त धनराशि को इकट्ठा करने मे असफल रहे हैं। अतः आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि क्रास किए ड्राफ्ट या चैक आर्यसमाज अशोकविहार फेज-III के नाम पर A-१०३ अशोकविहार फेज-III दिल्ली ११००५२ के पते पर सहायता भेजें।

भवदिया, सीता मदान, मन्त्री

श्रद्धा से दो

श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया देयम्, श्रिया देयम्, ह्रिया देयम्, भिया देयम्, संविदा देयम्। तैत्तिरीय आरण्यक प्र०७,अनु ६-१४

श्रद्धा से देना, अश्रद्धा से देना, शोभा से देना, लज्जा से देना, और प्रतिज्ञा या संकल्प से भी देना चाहिए।

कण्टकं कण्टकेनैव

कहते हैं कि पैर या अंगविशेष में चुभे हुए कांटे को काटे, सुई आदि से ही निकाला जा सकता है। आज हमारे मैत्रीपूर्ण व्यवहार के बावजूद हमारा पड़ोसी पाकिस्तान नई शस्त्रसज्जा कर रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका उसे हर तरह के शस्त्रास्त्रों और आर्थिक सहायता से मजबूत कर रहा है। पाकिस्तान के विदेश-मंत्री श्री आगाशाही ने घोषित किया है कि भारत और सोवियत संघ के विरोध के बावजूद पाकिस्तान अमेरिका से हथियारों की खरीद करेगा। इन दोनों देशों की प्रतिक्रिया के बावजूद वह अपनी हथियार प्राप्त करने की कोशिश नहीं छोड़ेगा। इतना ही नहीं, पाकिस्तानी विदेश-मन्त्री ने यह ऐलान भी किया है उनका मुल्क अपना परमाणु कार्यक्रम जारी रखेगा।

ठीक है पड़ोसी पाकिस्तान अपनी शस्त्र सज्जा करे, वह हथियारों का अनन्त जखीरा या कोष इकट्ठा करे, वह एक स्वाधीन राष्ट्र है पर उसकी इस तैयारी को भारत नजरन्दाज नहीं कर सकता। वह यह बात भी भुला नहीं सकता कि पिछले चौंतीस वर्षों में पाकिस्तान तीन बार हमारे देश पर हमला कर चुका है और यह बात भी भुलाई नहीं जा सकती कि पाकिस्तान की नई तैयारी अफगानिस्तान या रूस के विरुद्ध न होकर स्पष्टतया भारत के विरुद्ध है।

अपने जन्म के बाद पाकिस्तान में एक बार भी जनतान्त्रिक सरकार स्थापित नहीं हो सकी है। वहां के नित नए बदलने वाले शासक अपनी प्रजा को सन्तुष्ट एवं सुखी रखने के स्थान पर भारत-विरोध के नाम पर अपनी स्थिति मजबूत करते रहे हैं। आज के शासकों की भी यही रीति-नीति है। वे अमेरिकी हथियारों और आणविक बम से भारत को न केवल सबक सिखाना चाहते हैं, उसके वर्तमान स्वरूप का भी खात्मा करना चाहते हैं। पाकिस्तानी कांटा भारत के लिए नासूर का रूप धारण न करे, इसके लिए समय रहते भारत को उसके हथियारों और दिव्य शस्त्रों की ताकत को भी मात देने वाली क्षमता पैदा कर सदा-सर्वदा के लिए इस समस्या का अन्त कर देना चाहिए।

—★—

सच्चे गृहस्थ का आधार

२९ जुलाई के दिन ब्रिटेन के युवराज चार्ल्स का विवाह होने जा रहा है। उनकी मंगेतर लेडी डायना स्पेन्सर ने घोषणा की है कि वह विवाह करते समय युवराज को उनकी आज्ञाकारिणी होने का वचन नहीं देंगी। हां, वह वचन अवश्य देंगी कि वह युवराज को प्यार करेंगी। इसी के साथ सुख-दुःख में उनके सम्मान और सुख का ध्यान रखेंगी। अभी तक ब्रिटिश राजघराने की परम्परा में वधू मौन रहती थी, परन्तु नई परम्परा में न केवल उसने अपना मौन तोड़ा है, प्रत्युत उसने अपने भावी पति की आज्ञाकारिणी होने का वचन न देने की सार्वजनिक घोषणा की है।

विवाह सम्बन्ध एक पवित्र संस्कार है। पश्चिम मे ये सम्बन्ध टूट रहे हैं। नया स्वेच्छाचार, भोगाचार पनप रहा है, इसकी तुलना में भारत की वैदिक परम्परा बड़ी उदात्त एवं अनुकरणीय है। वैदिक विवाहपद्धति मे वर-वधू प्रतिज्ञा करते हैं— 'अन्न पाशेन मणिना प्राणसूत्रेण पृश्निना बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते।' जैसे अन्न के साथ प्राण, प्राण के साथ अन्न तथा अन्न और प्राण के साथ अन्तरिक्ष का सम्बन्ध है, वैसे ही तेरे हृदय-मन और चित्त के साथ सचाई का गठबन्धन करता या करती हूं। वैदिक वैवाहिक सम्बन्ध मे अन्न प्राण के लिए जिस प्रकार अनिवार्यतः आवश्यक है,उसी प्रकार वर-वधू के सम्बन्ध का स्थायी आधार सचाई का गठबन्धन है।

इतना ही नहीं, वैदिक पद्धति में वर-वधू यह प्रतिज्ञा भी करते हैं—'यदेतद् हृदय तव तदस्तु हृदय मम, यदिद हृदयंमम तदस्तु हृदयं तव। हे स्वामिन् या हे पत्नी तुम्हारा हृदय मेरा अपना अन्तःकरण बने और तुम्हारा अन्तःकरण मेरे हृदय के तुल्य बने। सचाई के आधार पर एक दूसरे की भावना, संकल्प और लक्ष्य को अपना मान कर सच्ची एकता द्वारा ही वैदिक गृहस्थ चलता था। उसी भावना के बल पर भारतीय गृहस्थ भारतीय जीवन-दर्शन की निष्ठा अक्षुण्ण कर सकते हैं।

——०——

'आर्य' का अर्थ 'हिन्दू' नहीं है

आजकल आर्यनेता, आर्यविद्वान् तथा आर्य संन्यासी अपने भाषणों तथा लेख आदि मे 'आर्य' का अर्थ 'हिन्दू' बतलाते हैं। इसी प्रकार आर्य साहित्य एवं आर्यपत्र-पत्रिकाएं आर्य का अर्थ कोष्ठक में [हिन्दू] लिखती हैं। इस विषय मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ध्यान दिलाया था कि आर्य का अर्थ हिन्दू नहीं है। महर्षि ने लिखा था १. हमारे देश का नाम आर्यस्थान, आर्यखण्ड होना चाहिए, सो उसे छोड़ न जाने हिन्दुस्थान यह नाम कहा से आ निकला। हिन्दू शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि है और हिन्दुस्थान कहने से काले, काफिर, चोर लोगों की जगह अथवा देश अर्थ होता है, अस्तु हिन्दू इस नाम का त्याग करो और आर्य तथा आर्यावर्त्त इन नामों का अभिमान धरो।

महर्षि ने आर्य शब्द का अर्थ सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास मे इस प्रकार लिखा है—'आर्य' नाम धार्मिक विद्वान् आप्त पुरुषों का और उनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है। 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में ऋषि ने लिखा—'आर्य' जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्य विद्यादि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश मे सब दिन से रहने वाले हैं, उन्हें 'आर्य' कहते हैं।

सभी आर्यों तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों से निवेदन है कि वे आर्य के अर्थ मे हिन्दू का प्रयोग न करे, अपितु महर्षि द्वारा बतलाए अर्थों मे आर्य शब्द का प्रयोग करे।

—सुदर्शनदेव आचार्य,
सम्पादक, सर्वहितकारी, रोहतक, हरियाणा

०——०

आर्यसमाज और हरिजन

आजकल प्रायः समाचार पत्रों मे 'आर्यसमाज व हरिजनों' के विषय मे कुछ न कुछ छपता रहता है। कुछ लोग इस क्षेत्र मे आर्यसमाज की भूमिका की प्रशंसा करते हैं, व कुछ व्यक्ति कहते हैं कि आर्यसमाज ने हरिजनों के उत्थान के लिए कुछ नहीं किया। ऐसा शायद आर्यसमाज की प्रचार-सेवा की कमी के कारण है, क्योंकि आर्यसमाज ने हरिजनों के लिए बहुत कुछ किया, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति तक वे बातें नहीं पहुंची, इसलिए ये भ्रामक बातें फैलती हैं। अतः हमारा आप से निवेदन है कि इस विषय पर आप 'आर्यसमाज व हरिजन' विशेषांक निकालें या कोई लेख इस विषय पर लिखाए, जिसमें आर्यसमाज द्वारा हरिजनों के लिए किए गए कार्यों का वर्णन हो। एवम् तथ्यों द्वारा सिद्ध किया जाए कि आर्यसमाज आज भी उसी तरह समाज देश व धर्म की सेवा मे संलग्न है। जैसे कि महर्षि के समय में थी।

विजय कुमार 'आर्य', कुमारी सन्तोष 'आर्य' द्वारा—श्री हरिसिंह आर्य (प्रधान आर्यसमाज),WZ ६२५ ए/१ राजनगर,पालम कालोनी,नई दिल्ली-११००४५

०——०

मुझे ऐसे आर्यसमाज की खोज है।

'मुझे अपने लिए ऐसे आर्यसमाज की खोज है, जिसमे आर्यसमाज के उपनियमों के अनुसार निश्चित रूप से केवल उन्हीं व्यक्तियों को आर्य सभासद घोषित किया जाता है—

१. जो आय का सौवां भाग समाज को मासिक चन्दे के रूप मे देते हैं।
२. जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगों मे ९५ प्रतिशत होती है।
३. जो मांस-मदिरा आदि का सेवन नहीं करते।
४. जो नम्बर दो की कमाई नहीं करते।

यदि कोई ऐसी समाज हो तो मुझे डी-१४/१६ माडल टाउन के पते पर सूचित करने की कृपा करें।

—विद्यानन्द सरस्वती'
डी. १४/१६ माडल टाउन, दिल्ली-९

आर्य युवक की स्फूर्तिप्रद-सच्ची घटना

होटल का बैरा आज ऊँचे शानदार पद पर

दृढ़ संकल्प की करामात

ईमानदार विनम्र बैरा

कर्नाटक प्रदेश के अन्तर्गत गाव और ताल्लुका पल्लीयार निवासी एक बालक अत्यन्त गरीब परिवार सर्वथा अनपढ उम्र १३-१४ वर्ष, पिता की मृत्यु, विधवा माता, दो छोटी बहनें, आय का कोई साधन नही, रोजगार की तलाश मे गाँव छोड़कर बम्बई शहर मे रहा। दो वर्ष तक होटलो में बर्तन धोने और बैरे का काम किया। ग्राहको के प्रति विनम्र व्यवहार और शिष्टता व शुद्धता का पूरा ध्यान रखते हुए जिसकी होटलो मे अक्सर कमी पाई जाती है। बिल के साथ कभी टिप न लेता, ग्राहक द्वारा अत्यन्त आग्रह किए जाने पर भी ये थी इस बैरे की असाधारण विशेषताए। फलत. उससे मालिक और ग्राहक दोनो प्रसन्न थे और हुई होटल की ख्याति। अन्य बैरो का इससे असन्तुष्ट हो मालिक से चुगली करते रहना स्वाभाविक ही था। खुशामद प्रसन्द मालिक का देर तक अप्रभावित रहना सभव नही हो सका। एक दिन छोटी-सी बात पर ही कहासुनी हो गई और मालिक ने आवेश मे आ उसे निकल जाने को कहा। जिस समय यह घटना हुई, वहां प्राय: प्रतिदिन वहा आने वाले एक ग्राहक बैठे थे। वह इसके सद्व्यवहार से प्रसन्न थे। इनके यह पूछने पर कि मुझे एक घरेलू नौकर की आवश्यकता है, क्या तुम इसके लिए तैयार हो ? इस बैरे ने अपनी स्वीकृति देते हुए कहा कि मेरी दो शर्तें हैं। पहली यह कि होटल के मालिक से पूछना होगा क्योंकि इस ने मुझे सकट मे सहारा दिया, मैं इसे धोखा नही देना चाहता। दूसरी यह कि मैं पढ़ना चाहता हू। इसके लिए मुझे प्रतिदिन समय इत्यादि की सुविधा दी जाए।

घरेलू नौकर . दो शर्तें

जब इस ग्राहक ने इस बैरे को मालिक के पास ले जा कर उसकी स्वीकृति की बात कही तब वह अचम्भे मे आकर बोला—'तुम तो इतनी जल्दी नाराज हो गए। ऐसी छोटी-मोटी बातें तो होती रहती हैं। मैं तुम जैसे ईमानदार और आज्ञापालक बैरे को छोड़ना नही चाहता।' बैरे ने इन शब्दों के लिए मालिक का धन्यवाद करते हुए कहा 'वस्तुत: बात यह है कि मेरी पढ़ने की प्रबल आकांक्षा है ताकि मैं जीवन में ऊंचा उठ सकूं पर यह इस होटल की नौकरी में सम्भव नहीं है।' अन्तत: मालिक ने हार्दिक खेद पर शुभकामनाओ के साथ स्वीकृति देते हुए यह भी कह दिया—'बेटा ! जब भी किसी भी प्रकार की सहायता की जरूरत हो, मेरे दरवाजे तुम्हारे लिए सदा खुले हैं।'

नये मालिक द्वारा यह पूछे जाने पर कि 'तुम कितना वेतन लोगे' बैरे ने कहा—"मैं पूरी ईमानदारी और मेहनत के साथ आपके घर का काम करूंगा-यकीन रखे पर पढने की सब सुविधाओ की आशा रखूंगा। मुझे आपकी सहानुभूति पर पूरा विश्वास है। जो उचित समझें दे देना, मै सौदेबाजी न करता हुआ सहर्ष स्वीकार कर लूंगा।

दिन में नौकरी . रात्रि में पाठशाला में अध्ययन

सेठ के घरेलू नौकर के रूप मे काम करने के साथ मकान के पास ही एक रात्रि पाठशाला मे इस किशोर ने पढना प्रारम्भ कर दिया। वह युवक मेहनती और प्रखर बुद्धि था। पांचवी कक्षा मे सर्वप्रथम आया। इसी पाठशाला के एक भले अध्यापक की कोशिश से ब्रिटिश डिप्टी हाईकमिश्नर के दफ्तर मे इसे चपरासी की नौकरी मिल गई पर नौकरी स्वीकारने से पूर्व किशोर ने सेठ से आज्ञा मांगी और लड़के के हित को दृष्टि में रखते हुए उसने स्वीकृति दे दी। अब वह प्रात: ६ बजे तक घर का काम निपटा कर दफ्तर चला जाता, शाम को ५ बजे छुट्टी मिलते ही घर आ कर सेठानी के निर्देशानुसार काम कर रात को ७ बजे से १० तक पाठशाला मे अध्ययन कर, घर वापस आ रात १२ बजे तक स्कूल से मिला घर का काम 'होमवर्क' पूरा करके ही सोता। इस किशोर की ईमानदारी का नतीजा यह हुआ कि उसे कुछ स्वतन्त्र आय होने लग गई थी, इसने स्वय ही सेठ से आग्रह कर अपना वेतन कम करा लिया।

प्राइमरी से पी० एच० डी० तक ब्रिटिश दूतावास में ऊँचे पद पर

इस रात्रि पाठशाला से मैट्रिक प्रथम डिवीजन में उत्तीर्ण करने पर जहां छात्र-वृति मिलने लगी, वहीं इसी दफ्तर में टैलीफोन आपरेटर का पद मिल गया। कालेज मे प्रविष्ट हो गया। साथ ही अब वह सेठ के दो बच्चों को भी घर में पढ़ाने लगा। फलत: यह किशोर अब घरेलू नौकर न रहकर सेठ के परिवार के एक सदस्य के रूप मे अंगीकार किया जाने लगा। उसने वर्ष की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बम्बई शाखा द्वारा बी. ए. और साहित्य रत्न परीक्षा उत्तीर्ण करने के अतिरिक्त सीनियर हिन्दी शिक्षक परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। इस उज्ज्वल सफलता के फलस्वरूप वह युवक इसी 'ब्रिटिश डिप्टी हाईकमिश्नर' के दफ्तर मे सहायक प्रेस सम्पर्क अधिकारी के रूप मे पदोन्नत हो गया। अब उसने बम्बई विश्वविद्यालय से शोध कार्य करते हुए स्नातकोत्तर (पी० एच० डी०) उपाधि अर्जित की। होटल में जूठे बर्तन माजने और बैरे की नौकरी से जीवन प्रारम्भ कर यह दृढ सकल्पशील युवक, एक-एक सोपान सतत श्रम से चढता हुआ इसी ब्रिटिश डिप्टी हाई-कमिश्नर के कार्यालय मे जहा वह एक चपरासी बनकर आया था, अब वह दायित्वपूर्ण उच्च पद पर 'मुख्य प्रेस सम्पर्क अधिकारी' (चीफ प्रेस एटेची) के दायित्वपूर्ण उच्च पद पर नियुक्त हो गया। 'उद्योगो हि सर्वफलदायक.' उद्योग और दृढ सकल्प सर्व सिद्धिदायक होता है।

लेखक :

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

युवक का उद्धारक सेठ नाम नहीं बताना चाहता

होटल में एक सामान्य ग्राहक के रूप में जिस व्यक्ति ने इस भूतपूर्व बैरे के गुणों को पहचान कर उसका हाथ पकडा और उसे इस उच्च स्थिति तक पहुंचाया, यह उदाराशय धर्मनिष्ठ व्यक्ति जहां यश भीरू है और अपना नाम भी प्रकाशित करना नहीं चाहता। उसके अपने शब्दों में "मैंने कोई अनोखा कार्य नहीं किया, केवल 'मानव धर्म, का पालन किया" वहां यह युवक भी अपने उस सेठ के प्रति आजीवन, असीम, कृतज्ञ होता हुआ इसके प्रति पितृवत् श्रद्धा और आस्था अनवरत बनाए हुए है।

युवक ऋषि दयानन्द भक्त : आर्य सत्संगी

यह घटना सर्वथा सच्ची और आज के निराश और जीवन मार्ग पर भटकते युवको के लिए, निश्चय ही प्रेरक स्फूर्ति पद और क्रान्तिकारी करवट देने वाली है। यह विशेषत: उल्लेखनीय है कि यह युवक दृढ़ आर्यसमाजी विचारों, आर्य, के सत्सगो में जाने वाले और ऋषि दयानन्द के श्रद्धालु भक्त हैं। एक सांझे मित्र द्वारा कुछ समय पूर्व, हमारा उनसे परिचय हुआ था। बम्बई से दिल्ली वह प्राय: आते रहते अपने दफ्तरी कार्यों के सम्बन्ध में। हम दिल्ली मे थे उनसे प्राय. साक्षात्कार होता रहता। कभी-कभी तो आर्यसमाज के सत्सगों में मिल जाते। हमारे विशेष अनुरोध पर उन्होंने आर्य युवक दल की प्रवृतियों में विशेष दिलचस्पी लेने का वचन दिया।

वैदिक धर्म आशा, आत्मविश्वास और उत्साह की सुनहरी शिक्षाओं पर ही आधारित है। यह एक ऐसी मास्टर की सुनहरी कुंजी है, जिससे मानव जीवन के सब बद द्वार खुल सकते हैं। यह स्वर्ण कुंजी पूर्णत प्रभु समर्पण और दृढ सकल्प से ही प्राप्त होती है। आज के युवा वर्ग के लिए वेद का निम्न मन्त्र जीवन पथ की यात्रा के लिए अक्षय पाथेय है :—

ओ३म। शुक्रोऽसि, भ्राजोऽसि स्वरसि। आप्नहि श्रेयांसमतिसर्म काम ॥ अथर्व २।११।५

अर्थ हे मानव ! तू वीर्य, तेज, आनन्द और प्रकाश युक्त है श्रेष्ठता को प्राप्त कर और अपने सादृशों से आगे बढ़जा।

पता—ई-२७ शास्त्रीनगर, जयपुर-६

इन्दौर में सस्वर वेद पाठ शिक्षण सत्र

दि० १ अगस्त से १२ अगस्त १९८१ तक

इस सत्र में ईश्वर स्तुति, प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, सन्ध्याहवन के मन्त्रो का चारों वेदों की रीति से सस्वर पाठ तथा महावामदेव्य गान का अभ्यास कराया जाएगा। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने चारों वेदों की रीति से पूर्वोक्त मन्त्रों का सस्वर पाठ प्रत्येक यजमान के लिए जानना आवश्यक बताया है। महावामदेव्य गान भी प्रत्येक संस्कार में यजमानों द्वारा करने को आवश्यक रूप में लिखा है।

अशुद्ध एवं स्वर विपरीत उच्चारण होने से त्याज्य ही है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती लिखते हैं कि अशुद्ध उच्चारण दु:ख देने वाला तथा अनर्थक होता है। जो इस सत्र में भाग लेना चाहें वे इस पते पर पत्र द्वारा शीघ्र सम्पर्क करें।

—वीरसेन वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर, ४५२००७।

भारत का एक राष्ट्रीय तीर्थ : ऐतिहासिक मन्दिर-आनन्द भवन

आदमी दुनियां से चला जाता है, लेकिन उसकी यादें जीवित रहती हैं। महात्मा गांधी और श्री जवाहरलाल लाल नेहरू उन महापुरुषों में थे जो जहां कहीं भी रहे वह स्थान एक मन्दिर के समान पूजा जाता था। जब-जब वे आजादी की लड़ाई में जेल गए तब वह एक तीर्थयात्रा समझी जाने लगी। इलाहबाद में आनन्द भवन नेहरू जी के जमाने में ही एक तीर्थस्थल बन चुका था, परन्तु आजकल तो वहां और भले लोगों का तांता लगा रहता है। एक जमाने में श्री जवाहरलाल ने किसी से यह कहा था कि किसी समय आनन्द भवन को जिसमें उनके घर वाले रहते थे, कांग्रेस को दे देंगे। यह बात उनके पिता श्री मोतीलाल नेहरू के कानों में पहुंच गई और उन्होने कहा कि इस शुभ कार्य के लिए किसी की प्रतीक्षा क्यो की जाए। उन्होंने २३ मार्च, १९३० को अपने मकान आनन्द भवन को कांग्रेस को सौंप दिया और उसका नाम स्वराज्य भवन हो गया। इस मकान को कांग्रेस को देने के बाद उन्होंने एक दूसरी आलीशान कोठी का निर्माण कराया जिसमे वह निवास करने लगे और वह आनन्द भवन कहलाने लगा। परिवार की प्रथा के अनुसार जवाहरलाल की बेटी ने आनन्द भवन को राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

आनन्द भवन का नाम लेते ही लोगो के सामने यादें उभरने लगती हैं। जवाहरलाल नेहरू के जमाने मे आनन्द भवन में देश-विदेश की हस्तियां आकर ठहरा करती थीं। इसमें बड़े-बड़े नेताओं ने बड़े-बड़े निर्णय लिए थे। श्री मोतीलाल नेहरू के जमाने मे आनन्द भवन शाहनशाहियत का अड्डा था और बड़े से बड़े अंग्रेज अफसर भी वहां दावत में बुलाए जाने में अपनी इज्जत समझते थे। आनन्द भवन और भारद्वाज आश्रम दोनों पास-पास हैं। माघ मेले के समय हजारों यात्री उन दोनों स्थानों को हर साल देखने आते हैं। इलाहाबाद (प्रयाग) की चर्चा करते हुए श्री जवाहरलाल नेहरू ने 'अपनी आत्मकथा' पुस्तक में लिखा है—

'हमारे घर में बहुत से तीर्थयात्री आते थे। यह भारद्वाज आश्रम के नजदीक बना हुआ है। जहाँ प्राचीनकाल में एक प्रसिद्ध विद्यालय था। माघ मेले के दिनों में सुबह से रात-रात के अन्धेरे तक लोग मिलने आते थे। मेरा विचार है कि अधिकतर लोग कुतूहलवश तथा विख्यात लोगों को जिनके बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुन रखा था देखने के लिए आया करते थे और विशेषकर पिताजी को। हमारे कौमी नारों को ये लोग भलीभांति जानते थे, सारा दिन हमारा घर उन्हीं के नारों से गूंजता रहता था। अक्सर मेरा दिन इन लोगो से बातचीत करके ही प्रारम्भ होता था। कभी बीस, कभी पचीस और कभी सौ आदमियों की टोलियाँ एक-एक करके आती थीं। कुछ दिनों बाद उन सबसे मिलना अथवा बातचीत करना भी असम्भव सा हो गया था। उनके आने पर मैं बाहर आता और चुपचाप हाथ जोड़कर अन्दर चला जाता, किन्तु यह भी इंतहा से ज्यादा हो गया और मैं कुछ समय बाद अपने को छिपाने लगा। मगर यह सब बेकार था। उनकी आँखो में एक प्रकार की चमक होती थी सच्चा स्नेह टपकता था। उन सबके पीछे पीढ़ियो की गरीबी और तकलीफें साफ नजर आती थीं। फिर भी वे अपने स्नेह और कृतज्ञता उड़ेलने मे और बदले मे कुछ भी आशा नही करते थे। उन्हे तो केवल भाईचारे और सहृदयता के दो शब्द ही कृतार्थ कर देते थे।

लेखक :
श्री प्रह्लादराय गुप्त

यह कहा जाता था कि आनन्द भवन बन रहा तब एक आदमी ने यह भविष्यवाणी की थी कि उस मकान मे ज्यादा सालों तक कोई लगातार नही रह पाएगा चाहे वह भविष्यवाणी हो या न हो लेकिन बात तो सही ही निकली जवाहरलाल नेहरू वर्षों तक जेलो में रहे। कमला नेहरू इलाज के लिए काफी समय तक बाहर रहीं इन्दिरा जी पढ़ाई के लिए सालों इलाहाबाद से दूर रहीं। आजादी के बाद जवाहरलाल जी अपनी बेटी और नातियों के साथ दिल्ली चले गए और आनन्द भवन वीरान हो गया। आनन्द भवन एक खूबसूरत और शानदार इमारत है। उसके चमकते फर्श को देखकर खुशी होती है। जवाहर लाल जी का जोरदार पुस्तकालय अभी आनन्द भवन में ही है। इस मकान में कई बार बार नेताओं की गिरफ्तारी हुई थी और इसकी कुर्सियां, मेजें इत्यादि कुर्क हुई थीं। जवाहरलाल जी ने इन बातों की चर्चा करते हुए लिखा है—

ले० प्रह्लाद राय गुप्त

'दिसम्बर १९२१ मे हमारी प्रथम गिरफ्तारी के बाद ही आनन्द भवन मे पुलिस ने अक्सर आना-जाना शुरू किया। वे उन जुर्मानो को वसूल करने आते थे जो पिता जी और मुझ पर किए गए थे। कांग्रेस की नीति यह थी कि जुर्माना न दिया जाए इसलिए पुलिस रोज-रोज आती और कुछ न कुछ फर्नीचर कुर्क करके उठा ले जाती। मेरी चार साल की नन्ही बालिका इन्दिरा इस बार-बार की लूट से बहुत नाराज होती थी। उसने पुलिस का विरोध किया और अपनी सख्त नाराजगी जाहिर की।'

आनन्द भवन मन्दिर है, परन्तु इसे बहुत से लोग मन्दिर ही मानते हैं। यह सिर्फ एक कोठी ही नहीं है, वरन यह भारत के इतिहास का जीता-जागता हिस्सा है। जवाहरलाल नेहरू ने इसके बारे में खुद लिखा है—'यह सीमेंट और ईंटों से बनी हुई एक इमारत ही नही है। इनका नाम भारत के इतिहास से जुड़ा है और इसकी चहार दीवारी के अन्दर बड़े-बड़े निर्णय किए गए हैं। आनन्द भवन जवाहरलाल नेहरू की याद सदैव दिलाता रहेगा और हमें यह बताता रहेगा कि देश को नेहरू के बताए हुए मार्ग पर चलने से ही कल्याण होगा। देश प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का आभारी है कि उन्होंने इस ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण स्थान को कौम के हवाले कर दिया। हमे इस बात की आशा करनी चाहिए कि हम उस आदमी के दिखाए हुए रास्ते पर चलेंगे जिसकी कुर्बानी के कारण आनन्द भवन एक ऐतिहासिक स्थान बन गया है।

२६ जुलाई के दिन देशव्यापी धर्मरक्षा महाभियान

सार्वदेशिक सभा द्वारा देश के राष्ट्रवादियों का आह्वान

दिल्ली। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने घोषित किया है कि विदेशी धन के बल पर हरिजनो को सवर्ण हिन्दुओ से पृथक कर उनके सामूहिक धर्मपरिवर्तन के विरोध में आर्यसमाज २६ जुलाई के दिन देश भर में धर्मरक्षा महाभियान का आयोजन कर रहा है।

श्री शालवाले ने अनुरोध किया है कि उस दिन भारत के प्रत्येक नगर, कस्बे और गाँव में हरिजन स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया जाए। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत मन्दिरो-यज्ञशालाओं में हरिजनो का प्रवेश हो, सब कुओ पर उन्हें पानी भरने की सुविधा दी जाए। हरिजनों एव सवर्ण हिन्दुओ के सामूहिक जलूस निकाले जाएं। हरिजन युवकों को वेदाधिकार एवं सामूहिक यज्ञोपवीत दिए जाएंगे।

श्री शालवाले ने बताया कि २६ जुलाई के दिन राजधानी दिल्ली में अभूतपूर्व शोभायात्रा निकाली जाएगी जिसमें सवर्ण ब्राह्मण हरिजन समान के रूप से भाग लेंगे, उस दिन देश भर मे सहभोजो का भी आयोजन किया जाएगा।

सभा प्रधान ने देश की राष्ट्रवादी शक्तियो से अनुरोध किया है कि हरिजनों को सामूहिक रूप से मुसलमान बनाने के घिनौने विदेशी षडयन्त्र को विफल बनाने मे आर्यसमाज की सहायता करें।

मीनाक्षीपुरम के धर्मान्तरण पर प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा गृहमन्त्री ज्ञानी जैल सिंह द्वारा चिन्ता व्यक्त करने पर शालवाले ने भारत सरकार की सराहना की।

आर्य जगत् समाचार

सार्वदेशिक सभा में प्रवासी भारतीय लिए जाएं

पूर्वी अफ्रीका प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का अनुरोध

नैरोबी (केन्या) पूर्वी अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने ३१ मई के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन मे श्री रामगोपाल शालवाले और श्री ओमप्रकाश त्यागी के सार्वदेशिक सभा के प्रधान और महामन्त्री बनने पर बधाई दी है। इसी के साथ उन्होंने सार्वदेशिक सभा के नेताओं से अनुरोध किया है कि वे कुछ अच्छे प्रवासी आर्य नेताओ और कार्य कर्ताओं को सभा मे नियुक्त करें। उन्होंने इस बात पर निराशा व्यक्त की है कि सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों और अन्तरंग की लम्बी सूची में एक भी प्रवासी भारतीय का नाम सम्मिलित नहीं है। विदेशों मे अवस्थित प्रवासी आर्यसज्जनों मे ऐसे सक्रिय कार्यकर्ता अवश्य हैं, जिन्हें सार्वदेशिक सभा मे बखूबी लिया जा सकता है।

(उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा मे अधिकारियो मे प्रतिनिधित्व के लिए आवश्यक है कि पूर्वी अफ्रीका तथा दूसरे देशो के आर्य अपने प्रतिनिधि भी सार्वदेशिक सभा मे अवश्य भेजें।—सम्पादक

हरिद्वार में अपूर्व शोभा यात्रा एवं सत्संग

पारिवारिक वैदिक सत्संग मण्डल जम्मू के तत्वावधान में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी यात्रा की एक टोली २१-६-८१ को प्रातः आर्यसमाज मन्दिर हरिद्वार मे दो बसो द्वारा पहुची। साथ एक सत्यार्थप्रकाश की पुस्तकों से भरी गाड़ी भी थी।

मध्यान्तर चार बजे पंचपुरी की सभी आर्यसमाजों के सदस्य आर्यसमाज मन्दिर हरिद्वार में इकट्ठे हुए और स्वागतसमारोह का आयोजन किया गया।

ठीक पाच बजे बैंड बाजे के साथ शोभायात्रा आर्यसमाज मन्दिर से आरम्भ हुई, जिसमे प्रथम पंक्ति में आर्य सन्यासी उनके ठीक पीछे वानप्रस्थी और तदनन्तर सभी आर्य सस्थाएं अपने-अपने झण्डो के साथ चल रही थीं। वानप्रस्थ आश्रम की ११६ वर्ष की माता सुखदेवी जी ने जलूस मे भाग लिया था। शोभायात्रा बडी सफलता पूर्वक हरिद्वार के बाजार से होती हुई सुभाष घाट हर की पौड़ी पर पहुची। वहां भी ठण्डे मीठे पानी की व्यवस्था थी।

६ से ७॥ बजे तक सुभाष घाट पर मीरा यति जी की अध्यक्षता में सत्संग हुआ जिसमे यज्ञ, भजन, कविता तथा प्रवचन आदि हुए। जम्मू से आए, पं० विद्याभानु जी शास्त्री का प्रवचन प्रभावशाली था।

२३ जून १९८१ को प्रातः ६-३० बजे यह टोली आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के यज्ञ में सम्मिलित हुई, तदनन्तर जम्मू से आए विशिष्ट अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा आश्रम के अधिकारियो ने स्वागत किया और अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर विद्वानों के भाषण हुए। ९ बजे सत्संग समाप्त हुआ।

पार्टी की ओर से ५०१) रु० आश्रम को दान प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश का वार्षिकोत्सव

आगामी ७ सितम्बर से १३ सितम्बर १९८१ तक आर्यसमाज कैलाश—ग्रेटर कैलाश का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान पं० शिवकुमार शास्त्री वेदकथा प्रस्तुत करेंगे। १२ तथा १३ सितम्बर को वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, कविसम्मेलन एव धर्मरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसमें अनेक विद्वान सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। □

तरुण बोध शिविर का आयोजन

महर्षि दयानन्द के स्पष्ट निर्देशों की अवहेलना

नई दिल्ली। अधिकृत रूप से ज्ञात हुआ है कि २२ जून से २८ जून, १९८१ तक वेद संस्थान, सी-२२, राजौरी गार्डन नई दिल्ली में तरुण बोध शिविर हुआ, उसमे फीरोजपुर, गुड़गांव, ग्वालियर, गाजीपुर, अलीगढ़, अजमेर, अम्बाला, हरियाणा एव दिल्ली के विभिन्न नगरों के एक सौ युवक-युवतियों ने भाग लिया। यह भी ज्ञात हुआ है कि युगबोध, धर्मबोध, संस्कृतिबोध विषयों मे युवक युवतियो ने सम्पूर्ण रूप से भाग लिया।

[महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है—लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से होनी चाहिए। जब तक वे ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी रहे, तब तक स्त्री व पुरुष का दर्शन, स्पर्शन एकान्त सेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीडा, विषय का ध्यान और सग इन आठ प्रकार के मैथुनो मे अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचाएं।

[वेद सस्थान के तत्वावधान मे आयोजित तरुण बोध शिविर मे ऋषि द्वारा निर्दिष्ट उक्त नियमो का पालन नही किया गया, प्रत्युत उनका उल्लघन किया गया। यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इस सम्बन्ध मे आर्ययुवको ने कुतूहल, चिन्ता एवं विरोध प्रकट किया है। सार्वदेशिक एवं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाओं को इस बारे में पथ-निर्देश करना चाहिए कि महर्षि की स्पष्ट मान्यता एवं निर्देशों के विरुद्ध युवकयुवतियो के सामूहिक शिविरों का औचित्य नहीं है।—सम्पादक]

गुरुकुल शुक्रताल प्रवेश सूचना

सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा मान्यता प्राप्त गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल जि० मुजफ्फर नगर में प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री मे प्रवेश ८ जुलाई, १९८१ मे प्रारम्भ है। यहां निशुल्क छात्रावास, सीधा-सादा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन, नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु। आधुनिक विषयो के अतिरिक्त योगासन, प्राणायाम, धर्म, नैतिकता की भी अनिवार्य शिक्षा। भोजन शुल्क नाम मात्र ५०/- मासिक। मध्यमा, शास्त्री में योग्य छात्रो को छात्रवृति भी दी जाएगी। आचार्य दयानन्द एम० ए०, प्रधानाचार्य

गुरुकुल बैरगनिया में यजुर्वेद महायज्ञ

'गुरुकुल महाविद्यालय, बैरगनिया, (सीतामढ़ी) का बाईसवां स्थापना दिवस १६ जून से २२ जून तक दोनों समय यजुर्वेद परायण महायज्ञ के रूप में मनाया गया। इसमें ब्रह्मचारियों और अध्यापकों ने वेदपाठ किया। २१ जून को पूर्णाहुति हुई। २१ और २२ जून को प्रातः, अपराह्न और रात्रि तीनों समय भजनीकों और उपदेशकों द्वारा भजन-उपदेश प्रस्तुत किए गए। २१ जून की रात्रि में ब्रह्मचारियों द्वारा 'वीर अभिमन्यु' नाटक खेला गया।

—०—

आर्यसमाजों के सत्संग

१२ जुलाई'८१

अन्धा मुगल प्रतापनगर -पं० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; अमर कालोनी —आचार्य रामशरण मिश्र शास्त्री; अशोक विहार फेज-I-के डी ७६-ए—प० आशानन्द भजनोपदेशक; आर्यपुरा—पं० प्रकाशवीर 'व्याकुल'; आर. के. पुरम सैक्टर-६ —पं० सत्यभूषण वेदालंकार; आनन्दविहार हरिनगर--प० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; कालका जी—पं० मुनिशंकर वानप्रस्थ; करोलबाग—डा० रघुनन्दन सिंह; कृष्णनगर —ला० लखमीदास आर्य; गांधीनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; गीताकालोनी —पं०महेशचन्द भजन मण्डली; ग्रेटर कैलाश-I--पं० जैमुनि शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II प० वेदपाल शास्त्री; गुड़ मण्डी —प० देवराज वैदिक मिश्नरी; गुप्ता कालोनी — पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; गोविन्दभवन दयानन्दवाटिका—पं० रामदेव शास्त्री; चूनामण्डी पहाडगंज—वैद्य रामकिशोर; जंगपुरा-भोगल—पं० देवचन्द्र शास्त्री; जनकपुरी सी-३—प० रमेशचन्द्र शास्त्री; जनकपुरी बी-३/२४—पं० ओमवीर शास्त्री; जहांगीरपुरी—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; तिलक नगर—प० अमरनाथ कान्त; तिमारपुर—प० रामरूप शर्मा; दरियागंज—प० हरिदत्त शास्त्री; नारायणविहार —प० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक; न्यू मुलतान नगर—स्वामी ओम आश्रित; पंजाबी बाग—पं० देवेन्द्र द्विवेदी; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० प्रकाशचन्द शास्त्री; बाग कड़ेखां—पं० बरकतराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—श्री चिमनलाल; बिरला लाइन्स—पं० ईश्वरदत्त; मोडल बस्ती—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; मोडल टाउन—पं० देवेश; महावीरनगर—श्रीमती भगवान देवी; महरौली—प० सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक; रघुवीर नगर—पं० केशवचन्द मुन्जाल; रमेशनगर--प० छज्जूराम शास्त्री; राजौरी गार्डन—प० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री; लड्डू घाटी —श्री मोहनलाल गांधी; लाजपत नगर—प० अशोककुमार विद्यालकार; लक्ष्मी बाई नगर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; लेखनगर त्रिनगर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; लोधी रोड-जोर बाग—प्रो० सत्यपाल वेदार; विक्रमनगर—पं० मोहनलाल भजनोपदेशक; विजयनगर—प० हीराप्रसाद शास्त्री; सदर बाजार पहाडी धीरज--कविराज बनवारीलाल शादा भजन मण्डली; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सराय रोहेला—प० उदयपाल शास्त्री; शादीपुर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; शालीमार बाग—स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती; हौज खास—श्रीमती लीलावती आर्या; खिचड़ीपुर —स्वामी स्वरूपानन्द भजन मण्डली; लारेंस रोड—प० सुधाकर स्नातक; राणा प्रताप बाग—पं० खुशीराम शर्मा।

—वेद प्रचारिणी सभा दिल्ली द्वारा प्रचारित

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यकुमार सभा किंग्जवे, दिल्ली-६ —आचार्य—श्री आनन्दकुमार आर्य; प्रधान—श्री तिलकराज सन्दूजा; उपप्रधान—श्री कैलाश पाण्डेय; मन्त्री—श्री उमेशकुमार बतरा; उपमन्त्री—श्री जिनेन्द्र सेठी; प्रचार-मन्त्री—श्री राकेश कपूर, कोषाध्यक्ष—श्री यशपाल शर्मा; पुस्तकाध्यक्ष—श्री परीक्षित सहगल; प्रकाशन मन्त्री—श्री अमरजीत राजवंशी परीक्षा-मन्त्री—डॉ० शशिभूषण।

०—०

आर्यसमाज (मुलतान) देवनगर। प्रधान—श्री जयगोपाल वेदी; उपप्रधान —डॉ० पी० देव, प० रामप्रसाद जी; मन्त्री—महावीर जी स्नातक; उपमन्त्री —सर्वश्री राकेश एवं यशपाल; कोषाध्यक्ष—हरिपाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—लालचन्द जी।

०—०

आर्यसमाज शेखपुरा (मुंगेर)—प्रधान—जगदेव प्रसाद आर्य, उपप्रधान—श्री बच्चूप्रसाद आर्य, मन्त्री—श्री सुधीर कुमार गुप्ता, उपमन्त्री—श्री श्यामसुन्दर प्रसाद, कोषाध्यक्ष—श्री वसन्तप्रसाद आर्य, पुरोहित—श्री शंकरलाल आर्य।

आर्यसमाज, अनाज मण्डी, शाहदरा दिल्ली-३२, प्रधान—श्री भगवानदास, उपप्रधान—सर्वश्री ब्रह्मानन्द एवं मेधाकर आर्य; मन्त्री—श्री श्रद्धानन्द; उप मन्त्री—सर्वश्री रामकरण शर्मा एवं जितेन्द्रकुमार; प्रचार मन्त्री—श्री फकीरचन्द, कोषाध्यक्ष—श्री हरपाल सिंह, पुस्तकाध्यक्ष—हरपालसिंह; पुस्तकाध्यक्ष—श्री बनवारीलाल।

०—०

आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम् अर्बन एस्टेट) गुडगांव=प्रधान—डॉ० मोहन लाल ढींगडा; उपप्रधान—सर्वश्री महेंद्र कुमार देव, सत्यपाल बहल; मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश आर्य; प्रचार-मन्त्री—श्री लाजपत राय आर्य; उपमन्त्री—श्री शान्तिप्रकाश बिश्नोई; कोषाध्यक्ष—श्री राजपाल आर्य; लेखा-निरीक्षक—श्री कृष्णचन्द खुराना।

स्त्री आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम् (गुड़गाव)=प्रधाना—डॉ० कमला मायर; उपप्रधाना—श्रीमती पुष्पा नागपाल; मन्त्रिणी—श्रीमती लीलारानी खुराना; उपमन्त्रिणी—पुष्पा माकन; कोषाध्यक्षा—कुमुद सेठ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी) १.००
" " (......) समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन
विशेषांक ६.००
पादरी भाग गया—
ओम्प्रकाश स्वामी ०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान
अर्द्ध शताब्दी स्मारिका ६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह
स्मारिका ६.००

सम्पर्क करें —

अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा बांटिया प्रैस ७२७/१-बी, गुरुद्वारा गली, विश्वासनगर दिल्ली-३२ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ : अंक ३८ | रविवार ४ श्रावण, वि० २०३८ | १९ जुलाई १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

२६ जुलाई को दिल्ली में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यजनता का आह्वान :

जलूस में स्वयं आइए : हरिजन भाइयों को भी लाइए

दिल्ली। आर्यसमाज की सर्वोच्च सभा सार्वदेशिक सभा ने देश की जनता के व्यापक धर्मान्तरण के निमित्त बने विदेशी षड्यन्त्र का मुकाबला करनेके लिए२६ जुलाई, १९८१ के दिन धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत समूचे देश मे हरिजन स्नेह सम्मेलन के आयोजन का निर्देश दिया है।

इस आदेश के अनुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने २६ जुलाई के दिन हरिजन स्नेह सम्मेलन के अन्तर्गत यज्ञ, सार्वजनिक सभा एवं जलूस का कार्यक्रम बनाया है। शोभायात्रा या जलूस, दोपहर पश्चात् २ बजे रामलीला मैदान से निकल कर नया बाजार (श्रद्धानन्द बाजार), चांदनी चौक होता हुआ लाल किले पर जाएगा और वहां एक विशाल सार्वजनिक सभा होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने दिल्ली भर की समस्त आर्यसंस्थाओ, आर्यसमाजो से अनुरोध किया है कि समस्त आर्यबन्धु एवं बहनें अधिक से अधिक गिनती में स्वयं आएं और हरिजन बन्धुओं को अधिक से अधिक तादाद में लाएं।

- समस्त आर्यसमाजें एवं आर्यसस्थाएं बसों के द्वारा अधिक से अधिक व्यक्ति रामलीला मैदान में लाएं।
- प्रयत्न किया जा रहा है कि घण्टाघर चादनी चौक में स्वामी श्रद्धानन्द जी की मूर्ति के पास विशेष मंच बनाकर विशेष भाषण की व्यवस्था की जाए।
- यह भी कोशिश की जा रही है कि सार्वजनिक सभा मे हरिजन ससद सदस्य एवं केन्द्रीय सरकार के हरिजन मन्त्री आएं।

आशा है दिल्ली की आर्यजनता २६ जुलाई को दोपहर दो बजे रामलीला मैदान में पहुंचकर अपनी जिम्मेदारी निबाहेगी।

स्वयं जलूस में आएं : दूसरों को आने की प्रेरणा दें।

संसार में मुसलमानों की स्थिति

ज्ञात हुआ है कि इस समय संसार भर के मुसलमानों की गिनती ७५ करोड़ मुस्लिम गजेटियर के अनुसार ८६ करोड़ हैं, संसार के ८२ देशों में ये मुसलमान फैले हुए हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि विश्व के ३७ देशों की कुल आबादी में वे ५० प्रतिशत से अधिक हैं; छह देशों में वे कुल जनसंख्या के २५ से ४९ प्रतिशत तक हैं। इस समय भारत में मुसलमानों की गिनती १३ करोड़ है।

हरिजन बस्तियों में सामूहिक यज्ञ-यज्ञोपवीत

सामूहिक प्रीतिभोज के कार्यक्रम : दिल्ली के आर्यजनों द्वारा २६ जुलाई के दिन विशेष कार्यक्रम

रविवार, १२ जुलाई को साय ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, आर्यजनों की एक विशेष बैठक मे निश्चय किया गया कि रविवार २६ जुलाई के दिन दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज और आर्यसंस्था अपने समीपस्थ हरिजन मोहल्लों में सामूहिक यज्ञ का आयोजन करें। उस दिन यज्ञ में ऊंच-नीच, जातपात-छूतछात निवारण के लिए हरिजन भाईयो को यज्ञोपवीत दिए जाएं। सामूहिक प्रीतिभोज एवं प्रसाद वितरण की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने दिल्ली भर की आर्यसमाजो, आर्यसस्थाओ और आर्यजनों से अनुरोध किया है कि वे हरिजन मोहल्लों में यज्ञ-यज्ञोपवीत-वितरण और सहभोज का कार्यक्रम सफल करें।

आर्यसमाज गांधीनगर का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज गांधीनगर का वार्षिक चुनाव श्री जगतराम जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

—प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य, उपप्रधान—सत्यपाल भाटिया, जसवन्तराय पुरी, मन्त्री—श्री सन्तराम, उपमन्त्री—शान्तीस्वरूप, प्रचार मन्त्री—श्याम सुन्दर, कोषाध्यक्ष—हरबंस लाल, पुस्तकाध्यक्ष—रामपाल तथा लेखा-निरीक्षक—राधेश्याम चुने गए।

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिक अधिवेशन

सर्वसम्मति से पदाधिकारी चुने गए : श्री कैला फिर प्रधान बने

दिल्ली। आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन मे ये अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। प्रधान—श्री राममूर्ति कैला; उपप्रधान—सर्वश्री सरदारीलाल वर्मा, रतनलाल सहदेव, पं० चन्द्रभानु सि० भू०; मन्त्री—श्री विमलचन्द्र विमलेश, स० मन्त्री—श्री हरकृष्णलाल सहदेव, उपमन्त्री प्रचार—खैरातीलाल भाटिया; बाह्यकार्य उपमन्त्री—बुद्धराम गुप्त; भण्डार-उपमन्त्री—श्री सोमदत्त शर्मा; कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्रकुमार भाटिया; पुस्तकाध्यक्ष—श्री त्रिलोकीनाथ मिश्र; लेखानरीक्षक—श्री बलवन्तराय खन्ना, श्री राममूर्ति कैला।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

सूर्य सदृश बनना है तो चलते रहो, चलते रहो

उदुत्यं जातवेदसं देव वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। यजुः ७-४१

ऋषिः—प्रस्कण्वः। देवता-सूर्यः। छन्दः-भुरिगार्षी गायत्री

शब्दार्थ—(त्यम्) उस प्रसिद्ध (जातवेदसम्) सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और वेदों के प्रकाशक (देव) दिव्य ब्रह्म पुरुष (को केतव) ज्ञानी जन (उत्) ऊपर मस्तिष्क मे (३) और हृदय मे (वहन्ति) धारण करते हैं, और (विश्वाय दृशे) विश्व के पदार्थों के ज्ञान के लिए और (सूर्यम्) सूर्य के समान (विश्वायः दृशे) सब को साक्षात् दर्शन कराने के लिए-(उद्वहन्ति) उस का ज्ञान प्राप्त कराते हैं।

निष्कर्ष-—१. वह परमेश्वर प्रत्येक पदार्थ मे विद्यमान-सर्वव्यापक है। प्रत्येक पदार्थ को जानने वाला, और वेद ज्ञान द्वारा प्रत्येक पदार्थ का ज्ञान कराने वाला सर्वविद् सर्वज्ञ है।

२. जिस प्रकार इस सौरमण्डल में सूर्य सबको कर्मों में प्रवृत्त कराने और जगत् के पदार्थों को देखने दिखाने का साधन है, उसी प्रकार यह परमेश्वर प्राणी मात्र के कर्मों का नियामक तथा प्रेरक और सब को ज्ञान प्राप्त करने और दूसरो को प्राप्त कराने का कारण है।

३. जैसे सूर्य की किरणे उस के प्रकाश को सर्वत्र पहुचाती हैं, उसी प्रकार उसका वेद रूपी ज्ञान और उस ज्ञान को प्राप्त करने वाले ज्ञानी उसके ज्ञान को सर्वत्र पहुचाते हैं।

विशेष—यदि मनुष्य सूर्य देवता या सर्वोत्पादक परमात्मा के समान सबका प्रेरक और मार्गदर्शक बनना चाहता है तो पहले उत्कृष्ट गति की ओर शनैः-शनैः कण-कण करके निरंतर चलते रहना चाहिए। एक दम कोई ज्ञानी नहीं बनता; क्षण-क्षण का उपयोग करके ही मनुष्य कण्व (मेधावी) या प्रस्कण्व (प्रकृष्ट ज्ञानी=प्राज्ञ) बनता है।

प्राज्ञ और मार्गदर्शक बनने के बाद स्वभावतः मनुष्यो मे अभिमान और अहकार आता है, इसलिए उसे सदा गायत्री छन्द का ध्यान करके, सर्वज्ञ प्रभु के अनुदानो के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन के रूप मे उसकी महत्ता का हार्दिक ज्ञान करना चाहिए। परिणामतः अभिमान इत्यादि अन्तर और बाह्य शत्रुओ से सदा बचा रहेगा।

अर्थपोषक प्रमाण—

प्रस्कण्वः—प्र (प्रकृष्ट)+कण्व (कण गतौ) कण्व मेधाविनामसु। नि०३-१५. सूर्य.—सूप्रेरणे। सु प्रसवैश्वर्ययोः। गायत्री—गायन्त त्रायते। जातवेदसम्—जातं-जात वेत्ति—सर्वज्ञ जाते-जाते विद्यते—सर्वव्यापक,जातविद्योवा वा जात प्रज्ञानः—वेदों का प्रकाशक। केतव.—ज्ञानी, के तुज्ञाननाम नि० ३-७ केतवः—किरणें। वहन्ति—धारयन्ति,वह प्रापणे।

अर्थेप्सव ऋषियो देवताः छन्दोभि उपाधावन्। सर्वानुक्रमणी. ऋषिगुणो को धारण करके वेदार्थ को जानने की इच्छा से स्वाध्यायशील जन छन्दो की सहायता से, उसके शब्दार्थ द्वारा निर्दिष्ट भावना को साधन रूप मे स्वीकार करके वेदों की समस्याओं के समाधान मे दौड़ने लग जाते हैं।

—मनोहर विद्यालकार
५२२, ईश्वर भवन,खारी बावड़ी दिल्ली-६

लोक-चिन्तन

हत्या की राजनीति

—डा० विजय द्विवेदी

आज विश्व की राजनीति हत्याओं के दौर से गुजर रही है। अभी अमरीकी राष्ट्रपति रीगन तथा पोप पाल पर हुए घातक आक्रमण के सदमे से विश्व-जनमानस उबर नहीं पाया था कि बंगला देश के राष्ट्रपति जिआउल रहमान की निर्ममतापूर्वक हत्या कर दी गई। समाचार-पत्रों में छोटे-मोटे राजनयिकों की हत्या, आक्रमण तथा अपहरण के समाचार आए दिन प्रकाशित होते रहते हैं। इन सब को देख-सुन और पढ़ कर ऐसा अनुभव होने लगा है जैसे संसार में शान्ति, अहिंसा तथा प्रेम का कोई अस्तित्व, कोई मूल्य ही न रह गया हो। ससार को इनकी कोई जरूरत ही न हो। स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि ऐसा क्यो हो रहा है?

धरती के रक्त-स्नान का कारण भोग और भाग की राजनीति होती है। भोग का आधार धन है। अतः मनुष्य धन का अधिक से अधिक भाग अपने लिए सुरक्षित रख लेना चाहता है। पहले लोग उत्तम कर्मों द्वारा धनप्राप्ति का प्रयास करते थे। आज इसके लिए नीच से नीचा-सा धन का आश्रय लेना भी बुरा नहीं माना जाता। ऋग्वेद में एक मन्त्र दिया गया है। जिसमें ऋषि प्रार्थना करते हैं—'हे भगवन् आप हम पर ऐसी कृपा करें जिससे उत्तम कर्मों के द्वारा हमें धन की प्राप्ति हो जाए हम कभी पाप कर्मों मे प्रवृत्त न हो—अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्—ऋ. १-१८९-१।

आज के लोग महाकवि माघ के इन शब्द में सोचने लगे हैं—

बुभुक्षितैं व्याकरण न भुज्यते, पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।

न विद्यया केनचिदुद्धृत कुलं हिरण्यमेवार्जय निष्फला कला। औचित्यविचार

तात्पर्य यह है कि धन और भोग के कारण ही हत्या की राजनीति चल रही है। यह तब तक चलती रहेगी जब तक भोगी और लोभी शासक वर्ग जनता का नेतृत्व करता रहेगा। जब तक जीवन में ज्ञान, त्याग, तप को उच्च स्थान प्राप्त नही होगा, जब तक धन नहीं कल्पना, ज्ञान, उज्ज्वल चरित्र के अभिमानी कवि-कोविद, विज्ञान-विशारद, कलाकार पंडित, ज्ञानियों को समाज मे, शासन-व्यवस्था मे नेताओं से अधिक मान-सम्मान प्राप्त नही होगा, जब तक संसार मे इन विभूतियों के द्वारा स्थापित आदर्शों का अनुसरण नही करेगा, तब तक हत्या और हिंसा की राजनीति इसी तरह ससार मे चलती रहेगी।

हत्या की राजनीति से मुक्ति पाने का दूसरा रास्ता शान्ति-स्थापना का है, किन्तु सासारिक जीवन मे शान्ति तभी स्थापित हो सकती है, जब बुद्धि के व्यामोह से निकल कर मनुष्य भावनाओ के स्तर पर सोचे। न्याय को प्रथम स्थान दे, क्योंकि न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है और न्याय के लिए समबुद्धि की आवश्यकता होती है। समबुद्धि का ही दूसरा नाम विवेक है। विवेक बुद्धि का विकास बिना वेद-विद्या के सम्भव नही है। अत हत्या की राजनीति से विश्व मानवता की रक्षा करनी है। तो वेद-विद्या का विकास करना ही होगा—नान्य पथाः अयनाय।

म. पू च. कालेज बारीपदा उड़ीसा-७५७००१

ईसाई युवक व युवती का हिन्दू धर्म में प्रवेश

कानपुर। समाज गोविन्द नगर में केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने ३० वर्षीय शिक्षित एक ईसाई एक ईसाई युवती व उसके ४ वर्षीय पुत्र व अन्य शिक्षित ईसाई युवक को उनकी इच्छानुसार यज्ञ की अग्नि के समक्ष शुद्ध करके वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) मे प्रवेश कराया। शुद्धि के बाद इस युवक पीटर जानसन व युवती वीना डायमण्ड का वैदिक रीति अनुसार विवाह सम्पन्न कराया गया। इनके नए नाम सजीव कुमार,वीना देवी तथा उनके पुत्र का नाम अमित प्रसाद रखा गया। वीनादेवी एक सरकारी अस्पताल मे स्टाफ नर्स है। इस युवक और युवती ने श्री देवीदास आर्य को प्रार्थना पत्र देकर इच्छा प्रकट की थी कि वह जन्म से ईसाई हैं, परन्तु वह हिन्दू धर्म को बहुत अच्छा समझते हैं, अतः उनका शुद्धि संस्कार कर हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया जाए।

रविवार २३ अगस्त को सभा का वार्षिक अधिवेशन

वेद-प्रचार की राशि एवं दशांश भिजवाएं

जिन आर्य समाजों ने अपने सदस्यों की आय का दशांश और वेद प्रचार की राशि नहीं भिजवाई है, वे उसे तुरन्त भिजवाएं।

स्मरण रहे कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिकोत्सव रविवार २३ अगस्त के दिन होगा। उसमें आप की समाज का प्रतिनिधित्व समाज के दशांश, वेद प्रचार की राशि एवं 'आर्य सन्देश का वार्षिक चन्दा देने पर ही सम्भव है।

ज्ञान की ओर प्रवृत्त कीजिए

असतो मा सद् गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥ यजुर्वेद १९. ६

हे प्रभो, मुझे अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर प्रवृत्त कीजिए ।

दोहरी जिम्मेदारी

देश की राजनीतिक स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद फरवरी, १९५३ में विदेशी ईसाई मिशनरियों ने देश की निर्धनता, विषमता को देखकर देश के पिछड़े हुए आदिम जातियों के क्षेत्र में अपने धर्म के प्रचार-प्रसार की योजना बनाई । पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रों में उन्हें कुछ ही वर्षों में आश्चर्यजनक सफलता मिली । उनकी सफलता से उत्साहित होकर विश्व में विशेषतः दक्षिणी एशिया में मुस्लिम धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सन् १९७३ में पान इस्लामिक लीग की स्थापना की गई । इस वर्ष के प्रारम्भ में कुवैत के 'अरब टाइम्स' से यह सूचना मिली कि भारत के बेचैन हरिजनों की मानसिक स्थिति का लाभ उठाकर उन का व्यापक धर्म-परिवर्तन किया जाए । उस पत्र ने यह सूचना भी दी थी कि भारत के एक गांव का सामूहिक धर्म-परिवर्तन कर लिया गया है । प्रारम्भ में यह खबर छिपी रही कि किस क्षेत्र में यह धर्म-परिवर्तन हुआ है ।

पर अब यह सब जान चुके हैं कि पहले तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम गांव का धर्म-परिवर्तन हुआ था, उसके बाद ये सूचनाएं भी मिली रामनाथ पुरम एवं मदुराई में भी हरिजनों का व्यापक धर्म-परिवर्तन हुआ है । बाद में प्राप्त सूचनाओं के अनुसार पाण्डीचेरी में भी हजार से भी अधिक हरिजनों ने धर्म-परिवर्तन किया है । यदि ये सभी सूचनाएं सत्य हैं तो कहना होगा कि कुछ ही महीनों में दस हजार से अधिक हरिजन या निम्न जाति के हिन्दू विधर्मी बन गए हैं । महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष एवं रिपब्लिकन दल के नेता श्री आर० एस० गवई ने तमिलनाडु के सम्बन्धित क्षेत्रों का दौरा करने के बाद घोषित किया है कि वहां इस्लाम स्वीकार करने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन दिए गए हैं । उनकी सम्मति में इस कार्य में पेट्रो-डालर का भरपूर उपयोग हुआ है । स्पष्ट है कि भारत की केन्द्रीय सरकार और प्रदेशों की सरकारों को धर्म-निरपेक्षता के नाम पर चलने वाली इस धर्मान्धता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । उन्हें तुरन्त कार्यवाही कर विदेशी धन का आयात नियन्त्रित कर इस प्रकार के राष्ट्र विरोधी कार्यों की रोक-थाम करनी चाहिए ।

भारत के हिन्दुओं को उनके देश में अल्पसंख्यक बनाने के अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र की रोकथाम के लिए शासन का विशेष दायित्व है । सम्भवतः वह कथित धर्म-निरपेक्षता की नीति के कारण इस दिशा में कुछ न करे, उस स्थिति में विदेशी धर्म परिवर्तन अभियान के उत्तर में आर्यसमाज के उपर दोहरी जिम्मेदारी है । इस सम्बन्ध में हिन्दुओं से हरिजन भाइयों की जो शिकायतें और कष्ट हैं, उन्हें उनसे निकट सम्पर्क कर ही दूर करना होगा, दूसरे आर्यसमाज को सवर्ण हिन्दुओं से सम्पर्क कर उन्हें समझाना होगा कि विधर्मियों के शासन में भी जो हरिजन अपने धर्म के रक्षक रहे, उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव करना सर्वथा अनुचित है । हिन्दुओं को अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र से बचाने के लिए २६ जुलाई से देश व्यापक धर्मरक्षा अभियान के अन्तर्गत आर्यसमाज को अपनी इस दोहरी जिम्मेदारी को निबाहना ही होगा ।

प्रवासी भारतवंशियों का संकट

कुछ वर्ष पूर्व युगाडा में ईदी अमीन ने एशिया वासियों को विशेषतः भारत मूल के प्रवासियों के हाथ से उनका सारा व्यापार तथा उद्योग छीन लिया था । पिछले कुछ महीनों से ब्रिटेन के कई नगरों में उग्र रंगभेद पनप रहा है । वहां के फासिस्ट अग्रपंथी अपने देश के सभी काले तथा दूसरे रंग के दक्षिणी एशियाई प्रजाजनों का सारा व्यापार और वाणिज्य छीन लेना चाहते हैं । विगत कुछ सप्ताहों में वर्ण विद्वेष भीषण दंगों और व्यापक लूटमार के रूप प्रकट हुआ है । इन जातीय संघर्षों के रूप में दो तथ्य उभरे हैं । पहला तथ्य यह है कि वहां बसे भारत तथा दूसरे देशों से आए प्रजाजन अपनी सुरक्षा के लिए वहां की सरकार, शासन या पुलिस आदि पर भरोसा नहीं कर सकते । उसके लिए तो उन्हें स्वावलम्बन एवं संगठन पर विश्वास करना होगा । दूसरे इन लोगों की सरकारें भी वर्णविद्वेष के प्रचारकों एवं पक्षपातियों की उपेक्षा कर शान्ति एवं व्यवस्था नहीं रख सकतीं ।

विदेशों में बसे भारतमूल तथा दूसरे देशों के प्रवासियों को उन-उन देशों की जनता से सम्पर्क कर उनकी अच्छाइयां और विशेषताएं ग्रहण कर एक ओर उनसे मधुर सम्बन्ध बनाना चाहिए तो उन्हें अपनी एकता और संगठन को सुदृढ़ कर अपनी सांस्कृतिक अच्छाइयों और विशेषताओं को सुरक्षित करना चाहिए । केवल इन्हीं दोनों उपायों के अवलम्बन से प्रवासी भारत वंशी अपना अस्तित्व सुरक्षित कर सकते हैं, अन्यथा जैसे दूसरे देशों से उन्हें पलायन करना पड़ा, जल्दी या देर में उन्हें ब्रिटेन से भी बोरिया बिस्तर बांधना होगा ।

खेद का विषय है कि विदेशों में गए भारतवंशी वहां अपनी अच्छाइयां छोड़ रहे हैं, उन देशों की अच्छाइयां ग्रहण न करते हुए उनके दूषण ही अंगीकार कर रहे हैं । इसके साथ ही संकट के क्षणों में उनकी एकता भी खरी सिद्ध नहीं होती । केवल अपनी अच्छाइयों, एकता और संगठन के बल पर ही एशिया से गए प्रजाजन ब्रिटेन या दूसरे देशों में अपना अस्तित्व सुरक्षित रख सकते हैं, अन्यथा उनके अस्तित्व और भविष्य के लिए एक प्रश्नचिह्न लग जाएगा ।

चिट्ठी-पत्री

क्या तरुण बोध-शिविर का औचित्य है ?

मैं आपके पत्र के माध्यम से आर्यजगत् के बुद्धिजीवियों व आर्य नेताओं का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं । अभी हाल ही में वेद संस्थान सी-२२, राजौरी गार्डन में २१ से २८ जून १९८१ तक महात्मा दयानन्द की संरक्षकता में युवक-युवतियों के 'तरुण बोध शिविर' का आयोजन किया गया, जिसमें अनुशासनहीनता, उच्छृंखलता के कारण युवक 'शिविर' का पूरा आनन्द नहीं ले सके ।

क्या वह शिविर, उन महान युगद्रष्टा जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लड़के और लड़कियों के विद्यालय में डेढ़ दो कोस मील के अन्तर का प्रावधान रखा है, अनुकूल है ? क्या उन महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का अपने भक्तों द्वारा खुला उपहास नहीं है ?

मेरा यह सब लिखने का अभिप्राय यह है कि जिस नई परम्परा ने यह जन्म लिया है, कहीं वह आर्यसमाज के क्षेत्र में व्यापक रूप धारण न कर ले ।

इसके लिए 'सार्वदेशिक सभा' को तुरन्त ही आदेश जारी करना चाहिए कि कि भविष्य में युवकों का शिविर अलग व लड़कियों के शिविर की व्यवस्था अलग प्रान्तीय आर्य महिला सभाएं करें ।

—धर्मपाल आर्य, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली प्रदेश,
१०३३५, विक्रांत नगर, राम बाग मार्ग, दिल्ली-११०००७

—*—

आर्यसमाज दृढ़ता से मुकाबला करेगा

भारत में इस्लामीकरण के गहरे, व्यापक, षड्यन्त्र-कुछ चुभते तथ्य

मीनाक्षीपुरम् से मदुराई तक

मीनाक्षीपुरम (तमिलनाडु) में लगभग तीन हजार हरिजन प्रलोभन और भय द्वारा मुसलमान बनाए गए और इस सम्बन्ध में आर्यसमाज के नेतृत्व में हिन्दू सस्थाओ और समाचार पत्रों द्वारा प्रबल रोष व आन्दोलन, विरोध को सरकार तक पहुचाने के लिए पिछले दिनो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रमुख नेताओं का शिष्ट मण्डल प्रधानमन्त्री के पास पहुंचा। इस समूची सघन हलचल के बावजूद दक्षिण भारत मे इस्लामीकरण का यह कुचक्र मन्द व समाप्त हो गया—यह समझना भारी भूल होगी। इसकी पुष्टि दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक इडियन एक्सप्रेस के १६ और १७ जून के अंकों में उसके संवाददाताओ द्वारा मदुराई नगर से भेजे गए समाचारों के निम्न अंश से होती है—

कुरापुर गांव का सामूहिक इस्लामीकरण

प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ मदुराई से करीब ४० कि० मी० दूर कुरापुर गाँव के करीब ३०० हिन्दू और ५० ईसाई परिवारो को इस्लाम मे प्रविष्ट कर इस प्रदेश के 'इस्लामीकरण आन्दोलन' मे अप्रत्याशित उभार आ गया हैं। जिला रामनाथपुरम के कुरापुर गांव की सामूहिक धर्मान्तिरकरण की यह कहानी हाल की ही है। सामूहिक धर्म-परिवर्तन का कार्य चुपचाप पर तेजी से चल रहा है। अभी हाल ही ७५ हिन्दू हरिजन परिवारों ने इस्लाम स्वीकार किया। अब स्थिति यह है प्रति सप्ताह एक दो हिन्दू हरिजन परिवार मुसलमान बनते जा रहे हैं। इस ग्राम तक पहुंचने की यात्रा का वर्णन करते हुए दोनो सवानदाता कहते हैं :—

"इन नव मुस्लिमो को ढूंढ निकालना कठिन था। प्रत्येक गांव में मुसलमान तो चौवन्ने थे पर हिन्दू एकदम लापरवाह प्रतीत हुए। हमारे वहां पहुचते ही घरों और गलियों से नव मुस्लिम दौडते बाहर निकल भागते हमारे पास पहुचे हमारे यह कहने पर भी कि हम मौलवी नही हैं, उन्हें विश्वास नही हुआ, छोटे-बड़े सब खुश थे 'सलाम अलेकम' से हमारा स्वागत किया गया। लुंगी और तुर्की टोपी पहने ये लोग धर्म-परिवर्तन के बारे में चर्चा करने को उत्सुक थे। इस बारे में हरिजन हिन्दू व ईसाई दोनो की तो शिकायत का सम्बन्ध सवर्ण हिन्दुओं द्वारा चिरकाल से आर्थिक दबाव से अतिरिक्त सामाजिक अत्याचारों की कठोरता थी। जैसे—

(१) सवर्ण हिन्दू मुहल्लों में जाते हुए चप्पल उतार नंगे पांव जाना।

(२) कमीज, कुरता और से कमर तक कोई वस्त्र न पहन सकना।

(४) चायघरों और होटलों मे सवर्ण के पास न बैठ सकना।

(४) और वहां खाने-पीने के बर्तनो का सवर्णों से पृथक विशेष निशान के साथ रखा जाना।

(५) भूमिहीन खेतीहर मजदूर होने से सवर्ण हिन्दू जमींदारों के प्रति इस भेदभाव का विरोध करने मे असमर्थता।

(६) हिन्दू धर्म मे अनेक प्रकार जातिगत भेद-विषमता के साथ इनके देवी-देवताओं की बहुसख्या के साथ पूजा पाठ की घोर विभिन्नता और पृथकता। इसके विपरीत इस्लाम में एक ही खुदा, एक ही कुरान, एक ही पैगम्बर और एक सदृश नमाज रोजा व खानपान मे एक साथ एक जैसे बर्तन मे। हरिजन ईसाईयो ने भी आज की ईसाइयत से सवर्ण ईसाइयो द्वारा अनेक प्रकार के भेदभाव की सिकायतें। इन नव मुस्लिमो ने बताया कि मद्रास से कई मौलवी आते रहे। अब तो इस गाव मे ही मौलवी और मस्जिद दोनो का इन्तजाम हो गया इन नव मुस्लिमों मे कई पेंशनिये फौजी, दर्जी आदि कारीगर और अन्य पेशे के लोग भी हैं। इनके शब्दो में 'अब हमारी एक ही ख्वाहिश है कि हम में से कोई हज कर आए, १५ हजार रु० लगता है। उम्मीद है, इसका भी जल्द बन्दोबस्त हो जाएगा।

इस्लामी संगठन का प्रलोभन : हिन्दुओं की प्रतिक्रिया : हमदर्दी के लक्षण

संवाददाताओं के अनुसार, कुरापुर गांव के इस तीव्रता हो रहे इस्लामीकरण से सवर्ण हिन्दू आतंकित, भयग्रस्त हो गए हैं कि कुछ ही समय में सारा गांव मुसलमान हो जाएगा। एक प्रमुख हिन्दू जमींदार के अनुसार मदुराई का एक प्रबल इस्लामी संगठन इसके पीछे है जिसके धन वस्त्र तथा अन्य प्रलोभन पानी की तरह बहाए गए। संवाददाताओं के अनुसार, कई प्रमुख हिन्दुओं ने अब यह माना कि हरिजनों के प्रति उनका व्यवहार उचित नहीं था और उनकी शिकायतें गलत नहीं है। फलतः गांव के सवर्ण हिन्दुओं ने इन हरिजनों प्रति अपने व्यवहार में जहाँ काफी प्रयत्न किए है, वहाँ ये नव मुसलिम भी यह अनुभव करने लगे हैं कि अपना सदियों पुराना धर्म छोड़कर भी उनकी समस्याएं हल नहीं हुई हैं इसके विपरीत कई नई अड़चने पैदा हो गई है। वह यह भी महसूस कर रहे हैं। कि इन मुसलमानों की खैरियत पर वह कब तक निर्भर रह सकते हैं आस पास के शहरों से भी कुछ हिन्दू नेता जहां हरिजनों की समस्याओं को सुलझाने का आश्वासन दे रहे हैं, वहाँ गांव के हिन्दुओं को भी अपना व्यवहार बदलने के लिए जबर्दस्त प्रेरणा दे रहे हैं।

हरिजन लड़कियों का निर्यात अरब देशों को : संसद समिति की रिपोर्ट

दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक टाइम्स ऑफ इन्डिया' के २८ अप्रैल ८१ के अक में लोकसभा के पटल पर रखी गई १६ वीं 'सार्वजनिक प्राकलन समिति' (पी० पी० सी०) के आधार पर यह पता चला है कि—

"पश्चिम एशिया के अरब देशो मे भारत के दलालो द्वारा हरिजनों अनुसूचित, जन जातियो व निम्न वर्गों की युवा लड़कियो का निर्यात कर वहां ६०-७० वर्ष के बूढ़े अरबों के साथ उनका विवाह कर दिया जाता है। कुछ समय के बाद इन लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार मारपीट इत्यादि के बाद आगे बेच वेश्या वृति, आया, नौकरानी इत्यादि छोटे धंधे करने के लिए बाध्य किया जाता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन अरब देशों में जो भारतीय मिशन है, जिनके द्वारा पार-पत्र इत्यादि जारी किए जाते हैं, खेद का विषय है, वे भली भाति गहराई के साथ जाँच-पड़ताल नहीं करते। पहले श्री लका से इन अरब देशों को लड़कियो का निर्यात होता था। वहां की सरकार द्वारा इस पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा देने के बाद अब भारत सरकार यहां से बेरोकटोक यह व्यापार, 'सेक्युलर स्टेट' और अरब देशों को खुश रखने के लिए करते दे रही है।

अरब देशों के मुस्लिम-भारत में शादी के लिए : हिन्दू लड़कियों से

कुछ वर्षों से अमीर अरबों ने एक नया रास्ता इस्लाम-प्रचार का निकाला है। अपने धन के बलबूते पर भारत में विशेषत: दक्षिण भारत के हैदराबाद, बैंगलोर, कोचीन, त्रिचनापल्ली, मद्रास नगरों में व्यापारी के रूप में रहते हुए यहीं हिन्दू लड़कियों से शादी कर उन्हें मुस्लिम बनाकर कुछ वर्षों तक ऐश और शान का जीवन बिताकर बीबी बच्चों के साथ कई बार जल्दी वापस आने का बहाना कर और इन्हें दूसरे मुसलमान को बेच, वापस अपने प्रदेश चले जाते हैं। कानूनी प्रतिबंध न होने से विधर्मियों की संख्याओं में अनायास ही वृद्धि हो रही है।

लेखक :
आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

भारत अरब देशों के बीच आर्थिक समझौते : उद्देश्य इस्लामीकरण

पैट्रोल डालर के धनी इन अरब देशों ने भारत में इस्लामीकरण का एक वही ढंग निकाला है जो अंग्रेज ने भारत में पैर जमाने के लिए करीब तीन सदी पहले निकाला था। अंग्रेज व्यापारी के रूप में भारत में घुसा था। अब अरब देशों ने 'विश्व इस्लामिक सस्था' के अन्तर्गत भारत में भारी पूंजी लगा साझी कम्पनियां और रिजर्व बैंक से स्वीकृति प्राप्त कर बैंक व्यापार गृह तथा उद्योग इत्यादि लगाने के कार्यक्रम बनाए हैं। भारत की प्रधानमन्त्री इंदिरा गांधी की पिछले दिनों की इस अरब देशों की यात्रा से इस योजना को खूब प्रोत्साहन मिला है। अरब देशों में भी अपने यहां कारखाने खोलने, रेल लाइन पुल, बाँध, बिजली उत्पादन इत्यादि तकनीकी और इंजीनियरी की भारी भरकम विकास योजनाओं के ठेके भारत को देने प्रारम्भ कर दिए हैं। आर्थिक दृष्टि से यह सब बड़ा आकर्षक प्रतीत होता है पर हमें इस्लामी इतिहास का यह अटूट और सिद्ध निचोड़ नहीं भूलना चाहिए कि इस्लाम किसी भी रूप में अपने को प्रकट करे पर वह अपने बुनियादी 'तबलीगी हक' गैर मुस्लिम को इस्लाम में लाना, जिसके लिए हिंसा, प्रलोभन के तरीके जायज हैं—कभी नहीं छोड़ सकता।

'इस्लामिक सेंटर' की लन्दन में गुप्त सभा : भारत में ३० करोड़ आबादी लक्ष्य

पैट्रोल डालर के अरब देशों के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हरिजन विदेशी षड़यन्त्रों के शिकार न बनें

—ओमप्रकाश त्यागी

भू० पू० संसद सदस्य, महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

भारत के हरिजन बन्धु शताब्दियों से सवर्ण हिन्दुओं द्वारा अमानवीय अत्याचारों से पीड़ित होते आए हैं, परन्तु हरिजन बन्धुओं ने निराश होकर कभी भी हिन्दू धर्म छोड़ने का विचार नहीं किया। विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों ने जब तलवार के बल पर सबको मुसलमान बनाने का प्रयत्न किया, तो जहां हिन्दू जाति के सवर्ण कहे जाने वाले वर्गों के अनेक व्यक्तियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था, वहां हरिजन वर्ग तलवार के सम्मुख सीना तानकर खड़ा रहा)

अतीत में जिन्होंने तलवारों का सामना किया—उनका आर्थिक प्रलोभन में आना अनुचित

परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हरिजनो के लिए सुनहरी अवसर आया है और सविधान मे अछूतपन के कलंक को कानूनन अपराध घोषित कर दिया है, समस्त देश तथा सरकार उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील है, उन्हें आज विशेष सरक्षणों के द्वारा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सम्मानित स्थानो पर बैठाया जा रहा है अपने को सवर्ण कहने वाले वर्ग भी आज मानसिक दृष्टि से छुतछात को भारत के माथे पर कलक अनुभव कर रहे हैं और आर्यसमाज जैसे धार्मिक सगठन जन्मगत जातपात को समाप्त कर अछूतपन को समूल रूप से समाप्त करने मे पर्यत्नशील हैं तो विदेशी धन के बल पर मुस्लिम षड्यन्त्रकारी उन्हें भड़काकर उन्हें पुनः पतन के गढ्ढे में डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। आश्चर्य एवं खेद का विषय है कि कुछ भोले एवं अदूरदर्शी हरिजन बन्धु लोभ-लालच के कारण उनके जाल मे फंसकर मुसलमान बन गए हैं।

सार्वजनिक पूजास्थानों, कुओं, सड़कों आदि के प्रयोग का प्रत्येक को कानूनी अधिकार है। यदि उसे हरिजन बंधु प्राप्त न कर संघर्ष से बचने का प्रयास करेंगे तो फिर उनके लिए कहीं भी सम्मानित स्थान नहीं मिलेगा। कुछ दिन मुसलमान लोग उनका स्वागत अवश्य करेंगे। उनकी सहायता भी की जाएगी परन्तु बाद में उन्हें अपने भाग्य पर छोड़ देंगे।

मुसलमान बनने वाले हरिजन बन्धुओं का कहना है कि हिन्दूजाति में उन्हें बराबरी का दर्जा नहीं दिया जाता। उनकी इस बात में कुछ हद तक सत्य है, परन्तु अब जबकि अछूतपन अपराध बन चुका है तो अपने अधिकारों के लिए सवर्ण हिन्दुओं से साहस के साथ लडने के स्थान पर कायरों की भांति अपने धर्म को छोड़ना उन्हें शोभा नहीं देता। इस सघर्ष में देश की देशभक्त जनता एव आर्यसमाज जैसे संगठन और सरकार उनके साथ हैं। जहां सवर्ण अपने मोहल्लों व सड़कों पर उन्हे चप्पल पहन कर व अंगवस्त्र धारण कर चलने से रोकते हैं, वहां उन्हें योजनाबद्ध रूप से उनके इस पाखण्ड से लड़ना चाहिये यदि वे उनका विरोध करेंगे तो वे जेल के सीखचों के भीतर होंगे।

याद रहे मुसलमान बन जाने पर उन्हें समस्त सरकारी सुविधाओ से वंचित होना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी भूल का तब आभास होगा जब मुसलमान बन जाने पर भी उन्हें मुसलमानो द्वारा निम्न वर्ग मे ही समझा जाएगा। और उनके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार उच्च कोटि का मुसलमान नही करेगा। उदाहरणार्थ आज तक जितने हिन्दू मुसलमान बने हैं, उनके अलग-अलग वर्ग बने हैं। शादी-विवाह के लिए वे अपने वर्ग तक ही सीमित रह गए हैं। नमाज पढ़ते समय एक लाइन मे खड़े होना कोई बड़ी बात नही है। आज हिन्दुओं ने भी उनके लिए मन्दिरों के दरवाजे खोल दिए हैं। इस्लाम धर्म मे सबको समानता का दर्जा दिया जाता है यह भी बहुत बड़ी भ्रान्ति है। सुन्नी, शिया मुसलमान एक दूसरे को हेय दृष्टि से देखते हैं। अहमदिया मुसलमानों को अन्य मुसलमान, मुसलमान नहीं मानते। वोहरा इस्मायली वर्गों की भी यही दयनीय स्थिति है।

अतः हरिजन बन्धुओं से अनुरोध है कि विदेशी षड्यन्त्रों के चंगुल में न फंस कर वर्तमान सुनहरी अवसर को हाथ से न जाने दें, और अपने तथा अपनी सन्तान के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए वर्तमान सरकारी सुविधाओं का अधिक से अधिक से लाभ उठावें। जहां तक छूत-छात और जन्मगत जात-पात का प्रश्न है. इनकी दीवारें गिर रहीं हैं। इस पाखण्ड की रक्षा अब कोई नहीं कर सकता। पढ़े लिखे व्यक्ति इनसे घृणा कर रहे हैं। और नित्य अन्तर्जातीय विवाहों का तांता लग रहा है। अतः हरिजन बन्धु धर्मपरिवर्तन का विचार छोड़कर भावी भारत के स्वयं विधाता व मालिक बनने का प्रयत्न करें।

ससुराल वालों की मांग पूरी नहीं हुई और युवती गिर कर मर गई

उत्तरी कलकत्ता की कुसुम की रोमांचक मृत्यु : वधू ने छलांग लगाई या उसे नीचे फेंका गया ? तथ्यों की जांच की जाए।

कलकत्ता। शनिवार ६ जून को दिन के १२ बजे दिल्ली के उद्योगपति एवं साउथ ईस्टर्न रोडवेज के संचालक श्री प्रह्लाद राय गुप्त के बड़े भाई एवं ट्रासपोर्ट के प्रमुख व्यापारी ५४ जीतेन्द्रमोहन एवेन्यू कलकत्ता के निवासी श्री भीमसेन अग्रवाल की सुपुत्री श्रीमती कुसुम जालान की जीवनलीला समाप्त हो गई। अभी तक यह रहस्य अज्ञात है कि उत्तरी कलकत्ता में अपने ही मकान के तीन तल्ले से कुसुम ने मृत्यु को वरण क्यों किया ? अभी तक यह भी रहस्य बना हुआ है कि वधू ने छलाग लगाई या उसे नीचे फेंका गया ?

कुसुम जालान

स्थानीय लोगों के बयान के अनुसार घटना का विवरण इस प्रकार है —

६८ ए, नीमतल्ला घाट, कलकत्ता ६ के तीन तल्ले से करीब ६-४५ पर एक युवती सडक पर गिरी। लोगों ने अचेत अवस्था मे उसे तड़पते देखा, लड़की के सड़क पर गिरते ही पलक मारते लोग एकत्र हो गए। मोहल्ले के लोगों ने उस पर पानी छिड़का, लेकिन वह होश में न आ सकी। उसे अस्पताल ले जाने की पेशकश की गई। मालूम हुआ लड़की का नाम कुसुम जालान है, अस्पताल ले जाने की पेशकश का जालान-परिवार वालों ने विरोध किया खैर, आहत अवस्था में कुसुम को १० बजकर ५ मिनट पर बड़तल्ला स्थित विशुद्धानन्द अस्पताल पहुंचाया गया, उसकी स्थिति चिन्ता जनक थी। सर्वप्रथम डॉ० आर० के० शर्मा ने उसे देखा और तत्काल ही डॉ० गुमानसिंह पिपरा आदि डाक्टरों ने उसे ग्लूकोज देना शुरू कर दिया। ११ बजे उसे ४२४ बेड पर भर्ती कर लिया गया। लगभग १२ बजे कुसुम जालान के प्राण पखेरू हमेशा-हमेशा के लिए इस लोक से उड़ गए।

कलकत्ता के स्थानीय समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों को स्थानीय लोगों ने सूचना दी कि घटना के पीछे गृहकलह जैसी वडी कोई घटना है, अन्यथा १॥ वर्ष के मासूम बच्चे की ममता को एक मां कैसे छोड देती। पश्चिमी वगाल में इन्दिरा कांग्रेस की महिला विभाग की श्रीमती प्रभा मिश्र और संयोजिका मिनती अधिकारी घटना की सूचना मिलते ही घटनास्थल पर पहुंची तो जालान परिवार ने सहयोगात्मक रूप नहीं अपनाया और मकान मालिक ने उन्हे वहां से जाने के लिए कहा। इन महिला अधिकारियों ने कुसुम जालान के ससुर उमाशकर जालान, पति लक्ष्मी नारायण जालान तथा सास द्रौपदी से कुसुम के मरने के बारे मे पूछा तब उन्होंने कहा कि हमे पता नही यह कैसे मरी है ?

प्रेस प्रतिनिधियों के अनुसार कुसुम की शादी १९७८ में हुई थी, उसे एक पुत्र है और वह पुन. मां बनने वाली थी। युवती के मायके वालों के अनुसार कुसुम के ससुराल वाले किराने के व्यापारी हैं। मायके वालो का आरोप है कि शादी के बाद से कुसुम को सदैव यातना दी जाती थी। वह मायके आकर भी सामान्य नही हो पाती थी। घटना के अगले दिन प्रातः मायके वालो को टेलीफोन पर बताया गया कि आपकी पुत्री मर गई है।

एक अन्य सूत्र के अनुसार कुसुम

(शेष पृष्ठ ८ पर पढ़ें)

आर्य जगत् समाचार

स्वामी दयानन्द का मार्ग ही अनुकरणीय

चन्द्र आर्य विद्यामन्दिर में उपराज्यपाल खुराना का उद्बोधन

दिल्ली ५ जुलाई । 'मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप यहां नैतिक शिक्षण देते हैं । खेद का विषय है कि आज अधिकतर शिक्षणालयों एवं शिक्षासंस्थाओं मे नैतिक शिक्षा की उपेक्षा है । यह जानकर भी खुशी हुई कि यहां ऐसे बहुत से बच्चे हैं जिनके सिर से बाप का साया उठ गया था, समाज और मुल्क का फर्ज है कि ऐसे अनाथ बच्चे अनाथ न समझे जाएं और उन्हें स्वावलम्बी, शिक्षित और प्रगतिशील बनाया जाए'—इन शब्दो मे दिल्ली के उपराज्यपाल श्री सुन्दरलाल खुराना ने सूरज पर्बत, लाजपत नगर, नई दिल्ली-६५ मे अवस्थित चन्द्र आर्यविद्यामन्दिर एवं छात्रावास के वार्षिकोत्सव का उद्घाटन किया ।

खुराना जी ने कहा—स्वामी दयानन्द जी ने हमे आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया है, आज देश के सामने बहुत-सी समस्याएं हैं, देश और समाज को उठाना है । हमे आगे बढकर मानव-समाज को आगे बढ़ाना है, इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण कर आर्यसमाज बहुत कुछ कर सकता है । खुराना जी ने संस्था के कार्यों से अभिभूत होकर ५०१) की निजी सहायता संस्था को भेंट की । इस अवसर पर संसद सदस्य श्री डोगरा ने राज्यपाल महोदय एव आगत सज्जनों का धन्यवाद किया, एवं संसद सदस्य श्री भगवानदेव आचार्य, श्री रामकुमार गुप्त, श्री सरदारी लाल जी वर्मा आदि ने सामयिक भाषण दिए । संस्था के प्रधान श्री देशराज चौधरी ने विद्यामन्दिर एवं छात्रावास की प्रगति का विवरण देते हुए सूचना दी कि यहां ६२५ अनाथ बच्चों का लालन एव शिक्षा की व्यवस्था है । संस्था के भवनो पर अभी तक २७ लाख रुपयो की धनराशि खर्च आ चुकी है । संस्था का लक्ष्य समाज के उपेक्षित अनाथ बच्चों को सुधरा हुआ नागरिक-सच्चा आर्य एवं स्वावलम्बी देशवासी बनाना है ।

०—०—०

आर्यसमाज आदर्शनगर में वेदकथा

आर्यसमाज आदर्शनगर, दिल्ली-३३ में ६ जुलाई से १२ जुलाई १९८१ तक श्री पुरुषोत्तम एम० ए० की वेदकथा का आयोजन किया गया । इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री सत्यपाल मधुर ने सामयिक भजन प्रस्तुत किए । इस आयोजन मे पं० जैमिनी शास्त्री, श्री प्रेमचन्द, श्री धर, श्री आर्यभिक्षु वानप्रस्थी आदि विद्वान भी पधारें ।

९ जुलाई को दोपहर के समय डॉ० श्रीमती सरोज दीक्षा की अध्यक्षता में महिला-सत्संग भी हुआ ।

०——०

वेदप्रचार के मैदान में मातृमन्दिर की ब्रह्मचारिणियां

उल्लेखनीय है कि नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी अवस्थित मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने अपने प्रायोगिक शिक्षणक्रम के सिलसिले मे ११ नवम्बर से १७ नवम्बर तक आर्यसमाज इटावा में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वेद प्रचार कार्य किया । उन्होने १८ नवम्बर से २२ नवम्बर तक सिरसागंज मे सामवेद यज्ञ में सहयोग एवं वेदप्रचार किया । २३ नवम्बर से २६ नवम्बर तक कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में वेदप्रचार किया । ६ फरवरी से ८ फरवरी तक आर्यसमाज बेवर की हीरक जयन्ती पर यजुर्वेद यज्ञ तथा वेदप्रचार किया । दोनों यज्ञों में डॉ० पुष्पावती ब्रह्मा थीं ।

सारे कार्यक्रमों में ब्रह्मचारिणियों की अनुशासनप्रियता, सादगी, स्फूर्ति वेदप्रचारशैली ने जनता का हृदय मोह लिया ।

०—०

पीलीभीत में अनुकरणीय कदम

बाल्मीकि के गृह में पारिवारिक सत्संग

२९ जून, १९८१ के दिन प्रातः ८-३० बजे पीलीभीत के मोहल्ला सुनगढी स्थित बांकेलाल बाल्मीकि के निवासस्थान पर आर्यसमाज पीलीभीत के तत्वावधान में पारिवारिक सत्संग हुआ । उसमे ६० के लगभग उपस्थिति थी । स्थानीय बाल्मीकी भाइयो के अतिरिक्त १५ के लगभग आर्यसज्जनों ने इसमें भाग लिया । पीलीभीत आर्यसमाज की ओर से बाल्मीकि हरिजन भाइयों के मध्य पारिवारिक सत्संग की यह परम्परा प्रति सप्ताह प्रचलित रहेगी ।—धर्मवीर विद्यालंकार, आर्यसमाज, पीलीभीत ।

बोध-कथा

कम्बल ही सर्वस्व था !

एक फकीर के पास एक कम्बल था । एक चोर ने फकीर का वह कम्बल चुरा लिया । फकीर चोरी से परेशान होकर पास के थाने मे गया । उसने वहां थानेदार को चोरी गई चीजो की एक एक लम्बी सूची लिखा दी । उसने अपनी रपट में लिखाया, उसकी रजाई, गद्दा, मसनद, छतरी, पाजामा, कोट और अनेक चीजें खो गई हैं ।

फकीर द्वारा लिखाई गई चोरी गई चीजों की लम्बी फेहरिस्त की बात सुन कर चोर को गुस्सा आ गया । वह उसका कम्बल लेकर थानेदार के सामने आ पहुंचा । कम्बल सामने पटक कर चोर बोला—'जनाब, यही फकीर का फटा-पुराना कम्बल है और इसी की चोरी किए जाने पर यह फकीर लम्बी-चौड़ी फेहरिस्त लिखा गया है—उसने दुनियां भर की चीजें गुम हो जाने की शिकायत की है ।'

फकीर ने तेजी से अपना फटा-पुराना कम्बल उठाया और वहां से छूमन्तर होना ही चाहता था कि थानेदार ने उसे रोका और झूठी रपट लिखाने के लिए फकीर को सख्त-सुस्त कहा ।

फकीर ने जवाब में कहा—'नहीं-नहीं, मैंने कोई झूठी शिकायत नहीं लिखाई । यह कम्बल आप सबके लिए बेकार की चीज होगी, पर मेरे लिए तो यही गद्दा है, यही रजाई, यही मसनद और छाता है, यही मेरा पाजामा है और यही मेरा कोट । यही मेरी एकमात्र दौलत या जायदाद है ।' उसने कम्बल का हर प्रयोग कर थानेदार और चोर को बता दिया कि उसकी बात में सच्चाई थी । वह कम्बल ही उसका सर्वस्व था ।

सचमुच फकीरों और सन्तों के लिए एकमात्र भगवान् ही उनका सर्वस्व होता है ।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

११ जुलाई'८१

अन्धा मुगल प्रतापनगर—स्वामी ओम् आश्रित; अशोक विहार के-सी-५२-ए-पं० मोहनलाल भजनोपदेशक; आर्यपुरा—पं० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; आर. के. पुरम सैक्टर-६—मास्टर ओम्प्रकाश आर्य; आनन्दविहार-प० सत्यदेव भजनोपदेशक; इन्द्रपुरी—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; किंग्जवे कैम्प—पं० रमेशचन्द्र शास्त्री; किशनगंज मिल एरिया—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; कालका जी डी-डी-ए फ्लैट्स—डा० सुखदयाल भुटानी; कृष्णनगर—प्रो० सत्यपाल बेदार; खिचड़ीपुर—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; गांधीनगर—डॉ० रघुनन्दनसिंह; गीता कालोनी—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I-पं० सुधाकर स्नातक; गुड़मण्डी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; १२१-गुप्ता कालोनी—पं० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार; गोविन्दपुरी—पं० हीराप्रसाद शास्त्री; जंगपुरा भोगल—प० सत्यभूषण वेदालंकार; जनकपुरी बी-३/२४—पं० रामदेव शास्त्री; टैगोर गार्डन—ला० लखमीदास; डिफेन्स कालोनी—पं० सत्यपाल मधुर; तिलक नगर—श्रीमती लीलावती आर्या; तिमारपुर—श्रीमती सुशीला राजपाल; दरिया गंज—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक; नारायण विहार—पं० देवचन्द्र शास्त्री; पंजाबी बाग—श्री देशराज खन्ना; पंजाबी बाग—एक्सटेन्शन १४/३—पं० हरिदत्त शास्त्री; पश्चिमपुरी जनता क्वाटर्स—पं० रामरूप शर्मा; बाग कड़ेखां-प० बरकतराम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; बिरला लाइन्स—वैद्य रामकिशोर; माडल बस्ती—पं० ईश्वरदत्त; माडल टाउन—श्री चिमनलाल आर्य; महरौली—आचार्य रामशरण मिश्र शास्त्री; मोतीनगर—पं० अमरनाथ कान्त; रमेशनगर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; राणा प्रतापबाग—प० उदयपाल शास्त्री; राजौरी गार्डन—पं० खुशीराम शर्मा; लड्डू घाटी—पं० गणेशदत्त वानप्रस्थी; लाजपत नगर—स्वामी प्रेमानन्द; लक्ष्मीबाई नगर—पं० मुनिशंकर वानप्रस्थी; लेखनगर त्रिनगर—स्वामी स्वरूपानन्द; पं० ज्योतिप्रसाद भजन मण्डली; लारेन्स रोड—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; विक्रम नगर श्री मोहनलाल गांधी; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सोहनगंज—कविराज बनवारीलाल शादां भजन मण्डली; सराय रोहेल्ला—पं० महेशचन्द भजन मण्डली, श्री निवासपुरी—प० वेदपालशास्त्री; शादीपुर—पं० केशवचन्द मुन्जाल; शालीमार बाग—प० जैमुनि शास्त्री; हौज खास डी-२०—प० चन्द्रभानु सि० भू०।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार विभाग

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज लुधियाना रोड फीरोजपुर छावनी—प्रधान—श्री चमनप्रकाश नन्दा; उपप्रधान—सर्वश्री द्वारकानाथ वर्मा एवं रामचन्द्र आर्य; मन्त्री—श्री छज्जूराम आनन्द; उपमन्त्री—सर्वश्री किशोरचन्द्र एव धर्मपाल; कोषाध्यक्ष—श्री लालचन्द गुप्ता; पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाष आनन्द; लेखा निरीक्षक—पवनकुमार महाजन।

—०—

सत्यार्थप्रकाश परीक्षाओं में अधिक परीक्षार्थी

पारितोषिक दुगने कर दिए गए . युवक परिषद् का आयोजन

दिल्ली। सन् १९८१ के वर्ष मे आर्य जगत् सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी का आयोजन कर रहा है; आर्ययुवक परिषद् भी इस वर्ष सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओ मे अधिक परीक्षार्थी बैठना चाहता है। परिषद ने सभी परीक्षाओं मे पारितोषिक दुगने कर दिए है। सर्वाधिक परीक्षार्थी बैठाने वाले आर्यसमाज एव शिक्षण सस्था को भी सौ-सौ रुपए भेंट किए जाएंगे।

इसके अतिरिक्त मुसलमान, ईसाई एव पिछड़े वर्गों के भाई-बहनो को इस वर्ष अधिक से अधिक बैठने का प्रयत्न किया जाएगा। उनका उत्साह बढ़ाने के लिए विशेष पारितोषिक भी दिए जाएंगे।

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, डी० ४५।१२९, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसो

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल (भारतीय पद्धति से आवासी पब्लिक स्कूल) मे नव प्रवेश आरम्भ है। आर्ष पाठविधि के साथ साईंस, अंग्रेजी, गणित आदि विषयो के साथ पी० एच० डी० तक का उच्चाध्ययन, मासिक व्यय १००)रु० निर्धन मेधाविनी छात्राओ को छात्रवृतिया प्रवेश चयन द्वारा स्थान सीमित।

उपर्युक्त शिक्षणक्रम व बाल विकाश में सक्षम गुरुकुलीय पद्धति से अभिज्ञ अध्यापिकाओ, सामान्य प्रबन्ध कार्य मे सहयोगी वानप्रस्थ महानुभावो व देवियो की आवश्यकता है। सादे व पुरुषार्थमय जीवन का अभ्यास आवश्यक है।

—डॉ. पुष्पावती एम० ए०, पी.एच.डी. दर्शनाचार्य, विद्यावारिधि

भारत में इस्लामीकरण

(पृष्ठ ४ का शेष)

सम्मुख क्या लक्ष्य हैं, यह कुवैत स्थित 'अरब टाइम्स' मे इस्लामिक कल्चर सेंटर की प्रकाशित यह घोषणा हैं कि भारत के नौ करोड बीस लाख हरिजनो मे से कम से कम ६ करोड को मुसलमान बनाकर भारत मे मुसलमानो की सख्या अविलम्ब ही मौजूदा १३ करोड से २० करोड बनायी जा सकती है। इस सैंटर की बैठक मे २७ मुस्लिम देशो के प्रति निधि उपस्थित थे। यह भी निश्चय किया गया कि संसार के जिन देशो मे गैर मुसलमानों की हकूमत मे मुसलमान रहते हैं, वहां के मुसलमानो की 'होमलैंड' की माग की पूरी सहायता की जाएगी। भारत मे १९५१ से १९७१ के बीच की सख्या जहा ३५ प्रतिशत बढी, वहा हिन्दुओ की मात्र २ प्रतिशत ही बढ़ी। पैट्रोडालर के इन अरब देशो के धन से न केवल भारत विशेषत उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तर पूर्वीराज्य, असम मे कस्बो और गावो तक शानदार मस्जिदें मदरसे तथा अन्य इस्लामी सस्था धडाधड बन रही हैं, वहा ताजे समाचारो के अनुसार विश्व के एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल के नगरो-कस्बो मे मस्जिद-मदरसे बन रहे हैं।। यह भी पता चला है कि ये अरब देश बंगला देश के विस्थापित मुसलमानो को खूब धन देकर नेपाल मे घुसपैठ द्वारा वहा आबाद कर रहे हैं।

राष्ट्र रक्षा के लिए आर्यसमाज ही सक्षम

इस विषम और सकटपूर्ण स्थिति का मुकाबला, हिन्दू मात्र की सहायता से आर्यसमाज ही कर सकता है जिसकी सम्पत्ति प्रभु विश्वास के साथ त्याग, तपस्या, प्रचार की लगन और वैदिक धर्म की रक्षा के लिऐं जीवन के अन्तिम क्षण तक डटकर राष्ट्र घातको से जूझने का दृढ सकल्प है।

ई-३७ शास्त्रीनगर, जयपुर-६

—०—०—

ससुराल वालों की मांग

(पृष्ठ ५ का शेष)

की जान लेने के पहले भी दो प्रयास किए गए थे, किन्तु वह बच गई। इन्ही सूत्रो के अनुसार घटना से दो दिन पूर्व कुसुम न अपने पिता को फोन पर बताया था कि इन ने लोगो यह धमकी दी है कि अगर वी० डी० ओ० सेट और स्कूटर नहीं मिले तो उसे मार दिया जाएगा।

[दहेज की बलिवेदीपर उसरी कलकत्ता की कुसुम भाखान को न्योछावर हो जाने की घटना अत्यन्त हृदयस्पर्शी है, कुसुम की मृत्यु किन परिस्थयो में हुई, इसकी निष्पक्ष जाच सी० बी० आई० द्वारा होनी ही चाहिए। इसी के साथ यदि उसकी हत्या प्रमाणित होती है तो कानून और शासन तो अभियुक्तों के विरुद्ध कार्यवाही करेंगे ही, साथ ही समाज का भी यह पुनीत कर्त्तव्य है कि ऐसे धनलोलुप कन्याओ के हत्यारों का पूर्ण बहिष्कार किया जाए। —सम्पादक]

०—०—०

आर्यसमाज के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज रामकृष्णपुरम सैक्टर-९ प्रधान श्री हरबसलाल कोहली, उपप्रधान—सर्वश्री अर्जुनदेव, प्रेमनाथ, मन्त्री —श्री जगदीशसिंह वर्मा, प्रचार-मन्त्री श्री ओम्प्रकाश कपूर, उपमन्त्री-सर्वश्री रूमालसिह व सतपाल राजपूत, कोषाध्यक्ष—श्री हरबशलाल कपूर।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रैस ७२७/१-सी, [illegible]
[illegible] दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ४ · अंक ४८ रविवार ११ आश्विन, वि० २०३८ २७ सितम्बर १९८१ दयानन्दाब्द १५७

पुष्कर के समीप खड़ेकड़ी का पूरा गांव हिन्दूधर्म में दीक्षित

पन्द्रह सौ मुसलमानों ने पूर्वजों का धर्म अपनाया

अजमेर। अजमेर से लगभग ११ किलोमीटर दूर फाईसागर और पुष्कर के निकट महाराजा अजयपाल और पृथ्वीराज की पुरानी राजधानी अजमेर के निकट खरेकड़ी गांव के चीता महेरात परिवारों के पन्द्रह सौ मुस्लिम धर्मावलम्बियों ने सीने पर पृथ्वीराज चौहान के बिल्ले लगा कर हिन्दू धर्म ग्रहण किया और सिंहगर्जना की—'हम पृथ्वीराज चौहान के वंशज हैं और हम पूरी तरह से पृथ्वीराज चौहान की भांति ही हिन्दू रीति-रिवाजों को अपनाएंगे और मुस्लिमों के रीति-रिवाज छोड़ देंगे।'

धर्म परिवर्तन-समारोह का आयोजन विश्व हिन्दू परिषद् तथा आर्य हिन्दू संगठनों ने किया था। इस मुस्लिम-बहुल गांव में अब केवल तीन परिवार ही मुसलमान रह गए हैं। ११ सितम्बर की रात्रि को रात्रि-जागरण किया गया। श्री कश्यदेव वानप्रस्थ के भजन और अभय घोष के सम्पादक श्री मूलचन्द्र आर्य के राजस्थानी भाषा में प्रवचन हुए। इस अवसर पर अनेक भजन मण्डलियां आई हुई थीं। १२ सितम्बर को प्रातः तीन मुस्लिम परिवारों को छोड़कर शेष ग्रामवासी गाजे-बाजे के साथ पहाड़ के शिखर पर बने हुए बाबा रामेश्वर के मन्दिर गए और प्रसादी चढ़ाई। वापस आकर निकटवर्ती गांवों के हजारों ग्रामीणों ने प्रसादी ग्रहण करके अपने माथों पर कुंकुम के टीके और सीने पर पृथ्वीराज चौहान के बिल्ले लगाए।

धर्म परिवर्तन समारोह के अवसर पर किसी अप्रिय घटना को रोकने के लिए गांवों में पुलिस तथा गुप्तचर पुलिस के जवान नियुक्त किए गए थे।

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह की विशाल तैयारी पूर्ण

उदयपुर। आगामी १६-१७-१८ अक्तूबर १९८१ को उदयपुर (राजस्थान) में अन्तराष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह की विशाल तैयारियां लगभग पूर्ण हो गई हैं। आकर्षक भण्डारी दर्शक मण्डप एवं प्रसिद्ध महाराणा भूपाल स्टेडियम के विशाल मैदान में एक लाख आर्य दर्शकों के बैठने एवं विभिन्न विद्यालयों, विश्रान्ति गृहों, धर्मशालाओं आदि में आवास एवं भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था हो गई है।

शताब्दी के अवसर पर भव्य-नगर-कीर्तन, प्रदर्शनी, सत्यार्थ-भृत्-यज्ञ, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, धर्म रक्षा सम्मेलन, कवि सम्मेलन, आर्य-युवक तथा महिला सम्मेलन आदि के कार्यक्रमों की व्यवस्था की जा रही है। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वान, आर्यनेता देश-विदेश की प्रतिनिधि सभाओं, समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों, आर्यवीर दल को आमन्त्रित किया गया है। दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं कार्यवाहक मन्त्री ने दिल्ली की जनता से अनुरोध किया है कि वह अधिक से अधिक गिनती में इस ऐतिहासिक अवसर पर उदयपुर पहुंचे। उदयपुर पहुंचने के लिए जनता प्रतिनिधि सभा और सम्बद्ध आर्यसमाजों से सम्पर्क कर सकती है।

स्थिति गम्भीर हुई तो आर्यसमाज सीधी कार्यवाही करेगा

'विदेशी तत्त्वों द्वारा इस्लामीकरण की योजना चलने नहीं दी जाएगी —सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान— श्री वन्देमातरम् की घोषणा

हैदराबाद। आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आरोप लगाया कि जमात-ए-इस्लामी हिन्द ने एक ऐसे राज्य के निर्माण की कल्पना की है जिसमें मानवीय जीवन के हर क्षेत्र—व्यापार, बैंकिंग, शिक्षा, खेलकूद, पत्रकारिता, उद्योग, श्रमिक सगठनों का इस्लामीकरण कर दिया जाएगा। इसका लक्ष्य यह है कि मुसलमान राष्ट्र की मुख्यधारा से हमेशा के लिए पृथक् कर दिए जाएं।

श्री वन्देमातरम् ने कहा—जो विदेशी नागरिक इस्लाम की ओर से सामूहिक धर्मान्तरण कर रहे हैं, उनका लक्ष्य देश के राजनीतिक ढांचे को अस्थिर कर देना है। आर्यसमाज जमात-ए-इस्लामी द्वारा प्रचारित इस्लामीकरण की विचारधारा तथा इस्लाम में सामूहिक धर्मान्तरण होने के खतरे का पूरी दृढ़ता से सामना करेगा। अगर स्थिति ज्यादा गम्भीर हुई तो किसी प्रकार की सीधी कार्यवाही भी की जाएगी।

—०—

लाला जगतनारायण की हत्या की कड़ी निन्दा

जालन्धर। पंजाब हिन्दू संगठन के संयोजक सर्व श्री वीरेन्द्र, चतुर्भुज मित्तल, भोलानाथ मिश्रा, जुगलकिशोर गोयनका, सरदारीलाल आर्यरत्न, मोहनलाल जख्मी, मेजर शामलाल, डॉ. कालीचरण ने एक संयुक्त प्रेस वक्तव्य में पूज्य लाला जगतनारायण की हत्या पर गहरा शोक प्रकट किया और कहा कि यह घटना पंजाब की राष्ट्रवादी जनता के लिए एक चुनौती है, जिसे यदि स्वीकार न किया गया तो भयानक परिणाम निकलेंगे। पंजाब की हिन्दू जनता विशेष रूप से चिन्तित है। आज यदि एक ऐसे प्रमुख व्यक्ति की हत्या हो सकती है तो उनके पश्चात् और कौन सुरक्षित हो सकता है। जिन लोगों ने लाला जगतनारायण की हत्या की है उन्होंने एक प्रकार से पंजाब के राष्ट्रवादी हिन्दुओं को चेतावनी दी है कि यदि उन्होंने अकाली दृष्टिकोण का समर्थन न किया तो उसका बुरा परिणाम होगा।

अपनी सामाजिक दुर्बलताएं दूर कीजिए

प्रो० शेरसिंह का उद्बोधन

दिल्ली। 'हजारों वर्षों से हिन्दुओं ने जन्मगत जात-पांत और छुआछूत का रोग पाल रखा है, अब इस रोग से छुटकारे का अवसर आ गया है। मीनाक्षीपुरम आदि के लिए हमें औरों को दोष देने के बजाय अपनी सामाजिक दुर्बलताएं दूर करनी चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि तमिलनाडु के धर्माध्यक्ष और मठाधीश एक-एक हरिजन गांव को गोद लेकर उनकी शिकायत दूर करने का सिलसिला प्रारम्भ कर चुके हैं।' ये शब्द आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अधिवेशन पर आर्यनेता एवं भू० पू० केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेर सिंह ने रखे।

—सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

यज्ञ का अष्टविध दोहन

यज्ञस्य दो हो विततः पुरुत्रा सोष्टधा दिवमन्वात तान ।
स यज्ञ धुक्ष्व महिमे प्रजायां रायस्पोषविश्वमायुरशीय स्वाहा ॥ यजु. ८-६२

ऋषि—वसिष्ठ । देवता-यज्ञ । छन्द—स्वराडार्षीत्रिष्टुप ।

शब्दार्थ—(यज्ञस्य) यज्ञ का (दोहः) दोहन (वितत) विस्तृत: और (पुरुत्रा) विविध है। (स) वह दोहन (दिवम्) वृद्धि का (अष्टधा) आठ प्रकार से (अनुअतान) सामर्थ्य के अनुसार विस्तार करता है।

(यज्ञ) हे यज्ञ (स) वह तू (मे प्रजायाम्) मेरी सन्तति मे (महि रायस्पोषम्) धन से तथा धन द्वारा होने वाले पोषण को प्रभूत मात्रा मे (धुक्ष्व) कर जिससे मैं (विश्व आयु) अपनी पूर्ण आयु को (अशीय) सुखपूर्वक भोग सकूं-व्यतीत कर सकूं।

निष्कर्ष—अग्नेऽभ्यावर्तिन्नभि मा निवर्तस्व,

आयुषा वर्चसा प्रजया धनेन सन्या मेधयारय्या पोषेण ॥ यजु १२-९

यज्ञ का दोहन यदि ठीक प्रकार से किया जाए तो वह आयु-तेज-सन्तान धन -ान क्षमता-ज्ञा-ऐश्वर्य और पोषण के द्वारा आठ प्रकार की वृद्धि करता है।

२. यदि यज्ञ सन्तान को धन-धान्य और पोषण से अच्छी तरह पुष्ट रखे, तभी वृद्ध जन अपनी पूरी आयु सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते है, क्योकि यदि सन्तान के पास पर्याप्त धन-धान्य न हो तो वे वृद्ध पितरो की ठीक प्रकार सेवा-अर्चा नही कर सकते।

३ यज्ञ का अर्थ – केवल अग्नि होत्र न लेकर, क. वृद्ध पितरो और विद्वानो का किसी भी प्रकार का आदर-सत्कार, (ख) एक ही क्षेत्र में काम करने वालों के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग और (ग) अपने से छोटो और अभाव-ग्रस्तो के साथ सब प्रकार की सहायता लेना चाहिए। जिस गृह, समाज या राष्ट्र मे ये तीनो कार्य होते हैं, वहा ऊपर चर्चित आठो प्रकार की वृद्धि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

४. स्वाहा—यह बडे सुन्दर वचन अथवा उत्तम सूक्ति है। इस सूक्ति को सार्थक बनाने के लिए परार्थ के लिए अपने तुच्छ स्वार्थ का त्याग (ओहाक् त्यागे) करके सदा उन्नत रूप से प्रगतिशील (ओहाङ् गतौ) रहते हुए कर्म रत रहना चाहिए।

विशेष—अपने जीवन को यज्ञ रूप बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता हुआ, दूसरो को भी बसाने का ध्यान रखे, ऐसे कार्य न करे जिससे दूसरे उजड़ जाए या बेघरबार हो जाएं। इस मन्त्र का छन्द त्रिष्टुप् सकेत करता है कि यज्ञ के तीनो अर्थों को आचरण मे ढालना ही गृह, समाज और राष्ट्र की त्रिविध सेवा या स्तुति है।

अर्थपोषक प्रमाण—दिवम्—दिव्यं स्वरूप सत्यप्रकाश वा । स्वामी दयानन्द । दिवम्—दिवु अर्दने=वृद्धौ । काशकृत्स्नः दोह दुह प्रपूरणे ।

भावार्थ—यस्माद् यज्ञात् सर्वाणि सुखानि जायन्ते तस्यानुष्ठानं सर्वैर्मनुष्यै कुतो न कार्यम् ॥ स्वामी दयानन्द । जिस यज्ञ से सब सुख प्राप्त होते हैं, इसलिए यज्ञानुष्ठान ब मनुष्यो को करना चाहिए। यजु: ८-६०

—मनोहर विद्यालकार
५२ ईश्वर भवन, खारी बावड़ी दिल्ली-६

विनम्रता

एक समय की बात है। ओलो की अचानक वर्षा से सारी फसल नष्ट हो गई, कुरु प्रदेश के एक गांव मे हाथीवान रहते थे। इसी गांव में एक निर्धन ऋषि उषस्ति चाक्रायण अपनी पत्नी के साथ रहने लगे। गांव में कहीं अनाज का एक दाना नही मिला। भूख से ऋषि बहुत व्याकुल हो गए। उन्होने देखा कि एक हाथीवान गले-सडे उडद खा रहा था। ऋषि ने हाथीवान से उन झूठे उड़दों की ही भिक्षा मांगी। ऋषि ने झूठे उड़दो से अपनी भूख मिटाई और बचे उड़द लाकर पत्नी को दे दिए। पत्नी पहले ही भिक्षा मागकर अपनी भूख का निवारण कर चुकी थी। पत्नी ने वे झूठे उड़द अगले दिन के लिए सम्भाल कर रख दिए।

ऋषि भूख के कारण बड़े लाचार और पस्त हो गए थे। अगले दिन झूठे उड़द खाकर वह कुछ शक्ति जुटाकर जीविका की खोज मे चल पड़े। एक जगह उन्होने देखा कि एक राजा एक यज्ञ करवा रहे थे, परन्तु यज्ञ के सब सूत्रधार महर्षि अपने काम मे अनाडी थे। ऋषि ने यज्ञ की विधि के बारे मे उन संयोजकों से कुछ प्रश्न पूछे, जिनका वे ठीक उत्तर नहीं दे सके। राजा ने यह दृश्य देखकर उनका परिचय पूछा। ऋषि ने उत्तर दिया, 'मेरा नाम उशस्ति चाक्रायण है।'

राजा ने कहा—'मैंने आपकी विद्वत्ता और आपका नाम सुना है। मैंने आपको बहुत ढुंढवाया था, पर आप मिले नही। अब आप ही इन ऋत्विजों के मुख्य ऋत्विज का कार्य करें।'

उशस्ति ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और कहा—'जितनी दक्षिणा इन लोगो मे नय हुई है, उतनी ही मैं लूंगा उससे अधिक नही।'

ऋषि की उदारता देखकर दूसरे ऋत्विज प्रभावित हो गए। उन्होंने जब अपने यज्ञ कार्य मे त्रुटि पूछी तो ऋषि ने उनका समुचित समाधान कर दिया।

विद्या के साथ झूठा अहंकार भी पैदा हो सकता है, परन्तु यथार्थ विद्या वह है जहां विद्या के साथ विनम्रता भी हो। इसी के साथ निर्धन व्यक्ति भी गुणी और महान् हो सकता है।

—नरेन्द्र

खाई जो पाखण्ड की है

—कविराज बनवारीलाल 'शादां'

फूल मानवता के फिर से, आज कुम्हलाने लगे।
भाई अपने भाइयों पर, कहर बरसाने लगे ॥
कुछ समझ बैठे थे हम, कुछ नजर आने लगे।
हिन्द के टुकड़े किये थे, हक और बतलाने लगे ॥

हमारे मित्र बनकर आए, हमसे दोस्ती करने।
हमीं से छल कपट करते, उल्टे दम लगे भरने ॥
हमारे घर मे ही रहकर, हमें आंखें दिखाते हैं।
मिटाना चाहें ये हमको, लगे सब ध्यान यह धरने ॥

वक्त की आवाज है, अब, एक सब हो जायें हम।
पक्षी है इक डाल के सब, एक स्वर हो गायें हम ॥
एकता ऐसी बनायें, सारा जग हैरान हो।
आएं जो उलझन सामने अब, प्रेम से सुलझाएं हम ॥

मधुर मधु या जहर कटु की बूद हमको चाखनी है।
ऋषि दयानन्द की प्रतिज्ञा, आज सबको राखनी है ॥
शादां मत भूलो कि हम, सन्तान आर्य वीरों की हैं।
खाई जो पाखण्ड की है, आज हमको पाटनी है ॥

— प्रधान, आर्यसमाज, मॉडल बस्ती नई दिल्ली-५

हम यशस्वी बनें !

ओ३म् यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत ।
विश्वस्य भूतस्याहमास्मि यशस्तमः ॥ अथर्व. ६.३९.३

सूर्य यशस्वी है, अग्नि यशस्वी है और चन्द्रमा भी यशस्वी है और भगवान की कृपा एवं अपने तप, त्याग, प्रयत्न, सयम, अनुभव और परिश्रम से हम भी यशस्वी बनें।

भारत को नया संकट

राजनीति का एक बुनियादी सूत्र है कि किसी भी राष्ट्र का कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता। प्रत्येक अपने हिताहित का ख्यालकर अपने साथी और विरोधी का निर्धारण करता है। अंग्रेजी शासन समाप्त होने पर स्वतन्त्र भारत की वैदेशिक नीति का सूत्र बड़े राष्ट्रों के गुटों से पृथक होकर अपनी पृथक तटस्थता सुरक्षित रखना रहा है। इस तटस्थता की नीति के फलस्वरूप भारत विश्व की राजनीति में पूरी तरह अलग-थलग पड़ गया है, उसका आज कोई सच्चा मित्र नहीं है, हां, समय-समय पर उसका अहित करने वाले कई राष्ट्र हैं। कल तक हमारे ही राष्ट्र का एक भूभाग हमारे पड़ोसी पाकिस्तान की नीति का एकमात्र सूत्र है—भारत का विरोध। अपने इस भारत-विरोध के लिए उसे सयुक्त राज्य अमेरिका से सदा सैनिक सहायता मिलती रही है। १९६५ और १९७१ के युद्धों में पाकिस्तान ने अमेरिकी शस्त्रास्त्रों तथा सैनिक सहायता के बल पर भारत के अस्तित्व को चुनौती दी थी। अब इस प्रकार की आशंका फिर है कि अमेरिका एक बार पुन पाकिस्तान को प्रभूत सैनिक सहायता और नवीनतम हथियार देने के लिए कृतसंकल्प है।

इन दिनों भारत के क्षितिज पर नया संकट मडरा रहा है। सयुक्तराज्य अमेरिका के सहायक विदेश-मन्त्री जेम्स बकले ने स्वीकार किया है कि अमेरिका पाकिस्तान को ३० खरब २ अरब की मदद करेगा। वह उसे सर्वाधिक विकसित विमान, आधुनिक टैंक, स्वचालित शस्त्रास्त्र एवं सैनिकों के यातायात के लिए उपयुक्त सशस्त्र मोटर गाड़ियां तथा लड़ाकू हैलिकोप्टर देने जा रहा है। एक प्रश्न के उत्तर मे उन्होंने स्वीकार किया है कि यह एक ऐसी आधुनिक युद्ध प्रणाली है, जिसे पाकिस्तान अपने सशक्त सघर्ष मे भारत के विरुद्ध सरलतापूर्वक प्रयुक्त कर सकता है। हमारा पड़ोसी पाकिस्तान यद्यपि अफगानिस्तान मे सोवियत रूस की सेनाओं की उपस्थिति के विरोध मे अपनी शस्त्रसज्जा कर रहा है और उसे इसी आधार अमेरिका भी मदद कर रहा है, तथापि यह सारी व्यूहरचना भारत के विरोध में है।

समय रहते भारत को सावधान और सन्नद्ध होना पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हमें अपने मित्रों को ढूंढ़ना होगा। अतीत काल मे संकट की घड़ियों मे सोवियत रूस ने हमारी मदद की है, हम भविष्य में भी उसकी मैत्री पर विश्वास कर सकते हैं। इसी के साथ हमारे सहयोग के बावजूद मध्यपूर्व के अरब राष्ट्रों ने हमें कभी मदद नहीं की है भविष्य मे भी हम उनकी सहायता पर भरोसा नहीं कर सकते। इसके लिए तो हमें जर्मनी, जापान, फ्रांस, इजरायल आदि उन राष्ट्रों की सहायता लेनी होगी जो विश्व की राजनीति में हमारी मदद कर सकते हैं। क्षितिज पर मडराते नए संकट की रोकथाम के लिए हमें अपनी जनशक्ति को संगठित, सन्नद्ध करना होगा, अपने शस्त्रागार को प्रबल करना होगा और विश्व मोर्चे पर नए मित्र ढूंढ़ने होंगे।

—×—

सामूहिक जनचेतना की आवश्यकता

१५ सितम्बर के दिन भारतीय राज्यसभा में तमिलनाडु में कुछ हरिजनों के सामूहिक धर्म-परिवर्तन विषयक विचार-विनिमय का उत्तर देते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने घोषित किया है कि सरकार एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तन का नियन्त्रण करने के लिए किसी प्रस्ताव को कानून का रूप देने नहीं जा रही है। सरकार का कथन है कि जब कोई व्यक्ति धर्म बदलता है, तब उसमे सरकार कुछ नहीं कर सकती। दक्षिण भारत मे पिछले दिनों हुए सामूहिक धर्मान्तरण के पीछे विदेशी धन की ताकत को यद्यपि अभी केन्द्रीय शासन ने स्वीकार नहीं किया है, तथापि विभिन्न गैर सरकारी तथा सरकारी सूत्रों से इस के प्रभाव को मंजूर किया जा चुका है।

केन्द्रीय कृषि राज्यमन्त्री आर. वी. स्वामीनाथन ने हरिजनों पर अत्याचार के अभियोग को निराधार कहा है। उन्होंने कहा है कि धन के लालच की बात को छुपाने के लिए ही ऐसा प्रचार किया जा रहा है। उन्होंने संवाददाताओं को यह सूचना भी दी है कि उन्हें मिली जानकारी के अनुसार तिरुचिरापल्ली की एक शिक्षण संस्था को एक अरब देश से तीन करोड़ रुपए मिले हैं और यह धन हरिजनों को मुसलमान बनाने के लिए बांटा जा रहा है। केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री के वक्तव्य से ध्वनित होता है कि दक्षिण में हरिजनों के सामूहिक धर्मान्तरण को रोकने के लिए सरकारी तन्त्र पर भरोसा नहीं किया जा सकता, इसे रोकने के लिए सवर्ण हिन्दुओं को अपनी रीति-नीति बदलनी होगी और आर्यसमाज सरीखी सस्थाओं का सम्पूर्ण देश मे सामूहिक जनचेतना उत्पन्न कर जनता को इस आसन्न खतरे से सावधान करना होगा।

चिट्ठी-पत्री

स्तरीय स्वदेशी स्कूलों का अभाव दूर होना चाहिए

९ अगस्त '८१ के 'आर्य सन्देश' में मिशनरी स्कूलों मे घटी दो दु खद घटनाओं का विवरण पढ़ा। स्वाधीन भारत में अंग्रेजी की गुलामी निश्चय ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। देश के भावी कर्णधारों (बालक-बालिकाओं) को जब राष्ट्र-प्रेमी सस्थाओं अथवा विद्वान लोगों द्वारा सचालित स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सुलभ नहीं होंगे, तो उन्हें विवश होकर अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों मे प्रवेश लेना पड़ेगा। यह नि सकोच रूप से कहा जा सकता है कि स्वाधीनता प्राप्त करने के ३४ वर्षों बाद भी हमारे देश मे मिशनरी-स्कूलों के समान स्तरीय शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूल उंगलियों पर गिनने लायक होंगे।

कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली तथा मद्रास जैसे महानगरों मे कुछ स्तरीय स्कूल नामवर धनिकों द्वारा चलाए जा रहे हैं, परन्तु उनमे प्रवेश पाना मिशनरी स्कूल से भी मँहगा है जो सामान्य आय वाले पालकों के लिए चुनौती जैसा ही है। जरूरत इस बात की है कि आर्यसमाज जैसी राष्ट्रीय विचार-धारा वाली स्वदेशी सस्थाएं शिक्षा और स्वदेशी सस्कारों की महत्ता को ध्यान मे रख कर अच्छे स्कूलों का निर्माण करें।

—व्रजभूषण दुबे (एम. एस. सी)
३०, गोराचद रोड, कलकत्ता-७०००१४

लन्दन के एक विद्यालय में संस्कृत अनिवार्य

लन्दन के हृदय स्थान ६१ क्वीन्सगेट, केनिंग्सटन मे श्री निकलसन डीनहम के संचालन में सेण्ट जेम्स इण्डीपेण्डेण्ट विद्यालय है। विद्यालय में पिछले तीस वर्षों से ससार के विभिन्न धर्मों और दर्शनशास्त्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया और उन्हें दैनिक जीवन मे कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया गया।

वर्षों के लम्बे अध्ययन एवं व्यावहारिक परीक्षणों के बाद अनुभव किया गया कि विश्व मे सर्वोत्तम सस्कृति वैदिक संस्कृति है। फलतः वैदिक संस्कृति और सभ्यता का व्यापक अध्ययन करने के लिए सस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया। प्रारम्भ में भारतीय विद्वान जायसवाल ने सस्कृत भाषा का अध्ययन कराया परन्तु अब प्राध्यापक मैकल सस्कृत पढाते हैं।

श्री डेबनहम के अनुसार इस विद्यालय के ९९ प्र० श० छात्र अंग्रेज है, ५० प्र०श० छात्राएं हैं। सहशिक्षा की व्यवस्था नहीं है। यद्यपि वर्ष मे १६०० पाउण्ड का शुल्क देना पड़ता है, तथापि विद्यालय मे प्रवेशार्थियों की भीड़ लगी रहती है। विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र आदि सभी विषयों मे शिक्षकों के लिए सस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। विद्यालय के सभी शिक्षक अंग्रेज हैं। यहां पूर्व के चिन्तन की गहराई तथा पश्चिम की तीव्र गति का समन्वय है। प्रतिदिन विद्यालय का प्रारम्भ खड़े होकर आँख मूंदकर हाथ जोड़कर छात्र 'ओ३म् परमात्मने नमः' की प्रार्थना से करते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी में मेरे आठ दिन (२)

विद्यालय की सर्वांगीण उन्नति की जाए

मेरी विचारधारा यह है कि गुरुकुल की रीढ़ की हड्डी विद्यालय विभाग है और हमे इसे उन्नत करने के लिए हर सम्भव उपाय की खोज करनी चाहिए। इस विभाग केछात्र ७-८ वर्ष की उम्र मे लिए जाते रहे हैं, उन्हे छात्र न कह कर ब्रह्मचारी कहा जाता रहा है, उन्हे सध्या हवन कराया जाता है, वे छात्रावास मे रहते हैं, उनके कोमल मन पर गुरुकुलीय विचारों के सस्कार डाले जा सकते हैं। उनका जीवन हम जिस दिशा मे ढालना चाहें ढाल सकते हैं। जो विश्वविद्यालय मे छात्र भर्ती होते हैं वे १७-१८ वर्ष के होते हैं, उनपर हमारी विचारधारा, हमारी सस्कृति हमारे लक्ष्यों का छाप डाल सकना उतना सरल नही है जितना ७-८ वर्ष के बालको के जीवन पर डाल सकना सम्भव है। ऐसी स्थिति मे हमे अपनी सम्पूर्ण शक्ति विद्यालय विभाग को समुन्नत करने के लिए लगानी ही उचित है। विभाग इतना विशाल हो जाना चाहिए कि हमारे विश्वविद्यालय मे भर्ती होने वाले छात्रो का यही फीडर हो जाना चाहिए। पहले के युग मे ऐसा ही था। यही कारण था कि उस समय के स्नातक जो अपने जीवन के प्रारम्भिक १० वर्ष गुरुकुल विद्यालय मे व्यतीन कर चुके होते थे, वे महाविद्यालय मे आकर गुरुकुलीयता के रंग मे रंग जाते थे। इस स्थिति को लाने का एक ही उपाय है। वह उपाय यही है कि विद्यालय का हर स्तर उन्नत किया जाए जिससे हर माता पिता को, गुरुकुल-स्नातको को, सभा के अधिकारियो को अपने पुत्र गुरुकुल मे प्रविष्ट करने की इच्छा ही नही, उत्सुकता उत्पन्न हो।

सब सुविधाएं हैं

गुरुकुल के पास क्या नहीं है जो अच्छे से अच्छे किसी भी पब्लिक स्कूल के पास है? यहा विशाल परिसर है, उत्तम भवन है, छात्रावास है, खेलने के लिए अनेक क्रीडाक्षेत्र हैं, स्विमिंग पुल की जगह चौड़े पाट की लम्बी-चौड़ी नहर है, खेलने-कूदने की सब सुविधाए हैं। इतना सब कुछ होने हुए भी हमारे छात्रो का जीवनस्तर अनाथालयो के छात्रो के समान है। इसके दो कारण हैं एक तो यह कि हमने अध्यापको का स्तर ही बहुत निम्न रखा हुआ है, दूसरा यह कि हम अब तक इसी सोच मे हैं कि छात्रो के अभिभावको से कम मे कम व्यय लिया जाए। विद्यालय विभाग का संचालन करने वाला कोई ऐसा व्यक्ति नही है जो अपनी सारी शक्ति को इसे इतना ऊचा ले जाने में व्यय कर दे जिस मे इसकी ऐसी स्थिति हो जाए कि हम पब्लिक स्कूलों की तरफ झांकने के स्थान में पब्लिक स्कूलो के सचालको को गुरुकुल विद्यालय को अपना आदर्श मानने मे विवश कर दें। इस दिशा मे कार्य करने वाले होनहार स्वप्नद्रष्टाओ का कभी संग्रह था, अब ऐसे व्यक्तियों की खोज की जा सकती है। परन्तु आज की विकट आर्थिक स्थिति मे उनके जीवनस्तर को भी उच्च बनाये रखना होगा। मेरी सम्मति मे विद्यालय विभाग के लिए उच्चकोटि के शिक्षाप्राप्त कोई व्यक्ति ढूढना पड़ेगा जिसे शिक्षा जगत् का अनुभव हो, स्वप्नद्रष्टा हो, गुरुकुल विद्यालय को ऊंचे स्तर पर ले जाने के लिए कृतसकल्प हो और जिसकी आर्थिक समस्या को हम पूर्णतः हल कर सके। इसके साथ उसे हमे ऐसे अध्यापक देने होंगे जो उच्च कोटि के शिक्षाविज्ञ हों।

उच्च स्तरीय जीवन से मेरा क्या अभिप्राय है? उच्च-स्तरीय जीवन से मेरा यह अभिप्राय है कि बच्चो के कपड़े साफ-सुथरे हो, भोजन व्यवस्था मे उनके बैठने आदि की सुव्यवस्था हो, भले ही वे भूमि पर बैठकर भोजन करें, परन्तु बैठने के आसन फटे पुराने न हो, उनके खाने के बर्तन एक सम्पन्न घराने के बर्तनो के समान हों उनके खेलने के समय के वस्त्रो को देखकर ही पता लगे कि वे खेलने के वस्त्र हैं, उनके मूत्रालय, शौचालय युग के समान हों। भोजन मे दूध. दही फल सब कुछ मिलता हो, पहनने के कपड़े सब एक से हो, बिस्तर ढग के हो छात्र उनको ढंग से रखें—माता-पिता स्वयं कहें कि यह उच्च स्तर है, वे यह न कहें कि क्या अनाथालय बना रखा है।

बहु-भाषाभाषी बनें

शिक्षा की दृष्टि से विद्यार्थियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे वे हिन्दी सस्कृत तथा अग्रेजी मे-तीनों भाषाओं मे ऐसे बातचीत कर सकें जैसे ये तीनो उनकी मातृभाषा के समान हों। हिन्दी मे वे ऐसे बोलें और लिखें जैसे कोई शुद्ध हिन्दी का विद्वान बोलता या लिखता है, सस्कृत मे वे ऐसे बोलें और लिखे जैसे बनारस का पण्डित बोलता या लिखता है, अग्रेजी मे वे ऐसे बोले और लिखें जैसे कोई पब्लिक स्कूल का बालक बोलता या लिखता है। इसमें क्या कठिनाई है? भाषा बोलने से और सुनने से सीखी जाती है। गुरुकुल के आश्रम में हमे दो ऐसे सस्कृत के पण्डित रखने चाहिएं जो ब्रह्मचारियो से हर समय सस्कृत में बात करे, इसी प्रकार हमे दो ऐसे अंग्रेजी के धुरन्धर वक्ता अध्यापक रख देने चाहिए जो ब्रह्मचारियों से हर समय अंग्रेजी मे बात करें। शुद्ध भाषा का ज्ञान मनुष्य के जीवन स्तर को अपने आप ऊंचा कर देता है। हमारे बालक त्रिभाषी हों, और त्रिभाषी ऐसे, जो देश की तीन मुख्य भाषाओं में अपने हर विचार को प्रकट कर सकें. तो शिक्षा के क्षेत्र को यह हमारी विशेष देन ही नहीं होगी, यह हमारे कुल की एक विशेषता होगी। बम्बई में प्रायः बच्चे त्रिभाषी होते हैं। वे हिन्दी, मराठी, गुजराती तीनों भाषाओ को ऐसे बोलते हैं जैसे वे उनकी मातृभाषा हो।

मैंने देखा कि विद्यालय मे सायंकाल सोने से पहले देश के समाचारों को लाउडस्पीकर से हिन्दी मे प्रसारण की प्रथा चालू कर दी गई है। यह बहुत उत्तम योजना है। मेरा परामर्श है कि ये समाचार पहले हिन्दी मे फिर संस्कृत में फिर अंग्रेजी में—तीनो भाषाओं में प्रसारित किए जाए जिससे हर छात्र को इन तीनों भाषाओ के सुनने का अवसर प्राप्त हो। इससे भी प्रत्येक छात्र की इन तीनो भाषाओं में गति बढ़ेगी।

जीवन-लक्ष्य निर्धारित हो

उक्त सब बातों के अलावा एक तीसरी बात है जिसकी तरफ हमारा ध्यान जाना चाहिए। विद्यालय में भर्ती होने वाले ७-८ वर्ष के ब्रह्मचारियो का जीवन मे क्या लक्ष्य है? ७-८ वर्ष का बालक तो इस दिशा में सोच ही नहीं सकता, परन्तु उनको शिक्षा देने वाला अध्यापक तो कुछ वर्षों तक छात्र के स्वाभाविक विकास की दिशा को देखकर यह समझ सकता है कि इस छात्र की जीवन मे क्या क्षमता है। हमारे अध्यापक इस उच्च तथा इस योग्यता के होने चाहिए जो अपने छात्रों की प्रवृत्ति तथा योग्यता को देखकर यह निश्चय कर सकें कि वे अपने छात्र को जीवन की किस दिशा मे ले जा सकेंगे। आज का युग प्रतियोगिता का युग है। जो जीवन में एक जगह खड़ा रहता है वह खड़ा ही रह जाता है। जीवन प्रगति का नाम है। अगर किसी विद्यार्थी के जीवन का लक्ष्य समाज सेवा, धर्मप्रचार है, तो उसे सुविधा देना, उसके लिए सब सम्भव सामग्री उपस्थित करना हमारी संस्था का कर्त्तव्य है। अब तक हमारा जो लक्ष्य रहा है, उसमें थोड़ी बहुत सफलता मिली है, परन्तु उस लक्ष्य के बावजूद हमारे अधिकांश स्नातक आजीविका के अन्य क्षेत्रों की तरफ प्रयत्न कर रहे हैं। इस विकट तथ्य को हमें स्वीकार करना होगा और इस दिशा में विशेष प्रयत्न करना होगा। अगर हमारा विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत कर वेद मन्त्रों का अध्ययन कर, हमारी सस्कृति में ओत-प्रोत होकर, प्रतियोगिताओं की परीक्षा में बैठकर आई. ए. एस. मे आ जाता है, पुलिस का उच्च अधिकारी बन जाता है या अन्य किसी सरकारी पद को प्रतियोगिता में सफल होकर प्राप्त कर लेता है, तो समझना चाहिए कि वह एक बड़े ध्येय से हमारा उपदेशक बन जाता है। जैसा मैं विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में लिख चुका हूं, वहां के छात्रों को हमें तत्काल सर्वोच्च सरकारी सेवाओं के लिए तैयार करना चाहिए क्योंकि उस दिशा मे सक्रिय होने से हमें तत्काल फल मिल सकता है, वैसे विद्यालय के सम्बन्ध में मेरे विचार में हमे शुरू से ही ब्रह्मचारियों की योग्यता और क्षमता को पहचान कर उन्हें प्रतियोगिताओं में बैठने के लिए तैयार करना चाहिए।

लेखक :
डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
विजिटर, गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सब तत्त्व संस्था के अंग

गुरुकुल के परिसर में इस समय तीन तत्त्व दिखाई देते हैं। एक तत्त्व आयुर्वेद के विभाग के कार्यकर्त्ताओं का है, एक तत्त्व विश्वविद्यालय के कार्यकर्त्ताओं का है, एक तत्त्व विद्यालय विभाग के कार्यकर्त्ताओं का है। सब समझते हैं कि वे सब एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं, वे नहीं समझते कि वे जो कुछ हैं, गुरुकुल के अंग होने के कारण उन्हें वह सत्ता प्राप्त है। सब अपनी-अपनी ऐंठ में हैं। आयुर्वेद विभाग गुरुकुल ने खोला था और गुरुकुल का था, इस समय गुरुकुल के परिसर में है। यह दुःख का विषय है कि कुछ अदूरदर्शिता के कारण यह गुरुकुल के हाथ से निकल गया। अब भी प्रयत्न होना चाहिए कि वह गुरुकुल विश्वविद्यालय का अन्य कालेजों के समान अंगभूत हो जाए।

इसके तीन उपाय हैं। एक उपाय तो यह है कि आयुर्वेद के परीक्षोत्तीर्ण छात्रों के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा पी. एच. डी. के निबन्ध लिखने की व्यवस्था कर दी जाए, जिस निबन्ध पर विश्वविद्यालय की तरफ उपाधि प्रदान की जा सके; दूसरा उपाय है कि

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हे नारी, तू सच्चा जागरण ला !

मनु भगवान् ने किसलिए घोषणा की थी ?

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'

इस लिए क्योंकि नारी धर्म का आधार है, राष्ट्र की पोषिका है, समाज की नेत्री है। इतिहास साक्षी है, श्रद्धा ने मनु का, तारा ने हरिश्चन्द्र का, सीता ने राम का, कुन्ती ने पाण्डवो का, लक्ष्मी बाई ने देश का नेतृत्व किया।

निस्सदेह मध्यकाल मे नारी को शिक्षा से वंचित कर दिया गया 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' के नारे लगाए गए।

लेखक :

श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

शास्त्री, एम०ए०,एल०टी

घोर अपमान, घोरपतन, चोट असह्य थी, पीड़ा दयनीय मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने तो एक पाषाणी अहल्या का का उद्धार किया था, ऐसा सुनते हैं परंतु ऋषि दयानन्द ने तो पूरी नारी जाति का उद्धार कर दिया। उन्होने कहा 'नारी राष्ट्र का आधार है।'

'माता निर्मात्री भवति' पैर की जूती समझी जाने वाली नारी को ब्रह्मा से दूसरे दर्जे का स्थान मिला। नारी की लौह शृंखलाएं टूट गईं, उसने प्रकाश के दर्शन किए, स्कूल खुले, कालिज खुले, उन्नति के सारे साधन मिले, आज नारी शिक्षिका है, डाक्टर है, वकील, डिप्टी-कमिश्नर है *क्या नहीं ? प्रधानमन्त्री* भी है।

पर यह क्या ? प्रकाश की किरणो से अंधकार कैसे फूट निकला ? नारी अपने कर्त्तव्य को भूल गई। विलासिता की पुतली बन गई, धर्मपत्नी का पद त्याग फिल्म स्टार बनने का स्वप्न देखने लगी।

मृगतृष्णा में घूमने वाली हिरणी ! विवेक से काम ले, इस मार्ग से न तुझे मान मिलेगा। न तेरे अधिकारो की सुरक्षा होगी। अपनी भारतीय सस्कृति की शरण मे लौट जा, आर्य समाज के शत-शत मदिर तेरे उपदेशो के बिना सूने पडे हैं। राजा जनक की सभा मे गार्गी और सुलभा बनकर तुझे तो मान मिलेगा वह फैशन की दुनिया मे नही,

देश मे हाहाकार मचा है, काला धन, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चोरी, डकैती के असुरो की सेना बढती चली जा रही है। दुर्गा बन कर इन का सहार कर दे, सादा, तपस्वी जीवन बना, अपनी शक्ति को पहचान,

सच्ची माता बन कर देश को सच्चे ब्राह्मण दे, वीर क्षत्रिय दे, ईमानदार वैश्य और तपस्वी शूद्र दे, मदालसा बनकर बच्चो को वेदकी कल्याणी वाणी पढा, फिल्मी सगीत के विष से उनकी बुद्धि उनके चरित्र को विषैला बनने से रोक। विदुला बनकर उन्हे कर्त्तव्यबोध करा, पद्मिनी बनकर अपने शील की स्वयमेव रक्षा कर, धर्मपत्नी बन, पुरुष को धर्मपूर्वक धनार्जन करना सिखा, शृगार के साधनो के लिए धन की भूख त्याग दे, अपने घर मे घोषणा कर दे, 'मेरे घर मे केवल धर्म की कमाई आएगी, पाप की नही।'

जाग ! अब बाले जाग, तेरे जागते ही राष्ट्र जाग जाएगा, विश्व जाग जाएगा, तेरे कर्त्तव्य पथ पर चलते ही, राष्ट्र उन्नति के सच्चे मार्ग पर चल पड़ेगा ! जाग बाले जाग। तू उषा है तू विभावरी है, जाग और दूसरो को जगा ॥

१४, जैनमंदिर, राजाबाजार

नई दिल्ली

आर्य विद्वान् प्रो० जोशी का स्वर्गवास

रामजस कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी के वरिष्ठ प्रवक्ता, संस्कृत एवं भाषा विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान् आर्य विचारक प्रो० गोपालदत्त जोशी का ३० अगस्त, १९८१ को राजकीय चिकित्सालय कोटद्वार गढ़वाल में ५८वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी, संस्कृत, भाषाविज्ञान मे एम. ए. की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय शिया कालेज मे अध्यापन कार्य किया था। कट्टर आर्यसमाजी थे, आर्यमित्र लखनऊ के सम्पादक रहे और स्वतन्त्रता आन्दोलन मे अनेक बार जेल गए। वह अपने पीछे शोकसन्तप्त पत्नी, तीन पुत्र और दो पुत्रियां छोड गए हैं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति देंगे और शोकसन्तप्त परिजनो को सान्त्वना देंगे।

युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द

गतांक से आगे—

उनका सम्पूर्ण प्रयास वैज्ञानिक अन्वेषण में ही निहित है। सत्-असत् विवेक का मूलाधार विशुद्ध ज्ञान-चिन्तन एव आत्म-साक्षात्कार है। उन्होंने घोषित किया कि वैदिक समाज स्वस्थ जीवन-मूल्यों, वैज्ञानिक अन्वेषण, व्यक्ति एव समाज के सामजस्य और उचित संतुलन पर आधारित रहा है। समाज मे गति और सर्जनात्मकता को बनाए रखने के लिए दायित्व बोध एव आत्मानुशासन की क्षमता का विकास अपरिहार्य है। उन्होंने भारतीय सामाजिक जीवन की स्थापना और उसका सघटन भारतीय परिवेश मे नए सदर्भों एव जीवन मूल्यो के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया। तत्कालीन प्रचलित अन्धविश्वासो, वर्ग-भावना जाति-पाति का रूढियो, कुरीतियों एवं अस्पृश्यता पर उन्होने जबर्दस्त प्रहार किया। तत्कालीन भारतीय हिन्दू समाज मे वर्ण-व्यवस्था के नाम पर जो सामाजिक अन्याय एवं निम्न जातियो का शोषण हो रहा था, उसका उन्होने घोर विरोध किया। उनका दृष्टिकोण भारतीय जनसमाज का सर्वांगीण विकास था। उन्होने जन्माश्रित वर्ण व्यवस्था के स्थान पर कर्माश्रित व्यवस्था को अपना व्यापक लक्ष्य बनाया।

खान-पान के सम्बन्ध मे उनके बहुत उदार विचार है, जिसमे छुआछूत की भावना को बिल्कुल स्थान नहीं है। केवल भोजन बनाने मे शुद्धता एवं पवित्रता को रखने की सलाह दी थी। इस विषय मे उनका विचार था 'आर्यो के घर में शूद्र एव मूर्ख स्त्री-पुरुष पाकादि करें, किन्तु वे शरीर वस्त्र आदि से पवित्र रहें।' विवाहादि के मामलो मे बाल-विवाह को उन्होने भारतीय समाज का अभिशाप कहा। एक स्थान पर वह लिखते हैं कि 'सोलहवे वर्ष से चौबीस वर्ष तक कन्या और पचीसवें वर्ष से लेकर अडतालिसवें वर्ष तक पुरुष का विवाह समय उत्तम है। .... जिस देश में इस प्रकार के विवाह की विधि श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य एव विद्याभ्यास होता है वह देश सुखी एवं जिस देश मे ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण रहित और अयोग्यों का विवाह होता है वह देश दुःख मे डूब जाता है।' महर्षि दयानन्द स्वयवर (अन्तर्जातीय) विवाहों को प्रोत्साहन देते हुए लिखते हैं 'जब तक इसी प्रकार सब ऋषि, मुनि, राजा, महाराजा आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या पढ के विवाह करते थे, तब तक इस देश की सदा उन्नति होती थी। जब से ब्रह्मचर्य विद्या का न पढ़ना और बाल्यावस्था में पराधीन अर्थात् माता-पिता के अधीन विवाह होने लगा तब से क्रमश: आर्यावर्त्त देश की हानि होती चली गई। महर्षि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थादिसबके कर्त्तव्यों का निरूपण किया। है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ में प्रविष्ट हुए बिना संन्यासी होने के सबध मे वह लिखते हैं कि जिस पुरुष और स्त्री को विद्या, धर्मबुद्धि और सब ससार का उपकार करना ही प्रयोजन हो वह विवाह न करें। जैसे पचशिखादि पुरुष और गार्गी स्त्रिया हुई थी। इसलिए संन्यासियो का होना अधिकारियो को उचित है और जो अनधिकारी चेष्टा करेगा वह आप तो डूबेगा ही औरों को भी ले डूबेगा।' वेद तथा अन्य आर्ष (प्राचीन) ग्रथो के आधार पर उन्होने

लेखिका :

कुमारी ज्योत्स्ना शुक्ल, एम०ए०

राजधर्म के विषय मे लिखा है—'राजा और प्रजा के पुरुष मिल सुखप्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक हो, राजा-प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार को तीन सभाए अर्थात विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राज्यार्य सभा नियम बनाकर बहुत प्रकार से समाज प्रजा प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलकृत करें।" तीनों सभाओ की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम एव नियमों के अधीन सब लोग कार्य करें। सबके हितकारक कार्यों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र एव धर्मयुक्त कार्यों मे अर्थात् जो-जो निजकार्य हैं उनमे स्वतन्त्र रहें।'

महर्षि दयानन्द के धार्मिक विचार बहुत ऊँचे थे। उन्होने सत्य एव धर्म में अभेद निरूपित किया है। उनके अनुसार श्रेष्ठ मानव मूल्यों की प्राप्ति ही सच्चा धर्म है। उनके धर्म की व्यापक परिकल्पना वैदिक-सस्कृति, भारतीय परिवेश एव भारतीयता की सजग पृष्ठभूमि मे उपजी एव पनपी। उनका धर्म विश्व के श्रेष्ठ धर्मो में निहित मानवीय मूल्यो एवं सृजनशीलता से उद्बुद्ध एक विशुद्ध वैज्ञानिक आधार भूमि पर खड़ा विशाल वट वृक्ष है, जिसमे लौकिक, पारलौकिक शान्ति प्रगति एवं निर्माण की अजस्र चेतना प्राह्मान है। डा० रघुवश के शब्दों में—'इसके अन्तर्गत सामाजिक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत् समाचार

इस्लाम धर्म के प्रचारक बेतिया के इमाम मौलाना खुर्शीद आलम हिन्दू धर्म में प्रविष्ट

बेतिया। ६ सितम्बर के दिन आर्यसमाज मन्दिर बेतिया में कई हजार स्त्री-पुरुषो की उपस्थिति मे बेतिया इलाके के इमाम मुस्लिम धर्म के प्रवक्ता मौलाना खुर्शीद आलम ने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तो से प्रभावित होकर स्वेच्छया अपने परिवार सहित हिन्दू धर्म स्वीकार किया। शुद्धि संस्कार पं० भगवान शर्मा ने सम्पन्न कराया इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता और नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

खुर्शीद आलम उर्दू-फारसी के आलिम-फालिज और भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। उनके पूर्वज मिश्र ब्राह्मण थे, उनके पास इसके पारिवारिक दस्तावेज हैं। उन्होने किसी लोभ-लालच से नही शुद्ध मन से हिन्दू धर्म स्वीकार किया है। इमाम के परिवार के सदस्यों ने अपने नामोका परिवर्तन इस प्रकार किया है - मौलाना खुर्शीद आलम —श्री जयप्रकाश आर्य, श्रीमती जैकुन-निसा (पत्नी) —श्रीमती उर्मिला आर्या, जमाल खुर्शीद (पुत्र)—श्री ओमप्रकाश आर्य; अंजुमन (पुत्री) सुश्री अंजलि आर्या निकहत (पुत्री) सुश्री कुसुम आर्या।

—x—

वेदों का ज्ञान अपौरुषेय

ऋषि वैदिक ऋचाओं के कर्त्ता : वेद संगोष्ठी में श्री मनोहर

दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय मे डा० प्रह्लादकुमार के ३७ वें जन्मदिवस पर आयोजित एक वेद-सगोष्ठी मे मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए संस्कृत विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष डा० सत्यव्रत ने कहा कि प्रह्लाद वेदो के पण्डित थे। उनका कहना था कि वैदिक ऋषियो को वैदिक ज्ञान का स्वाभाविक स्फुरण हुआ था।

सगोष्ठी में श्री मनोहर विद्यालंकार ने 'वेदों के ऋषि' विषय पर अपने शोध-पूर्ण निबन्ध में बताया कि वेदों मे ऋषि शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इनमे आत्मा और परमात्मा अर्थ भी हैं। पाश्चात्य विचारकों ने ऋषियो को वैदिक ऋचाओंका कर्त्ता माना है,जिस पर अत्यंत गम्भीरता से विचार होना चाहिए। वेदों में चार सौ से अधिक ऋषियो के नाम आते हैं, जिनमें सांप, बिच्छू आदि भी हैं। उनका मत था कि वस्तुतः ये ऋषियों के वास्तविक नाम न होकर उपाधियां है। वक्ता ने वेदों को अपौरुषेय माना और कहा कि प्रत्येक सृष्टि के आदि मे परमात्मा ऋषियो को इस ज्ञान की प्रेरणा देने हैं।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए हंसराज कालिज के प्राचार्य श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा ने स्व० प्रह्लाद की स्मृति में वैदिक व्याख्यानमाला के आयोजन के लिए डा० प्रह्लादकुमार स्मारक समित के प्रति आभार व्यक्त किया। इन्होंने समिति की ओर से एम. ए. वेद विकल्प की छात्रा कुमारी प्रवीण को छात्र-वृत्ति भी प्रदान की।

गोष्ठी में डा० सत्यदेव चौधरी,डा० कृष्णलाल तथा डा० प्रशान्त वेदालंकार ने भी विचार व्यक्त किए। आरम्भ में श्री गणेश विद्यालंकार ने वेद-मन्त्रों का सुन्दर पाठ किया।

—o—

आर्ययुवक आर्यसमाज का कार्य करें

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद दिल्ली के तत्त्वावधान मे रविवार १३ सितम्बर को जहांगीरपुर मे प० गुरुदत्त शाखा का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने युवकों को संगठित होकर आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र बढ़ाने की प्रेरणा दी।

दिल्ली प्रदेश के सामूहिक कार्यक्रम में कबड्डी-प्रतियोगिता के अन्तर्गत गुरुकुल गौतम नगर की टीम सर्वप्रथम रही। उसे चांदी का कप प्रदान किया गया। जहांगीरपुरी शाखा के अध्यक्ष पद पर श्री अनिलकुमार नियुक्त किए गए।

—x—

मानवता के मुख पर एक तमाचा

ला० जगतनारायण जी की हत्या पर आर्यनेताओं की श्रद्धांजलि

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली ने आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, समाज सुधारक लाला जगतनारायण जी की आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की। सभा-प्रधान ला० रामगोपाल शाल-वाले तथा सभा मन्त्री ओमप्रकाश त्यागी ने घोषित किया कि लाला जी सरीखे उज्ज्वल राष्ट्रीय चरित्र की हत्या भारत की राष्ट्रीयता एवं मानवता के मुख पर अराष्ट्रीय विचारधारा का एक तमाचा है।

——o——

विद्यालय की सर्वांगीण उन्नति···

(पृष्ठ ४ का शेष)

आयुर्वेद कालेज के छात्रोंके लिए औषधि-निर्माण की व्यवस्था गुरुकुल फार्मेसी से हो जिससे गुरुकुल का आयुर्वेद महाविद्यालय के साथ सम्बन्ध बना रहे; तीसरा उपाय यह है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय में होम्योपैथी की शिक्षा देने का एक पृथक् कालेज खोल दिया जाए जिसके छात्र चालू विश्वविद्यालय के डिसेक्शन, एनाटोमी आदि विभागों मे शिक्षा ग्रहण कर सकें।

सारे परिसर के सब छात्रो का एक वेश होना चाहिए, अध्यापको का एक वेश होना चाहिए, सबके वेश पर गुरुकुलीयता की छाप होनी चाहिए। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के छात्र जो इस परिसर मे रहते हैं या बाहर से आते हैं सब पर गुरुकुलीयता छा जानी चाहिए।

हमारा मूल, हमारी जड़ विद्यालय विभाग है, यही यथार्थ गुरुकुल है—यह लक्ष्य सामने रखकर सबको उसे दृढ़ बनाने तथा अपने को उसके अनुकूल ढालने से ही गुरुकुल के अस्तित्व का कुछ न्यायसंगत कारण हो सकता है। यहां की प्रगतियो में—हवन, सन्ध्या, त्योहार, प्रोग्राम सब परिसरवासियों को यह समझ कर कि व्यक्तिगत रूप में उनका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, वे सब इस परिसर में रहने के कारण मूल गुरुकुल के अंग हैं, उसी गुरुकुल को, उसकी विचारधारा को पनपाना है, यहां की हर व्यवस्था में घुल-मिल जाना चाहिए।

(अपूर्ण)

सिलाई-कढ़ाई का निःशुल्क प्रशिक्षण

बाल ज्योति एजुकेशनल सोसायटी, ३ सी/३१ रोहतक रोड नई दिल्ली-११०००५ संस्था मे शिशु पाचवी कक्षा एवं बाल-बालिकाओ को प्रात आठ से एक बजे तक शिक्षा दी जाती है। एक से पांच बजे तक नि.शुल्क दुखित-पीड़ित, पिछड़े वर्ग की महिलाओ को नवी-दसवी तक शिक्षित करके सिलाई कढ़ाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही १५ रु० मासिक छात्रवृत्ति अन्य भी उचित आर्थिक सहयोगार्थ काम तथा नौकरी आदि का प्रबन्ध किया जाता है। वैदिक मिशनरी भावना सजग की जाती है।

आर्यसमाजों के सत्संग

२७ सितम्बर' ८१

अन्धा मुगल प्रतापनगर—प० गणेश प्रसाद विद्यालंकार, अमर कालोनी—श्री देशराज खन्ना; अशोक विहार के-सी-५२-ए—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक; आर के पुरम सेक्टर ६—प० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर ६—पं० हीराप्रसाद शास्त्री;आनन्द विहार—हरिनगर एल ब्लाक—पं० उदयपाल शास्त्री किंग्जवे कैम्प—श्रीमती सुशीला राजपाल; किशनगंज मिल एरिया—पं० ईश्वरदत्त एम०ए०; काकाजी डी. डी. ए. फ़्लैट्स—पं० प्रेमचन्द्र श्रीधर; कालकाजी—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; गांधीनगर—पं० देवेश; गीता कालोनी—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I—कविराज बनवारीलाल शादां भजनमण्डली; ग्रेटर कैलाश-II—पं० मनोहर विरक्त; गुड़ मण्डी—श्री मोहनलाल गांधी; १५१-गुप्ता कालोनी—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—पं० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री; जंगपुरा भोगल—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; जनकपुरी बी ३/२४—पं० खुशीराम शर्मा; डिफेंस कालोनी—डॉ० सुख दयाल भूटानी; तिलक नगर—पं० वेदपाल शास्त्री; तिमार पुर—प० रामदेव शास्त्री; दरियागंज—प० अमरनाथ कान्त; नारायण विहार—डा० रघुबीर वेदालकार; नया बांस—पं० महेशचन्द्र भजनमण्डली; न्यू मुलतान नगर—पं० प्राणनाथ—सिद्धान्तालंकार, नगर शाहदरा—प० सुधारक स्नातक; पजाबी बाग—मास्टर ओमप्रकाश, पजाबी बाग एक्सटेंशन १४/५ प० विश्व प्रकाश शास्त्री; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—श्री चमन लाल; मोडल टाउन—प्रो० सत्यपाल बेदार; महावीर नगर—पं० प्रकाश चन्द्र शास्त्री; महरौली—पं० मुनिशंकर वानप्रस्थ; मोती बाग प० प्रदीप कुमार शास्त्री; मोतीनगर—डा० देवेन्द्र द्विवेदी; रघुबीर नगर—प० रामरूप शर्मा; रमेश नगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी; राणा प्रताप बाग—प० रघुराज शास्त्री; राजौरी गार्डन—डा० रघुनन्दन सिंह; रोहतास नगर—प० हरिदत्त शास्त्री, लड्डू घाटी—श्रीमती लीलावती आर्या, लेखनगर-त्रिनगर—पं० प्रकाशवीर; लारेंस रोड़—प० प्रकाश चन्द्र वेदालकार; विक्रम नगर—पं० सीसराम भजनोपदेशक; विनय नगर—प० सत्यनारायण शास्त्री सदर बाजार पहाड़ी धीरज—पं० अशोक कुमार विद्यालकार; साकेत जे ५६—प० सत्य भूषण वेदालकार; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; मोहनगज—ला० लखमीदास; सराय रोहिल्ला—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री; शालीमार बाग—आचार्य हरिदेव—सि० भू०, हनुमान रोड—पं० सच्चिदानन्द शास्त्री; हौज खास डी-२० स्वामी प्रेमानन्द; न्यू मोतीनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर—I—प० ओमवीर शास्त्री।

—ज्ञान चन्द डोगरा; वेद प्रचार विभाग

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स में वेदकथा

सोमवार २१ सितम्बर से शनिवार २६ सितम्बर तक आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स में श्री योगेन्द्र पुरुषार्थी की वेदकथा हुई।

आर्यसमाज सीवान में वेदकथा

आर्य-समाज मन्दिर एवं शहीद सराय, सीवान मे २६-८-८१ से २-९-८१ तक अष्ट दिवसीय वेद कथा-यज्ञ सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री महानन्द आर्य द्वारा भजन तथा श्री सत्यदेव शास्त्री वाराणसी द्वारा वेद कथा हुई।

मिस्र में गोहत्या पर पाबन्दी

सितम्बर १९८० के प्रारम्भ से मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात ने ताजे और बर्फ मे रखे मास की बिक्री पर पाबन्दी लगा दी है। दूसरे शब्दो मे न केवल सभी प्राणियों की हत्या प्रत्युत गोवंश की हत्या पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया है।

विचार-संगोष्ठी

शुक्रवार २५ के दिन दिल्ली विश्वविद्यालय के कला सकाय मे 'सामूहिक धर्म-परिवर्त्तन और भारत का भविष्य विषय पर एक विचार-सगोष्ठी हुई।

युग द्रष्टा महर्षि... (पृष्ठ ५ का शेष)

आचार, लोक जीवन में समत्व राजनीतिक आदर्श व्यवस्था, राजतन्त्र की लोक सत्तात्मक तथा समन्व मूलक परिभाषा, लोकोन्मुखी तथा साम्यवादी अर्थतन्त्र आदि के समस्त मूल्यो का संयोजन इस सास्कृतिक रचना विधान मे आ जाता है।'

महर्षि दयानन्द को आधुनिक युग का द्रष्टा एव भारतीय समाज का पुनरुनायक कहा जा सकता है। उन्होंने वैदिक कालीन संस्कृति, इतिहास एव परम्परा के आधार पर एक ऐसी जीवन दृष्टि प्रस्तुत की जो युग-युग तक न केवल भारतीय जनसमाज वरन् समग्र विश्व को आलोकित एव मार्गदर्शित करती रहेगी।

प्रवक्ता, राजनीतिशास्त्र, २४२, कर्नलगज थाने के पास, इलाहाबाद

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश ...

आर्य सन्देश ... विशेषांक ...

पाकुरी आर्य कथा — ओमप्रकाश त्यागी ०.३०

स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका ६.००

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका ६.००

सम्पर्क करें —
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें — दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें — दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए ... द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा ... प्रेस ... में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ अंक ४६ | रविवार १६ आश्विन, वि० २०३८ | ४ अक्तूबर १९८१ | दयानन्दाब्द १५७

सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध के विरुद्ध चेतावनी

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरंग का निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा ने १२-१३ सितम्बर को हैदराबाद मे हुए अपने अधिवेशन मे तमिलनाडु सरकार द्वारा मद्रास आर्यसमाज को प्रेषित किए गए पत्र के आधार पर 'सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लग ए जाने की सम्भावना पर आश्चर्य और विरोध प्रकट किया है।

सभा ने स्पष्ट किया है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा एक सौ वर्ष पूर्व रचित धार्मिक ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' पर प्रतिबन्ध लगाना ग्रथ मे आस्था रखने वाले करोडो व्यक्तियो का अपमान तथा सविधान की भावना के सर्वथा प्रतिकूल है। सभा ने तमिलनाडु सरकार से कहा है कि ग्रन्थ का उद्देश्य किसी के हृदय को ठेस पहुचाना या मानव जाति मे भेदभाव पैदा करना न होकर मानवमात्र को सत्य के लिए प्रेरित करना है। सभा ने चेतावनी दी है कि आर्यसमाज अपने धर्मग्रन्थ पर रोक के मामले को गम्भीरता से लेगा।

हिन्दू समाज से छुआछूत का कलंक दूर किया जाए

अस्पृश्यता खत्म करने के लिए १० लाख व्यक्ति सामूहिक संकल्प लेंगे

नई दिल्ली। हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायो के आचार्यों, धर्म गुरुओ, विद्वानो और हिन्दू सगठनों के प्रतिनिधियो ने रविवार २७ सितम्बर के दिन दिल्ली मे एकत्र होकर सर्वसम्मति से हिन्दू समाज से छुआछूत को दूर करने तथा इस कलक को सदा के लिए मिटा देने के लिए काम करने का सकल्प किया।

यह भी निश्चय किया गया कि आगामी १८ अक्तूबर को बोट क्लब, नई दिल्ली मे इकट्ठे होकर दस लाख से अधिक व्यक्ति समाज से अस्पृश्यता का निवारण का सकल्प लेंगे।

फीरोजशाह कोटला मैदान में ६० से अधिक हिन्दू धार्मिक एव सास्कृतिक सगठनो के प्रतिनिधियों का विशेष तैयारी सम्मेलन 'विराट हिन्दू समाज' के तत्त्वावधान मे हुआ था। सम्मेलन की अध्यक्षता डा० कर्णसिंह ने की। सभा मे पिछले दिनो हरिजनों के इस्लाम मे सामूहिक धर्म-परिवर्तन एव दूसरी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं पर विचार किया गया। इस अवसर पर भाषण देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा—मीनाक्षीपुरम की घटना ने सोए हुए हिन्दू समाज को उसी प्रकार झकझोर कर खडा कर दिया है जिस प्रकार १९६२ के चीनी आक्रमण ने देश को सचेत कर दिया था। हिन्दू समाज विदेशी ताकतो के इशारे पर अब देश को कमजोर नहीं होने देगा।

विराट् हिन्दू समाज के अध्यक्ष डा० कर्णसिंह ने कहा कि हिन्दू समाज को आत्मचिन्तन और आत्मनिरीक्षण द्वारा समाज मे फैली इन बुराइयो एव कुरीतियो को दूर कर देना चाहिए जिनसे हिन्दू समाज कमजोर बनता है।

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष गोस्वामी गिरिधारीलाल ने धर्म परिवर्तन के लिए पृथकतावादी ताकतो को दोषी बताया और घोषित किया कि सनातन धर्मसभा इसका सामना करने के लिए अपनी पूरी जिम्मेदारी निबाहेगी।

उदयपुर सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह की धूम

विशेष बसों के माध्यम से उदयपुर-यात्रा में सम्मिलित हों

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा एव कार्यवाहक मन्त्री प्रो० भारतमित्र शास्त्री ने एक पत्रक द्वारा समस्त आर्यसमाजो आर्य सस्थाओ तथा आर्यजनो मे अनुरोध किया है कि वे आगामी १६-१७ १८ अक्तूबर के दिन ऐतिहासिक वीरभूमि उदयपुर मे आयोजित हो रहे अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह मे भाग लेने के लिए अभी से अपना व्यवस्थित कार्यक्रम बना ले।

स्मरण रहे कि उदयपुर नगर के नवलखा महल मे बैठकर महर्षि दयानन्द ने अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना की थी। उल्लेखनीय है कि इन शताब्दी समारोह मे पूर्वी अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वाहिली मे सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन किया जाएगा।

सभी प्रदेशो के आर्य सज्जन भारी सख्या मे उदयपुर पहुचेंगे। पूर्वी अफ्रीका और द० अमेरिका से भी आर्यबन्धु पधार रहे है। दिल्ली के आर्यपुरुष इस अवसर पर सामूहिक और सगठित रूप से वेद प्रचार करते हुए उदयपुर पहुचे, इसके लिए प्रतियात्री १४५) का यात्रा व्यय लेकर विशेष बसो की व्यवस्था सभा द्वारा की गई है। दिल्ली के १५ आर्य सज्जनो के यहा इन बसो की बुकिंग हो सकती है। इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाइए और इन विशेष बसो के माध्यम से उदयपुर शताब्दी कार्यक्रम को अवश्य देखिए।

मीनाक्षीपुरम के २८ व्यक्ति पुनः हिन्दू बने

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जानकारी दी है कि मीनाक्षीपुरम मे इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले २८ व्यक्ति पुन हिन्दू धर्म मे लौट आए हैं।

सभा की प्रेस-विज्ञप्ति के अनुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एक अध्ययन-दल द्वारा २१ सितम्बर को मीनाक्षीपुरम की यात्रा करने के बाद उक्त व्यक्तियो ने पुन हिन्दू धर्म ग्रहण किया।

विज्ञप्ति मे कहा गया है कि मीनाक्षीपुरम के उक्त निवासियो ने शपथ ली है कि वे इस बात का ध्यान रखेगे कि कोई अन्य हिन्दू उनकी इस भूल को न दोहराए।

—सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

यज्ञ त्रिलोकी का कल्याणकर्ता है

देवान् दिवमंगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यानन्तरिक्षमगन् यज्ञस्ततो द्रविणमष्टु। पितृन्पृथिवीमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु,
यं क च लोकमन् यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत् ॥ यजु: ८-६०

ऋषि —वसिष्ठ.। देवता—विश्वे देवा छन्द. स्वराट् ब्राह्मी त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ—(यज्ञ) यज्ञ ने (देवान्) देवों को (दिवमगन्) दिव्यलोक में पहुंचाया, (तत.) उस दिव्यलोक और देवों के (द्रविणम्) ऐश्वर्य, सामर्थ्य और पदार्थ (मा अष्टु) मुझे प्राप्त कराए। (यज्ञ) यज्ञ ने (मनुष्यान्) मनुष्यों को (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष लोक मे अथवा मध्य मार्ग पर (अगन्) पहुंचाया (तत.) उस मध्य मार्ग पर चलने के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाले (द्रविणम्) ऐश्वर्य, सामर्थ्य और पदार्थों को (मा अष्टु) मुझे प्राप्त कराएं। (यज्ञ) यज्ञने (पितृन्) पितरो को (पृथिवीम्) पृथिवी पर (अगन्) प्रगतिशील किया (ततः) उस प्रगतिशीलता से प्राप्त (द्रविणम्) ऐश्वर्य सामर्थ्य तथा पदार्थों को (माअष्टु) मुझे प्राप्त कराएं। (यज्ञ:) यज्ञ (य कं च लोकमगन्) जिस लोक मे भी जाए। (तत) उस लोक से (मे भद्रममूत्) मेरे लिए कल्याण और सुख को प्राप्त कराए।

विशेष—इस मन्त्र का देवता विश्वे देवा. है किन्तु मन्त्र में आए शब्दो से प्रतीत होता है कि देवता यज्ञ है। इससे यह भी सकेत मिलता है कि यज्ञ किए बिना अर्थात् यज्ञ की भावना को अपनाए बिना किसी भी देवता का अनुयायी या सदृश बन सकना कठिन है। इस मन्त्र के ऋषि शब्द वसिष्ठ का अर्थ सकेत करता है कि स्वयं श्रेष्ठ गुणों, भावो तथा कर्मों मे निवास करने वाला तथा दूसरो को निवास कराने वाला व्यक्ति ही किसी भी देव का सखा बन सकता है।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ त्रिविधता की ओर सकेत करता है। यज धातु के तीन अर्थ देवपूजा—सगति करण और दान भी त्रिविधता का ही सकेत करने है।

निष्कर्ष - १. यज्ञ मे निहित देवपूजा अर्थात् किसी भी दिव्य गुण का आदर, और अपने बड़ो का सत्कार करने की भावना मनुष्य को देव बनाती है, उसे दिव्यलोक का वासी बनाती है। यज्ञ मे निहित संगतिकरण—दिव्य कर्मों मे रत लोगो के साथ सहयोग की भावना ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है अथवा अन्तरिक्ष लोक का वासी अर्थात् उसे मध्यमार्गानुगामी बनाती है और यज्ञ में निहित दानभावना अर्थात् दिव्य कर्मों मे लगे लोगों को दान अथवा सहायता अथवा दूसरों के लिए स्वार्थ त्याग की भावना ही मनुष्य को पृथ्वी का पालक या रक्षक (पितर) बनने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

२. लोक पृथक-पृथक प्रदेश तो हैं ही, किन्तु पृथक-पृथक भावनाओं मे विचरने वाले, उस उस मन स्थिति में रहने वाले व्यक्तियों को भी उस उस लोक का वासी कह देते हैं। इस मन्त्र मे दिव्य भावनाओं का आदर करने वालो को देव, मध्य मार्ग पर चलते हुए श्रेष्ठ कर्मों में सहयोग करने वालो को मनुष्य और अभावग्रस्तों को सहयोग दान करने वाले स्वार्थ त्यागी व्यक्तियों को पितर (पृथ्वी-पालक) पदों की सज्ञा प्रदान की गई है।

३. द्रविणम् शब्द के प्रयोग का विशेष महत्त्व है। यह चल सम्पत्ति के लिए प्रयुक्त होता है। अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति के रूप मे दिव्य भावनाओं का स्थानान्तरण सहज है, इसीलिए अन्य लोको से द्रविणम् (सार तत्त्व) को प्राप्त कराने की कामना की गई है, स्थूल सम्पत्ति प्राप्त कराने की नहीं।

४. स्थूल धन का सम्बन्ध शारीरिक सुख से है, और सूक्ष्म सार तत्त्व (द्रविणम्) का सम्बन्ध कल्याण और भद्र से है, इसीलिए प्रभूत स्थूल पार्थिव सम्पत्तियो के स्वामी होते हुए भी मनुष्य बेचैन हुए इधर-उधर दौड़ते फिरते हैं, और सूक्ष्म भावनाओं से ओत-प्रोत मनुष्य निश्चल हुआ एकान्त में बैठकर भी अपना कल्याण कर सकता है, और दूसरो के कल्याण की कामना करता रहता है।

५. दिव्य भावनाओ को अपनाने या देव बनने अथवा द्यु-लोक मे रहने के लिए और मध्यमार्ग को अपनाने या मनुष्य बनने या अन्तरिक्ष लोकवासी बनने के लिए, और सबके पालन, रक्षण की भावना को अपनाने या पितर बनने अथवा सच्चे अर्थों में पृथ्वीलोक की राष्ट्रीयता (नेशनेलिटी) प्राप्त करने के लिए, वसिष्ठ अर्थात् उत्तम गुणों, कर्मों मे निवास करने का स्वभाव बनाना आवश्यक है।

६. शतपथ में 'यज्ञो वै वसुः'१-७-१-६ कहा है। वसुओं में श्रेष्ठ वसिष्ठ है। इसलिए वसिष्ठ बनना और यज्ञ की भावनाओं को अपनाना ही सच्चा यज्ञ है। यज्ञ ही सब प्रकार के कल्याण को प्राप्त कराता है।

अर्थपोषक प्रमाण—

द्रविणम्—सम्पत्ति (चल) शक्ति, तथा सामग्री और सार तत्त्व। मोनियर विलियम्स।

यज्ञ.—यज देवपूजा (दिव्यता का आदर) संगतिकरण (सहयोग) दानेषु (सहायता)।

वसिष्ठ:—१. यज्ञो वै वसुः। शत० १-७-१-६ येन वै श्रेष्ठस्तेन वसिष्ठ.। गा० ३०-३-६

२. धर्मादि कर्मसु योऽतिशयेन वसति वासयति वा स्वामी दया०ऋ. १-११२-६ यजु. १३-५०।

३. अतिशयेन धनी। स्वामी० दया० ऋक् ७-७-७.

—मनोहर विद्यालंकार
१२२,ईश्वर भवन,खारी बावली दिल्ली-६

लोक-चिन्तन

राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव

—डा० विजय द्विवेदी

मानव-मन की यह मूल प्रकृति है कि वह सदा विपरीत दिशा में गति करने को प्रस्तुत रहता है। इसी को मन की द्वन्द्वात्मक स्थिति, जिज्ञासा या कुतूहल वृत्ति कहा जाता है। गीता में इसे ही अर्जुन ने 'चचल हि मनः कृष्ण.' कह कर सम्बोधित किया है। मन की इसी गति के कारण जब भी राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भावना की बात उठती है, तब देश का मन विपरीत दिशा में भागने लगता है। परिणामस्वरूप देश में हिंसात्मक उपद्रव होते हैं, अनेक लोगों की जानें जाती हैं। समाज और व्यवस्था का चक्का उल्टा घूमने लगता है, अस्तु आज हमे राष्ट्र की एकता देखनी है, क्योंकि अभी वही खतरे मे है।

पश्चिम के विद्वान (गूच, हेंसकोन्ह, जिमर, बर्न, मिल आदि) कहते हैं, राष्ट्रवाद का विकास १९ वीं सदी में फ्रांस की क्रान्ति की प्रतिक्रियास्वरूप हुआ। फ्रांस में क्रान्ति की सफलता ने दूसरे देशो मे भी अपनी सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, भूगोल आदि के प्रति गर्व की भावना विकसित की, किन्तु भारत मे राष्ट्रवाद का इतिहास उतना ही पुराना है जितना स्वयं राष्ट्र। ऋग्वेद मे 'राष्ट्र' शब्द अनेक बार आया है। (अा राष्ट्रे संगमनी वसूनाम्), पुराणों में भी है—(गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे—विष्णु पुराण)। १९ वीं शताब्दी में किसी राष्ट्र की एकता के जो मूल तत्त्व माने गए उनमे 'धर्म की एकता' को प्रधान तथा भौगोलिक, सास्कृतिक एवं राजनीतिक एकता को दूसरा स्थान दिया गया था। लोकतन्त्र के आगमन के बाद उक्त क्रम मे परिवर्त्तन आया और राजनीतिक लक्ष्य की एकता' को ही एकमेव तत्त्व माना जाने लगा। धर्म, भाषा, जाति, संस्कृति की एकता राष्ट्रीयता के अनिवार्य तत्त्व नहीं रही। अर्थात् सगुण-साकार राष्ट्रीयता निर्गुण निराकार में बदल गई। (राष्ट्रीयता, किसी भूखण्ड में बसने वालो की वह सामूहिक चेतना है, जिसमे सबके अभ्युदय और प्रगति का भाव हो)। राष्ट्रीयता की यही परिभाषा आज हमारी राष्ट्रीय एकता के मार्ग मे बाधक बन गई है, क्योंकि 'रूपरेख गुन जाति जुगुति बिन निरालम्ब मन' चकरी की तरह घूमते हुए टिकने का कोई आधार नहीं पा रहा है।

जब कोई जनसमुदाय किसी धार्मिक सिद्धान्त या जीवनदर्शन को पूरी कट्टरता के साथ स्वीकार कर तदनुसार आचरण करने लगता है, तब उसे 'सम्प्रदाय कहा जाता है। इसमें जब तक आचार-विचारगत अन्तर रहता है तब तक अन्य सम्प्रदायों से साथ सद्भाव बना रहता है, किन्तु जब धर्म और संस्कृति में अन्तर बहुत गहरा हो जाता है, तब उसका उग्ररूप देश की एकता एवं अखण्डता के लिए खतरनाक बन जाता है। भारत का विभाजन इसका प्रमाण है। वस्तुतः धर्म और संस्कृति की संकीर्णता की, इतिहास की भिन्नता, सामान्य स्वार्थ की एकता, इन्हें देश और देश के गौरव के साथ रागात्मक सम्बन्ध रखने में बाधा पहुंचती है। अत: इनसे ऊपर उठकर ही साम्प्रदायिक सद्भाव की बात सोची जा सकती है।

म० पू० च० कालेज बारीपदा उड़ीसा-७५७००१

शान्तिदायक पदार्थ कल्याणकारी हों !

यानि कानिचिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः।
सर्वाणि शं भवन्तु मे श मे अस्त्वभयं मे अस्तु ॥ यजु ३६.१७.१३.

लोक मे शरीर में विद्यमान सातो इन्द्रिय और उनका सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने वाले विद्वान जिन पदार्थों को शान्तिदायक समझते हैं, वे सब मुझे कल्याणकारी हों। मुझे शान्ति मिले, मुझे अभय मिले

बन्द करो यह हत्या की राजनीति !

अपने स्वर्गवास से पूर्व गम्भीर रुग्णावस्था मे भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने देशवासियो से एक अपील की थी कि जब तक देश आन्तरिक दृष्टि से पूर्ण सशक्त, संयुक्त और सुदृढ़ नहीं हो जाता उस समय तक देश के सम्पूर्ण विघटनकारी तत्त्वों का सख्ती से मुकाबला करना होगा। उन्होने कहा था कि देश को भाषा के आधार पर छोटे-छोटे प्रान्तों में बांटना उचित न होगा, इसकी उन्नति के लिए आवश्यक है कि अगले दस वर्षों तक देश को सशक्त बनाने के लिए सभी प्रयत्नशील हो जाएं और रेलों के ढंग पर देश को प्रशासनिक आधार पर पांच या छह बड़े व्यवस्था सम्बन्धी विभागों या इकाइयो मे बांट कर दृढ़ता से शासन करना होगा। खेद है कि यशस्वी सरदार का पार्थिव शरीर देर तक उनका साथ न दे सका और उनका सपना अधूरा रह गया। सरदार के दिवंगत होने के बाद देश छोटे-छोटे राज्यो में विभक्त हो गया और उनके निर्माण के लिए हिंसात्मक राजनीति का सहारा लिया गया।

खेद है कि इतने वर्ष व्यतीत हो जाने पर जब देश के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए संसार की महाशक्तियां हमारे निकटस्थ पड़ोसी पाकिस्तान को हर दृष्टि से शक्तिशाली और सशक्त बनाने के लिए तुली हुई हैं, उस समय भारत मे पश्चिमोत्तर प्रदेश में पृथक राष्ट्र की स्थापना के लिए प्रयत्नशील तत्त्वो ने दिनदहाडे एक संयुक्त भारत के पक्षपाती, राष्ट्रवादी पत्रकार लाला जगतनारायण की हत्या कर दी। लाला जी का एक मात्र अपराध यह था कि वह मातृभूमि भारत के प्रति सच्चे वफादार थे, वह उसका विघटन करने के इच्छुक पृथकतावादी तत्त्वो का खुलकर विरोध करते थे। लाला जी की हत्या जहां देश की एकता, अखण्डता, राष्ट्रवाद, स्वतन्त्र पत्रकारिता एवं न्याय की हत्या है, वहां उससे यह भी ध्वनित होता है कि देश का विघटन करने वाले तत्त्वों को अपनी मांग के औचित्य पर विश्वास नहीं रह गया है, फलत. वह युक्तियों, प्रमाणों एवं आंकडों का सहारा लेने के स्थान पर हिंसा की राजनीति का सहारा लेने लगे हैं।

इतना ही नही, जब न्यायालय से कथित अभियुक्तो की साक्षी के आधार पर दूसरे अभियुक्तों को पकड़ने के लिए वारण्ट जारी किए गए तो उनसे बचने के लिए धार्मिक प्रार्थनागृहों में आश्रय लिया गया। इतना ही नही, जब पुलिस ने कथित अभियुक्त को गिरफ्तार भी कर लिया तो शासन के विरुद्ध सरे आम असन्तोष फैलाया गया। मोटर साइकिलों पर बैठकर बाजारों मे निर्दोष जनता पर गोलियां चलाकर भून दिया गया। इस हिंसा की राजनीति का एक ही लक्ष्य है या तो हमारी अन्यायपूर्ण मांग मंजूर करो, अन्यथा हम शान्ति रहने नहीं देंगे। लाला जी की हत्या से पश्चिमोत्तर भारत के सुलगते प्रदेश के हिंसक तत्त्वों के राष्ट्र विरोधी षड़यन्त्र का पर्दाफाश हो गया है। समस्त राष्ट्रवादी तत्त्वों को इस हत्या की राजनीति की रोकथाम करने के लिए मोहल्ले-मोहल्ले, गांव-गांव में संघटित और संयुक्त होना होगा और प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय प्रशासनों को भी समय रहते इन राष्ट्रविरोधी तत्त्वों की रोकथाम करने के लिए युद्ध-स्तर पर कार्यवाही करनी होगी।

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी : नई चुनौतियां

आगामी १६-१७-१८ अक्तूबर को वीर बांकुरे राजपूतों की वीरभूमि उदयपुर मे अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया गया है। ऋषि प्रणीत ग्रन्थो मे 'सत्यार्थप्रकाश' की दो दृष्टियो से विशेष महत्ता है। इसके प्रथम दस समुल्लासों के व्यवस्थित अध्ययन-मनन एवं अनुकरण से श्रेष्ठ मानव-परिवारों, मानव-समाज एवं विश्व का निर्माण सम्भव है। श्रेष्ठ मानव अथवा सच्चे आर्य के निर्माण में इन दस समुल्लासो की भूमिका अपूर्व एवं अनुपम हो सकती है, इस तथ्य को विश्व भर में प्रचारित एवं प्रसारित करने मे अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी का उदयपुर महोत्सव सार्थक हो सकता है। इस तथ्य को चरितार्थ करने के लिए विश्व की प्रत्येक जनभाषा मे सत्यार्थप्रकाशके लोकप्रिय संस्करण प्रकाशित होने चाहिए। इस अवसर पर पूर्वी अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा स्वाहिली मे सत्यार्थप्रकाश का विमोचन कर रही है, यह प्रसन्नता की बात है, दूसरी विश्वभाषाओ मे भी सत्यार्थप्रकाश का यथाशीघ्र अनुवाद एव प्रचार होना ही चाहिए।

संसार मे व्याप्त भ्रष्टाचार, कुरीतियों, मत-मतान्तरो, व्यक्तिगत सम्प्रदायो पर प्रकाश डालने के लिए महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के अन्तिम चार समुल्लासो का आश्रय लिया था। महर्षि ने सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने में सदैव अपनी तत्परता प्रदर्शित की थी। महर्षि ने दिल्ली दरबार के अवसर पर विश्व के प्रमुख धर्मों के अनुयायियों को शाश्वत धर्मसूत्रो को सामूहिक रूप से मानने का आमन्त्रण दिया था। उदयपुर सम्मेलन के अवसर पर वह आमन्त्रण दोहराया जा सकता हैं। इसी के साथ सत्यार्थ को न ग्रहण कर अपने सकुचित दृष्टिकोण को मानने के कारण कई बार सकुचित मतवादी 'सत्यार्थप्रकाश' के अन्तिम चार समुल्लासो पर आपत्ति करते हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' के ये समुल्लास भी धर्मचर्चा एवं न्यायपीठ पर खरे सिद्ध हुए हैं। इन समुल्लासो मे यदि विरोधियो के धर्मग्रन्थो की तथ्यात्मक समीक्षा की गई है तो आलोचना एवं तर्क की कसौटी पर ही उन्हें परखना होगा, उनपर प्रतिबन्ध लगाना सर्वथा अनुचित है, यदि ऐसे प्रतिबन्ध लगाये गए तो उनका आर्यसमाज दृढ़ता और पूरी एकता से मुकाबला करेगा।

चिट्ठी-पत्री

कश्मीर में आर्यसमाज का प्रचार

विगत २९ अगस्त, १९८१ से ८ सितम्बर, १९८१ तक की अल्पावधि मे ब्रह्मचारी नरेश जी ने कश्मीर घाटी मे चमत्कारपूर्ण कार्य किया है। उन्होने श्रीनगर के मौहल्लो विशेषत: शेरे कश्मीर गली अमीरा कदल स्थित श्री लालचन्द जी के मकान तथा चोपडा जी के मकान पर सामूहिक सत्संगों में ओजस्वी प्रवचन किए। इन स्थानो पर एकत्र व्यक्तियो ने बडी दिलचस्पी मे आर्यसमाज तथा वैदिक तत्त्व ज्ञान के बारे में जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछे जिनके युक्तियुक्त सन्तोषजनक उत्तरों से प्रश्नकर्त्ताओं की शंकाओं का समाधान हो गया। जवाहर नगर के एक पौराणिक मन्दिर में ब्रह्मचारी जी ने एक यज्ञ कराया, जिसे पौराणिक हिन्दुओ ने भी पसन्द किया।

इसी के साथ ब्रह्मचारी जी ने बादामी बाग, श्रीनगर मे सनातनी विचारधारा मे विश्वास करने वाले ४ हजार सैनिको के समक्ष भाषण किया, जिसे सैनिकों ने बहुत पसन्द किया। ब्रह्मचारी जी समीपस्थ गावो की जनता से भी सम्पर्क स्थापित करना चाहते थे, परन्तु वैसा सम्भव नही हो सका। मेरे ख्याल मे पिछले दिनों ब्रह्मचारी जी के प्रयत्नो से श्रीनगर शहर मे आर्यसमाज और वैदिक तत्त्व ज्ञान का जैसा प्रचार हुआ है, वैसा ही व्यापक प्रचार ब्रह्मचारी नरेश जी जैसे योगियो, सन्यासियों और ब्रह्मचारियों के माध्यम से कश्मीर घाटी के उपेक्षित गाँवों और कस्बों मे आसानी से हो सकता है।

—कुसुमलता सूद, प्रचार मन्त्रिणी
शिवमन्दिर, लालमण्डी, जवाहर नगर श्रीनगर।

गुरुकुल कांगड़ी की कुछ प्रशंसनीय गतिविधियां—३

पिछले दो लेख पढ़कर किसी को यह भ्रान्ति हो सकती है कि संस्था में किसी प्रकार की प्रगति नहीं हो रही। ऐसी बात नहीं है। जिन लोगों ने संस्था पर कब्जा कर लिया था उन्होंने तो संस्था की ऐसी दुर्दशा कर दी थी कि यहाँ विद्यार्थियों की संख्या ही न के बराबर रह गई थी। मकानों को खंडहर बना दिया था, यहाँ रात काट सकना एक संकट का सामना करना था। अब यहां ८-१० दिन रहकर मैंने नक्शा बदला हुआ पाया। इस परिवर्तन को आने में साल भर लग गया, परन्तु अभी परिवर्तन की बहुत कुछ गुंजाइश है।

बढ़े विद्यार्थी : संस्था के स्वास्थ्य के सूचक

जुलाई, १९८० में जब यहां विद्या-सभा की बैठक हुई थी तब विद्यालय-विभाग के छात्रों की संख्या जो किसी समय ३५० के लगभग थी, केवल १५-२० रह गई थी। आज विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या १६० तक पहुंच गई है। खोई हुई साख लौट रही है। बच्चों के चेहरे प्रफुल्लित दिखाई देते हैं। उनमें उत्साह है, हर बात में रुचि है। विद्यालय-आश्रम में अनेक ऐसे प्रयोग चल रहे हैं जिनसे आभास होता है कि अंधकार के युग के बाद प्रकाश के युग की किरणें फूटने लगी हैं। संख्या का बढ़ जाना संस्था के स्वास्थ्य का सूचक है।

विद्यार्थी पत्रिकाएं सम्पादित करें

कोई समय था जब विद्यार्थी अपनी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक योग्यता बढ़ाने के लिए हस्तलिखित पत्रिकाएं सम्पादित किया करते थे। अब उससे कुछ भिन्न योजना चल रही है। विद्यालय-विभाग की तरफ से 'ध्रुव' नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका छपकर प्रकाशित होती है। इसमें विद्यालय-विभाग के छात्रों के लेख प्रकाशित होते हैं। 'प्रह्लाद' नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका सम्पादित होती है, जिसका सम्पादन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी करते हैं, यह भी छपकर प्रकाशित होती है। 'आर्य-भट्ट' नाम से एक विज्ञान पत्रिका प्रकाशित होती है जिसका सम्पादन विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान-विभाग के अध्यक्ष डॉ० विजय शंकर करते हैं। इन पत्रिकाओं में अभी तो लगभग मुख्यतः अध्यापकों तथा विभागाध्यक्षों के लिखे लेख ही देखने को मिले हैं, परन्तु इस योजना को बढ़ाकर इसकी दिशा यह हो जानी चाहिए कि इन पत्रिकाओं में अधिकांश लेख विद्यार्थियों के हो रहा करें। जब विद्यार्थी इन पत्रिकाओं का सम्पादन करेंगे, तब उन्हें सम्पादन का क्रियात्मक अनुभव होगा। गुरुकुल के पुराने जमाने में हम लोग हस्त-लिखित पत्रिकाएं प्रतिमास प्रकाशित करते थे। सम्पादकत्व का उत्तरदायित्व एक विद्यार्थी पर न रहकर बारी-बारी, भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों पर होता था। वह विद्यार्थी ही अन्य विद्यार्थियों से लेख संग्रह करता था। पत्रिका को अलंकृत करना, उसमें भिन्न भिन्न हस्त-रेखांकित चित्र बनाना सारी पत्रिका को दो-तीन सहयोगियों द्वारा शुद्ध तथा सुन्दर लेख से लिखना; और पत्रिका के प्रकाशित हो जाने के दिन की प्रतीक्षा करना, पत्रिका में प्रकाशित अपने लेख को, उस पर अंकित अपने नाम को देखना—यह सब-कुछ हर्षोल्लास का विषय होता था। इसी योजना का यह परिणाम था कि यहाँ से निकला हर-एक स्नातक एक सिद्धहस्त लेखक होता था, किसी भी हिन्दी पत्रिका का सम्पादकत्व करने की योग्यता रखता था। इस समय भी अगर इन पत्रिकाओं का सम्पादन विद्यार्थियों के जिम्मे ही डाल दिया जाए, अध्यापक लेखों को सिर्फ शुद्ध कर देने का काम करें, बाकी क्रियात्मक काम विद्यार्थियों पर ही छोड़ें, वे ही लेखों का संग्रह करें, भले ही हाथ से लिखकर पत्रिका का प्रकाशन न होकर पत्रिका प्रेस में ही छापी जाए, विद्यार्थी ही प्रूफ देखें, तो जिस दिशा में प्रगति हो रही है उसमें और अधिक उपयोगिता हो जाएगी।

सांस्कृतिक गति-विधि का एक दूसरा पक्ष भी सामने आया। जब मैं ८-१० दिन के लिए गुरुकुल आया तब देखा कि मेरे सहपाठी पं० आत्मदेव जी विद्यालंकार सपत्नीक यहां विराजमान थे। वह ८० वर्ष के लगभग हैं, परन्तु उनकी स्मृति शक्ति पूर्णतः स्थिर है। वे प्रायः काल प्रतिदिन विद्यालय में जाकर छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों को वेद-मंत्र स्मरण करा रहे थे। उन्होंने जो मन्त्र चुने थे, वे सरल तथा आध्यात्मिक प्रेरणा के स्रोत थे। ब्रह्मचारी भी उत्सुकता से उनसे मंत्र सीख रहे थे, और याद कर लेते थे। वह सपत्नीक ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम में निवास करने के लिए आए हुए हैं, परन्तु उनका संकल्प है कि वानप्रस्थाश्रम में रहते हुए भी वे प्रातः-काल यहाँ आया करेंगे और प्रतिदिन ब्रह्मचारियों को वेदमंत्र याद कराया करेंगे। इस योजना के अतिरिक्त एक योजना यहां पहले चल चुकी है। विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रवक्ता चन्द्रशेखर प्रतिदिन छात्रों को चुने हुए श्लोक स्मरण कराते रहे हैं। उन्होंने संस्कृत के प्रसिद्ध तथा उपयोगी सौ श्लोक चुनकर विद्यार्थियों को याद करा दिये हैं। कई विद्यार्थी तो ऐसे हैं जिन्हें सभी सौ श्लोक याद हैं। इन सौ श्लोकों को संगड-विद्या-सभा ट्रस्ट जयपुर की आर्थिक सहायता से 'जीवन-ज्योति' नाम से श्रद्धा-साहित्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भी कर दिया गया है। यह प्रगति बड़ी श्रेयस्कर है, परन्तु मुझे स्मरण हो आया है कि कभी संस्कृत के अध्यापक ब्रह्मचारियों को अन्त्याक्षरी-प्रतियोगिता के लिए तैयार किया करते थे। वे उन्हें इतने श्लोक याद करा दिया करते थे कि श्लोकों का स्मरण करने वाले छात्रों की दो टोलियां आमने-सामने खड़ी हो जाती थीं और पहली टोली जो श्लोक बोलती थी, उसके अन्तिम अक्षर को प्रारम्भ में लेकर दूसरी टोली एक अन्य श्लोक का उच्चारण करती थी, इस प्रकार की प्रतियोगिता कभी-कभी घन्टा भर चलती थी जिसका अभिप्राय यह है ब्रह्मचारियों को सौ नहीं सहस्रों श्लोक उनके संस्कृत के अध्यापक याद करा दिए करते थे। जिस दिशा में गुरुकुल प्रगति कर रहा है उसे देखकर आशा है कि ब्रह्मचारियों को सहस्रों श्लोक याद हो जाएंगे।

सांस्कृतिक गति-विधि के उक्त पक्ष के अलावा एक तीसरा पक्ष भी देखने को मिला। प्रातः काल ५ बजे गुरुकुल के प्रांगण में दूर-ध्वनि-प्रसारण के माध्यम से कुछ वेदमन्त्र तथा श्लोक प्रसारित किए जाते हैं। यह प्रसारण संगीतमय होता है। वेद-मन्त्रों की इस संगीत की ध्वनि में बच्चे जाग जाते हैं और अपने दैनिक-कृत्य के लिए चल पड़ते हैं। यह प्रयोग सिर्फ ब्रह्मचारियों को नहीं, सम्पूर्ण परिसर को आध्यात्मिक प्रेरणा देता है। इसमें एक परिवर्तन की आवश्यकता है। यह प्रसारण तो होना चाहिए, परन्तु इसके साथ प्रातः उठकर सब ब्रह्मचारी अपनी-अपनी श्रेणी में 'विश्वानि देव' आदि मन्त्रों का पाठ भी किया करें, तो इस प्रसारण में जान आ जाएगी। यह प्रसारण भी उन्हीं वेद मन्त्रों का होना चाहिए, जिन वेद मन्त्रों को ब्रह्मचारी सोकर उठने पर सम्मिलित रूप से बोलें। जिस प्रकार सोकर उठने पर ब्रह्मचारियों का सम्मिलित रूप में 'विश्वानि देव' आदि वेद मन्त्रों का पाठ होना चाहिए, उसी प्रकार सोते समय उन्हें सम्मिलित रूप में 'यज्जाग्रतो' आदि मन्त्रों का पाठ करना चाहिए। यह सब परिसर के वातावरण में आध्यात्मिक भावना का संचार तो करेगा ही, ब्रह्मचारियों के अन्तःमानस में भी जाने-अनजाने अपना प्रभाव उत्पन्न करेगा।

लेखक :
डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
विजिटर, गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सांस्कृतिक गति-विधि की एक नवीन योजना मैंने और यहां देखी। सायंकाल यहाँ दूर-ध्वनि माध्यम से देश के समाचार भी प्रसारित किए जाते हैं। इस प्रसारण में गुरुकुल के समाचार तथा विशेष-विशेष सूचनाएं भी सबके पास पहुंच जाती हैं। अभी तक ये समाचार तथा सूचनाएं हिन्दी में प्रसारित होती हैं, सब कान लगाकर और सावधान होकर इन्हें सुनते हैं, परन्तु इस योजना के संचालक यह सोच रहे हैं कि यह प्रसारण हिन्दी तथा अंग्रेजी और संस्कृत, इन तीन भाषाओं में हो। पहले हिन्दी में, फिर संस्कृत में, फिर अंग्रेजी में। इसका परिणाम यह होगा कि बच्चों को, और दूसरों को भी, धीरे-धीरे सुन-सुन कर तीनों भाषाओं का ज्ञान होने लगेगा। यह योजना बड़ी सुन्दर है, और गुरुकुल के वातावरण के अनुरूप है।

खेल-कूद, व्यायाम तथा यौगिक आसन

२ सितम्बर को विद्यालय-विभाग के मुख्याध्यापक मुझे बुलाने आए कि आज विद्यालय-विभाग के ब्रह्मचारियों तथा विज्ञान-विभाग के छात्रों का फुटबाल का मैच होने जा रहा है, वहां चलिए। मैंने वहाँ जाकर देखा कि एक तरफ विद्यालय के छोटे-छोटे अष्टम-नवम के ब्रह्मचारी थे। दूसरी तरफ १७-१८ वर्ष के विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग के छात्र थे, जो गुरुकुल के परिसर में नहीं रहते थे। मैं नहीं समझता था कि विद्यालय विभाग के छात्रों का मुकाबला कर सकेंगे। परन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि दोनों का मुकाबिला ऐसा हुआ, जैसे वे छोटे बच्चे अपने बड़े प्रतियोगियों के समवयस्क हों। एक छोटा ब्रह्मचारी हरिशंकर जो मुश्किल से चार फुट का था अपने से लम्बे-लम्बे खिलाड़ियों से जा भिड़ता था। मुझे मालूम हुआ कि यह ब्रह्मचारी बड़ा प्रभावशाली है, उसने सौ के सौ श्लोक याद कर लिए हैं। यह मैच बड़ा जमकर हुआ, परन्तु अन्त में विज्ञान महाविद्यालय के छात्र दूसरी बारी में एक गोल से जीत गये। इन

छोटे ब्रह्मचारियों का एक गोल से हार जाना दुखद नहीं था, परन्तु इनका अपने से बड़ों के साथ भिड़ जाना सुखद था।

इस मैच के बाद हम लोग व्यायामशाला में गए। वहाँ आकर मैंने देखा कि व्यायाम के अत्यन्त सुन्दर, आधुनिक उपकरण वहां मौजूद थे। सब कुछ नया था, चमक रहा था। पूछने पर मालूम हुआ कि इसके पुनर्निर्माण में ग्यारह हजार खर्च हो चुके हैं, और दस हजार के लगभग और सामान आने को है। ब्रह्मचारी तरह-तरह के व्यायाम कर रहे थे, अंग-प्रत्यंग को उल्टा सीधा करने के जो खेल हो सकते हैं, वे सब हर ब्रह्मचारी कर रहा था। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि फुटबाल आदि के प्रशिक्षण तथा व्यायामशाला के व्यायामों के प्रशिक्षण के लिए अलग-अलग दो शिक्षक रखे हुए हैं जो ब्रह्मचारियों को इनका प्रशिक्षण देते हैं।

खेलकूद तथा व्यायाम के अतिरिक्त ब्रह्मचारियो को यौगिक आसन भी सिखाए जाते हैं। यह योजना बन रही है कि यौगिक आसन सिखाने के लिए शिक्षा मन्त्रालय या यू० जी० सी० से अनुदान लेने का प्रयत्न किया जाए। पन्द्रह-सोलह साल हुए जब भारती नाम से एक योगासन शिक्षक की गुरुकुल में नियुक्ति थी और वह ब्रह्मचारियों को सब प्रकार के योगासन तथा नेति-धोती आदि यौगिक क्रियाएं भी सिखाते थे।

एक बात को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। जहां बच्चों ने फुटबाल का मैच खेला था वहाँ जुलाई, १९८० मे जगल खडा था। किसी समय वहां बड़ा सुन्दर क्रीडा-मैदान था। अब जब मैं २ सितम्बर १९८१ को ब्रह्मचारियों का फुटबाल का मैच देखने गया, तब वहां पहले जैसा एक सुन्दर क्रीड़ा-क्षेत्र था। अभी गुरुकुल के परिसर में काफी जगलपना मौजूद है जिसे साफ-सुथरा करना आवश्यक है। इस परिसर मे आयुर्वेद महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के सभी विभाग रहते हैं। इस दृष्टि से अगर आयुर्वेद के प्रिन्सिपल अपने सरकारी विभाग से तथा विश्वविद्यालय के कुलपति शिक्षा मंत्रालय अथवा यू० जी० सी० से विशेष ग्रान्ट लेने का प्रयत्न करें या अगर उनके बजट में कोई इस दिशा पर व्यय करने की कोई राशि हो तो उसका सदुपयोग होना चाहिए ताकि परिसर का सम्पूर्ण प्रांगण चमक उठे।

मुझे पुरानी पुण्य-भूमि के दर्शन करने तथा कांगड़ी ग्राम देखने की भी उत्सुकता थी। एक दिन हम लोग उधर भी गये। पुण्य-भूमि तो मैं नही जा सका, क्योकि कांगडी ग्राम मे ही सारा समय व्यतीत हो गया, परन्तु यह जान कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि गुरुकुल के सचालकों के प्रयत्न से कांगडी ग्राम के भाग जागने लगे हैं। वहां मुझे अपने पुराने कर्मचारियों के दर्शन हुए। कांगडी का नाम गुरुकुल के साथ ऐसा जुड़ा हुआ है जैसे वह गुरुकुल का अग हो। इसका यह परिणाम हुआ कि जब गुरुकुल के अधिकारी बिजनौर जाकर मैजिस्ट्रेट से मिले, तब मैजिस्ट्रेट ही नही, कमिश्नर भी कांगडी ग्राम आया और उसने इस ग्राम को ग्राम-विकास योजना का अग घोषित कर दिया। अब यहा लघु-उद्योग भी खुलेंगे और बड़ों के साथ जुड़ होने के कारण यह छोटा-सा ग्राम भी बड़ा नाम ही नहीं, प्रगति मे भी बड़ा हो जायेगा। कांगडी ग्राम की इस विकास-योजना का बोझ डॉ० विजयशंकर पर डाला गया है जो गुरुकुल विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग के अध्यक्ष हैं। कांगड़ी ग्राम की विकास योजना मे श्री कैलाश प्रसाद गुप्त जी भी अपने सम्पूर्ण अनुभव से योग-दान कर रहे हैं। ये सब धन्यवाद के पात्र हैं। अब कांगड़ी ग्राम बड़ी सड़क से सीधा जुड़ गया है, और गुरुकुल विश्वविद्यालय से कांगड़ी ग्राम मोटर से १५ मिनट मे पहुचा जा सकता है।

जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल के उच्चाधिकारियो के प्रयत्न से गुरुकुल के गगातट के पुराने जीर्ण-शीर्ण भवनो का भी सरकारी सहायता से पुनरुद्धार करने की योजना बन रही है। समय आ सकता है जब गुरुकुल विश्वविद्यालय का कोई विभाग फिर से पुरानी पुण्य-भूमि मे खोला जा सके। —समाप्त

उड़ीसा में हिन्दू एकता सम्मेलन

भुवनेश्वर। उड़ीसा के प्रसिद्ध नगर बालेश्वर में विश्व हिन्दू परिषद् आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक सस्थाओ के प्रयत्न से एक विशाल जन सभा का आयोजन हुआ था। नगर का टाउनहॉल खचाखच भरा था। इसमें उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री आर्य विद्वान श्री प्रियव्रतदास, विश्व हिन्दू परिषद उड़ीसा शाखा के मंत्री श्री अरुण कुमार पंडा, रामानुज पंथी डॉ० अयोध्या दास, भागवतकार अध्यापक रमाधर सारथी तथा अन्य धार्मिक सस्थाओ के वरिष्ठ विद्वानो के भाषण हुए। 'हिन्दू एकता के बारे में सब वक्ताओ ने जनता का आह्वान किया। पिछडी जाति के सामूहिक धर्मान्तरण में विदेशी धन के आयात पर प्रतिबन्ध के बारे मे एक प्रस्ताव पारित हुआ।

बाल्मीकि आत्मोत्थान का मार्ग अपनाएं

महर्षि बाल्मीकि स्वयं हमारे लिए आदर्श उपस्थित कर गए—आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री हंस

गाजियाबाद। आर्यसमाज आर्य नगर की ओर से दलित एव गरीब बन्धुओ की झुग्गी-झोपडियो मे यज्ञ कराया गया। यज्ञ एव भजनों के उपरान्त सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस जी ने कहा कि महर्षि बाल्मीकि ने रामायण की रचना करके अपने जीवन से एक ऐसा आदर्श उपस्थित किया कि, हम उस महान आदर्श से प्रभावित हुए बिना नही रह सकते। आर्यसमाज ने वाल्मीकि रामायण को जनरुचि के अनुकूल प्रचार का प्रधान अग स्वीकार कर उसका प्रचार किया है और मिलावट को निकाल बाहर किया। अत: हरिजन बन्धु हमारे अपनेपन के इस प्रयास को हृदय से स्वीकारें और आर्यसमाज मे सदस्यता ग्रहण कर समानता के रूप मे बन्धुभाव का प्रसार करें।

—o—

वीर पर्व दशहरा वीरोचित रूप में ही मनाएं

—प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हंस का युवापीढ़ी को आह्वान

बहजोई। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस ने बहजोई आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए युवाशक्ति को दशहरा पर्व वीरोचित ढग से मानने की प्रेरणा करते हुए कहा कि वीरभोग्या वसुन्धरा भारत भूमि वीरो की जन्मदात्री रही। राम, लक्ष्मण, भरत और महाभारत के प्रणेता कृष्ण के वशजो चेतो और समय की चाल पहचानो। अब समय आया है, जब ग्राम-ग्राम और नगर-नगर मे साधना मन्दिर: आर्यवीर दल' व्यायामशालाओ का जाल बिछा दो।

उन्होने प्राचीन इतिहास और देश के प्रबुद्ध व्यक्तियो के उदाहरण देकर देश मे विदेशी धन पर प्रमक्त साम्प्रदायिक लोगो की कड़ी भर्त्सना की और कहा कि अर्थ, लालच, भय आदि से धर्म परिवर्त्तन कराने वाले लोगो को अब सावधान होकर आर्यसमाज का आह्वान सुनना चाहिए। किन्तु अर्थ, लालच, भयादि से धर्म परिवर्तन पर सरकारी प्रतिबन्ध होना चाहिए।

—o—

आर्यसमाज बीकानेर का वार्षिकोत्सव

बीकानेर २१ सितम्बर। आर्यसमाज, जैल रोड का वार्षिक उत्सव ४ से १० अक्तूबर की अवधि मे रतन बिहारीजी बाग मे मनाया जायेगा। जिसमे स्वामी वेद मुनि—नजीबाबाद, श्री ओमप्रकाश वेदालकार—भरतपुर, पं० शान्ति प्रकाश गुड़गाव, श्री ओमप्रकाश वर्मा—अबोहर (हरियाणा), आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान जयपुर की भजन मण्डली और नवाब छतारी के पोते डॉ० आनन्द सुमन भाग लेंगे।

आर्य जगत् समाचार

तीन आर्यसमाजों ने हरिजन बस्तियां गोद लीं

आर्यसंस्थाएं अनुकरण करें : हरिजन स्नेह-सम्मेलन की धूम

६ सितम्बर प्रात नवनीत लाल सत्यप्रिय धमार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान मे महाशय कृष्ण आर्यभवन जोर बाग मे हरिजन स्नेह सम्मेलन किया गया। यज्ञ में आर्य शिक्षण सस्थाओ के एक सौ से अधिक हरिजन छात्र तथा छात्राओं ने आहुतियां डालीं। पं० ज्ञानचन्द जी ने सबको यज्ञोपवीत दिए।

अध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने हिन्दू समाज से छुआछूत समाप्त करने पर बल दिया। हरिजन भाइयों को हिन्दू समाज का एक सुदृढ़ अंग बनाने के लिए केवल भाषण और सम्मेलन से कुछ अधिक लाभ नहीं है।

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को तन, मन, धन लगाकर अन्य हिन्दू सस्थाओ से मिलकर कुछ क्रियात्मक कार्य करना होगा।

श्री नवनीत लाल एडवोकेट प्रधान ट्रस्ट ने आर्यसमाज के अधिकारियो से प्रार्थना की कि प्रत्येक समाज एक हरिजन बस्ती को गोद ले और बताया कि उनकी प्रार्थना पर आर्यसमाज लोदी रोड, आर्यसमाज भोगल तथा आर्यसमाज निजामुद्दीन ने अपने निकट की हरिजन बस्तिओ को गोद लेने का निश्चय कर लिया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि प्रत्येक आर्य परिवार एक किसी हरिजन परिवार का भार अपने जिम्मे ले। इसके पश्चात् पचास-साठ हरिजन छात्र व छात्राओं को श्रीमती रानीदत्ता के कर कमलो से सध्या या वेदमन्त्र सुनने पर पारितोषक वितरण किए गए। लगभग पांच सौ आर्यजनों ने जिनमें १५० हरिजन थे मिलकर सहभोज किया। हरिजन मन्दिर के पुजारी श्री प्यारेलाल व उनके साथियों का स्वागत किया गया।

—x—

पंजाब के हालात के लिए जनसंघी जिम्मेदार

साम्प्रदायिक ताकतों का मुकाबला किया जाएगा

पश्चिम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश आर्य ने आर्यसमाज महावीर नगर एव गुप्ता कालोनी के वार्षिक उत्सवों के अवसर भाषण देते हुए कहा कि पंजाब में जो गम्भीर हालात पैदा हुए हैं उनके लिए जनसंघी श्री यज्ञदत्त शर्मा एव उनके साथी जिम्मेदार हैं। श्री आर्य ने कहा कि यदि दो कुर्सियों के लिए जनसंघियो ने अपना ईमान अकालियों के आगे न बेचा होता और उनसे मिलकर पजाब में उनको गद्दी पर न बिठाया होता तो आज यह हालात कभी पैदा न होते। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज देश की एकता कभी भंग नहीं होने देगा और इस एकता को भग करने वाली साम्प्रदायिक शक्तियों का मुकाबला करने के लिए इन्दिरा सरकार का पूरा सहयोग देगा। लाला जगत नारायण के हत्यारों को पनाह देने वाले लोगो को चाहे वे कितने ही बड़े लोग क्यों न हों, उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यनेता महाशय धर्मपाल ने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गाधी ने हरिजनों के सामूहिक धर्म परिवर्तन को रोकने मे जिस सूझबूझ का परिचय दिया है उसी तरह वह पजाब के गम्भीर हालात को निपटाने मे पीछे नही हटेंगी।

—o—

श्री रविशास्त्री की वेदकथा

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली-६ में दिनांक १५ से २१. ८. ८१ तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया जिसमें समाज के सुयोग्य पुरोहित श्री रवि शास्त्री व्याकरणाचार्य ने वेद मन्त्रों के माध्यम से अपने ओजस्वी वैदिक प्रवचनों द्वारा जनसमुदाय को प्रभावित एवं लाभान्वित किया।

लाला जी की हत्या—पत्रकारिता की हत्या

देश की भावी पीढ़ी प्रेरणा लेगी

दिल्ली। केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद दिल्ली मण्डल की विशेष सभा की बैठक को सम्बोधित करते हुए परिषद के दिल्ली राज्य के महामन्त्री श्री अनिलकुमार आर्य ने लाला जगत नारायण की हत्या को पत्रकारिता की हत्या की संज्ञा देते हुए सरकार से मांग की कि पत्रकारो की हर तरह से सुरक्षा की जानी चाहिए क्योकि पत्रकार ही किसी समाज व राष्ट्र के दर्पण होते हैं वे ही राष्ट्र के जागरूक पहरेदार होते हैं।

उन्होने कहा अमर शहीद जगत नारायण ने देशद्रोहियों के विरुद्ध जो अभियान चलाया है राष्ट्रवादी व देशप्रेमी जनता उसे पुरजोर सफल बनाएगी। देश की भावी पीढ़ी शहीद जगतनारायण से प्रेरणा लेती रहेगी। ०००

आर्यसमाज साबुन बाजार, लुधियाना मे १७ से रविवार २० सितम्बर तक वेद सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर चारो वेदों के शतकों का यज्ञ भी किया गया।

हरिजन बस्तियों में यज्ञनुष्ठान एवं गोष्ठियां

धनौरा (टीकरी) बटाली (मुजफ्फरनगर) में आचार्य [illegible], ज्वालापुर वालों के सहयोग से सामवेद परायण यज्ञ हुआ। इसके पश्चात् गढ़ी कागरान में पं० मनफूल सिंह के ब्रह्मत्व मे ऋग्वेद (प्रथम मण्डल) परायण यज्ञ हुआ। क्षेत्र मे अनेक स्थानो पर पौरोहित्य कर्म में अनेक हरिजन बन्धुओं ने [illegible] अनेक लोगो ने धूम्रपानादि त्याग नियमानुसार सध्यादि करके सहज जीवन व्यतीत करने का वक्त देकर आर्यत्व की गरिमा को पहिचाना।

श्री मनोहरलाल गुप्त चण्डीगढ़ स्थानान्तरित

आर्य केन्द्रीय सभा के भू० पू० मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सभा के सदस्य रिजर्व बैंक नई दिल्ली के एक विशेष अधिकारी श्री मनोहर लाल गुप्ता स्थानान्तरित होकर सेक्टर ४७ मकान संख्या ३८६६ चण्डीगढ़ चले गए हैं।

डा० चन्द्रभानु शास्त्री एम०ए० अकिंचन दिवंगत

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रतिष्ठित स्नातक श्री डा० चन्द्रभानु जी अकिंचन का देहावसान आयुर्वेद संस्थान दिल्ली में २१. ९. ८१ को हो गया। उन्हें कुछ समय पूर्व बाए अंग पर फालिज का आक्रमण भी हुआ, साथ ही मस्तिष्क में ट्यूमर भी हुआ। इसी के आपरेशन हेतु मेडिकल इन्स्टीट्यूट में भर्ती कराए गए। इसी मध्य उनका स्वास्थ्य और बिगडता गया। प्रसिद्ध चिकित्सकों ने उन्हे बचाने के लिए भरसक प्रयत्न किया, किन्तु बचाए न जा सके।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर और बनारस मे शिक्षा ग्रहण करने के बाद बाजोरिया कालिज सहारनपुर, नानकचन्द डिग्री कालेज मेरठ, फिर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आचार्य रहे। उसके बाद गुरुकुल कांगड़ी के वाइसचान्सलर तथा रजिस्टार भी रहे। प्रभु उन्हें सद्गति दें। परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आर्यसमाजों के सत्संग

४ अक्तूबर '८१

अन्धा मुगल प्रतापनगर—कविराज बनवारी लाल शादां; अमर कालोनी—पं० सुधाकर स्नातक; आर्यपुरा—पं० वेदपाल शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर-५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आनन्द विहार—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; किंग्सवे कैम्प—श्रीमती लीलावती आर्या; कालकाजी डी-डी-ए फ्लेट्स—डा० रघुनन्दनसिंह; कालकाजी—श्रीमती गीता शास्त्री; करौल बाग—डा० सुखदयाल भूटानी; कृष्णनगर—ला० लखमीदास आर्य; कीर्तिनगर—डा० देवेन्द्र द्विवेदी, गाँधीनगर—पं० प्रकाशचन्द शास्त्री, गीता कालोनी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प० विश्व प्रकाश शास्त्री; गोविन्द पुरी—प० हीराप्रसाद शास्त्री; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—पं० प्रदीपकुमार शास्त्री; चूना मण्डी पहाड़गंज—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; जंगपुरा भोगल—प० सत्यभूषण वेदालंकार; जनकपुरी सी-३—प० [illegible] विद्यालंकार; जनकपुरी बी ३/२४—प० हरिदत्त शास्त्री; टैगोर गार्डन—पं० ओमवीर शास्त्री; तिलक नगर—प० प्रकाशचन्द वेदालंकार; तिमारपुर—पं० खुशीराम शर्मा; देवनगर (मुलतान)—प्रो० सत्यपाल वेदार; नारायण विहार—वैद्य रामकिशोर; नयाबांस—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; नगर शाहदरा—स्वामी प्रेमानन्द; पंजाबीबाग—डा० रघुवीर वेदालंकार; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल'; पश्चिम पुरी जनता क्वार्टर—श्रीमती भगवान देवी; बाग कड़े खाँ—प० बरकतराम भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—प० रामरूप शर्मा; महावीर नगर—पं० ईश्वरदत्त एम. ए.; मोती बाग—प० सत्यनारायण शास्त्री; रघुवीर नगर—प० महेशचन्द्र भजनोपदेशक; राणा प्रतापबाग—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; राजौरी गार्डन—पं० देवेश; लड्डूघाटी—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; लाजपत नगर—प० उदयपाल शास्त्री; लारेंन्स रोड—श्री चमनलाल आर्य; विक्रम नगर—पं० अमरनाथ कान्त; विनय नगर—श्री देशराज खन्ना; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री तथा ज्ञानचन्द्र डोगरा गायक; सराय रोहेला—श्री मोहनलाल गांधी; शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री; हनुमान रोड—प० हरिशरण सिद्धान्तालंकार, हौज खास डी-२०—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ।

—ज्ञानचन्द डोगरा; वेद प्रचार विभाग

आर्यसमाज मोडल बस्ती के प्रीतिभोज में हरिजन

नई दिल्ली क्षेत्रीय प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजो का सामूहिक समापन कार्यक्रम २० सितम्बर को आर्यसमाज मोडल बस्ती शीदीपुरा, दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित प्रीतिभोज में सैकड़ों की सख्या में हरिजन एवं बाल-वृद्ध-युवा नर-नारी सम्मिलित हुए। कृष्णनगर दिल्ली के दानवीर श्री विद्याप्रकाश सेठी सपत्नीक पधारे और आर्यसमाज को ५०१ का दान भेंट किया।

—हरिजन बस्ती रणजीत नगर मे आर्य सत्संग मण्डल के तत्त्वावधान मे १४ सितम्बर को श्री वेदव्यास जी और पं० प्रकाशवीर व्याकुल के भजनोपदेश हुए।

आर्यसमाजों के नये पदाधिकारी

आर्यसमाज घोण्डा, दिल्ली—१५३। प्रधान—श्री ओमप्रकाश गुप्त, उपप्रधान—श्री ओमप्रकाश गुप्त (जल वाले); मन्त्री—श्री रामरक्षपाल गुप्त; उपमन्त्री—श्री श्यामसिंह आर्य; कोषाध्यक्ष—श्री लक्ष्मणदास गुप्त, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री [illegible] प्रचार मंत्री—श्री श्यामसिंह आर्य।

महिला आर्यसमाज घोण्डा। प्रधाना—श्रीमती दुर्गा देवी; उपप्रधाना-श्रीमती प्रकाश रानी आर्या; मन्त्रिणी—श्रीमती विद्यादेवी; उपमन्त्रिणी—श्रीमती गायत्रीदेवी; प्रचार मन्त्रिणी—श्रीमती फूलमाला देवी।

आर्य जिला सभा गुरुदासपुर। प्रधान—श्री रामकिशन महाजन, उपप्रधान—सर्वश्री सुभाष मित्तल एव जगदेव कुमरा; मन्त्री—प्रि. प्रेमनाथ तिक्कू; उपमन्त्री—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु, प्रचार मन्त्री—श्री स्वतन्त्रकुमार मरगडे, कोषाध्यक्ष—श्री वेदप्रकाश।

आर्यसमाज बदरपुर। प्रधान—श्री खेमचन्द्र एडवोकेट, उपप्रधान—श्री राजेन्द्र [illegible]—श्री बलराज आर्य; मन्त्री—श्री [illegible]पाल, कोषाध्यक्ष—श्री प्रीतम सिंह आर्य; पुस्तकाध्यक्ष—श्रीचन्द्र आर्य।

आर्यसमाज नागल राया—प्रधान चौ० देवीसिंह; उपप्रधान—लाला सूरजभान एव चौ० रूपचन्द्र; मन्त्री—श्री अजीतकुमार; उपमन्त्री—श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी; प्रचार-मन्त्री—श्री रघुराज शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री सूरजभान गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामदास आर्य, लेखा-परीक्षक—श्री दलीपसिंह।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया — ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के ग्राहक स्वयं बनें— दूसरों को बनाएं
卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए
卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं०२ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ . अंक ५० | रविवार २६ आश्विन, वि० २०३८ | ११ अक्तूबर १९८१ | दयानन्दाब्द १५७

अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह उदयपुर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विशेष बसों का कार्यक्रम

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा, कार्यवाहक मन्त्री प्रो० भारत मित्र, सभा कोषाध्यक्ष श्री बलवन्तराय खन्ना ने एक विज्ञप्ति में घोषित किया है—

उदयपुर में १६-१८ अक्तूबर १९८१ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में दिल्ली से अधिकाधिक आर्य नर-नारियों के जाने के लिये दिल्ली के प्रत्येक क्षेत्र से स्पेशल बस चलाने का प्रबन्ध दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया है। यात्री रास्ते मे आने वाले दर्शनीय स्थानों को भी देख सकेंगे। बसों का कार्यक्रम निम्न प्रकार रहेगा :—

तिथि	प्रस्थान	समय	पहुंच	समय
१४-१०-८१	दिल्ली	प्रातः ८ बजे	अलवर	प्रातः ११.३० बजे
	अलवर	मध्याह्नोतर ७.०० बजे	अजमेर	रात्रि ८.०० बजे
१५-१०-८१	अजमेर	प्रातः १०.०० बजे	पुष्करराज	प्रातः १०.३० बजे
	पुष्करराज	प्रातः ११.३० बजे	ब्यावर	दोपहर १.०० बजे
	ब्यावर	बाद दोपहर २.३० बजे	चित्तौड़गढ़	साय ६.०० बजे
१६-१०-८१	चित्तौड़गढ़	प्रातः ८.०० बजे	उदयपुर	प्रातः ९.३० बजे
१८-१०-८१	उदयपुर	सायं ४.३० बजे	नाथद्वारा	सायं ५.३० बजे
	नाथद्वारा	रात्रि ७.३० बजे	जयपुर	प्रातः ५.०० बजे
१९-१०-८१	जयपुर	मध्याह्न १.०० बजे	दिल्ली	साय ७.३० बजे

बस का किराया प्रति सवारी १४५/- रुपये (लागत मात्र) ही रखा गया है। जिस स्थान पर भी १० सवारी होंगी, बस वहीं आएगी। दस से कम सवारी अपने क्षेत्र के निकटतम स्थान जहां बस आयेगी पहुंच जायें। रास्ते में ठहरने की व्यवस्था सभा द्वारा की जायेगी। भोजन अपना करना होगा। हो सकता है स्थानीय आर्यसमाजें भी किसी स्थान पर भोजन अथवा जलपान का प्रबन्ध कर दें।

१० अक्तूबर तक ही सीट आरक्षण हो सकेगा। आरक्षण कराते समय यात्री अपना नाम, पिता/पति का नाम/आयु/अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें। यह अत्यावश्यक है। अपनी सीट शीघ्र आरक्षित कराकर रसीद प्राप्त कर लें ताकि बाद में पछताना न पड़े। □

२७ अक्तूबर को रामलीला मैदान में ऋषि निर्माणोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा का आह्वान : भारी संख्या में जनता भाग ले

नई दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल और महामन्त्री प्रिन्सिपल ओमप्रकाश ने समस्त आर्यसंस्थाओं, आर्यसमाजों एव आर्यजनों से अनुरोध किया है कि सभा के तत्वावधान में मंगलवार ता० २७ अक्तूबर को प्रातः ९ से १२ बजे तक रामलीला मैदान में हो रहे ऋषि निर्वाणोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में स्वयं पहुंचे तथा ऐसे लोगों को भी आने के लिए प्रेरणा दें जो अभी आर्यसमाज से सम्बन्धित नहीं है।

स्मरण रहे कि उस दिन प्रातः आठ बजे रामलीला मैदान में पहुंचकर सामूहिक यज्ञ में भाग लेना है। उत्सव से पूर्व अपने मोहल्लों में प्रभात फेरी का आयोजन करते हुए ऋषि उत्सव की सूचना दें, अपने क्षेत्र में सार्वजनिक सभा कर ऋषि जीवन पर प्रकाश डालें। अपने क्षेत्र के आर्य परिवारों को लाने के लिए बसों की व्यवस्था करें, उन्हें झण्डों तथा मोटों एवं आर्यसिद्धान्त वाक्यों से सजाएं। उस दिन समस्त आर्यजन अपने घरों एवं समाज-मन्दिर पर दीपमाला करें।

विदेशी धन से भारत के धार्मिक सन्तुलन को उलटने का षड़यन्त्र

विदेशी ईसाई मिशनों द्वारा भारत के पर्वतीय क्षेत्रों मे किए जा रहे धर्म-परिवर्तनों के पीछे क्या राजनीति छिपी है, यह इस राजनीतिक षडयन्त्र के आविष्कारक श्री विलियम फ्रेंक ग्राहम द्वारा फरवरी, १९५३ मे सयुक्त राज्य अमेरिका के 'वायस आफ अमेरिका' ब्राडकास्टिंग स्टेशन से 'निर्णय की घड़ी' विषयक कार्यक्रम मे दिए भाषण से अभिव्यक्त होती है। श्री ग्राहम ने कहा था—'अमेरिका के लोगो, यदि संसार मे कम्युनिज्म का सामना करना चाहते हो तो तुम्हें इसका मुकाबला सबसे पहले भारत मे करना होगा, क्योंकि अमेरिकी और रूसी गुटों के मध्य भारत के हाथ में ही सन्तुलन की शक्ति है। इसके लिए भारत मे पादरियों की एक सेना भेजनी होगी, जिसका नारा होना चाहिए कि भारत में बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो और उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहराए ताकि अमेरिका अपने चर्चों के माध्यम से भारत के राजनीतिक ढांचे पर अपना नियन्त्रण कर सके।

उल्लेखनीय है कि उक्त योजना के अन्तर्गत ही भारत में विदेशी ईसाई मिशनरी और अपार धनराशि आई और देखते-देखते भारत के समस्त पर्वतीय क्षेत्रों नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय, छोटा नागपुर केरल आदि क्षेत्रो मे वे फैल गए और उन क्षेत्रों पर उनका अधिकार स्थापित हो गया अथवा उन पर अधिकार के लिए उनके सशस्त्र आन्दोलन प्रचलित हैं। ईसाइयो से ही विदेशी मुस्लिम राष्ट्रो में सामूहिक धर्म-परिवर्त्तन का कार्यक्रम अपनाया।

गांव में रहना है तो मुसलमान बनो

उत्तरप्रदेश के हरिजनों को धमकी : मुख्यमन्त्री को शिकायत

हरदोई। सदीला तहसील के मरिगहना गाव के एक हरिजन धन्ना चमार ने उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को भेजे एक प्रार्थनापत्र में कहा है—उक्त मुस्लिम बहुल क्षेत्र में हरिजनो से कहा जा रहा है कि यदि इस गांव में रहकर कुएं का पानी पीना है तो पहले इस्लाम धर्म स्वीकार करो। यह सब इसलिए नहीं है कि वहा पेयजल का साधन नही है, प्रत्युत यह एक आतक और भय का कारण है जिसके कारण गरीब और कमजोर हरिजन पीने का पानी कुओं से निकालने का साहस नही कर सकते, फलत. उन्हे मजबूरन तालाब का पानी पीना पड़ता है।

यह भी ज्ञात हुआ है कि हरिजनो द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इन्कार करने पर मुसलमान उन्हे उत्पीड़ित कर रहे हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि उनकी फसलें नष्ट कराकर उन्हें झूठे मुकदमों मे फसाया जा रहा है।

—सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वीर माता

मम पुत्राः शत्रु हणोऽथो मे दुहिता विराट् ।
उताहमस्मि सञ्जया, पत्यौ मे श्लोक उत्तमः ।। ऋ०—१०-१५६-३

(मम पुत्रा) मेरे पुत्र (शत्रुहण') शत्रुओ को मारने वाले हैं, (अथो) और (मे दुहिता) मेरी पुत्री (विराट्) विशेष तेजस्विनी है (उत अहम्) और मैं भी (सञ्जया अस्मि) विजयिनी हू (मे पत्यौ) मेरे पति मे (उत्तम श्लोक') उत्तम कीर्ति का निवास है।

स्त्री का सबसे अधिक मनोहर रूप उसके मातृत्व मे है, इसलिए स्वामी दयानन्द महाराज ने 'सत्यार्थप्रकाश' मे लिखा है 'वस्तुत जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता. दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञान वान् होता है। वह कुल धन्य है । वह सन्तान भाग्यवान् है, जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान हो।' महाभारत मे भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को बतलाया है कि दुनिया का सबसे बड़ा पाप आचार्य (अध्यापक) की हत्या है। परन्तु पिताकी हत्या १०० आचार्यों की हत्या के बराबर होती है और १००० पिताओ की हत्या एक माता की हत्या के बराबर होती है। इसलिए कहा गया है 'न मातुः परं दैवतम्' माता से बढकर दूसरा कोई देवता नही। स्वामी दयानन्द ने लिखा है 'जैसे माता सन्तानो पर प्रेम (और) उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नही करता, इसलिए 'मातृमान्' अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृमान्' अत. धन्य है वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'

क्या कभी आपने माँ के वास्तविक स्वरूप को समझने की चेष्टा की है। स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता अर्थात पवित्रता, वत्सलता, कारुण्य की मूर्ति है। वह 'मम इण्डिया' या 'मिस वर्ड' नही बनना चाहती वह तो विदुला, मार्मी, मैत्रेयी और जीजाबाई बनना चाहती है कौशल्या, देवकी, अजना और जानकी बनना चाहती है। वह तपस्या की साक्षात् प्रतिमा है। साधना और तपस्या का मूर्तिमान रूप है। वह बालकृष्ण से बाते करती है, उसे शिक्षित करती है, उसके जीवननिर्माण के लिए हर सम्भव यत्न और तप करती है। सबकी सेवा उसका काम है। सम्पूर्ण परिवार का सुख उसका आनन्द है, उसका सुख है, उसका विनोद है। वह शराब के नशे में चूर अपने गिरे हुए पति को प्रेम से उठाकर श्रद्धानन्द बना देती है। वह पवित्रता का आदर्श है, सहनशीलता साक्षात् प्रतिमा है। अपने बच्चों को सम्भालने वाली और राष्ट्रीय जीवन को प्राणवान् बनाने माता को अनन्त प्रणाम।

सुनिए शत्रुओ से युद्ध करने वाले और अपने को मातृभूमि पर बलिदान करने वाले दो क्रान्तिकारी वीरो की माताओ की प्रेरणा की कहानी।

भारत माता का स्वरूप

शहीदेआजम वीर भगतसिह की माँ विद्यावती और पिता प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे। १८९८ मे उनका विवाह आर्यसमाजी रीति से हुआ। सितम्बर १९०७ मे भगतसिह का जन्म हुआ। भगतसिह अपनी माँ को बेबे कहते थे। १९२३ ई० मे किसी ने भगतसिह को बताया था कि भगतसिह को 'तख्त' या 'तख्ता' मे से एक मिलेगा। भगतसिह की माँ ने फांसी होने के एक दिन पूर्व कहा था 'बेटा, हठ मत छोड़ना, एक दिन तो मरना ही है पर मरना वह जिसे सारा ससार याद करे और रो उठे। मैं खुश हूँ कि मेरा पुत्र ऊंचे और अच्छे कार्यों के लिए बलिदान हो रहा है मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि फाँसी के तख्ते पर खडा होकर मेरा पुत्र 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाए।' २३ मार्च, १९३१ ई० को भगतसिह को फाँसी हुई तो वह रोई नही। भगतसिह ने कहा था 'बेबे जी, रोना मत। ऐसा न हो कि आप पागलो की तरह रोती फिरें। लोग क्या कहेंगे कि भगतसिह की मा रो रही है।' माँ १९३१-१९३४ ई० तक घोर संकट मे रही। १९३९-४० मे उनके दूसरे बेटे कुलतारसिह और कुलवीरसिह जेल चले गए। १९५१ ई० उनके पति किशनसिह दिवगत हुए। २० अगस्त, १९६५ ई० को भगतसिह के अनन्य साथी बटुकेश्वर दत्त का निधन हो गया। दत्त की इच्छानुसार उनका अन्तिम सस्कार फ़िरोजपुर मे सतलज के किनारे वहीं किया गया जहाँ कभी भगतसिह, राजगुरु और सुखदेव का दाह संस्कार हुआ था। विद्यावती वहां उपस्थित थीं। चिता में आग लगाते ही शोक विह्वल होकर कहने लगी कि तुम चारों तो यहा इकट्ठे हो गए मुझे भी अपने पास बुला लो। जनवरी १९७३ ई० को पंजाब सरकार ने उन्हें 'पंजाब माता' के सम्मान से विभूषित किया। १ जून, १९७५ को ९८ वर्ष की अवस्था में दिल्ली में उनका देहावसान जिसे हम बलिदान कहेंगे हुआ। धन्य है, पंजाब माता तूने देश को भगतसिह सा अनमोल रत्न दिया। तू पंजाब माता नहीं सम्पूर्ण भारतवासियों की मां है— तू भारत माता का स्वरुप है। तेरे चरणों में हमारा सादर प्रणाम है।

बिस्मिल की माता की कहानी

रामप्रसाद बिस्मिल की मां की कहानी सुनिए। ग्यारह वर्ष की अवस्था में श्री मुरलीधर से उनका विवाह हुआ। विवाह के बाद उन्होंने पढ़ना सीखा। बिस्मिल सहित उनके दो पुत्र और तीन पुत्रिया हुईं। बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा है 'मेरी माता मेरे धर्म कार्यों और शिक्षा में बड़ी सहायता करती थीं। धार्मिक और देशभक्ति सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने के लिए पैसे देती थी। मेरी माँ सत्कार्यों में मेरा उत्साह भग नहीं होने देती थीं, जिससे उन्हें बहुत बार पिताजी की डाट फटकार सुननी पड़ती थी। मुझे जीवन, बल, साहस और धर्म तथा देशभक्ति की जो भी प्रेरणा मिली वह मेरी माता और गुरुदेव सोमदेव सरस्वती की कृपा का फल था। जब मैंने आर्यसमाज मे प्रवेश किया तो माँ से खूब वार्तालाप होता। यदि मुझे ऐसी मा न मिलती तो मैं अति साधारण व्यक्ति की भांति ससार चक्र में फंसकर जीवन निर्वाह करता। मां ने ही मुझे सत्यार्थप्रकाश के आधार पर गंदे से गंदा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य ही अच्छा है।' कहकर क्रातिकारी जीवन की प्रेरणा दी। क्रान्तिकारी जीवन में भी उन्होने वैसे ही सहायता की जैसे इटली के क्रातिकारी मेजिनी की उनकी माँ ने की थी।'

फांसी से पूर्व रामप्रसाद बिस्मिल से गोरखपुर जेल मे मिलने के लिए एकबार मा पहुंची। बिस्मिल माँ को देखकर रो पड़ा। माँ के साथ शिववर्मा भी थे। माँ ने उस समय दृढ़ स्वर में कहा 'मैं तो समझती थी कि बेटा, बहादुर है। जिसके भय से अंग्रेज सरकार कांपती है। मुझे पता न था कि वह मौत से डरता है। यदि तुम्हें रोकर ही मरना था तो व्यर्थ ही इस काम में आए।' बिस्मिल की आँख में माँ के प्रति प्रेम के आँसू थे, मौत के भय के आँसू नहीं। जेल अधिकारी इसे देखकर आश्चर्यचकित थे।

एक बार अन्तिम दिन, जब उसे फांसी होने वाली थी। मां पुनः और अन्तिम बार मिलने गईं। वहाँ पहुचते मां ने रोना शुरू किया मा रोती जा रही थी। आसुओं से उनका आंचल भीग उठा था। जब वह शान्त हुई तो बिस्मिल ने कहा 'मां, तुम रोती हो ? तुम कहो तो मैं क्षमा माँगकर फांसी से बच जाऊ ? मैं जो भी कुछ हूं उसके बनाने का श्रेय तुम्हीं को है। तुम्हीं ने बचपन में स्वतन्त्रता के लिए मरने मिटने में हिचक न करने का उपदेश दिया, तुमने अपनी ममतामयी स्नेहमयी दूध की घूंटोंके साथ स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश से गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है कह कर उस विदेशी राज्य को उखाडने की शिक्षा दी थी। आज सौभाग्य से यह सुअवसर आया है तुम्हारे ये आसू मुझे विचित्र लग रहे हैं। कहो तो माफी माँग लूं।

लेखक :
सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०,

उस समय माँ ने जो कहा, वह ससार के इतिहास मे कहीं नहीं मिलेगा। वह स्वर्णाक्षरो में लिखने योग्य शब्द हैं। वह बोली 'बेटा, मैं मृत्यु से भयभीत नही हूं। मैं तो इसलिए रो रही हूं कि कल जब भारत की स्वतन्त्रता की प्राप्ति और रक्षा हेतु दूसरी माताए अपने प्राण प्यारे पुत्रों को गोद में लेकर भारत माँ के चरणों में अर्पित कर रही होंगी, उस समय मेरे पास और कोई वीर सन्तान न होगी जिसे मैं राष्ट्र माता के चरणो मे अर्पित कर सकूंगी।' इनका एक पुत्र पहले मर चुका था। बिस्मिल ने लिखा है 'मां महान से महान कष्ट में तुमने मुझे अधीर नहीं होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी सुनाते हुए सान्त्वना देती रही। सदैव तुम्हारी दया की छाया मे मैंने अपने जीवन में कोई कष्ट अनुभव नहीं किया। इस संसार मे मेरी किसी भी भोग विलास या ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक तृष्णा है कि एक बार तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लूं। किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती नही दीखती। और तुम्हें मेरी मृत्यु का दुखद समाचार सुनाया जाएगा। माँ, मुझे विश्वास है कि तुम यह समझ धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता भारतमाता की सेवा सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख कलंकित नहीं की। स्वाधीन भारत में जब इतिहास लिखा जाएगा तो किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों से तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा।'

यह है माँ का वास्तविक स्वरूप। दोनो माताए क्या अबला हैं ? ऐसी माताएं राष्ट्र की आधार हैं। इनके मन्दिर में कला रहेगी, पर कला के नाम पर विचरने वाली विलासिता नहीं। सच्ची माता के भवन में प्रेम का वायुमण्डल रहेगा, केवल सौन्दर्य का मोहक नहीं। माता के उपवन में प्राणों का स्पन्दन रहेगा, निराशा का निःश्वास नहीं। माता के लता कुंजों में विश्वप्रेम का संगीत गूंजेगा, परस्पर अनुनय का

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यसमाजों के सत्संग

११ अक्तूबर '८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—प० राम रूप शर्मा; अमर कालोनी—श्रीमती गीता शास्त्री; आर्य पुरा—पं सुरेन्द्र कुमार शास्त्री; आर के पुरम सेक्टर ६—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ; आर. के. पुरम स्वामी स्वरूपानन्द भजन मण्डली; आर्य नगर पहाड़ गंज—प० ओम प्रकाश भजनोपदेशक; कालका जी—प० उदयभान शास्त्री; करोल बाग—प० प्रकाश चन्द्र शास्त्री; कृष्ण नगर—पं० दिनेश चन्द्र पराशर, शास्त्री; गांधीनगर—पं० गणेश प्रसाद विद्यालकार; गीता कालोनी—पं० महेशचन्द्र—भजन मण्डली; ग्रेटर कैलाश—I डॉ० रघुनन्दन सिंह; ग्रेटर कैलाश-II-पं० हीरा प्रसाद शास्त्री; गुड़ मण्डी—श्रीमती लीलावती आर्या; गुप्ता कालोनी—स्वामी प्रेमानन्द; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका-प० वेदपाल शास्त्री; चूना मण्डी पहाड़ गंज—प० क्षितीश कुमार विद्यालकार; जगपुरा भोगल—श्री मोहन लाल गांधी; जनकपुरी सी-३ पार्क—डॉ० सुखदयाल भूटानी; जनकपुरी बी ३/२४——पं० जगदीश प्रसाद विद्यावाचस्पति; जहांगीर पुरी—प० ईश्वरदत्त एम. ए.; तिमारपुर—ला० लखमी दास आर्य; दरियागंज—स्वामी मिथिलेश; नारायण विहार—पं० विश्व प्रकाश शास्त्री; नया बास—डॉ० देवेन्द्र द्विवेदी न्यू मुलतान नगर—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; न्यू मोतीनगर—पं० देवराज वैदिक मिशनरी; निर्माण विहार—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; पंजाबी बाग—पं० देवेश; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—डॉ० रघुवीर वेदालंकार; बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—पं० प्रदीप कुमार शास्त्री; मोडल बस्ती—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; मोडल टाउन—प० सुधाकर स्नातक; महावीर नगर—पं०सत्यनारायण शास्त्री; महरौली—पं० तुलसी राम भजनोपदेशक; मोतीनगर—कविराज बनवारीलाल—शादी भजन मण्डली; रघुबीर नगर—प० रामनरेश शास्त्री; रमेशनगर—प० छज्जूराम शास्त्री, राणा प्रताप बाग—पं० अमरनाथ कान्त; लड्डू घाटी पहाड़गंज—प०प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; लाजपत नगर—आचार्य हरिदेव सि० भू०; लेखनगर-त्रितगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; लोधीरोड-जोरबाग—प्रो० सत्यपाल बेदार; लारेन्स रोड—प० प्रकाशवीर विक्रमनगर—प० सत्यभूषण वेदालकार; विनयनगर—प० सत्यपाल मधुर सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प० प्रकाशचन्द्र वेदालकार; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; साउथ एक्सटेन्शन-II वैद्य रामकिशोर साय ४.३० से ६ सराय रोहल्ला वैद्य रामकिशोर, शादीपुर—श्रीमती भगवान देवी, प्रातः ९ से १० शालीमार बाग—पं० रविदत्त गौतम; होज खास—श्री चमनलाल; ।

—ज्ञानचन्द डोगरा; वेद प्रचार विभाग

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर सत्यपथ पर आया

श्री सुमन की स्वीकारोक्ति: सत्यार्थप्रकाश वाक्य-प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य समाज दीवान हाल मे २७-९-८१ को प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्त्वावधान मे 'सत्यार्थ प्रकाश वाक्य प्रतियोगिता' का आयोजन अत्यन्त सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। ग्यारह वर्ष की उम्र मे लेकर ७० वर्ष की उम्र तक के लगभग २२५ प्रतियोगियो ने भाग लेकर अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रति आस्था का परिचय दिया। आर्य युवक परिषद के तीन प्रतियोगियों ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करके परिषद के लिए शील्ड जीती एव प्रमाणपत्रों व वैदिक साहित्य के अतिरिक्त क्रमशः ३०-२० व १० रु० की नकद राशि भी पारितोषिक मे प्राप्त की। कुछ मुस्लिम व सिख छात्राओं ने भी प्रतियोगिता मे भाग लिया।

सर्वश्री देवव्रत जी धर्मेन्दु, चमन लाल एम. ए, यशपाल सुधांशु, प्रो० ओमप्रकाश, मूलचन्द गुप्ता, के. वी. राय कुलभूषण साहनी,श्रीमती उषा शास्त्री, शकुन्तला दीक्षित एवं शकुन्तला शर्मा ने परीक्षकों के रूप मे कार्य किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला राम गोपाल जी, सहमन्त्री सच्चिदानन्द शास्त्री, धर्मेन्दु जी, रामलाल जी मलिक, चमन लाल जी एव युवा डॉ० आनन्द ने प्रान्तीय आर्य महिला सभा एव प्रतियोगिता की संयोजिका को इस महत्व पूर्ण व प्रभावशाली आयोजन के लिए बधाई दी एव अत्यन्त सराहना की। डॉ० सुमन ने कहा कि मैंने तो इसी महान ग्रन्थ को पढ़कर सत्य पथ प्राप्त कर लिया है। मैं चाहता हू कि मेरे अन्य मुस्लिम युवा भाई-बहनें भी इसका स्वाध्याय करके अपने को धन्य बनाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१ ००
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६ ००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६ ००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.५०

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरे

卐 ... स्वयं पढ़

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा कालिका प्रैस २६७४, रघुबरपुरा न०२ गांधीनगर दिल्ली ३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह के अवसर पर

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ४ : अंक ५१   रविवार २ कार्तिक, वि० २०३८   १८ अक्तूबर १९८१   दयानन्दाब्द १५७

'सत्यार्थप्रकाश' लिखने का मुख्य प्रयोजन

पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मुख्य दायित्व

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

मेरा इस ग्रंथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है, किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है।''' जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो'''क्योंकि सत्य उपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों को पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश कराता हूं, वैसे ही, दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ वर्तता हूं। मनुष्योन्नति के विषय में जैसा स्वदेश वालों के साथ बर्तता हू, वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी बर्तना योग्य है, क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करने और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे, मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्य-पन के बाहर हैं।

बहुत से हठी दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं, विशेषकर मतवाले लोग। क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंसकर नष्ट हो जाती है इसलिए जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देख कर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूं, वैसा सबको करना योग्य है।

इन मतों के थोड़े-थोड़े ही दोष प्रकाशित किए हैं, जिनको देखकर मनुष्य लोग सत्य मत का निर्णय कर सकें और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग करने कराने में समर्थ होवें, क्योंकि एक मनुष्य जाति मे बहका कर विरुद्ध बुद्धि कराके एक दूसरे को शत्रु बना लड़ा मारना विद्वानों से दूर है। यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान अन्यथा ही विचारेंगे, तथापि बुद्धिमान् लोग इसका यथायोग्य अभिप्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझता और अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूं। इसको देख दिखला कर मेरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार मेरा वा सब महाशयों का मुख्य उत्तरदायित्व है।

(मैंने सत्यार्थप्रकाश क्यों लिखा? 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की भूमिका से)

'सत्यार्थप्रकाश' का मूल्यांकन: अनेक दृष्टियों में

एक अद्वितीय पुस्तक : 'मैंने सत्यार्थप्रकाश कम से कम १४ बार पढ़ा है। जितनी बार इसे पढ़ता हूं, तन-मन तथा आत्मा के लिए कुछ नया आनन्द प्राप्त होता है। पुस्तक गूढ तत्त्वों और सचाइयों से भरी हुई है'''यदि सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपए होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता, यह अद्वितीय पुस्तक हर मूल्य में सस्ती है।

— पं० गुरुदत्त एम. ए. प्रसिद्ध आर्य चिन्तक एवं विद्वान्

'यह पथ-प्रदर्शक है' : 'मैंने भारत में आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से पाया है, क्योंकि मार्ग से भटकने वाले के लिए यह पथ-प्रदर्शक है।'

—पादरी सी० एफ एण्ड्रयूज

'जीवन में प्रकाश देने वाला' : 'मैंने सार्वजनिक सेवा के सारे पाठ आर्य-समाज से सीखे हैं। ऋषि दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में उन्हीं को गुरु माना है। वह मेरे धर्मपिता हैं और आर्यसमाज मेरी माता है। गुरुदेव रचित सत्यार्थ-प्रकाश मेरे जीवन में प्रकाश देने वाले सूर्य के समान है।

—लाला लाजपत राय

'पवित्र धार्मिक ग्रन्थ' : 'हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गरम खून का सचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे, यही मेरी कामना है। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई धर्मावलम्बी अपने मत की शेखी नहीं मार सकता। सब हिन्दू सत्यार्थप्रकाश का पवित्र ग्रन्थ के रूप में मान करते हैं।'

—वीर सावरकर

'एक महत्त्वपूर्ण शास्त्र' : 'स्वामी दयानन्द हमारे महर्षियों में से एक थे और उनका लिखा हुआ सत्यार्थप्रकाश हमारे धर्म का एक महत्त्वपूर्ण शास्त्र है।

—श्री राघवाचार्य

'वेदों का तत्त्व है' : जेल की दीवारों के पीछे एक वर्ष तक सत्यार्थप्रकाश मेरा मित्र, प्रकाशदाता और जीवन बना रहा। सत्यार्थप्रकाश में वेदों का तत्त्व है। इसके महत्त्व को कम करने का अर्थ है कि वेदों के तत्त्व और सार की प्रतिष्ठा और मूल्य को कम किया जाए।'

—श्री० एस रंगा अय्यर

हमारी सभ्यता की कुंजी : 'सनातन धर्म का रहस्य समझने के लिए वेद और केवल वेद ही हमारा पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। सत्यार्थप्रकाश में वेदों का तत्त्व है। मैं खण्डन किए बिना कह सकता हूं कि सत्यार्थप्रकाश हमारी सभ्यता की कुंजी है।'

—सर टी० वी० शेषगिरि अय्यर, सनातन धर्मी विद्वान्

'मानव-कल्याण की भावना' : 'सत्यार्थप्रकाश का ग्रन्थ सच्चे सनातन धर्म का सन्देश देने के साथ-साथ अन्ध श्रद्धा और पाखण्ड को दूर करता है। इसके पढने से तर्क शक्ति का विकास होता है। यह ग्रथ मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना से लिखा गया है।'

—सेठ जुगलकिशोर बिड़ला

'अद्वितीय ग्रन्थ' : 'सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जाग्रत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।'

—ला० हरदयाल एम० ए०

वैदिक संस्कृति का ग्रन्थ : 'सत्यार्थप्रकाश केवल आर्यसमाजियों की ही पवित्र पुस्तक नहीं है, वरन जिनका विश्वास वैदिक सस्कृति में है, उन करोड़ो लोगो के लिए है।'

—एन० सी चटर्जी

अन्धकार भगाने वाला : 'स्वामी दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश पढ़ने योग्य है, जो कि अन्धकार को दूर भगाता है।' —ए० ओ० ह्यूम, कांग्रेस के संस्थापक

निराकार परमेश्वर की आराधना : ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश मे केवल एक, ज्योतिर्मय निराकार परमेश्वर की आराधना की शिक्षा दी है।'

—सर सैयद अहमद खां

—सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रजा की सेवा से राजा सम्राट् बनता है

वाजस्येमां प्रसव: शिश्रिये दिवमिमां च विश्वा भुवनानि सम्राट् ।

अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्त्स नो रयिं सर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा । यजु:० ९-२४

ऋषि--वसिष्ठ: । देवता प्रजापति: । छन्द—जगती ।

शब्दार्थ—(वाजस्य) ज्ञान, बल तथा अन्न अर्थात् समृद्धि के (प्रसव:) उत्पादन की कामना करने वाला (सम्राट्) राजाधिराज (इमाम्) इस भूमण्डल और इमा च दिव) इस द्युलोक को तथा (विश्वा भुवनानि) इन के अन्तराल में (स्थित सब लोकों अथवा प्राणियों को (शिश्रिये) आश्रय देता है, और उनकी सेवा करता है। व्यवस्था के लिए धन के महत्त्व को (प्रजानन्) अच्छी प्रकार जानता हुआ (अदित्सन्तम्) कर चोरो तथा श्रम के पारिश्रमिक चोरो से (दापयति)कर तथा पारिश्रमिक जबरन दिलवाता है। (स.) उपर्युक्त गुणों वाला सम्राट् (न:) व्यवस्था के नियमो का पालन करने वाली हम प्रजाओ को (सर्ववीरम्) सब तरह की वीर भावना वाले पुत्र से युक्त (रयिम्) धन (नियच्छतु) देवे। (स्वाहा) सम्राट् प्रगतिशील बना रहे, प्रजा त्याग करती रहे, हमारी प्रार्थना सु-फलदायिनी हो।

निष्कर्ष—महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ में निम्न शब्द लिखे हैं :

य: करस्य अदातु करं दापयेत्, सोऽमात्यो भवितुमर्हति। य: शत्रून् निग्रहीतुं शक्नुयात् त सेनापतिं कुरुत । यो विद्वान् धार्मिको भवेत तन्न्यायाधीशं कोषाध्यक्षं वा कुरुते। इनके आधार पर समृद्धि चाहने वाले राजा का कर्त्तव्य है कि —

(क) करों की वञ्चना को रोकने वाले तथा निर्बल श्रमिकों सेवकों के अधिकार की रक्षा में समर्थ, निष्पक्ष तथा कठोर व्यक्तियों को ही मन्त्री पद पर नियुक्त करे।

ख) बाह्य शत्रुओं का सुचारु रूप से दमन करने में समर्थ व्यक्ति को सेनापति पद पर नियुक्त करे और प्रजा के आन्तर में शत्रुओं अर्थात् गुण्डों,जेबकतरों चोरों और झूठी अफवाह फैलाकर आतंक उत्पन्न करने वालों को नियन्त्रित करने में समर्थ व्यक्ति को आरक्षी सेना पति (पुलिस कमिश्नर) बनाए।

(ग) विद्वान् और धार्मिक व्यक्तियों को न्यायाधीश तथा कोषाध्यक्ष नियुक्त करे।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि, देवता और छन्द शब्दों के धात्वर्थ संकेत करते हैं कि यदि सम्राट् सच्चे अर्थों में प्रजापति बनना चाहता है, अर्थात् प्रजा को समृद्ध और सत्यकथन में समर्थ, निर्भय बनाना चाहता है तो उसे अपनी प्रजा को शान्तिपूर्ण वास का प्रबन्ध करने वाले वसुओं में श्रेष्ठ वसिष्ठ बनना होगा और अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए सदा प्रयत्न करना होगा, उसे सारे राष्ट्र में गति उत्पन्न करनी होगी; अपनी प्रजा को जगती बनाए रखना होगा। उनमें से आलस्य और निरुद्यम को पूर्णत: हटाना होगा।

वज: :—१. अन्न नाम। नि० २-७। २. बलनाम। नि० २-९। ३. अन्नं ज्ञानं, व्यवहार:, युद्धश्च। स्वामी दयानन्द; ४ समृद्धि:, पूर्णता। श्री अरविन्द; वजगतौ-गतेस्त्रयोऽर्थाः. ज्ञानं गमनं प्राप्तिश्च।

प्रसव:—षु-प्रसवैश्वर्ययो. । प्रसविता। षू प्रेरणे।

रयि: —धन नाम । नि० २-१०, रयिं पुत्ररूप धनं वा। सायण. ऋक् १०-१३४-५.

शिश्रिये—श्रिञ् सेवायाम् । भुवनम्—लोक तथा प्राणी । आप्टे।

स्वाहा—सु+आह+आ; सु+आ+ओहाक् गतौ; सु+आ+ओहाक् त्यागे।

अदित्सन्तम्—अ(न)+दा (दाने)+सन् (इच्छार्थ दापयति—दा (दाने)+णिच्

वसिष्ठ:—वस (निवासे)+इष्ठन् (अतिशयितार्थे)

—मनोहर विद्यालंकार
५२२,ईश्वर भवन,खारी बावड़ी दिल्ली-६

लोकप्रिय भजनोपदेशक भद्रपाल जी का स्वर्गवास

पजाब प्रतिनिधि सभा के भू० पू० भजनोपदेशक एव स्वामी सर्वदानन्द जी के शिष्य लोकप्रिय गायक आर्य विद्वान श्री भद्रपाल जी का स्वर्गवास ७२ वर्ष की आयु मे सांप काटने से २९ सितम्बर को अलीगढ़ के समीप अपने गांव में हो गया। वह संयुक्त पंजाब में ही नहीं, उत्तरी भारत में अपने मधुर कण्ठ एवं लोकप्रिय गीतों के कारण लोकप्रिय थे। 'आर्यसन्देश परिवार' की आकांक्षा है कि दयालु प्रभु उनकी आत्माको सद्गतिदेंगे एवं दुःखी परिजनों को हार्दिक सान्त्वना देंगे।

लोक-चिन्तन

अहमदिया सम्प्रदाय द्वारा भ्रामक प्रचार

— डा० विजय द्विवेदी

आजकल, उडीसा के ग्राम्यांचलों, रेलवे-बस स्टेशनों में अहमदिया सम्प्रदाय के लोग बड़ी संख्या में अपने प्रचार पत्र बाटने दिखाई पड़ रहे हैं। इन प्रचार पत्रों में भगवान के अवतार से संबन्धित वेद-पुराणों के उद्धरण तोड़-मरोड़ कर गलत ढंग से प्रचारित किए जा रहे हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी एक मित्र की कृपा से उड़िया भाषा मे लिखा—एक ऐसा ही प्रचार पत्र मिला है, जिसका शीर्षक है "आधुनिक युग में विभिन्न प्रकार के संकट क्यो पैदा हो रहे हैं एवं इनसे मुक्ति कैसे मिलेगी।" पाठकों के विचारार्थ प्रचारपत्र में दी गई सामग्री के कुछ अंश नीचे दिए जा रहे हैं—

"अथर्ववेद, काण्ड-२० मंत्र ११५-२ में लिखा है, कि 'अहमदेहे पितुष्परि मेदाहम् चितयश्च: यावताभाअहं सअरेय: एउ अजनेया." अर्थात् उस स्वर्गीय दूत का नाम अहेमद होगा, जो विज्ञता के साथ अपने पिता (महम्मद स. अ. स) द्वारा लाई सत्यता को पुन: प्रकाशित करेगा। पवित्र कोरान शरीफ में लिखा है "वा माबेसेरम, बेरसूलिन याति मिम् बादिस्मोहु अहेमद फनम्माजा आहुम् बिलत्रेएनाते कालू हाजा सेहेरुम् मोबिन, पुरासफ् पेरा-२८, श्लोक-६) अर्थात् इसका नाम अहमद होगा एवं यह जिस दिन प्रमाण देते हुए पैदा होगा, उस दिन मूर्ख लोग कह उठेंगे यह केवल जादू खेल है।"'इस स्वर्गीय दूत के पैदा होने के बारे में और जन्म-स्थान के बारे मे विभिन्न धर्मशास्त्रों में इस प्रकार लिखा है—यथा अथर्ववेद काण्ड-२०, श्लोक ९७ में लिखा है—"कूदून ओ अश्चेप अकीर्त्तन इन्द्रस्य पअनस्यम।" अर्थात कूदून नामक स्थान में वह ऋषि पैदा होगा और उसकी ख्याति कौन नहीं सुनेगा। यह महापुरुष मेहेदी कादेआ नामक वस्तु से निकलेगा। इसी तरह मालिका की भविष्यवाणी का भी उल्लेख है—"जिस दिन कलियुग में तरह-तरह के अन्याय, पाप, एवं अनाचार बढ जायेंगे, उस दिन "मोहन मागेल" आकर समाज का संस्कार कर, सबको समान कर देंगे।"

इस तरह की अनेक अनर्गल बातें, इस प्रचार-पत्र में दी गई हैं। मनगढ़ंत उदाहरणो द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है, "कि हजरत, मिर्जा गोलाम अहेमद, हिन्दुओ के निष्कलकी अवतार, मुसलमानों के इमाम मेहदी, सिक्खों के प्रगगा बटाला के गुरु एवं ईसाइयों के मसीहा हैं। इनकी बात जो नहीं सुनेगा अथवा जो इनकी बातों पर विश्वास नहीं करेगा उसका जीवन दुखी एवं विपन्न हो उठेगा।'

आज धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर बहुत कुछ अवांछनीय प्रचारित हो रहा है जिससे सामान्य जनता दिग्भ्रमित हो रही है और उस शाश्वत सनातन आदि पंथ आर्य पंथ से दूर चली जा रही है, जिसके महापुरुषों का नाम ले-लेकर अन्य धर्मावलम्बी अपनी गोटियां बैठाने का प्रयास कर रहे हैं। अत: आर्यजनों को इस प्रकार के प्रचारों से न केवल सावधान; अपितु मुंहतोड़ जवाब देने के लिए भी तैयार रहना है।

म० पू० च० कालेज बारीपदा उड़ीसा-७५७००१

विश्व साहित्य का ऐतिहासिक ग्रन्थ

महर्षि दयानन्द का ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश विश्व-साहित्य का ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इसने भारत में नए इतिहास का निर्माण किया और विश्व के धार्मिक साहित्य को नए मार्ग का प्रदर्शन किया। यह ग्रन्थ नई क्रान्ति का अग्रदूत है। कार्ल मार्क्स ने अपने ग्रन्थ दास कैपिटल द्वारा जो क्रान्ति आर्थिक जगत् में की, उससे अधिक क्रान्ति की क्षमता धर्म और विश्वास के क्षेत्रों में सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में है। हिन्दी साहित्य का यह एकमात्र गद्यग्रन्थ है, जिसका अनुवाद इतनी विश्वभाषाओं में हुआ। महान् दूरदर्शी की सर्वतोमुखी दृष्टि का यह अद्भुत ग्रन्थ सदियों तक हमें आलोक देता रहेगा।

—सत्यप्रकाश सरस्वती

कल्याणकारी भगवान् के प्रति आहुति दें

यस्ये मे हिमवन्तो महित्वा, यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू, कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ऋ० १०.१२१.४

कोई है जिसने ये रवि-शशि तारे अगिन बनाए, हिममण्डित पर्वत फूलों के साज सजाए। कोई है ये वितत दिशाएं फैली जिसकी बाहें, ले वात्सल्य में समेटती, सत्पथ पर ले जाएं। कोई है जिसने नदियों को गीत सिखाए अपने, कोई है मुखरित हैं जिसके भव्य सृष्टि के सपने ।

मानवता का पथ-प्रदर्शक—'सत्यार्थप्रकाश'

ब्रिटिश शासन के दिनों की बात है एक अमेरिकी नगर में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया था। कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक ख्यातनामा प्राध्यापक से कहा गया कि वह मानवता के प्रति भारतीय हिन्दू धर्म की देन का उचित मूल्यांकन करें। वह सज्जन बड़े पसोपेश में पड़े। उन्होंने बड़ी दौड़-धूप की, काफी कोशिश के बाद उनकी दृष्टि में अंग्रेजी का एक ग्रन्थ आया। उस ग्रन्थ के चौदह अध्याय थे। उसके पहले दस अध्यायों में शाश्वत मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव के लिए समुचित मार्ग का निर्देश किया गया था। उन प्राध्यापक महोदय ने विश्वधर्म सम्मेलन में सच्चे मानव-धर्म के रूप में उक्त ग्रन्थ में प्रतिपादित वैदिक धर्म एवं मानवीय आचार-संहिता की प्रतिष्ठा की। जानते हैं, उस ग्रन्थ का नाम क्या था? वह था महर्षि दयानन्द प्रणीत 'सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद।

कार्ल मार्क्स ने आर्थिक जगत में जिस वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया था वही कार्य धर्म और विश्वास के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द ने किया था। 'सत्यार्थ प्रकाश' मानवीय कर्त्तव्यों का बोध कराने वाला अद्भुत महाग्रन्थ है। इसमें जहां एक ओर वेद ज्ञान एवं ऋषियों द्वारा रचित अनेक शास्त्रों के रहस्यों की कुंजी प्रस्तुत की गई है। इसमें जहां वेदों और शास्त्रों का सारतत्त्व निरूपित है तो इसमें मनुष्यमात्र की समुन्नति के लिए सबके प्राणिमात्र के कल्याण का मार्ग भी प्रदर्शित किया गया है। इतना ही नहीं, इस ग्रन्थ के द्वारा संसार में धर्म एवं पैगम्बरों के नाम पर जो अन्ध श्रद्धा और पाखण्ड फैलाया गया था, उसकी भी कलई खोलकर रख दी गई है। इस प्रकार इस ग्रन्थ के पहले अध्यायों में सच्चे मानव धर्म की प्रतिष्ठा की गई तो बाद के अध्यायों में प्रचलित अन्ध श्रद्धा एवं पाखण्डों का अन्धकर धर्म के वास्तविक तत्त्व स्वीकार करने के लिए अनुरोध किया गया है।

'सत्यार्थप्रकाश' का प्रणयन हुए एक शताब्दी बीत गई है। कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली में इस शताब्दी का महोत्सव मनाया गया था। प्रसन्नता का विषय है कि इस सप्ताह रणबांकुरे राजपूतों की वीरभूमि उदयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एकत्र आर्य विद्वानों एवं आर्य जनों को देखना होगा कि क्या पिछले सौ वर्षों में मानवता के पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' का क्या उचित प्रचार-प्रसार हो गया है? क्या विश्व की सभी प्रधान भाषाओं में इसके अनुवाद हो गए हैं? यदि नहीं तो इस दिशा में आर्यसमाज को अपनी पंचवर्षीय योजना बनानी चाहिए कि आगामी पांच वर्षों में सभी प्रधान या अवान्तर विश्व-भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश का रूपान्तर हो जाए। इसी के साथ ऋषि के समस्त साहित्य एवं कर्तृत्व का एक व्यवस्थित मूल्यांकन भी विश्वभाषाओं में पहुंचना चाहिए, आशा है कि उदयपुर का शताब्दी-महोत्सव इस दिशा में उचित पथ-प्रदर्शन करेगा।

—x—

विराट् एकता-सम्मेलन

१८ अक्तूबर के दिन नई दिल्ली के बोट क्लब पर विराट हिन्दू-समाज के अधिवेशन द्वारा बिखरे हुए समाज को एक एवं संयुक्त करने का प्रयत्न किया गया है। मीनाक्षीपुरम तथा भारत के दूसरे स्थानों पर हरिजनों एव पिछड़ी जातियों के सामूहिक धर्मान्तरण ने हिन्दू समाज के सुधारक तथा सनातनी तत्वों को बुरी तरह झकझोर दिया है। पूर्वोत्तर भारत में ईसाइयत के प्रचार के बाद दक्षिण भारत में मुस्लिम धर्म द्वारा पेट्रोडालर की अपार सम्पदा के प्रलोभन से हरिजनों एव पिछड़ी जातियों के सामूहिक धर्मान्तरण की समस्या बहुत अधिक गम्भीर हो गई है। इसके निवारण के लिए सवर्ण हिन्दुओं की बुनियादी मनोवृत्ति बदलनी होगी। इस दिशा में [आ]चार्यों, शंकराचार्यों एवं मठ-मन्दिरों को अपनी भूमिका निबाहनी होगी। यदि इस विषय में हिन्दू समाज जाग्रत हो गया तो हारी बाजी जीती जा सकती है। यह कार्य कठिन है, परन्तु यदि भारत, भारतीय संस्कृति एव आर्य हिन्दू धर्म की सुरक्षा करनी है तो इस क्षेत्र में सभी को मिलकर कार्य करना ही होगा।

इस विषम परिस्थिति के समाधान में राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक सरकारों का विशेष दायित्व है। धर्मान्तिरण रोकने के लिए मध्यप्रदेश, उड़ीसा और अरुणाचल के ढंग का कानून सरकार बना दे तो बहुत कुछ हो सकता है। शासन इस दिशा में अपना दायित्व निबाहे—इसके लिए बोट क्लब में आयोजित विराट एकता सम्मेलन के माध्यम से समवेत भारतीय जनशक्ति के प्रदर्शन की भी महत्ता है। आशा है शासन विराट एकता सम्मेलन की सर्वसम्मत मांग को स्वीकार कर इस सम्बन्ध में अपना उत्तरदायित्व निबाहेगा।

—o—

१६ से १८ अक्तूबर तक उदयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह

सार्वदेशिक प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी में १६ से १८ अक्तूबर तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह की अध्यक्षता के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले अध्यक्ष निर्वाचित किए गए हैं।

समारोह की तैयारी पूर्ण हो गई है। समारोह में सम्मिलित होने के लिए विभिन्न देशों और प्रदेशों से भारी संख्या में आर्यजनता चल पड़ी है। विभिन्न प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं और आर्यसमाजें समारोह की सफलता के लिए अपना पूरा योगदान कर रही हैं। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्मप्रकाश त्यागी और कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट ने समारोह की सफलता में हर प्रकार का योग देने और अपनी संघठनशक्ति के परम्परागत कीर्तिमानों में एक और भव्य वृद्धि करने का आह्वान किया है।

चिट्ठी-पत्री

'मद्य-निषेध—नीति पर पुनर्विचार हो'

जनता पार्टी के शासनकाल में सारे देश में शराबबंदी का कार्यान्वयन चार वर्षों में पूर्ण करने की योजना प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने बनाई थी। उसके इस संबंध में कांग्रेस शासन ने भी १२ सूत्री कार्यक्रम बनाया था। कुछ प्रान्तों में जनतापार्टी के शासनकाल में मद्य निषेध कार्यक्रम आंशिक रूप से लागू भी किया गया जिसमें आशातीत सफलता मिली है। मद्य निषेध भारतीय संविधान की भावनाओं के भी अनुरूप है। भारतीय संस्कृति तथा नैतिकता के भी अनुरूप है। गांधीजी ने कहा था, 'यदि हमें एक घंटे के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो मैं बिना मुआवजा दिए, सबसे पहले शराब की दुकानों को बन्द करने का कार्य करूंगा। शराब पी लेने से मन व मस्तिष्क दोनों दूषित हो जाते हैं। मां को मां, बहिन को बहिन समझने की भावना लुप्त हो जाती है। संसार के समस्त सुधारकों ने शराब का घोर विरोध किया है। ऐसी स्थिति में राजस्व के नाम पर सरकार द्वारा शराब बेचना भारत जैसे धर्म एवं संस्कृतिप्रधान देश में सर्वथा अनुचित है। राजस्व के लिए आम जनता को पथभ्रष्ट करना एक जनकल्याणकारी सरकार पर कलंक ही कहा जाएगा। चोरी-डकैती कत्ल आदि अन्याय अपराधों के कारण क्या पुलिस विभाग तोड़ दिया जाए क्योंकि अपराध रुक नहीं रहे हैं? शराब प्रत्येक दृष्टि से यथा स्वास्थ्य आचार-विचार, हानिकारक ही नहीं सर्वनाशक भी है।

—राधेश्याम शर्मा एडवोकेट, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

ऋषि का अनुपम ग्रन्थ—'सत्यार्थप्रकाश'

जिसमें वेद और दर्शनों के गूढ़ रहस्य जनभाषा में अभिव्यक्त किए गए हैं : यह विश्वधर्मकोश भी है

लेखक :
यशपाल आर्यबन्धु

सत्यार्थप्रकाश उन्नीसवीं शताब्दी के अद्वितीय विद्वान्, महान समाज सुधारक तथा धर्म संशोधक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की एक अनुपम कृति है। दो भागों में विभक्त यह ग्रन्थ अपने पूर्वार्द्ध में वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या प्रस्तुत करता है एवं उत्तरार्द्ध मे अवैदिक मत-मतान्तरों की निष्पक्ष समीक्षा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने इस अमर ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थप्रकाश' रखा जो कि एक अनुपम एवं अपूर्व नाम है। इससे पूर्व किसी भी ग्रन्थ का ऐसा नाम नहीं मिलता। वेद सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक है अतः वेद में सत्य का प्रकाश किया गया है, किन्तु अन्य लोगों ने वेद के सही अर्थों को न समझ कर अर्थ का अनर्थ कर दिया एव वेदों को भांड, धूर्त्त एवं निशाचरों की कृति बताने लगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार को बताया कि वेद निश्चय ही सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद भाड, धूर्त्त एवं निशाचरों की कृति नहीं किन्तु वेदार्थ के नाम पर अनर्थकारी टीकाएं एवं भाष्य करने भाष्यकार ही भांड, धूर्त एवं निशाचर प्रतीत होते हैं। अतः 'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि ने सत्य अर्थों का प्रकाश किया है। अतः इसीलिए इस ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश रखा है। इससे महर्षि दयानन्द की लोकेषणा से पूर्ण विरक्ति की अनूठी झलक भी मिलती है। अन्यथा इस ग्रन्थ का नाम 'दयानन्द सिद्धान्त-प्रकाश', 'दयानन्द मन्तव्य प्रकाश' अथवा 'दयानन्द मत-प्रकाश' जैसा कोई नाम भी रख सकते थे।

आर्ष ग्रन्थ

लोककल्याण की भावना से प्रेरित होकर शाश्वत सत्य के प्रतिपादन हेतु मन्त्रद्रष्टा ऋषिगण अपनी ऋतम्भरा प्रज्ञा से उद्भूत सर्वहितकारी भावों को जिन ग्रन्थों में संजोया करते हैं, उन्हें आर्ष ग्रन्थ कहा जाता है। आर्ष ग्रंथ के लिए यह आवश्यक है कि वह किसी मंत्र द्रष्टा ऋषि की लेखनी से निःसृत हो। स्वामी ओमानन्द जी महाराज के अनुसार 'ऋषिभिः प्रोक्तमार्षम्' जो-जो ग्रन्थ ऋषियों द्वारा प्रोक्त, कथित या लिखित हैं वे सब आर्ष हैं, किन्तु आजकल ऋषियों के नाम से भी धूर्त स्वार्थियों ने अनेक पाखण्ड रच डाले हैं अतः इस परिभाषा को इस प्रकार समझें— ऋषिभिः प्रोक्तमार्षम्, वेदानुकूलंचेत्' ऋषियों द्वारा प्रोक्त ग्रंथ आर्ष हैं, वे भी तभी जबकि वेदानुकूल हों, विरुद्ध नहीं। (देखें—ब्रह्मचर्य से साधना भाग ८ पृष्ठ ६०) ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' उपर्युक्त कसौटी पर पूर्णतया खरा उतरा है। किसी भी आर्ष ग्रंथ के लिए यह आवश्यक होता है कि वह वेदानुकूल हो, क्योंकि स्मृति के लिए अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। जो स्मृति श्रुति का अनुसरण नहीं करती वह त्याज्य मानी जाती है। 'सत्यार्थप्रकाश' सर्वांश में वेदानुकूल है, इसमें वेद-विरुद्ध कुछ भी नहीं।

अपूर्व तथा अनुपम

महर्षि दयानन्द लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' केवल आर्ष ग्रंथ ही नही, अपूर्व तथा अनुपम ग्रन्थ भी है। अपूर्व इसलिए कि इससे पूर्व के जितने भी आर्ष ग्रंथ उपलब्ध हैं वे सभी के सभी संस्कृत भाषा मे लिखे गए हैं जनभाषा हिन्दी में लिखा गया यह प्रथम आर्ष ग्रंथ है। जन साधारण की संस्कृत भाषा तक पहुंच प्रायः समाप्त हो चुकी थी अतः किसी ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता तीव्रता से अनुभव की जा रही थी कि जो धर्म एवं दर्शन के गूढ तत्त्वों को जनसामान्य तक पहुंचाने में सक्षम हो सके। 'सत्यार्थ प्रकाश' द्वारा इसी अभाव की, आवश्यकता की पूर्ति हुई है। अतः हिन्दी भाषा में लिखा होने के कारण यह सर्वथा अपूर्व ग्रन्थ है। दूसरे इस ग्रंथ में जितने विषयों की विवेचना की गई है, उतनी अन्य किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलती। मानव जीवन से सम्बन्धित ऐसा कोई भी विषय नहीं, जिसकी विवेचना इस ग्रंथ में न की गई हो। तीसरे इसलिए कि जितने ग्रन्थों के प्रमाण इस ग्रन्थ में दिए गए हैं, उतने अन्य किसी भी आर्ष ग्रंथ में नहीं मिलते। अकेले इस ग्रन्थ में २९० ग्रंथों के १८८६ प्रमाण उद्धृत हैं। इतने ग्रंथों के इतने सारे प्रमाण स्यात् ही कहीं देखने सुनने को मिलें। यही इसकी अपूर्वता तथा विशिष्टता है। इन सब तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर हम सगर्व कह सकते हैं कि विश्व-साहित्य का कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं जिसकी उपमा महर्षि के 'सत्यार्थप्रकाश' से दी जा सके। इसलिए यह ऐसा अनुपम ग्रंथ है जिसके लिए हमें 'नस्ति उपमा यस्य यः अनुपम' और 'अतुल्यं अन्य सादृश्य रहिते अत्युत्कृष्टे' कह सकते हैं। वस्तुतः 'सत्यार्थप्रकाश' अपनी उपमा आप ही है। यह समस्त संसार के समस्त साहित्य में अपने ढंग का अकेला ग्रन्थ है संसार भर के महापुरुषों में जैसे महर्षि दयानन्द अनुपम हैं। वैसे ही उनका यह ज्ञान-कोश सत्यार्थप्रकाश भी सर्वथा अनुपम है। रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं आदि से भारतवासियों को ही नहीं, विश्व मानवता को बचाने में इस सद्ग्रन्थ की जो भूमिका रही है, वैसी संसार भर के किसी भी अन्य ग्रन्थ की नहीं मिलती। तभी पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी ने लिखा है, कि 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भारत का ही नहीं, मानव मात्र को प्रत्येक युग मे नई प्रेरणा देता रहेगा। रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से बचाने के लिए यह विश्व-साहित्य की अद्वितीय रचना है और सद्विचार और मानव-कल्याण का पोषक एकमात्र ग्रन्थ है।' (देखें— भूमिका सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ें ?)

सत्यार्थप्रकाश की विशेषता

'सत्यार्थप्रकाश की यह विशेषता है कि इसके लेखक ने इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में जो सत्य और ऋत के प्रतिपादन की प्रतिज्ञा की है उसे उसने अन्त तक निभाया है और अन्त में पुनः यह घोषणा करता है कि इस ग्रन्थ में उसने सत्य और ऋत का ही प्रतिपादन किया है। ऐसी प्रतिज्ञा के साथ ग्रन्थ को आरम्भ करना और उसी प्रतिज्ञा के साथ उसे समाप्त करना इस ग्रन्थ के लेखक की अपूर्वता ही नहीं उसकी विशेषता है। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इसका उदार लेखक इसकी भूमिका में सुस्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करता है कि, इस ग्रंथ में जो कहीं भूल-चूक से अथवा शोधने तथा छापने में भूल-चूक रह जाए उसको जानने-जनाने पर जैसा वह-वह सत्य होगा, वैसा ही कर दिया जाएगा।' (स० प्र० भूमिका) यह लेखक की अपूर्व महत्ता है। वह यह मानकर चला है कि मनुष्य अल्पज्ञ है और अल्पज्ञ होने से भूल कर सकता है। दूसरी ओर वह अपनी मान्यताओं के प्रति इतना दृढ़ आस्थावान् है कि वह लिख रहा है कि 'जो कोई पक्षपात से अन्यथा शंका व खण्डन-मण्डन करेगा उस पर ध्यान न दिया जाएगा। हां ! जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य समझने पर उसका मत संग्रहीत होगा।' यह इसी की विशेषता है।

सत्यार्थप्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती का विचारपुंज, उनकी दार्शनिक अभिव्यक्ति तथा अनुपम ज्ञानकोश है। सच पूछिए तो यह वेद-दर्शनों के गूढ़ रहस्यों की जन भाषा में अभिव्यक्ति का सफल प्रयोग है। साथ ही संसार भर के शायद सभी प्रमुख-प्रमुख मतों और उनके मान्य सिद्धान्तों का एक परिचयात्मक ग्रन्थ है। तभी इसे विश्वधर्मकोश की संज्ञा दी गई है। यह समग्र क्रांति का अग्रदूत एवं स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक है। विगत एक शताब्दी में धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में जो अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन सम्भव हो सके हैं, उन सबके मूल में सत्यार्थप्रकाश उल्लिखित क्रान्तिकारी भावनाएं कार्य करती दिखाई देती हैं। अतः यही एक मात्र समग्र क्रान्ति का अग्रदूत माना जा सकता है। महर्षि दयानन्द का यह दिव्य प्रकाशस्तम्भ अतीत में कोटि-कोटि मानवों सुपथ दिखा चुका है एवं भविष्य में भी युगों तक मानवता का पथ-प्रदर्शक बना रहेगा।

आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-३२

वेदादि शास्त्रों की कुंजी

वस्तुतः सत्यार्थप्रकाश प्राचीन और नवीन सभी प्रकार के मानवीय कर्त्तव्यों का बोध कराने वाला महान ग्रन्थ है। जो व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश को एकान्त में निष्ठापूर्वक मन लगाकर पढ़ता है, उस पर परमात्मा के पवित्र वेदज्ञान एवं ऋषियों द्वारा रचित अनेक शास्त्रों के रहस्य खुल जाते हैं। सत्यार्थप्रकाश वेदादि शास्त्रों के गूढ़ सिद्धान्तों को समझने की कुंजी है।

रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले)
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली।

वैदिक धर्म ही सत्य सनातन धर्म

आर्यसमाज रक्सौल में पं० जयकाश आर्य (इमाम, मौलाना खुर्शीद आलम) का भव्य स्वागत समारोह

दिनांक २९-९-८१ मंगलवार को आर्यसमाज रक्सौल के तत्वावधान मे रक्सौल के नगरवासियों की तरफ से हिन्दू धर्म में पुनरागमित पं० जयप्रकाश आर्य (इमाम मौलाना खुर्शीद आलम) का शानदार स्वागत समारोह आर्यसमाज के महर्षि दयानन्द भवन में सम्पन्न हुआ। इसमें हजारों नर-नारी उपस्थित थे।

जिला आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों, रक्सौल की विभिन्न संस्थाओं के पत्रकारों बुद्धिजीवियों तथा व्यापारियों की तरफ से पं० जयप्रकाश आर्य को माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया गया तथा उनके परिवार के लिए हजारों रुपए के विभिन्न वस्तुएं समर्पित की गयीं। उन्होंने अपने सम्मान के प्रत्युत्तर भाषण मे कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए इस्लाम धर्म के खोखले पन को दर्शाया तथा यह साबित किया कि वैदिक धर्म ही सत्य सनातन धर्म है। उदाहरण के रूप में बताया कि वैदिक धर्म ही आदि काल से एक बूढ़े बरगद पेड़ के रूप में खड़ा है। उसी के शाखा, प्रतिशाखा के रूप में दुनिया के सारे धर्म नकले हुए हैं। समस्त दुनिया के धर्म इसके सिद्धान्तों के अन्दर समाहित हैं। कुरान के आयतों का प्रमाण देते हुए उन्होंने मौलानाओं को चुनौती भी दी कि कोई भी आकर इस पर बहस कर सकता है। अपने शेष जीवन को वैदिक धर्म के प्रचार में लगाने की घोषणा की।

आर्य वही कहलाता है!

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट

जो अपनी कोमल वाणी से, अमृत-धार बहाता है।
मानवता से संपोषित जो, आर्य वही कहलाता है॥
शिक्षित, शान्तिसमन्वित जिसका, स्वार्थरहित शुचि अन्तर हो।
जन-सेवा के मृदु भावों से, भरा हुआ आभ्यन्तर हो।
ज्ञानी हो, विद्वान सहज हो, विद्वता का सम्मान करे।
पर, अपनी गम्भीर विद्वत्ता, पर न कभी अभिमान करे॥
परहित चिन्तन में ही मन को, करे सर्वदा जो उन्नत।
बृहत आत्म-विश्वास भरा हो, फिर भी सदा रहे वह नत॥
स्वच्छ, समुज्ज्वल-सा जिसका हो, स्वस्थ-सजीव, चरित्र पुनीत।
चरित्रहीनता जिसके सम्मुख, रहती रहे सदा भयभीत॥
जिसे स्वकर्त्तव्यों का अविरल, प्रतिपल होता भान रहे।
जन-जन को जिसकी उदारता, पर होता अभिमान रहे॥
सादा जीवन, उच्च विचारों, से जो सदा रहे अभिभूत।
जिसमें भरा हुआ हो जन-जन के प्रति उर में प्यार अकूत॥
राष्ट्रप्रेम की धार सुपावन, जिसके उर लहराती हो।
जिसका मन, गरिमा ज्ञानों की, क्षण-प्रतिक्षण बहलाती हो॥
वेद-पथों का अनुगामी बन, रहे बहाता मधुरस धार।
जहां पधारे उसी जगह पर, निश्चय ही आ जाए बहार॥
'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भावों से, करता रहे जगत-कल्याण।
अपने सारे शुभ्र गुणों से, करता रहे मनुज का त्राण॥
नवल ज्ञान की ज्योति जगा जो, करे मनुज मन में उत्क्रान्ति।
वेदज्ञान की रश्मि बिखा जो, दूर करे जन-मन उद्भ्रान्ति।
सच्चा आर्य वही है जो, कर सदा मनुष्योचित व्यवहार।
रहे सजाता मृदु भावों से, मानव के मन की मनुहार॥
आर्यसमाज की सदस्यता ही, नहीं कही जा सकती आर्य।
उसे निरूपित दिव्य वेद में, गुण करना पड़ता अवधार्य।
श्रेष्ठ गुणों से, शुभ कर्मों से, रहते हैं जो आभूषित।
उत्तम जिनकी प्रकृति अनोखी, विद्या तथा विनय से पोषित॥
ईश्वर तथा प्रकृति नियमों का, करते रहते हैं सम्मान।
शोक-हर्ष को, दुःखों-सुखों को सहते रहते एक समान॥
सत्य कथन कर आर्य सदा, करते हैं मानवता उत्कर्ष।
सारी धरती पर बिखराते, एक अनोखा सा मृदु हर्ष॥

मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

ईमानदारी

झालरापाटन शहर में उज्जैन से एक बरात आई थी। बरात पूरे गाजे-बाजे के साथ श्री लालचन्द सोमियां के यहां जा रही थी। बरात की धूमधाम में वर के गले में पड़ा जड़ाऊ हार अचानक खिसककर सड़क पर आ गिरा। सांझ के झुटपुटे में बरात में से किसी की नजर उस हार पर नहीं पड़ी। इसी बीच अपने कुछ साथियों के साथ खेल खेलता हुआ एक बालक जगमोहन प्रसाद माथुर वहां आ पहुंचा। उसकी नजर उस जड़ाऊ हार पर पड़ी। उसने वह हार उठा लिया। उसने अनुमान किया कि जरूर यह हार बरात में से किसी का होगा—वह उस हार को उसके मालिक तक पहुंचाने के लिए निकला। उसके दोस्तों ने उसे बहुत मना किया, तरह-तरह के प्रलोभन दिए और वह हार उससे लेना चाहा।

बालक जगमोहन ने लालचन्द्र जी की दुकान पर जाकर वह हार दुकानवालों को सौंप दिया। दुकानवालों ने तुरन्त हार बरात वालों को दिखलाया। उस समय तक वर महाशय को अपने हार के गिरने का पता ही नहीं था, सामने हार देखकर जब उनका हाथ गले पर गया तब मालूम पड़ा कि गला खाली था। बालक की ईमानदारी से वर तथा बरातियों को बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने खुश होकर उसे एक रुपया इनाम मे दिया।

बालक ने इनाम का रुपया घर वालों को सौंप दिया और हार मिलने तथा लौटाने की सारी घटना सुनायी। घरवाले सारी बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और लड़के को कहा—'बेटा तुम जिन्दगी भर ऐसे ही ईमानदार बने रहना। पराये धन को सदा धूल समझना।

—नरेन्द्र

आर्यसमाज आदर्शनगर में रामायण-कथा

आर्यसमाज मन्दिर, आदर्शनगर, दिल्ली-३३ में सोमवार १९ अक्तूबर से शनिवार ता० २४ अक्तूबर, १९८१ तक प्रतिदिन रात्रि को ८॥ से ९॥ बजे तक श्री पं० रामकिशोर वैद्य रामायण-कथा प्रस्तुत करेंगे। कथा से पूर्व घण्टा भर श्री गुलाबसिंह राघव के भजनोपदेश होंगे। रविवार २५ अक्तूबर को प्रातः श्री आर्यभिक्षु वानप्रस्थी हवन-यज्ञ कराएंगे, महिला-सत्संग मण्डली के भजन होंगे और पं० रामकिशोर वैद्य उपदेश देंगे।

आर्य जगत् समाचार

आर्यसमाज हरियाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा की मान्यता नहीं देगा

सिद्धान्ती-जयन्ती पर आर्य नेताओं की सरकार को चेतावनी

रोहतक। स्थानीय दयानन्द मठ में हरियाणा के आर्यसमाज कार्यकर्त्ताओं की एक विशाल सभा श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। यज्ञ की कार्यवाही के बाद आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती की स्मृति आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के नवनिर्मित भवन का उद्‌घाटन स्वामी ओमानन्द सरस्वती महाराज के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्वामी जी की अपील पर इस स्मारक भवन के लिए १५०० रुपए तथा २० हजार वचन के रूप में प्राप्त हुए।

दोपहर बाद श्री सिद्धान्ती जी की ८ वी जयन्ती भी यज्ञशाला में धूमधाम से मनाई गई जिसमें मा० निहालसिंह आर्य, प० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी, चौ० महावीरसिंह, वैद्य भरतसिंह, पं० सुखदेव शास्त्री, श्री भरतसिंह शास्त्री लुहाच, बहिन किरणमयी आर्या जीन्द, चौ० कबूलसिंह मन्त्री सर्वखाप पंचायत शोरम (उ० प्र०), मास्टर लालमण सिंह आर्य (दिल्ली), अवकाश प्राप्त न्यायमूर्ति चौ० हरकिशनसिंह मलिक ने श्री सिद्धान्ती जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्हें वेदो का प्रकाण्ड पण्डित, महान् सुधारक तथा निर्भीक नेता तथा पत्रकार बताया।

इस समारोह के मुख्य वक्ता भारत सरकार के पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी ने आर्य जनता को सावधान करते हुए बताया कि साम्प्रदायिक सिख नेता पंजाब में अपनी पंचवर्षीय योजना के अनुसार एक बार पुनः तोड़-फोड़ तथा आतंक का वातावरण तैयार करके भारत सरकार पर अनुचित दबाव डाल रहे हैं और हरियाणा में पंजाबी भाषा को लादने तथा रावी-व्यास के पानी को हड़पने, चण्डीगढ़ अबोहर फाजिल्का के लिए सौदाबाजी करना चाहते हैं। उन्होंने हरियाणा के मुख्य मन्त्री चौ० भजनलाल के सिख सम्मेलन मे दिए गए उस भाषण पर आपत्ति की जिससे उन्होंने हरियाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा बनाने की बात कही थी। भारत सरकार तथा हरियाणा सरकार को साम्प्रदायिक सिख नताओं की कोई भी अनुचित मांग किसी दबाव में आकर स्वीकार नही करनी चाहिए क्योंकि भाषायी आधार पर ही पंजाब का (पंजाबी तथा हिन्दी क्षेत्र) बटवारा किया गया था। हरियाणा हिन्दी भाषी क्षेत्र है। अतः खालिस्तान की आड़ में सरकार पर दबाव डालना है। अकालियों से किसी प्रकार का समझौता करते समय हरियाणा के हितों की उपेक्षा न की जावे तथा अन्यथा हरियाणा की आर्य जनता हिन्दी रक्षा तथा चण्डीगढ़ आन्दोलन जैसा वातावरण तैयार करने पर विवश हो जाएगी।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सिंहगर्जना करते हुए कहा कि आर्यसमाज श्री सिद्धान्ती जी की जयन्ती पर अन्याय के साथ टक्कर लेने का संकल्प करता है। आर्यसमाज ने १९५७ में हिन्दी रक्षा सम्मेलन में ५० हजार सत्याग्रहियों को जेल भेजा था। हम अभी जीवित हैं। अतः आर्यसमाज हरियाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा के रूप में किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं करेगा और पूर्व की भांति बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार है।

—o—

नरवाना (जीन्द) तथा गन्नौर (सोनीपत) में आर्यवीर ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

पलवल। आर्यसमाज नरवाना में १० अक्तूबर से १८ अक्तूबर तक तथा जनता हाई स्कूल गन्नौर में २५ अक्तूबर से। नवम्बर तक आर्यवीर दल हरियाणा के तत्वावधान में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर लगाने निश्चित हुए हैं। श्री सत्य पाल जी आर्य, पं० जगदीश चन्द वसु तथा श्री कृष्ण पाल सिंह प्रशिक्षण कार्य करेंगे।

—o—

हरिजनों को वेद पढ़ाने की व्यवस्था

आर्यसमाज दरियागंज का निश्चय

आर्यसमाज दरियागंज, नई दिल्ली की अंतरंग सभा की विशेष बैठक ४ अक्तूबर, १९८१ को आर्यसमाज मंदिर में श्री रामलाल चौधरी, प्रधान की अध्यक्षता में हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए।

(१) हरिजन बन्धुओं को संस्कृत तथा वेद पढ़ाने के लिए विशेष कक्षा की व्यवस्था की जाए।

(२) हरिजनों की शिक्षा के लिए पुस्तकों तथा लेखन-सामग्री का प्रबन्ध आर्यसमाज की ओर से किया जाएगा।

(३) मेधावी हरिजन तथा अन्य व्यक्तियों को संस्कृत तथा वेदों का अध्ययन करने के लिए ५० रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की जाएगी।

(४) हरिजन भाइयों के लिए ऐसे प्रशिक्षण की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाए, जिससे वे भविष्य में पुरोहित बनकर संस्कार आदि करा सकें और सफल उपदेशक बन सकें।

—o—

सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प

आर्यवीर दल द्वारा 'वीर पर्व' हरियाणा में सम्पन्न

पलवल। दशहरे के शुभ दिन प्रान्त भर में आर्य वीरों ने 'वीर पर्व' सोल्लास मनाया। आर्यसमाज न्यू कालोनी पलवल में पं० धर्मपाल जी मेरठ एवं श्री चन्द्रप्रकाश जी दिल्ली ने आर्य वीरो को आशीर्वाद दिया। बल्लभगढ़ मे नाहरसिंह पार्क में श्री देशराज जी बहल तथा फरीदाबाद में श्री मनोहरलाल जी आनंद (भिवानी), उपसंचालक, आर्यवीर दल हरियाणा ने वीर पर्व कार्यक्रमों की अध्यक्षता की। गुड़गांव में प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, संचालक आर्यवीर दल हरियाणा ने ओ३म् ध्वज फहराए। सोनीपत में श्री वेदप्रकाश आर्य (रोहतक) पानीपत में प्रो० वेद सुमन जी वेदालंकार (करनाल) तथा करनाल में श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी (यमुना नगर) ने आर्यवीरो को प्रेरणा दी। हिसार में पं० विश्वबन्धु जी शास्त्री (भिवानी) तथा सिरसा में पं० रविदत्त जी (हिसार) ने आर्यवीरो को सम्बोधित किया। इनके अतिरिक्त सोहाना, नगीना, हांसी, जीन्द, भिवानी, फतेहाबाद, नारनौल, अम्बाला आदि प्रमुख स्थानों पर भी वीर पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

आर्यसमाजों के सत्संग

१६ अक्तूबर '८१

अशोक विहार के सी-१२-ए—पं० प्रकाशवीर व्याकुल; आर्यपुरा—पं० अमरनाथ कान्त; आर के पुरम सेक्टर ६—पं० सुधाकर स्नातक; आनन्द विहार पं० सत्यदेव भजनोपदेशक; आर. के. पुरम—श्री देवीचरण बंसल; इन्द्रपुरी—पं० रामरूप शर्मा; किंग्सवे कैम्प—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; किशनगंज मिल एरिया—श्री मोहनलाल गांधी; कालका जी डी. डी. ए. फ्लेट्स—पं० उदयपाल शास्त्री; कृष्णनगर—पं० अशोककुमार विद्यालंकार; गांधीनगर—डॉ० रघुनन्दन सिंह; ग्रेटर कैलाश-I—स्वामी प्रेमानन्द; गुप्ता कालोनी—आचार्य हरिदेव सि०भू० गोविन्दपुरी—पं० सत्यभूषण वेदालंकार; चूनामण्डी पहाड़गंज—पं० रघुराज शास्त्री; जंगपुरा भोगल—पं० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; जनकपुरी बी ३/२४—डॉ० सुखदयाल भूटानी; टैगोर गार्डन—पं० हरिदत्त शास्त्री; तिलकनगर—पं० खुशीराम शर्मा; तीमारपुर—पं० रामनरेश शास्त्री; दरियागंज—पं० गणेशप्रसाद विद्यालंकार; नारायण विहार—पं० प्रदीपकुमार शास्त्री; नया बांस—पं० महेन्द्रकुमार शास्त्री; न्यू मोतीनगर—श्रीमती लीलावती आर्या; पंजाबी बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—मास्टर ओमप्रकाश आर्य; पश्चिम पुरी जनता क्वार्टर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; बाग कड़े खां—पं० बरकत राम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; बिरला लाइन्स—पं० ईश्वरदत्त; मोडल बस्ती—पं० वेदपाल शास्त्री; माडल टाउन—डा० देवेन्द्र द्विवेदी; महावीर नगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी; महरौली—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक; रघुबीरनगर—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; राणाप्रताप बाग—ला० लखमीदास; राजौरी गार्डन—पं० सत्यनारायण शास्त्री; लड्डूघाटी पहाड़गंज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; लाजपतनगर—श्रीमती सुशीला राजपाल; लक्ष्मीबाईनगर ई-१२०८—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; लेखरामनगर-त्रिनगर—श्री चमनलाल आर्य; लारेन्स रोड—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; विक्रमनगर—पं० मनोहर विरक्त; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सराय रोहिल्ला—पं० सीसराम भजनोपदेशक; श्री निवासपुरी—पं० हीराप्रसाद शास्त्री; शालीमार बाग—डा० रघुवीर वेदालंकार; हौज खास—पं० चन्द्रभानु सि० भू० ।

—ज्ञानचन्द डोगरा; वेद प्रचार विभाग

१९५ ईसाई एवं ५७ नवमुस्लिम हिन्दू (वैदिक) धर्म में सम्मिलित

दिनांक २०-९-८१ को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशकों द्वारा ग्राम विरगवां जिला एटा में श्री रामभज की अध्यक्षता में ४६ नवमुस्लिमों को हिन्दू (वैदिक) धर्म में सम्मिलित किया गया। आर्यसमाज हाथरस, आर्यसमाज एटा, आर्यसमाज सासनी के अधिकारियों एव आसपास के लगभग १५ गांवों के २५०० व्यक्तियों की उपस्थिति में यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ। दिल्ली से श्री द्वारिकानाथ सहगल, प्रधान मन्त्री सभा, श्री राम-प्रसाद मिश्र, डा. खुशहाल चन्द, श्री दीपचन्द शर्मा ने हिन्दू धर्म की दीक्षा दी। २४-९-८१ को ग्राम घुगवां मे १७५ ईसाई और २९-९-८१ को ग्राम रोशन नगर जिला बदायूं में २० ईसाई भाइयों को श्री इतवारी लाल एवं श्री अमृतलाल नागर उपदेशक सभा ने हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया तथा उन सभी के नाम हिन्दू धर्मानुसार परिवर्तित किए गए।

महाशय लक्ष्मीचन्द वानप्रस्थी का निधन

आर्यसमाज, सेक्टर २२, चण्डीगढ़ के भूतपूर्व प्रधान वयोवृद्ध, कर्मठ निष्ठा-वान, अनथक, आर्य वैदिक संस्कृति के प्रतीक महाशय लक्ष्मीचन्द वानप्रस्थी जी का दिनांक २७-९-८१ को देहान्त हो गया। ३० सितम्बर, १९८१ को आर्य समाज मन्दिर सेक्टर २२ में सम्पन्न हुई शोकसभा में अनेक वक्ताओ ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की और परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति-सद्गति और उनके सन्तप्त परिवार को धैर्य और सहनशक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)
" " (अंग्रेजी)
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक
पादरी भाग गया—
ओम्प्रकाश त्यागी
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान
अर्द्ध शताब्दी स्मारिका
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

- 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाएं
- आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए
- हिन्दी-संस्कृत भाषा स... दूसरों को भी पढ़ाइए